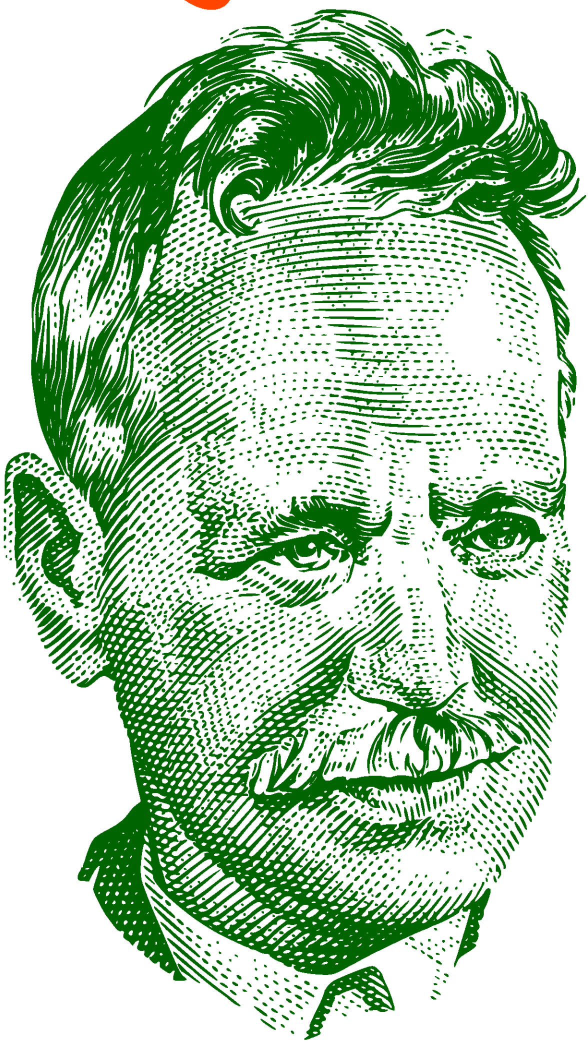
मिखाइल शोलोख़ोव

चुनी हुई रचनाएँ



बीसवीं शताब्दी का साहित्य

3

मिख़ाईल शोलोख़ोव

चुनी हुई रचनाएं

МИХАИЛ ШОЛОХОВ

Избранное

(Библиотека советской литературы XX века, том III)

На языке хинди

MIKHAIL SHOLOKHOV

Selected Works

(The 20th Century Soviet Literature, vol. III)

In Hindi

सोवियत संघ में प्रकाशित

ISBN 5-05-002102-2

अनुक्रम

दोन की कहानियां

लच्छन

१

जली बारूद की गध छोडते खाली कारतूस, भेड की हड्डी, फौजी नक्शा, सैनिक गतिविधियो की रिपोर्ट, घोडे के पसीने की गधवाली लगाम, डबल रोटी का टुकडा — यह सब एक ही मेज पर पडा है। उधर खिडकी के दासे से पीठ टिकाये निकोल्का कोशेवोई सीलन के कारण फफूद लगी खुरदरी बेच पर बैठा है। उसकी ठड मे अकडी उगलियो मे पेसिल है। मेज पर फैले पुराने पोस्टरो के पास आधा भरा फार्म है। खुरदरे पन्ने पर बस यही लिखा है कोशेवोई निकोलाइ। स्क्वाड्रन कमाडर। खेतीहर परिवार मे। रूसी युवक कम्युनिस्ट लीग का सदस्य।

आयु के खाने मे पेसिल ने धीरे-धीरे लिखा १८ वर्ष।

निकोल्का के कधे चौडे है, उम्र मे बडा लगता है। झुर्रियो मे घिरी आखो और बूढो की तरह झुकी कमर के कारण वह प्रौढ लगता है।

"बिल्कुल बच्चा है, छोकरा ही है, होठो पर मा का दूध भी नही सूखा अभी," स्क्वाडनवाले मजाक मे कहते है, "पर लाख ढूढने पर भी ऐसा दूसरा नही मिलेगा। दो-दो गिरोहो का सफाया कर चुके है और अपना नुक्सान न के बराबर है। पूरे छह महीने से स्क्वाड्रन को ऐसी-ऐसी लडाइया लडा रहा है। किसी पुराने कमाडर से उन्नीस नही है!"

निकोल्का को अपनी अठारह वर्ष की उम्र पर शर्म आती है। हमेशा उम्र के मनहूस खाने मे पहुचकर पेसिल अटक जाती है और निकोल्का के कपोल शर्म के कारण लाल हो जाते है। निकोल्का का पिता कज्जाक था मतलब वह भी कज्जाक ही हुआ। उसे धुधले सपने की तरह याद आता है कि जब वह कोई पाच-छह साल का था तो पिता ने उसे अपने फौजी घोडे पर बिठाया था।

"बेटा अयाल कसके पकडे रह!" पिता जी चिल्लाकर कह रहे

थे और मा रसोई के दरवाजे मे खडी निकोल्का की ओर देखकर मुस्करा रही थी, उनके चेहरे का रग उडा-उडा-मा था, आखे फडे कभी वह घोडे की पीठ से चिपटी नन्ही टागो को, तो कभी लगाम पकडे पिता जी की ओर देख रही थी।

यह बहुत पुरानी बात है। फिर जर्मनी की लडाई म निकोल्का का पिता लापता हो गया। उसके ठौर-ठिकाने की कोई खबर नही मिली। मा भी मर गयी। निकोल्का को अपने पिता मे विरासत मे घोडो मे प्यार, अदम्य साहस और लच्छन मिला था – कबूतरी के अडे जितना बडा, ठीक वैसा जैसा पिता के था, बायी टाग पर टखने से कुछ ऊपर। पद्रह साल की उम्र तक नौकरी-चाकरी करता रहा और बाद मे किसी से बरानकोट मागकर गाव मे गुजरती लाल रेजीमेट के माथ व्रागेल * की फौज मे लडने चला गया। इन्ही गर्मियो की बात है, निकोल्का सैन्य कमिसार के माथ दोन मे नहा रहा था। वह निकोल्का की धूप से मावली कुबडी पीठ को थपथपाकर हकलाता हुआ बोला

"तु-तुम भ-भ-भाग्यशाली हो! ह-हा, भाग्यशाली हो! लच्छन कहते है, भाग्य की निशानी होता है।"

निकोल्का ने अपने चिट्टे दात चमकाकर गोता लगाया थोडी दूर जाकर मिर बाहर निकाला और फुफकारकर चिल्लाया

"तुम भी क्या अजीब बात कहते हो! बचपन से यतीम हू, जिदगी भर लोगो की चाकरी करते-करते कमर झुक गयी और तुम कहते हो भाग्यशाली हू!"

और दोन को अपने आगोश मे समेटती पीली मकरी रेती की ओर तैर पडा।

२

वह घर जिसमे निकोल्का टिका था दोन के ऊचे किनारे पर स्थित था। खिडकी से हरा कछार और पानी की मलेटी धारा दिखायी पडती थी। तूफानी रात को लहरे किनारे से टकराती, खिडकियो के कपाट

* गृहयुद्ध मे एक प्रतिक्रातिकारी जनरल। – म०

चरमराते और निकोल्का को लगता कि फर्श की दरारो मे रिसकर घर मे भरता पानी मकान को झिझोड रहा है।

वह मकान बदलना चाहता था पर शरद तक बस वही रह गया। ठिठुरन भरे प्रात काल की नीरवता को नाल जडे बूटो की ठकाठक से भग करता निकोल्का ड्योढी मे निकला और चेरी की बगिया मे ओस से नम रुपहली घास पर लेट गया। कोठरी मे घर की मालकिन गाय को शात खडा रहने के लिये पुचकार रही थी, बछडा जोर-जोर से रभा रहा था और बाल्टी मे दूध की धार गिरने की आवाज आ रही थी।

अहाते का फाटक खटका, कुत्ता भौकने लगा। प्लाटन नायक की आवाज सुनायी पडी

"कमाडर घर पर है?"

निकोल्का कोहनियो के बल उठकर बोला

"यह रहा! क्यो, क्या हुआ?"

"कस्बे मे हरकारा आया है। कहता है कि माल्स्क इलाके से गिरोह आया है, ग्रूशिन्स्की राजकीय फार्म पर कब्जा कर लिया उसने "

"बुलाओ उसे।"

हरकारा गर्म पसीने से तर घोडे को अस्तबल की ओर खीच ले चला। पर वह आगन के बीचो-बीच पहले अगली टागो पर गिर पडा और फिर बगल पर लुढक गया, नथुने फडकाकर उसने दम तोड दिया। उसकी जड आखे जजीर से बधे भौक-भौककर बेहाल कुत्ते पर टिक गयी। बेचारे घोडे को इसलिये दम तोडना पडा क्योकि उस लिफाफे पर जो हरकारा लाया था क्रॉस के तीन चिन्ह बने हुए थे और हरकारा बिना कही दम लिये चालीस वेर्स्ता* तक घोडे को बेतहाशा दौडाता लाया था।

निकोल्का ने पढा कि अध्यक्ष उसके स्क्वाड्रन की सहायता माग रहा था। कमरे मे तलवार लटकाते समय उसने थकान के साथ सोचा "कही पढने-बढने के लिये जाना चाहिये, इधर यह गिरोह आ टपका कमिसार ताना मारता है कि एक शब्द भी ठीक से लिख पाता नही

---

* १ वेर्स्ता—१ ०६ किलोमीटर।—स०

और कहने को स्क्वाड्रन का कमाडर है मेरा इसमे क्या दोष है कि चर्च का स्कूल पास करने तक का वक्त नही मिला? वह भी बडा अजीब है और इधर यह गिरोह आ टपका फिर खून-खराबा होगा, मै तो थक गया हू ऐसी जिदगी से इस सब से जी उकता चुका है "

वह चलते-चलते कारबाइन मे गोलिया भरता हुआ बाहर निकला, दिमाग मे घोडो की तरह विचार सरपट दौडते जा रहे थे "शहर जाने को जी चाहता है कही कुछ पढ-वढ लेता "

मरे घोडे के पास से वह अस्तबल की ओर जा रहा था, धूल भरे नथुनो मे बहती खून की ऊदी धार को देखकर उसने मुह फेर लिया।

३

ऊबड-खाबड कच्ची सडक पर छकडो की लीको मे घनी जगली घास उगी हुई थी। कभी इस रास्ते मे स्तेपी मे सुनहली बूदो की तरह छिटके खलिहानो को किसानो की बैलगाडिया आती-जाती थी। मुख्य मार्ग टेलीग्राफ के खभो के साथ-साथ जाता था। खभो की पात बीहडो और घाटियो को पार करके शरतकालीन धुध मे विलीन हो रही थी और खभो के साथ-साथ जाते मार्ग पर सरदार अपने गिरोह को लिये जा रहा था। गिरोह मे सोवियत सत्ता से असतुष्ट दोन और कुबान के पचास कज्जाक शामिल थे। तीन दिन और तीन रातो मे वे रेवड मे मुह मारे भेडिये की तरह पगडडियो और बीहडो मे भागे जा रहे थे, और निकोल्का कोशेवोई का दस्ता लगातार उनका पीछा कर रहा था।

गिरोह मे भूतपूर्व फौजी, शातिर और दुस्साहसी लोग शामिल थे, फिर भी उनका सरदार चितित था रकाब के बल उचक-उचककर आखो से स्तेपी को छान रहा था, दोन के उस पार फैली वन की नीलाभ पात तक दूरी का अनुमान लगा रहा था।

बस ऐसे ही भेडियो की तरह लुकते-छिपते वे जा रहे थे और निकोल्का कोशेवोई का स्क्वाड्रन उनके सिर पर सवार था।

गर्मियो मे निर्मल आकाश तले दोन की स्तेपियो मे गेहू की लह-

लहाती बालिया चादी की तरह झकार करती है। लुनाई से पहले सलोने, ठोस गेहू की बालियो के गुच्छे सत्रह बरस के छोकरे की मूछो की तरह काले हो जाते है और जौ की बालिया आदमी से ऊचाई मे होड करने लगती है।

दाढीवाले कज्जाक किसान वनो-कुजो के किनारे दुम्मट मिट्टी मे रेतीले टीलो पर जौ बोते है। फसल उसकी कोई खास नही होती, कभी भी एक एकड मे चार-पाच मन से अधिक नही रहती। पर बोते इसलिये है कि जौ से देसी वोद्का बनती है, ओस जैसी निर्मल, क्योकि पीढी-दर-पीढी उनके पुरखे पीते आये है। शायद इसीलिये दोन प्रदेश के कज्जाको के राज्यचिन्ह पर भी शराब के पीपे पर बैठा नगा कज्जाक बना था। पतझड के दिनो मे बेद की टहनियो की बाडो के पीछे कज्जाको की टोपिया लडखडाती नजर आती।

इसीलिये सरदार भी रोज धुत्त रहता, इसीलिये मशीनगनवाली बग्घियो मे गाडीवान और मशीनगन चालक नशे मे झूमते रहते।

गिरोह के सरदार ने सात साल से अपने गाव के दर्शन नही किये थे। पहले जर्मनो की कैद मे रहा, फिर व्रागेल की फौज मे भरती हो गया, धूप मे तपता कोन्स्तानतीनोपोलिस, कटीले तार से घिरा बदी शिविर, फिर पालदार तुर्क किश्ती, कुबान के घने सरकडे और अब यह गिरोह।

बस यही थे सरदार की जिदगी के मुकाम। उसका दिल वैसे ही कठोर हो गया था जैसे कि स्तेपी मे झील के सूखे कीचड मे ढोरो के खुरो के निशान। अदर ही अदर मे घुन की तरह अजीब-सा दर्द उसे कुतर रहा था, अग-अग मे क्लाति व्याप्त थी। सरदार महसूस करता था कि इस दर्द और पीडा को किसी भी शराब से नही बुझाया जा सकता। पर पीता था—एक दिन भी होश मे नही रहता था क्योकि दोन की स्तेपियो म पके जौ की मधुर गध व्याप्त थी और गावो-कस्बो मे फौजियो की गौरवर्ण बीविया ऐसी वोद्का बनाती थी जैसे चश्मे का बहता पानी।

६

सुबह तडके इस साल का पहला पाला पडा। कुमुदिनियो के चौडे पत्तो पर चादी की तरह बिखर गया, लुकीच को सुबह पनचक्की के

पहिये पर अभ्रक की तरह चमचमाते हिमकण दिखाई दिये।

सुबह से लुकीच की तबीयत खराब थी कमर दुख रही थी, तीखे दर्द मे पैरो मे मानो सीसा भर गया था। वह चक्की का मुआ-यना करने लगा, बडी मुश्किल मे पाव घसीट रहा था, बेढब बदन का हाड-मास उसे अलग-अलग होता लग रहा था। दलिया दलने की मशीन से चूहो की बिरादरी निकलकर दौडी, पानी से भरी नम आखे उसने ऊपर उठायी छत की कडी पर बैठा कबूतर गुटरगू कर रहा था। नथुनो से, जो चिकनी मिट्टी से बने लगते थे, बूढे ने सीलन की घुटन भरी बू और पिसे गेहू की सुगध को फेफडो मे खीचा, कान लगाकर सुनने लगा पानी गुड-गुड करता, चटकारे लेता उन बल्लियो को चूम रहा था जिन पर पनचक्की टिकी थी। सोच मे डूबकर वह अपनी दाढी मसोसने लगा।

लुकीच दम लेने के लिये मधुवाटिका मे जाकर लेट गया। भेड की खाल का ओवरकोट ओढकर सो गया, मुह खुला था, होठो के कोनो मे जमी लसदार और गर्म राल से दाढी भीग रही थी। साझ के झुटपुटे ने बूढे की कुटिया पर स्लेटी रग पोत दिया था कोहरे के दूधिया चिथडो ने पनचक्की को लपेट लिया

जब लुकीच की आख खुली तो उसे जगल से आते दो घुडसवार नजर आये। उनमे से एक मधुवाटिका मे बूढे को देखकर चिल्लाया

"बाबा, इधर आओ!"

लुकीच शक की नजर से उन्हे देखकर खडा हो गया। इन अशात वर्षो मे वह ऐसे अस्त्रधारी लोगो को बहुत देख चुका था जो बिना पूछे चारा और आटा ले लेते थे। कोई भेद किये बिना वह उन सबसे गहरी नफरत करता था।

"जल्दी आ, खूसट बुड्ढे!"

छत्ताघरो के बीच से, बदरग होठो से निशब्द बुदबुदाता हुआ लुकीच धीरे-धीरे चलकर मेहमानो से कुछ दूरी पर खडा हो गया। वह उनको तिरछी नजरो से देख रहा था।

"हम लाल फौज के है, बाबा तुम हमसे डरो नही," शात स्वर मे सरदार फुसफुसाया। "हम गिरोह का पीछा कर रहे है, अपने लोगों से पिछड गये है कल यहा से कोई दस्ता गुजरा था, शायद तुमने देखा हो?"

"हां कोई गये तो थे इधर से।"

"बाबा, किधर गये वो?"

"शैतान जाने, मेरी बला से!"

"तुम्हारी चक्की में तो उनमें से कोई नही रहा?"

"नहीं," कहकर लुकीच ने उनकी ओर पीठ फेर ली।

"रुक बुड्ढे।" सरदार कूदकर घोड़े से उतर गया, टेढ़ी टांगों पर नशे में डगमगाया और मुंह से देसी वोद्का की तीखी बू छोड़कर बोला: "हम, बाबा, कम्युनिस्टों का सफ़ाया कर रहे हैं... हां-हां!.. और हम है कौन, यह तुम्हारी अक्ल की बात नही!" उसे ठोकर लगी और लगाम हाथ से छूट गयी। "तुम्हारा काम बस सत्तर घोड़ों के लिए चारा देना और चुप रहना है पलक झपकते ही हो जाना चाहिये यह काम!.. समझे? कहां है अनाज?"

"नही है," नज़र चुराकर लुकीच बोला।

"उस कोठरी में क्या है?"

"कबाड़-कबाड़ भरा है अनाज नही है!"

"चल ज़रा, देखू मैं भी!"

बूढ़े का कालर पकड़कर घुटने से धक्के देता वह ज़मीन में धंसी टेढ़ी दीवारोंवाली कोठरी की ओर चल पड़ा। दरवाज़ा खोला। खत्तियों में गेहूं और जौ भरा था।

"क्या यह अनाज नही है, हरामी बुड्ढे?"

"अनाज है, अन्नदाता. पिसाई के लिये है.. साल भर एक-एक दाना करके मैंने इसे जमा किया और तुम हो कि घोड़ों को खिलाना चाहते हो"

"तो तू क्या चाहता है कि हमारे घोड़े भूखों मर जायें? तू क्या लालवालो का तरफ़दार है, अपनी मौत को बुलावा दे रहा है?"

"दया करो मुझ पर, भले आदमी! मेरा क़सूर क्या है?" टोपी उतारकर लुकीच घुटनो पर गिर पड़ा और सरदार के बालों से ढके हाथों को चूमने लगा...

"बोल: तुझे लालवाले पसंद हैं?"

"माफ़ करो मुझे, रहमदिल!.. मेरी बेवक़ूफ़ी माफ़ कर दो।

कर भी दो माफ, मुझे मारो नही," मरदार की टागो मे लिपट कर बूढा गिडगिडाने लगा।

"मौगध खा कि तू लालवालो का तरफदार नही है नही, मलीब बनाने मे काम नही चलेगा, मिट्टी खाकर दिखा! "

बूढे ने मुट्ठी मे रेत भरी और अपने पोपले मुह मे डालकर उसे चबाने लगा, उसकी आखो मे आमुओ की धारा बह रही थी।

"ठीक है, अब मै यकीन करता हू। चल, उठ बुड्ढे!"

बूढा अपनी सुन्न टागो पर खडा न हो पा रहा था। उसे इस हालत मे देखकर सरदार हसने लगा। उधर वहा जमा हुए घुडसवार खत्तियो मे निकालकर जौ और गेहू घोडो के पैरो मे डाल रहे थे, आगन को मुनहरे दानो मे पाट रहे थे।

५

कोहरे और धुध मे भरी भोर थी।

लुकीच सतरी की आख बचाकर सिर्फ उमी को ज्ञात पगडडी मे मडक मे नही, बीहडो और उनीदे वन को पार करता हुआ गाव की ओर दौड पडा।

पनचक्की के पास पहुचकर वह बगल की गली मे बडी मडक पर मुडना चाहता ही था कि उसके सामने घुडसवारो की धुधली आकृतिया प्रकट हुई।

"कौन है?" नीरवता मे कडकती आवाज सुनायी दी।

"मै हू " लुकीच बुदबुदाया, हाथ-पाव फूल गये, थर-थर कापने लगा।

"कौन हो? पाम है? किस काम मे घूम रहे हो?"

"चक्कीवाला हू मै यही की पनचक्की से। काम से गाव जा रहा हू।"

"किम काम मे? चलो, कमाडर के पास! आगे-आगे चल "

घोडे को आगे बढाकर उनमे से एक चिल्लाया।

लुकीच को अपनी गर्दन पर घोडे के गर्म-नम होठो की अनुभूति हुई और वह लगडाता हुआ गाव की ओर चल पडा।

चौक में खपरैल से ढके मकान के सामने वे रुक गये। संतरी कराह-कर घोड़े से उतरा और उसे बाड़ से बांधकर तलवार खड़खड़ाता ऊंचे ओसारे पर चढ़ा।

"मेरे पीछे-पीछे चलता आ!.."

खिड़कियों में रोशनी टिमटिमा रही थी। उन्होंने घर में प्रवेश किया।

लुकीच को तबाकू के धुएं के मारे छींक आ गयी, उसने टोपी उतारकर झट से देवस्थान की ओर मुंह करके सलीब का चिन्ह बनाया।

"बुड्ढे को पकड़ा है। गांव में जा रहा था।"

निकोल्का ने मेज़ पर टिका अस्त-व्यस्त बालोंवाला अपना सिर उठाया, उनींदे, पर कड़े स्वर में पूछा:

"कहां जा रहा था?"

लुकीच आगे बढ़ा और खुशी के कारण उसे उच्छू आ गयी।

"अरे, यह तो अपने ही हैं, मैं तो सोच रहा था कि फिर से वो अधर्मी आ गये हैं... बहुत डर गया था, पूछते हुए भी डर लग रहा था... मैं चक्कीवाला हूं। जब मित्रोखिन के जंगल से तुम लोग जा रहे थे तो मेरे यहां ठहरे थे, मेरे प्यारे, मैंने तुमको दूध पिलाया था .. क्या भूल गये?.."

"अच्छा, कहना क्या चाहते हो?"

"मेरे प्यारे, कहूंगा यह: कल शाम को वो गिरोहवाले मेरे यहां आकर घोड़ों को अनाज खिलाने लगे!.. मेरी हंसी उड़ाने लगे... और उनका सरदार बोला: हमारा साथ देने की शपथ ले, ज़बर्दस्ती मिट्टी खिलवायी मुझे।"

"इस वक़्त कहां है?"

"वहीं हैं। अपने साथ ढेरों वोद्का लाये हैं, पापी कहीं के, मेरे घर मे पी रहे हैं और मैं दौड़ा-दौड़ा तुम्हें ख़बर करने आ गया, तुम्हीं कुछ करो उनकी अक़्ल ठिकाने लगाने के लिए।"

"घोड़ो को तैयार करने को कह दो!.. बूढ़े की ओर मुस्कराता हुआ निकोल्का बेंच से उठा और थकान के साथ बरानकोट की आस्तीन खींची।

६

दिन निकल आया था।

रातों जागते रहने के कारण निकोल्का का चेहरा पीला पड़ गया था। वह घोड़े को दौड़ाता हुआ मशीनगनवाली बग्घी के पास जाकर बोला :

"जैसे ही हल्ला बोलेंगे तुम दायें बाजू पर मार करना। हमें उनका पहलू तोड़ना है!"

और मार्च के लिये तैयार स्क्वाड्रन की ओर चला गया।

मरियल बलूतों के कुंज के पीछे सड़क पर घुड़सवार दिखाई पड़े— चार-चार की पांतों में, बीच में मशीनगनोंवाली बग्घियां थी।

"सरपट दौड़ाओ!" निकोल्का चिल्लाया और अपनी पीठ पीछे खुरों की बढ़ती गरज को महसूस करके उसने अपने घोडे को चाबुक लगाया।

वन के आंचल पर मशीनगन बेतहाशा ठक-ठक करने लगी और वे जो सडक पर थे तेज़ी से, जैसे कि युद्धाभ्यास के समय, बिखर गये।

* * *

तूफान से गिरे पेड़ों के ढेर से निकलकर भेड़िया दौडता हुआ टीले पर चढ़ गया। उसके सारे बदन पर गोखरू चिपके हुए थे। थूथनी उठाकर उसने टोह ली। पास ही में धांय-धांय गोलियां चल रही थी, चीत्कारों का नाद-निनाद सुनाई पड़ रहा था।

"ठुक!"—आल्डर के कुंज में गोली चलती और कही टीले के पार से, जोतों के पार से प्रतिध्वनि बड़बडाती—"ठाक!"

और फिर "ठुक, ठुक, ठुक" होने लगी। टीले के पार से जवाब में "ठाक! ठाक! ठाक!" सुनायी पड़ती।

भेड़िया कुछ देर तक खड़ा रहा, फिर धीरे-धीरे घाटी में, सूखी ऊंची घास में विलीन हो गया..

"संभालकर!.. मशीनगनों की बग्घियों को मत छोड़ना!.. झाडियों में... अरे झाड़ियों में चलो, तुम्हारी मां की!.." सरदार रक़ाब मे खड़ा होकर चिल्ला रहा था।

पर मशीनगनों की बग्घियों के पास गाड़ीवान और मशीनगनचालक हड़बड़ी में रासें काट रहे थे, और मशीनगनों की निरंतर गोलीबारी से जगह-जगह टूटी पांत बिखरकर सिर पर पांव रखकर भाग पड़ी।

सरदार ने घोड़ा मोड़ा, उसकी ओर एक घुड़सवार अपने घोड़े को सरपट दौड़ाता, तलवार घुमाता आ रहा था। छाती पर झूलती दूरबीन और नमदे के लबादे को देखकर सरदार समझ गया कि यह मामूली लाल सैनिक नही है और उसने अपने घोड़े की लगाम खीची। दूर से ही उसे बिना मूंछोंवाला युवा चेहरा दिखायी पड़ा, क्रोध से विकृत, हवा के कारण मिची-मिची आंखें। सरदार का घोड़ा पिछली टांगे झुकाकर एक ही स्थान पर नाच पड़ा, पेटी में फंसी पिस्तौल को झटके से निकालकर वह चिल्लाया:

"दुधमुंहे पिल्ले! .. घुमा, घुमा अपनी तलवार, मैं तुझे दिखाता हूं! .."

सरदार ने तेज़ी स पास आते काले लबादे पर गोली चलायी। आठ-एक गज़ दौड़कर घोड़ा गिर पड़ा, निकोल्का ने लबादा उतार फेंका, वह गोलियां चलाता हुआ मरदार के पास आता जा रहा था...

झाड़-झखाड़ के पीछे से किसी का वहशी चीत्कार अधूरा रह गया। बादल ने सूरज को ढक दिया और स्तेपी, सड़क, हवाओ और पतझड से ठिठुरते वन पर परछाइया तैरने लगी।

"बच्चा है, होंठों पर दूध अभी सूखा नहीं, ज़रूरत से ज़्यादा गर्म-मिज़ाज है, इसीलिये अब इसे मौत अपने पंजो में दबोच लेगी," सरदार के दिमाग़ में रुक-रुककर ये विचार कौंध रहे थे और जब निकोल्का की पिस्तौल खाली हो गयी, तो सरदार ने लगाम छोड़ दी और चील की तरह उस पर झपट पड़ा।

ज़ीन से झुककर उसने तलवार घुमायी, प्रहार से धराशायी होती देह की उसे क्षणिक अनुभूति हुई। सरदार कूदकर घोड़े से उतरा, मृतक की गर्दन से लटकी दूरबीन उतारी, कंपकंपाती टांगों पर नज़र डाली। इधर-उधर देखकर वह झुककर मृतक से क्रोम-लेदर के बूट उतारने लगा। चटकते घुटने पर पैर टिकाकर उसने झट से एक बूट उतार डाला। दूसरा बूट नही उतर रहा था, शायद मोज़ा खिसक गया था, गुस्से में गाली देकर उसने झटके से मोज़े सहित बूट उतार लिया। पैर पर, टखने से ऊपर उसे क़बूतरी के अंडे जितना बड़ा लच्छन

दिखायी पड़ा। धीरे-धीरे, मानो उसे डर हो कि कही जाग न जाये, उसने ठंडा पड़ता सिर घुमाकर चेहरा अपनी ओर मोड़ा, मुंह से कलकल बहती खून की धारा से उसके हाथ सन गये। ग़ौर से चेहरे को देखकर ही वह टेढ़े कंधों से लिपटकर भर्रायी आवाज़ में बोला:

"बेटे! .. निकोल्का, बेटे! .. मेरे लाल! .. मेरे कलेजे के टुकड़े! .."

नीला पड़कर वह चिल्लाया:

"कम से कम एक शब्द तो बोल! यह हो कैसे गया?"

बुझती आंखों, खून से तर पलको को देखकर उसने अपना माथा पटका, फिर उठकर निर्जीव देह को झिंझोड़ने लगा.. पर निकोल्का ने नीली जीभ कसकर दांतों में भीच रखी थी, मानो उसे डर था कि कही कोई बड़ी और अहम बात उसके मुह से न निकल जाये।

सरदार ने बेटे के ठंडे पडते हाथों को छाती से लगाकर चूमा और दातों मे पिस्तौल की पसीजी नाल भीचकर अपने मुह में गोली चला दी .

* * *

और शाम को जब झाडियो के पीछे से घुड़सवार प्रकट हुए, हवा उनके स्वरो और रक़ाबो की खड़खड़ को उड़ाकर पास लाने लगी, सरदार के बिखरे बालोवाले सिर से एक गिद्ध अनिच्छा के साथ उडा। उड़कर वह शरत्कालीन धुधले, बदरग आकाश में विलीन हो गया।

चरवाहा

१

धूप से झुलसी भूरी स्तेपी से सोलह दिनो से लू चल रही थी।

जमीन जलकर कोयला बन गयी, घास पीली पड गयी, राजमार्ग के किनारे बने कुए सूख गये, अनाज की बालिया पूरी खुलने से पहले ही मुरझाकर बूढो की तरह झुक गयी।

दोपहर को ऊघते गाव मे घटे की टन-टन गूजने लगी।

कडकती धूप और नीरवता का राज्य था। बस धूल उडाते कदमो की आहट, ऊबड-खाबड सडक पर सभल-सभलकर चलते बूढो की लाठियो की ठक-ठक सुनायी पड रही थी।

घटा गाववालो को सभा का बुलावा दे रहा था। सभा मे चरवाहे की नियुक्ति के सवाल को हल करना था।

कार्यकारिणी समिति मे लोग मक्खियो की तरह भिनभिना रहे थे, तबाकू का धुआ भरा था।

अध्यक्ष पेंसिल के टुकडे से मेज को ठकठकाकर बोला

"नागरिको! पुराने चरवाहे ने हमारे ढोर चराने से इकार कर दिया, कहता है कि तनखा कम है। हम, कार्यकारिणीवाले, ग्रिगोरी फ्रोलोव को इस काम पर रखने की सिफारिश करते है। यही पैदा हुआ, अनाथ है, कोम्सोमोल का सदस्य है बाप उसका, जैसा कि सब जानते है, मोची था। वह बहन के साथ रहता है, पेट भरने को उनके पास कुछ है नही। मेरे खयाल मे आप लोग उसकी हालत पर रहम करके उसे ढोर चराने का काम दे दोगे।"

बुड्ढे नेस्तेरोव से चुप न रहा गया, चुलबुलाकर वह बोला

"हम यह नही कर सकते झुड बडा है, और वह भी कोई चरवाहा है! दूर ले जाकर चराना है क्योकि आस-पास चारा है नही और उसे यह काम आता नही। पतझड तक आधे बछडे भी नही बचेगे "

इग्नात चक्कीवाला, घाघ बुड्ढा, विद्वेषपूर्ण स्वर में शक्कर घोलकर बोला :

"चरवाहा हम कार्यकारिणी के बिना भी ढूंढ़ लेंगे, यह हमारा अपना मामला है... और आदमी हमें ऐसा चुनना चाहिये जो बूढ़ा, भरोसेमंद हो, ढोरों की देखभाल करना जानता हो..."

"ठीक कहा, दादा..."

"अगर बुड्ढे को रखोगे तो और भी जल्दी बछडों से हाथ धो बैठोगे... अब वह ज़माना नही रहा, सब जगह चोर-उचक्कों की कोई कमी नही..." अध्यक्ष दृढ़ता के साथ बोला। पीछे से लोगों ने उसका समर्थन किया :

"बुड्ढे से काम नही चलेगा... यह भी ध्यान में रखो कि ये गायें नही बल्कि जवान बछड़े हैं। कुत्ते की तरह फुर्तीली टांगों की ज़रूरत है उन्हें चराने के लिये। झुंड बिदक गया, तो बुड्ढा दौड़ते हुए अपनी बत्तीसी खो बैठेगा..."

ठहाके गूंज उठे, पर बुड्ढा इग्नात अपनी बात मनवाने के लिये दबे स्वर मे बोला :

"कम्युनिस्टो का यहां कोई काम नही... यह काम तो पूजा-पाठ के साथ किया जाता है, ऐसे-वैसे नहीं..." और खूसट बुड्ढे ने अपनी टांट पर हाथ फेरा।

पर अध्यक्ष फ़ौरन सख़्ती से बोला :

"इस तरह की बातें नही चलेंगी .. इस तरह की... ऐसी बातों के लिये... सभा से बाहर निकाल दूंगा..."

प्रातः, जब चिमनियों से मैली रुई के चिथड़ों की तरह निकलकर धुआं चौक में फैलकर छाने लगता है, ग्रिगोरी ने डेढ़ सौ ढोरों का झुंड जमा किया और गांव की गलियों से हांककर सलेटी, मनहूस टीले की ओर चल पड़ा।

स्तेपी भूरी फुंसियों की तरह मारमोटों के बिलों से ढकी थी, मारमोट चौकन्ने होकर सीटियां-सी बजा रहे थे; घाटियों की नीची घास में दुबके हुकना पक्षी अपने रुपहले डैने चमकाते हुए फुर्र से उड़ रहे थे।

झुंड शांति से जा रहा था। झुर्रीदार पपड़ी से ढकी ज़मीन पर बछड़ों के खुर बारिश की तरह टप-टप कर रहे थे।

ग्रिगोरी के साथ उसकी बहन दून्या मददगार की हैसियत मे जा रही थी। उसका अंग-अंग – धूप मे सावले गाल, आंखें, होंठ – सब हंस रहे थे, उसे सत्रहवां साल लगा था और सत्रह साल की उम्र में तो बात-बात पर हंसी आती है. भाई के फूले मुंह और लम्बे कानोंवाले बछड़ों को देखकर, जो जंगली घास चबाते चल रहे थे, उसे हंसी आ रही थी, इस बात तक पर हंसी आ रही थी कि दो दिन से उन्हें रोटी का एक टुकड़ा तक नसीब नही हुआ।

पर ग्रिगोरी नही हंस रहा था। फटी-पुरानी टोपी के नीचे से ग्रिगोरी का झुर्रियों से ढका चौड़ा माथा दिखायी पड़ रहा था, आंखों मे थकान की झलक थी, मानो वह उन्नीस बरस का नही बल्कि बूढ़ा हो चला हो।

चित्तीदार लहरों की तरह उमडता झुंड रास्ते के किनारे-किनारे चला जा रहा था।

ग्रिगोरी ने पीछे छूटे बछड़ो को सीटी बजाकर उकसाया और दून्या की ओर मुडकर बोला

"पतझड़ तक, दून्या अनाज कमा लेंगे और फिर शहर चले जायेंगे। मैं मज़दूर फैकल्टी मे भरती हो जाऊंगा और तेरे लिये भी कोई प्रबंध कर दूंगा .. शायद किसी कोर्स-वोर्स में दाखिला दिलवा दूंगा .. शहर मे, दून्या, बहुत किताबें होती हैं और रोटी भी वहां साफ़ होती है यहां की तरह घास-फूस मिली नही।"

"पर पैसे कहा से लायेंगे... शहर जाने के लिये?"

"तू भी बड़ी भोंदू है .. हमें बीस पूद* गेहूं मिलेगा, क्या यह पैसे नही हैं... पूरे रूबल के हिसाब से एक-एक पूद बेच देंगे, फिर बाजरा और उपले भी बेच देंगे।"

ग्रिगोरी रुककर चाबुक की मूठ से सड़क की धूल पर हिसाब-किताब करने लगा।

"ग्रिगोरी, हम खायेंगे क्या? रोटी बिलकुल नही है..."

"मेरे झोले में पुए का सूखा टुकड़ा बचा है।"

* पूद – पुराना रूसी तौल जो १६ किलोग्राम के बराबर होता था। – अनु०

"आज तो खा लेंगे पर कल क्या करेंगे?"

"कल गांव से हमारे लिये आटा आ जायेगा... अध्यक्ष ने वायदा किया है..."

दोपहर का सूरज आग बरसा रहा था। ग्रिगोरी की टाट से बनी क़मीज़ पसीने से तर होकर उसके मोढ़ों से चिपक गयी।

ढोरों का झुंड बेचैनी से चला जा रहा था, डांस-मक्खियां बछड़ों को काट रही थीं, तपी हवा ढोरों के रंभाने और डांसों के भिनभिनाने से गूंज रही थी।

शाम को सूर्यास्त से पहले वे बाड़े के पास पहुंच गये। पास ही में जोहड़ था और बारिशों के कारण गले फूस की कुटिया थी।

ग्रिगोरी दौड़कर आगे गया और हांफते हुए उसने बाड़े का टहनियों से बना फाटक खोल दिया।

वह बछड़ों को गिनता हुआ एक-एक करके फाटक के काले चौकोर के भीतर हांक रहा था।

२

जोहड़ के पास के टीले पर उन्होंने नयी कुटिया बनायी। दीवारो पर गोबर लीपा और ग्रिगोरी ने फूस का छप्पर डाल दिया।

अगले दिन अध्यक्ष घोड़े पर सवार होकर आया। वह आधा पूद मकई का आटा और एक झोला बाजरा लाया।

छांव में बैठकर उसने सिगरेट सुलगायी और बोला:

"लड़का तू भला है, ग्रिगोरी। बस, किसी तरह झुंड की रखवाली कर ले, पतझड़ में हम क्षेत्रीय केन्द्र चलेंगे। वहां से शायद तुझे पढ़ने के लिये भिजवाने का प्रबंध हो जाये... वहां लोक शिक्षा विभाग में मेरी जान पहचान का एक आदमी है, वह मदद कर देगा..."

ग्रिगोरी का चेहरा खुशी से चमक उठा। विदा करते समय उसने अध्यक्ष को घोड़े पर चढ़ने में मदद दी और कसकर हाथ मिलाया। बड़ी देर तक वह घोड़े के खुरों से उड़ती धूल के गुबार को देखता रहा।

प्रातःकालीन बयार से कुछ राहत पाने के बाद दोपहर को सूखी

स्तेपी का तपती गर्मी से दम घुटने लगता। पीठ के बल लेटकर ग्रिगोरी नीली-सी धुंध से ढके टीले को देखता, उसे लगता कि स्तेपी एक जीवधारी के समान है और वह गांवों, क़स्बों और शहरों के भारी बोझ से कष्ट झेल रही है। लगता कि धरती की छाती सांस लेते हुए निरंतर हिल रही है, और कहीं नीचे, भूगर्भ में कोई अज्ञात जीवन पूरी गति से चल रहा है।

और दिन के उजाले में भी उसका दिल दहल जाता।

नज़रों से टीलों की अपार शृंखला को नापता, उन पर छायी धुंध, कत्थई घास पर फैले झुंड को देखता और सोचता कि वह इस दुनिया से कटकर कही दूर चला गया है।

शनिवार की शाम को ग्रिगोरी ने ढोरों को बाड़े में बंद किया। दून्या कुटिया के पास आग जलाकर बाजरे और ख़ुशबूदार जंगली साग की खिचड़ी बना रही थी।

ग्रिगोरी आग के पास बैठ गया और सौंधी गंध छोड़ते उपलों को चाबुक की मूठ से कुरेदकर बोला:

"ग्रीशा की बछिया बीमार पड़ गयी। मालिक को इसकी ख़बर पहुचवानी चाहिये।"

"मैं जाऊं गाव को?" दून्या ने कृत्रिम उदासीनता से पूछा।

"ज़रूरत नहीं है। अकेला झुड को नही संभाल पाऊंगा..." मुस्कराकर पूछा: "क्या लोगों से मिलने को जी कर रहा है?"

"हां, ग्रिगोरी भइया... एक महीने से स्तेपी में रह रहे हैं, बस एक बार किसी आदमी के दर्शन हुए। अगर पूरी गर्मी हमने यही बिता दी तो बोलना ही भूल जायेंगे .."

"सब्र कर, दून्या . पतझड़ में शहर चले जायेंगे। हम दोनों पढ़ेंगे और पढ़ाई पूरी करके यहा लौटेंगे। विज्ञान जैसे कहता है वैसे खेती करना शुरू करेंगे, नही तो यहां कितना अंधेरा है, लोग सोये-से पडे हैं सब अनपढ है . किताबें नहीं है.. "

"हमें भरती नही करेंगे . हम भी तो अनपढ़ हैं.. "

"हमें ले लेंगे। सर्दियो में जब मैं कस्बे में गया था, मैंने कोम्सोमोल इकाई के सचिव के यहां लेनिन की किताब पढ़ी थी। उसमें कहा गया है कि सत्ता सर्वहारा की है, और पढ़ाई के बारे में भी लिखा है कि उनको पढ़ना चाहिये जो ग़रीबो की संतान हैं।"

ग्रिगोरी घुटनों के बल उचका, उसके गालों पर लपटों का लाल प्रकाश चमका।

"हमें पढ़ना चाहिये ताकि अपने जनतंत्र का काम चलाना सीख सकें। शहरों में तो सत्ता मजदूरों के हाथों में है, पर हमारे यहां क़स्बे का अध्यक्ष कुलक है और गांवों में भी अमीर लोग अध्यक्ष बन बैठे हैं..."

"ग्रिगोरी, मैं कपड़े धोकर, महरी का काम करके कमाऊंगी और तुम पढ़ना..."

उपले धुआं छोड़ते, फुफकारते सुलग रहे थे। स्तेपी ऊंघती मौन पडी थी।

३

क्षेत्रीय केन्द्र जानेवाले मिलीशियामैन के हाथ कोम्सोमोल इकाई के सचिव पोलीतोव ने ग्रिगोरी को क़स्बे आने का बुलावा भेजा था।

ग्रिगोरी पौ फटने से पहले ही रवाना हो गया और दोपहर को टीले से उसे गिरजाघर का घंटा और पुआल व टीन की छतोंवाले मकान दिखायी पड़े।

बिवाइयों से भरे पैरों को घसीटता हुआ वह चौक पर पहुंचा। क्लब पादरी के घर में था। ताज़ी पुआल की सुगंध छोड़ती नयी चटाइयों पर चलकर उसने बड़े कमरे में प्रवेश किया।

खिड़कियों के पट बंद होने के कारण कमरे में धुधला-सा प्रकाश था। खिड़की के पास पोलीतोव रंदा चला रहा था – चौखट बना रहा था।

"सुना है मैंने, भाई, सुना है..." मुस्कराकर अपना पसीजा हाथ बढाकर वह बोला। "चलो और क्या कर सकते हैं! मैंने क्षेत्रीय केन्द्र से पता करवाया था: वहां तेल पेरने की फ़ैक्टरी में जवान लड़कों की ज़रूरत थी, पता चला कि उन्होंने ज़रूरत से ज़्यादा बारह लोगों को भरती कर लिया... अभी झुंड की रखवाली कर लो और पतझड़ में तुम्हें पढ़ने के लिये भेज देंगे।"

"ग़नीमत है कि यह काम ही मिल गया... गांव के कुलक मुझे

क़तई भी चरवाहे का काम नहीं सौंपना चाहते थे ... कहते थे कोम्सोमोल का है, अधर्मी, पूजा-पाठ के बिना चरायेगा .. " ग्रिगोरी ने थकान भरी हंसी के साथ बताया।

पोलीतोव आस्तीन मे बुरादे को हटाकर खिड़की के दासे पर बैठ गया। पसीने से भीगी भौंहों को सिकोड़कर वह ग्रिगोरी को निहारने लगा।

"ग्रिगोरी, तुम बहुत दुबले हो गये . . राशन-पानी का क्या हाल है तुम्हारे पास?"

"पेट भरने को है।"

दोनों चुप हो गये।

"चलो, मेरे यहा चलें। तुम्हे कुछ पढ़ने को दूंगा : क्षेत्रीय केन्द्र से अख़बार और किताबें मिली हैं।"

वे क़ब्रिस्तान से सटी सड़क पर जा रहे थे। राख के सलेटी ढेरों मे मुर्गियां नहा रही थी, कही ढेकली चरमरा रही थी और बस कानों में सन्नाटा गूंज रहा था।

"तुम आज यही रुक जाना। सभा होगी। लड़के तुम्हारे बारे में पूछ रहे थे कि ग्रिगोरी कहां है, क्या हाल-चाल हैं उसके? उनसे भी मिल लोगे . आज मैं अंतर्राष्ट्रीय स्थिति के बारे में व्याख्यान दूंगा... रात को मेरे यहा सोना और कल चले जाना। ठीक है?"

"मैं रात को नहीं ठहर सकता। दून्या अकेली झुंड को नही संभाल पायेगी। सभा में जाऊंगा और जैसे ही ख़त्म होगी रात को ही चला जाऊंगा।"

पोलीतोव की ड्योढ़ी में ठंडक थी।

सूखे सेबों की मीठी सुगंध और दीवारो पर टंगे जुओं और रासों से घोड़े के पसीने की बू आ रही थी।

कोने में – क्वास* से भरी लकड़ी की बालटी और पास ही में टेढ़ी चारपाई थी।

"यह रहा मेरा कोना : अंदर कमरे में गर्मी है ..."

पोलीतोव ने झुककर तिरपाल के नीचे से सावधानी के साथ

* रई नामक अनाज की डबलरोटी से बना पेय। – स०

'प्राव्दा' के पुराने अक और दो पुस्तिकाये निकाली।

उन्हे ग्रिगोरी को थमाकर उसने पैबद लगी बोरी का मुह खोला और बोला

"पकडो "

ग्रिगोरी बोरी का सिरा पकडे हुए था पर आखे अखबार की पक्तियो पर फिसल रही थी।

पोलीतोव मुट्ठी भर-भर कर आटा डाल रहा था। आधी भरी बोरी को ठसका देकर वह दौडा-दौडा कमरे मे गया।

बैकफैट के दो टुकडे लाया, बद गोभी के सूखे पत्ते मे लपेटकर उन्हे बोरी मे रख दिया और बुदबुदाया

"घर जाओगे तो यह लेते जाना!"

"नही, मै यह नही लूगा " ग्रिगोरी भडक उठा।

"कैसे नही लोगे?"

"कह दिया न लूगा "

"बौडम कही का!" पोलीतोव ग्रिगोरी पर नजरे गडाकर चिल्लाया। उसका चेहरा सफेद पड गया। "कहने को तो साथी कहलाता है! भूखा मर जायेगा पर चू नही करेगा। ले ले नही तो दोस्ती खतम आज से "

"मै तुम्हारे मुह का कौर नही छीनना चाहता "

"मुह का कौर छिने दुश्मनो का बाते " पोलीतोव ग्रिगोरी को गुस्से मे बोरी का मुह बाधते देखकर कुछ नर्म स्वर मे बोला।

सभा पौ फटने से कुछ पहले ही समाप्त हुई।

ग्रिगोरी स्तेपी मे चला जा रहा था। कधे पर आटे की बोरी का बोझ था, छिले पावो मे जलन हो रही थी पर वह प्रभात की लालिमा की ओर उत्साह और उमग के साथ कदम बढाता चल रहा था।

४

सुबह दून्या आग जलाने के लिये सूखा गोबर बीनने के लिये कुटिया से निकली। ग्रिगोरी ब्राड की ओर से सरपट दौडा आ रहा था। दून्या का माथा ठनका।

"क्या कुछ हो गया?"

"ग्रीशा की बछिया मर गयी ... और तीन ढोर बीमार पड़ गये।" दम लेकर बोला: "दून्या, जा गांव। ग्रीशा और बाक़ी लोगों को कह दे कि आज ही आ जायें ... ढोरों को बीमारी लग गयी है।"

जल्दी से सिर पर रूमाल बांधकर टीले के पीछे से उगते सूरज की ओर पीठ करके दून्या टेकरी के रास्ते चल पड़ी।

उसको विदा करके ग्रिगोरी धीरे-धीरे बाड़े की ओर चल पड़ा।

झुंड घाटी में चला गया था और बाड़ के पास तीन बछड़े पड़े थे। दोपहर को तीनो मर गये।

ग्रिगोरी पागलों की तरह झुंड और बाड़े के बीच दौड़ रहा था: और दो बछड़े बीमार पड़ गये ...

एक बछिया जोहड़ के पास कीचड़ में गिर गयी; ग्रिगोरी की ओर मुड़कर करुण स्वर में रंभाने लगी; सूजी आंखों मे आंसू भरे थे, उधर ग्रिगोरी के धूप से सावले गालो पर खारे आंसू टप-टप बह रहे थे।

सांझ ढलने पर दून्या मालिकों के साथ लौटी। ...

वृद्ध अर्तेमिच निर्जीव बछिया को लाठी से छूकर बोला.

"छूत की बीमारी है यह.. अब सारा झुंड बीमार हो जायेगा।"

खाल उतारकर लोथें उन्होंने जोहड़ से कुछ दूर गाड़ दीं। सूखी काली मिट्टी से छोटा-सा टीला बना दिया।

और अगले दिन फिर दून्या को गांव जाना पड़ा। एक साथ सात बछड़े बीमार पड़ गये।..

काले दिनो का तांता लग गया। बाड़ा सूना हो गया। ग्रिगोरी के मन में भी सूनापन छा गया। डेढ़ सौ डंगरों में से पचास बचे थे। छकड़ों पर मालिक आते, मरे बछड़ो की खाल उतारते, घाटी में उथले गड्ढे खोदते, खून में लथपथ लोथें मिट्टी से ढककर चले जाते। झुंड अनिच्छा के साथ बाड़े मे जाता, बछड़े खून और उनके बीच रेंगती अदृश्य मौत की अनुभूति से चीख-चीखकर रंभाते।

तड़के, जब सूखकर पीला पड़ा ग्रिगोरी बाड़े का चरमराता फाटक खोलता, झुड चरने के लिये जाते समय क़ब्रों के सूखे टीलों के बीच से होकर जाता।

सड़ते मांस की दुर्गंध, बेचैन ढोरों के खुरों से उड़ती धूल, उनका

असहाय क्रंदन छा जाता, और तपता सूरज धीरे-धीरे स्तेपी पार अपने अभियान पर चल पड़ता।

गांव से शिकारी आये। बाड़ के चारों ओर उन्होंने गोलियां चलायीं: भयंकर बीमारी को डराने के लिये। पर बछडे मरते ही जा रहे थे और हर दिन के साथ झुंड घटता ही जा रहा था।

ग्रिगोरी ने ध्यान दिया कि कहीं-कहीं क़ब्रें खुली हुई हैं, पास ही में चबी हड्डियां पड़ी हैं। रात को बछड़े बेचैन रहते, डरपोक हो गये थे।

रात की नीरवता में अचानक वहशी चीत्कार सुनायी पड़ता और झुंड बाड़ को तोड़ता बाड़े में दौड़ने लगता।

बछड़ों ने टहनियों से बनी बाड़ों को गिरा दिया, झुंड बनाकर कुटिया के पास आ जाते। आग के पास आहें छोड़ते, घास की जुगाली करते सो जाते।

ग्रिगोरी कुछ समझ नहीं पा रहा था। एक बार उसकी नींद कुत्ते के भौंकने मे टूटी। उसने चलते-चलते भेड़ की खाल का ओवरकोट पहना और झट से कुटिया के बाहर आया। वह बछड़ों की, ओस मे भीगी बग़लों से टकराया।

दरवाज़े के पास कुछ देर खड़े-खड़े उसने कुत्तों के लिये मीटी बजायी और उत्तर में उसे गद्यूची घाटी मे भेड़ियों का लम्बा समवेत चीत्कार सुनायी पड़ा। टीले गिर्द उगी झाड़ियों से एक और हुंकारा ...

कुटिया मे घुमकर उमने दीया जलाया।

"दून्या, सुन रही है?"

प्रात: तारों के साथ ये आवाज़ें भी बुझ गयी।

५

सवेरे इग्नात चक्कीवाला और मिख़ेई नेस्तेरोव आये। ग्रिगोरी कुटिया में बैठा चप्पलों की मरम्मत कर रहा था। बूढ़े अंदर आये। बूढ़े इग्नात ने टोपी उतारी, कुटिया के कच्चे फ़र्श पर पड़ती सूर्य की तिरछी किरणों की चमक से आंखें मिचमिचायीं और हाथ उठाया — वह कोने में लटकी, लेनिन की छोटी-सी तस्वीर के सामने सलीब का

निशान बनाना चाहता था। ध्यान से देखकर उसने अपना हाथ झट से जेब में ठूंस लिया। गुस्से में थूककर बोला:

"यह बात है... देव-प्रतिमा मतलब तेरे पास नही है? .."

"नही है..."

"उसके स्थान पर यह किसकी तस्वीर लटकी है?"

"लेनिन की।"

"तो यही वजह है हमारी मुसीबतों की.. भगवान यहां नही हैं इसीलिये बीमारी झट से आन पड़ी... इसी वजह से तो बछड़े मर गये .. ओहो-हो, हमारे महाराजाधिराज ..."

"दादा, बछड़े इसलिये मरे कि ढोरों के डाक्टर को नही बुलवाया।"

"पहले तुम्हारे डागडरों के बिना ही रहते थे .. बहुत अक़लमंद बनता है तू... पूजा-पाठ वग़ैरह करता तो ढोरों के डागडर की कोई जरूरत न पड़ती।"

मिख़ेई नेस्तेरोव नज़रें घुमाकर चिल्लाया:

"उतार दे यहां से इस अधर्मी की तस्वीर! . तेरी वजह से, पापी, झुंड मर गया।"

ग्रिगोरी का चेहरा हल्का-सा सफ़ेद पड गया।

"अपने घर चलाना हुक्म.. गला फाड़ने की ज़रूरत नही... यह सर्वहारा के नेता है..."

मिख़ेई नेस्तेरोव को ताव आ गया, वह तमतमाकर चिल्लाया:

"हमारा खाता है—हमारी तरह ही कर .. जानते है हम तुम जैसों को . देखते रहना, नही तो जल्दी ही अक्ल ठिकाने लगा देंगे।"

उन्होने बाहर निकलकर टोपी पहनी और बिना कुछ कहे चले गये।

दून्या सहमी-सहमी भाई का मुंह ताकती रह गयी।

एक दिन बाद तीख़ोन लोहार गांव से आया, अपनी बछिया को देखने के लिये।

कुटिया के पास उकड़ूं बैठकर सिगरेट पीता हुआ, कड़वी मुस्कान के साथ बताने लगा:

"ज़िंदगी हमारी बहुत बुरी है .. पुराने अध्यक्ष को हटा दिया है, अब मिख़ेई नेस्तेरोव का दामाद हुक्म चलाता है। बस, अपने ढर्रे पर लौटा रहे हैं... कल ज़मीन का बंटवारा कर रहे थे: जैसे ही किसी

ग़रीब के हिस्से अच्छी ज़मीन आती वे फिर से बंटवारा शुरू कर देते। अमीर फिर से हमारी गर्दन पर बैठ रहे हैं... ग्रिगोरी प्यारे, सारी बढ़िया ज़मीनें उन्होंने ख़ुद हथिया लीं। और हमारे हिस्से दुम्मट ज़मीन पड़ी... ये बातें हैं..."

ग्रिगोरी आधी रात तक आग के पास बैठा हुआ मकई के चौड़े-चौड़े पीले पत्तों पर कोयले के टुकड़े से लिखता रहा। उसने ज़मीन के अन्यायपूर्ण बंटवारे के बारे में लिखा, यह भी लिखा कि ढोरों की बीमारी का इलाज जानवरों के डाक्टर से करवाने के बजाय गोलियां चलायीं। लिखावट से भरे मकई के पत्तों का बंडल तीख़ोन लोहार को थमाते हुए बोला :

"अगर शहर जाना हुआ तो पूछ लेना कि 'क्रास्नया प्राव्दा' अख़बार कहां छपता है। उन्हें यह दे देना... मैंने विस्तार से लिखा है, बस मोड़ना नहीं, नही तो कोयला मिट जायेगा.. "

लोहार ने अपनी जली, कोयले से काली उंगलियो से खड़खड़ाती पत्तियों को संभालकर पकड़ा और दिल के पास क़मीज़ के अंदर छिपा लिया। विदा लेते हुए वह उसी मुस्कान के साथ बोला :

"पैदल जाऊंगा शहर, शायद वहा मुझे सोवियत सत्ता मिल जाये.. तीन दिन में मैं डेढ़ सौ वेर्स्ता का रास्ता तय कर लूंगा। एक हफ्ते बाद लौटते ही तुम्हे ख़बर कर दूगा..."

६

बारिशों और नम कोहरे के साथ पतझड़ का मौसम आ गया था।

दून्या खाने का सामान लाने के लिये सवेरे से गांव गयी हुई थी।

बछडे पहाड़ी की ढलान पर चर रहे थे। ग्रिगोरी कंधों पर चोग़ा डाले उनके पीछे-पीछे चल रहा था, हथेली में वह मुरझायी घास के डंठलो को मसल रहा था। पतझड़ की छोटी सांझ से कुछ पहले टीले से दो घुड़सवार उतरे।

घोड़ों के खुरों की छप-छप सुनायी दी और वे ग्रिगोरी के पास चले आये।

ग्रिगोरी ने उन्हें पहचान लिया। एक अध्यक्ष था — मिख़ेई नेस्तेरोव का दामाद और दूसरा इग्नात चक्कीवाले का बेटा था।

उनके घोड़े झाग से ढके थे।

"नमस्ते, चरवाहे! "

"नमस्ते! "

"हम तुम्हारे पास आये है "

अध्यक्ष घोडे की जीन पर बैठे-बैठे बडी देर तक अपनी ठड मे ठिठुरी उगलियो से फौजी ग्रेटकोट के बटन खोलता रहा, उसने अखबार का पीला पृष्ठ निकाला और हवा मे उसे खोलकर बोला

"तूने यह लिखा था?"

जमीन के बटवारे, ढोरो की बीमारी के बारे मे मकई के पत्तो से उतरे शब्द ग्रिगोरी की आखो के सामने तैरने लगे।

"चल, हमारे साथ!"

"कहा?"

"यही, घाटी मे एक बात करनी है " अध्यक्ष के नीले होठ फडक रहे थे, आखे इधर-उधर दौड रही थी।

ग्रिगोरी मुस्कराकर बोला "जो कहना है, यही कह दो।"

"यहा भी कह सकते है अगर तू चाहता है "

उसने जेब मे पिस्तौल निकाली मचलते घोडे की लगाम खीचते हुए वह फटे स्वर मे चिल्लाया "कमीने अखबारो मे लिखेगा तू?"

"तुम यह क्यो कर रहे हो? "

"इसलिये कि तेरी वजह से मुझ पर मुकदमा चलेगा! चुगली करेगा? बोल, कम्युनिस्ट हरामी! "

उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना उसने ग्रिगोरी के बद मुह पर गोली चला दी।

ग्रिगोरी पिछली टागो पर खडे घोडे के नीचे ढह गया, आह भरकर उसने अकडी उगलियो से पीली-नम घास का गुच्छा उखाडा और चिर-निद्रा मे सो गया।

इग्नात चक्कीवाले का बेटा जीन से कूदकर उतरा, उसने मुट्ठी मे काली मिट्टी उठायी और फेनिल खून से भरे मुह मे ठूस दी

स्तेपी तो अपार है, भला कभी किसी ने उसे नापा है। यहा असख्य सडके और पगडडिया बिछी है। पतझड की रात अधेरे से भी काली है और बारिश तो घोडो के खुरो के निशान बिलकुल मिटा देगी।

स्तेपी की सडक है, फुहार पड रही है, झुटपुटा छाया है।

उस राही को चलने मे क्या कठिनाई जिसके कधे पर टगे नन्हे-से झोले मे जौ की रोटी का टुकडा और हाथ मे लाठी है।

दून्या मडक के किनारे-किनारे जा रही है। हवा फटी जाकट के पल्लुओ को फडफडा रही है, पीछे से रुक-रुककर धक्का दे रही है।

चारो ओर बियाबान मनहूस स्तेपी फैली है। अधेरा छाने लगा है।

सडक से कुछ दूर टीला दृष्टिगोचर होता है और उस पर जगली घास के बिखरते छप्परवाली कुटिया।

दून्या शराबियो की तरह लडखडाती हुई धसी कब्र के पास जाती है और औधे मुह उस पर लेट जाती है।

रात घिर आयी है

दून्या सीधे स्टेशन जानेवाले रास्ते पर चलती जा रही है।

उसको चलने मे कोई कठिनाई नही हो रही क्योकि कधे पर लटके झोले मे जौ की रोटी का टुकडा, स्तेपी की कसैली धूल की गध छोडती फटी-पुरानी किताब और भाई ग्रिगोरी की सूती कमीज है।

जब दिल उदासी मे भर जाता है, आसुओ से आखे जलने लगती है, तब वह कही एकात मे, परायी नजरो मे छिपाकर झोले से मैली कमीज निकालती है उसे चेहरे से सटा लेती है और भाई के पसीने की सुखद गध को महसूस करती है देर तक वह ऐसे ही पडी रहती है

एक के बाद एक बेस्ती पीछे छूटते जा रहे है। स्तेपी के बीहडो मे भेडियो का चीत्कार सुनायी पड रहा है और दून्या सडक के किनारे-किनारे चली जा रही है, वह शहर जा रही है, जहा सोवियत सत्ता है, जहा सर्वहारा पढते है ताकि अपने जनतत्र का सचालन करना सीख सके।

लेनिन की पुस्तक मे यही कहा गया है।

हरामी

मीश्का ने स्वप्न मे देखा कि दादा ने बगीचे मे चेरी की एक अच्छी कमची काट ली है। वे कमची, हिलाते हुए उसकी तरफ आ रहे है और डाटते हुए कह रहे है

"हा, इधर तो आ जरा मिखाईल फोमीच! अगर तेरे चूतड़ो पर मार-मारकर यह कमची न तोडी तो कहना!"

'किसलिये दादा?" मीश्का ने पूछा।

'इसीलिये कि तूने कलगीवाली मुर्गी के दरबे से सारे अण्डे चपत कर दिये और उन्हे ले गया हिण्डोले पर झूलने के लिये!"

दादा, इस साल तो मै हिण्डोले पर एक बार भी नही झूला!" मीश्का डर के मारे चीख उठा।

मगर दादा ने अकडकर अपनी दाढी पर गम्भीर ढग से हाथ फेरा और पाव पटककर धमकाते हुए बोले

"शरारती कही का! कर पाजामा ढीला, तेरी चमडी उधेडू!"

मीश्का चीख उठा और उसकी आख खुल गयी। उसका दिल जोर से धक धक कर रहा था मानो सचमुच ही कमचियो से खबर ली गयी हो। बडी होशियारी से उसने बायी आख खोली। देखा कि घर मे उजाला हो चुका है। सुबह की किरणे खिडकियो से झाक रही थी। मीश्का ने सिर उठाया तो उसे ड्योढी मे से कइ आवाजे सुनायी दी – मा खुशी से चीख रही थी, कुछ कहती जा रही थी, हसी के मारे उसका बुरा हाल हुआ जा रहा था, दादा खास रहे थे और एक अजनबी-सी आवाज भी सुनायी दे रही थी, "बू-बू-बू "

मीश्का ने आखे मली और देखा – दरवाजा खुला, जोर से बन्द हुआ, दादा लपककर भीतर आये, उछलते हुए। उनका चश्मा उनकी नाक पर नाच रहा था। मीश्का ने सोचा कि भजनीको के साथ पादरी आये होगे (ईस्टर के दिनो मे जब पादरी आते थे तो दादा इसी तरह

भागे-भागे फिरा करते थे)। दादा के पीछे-पीछे एक लम्बा-तडगा और हट्टा-कट्टा फौजी अन्दर आया। वह काला फौजी कोट और फीतोवाली टोपी पहने था। मा उसके गले से लिपटकर रो रही थी।

घर के ठीक बीच मे इस अजनबी ने मा को झटककर गले से अलग किया और ऊची आवाज मे पूछा

"कहा है मेरी सन्तान?"

मीश्का घबराकर कम्बल के नीचे दुबक गया।

"तुम क्या सो रहे हो? अरे बेटा तेरा बाप फौज से आया है," मा ने पुकारकर कहा।

मीश्का आख भी न झपका पाया कि फौजी ने उसे जा दबोचा, छत तक उछाल दिया और फिर सीने से चिपका लिया। वह जब उसे अपनी लाल-लाल मूछो से प्यार करने लगा तो बस कुछ न पूछिये – होठो, गालो और आखो की मुसीबत ही आ गयी। मूछे उसकी कुछ-कुछ नम थी, नमकीन-सी। मीश्का ने छूट निकलने की पूरी कोशिश की, मगर उसकी एक न चली।

"अरे वाह, तू तो अच्छा-खासा बोल्शेविक हो गया है! जल्द ही बाप से बाजी मार जायेगा! हो-हो-हो!" बाप जोर से हसा और लगा मीश्का को झुलाने – कभी हाथो पर बिठा चक्कर दिलाये और फिर कभी छत तक उछाल दे।

मीश्का सहन करता रहा, सहता रहा और फिर दादा की तरह उसने भौहे सिकोडी और शरीर को अकडा लिया। उसने बाप की मूछे पकड ली।

"छोड दो मुझे, बापू!"

"नही छोडने का!"

"छोड दो! मै बडा हो गया हू और तुम मुझे बिल्कुल छोटे बच्चे की तरह उछाल रहे हो!"

बाप ने बेटे को घुटनो पर बिठा लिया और मुस्कराते हुए पूछा

"कितने साल का हो गया है रे पिस्तौल तू?"

"आठवा चल रहा है," सिकोडी हुई आखो से देखते हुए मीश्का ने अनिच्छा से कहा।

"याद है न बेटे कि दो साल पहले जब मै आया था तो कैसे

मैंने तुझे जहाज़ बना-बनाकर दिये थे? कैसे हमने तालाब मे वे जहाज़ चलाये थे?"

"याद है! " मीश्का ने झट मे जवाब दिया और कुछ झिझकते हुए अपनी दोनो बाहे बाप के गले मे डाल दी।

बस फिर क्या था खूब रग जमा। बाप ने मीश्का को कधे पर बिठाया, पैरो से पकडा और कमरे मे दे चक्कर पर चक्कर। कभी वह दुलकी चले तो कभी घोडे की तरह हिनहिनाये। मीश्का तो खुशी के मारे हाफने लगा। मा उसकी आस्तीन खीचने और जोर जोर से चिल्लाकर कहने लगी

"अरे जा, बाहर जाकर खेल! अरे सुनता नही दुष्ट, कह रही ? कि बाहर जाकर खेल!" फिर उसने बाप से कहा, "छोड दो अब इसे फोमा अकीमिच! छोड भी दो! यह तो तुम्हे, मेरे प्रिय को, आख भरकर देखने भी नही देगा। दो बरस से आखे तरस गयी है तुम्हे देखने को और तुम हो कि इसी मे उलझे हुए हो!"

बाप ने मीश्का को नीचे उतार दिया और कहा

'जा भाग, जाकर अपने दोस्तो मे खेल-कूद। जब लौटेगा तो तुझे मिठाई खिलाऊगा।'

मीश्का ने दरवाजा खोला और बाहर! पहले तो यह ख्याल आया कि ड्योढी मे खडा रहकर कान लगाये और सुने कि कमरे मे क्या बातचीत होती है। मगर तभी याद आया कि बाप के घर लौटने की खबर तो किसी भी बच्चे को मालूम नही। ऐसी खबर न बतायी जाये भला? और बस वह नजर आया अहाते मे, और फिर घर के बगीचे मे लगे आलुओ के पौधो को फादता हुआ तालाब पर जा पहुचा।

तालाब के ठहरे हुए और बदबूदार पानी मे मीश्का ने गोते पर गोते लगाये। फिर वह रेत पर लोटा-पोटा और उसने आखिरी बार गोता लगाया। फिर वह एक टाग पर कूदा और उसने पाजामा ऊपर खीचा। वह घर जाने को बिल्कुल तैयार ही था कि पादरी का बेटा वीत्का उसके पास आ पहुचा।

"मीश्का, थोडी देर और रुक जा! आ हम साथ-साथ गोते लगाये और फिर हमारे घर चलकर खेलेगे। माता जी तुझे हमारे घर आने से नही रोकती।"

मीश्का ने खिसक रहे पाजामे को बाये हाथ मे खीचा, कधे पर की पट्टी ठीक की और कहा

"मैं तेरे साथ खेलना नही चाहता। तेरे कान सड़े रहते है!.."

वीत्का ने बदले की भावना से आंख सिकोड़ी और अपने हड़ीले कंधे से खीचकर क़मीज़ उतारते हुए कहा:

"यह तो कनपेड़ा है। पर तू किम मुंह मे बात करता है, रे गंवार, तेरी मा ने तो तुझे बाड़ तले जना था!"

"तू देखने गया था न?"

"सुना है मैंने तो। हमारी बावर्चिन ने बताया था मेरी माता जी को।"

मीश्का ने पांव से मिट्टी कुरेदी और वीत्का को सिर मे पाव तक देखा।

"बकवाम करती है तेरी माता जी! मेरे बापू तो लडाई लडकर आये हैं और तेरा बाप हरामख़ोर है, बैठा-बैठा पराया माल हड़पता रहता है!"

"हरामी!" पादरी के बेटे ने रुआंसा होकर कहा।

मीश्का ने जैसे ही पानी से घिमा हुआ एक पत्थर उठाया कि पादरी का बेटा अपने आमुओ को रोकता हुआ मधुरता मे मुस्कराया:

"लड़ नही मुझमे मीश्का, बुरा मत मान! अगर तू चाहे तो मैं तुझे अपना चाकू दे मकता हूं। अच्छे लोहे का बना हुआ है!"

मीश्का की तो खुशी से बाछे खिल गयी। उसने पत्थर एक तरफ को फेंक दिया। मगर तभी उमे अपने बाप के घर लौटने की बात याद आयी। उसने गर्व मे कहा:

"मेरे बापू तेरे चाकू मे भी बढ़िया चाकू लाये हैं मेरे लिये, लडाई के मोर्चे मे!"

"झू-ऊ-ठ बोलता है!" विश्वाम न करते हुए वीत्का ने "झू" को लबा खीचकर कहा।

"तू खुद है झूठा! जब कह रहा हू कि लाये है तो इसका मतलब है कि लाये है! मचमुच की बन्दूक़ भी लाये है.."

"अरे वाह, तब तो तेरे बड़े ठाठ हैं!" वीत्का ने उसकी खिल्ली उड़ायी।

"उनके पाम तो एक टोपी भी है जिम पर फ़ीते टंके हुए है और सुनहरे अक्षर लिखे हैं, ठीक वैमे ही, जैसे तेरी किताबों में है!"

वीत्का देर तक सोचता रहा कि क्या कहे कि मीश्का दग रह जाये। उसने माथे पर बल डाले और अपना पेट खुजाया। आखिर बात सूझी।

"मेरे पिता जी तो बस जल्दी ही बडे पादरी बननेवाले है और तेरा बाप – वह तो था चरवाहा, ढोर चराता था। अब बोल? "

मीश्का तग आ गया था। वह मुडा और बगीचे की तरफ चल दिया। पादरी के बेटे ने उसे पुकारा

"मीश्का रे मीश्का! सुन तुझे एक बात बताऊ!"

"बता।"

"यहा आ, मेरे पास!"

मीश्का उसके पास गया और आशका से उसे देखने लगा

"हा, तो बता!"

पादरी का बेटा अपनी पतली और टेढी-मेढी टागो से रेत पर नाचा, मुस्कराया और मीश्का को चिढाने की नीयत से ऊचे स्वर मे कह उठा

"तेरा बाप कम्युनिस्ट है! जैसे ही तू मरेगा और तेरी आत्मा उडकर आसमान में पहुचेगी तो भगवान कहेगा – 'चूकि तेरा बाप कम्युनिस्ट था, इसलिये तेरी जगह जहन्नुम मे है!' वहा शैतान तुझे पकडकर कडाही मे भूनना शुरू कर देगे!"

"और तू यह समझता है कि शैतान तुझे छोड देगे?"

"मेरे पिता तो पादरी है! तू बिल्कुल बुद्धू है, अनपढ गवार है! कुछ भी तो नही समझता "

मीश्का को डर ने आ दबोचा। वह मुडा और चुपचाप घर की ओर दौड चला।

अहाते की बाड के करीब पहुचकर वह रुक गया। वहा से उसने चीखकर पादरी के बेटे को आवाज दी और घूसा दिखाते हुए कहा

"अभी जाकर पूछता हू दादा से। अगर झूठ निकला तो बस फिर कभी हमारे अहाते के पास से मत गुजरना!"

मीश्का बाड लाघकर अहाते मे पहुचा घर की तरफ लपका। उसकी आखो के सामने घूम रही थी कडाही और कडाही मे भूना जा रहा था वह खुद मीश्का वह गर्म-गर्म कडाही मे बैठा है और चारो ओर मलाई उभड-उभड भाप छोड रही है। डर के मारे उसके

रोंगटे खडे हो गये। जल्दी से जाना चाहिये दादा के पास, पूछना तो चाहिये।

फाटक मे तो जैसे जान-बूझकर सूअर फसा हुआ था। उसकी गर्दन एक तरफ थी और बाकी हिस्सा था दूसरी तरफ। वह खुरो को जमीन पर टेके था, दुम हिलाता हुआ बुरी तरह चिल्ला रहा था। मीश्का ने चाहा कि सूअर को मुसीबत से बचाये। उसने फाटक खोलना चाहा, मगर सूअर बहुत जोर से खरखराने लगा। वह सूअर की पीठ पर चढ बैठा। सूअर ने अपना पूरा जोर लगाया, फाटक टूटकर अलग जा गिरा। सूअर वहा से भागा, अहाता लाघता हुआ खलिहान की ओर बढ चला। मीश्का ने उसके पेट मे एड़िया मारनी शुरू की। सूअर उड चला, मीश्का के बाल हवा मे लहराने लगे। मीश्का खलिहान के पास पहुचकर सूअर की पीठ से कूदकर नीचे उतरा। उसने देखा कि दादा ड्योढी की देहरी पर खडे है और उगली से इशारा करके उसे बुला रहे है।

"इधर आना जरा मेरे पास, मेरे बेटे!"

मीश्का समझ न पाया कि दादा उसे क्यो बुला रहे है। मगर तभी उसे नरक की कड़ाही की याद आ गयी। वह तेजी से भागा दादा की तरफ।

"दादा, प्यारे दादा, क्या आसमान पर शैतान होते है?"

"ठहर, अभी चखाता हू तुझे शैतान का मजा! अरे ओ पाजी, तू सूअर पर क्यो चढा फिर रहा था?"

दादा ने मीश्का के बाल पकड लिये और आवाज देकर घर के अन्दर से मा को बुलाया

"जरा बाहर आकर अपने लाडले को तो देखो!"

मा हडबडायी हुई आयी।

"क्यो डाट-डपट रहे हो?"

"क्यो डाट-डपट रहा हू? यह हजरत अहाते मे सूअर की सवारी कर रहे थे, धूल फाकते फिर रहे थे! "

"अरे हाय! तू गाभिन सूअर पर चढा फिर रहा था?" मा तो चीख उठी।

मीश्का अपनी सफाई देने को मुह भी न खोल पाया कि दादा ने कमर से पेटी खोल ली। बाये हाथ मे वे कमरबन्द थामे रहे कि कही

पाजामा न फिसल जाये और दाये हाथ से उन्होंने मीश्का का सिर अपने घुटनो मे दबाया और लगे मरम्मत करने। पिटाई करते जाते थे और साथ ही डाटते जाते थे

"खबरदार जो अब फिर कभी सूअर की सवारी की खबरदार! "

मीश्का का मन हुआ कि जोर से चीखे, मगर दादा ने डाटा

"कुत्ते के पिल्ले, सोने नही देगा अपने बापू को? वह थका-हारा आया है सफर से। जरा आख लगी है और अब तू गला फाडेगा?"

मजबूर होकर चुप रह जाना पड़ा। मीश्का ने दादा को लात मारने की कोशिश की, मगर यह कोशिश भी कारगर न हुई। मा ने दादा से मीश्का का पिड छुड़ाया और मकान के अन्दर धकेल दिया।

"बैठ यहा, तेरी मा को शैतान ले जाये! ऐसी चमडी उधेड़ूगा तेरी कि दादा की मार भूल जायेगा!"

दादा रसोईघर मे तख्ते पर बैठे थे। वे रह-रहकर मीश्का की पीठ को देख रहे थे।

मीश्का दादा की ओर घूमा, मुट्ठी म मलकर उसने आखिरी आसू पोछा और दरवाजे के साथ पीठ सटाकर कहा

'अच्छा दादा तुम भी याद रखना!"

"अरे पाजी, तू क्या अपने दादा को डराना-धमकाना चाहता है?'

मीश्का ने देखा कि दादा फिर से पेटी खोलने लगे है। उसने भी होशियारी से थोडा-सा दरवाजा खोल लिया।

'हा, तो तू मझे डराने-धमकाने चला है?' दादा ने फिर से पूछा।

मीश्का झटपट दरवाजे के पीछे गायब हो गया। वह दरवाजे की दरार के साथ आख लगाकर दादा की हर गतिविधि को ध्यान से देखने लगा। फिर बोल उठा

"कुछ दिन और ठहर जाओ, कुछ दिन और, दादा जी! फिर तुम्हारे दात गिर जायेगे। तब मै तुम्हे कौर चबा-चबाकर नही दूगा! तब तुम मुझसे कहना भी नही!"

दादा बाहर आये। देखा कि बगीचे मे सन के झबरीले पौधो के बीच से मीश्का का सिर और नीला पाजामा झलक दिखा रहा है।

दादा देर तक उसे बैमाखी दिखा दिखाकर धमकाते और दाढी मे अपनी मुस्कान छिपाते रहे।

* * *

बाप के लिये मीश्का – मीन्का था। मा उसे बुलाती थी – मीन्युश्का। दादा को जब प्यार आता तो वह उनकी नजर मे शरारती लडका होता। बाकी ममय जब दादा की मुरझायी-सी मफेद भौहे आखो पर लटकी-सी रहती तो वे उसे पुकारते और कहते, "अरे ओ मिखाईल फोमीच, इधर आ, जरा तेरे कान गर्म कर दू!"

बाकी लोग, जैमे कि इधर-उधर की बाते उडानेवाली पडोसिने, छोकरे और गली-मोहल्लेवाले उसे मीश्का या "हरामी" कहकर बुलाते।

मा कुवारी ही थी कि मीश्का ने जन्म लिया था। महीने भर बाद बेशक फोमा चरवाहे से उसकी शादी हो गयी थी। उमी का यह बच्चा था। मगर बदनामी भरा यह "हरामी" शब्द मदा के लिये मीश्का के नाम के साथ जुडकर रह गया था।

मीश्का मीख-सलाई-सा था। वसन्त के दिनो मे मीश्का के बाल खिलते हुए मूरजमुखी के फूल की पखुडियो की तरह पीले पड जाते। जून महीने का मूरज उन्हे झुलसाकर उलझे-झबरीले बना देता। मीश्का के गाल चिडिया के अडो जैसे लगते, जहा-तहा बुन्दकिया पडी हुई। रही नाक तो वह तेज धूप और तालाब मे बार-बार गोते लगाने से छिली रहती और उमकी चमडी फटी रहती। इम धनुषाकार टागोवाले मीश्का की सिर्फ आखे ही सुन्दर थी। तग पपोटो मे मे उसकी नीली और शरारती आखे यो चमकती जैसे नदी मे बर्फ के वे टुकडे जो अभी पिघले न हो।

बाप को मीश्का की दो चीजे पमन्द थी – एक तो उसकी सुन्दर आखे और दूसरे उमका घडी भर को भी टिककर न बैठना। फौज मे वह उसके लिये दो उपहार लाया था – एक तो बिस्कुट जो काफी ममय तक रखा रहने के कारण सूखकर पत्थर हो गया था और दूमरा, थोडे-मे घिसे हुए ऊचे बूटो का जोडा। बूट तो मा ने तौलिये मे लपेटकर सन्दूक मे रख दिये और बिस्कुट को मीश्का ने देहली पर रखकर हथौडे मे तोडा और उसका आखिरी कण तक हडप गया।

दूसरे दिन जैसे ही सूरज निकला कि मीश्का भी उठ बैठा। उसने लोहे के पतीले मे से चुल्लू भर गर्म पानी लिया और पिछले दिन का मैल मैले-कुचैले गालो पर फैला डाला। मुह सुखाने के लिये वह बाहर दौड गया।

मा गाय की सेवा मे जुटी हुई थी, दादा पुश्ते पर बैठे थे। मीश्का पर नजर पडते ही उसे आवाज दी

"अरे शरारती, जा भागकर खत्ती मे जा। वहा मुर्गी कुडकुडायी है, अडा दिया होगा।"

मीश्का दादा का हुक्म बजाने को सदा तैयार रहता था–हाथो-पैरो के बल आन की आन मे जा पहुचा खत्ती मे। इधर से गया, उधर से रेगा और यह जा और वह जा! भाग लिया तालाब की ओर! भागता था और देखता जाता था कि कही दादा तो नही देख रहे है? बाड तक पहुचते बिच्छू बूटी ने काट लिया, टागे जैसे जल ही तो गयी। दादा बैठे रहे राह देखते हुए, खीझते हुए। जब सब्र का प्याला छलक गया तो खुद घुसे खत्ती मे। जगह-जगह मुर्गियो की बीट चिपक गयी। भीतर घुप अन्धेरा था। बडे मिया टटोलते हुए जो आगे बढे तो शहतीरो से जोर से सिर टकराया। आखिर रेगकर दूसरी ओर के सिरे पर जा पहुचे।

"अरे ओ उल्लू रे, मीश्का, क्या कहू तुझे! ढूढ रहा है, ढूढ रहा है और कुछ पल्ले नही पडेगा तेरे! अरे मूर्ख, मुर्गी क्या वहा जाकर अडा देगी? यही पत्थर के नीचे होगा अडा। तू कहा रेगता फिर रहा है शरारती?"

दादा कहते गये, मगर जवाब मे छायी रही खामोशी। उन्होने अपने कपडो से बीट झाडी और खत्ती से निकल आये। आखे सिकोडकर देर तक तालाब की ओर देखते रहे। आखिर मीश्का को देख लिया और हताश होकर हाथ झटक दिया।

बालको ने तालाब के निकट मीश्का को घेर लिया और लगे पूछने

"तेरा बाप लडाई पर गया था?"

"गया था।"

"क्या करता रहा वह वहा?"

"करता क्या रहा, लडता रहा!"

"तू बकता है! वह वहा जूए मारता और रसोईघर मे हड्डिया चूसता रहा!"

बालको न जोर का ठहाका लगाया, मीश्का को उगलियो मे कोचने और उसके गिर्द उछलने-कूदने लगे। खीझ और अपमान से मीश्का की आखो मे आसू आ गये। तिस पर पादरी के बेटे वीत्का ने एक और तीर छोडा

"तेरा बाप कम्युनिस्ट है न?" उसने पूछा।

"मालूम नही"

"मै जानता हू कि वह कम्युनिस्ट है। मेरे पिता जी आज सुबह कह रहे थे कि तेरे बाप ने शैतान के हाथ अपनी आत्मा बेच दी है। उन्होंने यह भी कहा था कि सभी कम्युनिस्टो को शीघ्र ही फासी दी जायेगी!"

बालक चुप हो गये, मीश्का का दिल बैठ गया। मेरे बापू को फासी दी जायेगी—पर किस लिये? उसने जोर से दात पीसे और कहा

"मेरे बापू के पास बहुत बडी बन्दूक है सभी बुर्जुआ को उडा देगा!"

वीत्का एक पैर आगे की तरफ बढाकर बडी शान से बोला

"कुछ नही बनेगा उसके किये-धरे! मेरे पिता जी उसे आशीष ही नही देगे। बिना आशीष के वह कुछ नही कर पायेगा!"

दूकानदार के बेटे प्रोश्का ने नथुने फुलाकर मीश्का की छाती मे मुक्का मारा और चीखकर कहा

"तू अपने बाप की शान मे मत रहना! जब क्रान्ति हुई थी तो वह मेरे बाप का माल उठा ले गया था। मेरे पिता ने कहा था—'सरकार लौट आयेगी तो मै चरवाहे फोमा को ही सबसे पहले खत्म करूगा!'"

प्रोश्का की बहन नताशा ने पैर पटककर कहा

"करो इसकी मरम्मत, देख क्या रहे हो?"

"मारो इस कम्युनिस्ट के बेटे को!"

"हरामी!"

"प्रोश्का, दिखाओ इसे तारे!"

प्रोश्का ने कमची घुमायी और कसकर मीश्का के कधे पर रसीद

की। पादरी के बेटे वीत्का ने लगडी मारी और मीश्का रेत पर चारो खाने चित हो गया।

बालक खूब जोर मे चिल्लाये और मीश्का पर टूट पडे। नताशा अपनी बारीक आवाज मे शोर मचाती हुई झपटी और मीश्का की गर्दन नोचने लगी। किसी ने कमकर मीश्का के पेट मे लात जमायी।

मीश्का ने जोर लगाकर प्रोश्का को अपने ऊपर मे धकेला, उछलकर खडा हुआ और शिकारी कुत्तो मे बचकर भागते हुए खरगोश की तरह घर की तरफ झपटा। उमके पीछे मीटिया बजती रही उम पर पत्थर फेका गया। मगर उमका पीछा किमी ने नही किया।

मीश्का ने पटुए के हरे भरे कुज मे पहुचकर ही दम लिया। पटुए के पौधे उमके मिर मे ऊचे थे। वह मीली और मोधी जमीन पर बैठ गया और नोची-खमोटी हुई गर्दन मे खून माफ करते हुए रो पडा। ऊपर, पत्तियो क बीच मे धूप छन रही थी, वह मीश्का की आखो म झाकने के लिये बेचैन थी। धूप ने उमके गालो से आसू मोख लिये और उमके उठे हुए लाल बालो को मा की तरह प्यार मे चूमती रही।

मीश्का देर तक इमी तरह वहा बैठा रहा। जब आखे मूख गयी तो वहा मे उठा और चुपचाप आगन म पहुचा।

पिता छानी मे बैठा हुआ छकडे के पहिये को तेल लगा रहा था। उमकी टोपी खिसककर गुद्दी पर पहुच गयी थी, फीते लटक रहे थे और वह सफेद धारियोवाली नीली कमीज पहने था। मीश्का नजर बचाकर पिता के पाम पहुचा और छकडे के करीब आकर खडा हो गया। देर तक वह चुप्पी साधे रहा। फिर उमने हिम्मत करके बाप का हाथ छुआ और फुमफुमाते हुए पूछा

"बापू, तुम लडाई पर गये थे तो वहा क्या करते रहे?"

अपनी लाल मूछो के बीच मुस्कराते हुए पिता ने जवाब दिया

"लडाई लडता रहा बेटे!"

"मगर लडके लडके कहते है कि तुम वहा मिर्फ जूए मारते रहे!"

आमुओ से मीश्का का गला रुध गया। बाप हम दिया और उमने मीश्का को हाथो पर उठा लिया।

"मेरे बेटे, वे बकते है! मै तो जहाज पर था। उस बडे जहाज पर जो ममुद्र मे चलता है। मै उमी मे था और फिर लडने गया।"

"किससे तुमने लडाई लडी?"

"धन-दौलतवालो से, मेरे लाल! तू अभी बहुत छोटा है! इसी-लिये मुझे लडना पडा तेरे बजाय। इसके बारे मे तो गाना भी गाया जाता है।

बाप मुस्कराया, मीश्का की ओर देखते हुए पैरो से ताल देकर गाने लगा

अरे मिखाईल, मेरे बेटे,
मत जा रे तू लाम पर
मेरी मास अभी बाकी है
जीवन की मै सभी बहार देख चुका हू
तू तो खिलता फूल अभी है
अभी तुझे शादी करनी है
मेरे लाल मेरे लाल

बालको की हरकत से मीश्का को जो दुख हुआ था, अब वह उसे भूल गया। अब उसे इस बात पर हसी आ गयी कि बाप की मूछे उसके होटो पर मूज के उन रेशो की भाति अकडी हुई थी जिनसे मा झाड बनाती है। मूछो के नीचे जब होठ हिलते-डुलते थे तो देखने से हसी आती थी और जब मुह खुलता था तो अन्दर एक गोल और काला-सा छेद नजर आता था।

"तू इस वक्त मेरे काम मे खलल मत डाल मीश्का," बाप ने कहा, "अभी मुझे छकडे की मरम्मत कर लेने दे और रात को सोते वक्त मै तुझे लडाई की सभी बाते सुनाऊगा।"

* * *

दिन लम्बा होता चला गया, स्तेपी के सुनसान लम्बे रास्ते की तरह। सूरज ने अपना किरणजाल समेटा और घोडो का झुण्ड गाव से गुजर गया। धूल बैठ गयी और सवलाये हुए आकाश मे पहले सितारे ने लजाते हुए धरती की ओर देखा।

मीश्का के मन को चैन नही था, और मा जैसे कि जान-बूझकर देर करती जा रही थी। वह देर तक दूध दुहती रही, देर तक उसे छानती रही, फिर तहखाने मे गयी तो वही घण्टा भर गुम रही।

मीश्का को करार नही था, वह मा के इर्द-गिर्द चक्कर काटता फिर रहा था।

"जल्द ही खाना दोगी न मा?"

"जरा सब्र कर रे! मिल जायेगा खाना, मरा क्यो जा रहा है!"

मगर मीश्का उसके पीछे-पीछे लगा रहा। मा तहखाने मे जाये तो वह भी उसके पीछे, मा रसोईघर जाये तो वह भी वहा हाजिर। जोक की तरह चिपक गया मा का दामन पकडे।

"मा मा जरा जल्दी से खाना दे दो!"

"अरे कह तो दिया! पेट मे आग लगी है तो जा, जाकर रोटी का टुकडा लेकर खा ले!"

मगर मीश्का सुनी-अनसुनी करता रहा। मा ने गुद्दी पर एक चपत जमा दिया, मगर इसमे भी कोई फर्क नही पडा।

मीश्का ने रात का खाना हडबडी मे जैसे-तैसे गले के नीचे उतारा और फटाफट जा पहुचा सोने के कमरे मे। पाजामा उतारकर उसने सन्दूक के पीछे काफी दूर फेक दिया और बिस्तर मे मा की रजाई के नीचे जा दुबका। रजाई रगबिरग कपडो के टुकडो को जोडकर बनायी गयी थी। बिस्तर मे जा लेटा और मन मे इस बात की बेचैनी बनी हुई थी कि कब बाप आये और लडाई का हाल सुनाये।

दादा देव-मूर्तियो के सामने घुटने टेके हुए प्रार्थना कर रहे थे। मीश्का ने सिर ऊचा किया। देखा कि दादा बडी कठिनाई से और बाये हाथ की उगलियो मे सहारा लेकर झुके और इतना झुके कि उनका सिर फर्श से जा टकराया। मीश्का ने दीवार पर कुहनी मारी – ठक!

दादा फिर फुसफुसाते हुए प्रार्थना करते और फर्श पर माथा टेकते रहे। मीश्का भी दीवार को ठकठकाता रहा। दादा खीझ उठे, मीश्का की तरफ मुडे और डाटते हुए बोले

"ठहर शैतान, अभी बताता हू तुझे! क्षमा करना मुझे भगवान! नही मानता तो अभी तेरी मरम्मत करता हू!"

पिटाई शुरू होनेवाली ही थी कि पिता ने भीतर कदम रखा।

"तू मा के बिस्तर मे क्यो जा घुसा रे मीश्का?" बाप ने पूछा।

"मै मा के साथ ही तो सोता हू।"

बाप बिस्तर पर बैठ गया और चुपचाप मूछो को बल देने लगा। कुछ देर बाद उसने कहा

"मगर मैने तो दादा के साथ तेरा बिस्तर लगाया है "

"मै दादा के साथ नही सोऊगा!"

"मगर क्यो?"

"उनकी मूछो मे तम्बाकू की बू आती है!"

बाप ने फिर मूछे मरोडी और गहरी सास ली

"नही बेटे, तू दादा के साथ ही जाकर सो जा "

मीश्का ने रजाई से सिर ढक लिया और चोरी-चोरी एक आख मे देखते हुए शिकायत के लहजे मे कहा

"कल भी तुम मेरी जगह सोये रहे और आज फिर वही चाहते हो आज तुम सो जाओ दादा के साथ!"

मीश्का बिस्तर पर उठकर बैठ गया, बाप का सिर हाथो मे ले लिया और धीरे से बोला

"तुम ही सो जाओ दादा के साथ! मा तो वैसे भी तुम्हारे साथ नही सोयेगी। तुम्हारे मुह से भी तम्बाकू की तेज बू आती है!"

"अच्छा, मै ही सो जाऊगा दादा के साथ, मगर फिर लडाई का किस्सा नहीं सुनाऊगा।"

बाप उठा और रसोईघर की तरफ चल दिया।

"बापू!"

"क्या है?"

"अच्छा तो यही सो जाओ " मीश्का ने गहरी सास लेकर कहा और उठकर बैठ गया, "मगर लडाई के बारे मे तो सुनाओगे ना?"

"हा सुनाऊगा।"

दादा दीवार की ओर लेट गये और मीश्का को उन्होने दूसरी ओर लिटा दिया। कुछ देर बाद बाप आया। उसने बिस्तर के करीब एक बेन्च खीच ली और कागज मे मोटा तम्बाकू लपेटकर कश लगाने लगा।

"हा तो हुआ यह तुझे याद होगा कि हमारे खलिहान के पीछे कभी दुकानदार का एक खेत था?"

मीश्का को याद हो आया कि कैसे वह कभी सोधे और ऊचे-ऊचे गेहू के खेत मे भागा-फिरा करता था। पत्थर की मुडेर फादकर वह इस खेत मे जा पहुचता था। गेहू के पौधे उसके सिर से ऊचे-ऊचे होते थे और भरी हुई बाले मुह पर गुदगुदी किया करती थी। खेत मे धूल-

मिट्टी और स्तेपी की हवा की गन्ध भी आया करती थी। मा उसे पुकार-पुकारकर कहा करती थी

"मीन्यूश्का, खेत मे बहुत दूर मत जाना, तू रास्ता भूल जायेगा!"

बाप घडी भर को चुप हो गया और फिर मीश्का का सिर सहलाते हुए बोला

"याद है तुझे कि तू मेरे साथ रेत के टीले तक गया था? वहा हमारा खेत था"

मीश्का को फिर याद आया रेत के टीले के पीछे, रास्ते के साथ-साथ, खेत की एक टेढी और पतली-सी पट्टी थी तो सही। मीश्का अपने बाप के साथ वहा गया था और खेत को पशुओ के खुरो से रौदा हुआ पाया था। भूमि पर जहा-तहा गेहू की बालो की गन्दी-मन्दी ढेरिया लगी हुई थी। सिर्फ डठल हवा मे झूल रहे थे। मीश्का को इस बात का भी स्मरण हो आया कि उसके हट्टे-कट्टे और लम्बे-तडगे बापू का चेहरा बहुत भयानक रूप से विकृत हो उठा था और धूल-मिट्टी मे लथपथ उसके गालो पर रुक-रुककर आसू की बूदे टपकने लगी थी। बाप को रोता देखकर मीश्का भी रो दिया था।

लौटते हुए बाप ने खेत के रखवाले से पूछा था

"फेदोत, जानते हो कि मेरे खेत का किसने ऐसा बुरा हाल किया है?"

फेदोत ने जोर से थूककर जवाब दिया था

"दूकानदार मडी की ओर अपने ढोर-डगर लिये जा रहा था। जान-बूझकर उसने उन्हे तुम्हारे खेत म छोड दिया था"

बाप ने बेंच और नजदीक खीची और कहा

'दूकानदार और बाकी अमीर लोगो ने सारी जमीन हथिया रखी थी, गरीबो के पास बोने के लिये जमीन ही नही थी। हमारे गाव मे ही नही, सभी जगह यही हाल था। बुरी तरह से नाक मे दम कर रखा था तब उन्होने हमारा जीना दूभर था मैने सोचा जमीन नही है, न सही, दूसरो के ढोर चराया करूगा। कुछ अर्से बाद मुझे सेना मे भर्ती कर लिया गया। सेना का भी यही हाल कि अफसर लोग जरा जरा-सी बात पर कसकर तमाचा लगाते फिर बोल्शेविक सामने आ गये। इनमे जो सबसे बडा था, उसे लेनिन कहते थे। वह वैसे तो

बडा सीधा-सादा आदमी था, मगर दिमाग बहुत बढिया पाया था उसने। जरूर हम देहातियो की नस्ल का ही होगा। बोल्शेविको ने हमे ऐसी बाते बतायी कि हम तो दग रह गये। कहा उन्होने, 'अरे देहातियो, किसानो-मजदूरो, मुह बाये क्या देख रहे हो? उठो मिलकर, सफाया कर दो इन श्रीमानो का, इन अफसरो का! सब कुछ तुम्हारा ही है!'

"उनके इन शब्दो ने हमे चक्कर मे डाल दिया। सोचा विचारा तो महसूस हुआ कि ठीक ही कहते है। तो हम लोगो ने श्रीमानो मे जमीन-जायदाद छीन ली। मगर इन लोगो ने बुरा वक्त भला कब देखा था, टूट पडे हम पर, हम किसानो और मजदूरो पर, और बस लडाई शुरू हो गयी समझे बेटे?

"हा, और बोल्शेविको मे सबसे बडे यानी लेनिन ने जनता को उठाकर खडा कर दिया। ठीक वैसे ही जैसे कि हल का फाल मिट्टी को उठाता चला जाता है। उन्होने फौजियो और मजदूरो को एकजुट किया और अमीर लोगो की धज्जिया उडाने लगा। धज्जिया उडा दी उनकी! फौजी और मजदूर लाल गार्ड कहलाने लगे। मै भी उन्ही मे था। एक बडे-मे घर मे रहते थे हम—स्मोल्नी नाम था उसका। दालान उसका—यह लम्बा सारा था और कमरे इतने थे कि आदमी रास्ता भूल जाये।

'एक बार क्या हुआ कि रात का वक्त था, मै दरवाजे पर पहरा दे रहा था। बाहर बडी ठड थी और मै सिर्फ एक फौजी कोट पहने था। हवा तन को काट रही थी तभी इस घर मे दो आदमी बाहर निकले और आगे बढे तो मैने देखा कि उनमे से एक लेनिन है। वह मेरे पास आये और प्यार से बोले

"'साथी, सर्दी तो नही लग रही?'

"और मैने जवाब दिया, 'नही साथी लेनिन! ठड ही क्या, कोई दुश्मन भी नही डरा सकता हमे! हमने शासन की बागडोर इसलिये तो अपने हाथो मे नही ली है कि फिर से उसे बुर्जुओ के हवाले कर दे!'

"लेनिन मुस्करा दिये और उन्होने जोर से मुझसे हाथ मिलाया। फिर वह धीरे-धीरे आगे बढे और फाटक की ओर चले गये।"

बाप ने जेब से तम्बाकू निकाला, कागज मे लपेटा और सिगरेट

बनाकर दियासलायी जलायी। उस रोशनी मे मीश्का ने बाप की लाल और अकडी हुई मूछो मे चमकती हुई आसू की बूद देखी, ओस की उस बूद जैसी जो सुबह के वक्त बिच्छूबूटी की पत्ती के सिरे पर अटकी रह जाती है।

"हा तो ऐसे थे लेनिन! सभी की चिन्ता करते थे। एक-एक फौजी रहता था उनके दिल मे उस दिन के बाद मैंने अक्सर उन्हे देखा। मेरे नजदीक मे गुजरते, दूर मे ही मुस्कराने और पूछने

"'तो बुर्जुआ मिटा तो नही डालेगे हमे?'

''इतना दम उनमे कहा, साथी लेनिन!'' मै उन्हे जवाब देता।

"सोलह आने सही निकली बेटे उनकी बात। जमीने और कारखाने हमने अमीरो से, हमारा खून पीनेवालो से छीन लिये और उनकी कमर तोड डाली! जब बडा हो जायेगा तो यह याद रखना कि तेरा बापू जहाजी था और चार बरस तक उसने कम्यून के लिये अपना खून बहाया था। तेरे बडे होने तक मै इस दुनिया मे नही रहूगा, लेनिन भी नहीं होगे, पर हमारा काम सदियो तक जियेगा! बडा होने पर तू भी अपने बापू की तरह ही सोवियत सत्ता के लिये लडेगा न?

'लडूगा!' मीश्का चिल्ला उठा। वह उछलकर बिस्तर पर खडा हो गया। उसने बाप की गर्दन से लिपटना चाहा। वह भूल गया कि करीब हो दादा सोये पडे है, उनके पेट मे पाव लगा।

दादा चीख उठे। उन्होंने हाथ बढाया कि मीश्का को बालो से पकड ले। मगर बाप ने जल्दी से मीश्का को हाथो पर उठा लिया और दूसरे कमरे मे ले गये।

मीश्का बाप के हाथों पर ही सो गया। शुरू मे तो वह देर तक अद्भुत व्यक्ति लेनिन, बोल्शेविको, लडाई और जहाजो के बारे मे सोचता रहा। नीद आते समय उसे दबी-दबी-सी आवाजे सुनायी देती रही, पसीने और घटिया तम्बाकू की गन्ध आती रही। बाद मे पलके भिच गयी मानो किसी न हथेलियो मे सहला-सहलाकर उन्हे बन्द कर दिया हो।

मीश्का को अभी अच्छी तरह से नीद भी न आयी थी कि उसने स्वप्न मे एक शहर देखा। चौडी-चौडी सडके, राख मे लोट-पोट होती हुई मुर्गिया। गाव मे उनकी काफी सख्या होती है, मगर नगर मे तो कोई हिसाब ही नही। मकान बिल्कुल वैसे थे जैसे कि बाप ने

बताये थे। एक बडा-सा मकान, सरकडो से ढका हुआ, उसकी चिमनी पर एक और मकान खडा हुआ, उसकी चिमनी पर तीसरा मकान रखा हुआ और सबसे ऊपरवाले मकान की चिमनी आकाश को छूती हुई।

मीश्का है कि चला जा रहा है इस शहर की सडक पर। मुह ऊपर को किये इधर-उधर देखता जा रहा है। अचानक इतने मे कही से एक लम्बा-तडगा आदमी उसके सामने आकर खडा हो गया। वह लाल कमीज पहने था।

"अरे मीश्का क्यो तू सडक पर बेमतलब मटरगश्ती करता फिर रहा है?" उसने बडे प्यार से पूछा।

"दादा ने मुझे खेलने की छुट्टी दी है।"

"तू जानता है कि मै कौन हू?'

"नही, मै नही जानता "

"मै – साथी लेनिन हू!"

मीश्का को डर ने ऐसा दबोचा कि उसके घुटने जवाब दे गये। उसका मन हुआ कि सिर पर पैर रखकर भाग ले, मगर लाल कमीज-वाले व्यक्ति ने मीश्का की बाह पकड ली और कहा

'रे मीश्का शर्म तो तुझमे रत्ती भर नही है! तू खूब अच्छी तरह यह जानता है कि मै गरीब लोगो के लिये लोहा ले रहा हू। तू क्यो मेरी फौज मे शामिल नही हुआ?'

"दादा मुझे इसकी इजाजत नही देते!" मीश्का ने अपनी सफाई पेश की।

"खैर देख ले जैसी तेरी मर्जी,' साथी लेनिन ने कहा, 'मगर तेरे बिना मेरा काम सिरे चढने का नही। तुझे मेरी फौज मे नाम लिखाना ही होगा!'

मीश्का ने लेनिन का हाथ पकड लिया और बहुत दृढतापूर्वक कहा

'अच्छा तो या ही सही। मै दादा से पूछे बिना ही तुम्हारी फौज मे शामिल हो जाता हू और गरीब लोगो के लिये लडूगा। ऐसा करने के लिये अगर दादा मुझे डाटे-डपटेगे तो उनसे तुम निपट लेना!"

"मै जरूर तुम्हारी हिमायत करूगा!" साथी लेनिन ने कहा और सडक पर आगे बढ गया। मीश्का का तो खुशी के मारे यह हाल था कि सास लेना मुश्किल! दिल बल्लियो उछल रहा था। उसका मन हो

रहा था कि चीखकर कुछ कहे, मगर ज़बान सूखकर रह गयी।

मीश्का बिस्तर पर उछल पडा, दादा को लात लगी और मीश्का की आख खुल गयी।

दादा नीद मे बडबडाये, होठो मे चप-चप की आवाज़ करने लगे। खिडकी मे रोशनी झाकने लगी थी। तालाब के परे, हल्के पीले आकाश मे रक्तवर्णी फेन मे मिलते-जुलते बादल पूर्व की ओर मे उमडे चले आ रहे थे।

* * *

अब तो बाप हर शाम मीश्का को लडाई और लेनिन के किस्से सुनाने और यह बताने लगा कि वह किस-किस जगह लडने गया।

शनिवार का दिन था। शाम को कार्यकारिणी समिति का चौकीदार एक नाटे-से व्यक्ति को साथ लिये हुए आया। यह व्यक्ति फौजी कोट पहने था और बगल मे चमडे का बैग दबाये था। चौकीदार ने दादा को आवाज दी और कहा

"देखिये, मै आपके घर पर सोवियत के एक कर्मचारी को लेकर आया हू। वह नगर मे आया है और रात को आप ही के यहा टिकेगा। दादा रात की रोटी का प्रबन्ध कर दीजियेगा।"

"वह तो खैर सब हो जायेगा," दादा ने कहा "मगर श्रीमान साथी, आप आर्डर तो लाये है न?"

दादा की योग्यता देखकर मीश्का तो दग ही रह गया। वह मुह मे उगली डालकर बहुत ध्यान से बाते सुनने लगा।

"आर्डर-वार्डर सब कुछ है!" चमडे के बैगवाला व्यक्ति हस दिया और अन्दर के कोठे की तरफ चल दिया।

दादा उस अजनबी के पीछे-पीछे हो लिये और मीश्का दादा के पीछे-पीछे।

"किस काम मे आप हमारे गाव मे आये है?" दादा ने रास्ते मे पूछा।

"मै यहा चुनाव कराने आया हू। सोवियत के सदस्यो और अध्यक्ष का चुनाव होगा।"

कुछ ही देर बाद बाप भी खलिहान से आ गया। उसने अजनबी

से दुआ-सलाम की और मा से खाने का प्रबन्ध करने को कहा। खाने के बाद अजनबी और मीश्का का बाप बेच पर साथ-साथ बैठ गये। अजनबी ने अपना चमडे का बैग खोला, उसमे से कागजो का एक पुलिन्दा निकाला और बाप को दिखाने लगा। मीश्का के मन मे बडी जिज्ञासा थी और वह इनके आस-पास घूम रहा था कि किसी तरह उन कागजो पर एक नजर डाल ले। बाप ने एक कागज लिया और मीश्का को दिखाते हुए कहा

"देख मीश्का, यह है लेनिन!"

मीश्का ने बाप के हाथ मे तस्वीर झपट ली, उसी पर नजर गडा दी और उसका मुह आश्चर्य मे खुल गया। यह लेनिन का एक छविचित्र था। कद बहुत बडा नही, वह लाल कमीज भी नही, कोट पहने थे। एक हाथ पतलून की जेब मे था और दूसरा सामने की ओर उठा हुआ। मीश्का इस चित्र पर नजर टिकाये था। एक ही नजर मे वह उसे ऊपर से नीचे तक देख गया। उसके स्मृतिपट पर हमेशा के लिये, अमिट रूप मे लेनिन का एक-एक नक्श अकित होकर रह गया। कुछ-कुछ मुडी हुई भौहे और आखो और होठो के कोनो मे दुबकी हुई मुस्कान की स्मृति उसके मन मे सदा के लिये जमकर रह गयी।

अजनबी ने मीश्का के हाथ से चित्र लिया, अपने बैग मे रखकर ताला लगाया और सोने की तैयारी करने लगा। उसने कपडे उतारे और फौजी कोट ओढकर लेट गया। उसकी आख लगने ही वाली थी कि दरवाजा चरचराया। उसने सिर ऊपर उठाया

"कौन है?'

फर्श पर किसी के नगे पैरो की आहट हुई।

कौन है?" उसने दोबारा पूछा और बिस्तर के निकट बिल्कुल अप्रत्याशित ही मीश्का को खडे पाया।

"क्या बात है बेटे?"

मीश्का घडी भर चुपचाप खडा रहा, फिर उसने साहस बटोरा और फुसफुसाकर कहा

"चाचा, देखो बात यह है तुम मुझे मुझे लेनिन दे दो! '

अजनबी चुप रहा, बिस्तर से आगे की ओर गर्दन बढाकर उसने लडके को गौर से देखा।

मीश्का को डर ने आ दबाया—हो सकता है कि चाचा कजूसी

कर जाये और चित्र न दे! आवाज काप न जाये इसका प्रयास करते और रुधने हुए गले मे उसने जल्दी-जल्दी फुमफुमाकर कहा

"आप मुझे दे दे, बिल्कुल दे दे यह तस्वीर मेरे पास टीन का अच्छा-सा डिब्बा है, मै वह दे दूगा आप को और इसके अलावा पामे भी दे दूगा और " मीश्का ने हाथ झटका और बुझे मन मे आगे कहा, "वे जूते भी दे दूगा जो बापू मेरे लिये लाये है!"

"मगर तू करेगा क्या लेनिन का?" अजनबी ने मुस्कराते हुए पूछा।

"नही देने का!" मीश्का ने मन ही मन सोचा। उसने मुह दूसरी तरफ फेर लिया ताकि आसू नजर न आये और टूटती-सी आवाज मे कहा

"चाहिये, बस!"

अजनबी हस दिया। उसने सिरहाने के नीचे मे बैग निकाला और मीश्का को तस्वीर दे दी। मीश्का ने तस्वीर ली, उसे कमीज के नीचे, दिल के बिल्कुल निकट, सीने पर जोर मे भीचा और कोठे मे भागता हुआ बाहर आया। दादा की आख खुल गयी और उन्होंने पूछा

"अरे तू कहा टापता फिर रहा है आधी रात को? कहा था तुझमे कि रात को दूध मत पी – अब बार-बार उठ-उठकर भागेगा! अरे सुन! अब गन्दे पानी की यह जो बाल्टी पडी है, उसी मे अपना काम कर ले। बाहर अहाते मे ले जाऊ तुझे, यह मेरे बस की बात नही!"

मीश्का चुपचाप लेट गया, तस्वीर को दोनो हाथो मे भीचे रहा। वह करवट लेते हुए डरता कि कही तस्वीर मुडमुडा न जाये। इसी तरह उसकी आख लग गयी।

मुह अधेरे ही मीश्का की आख खुल गयी। मा ने गाय दुहकर उसे रेवड के साथ बस भेजा ही था। मीश्का को देखा तो दोनो हाथो से सिर थाम लिया

"अरे तुझे किसने काट खाया है! इतने सवेरे ही क्यो उठ बैठा है?"

मीश्का ने फोटो को कमीज के नीचे दबाया और मा के करीब मे झटपट खलिहान की तरफ बढ गया और खत्ती मे गायब हो गया।

खत्ती के चारो ओर बरडॉक की झाडिया खडी थी और बिच्छू

बूटी की हरी दुर्गम दीवार काटे फैलाये हुए थी। मीश्का कूद-फादकर खत्ती मे जा पहुचा। उसने धूल और मुर्गियो की बीट हाथो मे हटायी, बरडॉक का एक बडा-मा और सूखकर पीला पडा हुआ पत्ता तोडा, फोटो को उसमे लपेटा और जमीन पर रखकर उम पर एक ककड रख दिया ताकि वह हवा से उड न जाये।

सुबह से शाम तक पानी बरसता रहा। आकाश मे सुरमई चदवा छाया हुआ था। अहाते के गढहो मे बूदो की टपटप हो रही थी और सडको पर छोटे-छोटे नद-नाले बह रहे थे।

मीश्का को मजबूरन दिन भर घर मे बैठे रहना पडा। झुटपुटा हो चला था, जब बाप और दादा सभा मे भाग लेने के लिये कार्यकारिणी के दफ्तर की ओर चले। मीश्का ने दादा की छज्जेदार टोपी पहनी और उनके पीछे-पीछे हो लिया। कार्यकारिणी का दफ्तर गिरजाघर के चौकीदार के झोपडे मे था। बडी मुश्किल से टेढी-मेढी और गन्दी-मन्दी सीढिया चढकर मीश्का बरसाती मे पहुचा और वहा से कमरे मे गया। कमरा खचाखच भरा हुआ था और तम्बाकू का धुआ छत को छू रहा था। खिडकी के पास मेज लगाये वही अजनबी बैठा था। वह कमरे मे जमा होते हुए कज्जाको से कुछ कह रहा था।

मीश्का चुपचाप सबसे पीछेवाली बेंच पर जा बैठा।

"साथियो! आपमे से कौन इस बात के हक मे है कि फोमा कोर्शुनोव को अध्यक्ष चुना जाये? कृपया अपने हाथ उठाये!"

मीश्का के आगे दूकानदार का दामाद प्रोखोर लिसेन्कोव बैठा था। वह चिल्लाया

"भाइयो! मेरी प्रार्थना है कि इस व्यक्ति को उम्मीदवार न बनाया जाये। वह ईमानदार नही है। वह जब हमारे रेवड चराया करता था तभी यह बात साफ हो गयी थी"

मीश्का ने मोची फेदोत को खिडकी के दासे से उठते देखा। वह दोनो हाथ हिलाकर चिल्लाने लगा

"साथियो, खाते-पीते लोग यह सहन नही कर सकते कि चरवाहा फोमा सोवियत का अध्यक्ष चुना जाये। मगर चूकि वह प्रोलेतारी और सोवियत सत्ता का हिमायती है इसलिये"

मोची फेदोत अपनी बात पूरी भी न कर पाया कि दरवाजे के पास सटकर खडे हुए मालदार कज्जाक जोर-जोर से पाव पटकने और सी-

टिया बजाने लगे। कार्यकारिणी के दफ्तर मे गुलगपाडा मच गया।

"चरवाहा नही चाहते!"

"फौज मे लौट आया है—अब फिर मे ढोर चराया करे!"

"भाड मे जाय फोमा कोर्शुनाव!"

मीश्का ने बेच के पास खडे बाप के चेहरे पर नजर डाली, उस पर हवाइया उड रही थी। बाप का ऐमा हाल देखकर खुद मीश्का के चेहरे का रग उड गया।

"खामोश रहो साथियो! सभा मे निकाल दूगा!" मेज पर जोर से मुक्का मारकर अजनबी चिल्लाया।

"कज्जाको मे से अपना आदमी चुनेगे!"

"नहीं चाहिये! "

"नही चा-हि-ये " कज्जाक शोर मचा रहे थे और सबसे ज्यादा गला फाडकर चीख रहा था दुकानदार का दामाद प्रोखोर।

एक हट्टा-कट्टा और लाल दाढीवाला कज्जाक उछलकर बेच पर खडा हो गया। उसके कान मे बाली थी और फटे हुए कोट पर जहा-तहा पैबन्द लगे थे।

भाइयो! मामला चौपट हुआ जा रहा है! होहल्ला करके ये अमीर लोग अपन आदमी को अध्यक्ष बना देना चाहते है! फिर मे वही

वहा इतना शोर मच रहा था कि कानो के पर्दे फटे जा रहे थे। बालीवाला कज्जाक चीख-चीखकर जो कुछ कह रहा था उसका कोई-कोई शब्द ही मीश्का को सनायी दिया

जमीन फिर बटवायी जायेगी बजर हम बढिया जमीन व सद दबा लेगे "

'प्रोखोर को अध्यक्ष बनाया जाये!' दरवाजे के निकट लगातार यही स्वर गूज रहा था।

'प्रोखोर! हो-हो-हो! हा-हा-हा!"

जैसे-तैसे शोर कम हुआ। अजनबी भौहे चढाकर और लाल-पीला होकर देर तक कुछ चीखता-चिल्लाता रहा।

"डाट-डपट रहा होगा!" मीश्का ने सोचा।

अजनबी ने ऊची आवाज मे पूछा

"फोमा कोर्शुनोव के हक मे कौन-कौन है?'

बेंचों के ऊपर बहुत-से हाथ उठ गये। मीश्का ने भी हाथ ऊंचा कर दिया। कोई आदमी एक के बाद दूसरी बेंच पर कूदता हुआ ऊंचे-ऊंचे गिनती करने लगा:

"तिरसठ... चौसठ," मीश्का की ओर न देखते और उसके उठे हुए हाथ की ओर उंगली से इशारा करते हुए उसने कहा: "पैंसठ!"

अजनबी ने काग़ज़ पर कुछ लिखा और फिर ऊंची आवाज़ में कहा:

"जो प्रोख़ोर लिसेन्कोव के हक़ में हैं, हाथ उठायें!"

सत्ताईस धनी कज़्ज़ाकों और चक्की के मालिक येगोर ने झटपट हाथ ऊंचे कर दिये। मीश्का ने इर्द-गिर्द नज़र दौडायी और उसने भी हाथ ऊंचा कर दिया। गिनती करनेवाला व्यक्ति मीश्का के बराबर आया और ऊपर से उसे देखकर उसने ज़ोर से मीश्का का कान पकड़ लिया। मीश्का को बड़ा दर्द हुआ।

"अरे पाजी कही के! चल भाग यहां से वरना मरम्मत कर डालूंगा! चला है राय देने!"

इर्द-गिर्द बैठे लोग हंस दिये। गिनती करनेवाला व्यक्ति मीश्का को दरवाज़े तक लाया और पीठ पर ठोंक दिया। मीश्का को याद हो आया कि दादा और बाप के बीच तकरार हो जाने पर बाप ने क्या कहा था। गन्दी-मन्दी और फिसलनी सीढ़ियों से नीचे जाते हुए मीश्का ने भी वही शब्द दोहरा दिये

"तुम्हें ऐसा करने का हक़ नहीं है!"

"ठहर, बड़ा आया है मुझे हक़ समझानेवाला!"

मीश्का को अपमान का कड़वा घूट पीना पड़ा, बहुत खीझ आयी।

मीश्का ने घर लौटकर आंसू बहाये और फिर मां से फ़रियाद की। मां ने डांट पिलायी:

"तू हर जगह घुसता क्यों फिरता रहता है! सभी जगह अपनी नाक घुसेडा करता है!.. तेरे कारण तो नाक में दम है मेरा!"

अगले दिन सुबह सब नाश्ता करने बैठे। नाश्ता अभी ख़त्म भी नही हुआ था कि बहुत दूर से बाजे की ढम-ढम सुनायी दी। बाप ने चमचा मेज़ पर रखा और मूंछें पोंछते हुए कहा:

"यह तो फ़ौजी बैंड लगता है!"

मीश्का तो हवा की तरह बेंच से ग़ायब हो गया। ड्योढ़ी का

दरवाजा बन्द हुआ। खिडकी से तेज कदमो की चप-चप सुनायी देती रही

दादा और बाप बाहर अहाते मे आ गये। मा खिडकी मे धड बाहर निकालकर देखने लगी।

सडक के सिरे पर हरी लहरो-सी लहराती हुई लाल सेना की कतारे चली आ रही थी। आगे-आगे कुछ बैडवाले बिगुल बजाते चले आ रहे थे और ढोलची जोरो मे ढोल को ढमढमा रहा था। पूरे गाव मे बैड की आवाज गूज रही थी।

मीश्का की आखे सभी ओर दौड रही थी। शुरू मे तो वह खोया-खोया-सा एक ही जगह पर चक्कर काटता रहा और फिर झपटकर बैडवालो के पास जा पहुचा। उसके हृदय मे कोई मीठी-मीठी चीज हिलोरे ले रही थी, वह मुह तक आने को बेकरार थी मीश्का धूल-मिट्टी से सने हुए लाल सेना के फौजियो के प्रफुल्लित चेहरो को और गाल फुला-फुलाकर बाजो से आवाज निकालते हुए बैडवालो को देखता रहा। फिर उसने अचानक और एकबारगी यह तय कर लिया 'मै भी जाऊगा इनके साथ लडाई लडने!"

उसे अपना सपना याद हो आया। न जाने कहा से उसमे हिम्मत आ गयी कि किनारेवाले फौजी का थैला थामकर उसने पूछा

"आप कहा जा रहे है? लडाई लडने?"

तो और क्या? लडने ही तो जा रहे है!'

"किस की ओर से आप लडेगे?"

"सोवियत सत्ता की ओर से, पगले! अच्छा इधर आ, बीच मे।"

उसने मीश्का को फौजियो की कतारो के बीच खीच लिया, किसी ने हसते-हसते उसकी गुद्दी पर चुटकी काट ली, किसी अन्य ने जेब मे पडा हुआ गन्दा-सा चीनी का छोटा-सा टुकडा निकाला और उसके मुह मे ठूस दिया। चौक मे पहुचने पर पहली कतार मे से किसी ने चीखकर कहा

"थम जा! "

लाल सेना के फौजी रुके, चौक मे इधर-उधर बिखरे और स्कूल की बाड की छाया मे ठण्डी जगह देख सटकर लेट गये। घुटे हुए सिर-वाला लाल सेना का एक लम्बा-तडगा फौजी मीश्का के पास आया।

उसकी बगल मे तलवार लटक रही थी। मुस्कराते हुए उसने पूछा

"अरे तू कहा से आ गया इधर?"

मीश्का ने अपने चेहरे पर बड़प्पन का भाव लाकर नीचे सरकते पाजामे को खीचकर ऊपर किया।

"मै आप लोगो के साथ लडाई लडने चलूगा!"

"साथी बटालियन कमाडर, इसे भी सहायको मे शामिल कर लो!" एक सैनिक ने ऊची आवाज मे कहा।

सभी ओर जोर के कहकहे गूज गये। मीश्का बार-बार पलके झपकाता खडा रहा। मगर "बटालियन कमाडर" के अजीब-से नामवाले व्यक्ति ने भौहे चढायी और जोर से डाटते हुए कहा

"हसने की क्या बात है, मूर्ख? स्पष्ट है कि हम इसे अपने साथ ले चलेगे मगर एक शर्त पर," बटालियन कमाडर मीश्का की ओर घूमा और बोला, 'देख तेरे पाजामे मे सिर्फ एक पट्टी है। ऐसे काम नही चलेगा। ऐसे तो तू अपने हुलिये से हमारी हेठी करायेगा यह देख, मेरे पतलून मे दो पट्टिया है सभी के पतलनो मे दो है। जा भागकर जा मा से दूसरी पट्टी सिलवा ला। हम तेरा यही इन्तजार करेगे' इतना कहकर कमाडर बाड की तरफ घूमा और आख मारते हुए उसने ऊची आवाज म कहा 'तेरेश्चेन्को जा लाल सेना के नये फौजी के लिये जल्दी से बन्दूक और फौजी कोट लेकर आ!'

बाड की छाया मे लेटे हुए फौजियो मे से एक उठा, टोप के छज्जे तक हाथ उठाकर उसने सलामी दी और कहा

'जो हुक्म!' वह जल्दी-जल्दी कदम बढाता हुआ बाड के साथ-साथ चल दिया।

'अच्छा अब तू उडकर जा! मा से झटपट पट्टी सिलवाकर लौट आ!'

मीश्का ने कडी नजर से बटालियन कमाडर की तरफ देखा

"देखो मुझे धोखा नही देना!'

'क्या बात करता है! कभी हो सकता है? "

चौक से घर तक काफी फासला था। मीश्का फाटक तक ही दौडा था कि दम फूल गया। सास लेना कठिन हो गया। फाटक के पास पहुचने पर उसने दौडते-दौडते ही पाजामा उतार लिया। नगे पाव जल्दी से दौडता हुआ तेज झोके की तरह मकान मे जा घुसा

"मा पाजामे की एक और पट्टी मी दे!"

घर मे खामोशी थी। अगीठी के ऊपर मक्खिया भिनभिना रही थी। मीश्का भागता हुआ अहाते मे पहुचा, खलिहान और बगीचे मे गया – न बाप न मा, न दादा। छलागे मारता कोठे मे गया – एक बोरी पर नजर जा पडी। उसने चाकू लिया और उसकी लम्बी डोरी काट ली। सीने की फुरसत मीश्का को कहा थी और फिर सीना आता भी तो नही था। उसने झटपट उसे पाजामे मे बाध लिया और कधे पर से ले जाकर सामने की तरफ गाठ दे दी। वह भागकर खत्ती मे गया।

उसने ककड हटाकर लेनिन का चित्र उठाया। अपनी ओर इशारा करते लेनिन के उठे हुए हाथ को उडती नजर से देखा और सास रोक-कर धीरे से फुसफुसाया

"देख लिया न? मै भी जा रहा हू तुम्हारी फौज मे!"

बडी सावधानी से उसने लेनिन की तस्वीर बरडॉक के पत्ते मे लपटी उसे कमीज के नीचे दबा लिया और उछलता-कूदता सडक पर आ गया। वह एक हाथ से चित्र को छाती से चिपकाये रहा और दूसरे से पाजामा सम्भालता गया। जब दौडता हुआ पडोसिन की बाड के निकट से गुजरा तो पुकारकर कहा

"अनीसिमोव्ना!"

"क्या है?"

"हमारे घरवालो से कह देना कि खाने पर मेरा इन्तजार न करे"

"तू कहा उडा जा रहा है, पाजी?"

मीश्का ने हाथ हिलाकर जवाब दिया

"फौजी नौकरी पर जा रहा हू!"

वह भागता हुआ चौक मे पहुचा तो उसे जैसे काठ मार गया। चौक मे तो आदमी का नाम-निशान तक न था। बाड के करीब सिगरेटो के टुकडे, खाली डिब्बे और किसी की फटी-पुरानी पट्टिया पडी थी। गाव के बिल्कुल दूसरे सिरे से बैड की आवाज और ठोस मिट्टी की कच्ची सडक पर चलनेवालो के पैरो की धम-धम सुनायी दे रही थी।

मीश्का का गला आसुओ से रुध गया। वह चीख उठा और अपनी बची-बचायी पूरी ताकत समेटकर भाग खडा हुआ। जा मिलता, जरूर वह उनसे जा मिलता, मगर चमार के अहाते के सामने पीले रग का

दुमदार कुत्ता पसरा हुआ था। उसने गुर्राकर दात दिखाये। मीश्का जब भागकर दूसरी सडक पर पहुचा तो बाजो की आवाज खो चुकी थी और पैरो की धम-धम भी।

* * *

दो दिन बाद गाव मे कोई चालीस फौजियो की एक टुकडी आयी। ये लोग घुटनो तक के भूरे फेल्ट के बूट और मजदूरो के तेल लगे हुए कोट पहने थे। बाप कार्यकारिणी समिति से दोपहर का खाना खाने घर आया तो दादा से बोला

"बापू, खत्ती मे अनाज तैयार कर लो। अनाज-दस्ता आया है। अनाज देना होगा।"

फौजी एक-एक घर मे जाते थे, कोठारो-खत्तियो मे सगीने भोक-भोककर जाच करते थे और छिपाया हुआ अनाज निकलवाकर एक सामाजिक भण्डार मे जमा करते जाते थे।

वे ग्राम-सोवियत के अध्यक्ष के घर भी आये। उनमे जो सबसे आगे-आगे था, मुह मे पाइप लगाये था। उसने दादा से पूछा

"बडे मिया, अनाज छिपा रखा है क्या? सच-सच बता दो!"

दादा ने दाढी पर हाथ फेरा और बडे गर्व से कहा

'अजी क्या कहते है, मेरा बेटा तो खुद कम्युनिस्ट है!"

सब खत्ती मे पहुचे। पाइपवाले फौजी ने एक नजर मे सारे अनाज को आका और मुस्करा दिया।

"बडे मिया, इनमे से इतना हमारे भण्डार मे पहुचा दो, बाकी अपने परिवार की रोटी और बीज के लिये रख लो।"

दादा ने बूढे घोडे को छकडे मे जोता, कुढते-बडबडाते आठ बोरिया छकडे मे लाद दी। अफसोस से उन्होने हाथ झटका और सामाजिक भण्डार की ओर छकडा बढा दिया। मा को अनाज के इस तरह निकल जाने का दुख हुआ, वह कुछ रोयी-धोयी। मगर मीश्का ने अनाज की बोरियो की लदाई मे दादा का हाथ बटाया और फिर पादरी के बेटे वीत्का के साथ खेलने के लिये उसके घर चला गया।

मीश्का और वीत्का अभी रसोईघर मे जाकर बैठे ही थे, उन्होने कागज के घोडे काट-काटकर फर्श पर बिछाये ही थे कि वे ही फौजी

पादरी के रसोईघर मे आ पहुचे। पादरी साहब दौड-धूप करने लगे, उनकी आवभगत को दौडे आये लोग आदरभाव जताने लगे। उन्होने फौजियो से आराम-कमरे मे जाने को कहा। मगर पाइपवाले फौजी ने कडायी-रुखायी से कहा

"खत्ती मे चलिये! कहा जमा कर रखा है आपने अनाज?"

भीतरवाले कमरे मे पादरी की बीवी लपककर वहा आयी। उसके बाल अस्त-व्यस्त हुए पडे थे। अपने होठो पर चोर की सी हसी लाकर उसने कहा

"विश्वास कीजिये जनाब, हमारे घर मे तो अनाज का एक दाना भी नही है! मेरे पति ने अपने श्रद्धालुओ के घरो मे अभी फेरा नही किया "

"तहखाना है आपके यहा?"

"नही, हमारे यहा तहखाना नही है हम तो खत्ती मे ही पहले अनाज जमा करते थे "

मीश्का को याद हो आया कि कैसे वह वीत्का के साथ रसोईघर मे एक बडे-से तहखाने म जाया करता था। पादरी की बीवी की तरफ मुह करके उसने कहा

"रसोईघर से मै और वीत्का तो तहखाने मे उतरा करते थे, आप भूल गयी क्या?"

पादरी की बीवी के चेहरे का रग उड गया, मगर वह हस दी

"तू भूल रहा है छोकरे! वीत्का तुम लोग बाहर बगीचे मे जाकर खेलो!'

पाइपवाले फौजी ने आखे झपकायी और मीश्का की ओर देखकर मुस्कराया

"लडके, किधर से रास्ता है उस तहखाने का?"

पादरी की बीवी बेचैनी से उगलिया चटकाती हुई बोली

"खूब है आप भी, इस बेवकूफ छोकरे की बात पर विश्वास कर रहे है! मै आपको यकीन दिलाती हू कि हमारे घर मे तहखाना नही है!"

पादरी ने अपने चोगे के छोर झटकते हुए कहा

"आइये, कुछ जलपान कीजिये! चलिये कमरे मे!"

पादरी की बीवी ने मीश्का के पास से गुजरते हुए उसके हाथ पर जोर की चुटकी काटी और मुस्कराकर बडे प्यार से कहा

"जाओ बच्चो, बगीचे मे जाओ! यहा गडबडी नही करो!"

फौजियो ने आखो मे इशारे किये और रसोईघर मे इधर-उधर चक्कर काटते हुए बन्दूको के दस्तो से फर्श को ठोक-बजाकर देखने लगे। दीवार के पास से उन्होंने मेज खिसकायी और टाट उठाया। पाइपवाले फौजी ने फर्श का एक तख्ता उलटा, तहखाने मे झाका और सिर हिलाते हुए कहा

"शर्म नही आती आप लोगो को? कह रहे थे कि अनाज का एक दाना भी नही है और तहखाने मे ऊपर तक गेहू भरा पडा है!"

पादरी की बीवी न मीश्का को ऐसी काटती नजर से देखा कि उसका कलेजा काप उठा। उसका मन हुआ कि झटपट भाग ले घर को। वह उठा और आगन मे आया। पादरी की बीवी भी लपकती हुई उसके पीछे-पीछे ड्योढी मे पहुची और उस पर झपटी। मीश्का को बालो से पकडकर वह उसे फर्श पर घसीटने लगी।

मीश्का ने बडी मुश्किल से अपने बाल छुडवाये और जान छोडकर घर की तरफ भागा। आसू थे कि झडी बनकर बरस रहे थ। मा को उसने रो-रोकर सारा हाल सुनाया और वह तो बस सिर थामकर रह गयी

'हाय रे, क्या करू मै तेरा? दूर हो जा मेरी आखो के सामने से वरना मार मारकर चटनी बना दूगी! "

इस दिन के बाद तो यह नियम बन गया कि जब कोई मीश्का का अपमान करता, वह खत्ती मे जा घुसता। पत्थर हटाता, बरडाक के पत्ते से चित्र निकालता, आसुओ से चित्र को भिगोता और लेनिन को अपना दुख-दर्द सुनाता, अपमान करनेवाले के खिलाफ शिकवा-शिकायत करता।

इसी तरह एक सप्ताह बीत गया। मीश्का को ऊब अनुभव होने लगी। साथ खेलनेवाला कोई नही था। अडोस-पडोस के बच्चे कन्नी काटते। "हरामी" के साथ अब बडो से सुनी-सुनायी एक उपाधि और जोड दी गयी थी। लडके पीछे से आवाजे कसते

"अरे ओ कम्युनिस्ट! ओ सडे अडे, इधर देख!"

एक दिन क्या हुआ कि मीश्का साझ गहराने के पहले तालाब

से घर लौटा। वह अभी घर के भीतर नही पहुंचा था कि बाप को तीखी आवाज़ में कुछ कहते सुना। मा गिड़गिड़ाती हुई उमी तरह विलाप कर रही थी जैसे कि किसी के मर जाने पर किया जाता है। मीश्का ने दरवाज़े में दाख़िल होते ही देखा कि बाप अपना फ़ौजी कोट तह कर रहा है और बड़े बूट कम रहा है।

"बापू, तुम कहा चले?"

बाप हस दिया। उमने कहा:

"बेटा, तू अपनी मां को समझा-बूझा... इसके रोने-धोने से मेरा कलेजा फटा जा रहा है। मैं लड़ाई पर जा रहा हू और यह मुझसे चिपकी जा रही है!"

"मैं भी तुम्हारे साथ चलूगा, बापू!"

पिता ने पेटी कमी और फ़ीतोवाली टोपी पहनी।

"तू भी कमाल का छोकरा है! एक ही साथ तो हम दोनो को नही जाना चाहिये घर से! मैं लौट आऊगा तब तुम जाना, वरना जब फमल पकेगी तो कौन काटेगा? मां तुम्हारी घर के काम-काज मे उलझी रहती है और दादा हो गये बूढे..."

पिता से विदा होते ममय मीश्का ने आसू अन्दर ही अन्दर पी लिये। इतना ही नही, मुस्करा तक दिया। मा, पहले की भाति, बाप की गर्दन से लिपट गयी। बाप ने ज़बर्दस्ती उससे अपने को आज़ाद किया। दादा ने केवल आह भरी। लड़ाई पर जानेवाले को चूमते हुए उन्होंने उसके कान में फुसफुसाकर कहा.

"फ़ोमा. मेरे प्यारे बेटे! अच्छा हो कि तुम न जाओ! तुम्हारे बिना, शायद तुम्हारे बिना भी काम चल जाये! अगर तुम मारे गये तो हम कही के न रहेंगे!.."

"हटाओ बापू.. यह बात ठीक नही है। अगर सभी बीवियों की गोद में छिपकर बैठे रहेंगे तो हमारी सत्ता की रक्षा कौन करेगा?"

"अगर ऐसा ही ठीक समझते हो तो जाओ।"

दादा ने मुंह दूसरी ओर किया और चुपके-से आसू पोंछ डाले। घर के लोग बाप को कार्यकारिणी के दफ़्तर तक पहुंचाने गये। वहां आंगन में कोई बीस आदमी जमा थे, बन्दूकें लिये हुए। मीश्का के बाप ने भी बन्दूक़ ली और आख़िरी बार मीश्का को चूमा। फिर बाक़ी

5-1152

लोगों के साथ मड़क पर क़दम बढ़ाता हुआ वह भी गांव के बाहर की ओर चला गया।

मीश्का दादा के साथ घर लौटा। उसकी मां मुश्किल से अपने को सम्भालती और लडखड़ाती हुई पीछे-पीछे चली आ रही थी। गांव में कहीं-कहीं कुत्ते भौंक रहे थे, कही-कही रोशनी नज़र आ रही थी। गांव पर गत का अंधेरा इस तरह छाया जा ग्हा था मानो किसी बुढ़िया ने काली ओढ़नी ओढ़ ली हो। बूंदा-बांदी हो ग्ही थी, गांव मे कुछ दूर स्तेपी में बिजली कौंध-कौंध उठती थी और ग्ह-रहकर बादलों की गग्ज सुनायी पड़ती थी।

वे घर के निकट पहुंच गये। मीश्का रास्ते भग चुप ग्हा, मगर अब उसने पूछा.

"दादा, बापू किससे लडने गये है?"

"अरे, छोड़ भी मेरा पिंड!"

"दादा!"

"क्या है?"

"किससे लड़ेगे मेरे बापू?"

दादा ने फाटक की चटखनी लगाते हुए जवाब दिया

"हमारे गाव के पाम कुछ दुष्ट लोगों ने मुसीबत कर रखी है। लोग उमे 'गिरोह' बताते हैं, मगर मै तो यही समझता हूं कि कोई डाकू-लुटेरे होंगे... तुम्हारा बाप उन्ही से लडने गया है।"

"बहुत है क्या वे लोग दादा?"

"मुना है कि कोई दो मौ है . अच्छा अब जाकर मो जा। तुझे क्या लेना-देना है इन बातों से!"

गत को आवाज़ो के शोर मे मीश्का की आंख खुल गयी। उमने अपना बिस्तर टटोला तो दादा को ग़ायब पाया।

"दादा, कहां हो तुम?"

"चुपचाप पड़ा रह और सो जा!"

मीश्का उठा और अंधेरे में रास्ता टटोलता हुआ खिड़की तक जा पहुंचा। दादा सिर्फ़ जाघिया पहने हुए बेंच पर बैठे थे, सिर उनका खिड़की से बाहर निकला हुआ था और वे बहुत ग़ौर मे आवाज़ें सुन रहे थे। मीश्का ने भी कान लगा दिये। रात के गहरे सन्नाटे में उसे गांव के परे बार-बार गोली चलने की आवाज़ साफ़ सुनायी दी। उसके

बाद तो गोलियों की बौछार ही लग गयी।

"तड़ाक! तड़-तड़-तड़! तड़-तड़-तड़ाक!"

ऐसा लगता था मानो कोई कीलें ठोंक रहा हो।

मीश्का का दिल दहल उठा। वह दादा से जा लिपटा और उसने पूछा:

"यह मेरे बापू गोली चला रहे है न?"

दादा चुप हो गये और मां फिर से विलाप करने लगी।

पौ फटने तक गोलिया चलती रही और उसके बाद सन्नाटा हो गया। मीश्का वही बेंच पर सिमट-सिमटाकर लेट गया और बेचैन, बोझल और दुख की नीद सो गया। उजाला हुआ तो कार्यकारिणी समिति के कार्यालय की ओर घुड़सवारों का एक दल तेज़ी से आता दिखायी दिया। दादा ने मीश्का को जगाया और खुद बाहर भागे।

कार्यकारिणी समिति के आगन में धुएं का खम्भा-सा उठा और आग की लपलपाती हुई लपटें इमारतों की ओर बढ चली। सड़कों पर घुड़सवार घोडे कुदाते फिर रहे थे। एक घुड़सवार अहाते के पास आया और उसने पुकारकर दादा से पूछा:

"बूढे, घोडा है?"

"हां है..."

"जोतकर गांव के बाहर चला जा! वहां झाड़ियो में तुम्हारे कम्युनिस्ट पड़े हैं! . जा, ले आ लादकर! सगे-सम्बन्धियों से कह देना उनकी मिट्टी ठिकाने लगा लें!"

दादा ने झटपट घोड़े को जोता, कांपते हाथो से लगामें सम्भाली और तेज़ी से अहाते के बाहर निकल गये।

गांव में तो हाय-दुहाई मच गयी। डाकू घोड़ों से उतरकर खलिहानों से सूखी घास निकाल लाये, भेड़-बकरिया काटने लगे। एक डाकू अनीसिमोव्ना के अहाते के क़रीब घोड़े से नीचे कूदा और घर में जा घुसा। मीश्का ने अनीसिमोव्ना को भर्राई आवाज़ से रोते-कलपते सुना। डाकू तलवार लिये हुए धड़ाधड़ बाहर आया, सीढ़ियों पर बैठ गया और उसने जूते उतारे। उसने अनीसिमोव्ना के फूलदार और पर्वो के अवसरों पर पहने जानेवाले शॉल के दो टुकड़े किये, अपनी गन्दी पट्टियां उतारीं और उनकी जगह उन्हें अपनी टांगों पर लपेट लिया।

मीश्का कोठे में जाकर बिस्तर पर लेट गया। उसने सिर तकिये

मे गडा दिया और तभी उठा जब फाटक चरमरा उठा। भागा हुआ दरवाजे पर गया। देखा कि दादा की दाढी आसुओ से तर है और वह घोडे को अहाते के अन्दर ला रहे है।

पीछे छकडे मे एक आदमी नगे पाव पडा था। उसकी बाहे फैली हुई थी, छकडा जब हिचकोले खाता तो उसका सिर दाये-बाये टकराता और छकडे के तख्तो पर गाढा-गाढा काला खून रिस रहा था

मीश्का कापते पैरो से छकडे के करीब गया। उसने चेहरे पर नजर डाली जो तलवार के वारो से बिल्कुल टुकडे-टुकडे हुआ पडा था। दात बाहर निकले हुए थे, हड्डी समेत कटा हुआ गाल लटक रहा था और बाहर को निकली, खून से लथपथ आख पर हिलती-डुलती हुई बडी-सी हरी मक्खी बैठी थी।

मीश्का नही पहचान पाया कि वह लाश किसकी है। वह डर से कुछ कुछ काप रहा था। उसने इस व्यक्ति की छाती को देखा, खून से तर-बतर नीली और सफेद धारियोवाली कमीज की ओर उसका ध्यान गया और वह इस तरह काप उठा मानो किसी ने पीछे से उसकी टागो पर कसकर चोट की हो। फटी-फटी आखो से उसने एक बार फिर उस निश्चल और स्याह पडे हुए चेहरे को देखा और उछलकर छकडे पर जा पहुचा।

'उठो बापू! उठो मेरे प्यारे बापू!' वह छकडे से नीचे गिर पडा उसने भाग जाना चाहा मगर टागे जवाब दे गयी। हाथो-पैरो के बल रेगता हुआ वह बडी मुश्किल से घर के दरवाजे तक पहुचा और लुढक गया।

* * *

दादा की आखे अन्दर को धस गयी थी। सिर हिलता और हिचकोले खा रहा था, होठ हिलते-डुलते थे मगर उनसे कोई आवाज नही निकलती थी।

दादा देर तक चुपचाप मीश्का का सिर सहलाते रहे। फिर बिस्तर पर औंधी पडी हुई मा की ओर देखते हुए उन्होने फुसफुसाकर मीश्का से कहा

'चल बेटे, बाहर अहाते मे चले '

दादा ने मीश्का का हाथ थामा और दरवाजे की ओर चले। कोठे का दरवाजा लाघते हुए मीश्का ने आखे मूद ली, वह सिहर उठा। कोठे मे मेज पर बाप की लाश पडी थी, गुमसुम और गम्भीर। उसका खून धोकर साफ किया जा चुका था, मगर मीश्का अपनी आखो के सामने शीशे की तरह पथरायी और खून मे सनी वही आख देख रहा था जिस पर बडी हरी मक्खी बैठी थी।

दादा ने काफी देर लगाकर कुए मे रस्सी खोली, फिर अस्तबल की ओर गये और घोडे को बाहर लाये। न जाने क्यो अपनी आस्तीनो से उन्होने घोडे के मुह से झाग पोछी। फिर उसे लगाम पहनायी और कान लगाकर बाहर की आवाजे सुनते रहे। गाव मे खूब शोर मचा हुआ था, ठहाके गूज रहे थे। अहाते के करीब से दो घुडसवार गुजरे, अधेरे मे उनकी सिगरेटो की चिगारिया चमकी और उनकी यह बातचीत सुनायी पडी

"क्यो, कैसी रही, करवा दी न हमने भूखो से इनकी पिटायी! अब दूसरी दुनिया मे पहुचकर याद करेगे कि लोगो से अनाज छीनने का क्या नतीजा होता है! "

घोडो की टापो की आवाज जब बिल्कुल बन्द हो गयी तो दादा ने मीश्का के कान मे धीरे से कहा

' देख बेटे मै हू बूढा आदमी घोडे की सवारी मेरे बस की बात नही तुझे इस पर चढा देता हू, तू भगवान का नाम लेकर प्रोनीन गाव को चला जा रास्ता मै तुझे दिखा दूगा वहा फौज के वे जवान पडे होगे जो बैड बजाते हुए हमारे गाव से गुजरे थे उनसे कहना कि तुरन्त हमारे गाव की ओर चले आये—यहा डाकुओ का गिरोह है! समझ गये? '

मीश्का ने चुपचाप सिर हिलाकर हामी भरी। दादा ने मीश्का को घोडे पर बिठाया रस्सी से दोनो पाव जीन के साथ बाध दिये ताकि वह गिर न पडे और खलिहान, तालाब और डाकुओ के अड्डे के करीब से होते हुए घोडे को स्तेपी मे लाये।

"देख बेटा, उस टीले की तरफ घाटी चली गयी है, उसके साथ-साथ घोडा चलाते जाना, इधर-उधर नही मुडना! सीधा गाव मे जा पहुचेगा। अच्छा अब चल दे मेरे लाल!"

दादा ने मीश्का को चूमा और घोडे को धीरे से थपथपाया।

रात चादनी थी, उजली-उजली थी। घोडा हल्के कदमो से दौडने और नथने फुलाने लगा। पीठ के बोझ को हल्का महसूस करते हुए वह सम्भालकर कदम रखने लगा। मीश्का उसे लगाम छुआता जाता था, गर्दन थपथपाता था और धचको से उछल-उछल जाता था।

अनाज की हरी घनी बालो के बीच बटेर मस्ती मे चहक रहे थे। घाटी की तह मे झरने का पानी अपना झर-झर का गीत अलाप रहा था। हवा मे कुछ-कुछ सिहरन थी।

स्तेपी मे अकेले होने से मीश्का को डर लगने लगा। उसने दोनो बाहे घोडे की गर्म-गर्म गर्दन के गिर्द डाल दी और उसका ठिठुरता-कापता छोटा बदन घोडे से चिपक गया।

घाटी ऊपर की ओर जाती, नीचे ढलती और फिर ऊपर की ओर ऊची उठती। मीश्का को पीछे की ओर देखने से डर लगता। वह कुछ फुसफुसाता हुआ यह प्रयत्न कर रहा था कि उसके दिमाग मे किसी तरह का विचार न आये। सन्नाटा उसके कानो मे साय-साय बज रहा था, उसने आखे मूद रखी थी।

घोडे ने सिर झटका नथने फुलाये और कदम तेज कर दिये। मीश्का ने जरा-सी आख खोलकर नीचे की ओर देखा। पहाडी के दामन मे उसे मद्धिम रोशनिया दिखायी दी। हवा के झोको के साथ कुत्तो के भौकने की आवाज भी सुनायी दी।

घडी भर मे खुशी के मारे मीश्का के दिल मे गर्मी आ गयी। उसने घोडे को पैर से एड लगायी और टिटकारी भरी

"टिन-ट-ट-ट!"

कुत्तो के भौकने की आवाज निकट आ गयी। टीले पर पवनचक्की के पखो की धुधली-सी रेखाये नजर आयी।

"कौन जा रहा है यह?" पवनचक्की से आवाज आयी।

मीश्का ने फिर चुपचाप घोडे से आगे बढते रहने का आग्रह किया। ऊघते हुए गाव मे मुर्गो की बाग सुनायी दी।

"रुक जाओ! कौन जा रहा है? गोली मार दूगा! "

मीश्का डर गया, उसने लगामे खीची। मगर घोडे को करीब ही घोडो की उपस्थिति की गध आ गयी, वह जोर से हिनहिनाया और सवार की परवाह न करते हुए सरपट दौड चला।

"ठहरो!"

पवनचक्की के क़रीब से गोलियों की तड़तड़ सुनायी दी। मीश्का की चीख घोड़ों की टापों की आवाज़ में डूब गयी। उसके घोड़े का दम फूल गया, वह पिछली टांगों के बल खड़ा हुआ और दायें पहलू ढह पड़ा।

मीश्का अब अपनी टांग में बहुत ही ज़ोर का, जानलेवा दर्द महसूस कर रहा था। चीख उसके होंठों पर जमकर रह गयी। घोड़ा मीश्का की टाग पर अधिकाधिक बोझ डालता गया।

घोड़ों की टापें क़रीब आयी। तलवारें बाधे हुए दो सवार क़रीब पहुंचे, घोड़ों से कूदे और मीश्का पर झुक गये।

"हाय ग़ज़ब हो गया, यह तो बेचारा कोई छोकरा है! ."

"कही जान तो नही ले ली?!"

किसी ने क़मीज़ के अन्दर हाथ ले जाकर मीश्का के दिल की धड़कन जाची। मीश्का के मुंह के पास तम्बाकू के लहरे आ रहे थे। किसी ने खुश होते हुए कहा

"ज़िन्दा है! .. घोडे ने कही टांग न कुचल डाली हो? ."

बेहोश होता हुआ मीश्का फुसफुसाया:

"गाव में गिरोह है .. बापू को मार डाला . समिति का कार्यालय जला दिया, दादा ने कहा है कि आप फ़ौरन वहा पहुचें!"

मीश्का की धुधलाती हुई आखों के सामने रंगीन चक्कर-से घूमने लगे

अपने बापू को उसने सामने से गुज़रते देखा, लाल मूछो को मरोड़ते और हंसते हुए। मगर उसकी आंख पर एक बड़ी-सी झूलती हुई हरी मक्खी बैठी थी। फिर दादा सामने आये, सिर हिलाते और बिगड़ते हुए। इसके बाद मा दिखायी पड़ी। सब के बाद उसके सामने उभरा छोटे क़द का चौडे माथेवाला व्यक्ति जिसका हाथ उठा था। उसका हाथ सीधे मीश्का की ओर इशारा कर रहा था।

"साथी लेनिन! ." मीश्का अपनी फटी-सी आवाज़ में पुकार उठा। ज़ोर लगाकर उसने सिर ऊपर उठाया, वह मुस्कराया – और उसने अपने दोनों हाथ लेनिन की ओर बढ़ा दिये।

नीलाभ स्तेपी

मै और जब्बार दादा दोन के किनारे धूप मे झुलसे टीले पर जगली बेर की छाया मे लेटे है। आकाश मे बादलो की घुघराली शृखला के पास कत्थई चील मडरा रही है। चिडियो की बीट मे चितकबरी बेर की पत्तियो मे हमे कोई राहत नही मिल रही है। कडाके की गर्मी से कान भन्ना रहे है। नीचे मथर-गति मे बहती दोन को या पैरो के पास पडे तरबूज के सूखे-पिचके छिलको को देखकर मुह मे लसीली राल भर आती है और इस राल को थूकने मे भी आलसय आता है।

घाटी मे सूखती झील के पास भेडो का जमघट है। थकी-मादी वे दुबे मटका रही है, धूल के कारण जोर-जोर से छीक रही है। बध के पास हट्टा-कट्टा मेमना पिछली टागो पर खडा भदमैली भेड के थन चूस रहा है। कभी-कभी वह मा के थन को सिर से दबाता है, भेड कराह रही है, दोहरी होकर मैंमने को दूध पिला रही है, और मुझे लगता है कि उसकी आखो मे व्यथा का भाव है।

जब्बार दादा मेरे बगल मे बैठे है। बुनी हुई ऊनी कमीज को उतार-कर वह आखे मिचमिचाते हुए जोडो और सिलवटो मे टटोल-टटोलकर कुछ ढूढ रहे है। दादा की उम्र एक कम पूरे सत्तर है। नगी पीठ झुर्रियो के विचित्र बेल-बूटो से ढकी है, खाल के नीचे से पखौडो की पैनी हड्डिया उभरी हुई है, पर स्लेटी भौहोवाली आखे—नीली और युवा है, दृष्टि चपल और पैनी है।

कमीज मे मिले चिल्लड को वह बडी मुश्किल से अपनी कापती, रूखी उगलियो मे पकडे है, वह उसे सावधानी से, बडे प्यार से पकडे हुए है, फिर उसे अपने से दूर, ज़मीन पर रखकर उन्होने हवा मे सलीब का निशान बनाया और बुदबुदाये

"रेग जा यहा से दूर, जानवर! शायद जीना चाहता है न?

क्या ? वही तो मै कह रहा हू देखो तो सही जी भरकर खून चूस लिया जमीदार की तरह "

कराहकर दादा ने कमीज चढा ली और पीछे की ओर सिर झुकाकर लकडी की बोतल से गट-गट गुनगुना पानी पीने लगे। हर घूट के साथ टेटुआ ऊपर खिसकता। ठोडी से गले तक दो सिलवटे लटकी है, दाढी पर बूदे लुढक रही है, अधखुली केसरी पलको से छनकर धूप लाल हो गयी है।

बोतल मे डाट लगाते हुए उन्होने मेरी ओर तिरछी नजर डाली, नजरे मिलने पर उन्होने होठ चबाये और स्तेपी को देखने लगे। घाटी के उस पार धुध की तरह मरीचिका व्याप्त है, तपती धरती पर बहती हवा मे थाइम के मधु की मादक गध बसी है। दादा ने चुपचाप गर्डारियो की हकनी एक तरफ उठाकर रखी और धूम्रपान से पीली उगली से इशारा करके बोले

' देख रहे हो इस बीहड के उस पार सफेदो की फुनगिया ? तामीलिन खानदान की जागीर – तोपोल्योव्का है। वही पास ही मे किसानो की बस्ती तोपोल्योव्का है पहले वे भू-दास थे। मेरा बाप अपनी जिदगी के आखिरी दिन तक जागीरदार का कोचवान रहा। जब मै छोकरा था पिता ने मुझे बताया था कि मालिक येवग्राफ तोमीलिन ने पालतू सारस के बदले मे उन्हे पडोसी जमीदार से लिया था। पिता की मौत के बाद मै उनकी जगह कोचवान का काम करने लगा। मालिक की उम्र तब साठ के करीब थी। बडा हट्टा-कट्टा था। जवानी मे जार की गारद मे था फिर नौकरी छोडकर दोन के इलाके मे बाकी दिन गुजारने आ गया। दोन के इलाके मे उनकी जमीन कज्जाको ने दबा ली और सरकार ने मालिक को सरातोव प्रात मे तीन हजार देस्यातीना* जमीन बख्श दी। यह जमीन वह सरातोव के किसानो को बटाई पर चढाता था और खुद तोपोल्योव्का मे रहता था।

"बडा अजीब आदमी था। हमेशा बढिया ऊनी अगरखा पहनकर और कटार लटकाकर घूमता था। जब कही जाना होता तो जैसे ही हम तोपोल्योव्का के बाहर निकलते हुक्म देता

---

* देस्यातीना – पुरानी रूसी माप। १ देस्यातीना लगभग २.७ एकड के बराबर था। – स०

"'दौड़ा, हरामी!'

"मैं चाबुक़ चलाता। घोड़े सरपट दौड़ने लगते, तेज़ हवा आंखों मे बहते पानी को न सुखा पाती। रास्ता ऊबड़-खाबड़ होता – बसंत की बाढ़ से वह जगह-जगह कट जाता – अगले पहिये तो फटाक से निकल जाते, पर पिछले धम्म से उछलते। आधा मील आगे चले जाते तो मालिक चिल्लाता: 'मोड़ पीछे!' मैं उल्टा मोड़ता और पूरी रफ़्तार से उस कटाव की ओर दौड़ पड़ते... दो-तीन बार उस मरदुए कटाव को पार करते, जब तक कमानी न टूट जाती या बग्घी के पहिये न उखड़ जाते। तब मेरा मालिक बड़बड़ाकर उठता और पैदल चल पड़ता, और मैं पीछे-पीछे लगाम थामे घोड़ों को लिये जाता। मनबहलाव का उसका एक तरीक़ा यह था. जागीर मे हम बाहर निकलते और वह मेरे पास कोचवान की सीट पर आ बैठता, मेरे हाथ से चाबुक छीनकर कहता. 'बीचवाले को दौड़ा!..' मैं बीचवाले घोड़े को दौड़ाता और वह बग़लवाले पर चाबुक चलाता। बग्घी में तीन घोडे होते थे, बग़लों में दोन की ख़ालिस नसल के घोड़े जोते जाते थे, वे साप की तरह बल खाकर ज़मीन पर सिर लटका देते थे।

"और वह उनमें से किसी एक पर चाबुक चलाता, बिचारा झाग से ढक जाता... फिर मालिक कटार निकालता, और झुककर, जैसे बाल को उस्तरे मे काटते है वैसे ही जोत काट देता। घोड़ा दो-एक फर्लांग तक ताबड़तोड दौड़ा जाता, और धम्म मे ढह जाता, नथुनों से खून की धारा फूट पडती – हो गया काम तमाम! दूसरे का भी यही हाल होता. बीचवाला घोड़ा भी जब तक निढाल नही हो जाता तब तक दौड़ता रहता, मालिक को क्या परवाह, बस उसका मन बहल जाता, गालो पर लाली छा जाती।

"कभी भी आख़िर तक सवारी में नही गया: या तो बग्घी तुड़वा देता या घोड़ों को मरवा देता, और बाद मे पैदल जाता... बड़े मज़े का था मालिक.. बीती बात हो गयी है, भगवान हमारा फैशला करे.. उसे मेरी लुगाई का चस्का पड़ गया, वह घर में नौकरानी थी। वह नौकरों के कमरे में दौड़ी आती, शमीज़ चिथड़े-चिथड़े होती – फूट-फूटकर रोती। देखता क्या हूं, छातियां उसकी दांतों से कटी हुई हैं, खाल चिथड़ों की तरह लटकी है.. एक बार की बात है रात को मालिक ने मुझे कंपाउंडर को बुलाने भेजा। मैं तो जानता था कि

इशकी कोई जरूरत नही है, समझ गया कि बात क्या है, स्तेपी मे रात घिरने का इतजार करके लौट आया। हवेली मे खलिहान की तरफ से घुसा, घोडो को बाग मे छोडकर मैने चाबुक सभाला और अपनी कोठरी की ओर चल पडा। दरवाजा खोला, दियासलाई जान-बूझकर नही जलायी, सुनता हू कि पलग पर उथल-पुथल हो रही है जैसे ही मेरा मालिक उठा, मैने उसे चाबुक मारा, और मेरे चाबुक के सिरे मे सीसा भरा था मुनता हू कि वह खिडकी की ओर रास्ता बना रहा है, मैने अधेरे मे एक बार और उसके माथे पर वार किया। वह खिडकी मे कूदकर भाग गया, मैने लुगाई की थोडी पिटाई की और सो गया। कोई पाचेक दिन बाद हम कस्बे को जा रहे थे, मै बग्घी पर धुस्सा तान रहा था, मालिक ने मेरा चाबुक उठाया और हाथो मे घुमा-घुमाकर उसके सिरे की जाच करने लगा, जब उसने सीसे को टटोला तो पूछने लगा

"'कुत्ते की औलाद, तूने चाबुक मे सीसा क्यो भी रखा है?'

"'आप ही ने तो हुक्म दिया था' मैने जवाब दिया।

"वह कुछ नही बोला सारे रास्ते पहले कटाव तक दात भीचकर सीटी बजाता रहा, मै पल भर के लिये मुडा तो देखता हू बालो ने माथा ढक रखा है और छज्जेदार टोपी काफी झुकी हुई है

"दो-एक साल बाद उसे फालिज पड गया। उसे उस्त-मेद्वेदित्सा ले जाया गया, ढेरो डाक्टर बुलवाये गये और वह फर्श पर पडा था, शरीर सारा काला पड गया। जेब से नोटो की गड्डिया निकालकर पटक दी, गला फाडकर चिल्लाने लगा 'इलाज करो, हरामियो! सब दे दूगा तुम्हे!

"बस पैसे के साथ भगवान को प्यारा हो गया। बेटा वारिस रह गया, फौजी अफसर था। जब छोटा था तो जिदा पिल्लो की खाल उतारकर उन्हे छोड देता था। बाप पर गया था। पर जब बडा हो गया तो ऐसी आदते छोड दी। लम्बे कद का पतला-दुबला था, बचपन से ही लुगाइयो की तरह उसकी आखो के नीचे काले गड्ढे थे नाक पर सुनहरा चश्मा चढाये रहता था, चश्मा फीतेवाला था। जर्मनो से लडाई के वक्त साइबेरिया मे युद्धबदियो का अफसर था, और तख्ता-पलट के बाद हमारे इलाके मे आ गया। तब तक मेरे पोते बडे हो चुके थे, बेटा तो भगवान को प्यारा हो गया था। बडे पोते

मेम्योन की शादी कर दी थी और अनिकेई अभी मटरगश्ती कर रहा था। बस उनके साथ रहता, अपनी जिंदगी के दिन गुजार रहा था बसंत मे फिर सत्ता पलट गयी। हमारे किसानो ने जवान मालिक को जागीर से निकाल दिया, उसी दिन सभा मे सेम्योन किसानो को जागीरदार की जमीन आपस मे बाटने और उसका माल-असबाब अपने-अपने घर ले जाने के लिये मनाने लगा। बस यही कर दिया गया सामान घरो मे चला गया जमीन बाट दी गयी और जुताई शुरू हो गयी। एक हफ्ते बाद शायद इससे भी जल्दी, अफवाह उडती-उडती पहुची कि जागीरदार कज्जाको के साथ हमारी बस्ती मे मार-काट करने आ रहा है। हमने फौरन दो छकडे स्टेशन पर भेज दिये हथियार लाने के लिये। ईस्टर के हफ्ते लाल गार्ड से हथियार ले आये, तोपोल्योव्का के बाहर खदके खोद ली गयी। जागीरदार के जोहड तक खोद ली।

"उधर देख रहे हो जहा थाइम चारो ओर उग रहा है उस बीहड की दूसरी ओर ही तोपोल्योव्कावाले खदको मे लेट गये। वहा मेरे मेम्योन और अनिकेई भी थे। सुबह मे लुगाइया उन्हे खाना-पीना दे आयी थी जैसे ही सूरज चढा – टीले पर घुडसवार नजर आये। छितरकर उन्होंने चढाई की तैयारी की, तलवारे चमकने लगी। खलिहान से मैने देखा कि आगेवाले ने जो सफेद घोडे पर सवार था तलवार हिलायी और घुडसवार शोर-शराबे के साथ टीले से नीचे आने लगे। सफेद घोडे की चाल से मैने जागीरदार के घोडे को पहचान लिया और घोडे से सवार को भी पहचान लिया दो बार हमारे लोगो ने उन्हे खदेड दिया, पर तीसरी बार कज्जाको ने घूमकर पीछे से हमला किया, चालाकी से काम लेकर और ऐसी मार-काट हुई दिन ढलते लडाई खत्म हो गयी। मै घर से बाहर निकला, देखता हू घुडसवार हवेली की ओर लोगो के झुड को हाककर ले जा रहे है। मैने लाठी उठायी और उस ओर चल पडा।

"अहाते मे हमारे तोपोल्योव्कावाले झुड मे सिमटकर खडे थे, वैसे ही जैसे ये भेडे। चारो ओर कज्जाक थे मैने पास जाकर पूछा

" भाइयो, मेरे पोते कहा है?'

"दोनो ने मुझे भीड से पुकारा। हमने आपस मे कुछ देर बातचीत की, देखता हू कि जागीरदार ड्योढी से निकला। मुझे देखकर चिल्लाया

"'अरे, यह तुम हो जस्वार दादा?'

"'जी हुजूर!'

"'क्यो आये हो?'

"ड्योढी के पास जाकर मै घुटनो के बल खडा हो गया।

"'पोतो को मुसीबत मे बचाने आया हू। मालिक, दया करो! जिदगी भर आपके पिता जी की सेवा की, भगवान उनकी आत्मा को शाति दे, मालिक, मेरी लगन को याद करो मेरे बुढापे का लिहाज करो!'

"वह बोला

"'देखो, जस्वार दादा, मै अपने पिता जी की सेवा के लिये तुम्हारा बहुत लिहाज करता हू, पर तुम्हारे पोतो को नही छोड सकता। वे असली बागी है। दादा समझा लो अपने मन को।'

'मै उसकी टागो मे लिपट गया, ड्योढी मे रेगने लगा।

"'मालिक, दया कर! मेरे प्यारे, याद कर कैसे दादा जस्वार तेरी खिदमत करता था, रहम कर, मेरे सेम्योन का तो दूधपीता बच्चा है!'

"उसने खुशबूदार सिगरेट सुलगायी, धुआ छोडकर बोला

''जा, उन हरामजादो से कह कि मेरे कमरे मे आये, अगर माफी मागेगे तो ठीक है, पिता जी की याद की खातिर उन्हे कोडे लगवाकर अपने दस्ते मे भरती कर लूगा। क्या पता, अपनी लगन से वे अपने शर्मनाक कुसूर का पछतावा कर ले।

"मै दौडा-दौडा अहाते मे गया, पोतो को बतलाया और आस्तीनो से पकडकर उन्हे खीचने लगा

''जाओ, बेवकूफो, जब तक माफ न कर दे जमीन पर लेटे रहना!'

"सेम्योन ने सिर तक नही उठाया। उकडू बैठा तिनके से मिट्टी कुरेदता रहा। अनिकेई मुझे घूरता रहा और फिर चिल्लाकर बोला

" जा, अपने मालिक से कह दे कि जस्वार दादा जिदगी भर घुटनो के बल रेगता रहा, और उसका बेटा भी, पर पोते अब यह नही चाहते। जाओ यही बता दो उसे!'

"'नही जायेगा, कुतिया के पिल्ले?'

"'नही जाऊगा!'

" 'तेरे लिये, हरामी, जीने-मरने का मोल कौड़ी भर का है पर सेम्योन को कहां फंसा रहा है? अपनी लुगाई और बच्चे को किस पर छोड़ेगा?'

"देखता हूं कि सेम्योन के हाथ कांप उठे, चुपचाप तिनके से ज़मीन कुरेदता जा रहा है, न जाने क्या ढूंढ़ रहा है। बैल की तरह चुप है।

" 'जाओ दादा, हमें मत सताओ,' अनिकेई ने मिन्नत की।

" 'नहीं जाऊंगा, शैतान की दुम! अगर कुछ हो गया तो सेम्योन की अनीमिया न जाने क्या कर बैठे!. '

"सेम्योन के हाथ का तिनका चट से टूट गया।

"मैं इंतज़ार करने लगा। पर वे फिर चुप।

" 'सेम्योन प्यारे, होश में आ, मेरे पालनहार! जा मालिक के पास।"

" 'आ गये होश में! नही जायेंगे! जा तू रेंगकर!' गुस्से में अनिकेई बोला।

"मैंने कहा:

" 'तू मुझे यह उलाहना दे रहा है कि जागीरदार के सामने मैंने घुटने टेके? तो क्या हुआ, मैं बुड्ढा हूं. मां की चूची की जगह मैंने जागीरदार का चाबुक चूसा .. अपने पोतों के सामने घुटने टेकते हुए भी मैं नही शर्माऊंगा।'

"घुटनों के बल खड़ा हो गया, ज़मीन पर सिर पटक-पटककर बिनती करने लगा। किसानों ने मुंह फेर लिया मानो कुछ देख ही न रहे हो।

" 'जाओ दादा ... जाओ, नही तो मार डालूंगा!' अनिकेई चिल्लाया, उसके होंठों पर झाग आ गया. आंखों में फंदे में फंसे भेड़िये की तरह वहशी चमक थी।

"मैं उल्टे पांव जागीरदार के पास गया। उसकी टांगों से लिपट गया, हाथ जड़ हो गये, मुंह से कोई बोल न निकले। उसने पूछा:

" 'कहां है पोते?'

" 'मालिक, डरते हैं...'

" 'अच्छा, डरते हैं...' और कुछ नही बोला। बूट से सीधे मेरे मुंह में ठोकर मारी और ड्योढ़ी में चला गया।"

ज़खार दादा हांफने लगे, पल भर के लिये उनका चेहरा पिचककर सफ़ेद पड़ गया; बड़ी कठिनाई मे उन्होंने बुढ़ापे की रुलाई को दबाया। सूखे होंठों को हथेली मे पोंछकर उन्होंने मुंह मोड़ लिया। दूरी पर, झील के उस पार डैने तिरछे फैलाकर चील घास से टकरायी और झपट्टा मारकर उसने सफ़ेद छातीवाली सोहन चिड़िया को हवा में उठाया। बर्फ़ के गालों की तरह पर बिखर गये, घास पर पड़े वे ऐसे चमक रहे थे कि उनको देखकर आंखों में असहनीय चौंध होती। ज़खार दादा ने नाक सिनकी और उंगलियों को क़मीज़ के किनारे से पोंछकर फिर बताने लगे:

"मैं भी पीछे-पीछे ड्योढ़ी पर चला गया, देखता हूं कि सेम्योन की अनीसिया बच्चे को गोद मे लिये दौड़ी आ रही है। इस चील की तरह ही वह पति से टकरायी और उसकी बांहों मे लटक गयी...

"जागीरदार ने सार्जेंट-मेजर को बुलाया, सेम्योन और अनिकेई की ओर इशारा किया। सार्जेंट-मेजर और छह कज़्ज़ाक उन्हें पकडकर हवेली के पिछवाडे में ले चले। मैं पीछे-पीछे चल पड़ा और अनीसिया बच्चे को अहाते में पटककर जागीरदार के पीछे-पीछे रेंगने लगी। सेम्योन सबसे आगे तेज़ी से चल रहा था, अस्तबल के पास जाकर वह बैठ गया।

"'तू क्या कर रहा है?' जागीरदार ने पूछा।

"'बूट काट रहे है, नही सहा जा रहा।'—और मुस्कराने लगा।

"बूट उतारकर मुझे देते हुए बोला:

"'दादा, जी भरकर पहनो। दोहरे तलवे के है, अच्छी हालत में है।'

"मैंने बूट ले लिये और फिर चल पड़े। चहारदीवारी के पास पहुंचे। टहनियों से बनी बाड़ के पास उन्हे खड़ा कर दिया। कज़्ज़ाक बंदूक़ों में गोलियां भरने लगे, जागीरदार पास ही में खड़ा छोटी-सी कैंची से नाखून काट रहा था, उसका हाथ गोरा-चिट्टा था। मै उससे बोला:

"'मालिक, इन्हें कपड़े उतारने दीजिये। कपड़े अच्छे-खासे हैं, हम ग़रीबों के काम आ जायेंगे।'

"'उतारने दो।'

"अनिकेई ने पतलून उतारी, उसे उलटा करके बाड़ के खूंटे पर

टाग दिया। जेब से तबाकू की थैली निकाली, सिगरेट जलायी, पैर चौडे करके धुए के छल्ले छोडने लगा, बाड के पार थूकने लगा मेम्योन ने पूरे कपडे उतार डाले, सूती जाघिया तक, पर टोपी उतारना भूल गया – शायद मति मारी गयी मेरे शरीर मे कभी झुरझुरी फैल जाती, कभी आग-सी लगने लगती। अपना सिर छूता तो चश्मे के पानी की तरह ठडा पसीना बहता मिलता देखता हू – दोनो पास-पास खडे है सेम्योन की पूरी छाती घने बालो से ढकी थी, नग-धडग, पर सिर पर टोपी है अनीसिया अपने पति को बिल्कुल नगा, सिर्फ टोपी पहने देखकर, दौडकर उससे चिपट गयी जैसे बेल पेड से लिपट जाती है। सेम्योन उसे धक्का देकर हटाने लगा।

" 'जा यहा से, छिनाल! होश मे आ, यहा इतने लोग है! क्या सूझी है तुझे, देखती नही कि मै एकदम नगा हू शर्म आती है '

"अनीसिया ने अपने बाल बिखेर लिये और बस यही चिल्लाने लगी

" 'हम दोनो को गोली मार डालो!

' जागीरदार न कैची जेब मे रखकर पूछा

" 'मारू गोली?'

" 'मार पापी! '

"जागीरदार से इस तरह बोली!

' बाध दो इसे खसम के साथ, उसने हुक्म दिया।

"अनीसिया चेती और पीछे हटने लगी पर बात बिगड चुकी थी। कज्जाको ने हसते हुए उसे बागडोर से सेम्योन के साथ बाध दिया पगली, जमीन पर ढह गयी और घरवाले को भी साथ गिरा दिया जागीरदार ने पास जाकर दात भीचकर पूछा

" 'क्या बच्चे की खातिर माफी-वाफी नही मागना चाहता?'

" 'माग लूगा,' सेम्योन कराहकर बोला।

' 'कोई बात नही, अब माग लेना भगवान से मुझसे मागने मे देर कर दी! '

"जमीन पर पडे-पडे ही दोनो को गोली मार दी अनिकेई गोली लगने पर लडखडाया पर फौरन गिरा नही। पहले घुटनो पर गिरा और फिर झटके से पीछे लेट गया, मुह ऊपर था। जागीरदार

ने उसके पास जाकर बड़े स्नेह से पूछा :

"'जीना चाहता है? अगर चाहता है तो माफ़ी मांग। चल, पचास कोड़े लगवाकर मोर्चे पर भेज दूंगा।'

"अनिकेई ने मुंह में थूक भरा पर थूकने की शक्ति नही बची थी, थूक बस दाढ़ी पर बहकर रह गया... गुस्मे मे चेहरा फक पड़ गया, पर कर क्या पाता, तीन गोलियां उसे बींध चुकी थी...

"'इसे सड़क पर फेंक दो!' जागीरदार ने आदेश दिया।

"कज़्ज़ाक उसे घमीटकर ले गये और बाड़ के ऊपर मे सडक पर फेंक दिया। उसी समय तोपोल्योव्का मे कज़्ज़ाकों का रिसाला क़स्बे को जा रहा था, उनके साथ दो तोपें भी थी। जागीरदार मुर्ग़ें की तरह फुदककर बाड़ पर चढ़ गया और ज़ोर से चिल्लाया :

"'तोपवाले, घोडो को सरपट दौड़ाते ले जाओ, बचाकर मत जाना! ..'

"मेरे रोंगटे खड़े हो गये। हाथों में सेम्योन के कपड़े और बूट पकडे था, पर टांगें मुड़ी जा रही थी... घोडों में दैवी शक्ति होती है, एक ने भी अनिकेई पर पैर नही रखा, कूदकर उसे पार कर रहे थे... मैं टहनियों की बाड से चिपक गया, आंखे नहीं बंद कर पा रहा था, मुंह मूख गया था .. तोप के पहिये अनिकेई की टांगों पर चढ़े.. वे कुरकुरायी जैसे दांतों में पापड़, तिनको की तरह कुचल गयी... सोचा अनिकेई भयंकर पीड़ा से मर जायेगा, पर वह चिल्लाया तक नही, उफ़ तक न निकली उसके मुंह से सिर पूरे ज़ोर से ज़मीन से सटाये पड़ा हुआ था, मुट्ठी भर-भरकर सडक की मिट्टी मुह में ठूंस रहा था... मिट्टी चबाते हुए जागीरदार को अपलक देख रहा था और आंखें उसकी स्पष्ट, निर्मल थी, आकाश की तरह...

"जागीरदार तोमीलिन ने उस दिन बत्तीस जनों को गोलियों से भुनवा दिया। बस अकेला अनिकेई ही ज़िंदा बच गया अपने गर्व के कारण..."

ज़ख़ार दादा बड़ी देर तक बोतल से गटगट पानी पीते रहे। बदरंग होंठों को पोंछकर उन्होंने अनमने ढंग से क़िस्सा पूरा किया :

"गयी-बीती बात हो चुकी है। बस ख़ंदक़ें ही बची हैं जिनमें हमारे किसानों ने अपने लिये ज़मीन जीती। उनमें अब घास और झाड़ियां उगती हैं... अनिकेई के पैर काट दिये गये, अब वह हाथों

के बल चलता है धड को जमीन पर घसीट-घसीटकर। देखने मे बडा हसमुख है, सेम्योन के छोकरे के साथ दरवाजे की चौखट मे रोज कद नापता है। छोकरा तो उससे लम्बा हो ही जायेगा सर्दियो मे गली मे निकल जाता, लोग ढोरो को नदी पर पानी पिलाने के लिये हाकते और वह हाथ उठाकर रास्ने मे बैठ जाता बैल बिदककर नदी पर जमी बर्फ पर भाग जाते, वहा फिसल-फिसलकर बेहाल हो जाते और वह हसता रहता एक बार की बात है बसत मे हमारे कम्यून का ट्रैक्टर खेत जोत रहा था, बस वह भी चल पडा उस तरफ। मै वही पास मे भेडे चरा रहा था। देखता क्या हू कि मेरा अनिकेई जुते खेत मे रेग रहा है। सोचने लगा कि वह क्या करना चाहता है? और देखता हू कि अनिकेई ने चारो ओर नजर दौडायी, आसपास कोई उसे दिखाई नही दिया, उसने जमीन से अपना चेहरा सटा लिया, हल के फाल से पलटे मिट्टी के लौदे मे कसकर लिपट गया, उसे सहलाने, चूमने लगा उसे पच्चीसवा लग गया है, पर जमीन कभी नही जोत पायेगा बस यही दुख उसे सताता है "

धुधली साझ मे नीलाभ स्तेपी ऊघ रही थी, थाइम के झडते फूलो से मधुमक्खिया उस दिन के लिये आखिरी बार पराग बटोर रही थी।

रुपहली और घनी फैदर घास घमड के साथ अपनी कलगीदार बालिया हिला रही थी। भेडो का रेवड तोपोल्योव्का की ओर ढलान पर उतर रहा था। जव्वार दादा हकनी का सहारा लेते हुए चुपचाप चल रहे थे। धूल से ढके रास्ते पर चिन्हो की रेखाए दिखाई दे रही थी एक भेडिये का था—कदम-ब-कदम, फैले पजे, दूसरा—तोपो-ल्योव्का के ट्रैक्टर के धारीदार पहियो का।

जहा कच्चा रास्ता पुराने जमाने के, घास-फूस ढके राजमार्ग से मिलता है, चिन्ह भिन्न दिशाओ मे जा रहे थे। भेडिये के जगली घास और काटेदार झाडियो की दुर्गम हरियाली मे डूबे बीहडो की ओर मुड गये और रास्ते पर मिट्टी के तेल की बू छोडता एक गहरा और अनवरत चिन्ह रह गया।

बछेडा

दिन-दहाडे, हरी मक्खियो से ढके लीद के ढेर के पास, अगली टागो को पसारे, सिर के बल वह अपनी मा की कोख से निकला। जन्म लेते ही उसे किरच गोले के विस्फोट का नीला-सुरमई पुज दिखायी पड़ा। धमाके ने उसकी नम काया को मा की टागो के बीच पटक दिया। सत्रास – यहा, धरती पर यही उसकी प्रथम अनुभूति थी। अस्तबल की खपरैलवाली छत और जमीन पर ओलो की तरह, बदबूदार छर्रे बरसे। बछेडे की मा – त्रोफीम की लाखी घोडी – डर के मारे फुदकी और फिर हिनहिनाकर उसने पसीने से तर अपनी बगल को लीद के सुरक्षादायी ढेर पर टिका दिया।

तपिश भरी नीरवता मे मक्खियो की भिनभिनाहट साफ सुनायी पड रही थी। तोप की गोलाबारी के डर मे कही घनी घास मे दुबके मुर्गे ने डैने फडफडाकर, निसकोच परतु फटे-फटे स्वर मे बाग दी। घर के भीतर से घायल मशीनगनर का करुण क्रदन सुनायी पड रहा था। कभी-कभी वह तीखे, फटे स्वर मे चिल्लाता, बीच-बीच मे चुन-चुनकर गालिया जड देता। फुलवारी मे पोस्त के सिदूरी मखमली फूलो पर मधुमक्खिया गुजार कर रही थी। गाव के बाहर मैदान मे मशीनगन दनादन गोलिया बरसा रही थी, उसकी उत्साहवर्द्धक तड-तड की पृष्ठभूमि मे, पहले और दूसरे गोले के बीच के अतराल मे लाखी घोडी ने ममता के साथ अपने नवजात शावक को चाटा। मा के फूले थन से चिपककर उसे पहली बार जीवन के आनद और मा के स्नेह की अनत मिठास की अनुभूति हुई।

जब खलिहान के पीछे कही गिरकर दूसरा गोला फटा, त्रोफीम भडाक से मकान का दरवाजा खोलकर निकला और अस्तबल की ओर चल पडा। लीद के ढेर से बचता हुआ वह धूप की चौध के कारण आखो के ऊपर हथेली का छज्जा बनाकर चल रहा था। यह देखकर

कि तनाव से फुदकता बछेड़ा उसकी घोड़ी का थन चूस रहा है वह सकपका गया, उसने जेबों में हाथ डाला और कांपती उंगलियों से तंबाकू की थैली निकाली, काग़ज़ में तंबाकू लपेटकर उसने सिगरेट बनायी और उसकी बोलती लौट आयी:

"आ... हा... मतलब ब्याह गयी? तू ने भी ख़ूब वक़्त चुना इसके लिये।" त्रोफ़ीम के इस वाक्य में कटु निराशा का भाव झलका।

घोड़ी की पसीना सूखने से खुरदरी हुई बग़लों पर घास के तिनके और सूखी लीद चिपकी हुई थी। वह बेहद दुबली लग रही थी पर आखों से थकान मिश्रित गर्वोल्लास टपक रहा था और ऊपरवाले मखमली होंठ पर मुस्कान फैली थी। कम से कम त्रोफ़ीम को तो यही लगा। त्रोफ़ीम ने घोड़ी को अस्तबल में बांध दिया, गर्दन पर टंगे अनाज के झोले को हिलाते हुए वह फुफकारी। चौखट से टिककर त्रोफीम ने बछेड़े की ओर तिरछी नज़र डाली और सख़्त आवाज़ में पूछा:

"उड़ा ली मौज?"

उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना वह बोला:

"कम से कम इस्नात के घोडे जैसा ही जनती, शैतान जाने किस पर गया है... बना तो सही, मैं इसका करूं क्या?"

अस्तबल की अंधकारमय नीरवता में अनाज चबने की आवाज़ आ रही थी, दरवाज़े में धूप की तिरछी सुनहरी किरणों का पुंज चमक रहा था। प्रकाश त्रोफ़ीम के बायें गाल पर पड़ रहा था, उसकी ललछौंही मूंछ और दाढ़ी के बाल चमक रहे थे, मुंह को घेरे झुर्रियां टेढ़ी-मेढ़ी काली खाइयों की तरह लग रही थी। बछेड़ा तिनके जैसी पतली टांगों पर काठ के घोड़े की तरह खड़ा था।

"मार दूं इसे?" तंबाकू मसलने के कारण हरे अंगूठे से बछेड़े की ओर इशारा करके त्रोफ़ीम बोला।

घोडी पलक झपकती, अपनी लाल आंखों से मालिक की ओर उपहासपूर्ण नज़र से देख रही थी।

* * *

स्क्वाड्रन कमांडर के कमरे में उस दिन शाम को निम्न वार्तालाप हुआ:

"मैने गौर किया कि मेरी घोडी बडी सभलकर चलने लगी, सरपट नही दौडती, सास फूलने लगता उसका। ध्यान से देखा तो वह ग्याभन निकली इतनी सभलकर रहती कि पूछो मत बछेडा तो कुम्मैत है बस " त्रोफीम बता रहा था।

स्क्वाड्रन कमाडर ताबे का मग मुट्ठी मे कसकर थामे चाय पी रहा था। उसने मग को ऐसे पकड रखा था जैसे कि हमला बोलने से पहले तलवार की मूठ को पकडे हो। वह उनीदी आखो से लैम्प को ताक रहा था। आग की पीली-सी लौ पर पतगे मडरा रहे थे, वे खिडकी से अदर आते, गर्म चिमनी मे झुलसकर गिर जाते और दूसरे उनका स्थान ले लेते।

" क्या फर्क पडता है, चाहे भूरा हो या काला। गोली मार देनी चाहिये। बछेडे के साथ तो हम बजारो की तरह लगेगे।"

'क्या? हा, मै भी तो कहता हू कि बजारो की तरह लगेगे। अगर सेना कमाडर आये तब? रेजिमेट का निरीक्षण करने आयेगे और वह परेड के वक्त दुम हिलाता कुलाचे भरेगा तब? सारी लाल सेना के सामने हमारी नाक कट जायेगी। समझ नही आता त्रोफीम, तुमने यह होने कैसे दिया? गृह-युद्ध जोरो पर है इधर ऐसी भौडी हरकते यह तो बडी शर्म की बात है। साईसो को मेरा कडा हुक्म घोडो को घोडियो से अलग रखो।"

सुबह त्रोफीम रायफल लिये घर से बाहर निकला। सूरज अभी उगा नही था। घास पर गुलाबी ओस बिछी थी। पैदल सेना के बूटो से कुचला खदको से पटा मैदान – दुख की पीडा से व्याकुल युवती के चेहरे की तरह लग रहा था। कैन्टीन मे बावर्ची अपने काम मे व्यस्त थे। स्क्वाड्रन कमाडर पसीने से गला पुराना बनियान पहने ड्योढी पर बैठा था। रिवाल्वर की मूठ की उत्साहवर्द्धक ठडक की अभ्यस्त हो चुकी उगलिया फूहड ढग से भूले-बिसरे, प्रिय काम को याद करते हुए बेत की पौनी बुन रही थीं। पास से गुजरते हुए त्रोफीम ने कौतूहल के साथ पूछा

"पौनी बना रहे है?"

स्क्वाड्रन कमाडर ने पतली टहनी से हत्थी को जोडा और दात भीचकर बुदबुदाया

"अरे, मकान मालकिन जो है न कहती रहती है बना दो,

बना दो। एक जमाने मे इस काम का माहिर था, अब वह बात नही रही ढग की नही बनी।"

"नही, बढिया है," त्रोफीम ने प्रशमा की।

स्क्वाड्रन कमाडर ने घुटनो से छीलन को झाडते हुए पूछा

"बछेडे का काम तमाम करने जा रहे हो?"

त्रोफीम चुपचाप हाथ हिलाकर अस्तबल मे चला गया।

स्क्वाड्रन कमाडर सिर झुकाये गोली चलने की प्रतीक्षा करने लगा। एक के बाद एक पल बीतते जा रहे थे, पर गोली चलने की आवाज नही सुनायी दी। अस्तबल के पीछे मे त्रोफीम प्रकट हुआ, वह झेपा-झेपा-सा लग रहा था।

"क्यो, क्या हुआ?"

"लगता है रायफल मे कुछ गडबडी है टोपी पर हथौडा नही पड रहा।"

"जरा दिखाना, रायफल।'

त्रोफीम ने अनिच्छा के साथ दी। बोल्ट हटाकर स्क्वाड्रन कमाडर ने आखे मिचमिचायी।

"अरे, इसमे तो गोली ही नही है! "

"कैसे नही है! " त्रोफीम चिहुककर बोला।

"मै कह रहा हू, नही है।"

अरे हा, मैने तो उन्हे वहा अस्तबल के पीछे फेक दिया "

स्क्वाड्रन कमाडर ने रायफल को बगल मे रख दिया और बडी देर तक हाथ मे नयी पौनी को उलट-पलटकर निहारता रहा। बेत की ताजी चिपचिपी टहनिया मधुर सुगध फैला रही थी, नथुनो मे खिलते बेद-मजनू की गध भर रही थी, युद्ध की अनत आग मे विस्मृत श्रम की, धरती की सुगध आ रही थी।

"सुनो! जाने दो! रहने दो उसे अभी अपनी मा के साथ। बाद मे देखा जायेगा। लडाई खत्म हो जायेगी खेत जोतने के काम आयेगा। सेनापति अगर आये तो उसकी मजबूरी को समझ लेगे – दुधमुहा है तो मा का थन चूसेगा ही सेनापति ने भी चूची चूसी थी, हमने भी चूसी, आखिर जब रीत ही ऐसी है तो बात खत्म! और, हा, तुम्हारी रायफल मे कोई खराबी नही है।"

* * *

कोई एक महीने बाद एक दिन त्रोफीम के स्क्वाड्रन की उस्त-खोप्येस्कीं कस्बे के पास कज्जाक रिसाले से मुठभेड हो गयी। दिन ढलने से पहले गोलीबारी शुरू हो गयी। जब उन्होने हल्ला बोला साझ का झुटपुटा छाने लगा था। त्रोफीम अपने प्लाटून से बहुत पीछे छूट गया। घोडी पर न कोडे का और न ही एडो का कोई असर हो रहा था, वह सरपट नही दौडी। वह एक ही स्थान पर सिर उठाकर हिनहिनाती घूमने लगी जब तक कि दुम उठाये उसका बछेडा पास न आ गया। त्रोफीम कूदकर उतर गया, तलवार को म्यान मे ठूसकर उसने गुस्से मे कधे से रायफल उतारी। दाया पक्ष श्वेत सैनिको से भिड गया था। खड्ड के पास घुडसवारो का झुड उमड रहा था, मानो हवा के झोके उसे दाये-बाये उडा रहे हो। चुपचाप मार-काट हो रही थी। घोडो के खुरो से जमीन काप रही थी। त्रोफीम ने उस ओर एक नजर डालकर बछेडे के सिर का निशाना बाधा। न जाने गुस्से म हाथ काप गया या निशाना चूकने का कोई और कारण था, जो भी हो, पर गोली चलने के बाद बछेडे ने कुलाच भरी और खुरो से सफेद धूल उडाता कुछ दूरी पर जा खडा हुआ। त्रोफीम ने शैतान की औलाद पर साधारण नही, ताबे की लाल नोकोवाली बख्तरभेदी गोलियो की पूरी मैगजीन खाली कर डाली, जब उसे यकीन हो गया कि बख्तर भेदी गोलियो तक से (जो सयोग से थैले मे से उसके हाथ मे आ गयी थी) लाखी घोडी की औलाद का बाल बाका नही हुआ, तो वह घोडी पर सवार हो गया, और कोसता हुआ दुलकी चाल से उस ओर चल पडा, जहा लाल चेहरेवाले दढियल स्क्वाड्रन कमाडर और तीन लाल सैनिको को खड्ड की ओर खदेड रहे थे।

उस रात स्क्वाड्रन ने एक छोटे-से खड्ड के पास पडाव डाला। सिगरेटे कम पी। घोडो पर जीने कसी हुई थी। दोन के तट से लौटे टोही दल ने बताया कि नदी पार करने के स्थान पर शत्रु का भारी जमाव है।

त्रोफीम पैरो को रबड की बरसाती मे लपेटे लेटा था। उनीद मे वह दिन भर की घटनाओ को याद कर रहा था। उसकी आखो के सामने खड्ड मे कूदते स्क्वाड्रन कमाडर, कमिसार पर तलवार से वार

करते पोपले मुहवाले दढियल का लाल चेहरा, एक कज्जाक का क्षत-विक्षत शरीर, काले खून से तर किसी की जीन और बछेडा घूम रहे थे।

पौ फटने से पहले स्क्वाड्रन कमाडर त्रोफीम के पास आया और अधेरे मे उसके पास बैठ गया।

"सो रहे हो, त्रोफीम?"

"ऊघ रहा हू।"

बुझते तारो को देखता हुआ स्क्वाड्रन कमाडर बोला

"अपने बछेडे को मार दो! ढग से लडाई नही करने देता उसे देखकर हाथ काप जाता है तलवार नही उठती। यह सब इसलिये कि वह बिल्कुल नादान है घर की याद दिलाता है और युद्ध के समय ऐसी बातो का कोई स्थान नही पत्थर का दिल भी पसीज जाता है देखो तो सही घमासान लडाई मे हरामी को किसी ने कुचला नही, टागो के बीच घूम रहा था" चुप होकर वह ख्यालो मे डूबा मुस्कराया, पर त्रोफीम यह मुस्कान नही देख रहा था। "जानते हो त्रोफीम, उसकी दुम पीठ पर रखकर चौकडी भरता है और दुम हूबहू लोमडी जैसी है क्या जबर्दस्त दुम है!

त्रोफीम कुछ नही बोला। बरानकोट से सिर को ढककर ओस की नमी से ठिठुरता हुआ वह आश्चर्यजनक तेजी से सो गया।

* * *

पुराने मठ और पहाडी के बीच सकरे स्थान पर दोन निरकुश वेग से बहती है। मोड पर पानी उफनता और हरी फेनिल लहरे बसत की बाढ से तट पर बिखरे खडिया के खडो को पूरे जोर से हिलाती।

अगर कज्जाको ने दोन के उस स्थान पर कब्जा न कर लिया होता जहा उसका वेग धीमा और पाट चौडा व स्वभाव शात है, और तलहटी पर वहा से गोलीबारी न शुरू की होती, तो स्क्वाड्रन कमाडर कभी भी मठ के सामने तैरकर नदी पार करने का निर्णय न लेता।

दोपहर को नदी पार करने का काम शुरू हो गया। छोटी-सी नौका पर मशीनगन से लैस बग्घी, उसके चालक और तीन घोडे चढा दिये गये। जब नौका दोन के बीचो-बीच पहुचकर प्रवाह के विपरीत

तेज़ी से मुड़कर हल्की-सी झुक गयी, तो बायी ओर जोता जानेवाला घोड़ा जिसने कभी पानी नही देखा था बिदक गया। पहाड़ी की तलहटी में, जहां स्क्वाड्रन घोड़ों की काठी-ज़ीन उतार रहा था, नौका के लकड़ी के फ़र्श पर उस घोड़े की नालों की ठकठक और व्याकुल खर्राहट साफ़-साफ़ सुनायी पड़ रही थी।

"नाव डूबो देगा!" भौंहें सिकोड़कर त्रोफीम बुदबुदाया, उसका हाथ अपनी घोड़ी की पसीनें मे तर पीठ तक भी न जा पाया कि नौका में घोड़ा ज़ोर से हिनहिनाया और मशीनगनवाली बग्घी के बम को ठेलता हुआ पिछली टांगों पर खड़ा हो गया।

"गोली मार दे!.." स्क्वाड्रन कमाडर चाबुक को हाथ में मसोमते हुए चिल्लाया।

त्रोफ़ीम ने देखा कि मशीनगन चालक ने घोड़े की गर्दन पर लटककर उसके कान में पिस्तौल की नाल ठूंस दी। पटाखे की तरह गोली दगने की आवाज़ हुई, बाक़ी दोनों घोड़े सहमकर एक दूसरे से चिपक गये। मशीनगन चालकों ने नौका उलटने के डर से, मरे घोडे को बग्घी से सटा दिया। उसकी अगली टागे धीरे-धीरे मुड़ गयी, सिर लटक गया...

कोई दसेक मिनट बाद सकरी रेती से सबसे पहले स्क्वाड्रन कमांडर ने अपने समंद घोड़े को पानी म उतारा, उसके पीछे छप-छप करता पूरा स्क्वाड्रन पानी मे उतर गया–एक सौ आठ अधनंगे घुडसवार और इतने ही नाना रंगी घोड़े। ज़ीन-काठियां तीन डोंगियों में थी। उनमें से एक त्रोफ़ीम खे रहा था, अपनी घोड़ी उसने प्लाटून नायक नेचेपुरेन्को को सौंप दी थी। दोन के बीच पहुंचकर त्रोफीम ने देखा कि अगले घोड़े घुटने भर नदी में उतरकर अनिच्छापूर्वक पानी गटक रहे थे। घुड़सवार दबे स्वर में उन्हे हांक रहे थे। कुछ देर बाद तट से कोई पचास गज़ की दूरी पर घोड़ों के सिर ही सिर दिखायी पड़ रहे थे, फूत्कार सुनायी पड रही थी। घोडो के साथ उनकी अयाल पकडे, रायफ़लों पर कपड़ों की पोटलियां और झोले लटकाये लाल सैनिक तैर रहे थे।

डोंगी में चप्पू पटककर त्रोफ़ीम सीधा खड़ा हो गया और धूप से आंखे मिचमिचाते हुए तैरते झुंड में अपनी घोड़ी के लाखी सिर को खोजने लगा। स्क्वाड्रन शिकारियो की गोलियों की आवाज़ से डरकर आकाश में बिखरे जंगली हंसों की तरह लग रहा

था। आगे-आगे स्क्वाड्रन कमांडर का समंद घोड़ा अपनी चमकीली पीठ को ऊंचा उठाता तैर रहा था, उसकी पूंछ के पास सफ़ेद धब्बों की तरह उस घोड़े के कान चमक रहे थे जो कभी कमिसार का हुआ करता था। उनके पीछे काला झुंड तैर रहा था और सबसे पीछे, हर पल पिछड़ता हुआ प्लाटून नायक नेचेपुरेन्को का लटवाला सिर और उसके बायीं ओर त्रोफ़ीम की घोड़ी के खड़े कान दिखायी पड़ रहे थे। आंखों पर ज़ोर डालने पर उसे बछेड़ा भी दिखायी दे गया। वह झटक-झटककर तैर रहा था, कभी वह पानी से फुदकता तो कभी सिर्फ़ उसके नथुने दिखायी देते।

और तभी दोन पर चली हवा ने त्रोफ़ीम के कानों तक मकडी के तार की तरह महीन पुकार – हि-हि-हि ऽऽ पहुंचायी।

नदी की सतह पर गूंजता उसका हृदयविदारक चीत्कार तलवार की धार की तरह पैना था। वह कोड़े की तरह त्रोफ़ीम के दिल पर पडा और उसमें अजीब-सा परिवर्तन आ गया: पांच साल उसने लड़ते-लड़ते गुज़ार दिये, कितनी बार मौत से उसकी आंखें चार हुईं, पर उस पर कोई असर नही पड़ा, लेकिन इस समय ललछौंही दाढीवाले चेहरे का रंग उड़ गया, धूसर-नीला पड़ गया – और चप्पू संभालकर उसने बहाव से उलटी दिशा में, उस ओर नाव मोड़ दी जहा भंवर में निढाल बछेड़ा घूम रहा था और उससे कोई बीस-एक गज़ की दूरी पर नेचेपुरेन्को, भंवर की ओर हिनहिनाकर तैरती मां को रोकने के लिये पूरा ज़ोर लगा रहा था। त्रोफ़ीम का मित्र स्तेश्का येफ़ेमोव जो नाव में काठियों के ढेर पर बैठा था सख़्ती से चिल्लाया:

"पागल मत बन! किनारे की तरफ़ मोड़! देखता नही, वहा कज़्ज़ाक है!.."

"मार दूंगा!" त्रोफ़ीम सांस छोड़कर बोला और उसने पेटी से पकडकर रायफ़ल पास खीची।

नदी का बहाव बछेड़े को उस स्थान से दूर ले गया, जहा से स्क्वाड्रन ने नदी पार की थी। छोटा-सा भंवर, हरी लहरों की जिह्वाओं से चाटता उसे धीरे-धीरे घुमा रहा था। त्रोफ़ीम ज़ोर-ज़ोर से चप्पू चला रहा था, नाव छलांगें-सी लगाती चल रही थी। दायें तट पर बीहड़ से कज़्ज़ाक दौड़ते निकले। मशीनगन ज़ोर-ज़ोर से तड़-तड़ करने लगी। पानी में गिरती गोलियां सूं-सूं कर रही थीं। किरमिच की

फटी क़मीज़ पहने अफ़सर पिस्तौल हिलाता हुआ कुछ चिल्ला रहा था।

बछेड़ा अब कभी-कभी हिनहिनाता, उसका करुण चीत्कार धीमा हो गया। उसका यह चीत्कार किसी बच्चे की चीख से इतना मिलता था कि रोम-रोम सिहर उठता। नेचेपुरेन्को ने घोड़ी को छोड़ दिया और बायें तट की ओर तैर चला। कांपते हाथों से त्रोफ़ीम ने रायफ़ल उठायी, भंवर में फंसे सिर के नीचे का निशाना लगाकर गोली चला दी, फिर उसने झटके से बूट उतार दिये और हाथ फैलाकर दबी-सी हुंकार करके पानी में कूद गया।

बायें तट पर किरमिच की क़मीज़ पहने अफ़सर दहाड़ा :

"गोली चलाना बंद करो! "

पांच मिनट बाद त्रोफ़ीम बछेड़े के पास था, बायां हाथ ठंडे पेट के नीचे डालकर उसने बछेड़े को पकड़ लिया, और नाक-मुंह में पानी भरने के कारण ज़ोर-ज़ोर से हिचकियां लेता बायें तट की ओर तैर पड़ा दायें तट से एक भी गोली नहीं चली।

आकाश, वन, रेत – सब चटख हरे, मायावी लग रहे थे शक्ति बटोरकर बचा-खुचा ज़ोर लगाया – और त्रोफ़ीम ने अपने पांवों तले ज़मीन महसूस की। उसने घसीटकर बछेड़े की लिसलिसी काया को रेत पर खीचा और सुबकियां लेता हरे पानी की उलटियां करता रेत को टटोलने लगा... जंगल में नदी पार कर चुके स्क्वाड्रन के सैनिकों की आवाज़ों का कोलाहल गूंज रहा था, रेती के पीछे कहीं तोपें दगने की कांपती गरज सुनाई पड़ रही थी। लाखी घोड़ी बदन से पानी झाड़ती और बछेड़े को चाटती त्रोफ़ीम के पास खड़ी थी। उसकी लटकी पूंछ से रेत में पानी की इंद्रधनुषी धारा टपक रही थी।...

त्रोफ़ीम लड़खड़ाता हुआ खड़ा हुआ, रेत पर दो पग रखे और उछलकर बग़ल पर गिर पड़ा। मानो सीने में गर्म सुआ घुस गया; गिरते समय उसे गोली की आवाज़ सुनायी पड़ी। पीठ में इकलौती गोली लगी – दायें तट से चली। दायें तट पर किरमिच की फटी क़मीज़ पहने अफ़सर ने धुआं छोड़ते कारतूस को फेंकने के लिये उदासीनतापूर्वक कारबाइन का बोल्ट उतारा। उधर रेत पर बछेड़े से दो क़दम की दूरी पर त्रोफ़ीम दम तोड़ रहा था और उसके कड़े नीले होंठों पर, जिन्होंने पांच साल से अपने बच्चों को न चूमा था, मुस्कान और ख़ून के बुलबुले फूट रहे थे।

पराया खून

मौसम का पहला हिमपात हुआ। रात को दोन के पार से तेज हवा चल पडी, स्तेपी मे पाले से ढकी झाडिया खडखडाने लगी, हवा ने बर्फ के अस्तव्यस्त ढेरो को सवार दिया और उबड-खाबड सडको को समतल बनाने लगी।

रात ने कज्जाको के गाव को नीरवता के हरित धुधले आवरण मे ढक दिया। घरो के पिछवाडे मे अनजुती, जगली घास से ढकी स्तेपी ऊघ रही थी।

आधी रात को बीहडो मे भेडिये की दबी-दबी हूक सुनायी पडी, गाव के कुत्तो ने भौककर उसका जवाब दिया और गवरीला दादा की नीद टूट गयी। अलावघर की टाड से पैर लटकाकर, बल्ली को पकडे हुए वह बडी देर तक खासते रहे, बलगम थूककर उन्होने तबाकू की थैली निकाली।

हर रात मुर्गो की पहली बाग के बाद दादा उठ जाते, बैठे-बैठे सिगरेट पीते, खासते, खखारकर फेफडो से बलगम निकालते। खासी के दौरो के बीच दिमाग मे चिर-परिचित विचारो का ताता बध जाता। दादा की सोच का विषय बस एक ही था – उनका बेटा, जो युद्ध मे लापता हो गया था।

इकलौता था – पहला और आखिरी। उसी के लिये दिन-रात हाडतोड काम करते थे। जब लाल सेना मे लडने के लिये उसे मोर्चे पर भेजने का समय आया – बैलो की दो जोडी बाजार ले गये, उनकी बिक्री से मिले पैसो से एक कल्मीक से फौज लायक घोडा खरीदा। घोडा क्या, पूरा तूफान था, हवा से बाते करता था। सदूक से अपने दादा की चादी के काम की जीन और लगाम निकाली। विदाई के समय कहा

"देखो, पेत्रो, मैने तुम्हे बढिया सामान से लैस कर दिया है,

कोई अफसर तक ऐसे सामान के साथ शान से जा सकता है उसी तरह सेवा करना जैसे तुम्हारे बाप ने की, कज्जाक फौज और शात दोन की नाक मत कटने देना! तुम्हारे दादा-परदादो ने जागे की सेवा की, तुम्हे भी करनी चाहिये! "

दादा हरी चादनी से चमकती खिडकी मे देख रहे है, बाहर आगन मे सरसराती, न जाने क्या तलाशती हवा की साय-साय को सुनते हुए उन दिनो को याद कर रहे है जो न लौटेगे, फिर न वापस आयेगे

रगरूट की विदाई के समय छप्पर गवरीला के तले कज्जाक गला फाड-फाडकर पुराना कज्जाक गीत गा रहे थे

अरे हम लडते है पाते बाधकर
सुनते है सिर्फ हुक्म।
कमाडर आका हमारे देते जो हुक्म
पूरा करते है हम उसका
मार-काट करके ही लेते है हम दम!

मेज पर बैठा पेत्रो मदहोश था, उसका चेहरा सफेद-फक था, उसने आखिरी 'रकाब' का जाम पीकर थकान के साथ आखे भीची, पर घोडे पर सधकर बैठ गया। तलवार ठीक की और जीन मे झुककर अपने आगन की मुट्ठी भर मिट्टी उठा ली। न जाने अब कहा वह सोया पडा है, न जाने परदेस मे किस जमीन की गोद मे लेटा हुआ है?

दादा जोर से खासते है, छाती मे फेफडे घर्र-घर्र करते है और जब बलगम निकालकर वह झुकी कमर को बल्ली मे टिकाते है वही जाने-पहचाने विचार फिर उन्हे घेर लेते है।

* * *

बेटे को विदा किया और एक महीने बाद लाल सैनिक आ गये। दुश्मनो की तरह वे परपरागत कज्जाक रहन-सहन मे घुस गये, दादा के आम, दैनदिन जीवन को उन्होने खाली जेब की तरह पलट दिया। पेत्रो मोर्चे की उस ओर, दोनेत्स नदी के पास था, लडाइयो मे बहादुरी दिखाते हुए जमादार बनने का जतन कर रहा था और गाव मे गवरीला दादा मन ही मन परदेसियो, 'लालवालो' के प्रति तीव्र घृणा को

उसी तरह बड़े प्रेम से पाल-पोस रहा था जैसे कभी उसने अपने लाड़ले पेत्रो को पाला था।

वह उन्हें चिढ़ाने के लिये कज़्ज़ाक स्वाधीनता की प्रतीक लाल पट्टियोवाली शलवारनुमा ऊनी पतलून में घूमता था। गारद की नारंगी किनारीवाला चेकमेन* पहनता था, जिस पर कभी लगे सार्जेंट-मेजर के फ़ीतों के निशान थे। ज़ार की जी-जान से सेवा के लिये मिले मेडल और क्रॉस छाती पर टांगकर इतवार के दिन गिरजे जाता। भेड़ के खाल के ओवरकोट को खोले रखता ताकि सब देख सकें।

एक बार गांव की सोवियत के अध्यक्ष ने मिलने पर उसे कहा:

"उतार दे, दादा ये लटकने! गुज़र गया इनका ज़माना।"

बुड्ढा भड़ककर बोला:

"तू कौन होता है ऐसा हुक्म चलानेवाला, क्या तूने टांगा था इन्हें, जो उतारने को कह रहा है?"

"जिसने टांगा, वह तो कब से क़ब्र में सड़ रहा है।"

"सड़ने दो!.. पर मैं नही उतारूंगा! क्या मरे से उतारेगा?"

"तुम भी क्या कहते हो मैं तो तुम्हारा भला सोचकर सलाह दे रहा हूं, मेरी बला से तो तुम इनसे चिपककर सोओ, पर कुत्ते.. कुत्ते तो तुम्हारी पैंट पर पैबद लगवा देंगे! वे तो अब ऐसे भेस में लोगो को देखने के आदी नही रहे, तुम्हे पराया समझ बैठेंगे.."

वह अपकार का कडवा घूंट पीकर रह गया। तमग़े उतार डाले पर मन ही मन अपकार की ठेस बढ़ते-बढ़ते क्रोध मे बदल रही थी।

बेटा लापता हो गया – किसके लिये अब दौलत जमा करे। कोठरिया ढह रही थी, मवेशी बाड़ा तोड रहे थे, भेड-बकरियो की कोठरी का छप्पर आंधी में उड़ गया था, अब उसकी कडियां गल रही थी। खाली अस्तबल मे चूहे मौज कर रहे थे, बरामदे मे रखी दराती जंग खा रही थी।

कज़्ज़ाक गांव से जाते समय घोड़े ले गये थे, बचे-खुचे "लालवाले" ले गये। और लाल सैनिकों से एवज़ में मिले, टागों पर लम्बे-लम्बे

* चेकमेन – कज़्ज़ाक सैन्यदल की वर्दी का कोट। – स०

बालो और बडे-बडे कानोवाले आखिरी घोडे को पतझड मे मखनो* के लोग फोकट मे खरीद ले गये। उसके बदले वे बुड्ढे को एक जोडी अग्रेजी गेटर छोड गये।

"हम से भी तुम्हे कुछ मिलना ही चाहिये!" मखनो का मशीनगन चालक आख मारकर बोला। "हमारे माल से अमीर बनो दादा!"

दसियो साल से जमा की गयी सपत्ति स्वाहा हो रही थी। काम करते हुए हाथ लटकते थे, पर वसत मे जब खाली, दीन और क्लात स्तेपी पर पाव पडते—बूढे को भूमि अपनी ओर खीचती, रात को उसका अश्रव्य स्वर पुकारता लगता। बूढा बेबस होकर बैलो को हल मे जोतता और स्तेपी की छाती पर हल चलाने के लिये चल पडता, अतृप्त श्यामल भूमि मे गेहू के उम्दा बीज बिखेरता।

कज्जाक सागर तट से और सागर पार से लौट रहे थे पर उनमे से किसी ने भी पेत्रो को नही देखा था। उसके साथ विभिन्न रेजिमेंटो मे रहे, विभिन्न स्थानो पर गये—रूस भला छोटा है?—पर पेत्रो की रेजिमेंट मे शामिल उसके गाववासी कुबान प्रदेश मे कही ज्लोबिन के दस्ते से मुठभेड मे अपनी पूरी रेजिमेंट के साथ खेत रहे थे।

गवरीला अपनी बुढिया से बेटे के विषय मे लगभग कोई बात नही करता था।

रात को सुनता कि बुढिया तकिये को आसुओ मे भिगो रही है, नाक से सुड-सुड कर रही है।

"क्या हुआ बुढिया?" वह कराहकर पूछता।

कुछ देर चुप रहकर वह बोलती

"लगता है अलावघर की गैस भर गयी है घर मे सिर मे दर्द-सा हो रहा है।"

वह यह न जताता कि उसे असलियत मालूम है, सलाह देता

"अरे खीरे की काजी पी लो। कहो तो तहखाने से ले आऊ?"

"सो जाओ। ऐसे ही ठीक हो जायेगा!"

और फिर मकडी के अदृश्य जाले की तरह घर मे नीरवता छा

* मखनो—उक्राइना मे सोवियत सत्ता के खिलाफ लडनेवाले एक गिरोह का सरदार।—स०

जाती। चांद धृष्टता के साथ खिड़की में झांकता, पराये दुख, मां की पीड़ा का आनंद लेता।

फिर भी उन्हें बेटे के लौटने की प्रतीक्षा और आशा थी। गवरीला ने भेड़ की खालें कमाने के लिये दे दीं और बुढ़िया से बोला:

"हम दोनों तो जैसे-तैसे गुज़ारा कर लेंगे, पर पेत्रो लौटकर क्या पहनेगा? सर्दियां आ रही हैं, उसके लिये भेड़ की खाल का ओवरकोट सिलवा लेना चाहिये।"

उन्होंने प्योत्र के नाप का ओवरकोट सिलवाकर संदूक़ में रख दिया। उसके लिये रोज़मर्रा पहनने के बूट भी बनवा लिये। बूढ़े ने अपना वर्दी का नीला फ्रेंच कोट संभालकर रख रखा था, उस पर तंबाकू छिड़क दिया ताकि कीड़े न काट दें। और जब मेमने को हलाल किया तो उसकी खाल से बूढ़े ने बेटे के लिये टोपी सी और खूटी पर टांग दी। आंगन से जब घर में घुसता, तो लगता कि बस अब पेत्रो बग़ल के कमरे से बाहर निकलेगा और मुस्कराकर पूछेगा: "क्यों, बाबा, ठंड है बाहर?"

कोई दो-एक दिन बाद की बात है। शाम को बूढ़ा ढोरों को चारा-पानी देने गया था। नाद में चारा डालकर वह कुएं से पानी खींचना चाहता था, पर उसे याद आया कि दस्ताने तो घर में भूल आया। लौटकर उसने दरवाज़ा खोला और देखा कि बुढ़िया बेंच के पास घुटनों के बल बैठी पेत्रो के लिये बनायी गयी नयी टोपी को छाती से चिपकाकर, बच्चे की तरह झुला रही थी।..

बूढ़े की आंखों में अंधेरा छा गया, वह खूंख्वार जानवर की तरह उस पर झपटा, उसे ज़मीन पर धकेलकर होंठों पर निकले फेन को गटकते हुए चिल्लाया:

"छोड़, डायन! . छोड़! .. तू कर क्या रही है?!"

टोपी छीनकर उसने संदूक़ में पटकी और उस पर ताला टांग दिया। बस तब से बुढ़िया की बायी आंख फड़कने लगी और मुंह टेढ़ा हो गया।

दिन और सप्ताह गुज़रते जा रहे थे, दोन में पानी बहता जा रहा था, पतझड़ के तेज़ बहाव में वह सदा की तरह स्वच्छ और पारदर्शी हरा था।

उस दिन दोन के किनारों पर बर्फ़ जम गयी। पीछे छूटे जंगली

हमो की डार गाव के ऊपर से गुजरी। शाम को पडोसी का लडका दौडा-दौडा गवरीला के पास आया, देव-प्रतिमा के सामने हडबडी में सलीब बनाकर बोला

"सब ठीक-ठाक है?"

"भगवान की दया है।"

"दादा आपने सुना? प्रोखोर लिखोवीदोव तुर्की से लौटा है। वह आपके पेत्रो की रेजिमेंट ही में तो था!"

गवरीला खासी के कारण हाफता जल्दी-जल्दी कदम रखता तेजी से गली में जा रहा था। प्रोखोर घर पर नही मिला वह अपने भाई के गाव गया हुआ था, कल आने को कह गया था।

गवरीला रात भर नही सोया। अनिद्रा उसे सता रही थी। पौ फटने से पहले उसने दीया जलाया और नमदे के बूटो पर तलवे टाकने लगा।

भोर के धुधले प्रभात मे उषा की क्षीण लालिमा फूटी। सुबह हो गयी पर चद्रमा आकाश के बीचो-बीच लटका रह गया, शक्ति उसमे इतनी नही बची थी कि काली घटा तक जाकर दिन भर को छिप जाये।

* * *

नाश्ते से पहले गवरीला खिडकी से झाका, न जाने क्यो वह फुसफुसाकर बोला

"प्रोखोर आ रहा है!"

प्रोखोर ने घर मे प्रवेश किया, वह बिलकुल भी कज्जाको जैसा नही लग रहा था, परायी वेशभूषा मे था, उसके पैरो मे नाल जडे अग्रेजी बूट चरमरा रहे थे, अजीब-सा ओवरकोट उसके कधो पर बोरी की तरह लटका था शायद किसी बेगाने का उतारा था।

"गवरीला वसील्चि, ठीक-ठाक तो हो न!"

"प्रभु की कृपा है! आओ, बैठो।"

प्रोखोर ने टोपी उतारी, बुढिया का अभिवादन किया और देव-प्रतिमाओ के पासवाले कोने मे बेच पर बैठ गया।

"देखो तो, मौसम कैसा हो गया, बर्फ इतनी पडी है कि चलना दूभर है!"

7-1152

"हा, बर्फ इस बार जल्दी पड गयी पुराने जमाने मे तो इन दिनो ढोर बाहर चरते थे।"

कुछ देर के लिये बोझिल चुप्पी छा गयी। देखने मे तो गवरीला विरक्त और सतुलित लग रहा था, वह बोला

"छोरे, परदेस मे तो तू बुड्ढा हो गया!"

"जवान होने की कुछ वजह ही नही थी गवरीला वसीलिच!" प्रोखोर ने मुस्कराकर उत्तर दिया।

बुढिया ने मुह खोला

"हमारा पेत्रो "

"चुप बुढिया! " गवरीला ने सख्ती से उसे डाटा। "आदमी बाहर से आया है, दम तो लेने दे वक्त आयेगा पूछ लेना! "

मेहमान की ओर मुडकर उसने पूछा

"हा, तो प्रोखोर इग्नातिच दिन कैसे गुजरे?"

'तारीफ करने लायक कोई बात है नही। लगडे कुत्ते के मानिद किसी तरह घर तक पहुच गया, यही गनीमत है।"

"यह बात है मतलब तुर्कों के यहा मुसीबते झेलनी पडी?"

"बडी मुश्किल मे गुजारा कर होता था, प्रोखोर ने मेज पर उगलियो से थाप की और बोला, "तुम भी गवरीला वसीलिच, काफी बूढे हो गये, तुम्हारे सिर के देखो कितने बाल सफेद हो गये सोवियत सत्ता मे आप लोग कैसे रह रहे है?"

'बेटे की बाट जोह रहा हू बुढापे मे हमे सहारा देने के लिये गवरीला टेढे होठो से मुस्कराया।

प्रोखोर ने झट से नजरे दूसरी ओर मोड ली। गवरीला ने यह देखकर सख्ती से साफ-साफ सवाल किया

"बोलो कहा है पेत्रो?'

"क्या आपने नही सुना?"

'तरह-तरह की बाते सुनी है" गवरीला चट से बोला।

मेजपोश की मैली झालर को उगलियो पर लपेटता प्रोखोर कुछ देर तक चुप बैठा रहा।

"शायद जनवरी की बात है हा-हा, जनवरी की ही है, हमारा रिसाला नोवोरोस्सीस्क के पास पडाव डाले हुए था यह शहर समुदर के किनारे है बस पडाव डाले हुए थे "

"क्या मारा गया ? .." गवरीला ने झुककर दबे स्वर में फुसफुसाहट के साथ पूछा।

प्रोख़ोर नज़रें झुकाकर कुछ देर चुप रहा, मानो उसने सवाल सुना ही नही।

"हम वहां तैनात थे, उधर लाल सेना पहाड़ों की तरफ़ बढ़ रही थी, हरी सेना से जुड़ने के लिये। आपके प्योत्र को रिसाले के कमांडर ने टोह लेने के लिये भेजा... कमांडर हमारा था सूबेदार सेनिन... बस तभी यह हुआ . "

अलावघर के पास टन् से देग गिरा, बुढ़िया हाथ फैलाकर पलग की ओर जाती दिखाई दी, गले से रुलाई फूट रही थी।

"मत चीख ! ! " गवरीला घुड़ककर चिल्लाया, मेज़ पर कोह-नियां टिकाकर प्रोख़ोर को एकटक देखता हुआ धीरे-धीरे थके स्वर मे बोला

"पूरी भी कर बात ! "

"टुकड़े-टुकड़े कर दिये ! . " प्रोख़ोर चिल्लाकर खड़ा हुआ, उसका चेहरा पीला पड़ गया था, बेंच पर वह अपनी टोपी को टटोलता हुआ बोला। "पेत्रो को जान से मार डाला... वे जगल के पास रुके थे दम लेने के लिये ताकि घोड़े भी कुछ आराम कर लें, उसने ज़ीन की पेटी ढीली कर दी, उधर जंगल में से लाल सैनिक आ धमके.. " जल्दी-जल्दी बोलने के कारण प्रोख़ोर का सांस चढ़ रहा था, कांपते हाथों से वह टोपी को मसल रहा था। "पेत्रो ने ज़ीन की पेटी थामी और ज़ीन खिसक कर घोडे के पेट ।,र आ गयी... घोड़ा बिदक गया... नही सभाल पाया, वही रह गया . बस ! ."

"अगर मैं तेरी बात पर विश्वास न करूं ? .." गवरीला शब्द चबा-चबाकर बोला।

प्रोख़ोर बिना पलटे जल्दी-जल्दी दरवाज़े की ओर चल पड़ा।

"मर्ज़ी आपकी है गवरीला वसीलिच, पर मैंने सच बताया... मैं सच बोल रहा हूं .. सिर्फ़ सच... अपनी आंखों से देखा... "

"अगर मैं इस पर यक़ीन नही करना चाहता ? ! " गवरीला तमतमाकर बोला। उसकी डबडबायी आंखों में ख़ून उतर आया। क़मीज़ का गरेबान फाड़कर, बालों मे ढकी छाती उघाड़कर, आहें भरता हुआ, पसीने से भीगे सिर को झटकता हुआ वह प्रोख़ोर पर

चढ गया, जो उसे इस हालत मे देखकर सहम गया।

"इकलौते बेटे को मार डाला?! मा-बाप के महारे को?! मेरे पेत्रो को?! झूठ बोलता है, कुतिया की औलाद! मुना तूने?! तू झूठ बोलता है! मै यकीन नही करता!"

पर रात को ओवरकोट पहनकर अहाते मे निकला, बर्फ पर नमदे के बूट चरमराता खलिहान मे गया और पुआल के ढेर के पास खडा हो गया।

स्तेपी मे हवा चल रही थी बर्फ का बुगदा उड रहा था चेरी की नगी झाडिया काले सख्त अधेरे से लदी हुई थी।

"बेटा!" गवरीला ने दबे स्वर मे पुकारा। कुछ रुककर बिना हिले-डुले, बिना सिर घुमाये फिर आवाज दी "पेत्रो! मेरे बेटे!"

फिर पुआल के ढेर के पास पैरो से कुचली बर्फ पर चित लेट गया और आखे मूद ली।

* * *

गाव मे अनाज-वसूली की और दान के निचले भाग मे आनेवाले डकैत गिरोहो की बाते उड रही थी। कार्यकारिणी समिति मे गाव के निवासियो की मभाओ मे फुसफुसाकर खबरे सुनायी जाती थी, पर बूढे गवरीला ने एक बार भी कार्यकारिणी समिति की टेढी ड्योढी पर पाव नही रखा था, जरूरत नही पडी, इसलिये उसने बहुत-सी बाते नही सुनी, बहुत कुछ उसे मालूम न था। उसे बडा अजीब लगा जब इतवार के दिन गिरजे मे दोपहर की प्रार्थना के बाद अध्यक्ष उसके यहा आया। अध्यक्ष के साथ उल्टी खाल के पीले छोटे ओवरकोट पहने तीन राइफलधारी थे।

अध्यक्ष ने गवरीला से हाथ मिलाया और फट से पूछा

"दादा, कबूल करो अनाज है तुम्हारे पास?"

"और तुम क्या सोचते थे, हवा मे पेट भरते है क्या?"

"तुम मजाक मत करो, ठीक से बताओ कहा है अनाज?"

"होगा कहा, बखार मे है।"

"चलो।"

"पर यह तो बताओ कि मेरे अनाज से तुम्हारा क्या रिश्ता?"

लम्बे कद के, सुनहरे बालोवाले ने जो देखने मे उनका मुखिया लगता था, ठड के कारण बूटो की एडिया पटकते हुए कहा

"राज्य के लिये फालतू अनाज इकट्ठा कर रहे है। अनाज-वसूली चल रही है। सुना है, बाबा ?"

"पर अगर मै न दू ?" गवरीला गुस्से मे फुफकारकर बोला।

"नही दोगे ? तो खुद ले लेगे !"

अध्यक्ष के साथ कानाफूसी करके वे बखार मे घुस गये, सुनहरे-सावले, चुने गेहू पर उनके बूटो से बर्फ के चिथडे बिखर गये। सुनहरे बालोवाले ने सिगरेट पीते हुए फैसला किया

'बीज और खाने के लिये छोडकर बाकी सब वसूल कर लो।' मालिक की नजर से उसने अनाज की मात्रा का अनुमान लगाया और गवरीला की ओर मुडकर बोला, "कितनी जमीन बोओगे ?"

"ठेंगा बोऊगा ! " गवरीला फटी आवाज मे खासता हुआ बोला। "ले जाओ पापियो ! लूट लो ! सब तुम्हारा ही तो है ! "

"तुम्हे क्या पागल कुत्ते ने काटा है, होश मे आओ, गवरीला दादा !" अध्यक्ष गवरीला को मनाने लगा।

'पराया माल तुम्हारे गले मे अटके ! ठूसो अपने पेट मे ! '

सुनहरे बालोवाले ने अपनी मूछो पर पिघलती बर्फ को झाडा और गवरीला को व्यग्यपूर्ण अदाज मे आख मारकर, शात मुस्कान के साथ बोला

"बाबा, तुम फुदको मत ! चिल्लाने का कोई फायदा नही। तुम चू-चू क्यो कर रहे हो, क्या किसी ने तुम्हारी दुम पर पैर रख दिया है ? " और भौहे सिकोडकर बिलकुल दूसरे लहजे मे बोला "जबान सभाल ! अगर लम्बी है तो काट ले दातो से ! ऐसे प्रचार के लिये " बात पूरी किये बिना उसने पेटी से लटके पिस्तौल के पीले खोल पर हाथ मारा और नर्म स्वर मे बोला "आज ही अनाज वसूली-केन्द्र पहुचा देना ! "

यह बात नही थी कि बूढा डर गया, पर दृढ और स्पष्ट आवाज मे वह सहम गया, समझ गया कि सचमुच चिल्लाने से कुछ नही होगा। हाथ झाडकर वह घर की ड्योढी की ओर चल पडा। उसने अभी आधा आगन भी पार न किया था कि वह वहशी चीख मे सिहर गया

"कहां है अनाज-वसूली दस्ता?!"

गवरीला ने मुड़कर देखा—टहनियों से बनी बाड़ की दूसरी ओर पिछली टांगों पर नाचते घोड़े पर घुड़सवार बैठा था। किसी असाधारण घटना के पूर्वाभास से गवरीला के घुटने कांपने लगे। वह मुंह भी न खोल पाया कि घुड़सवार ने बखार के पास खड़े लोगों को देखकर झटके से घोड़े को रोका और पलक झपकते कंधे से रायफ़ल उतार ली।

धांय से गोली चली, गोली चलने के बाद आंगन में छायी क्षणिक नीरवता में रायफ़ल का बोल्ट खटकने की आवाज़ सुनायी पड़ी और कारतूस का खोल सूं ऽऽ करके गिरा।

स्तब्धता टूट गयी: सुनहरे बालोंवाला चौखट से चिपक गया, कांपते हाथ से रिवाल्वर को खोल से निकालने में उसे बड़ी देर लग रही थी। अध्यक्ष आंगन में खरगोश की तरह फुटकता हुआ खलिहान की ओर दौड़ पड़ा, अनाज-वसूली दस्ते का एक आदमी बाड़ के पीछे हिलती काली टोपी पर कारबाइन से गोलियां चलाते हुए घुटने के बल गिर गया। अहाता गोलियों की धांय-धांय से भर गया। मानो बर्फ़ से चिपके अपने पैर गवरीला ने मुश्किल से उठाये और भारी क़दम घसीटता हुआ घर की ड्योढ़ी की ओर चल पड़ा। जब उसने मुड़कर देखा तो उल्टी खाल के कोट पहने तीन जने बिखरकर, बर्फ़ के ढेरों में फंसते हुए खलिहान की ओर दौड़ रहे थे और बेबाक़ खुले फाटक में घुड़सवार उमड़ते आ रहे थे।

आगेवाला घुड़सवार क़ुबानी टोपी पहने था। अपने ललौहे घोड़े पर झुककर उसने सिर के ऊपर तलवार घुमायी। गवरीला की आंखों के सामने हंस के डैनों की तरह उसके सफ़ेद बाशलिक* के सिरे चमके, घोड़े के खुरों से उछली बर्फ़ के छींटे चेहरे पर पड़े।

निढाल गवरीला नक्काशीदार ड्योढ़ी का सहारा लेकर खड़ा हो गया। उसने देखा कि ललौंहा घोड़ा सिमटा और टहनियों की बाड़ को फांद गया, जौ की पुआल के ढेर के पास पिछली टांगों पर खड़ा होकर घूमने लगा और क़ुबानी कज़्ज़ाक, ज़ीन से लटककर, घुटनों

* बाशलिक—(तुर्क) लम्बे सिरोंवाला हुड जो टोपी और मफलर दोनो का काम देता है।—अनु०

पर रेगते अनाज-वसूली दस्ते के आदमी पर तलवार से आडे-तिरछे वार करने लगा

खलिहान से अस्पष्ट-सा शोर, हाथापाई की आवाज और किसी का दारुण चीत्कार सुनायी पडा। पल भर बाद सिर्फ एक बार धाय की आवाज आयी। गोलीबारी से डरकर उडे कबूतर उस समय बखार की छत पर उतर रहे थे, वे चौककर आकाश मे बैगनी छर्रो की तरह फैल गये। घुडसवार खलिहान मे अपने घोडो से उतर गये।

गाव मे निरतर घटे-घडियाल बज रहे थे। गाव का पगला लडका पाशा गिरजे के घटागार पर चढ गया था, वह अपने पगलेपन के कारण खतरे का घटा बजाने की जगह ईस्टर-नृत्य की धुन बजा रहा था।

कधो पर सफेद बाशलिक डाले कुबानी कज्जाक गवरीला के पास आया। उसका पसीने से गीला तमतमाया चेहरा फडक रहा था, होठो के लटके कोने थूक से गीले थे।

"जई है?"

गवरीला कठिनाई के साथ हिला अभी-अभी उसने जो कुछ देखा था उससे उसकी जबान को मानो लकवा मार गया।

"शैतान की औलाद, क्या तू बहरा हो गया?! पूछ रहा हू, जई है? बोरी ला!"

चारे की नाद के पास घोडो को ला भी न पाये थे कि एक और घुडसवार घोडे को सरपट दौडाता फाटक मे घुसा।

"चढो घोडो पर! पहाडी से पैदल फौज आ रही है "

कुबानी कज्जाक ने कोसकर भाप छोडते पसीने से तर अपने घोडे को लगाम पहनायी और बडी देर तक अपनी दायी आस्तीन के कफ को बर्फ मे रगडता रहा जो किसी सिदूरी-लाल चीज मे सना था।

फाटक से पाच घुडसवार निकले, पिछलेवाले की जीन मे बधे खून के धब्बो से सने उल्टी खाल के पीले ओवरकोट को गवरीला ने पहचान लिया – वह सुनहरे बालोवाले का था।

* * *

टीले के पीछे बेर की झाडियोवाली घाटी मे शाम तक गोलिया चलती रही। पिटे कुत्ते की तरह दुम दबाकर सन्नाटा गाव मे पसरा

पडा था। जब गवरीला खलिहान मे जाने का साहस जुटा पाया तब तक साझ का झुटपुटा छा गया था। उसने खुले दरीचे मे प्रवेश किया। अध्यक्ष सिर लटकाये खलिहान के बाडे की बल्ली पर पडा था। गोली ने यही उसको धराशायी कर दिया था। उसके लटके हाथ, मानो बाड की दूसरी ओर गिरी टोपी को उठाने का यत्न कर रहे थे।

पुआल के ढेर के पास, जहा जूठन और भूसी बिखरी पडी थी, बर्फ पर अनाज-वसूली दस्ते के तीनो जने एक पात मे लेटे हुए थे। कच्छे-बनियान के अलावा उनके सारे कपडे उतरे हुए थे। इस भयकर दृश्य से दहले गवरीला के दिल मे उनके प्रति अब वह क्रोध न रहा, जो सुबह खौल रहा था। यह दुस्वप्न लगता था कि उसके खलिहान मे जहा हमेशा पडोसी की बकरिया उत्पात मचाती थी, पुआल के गठ्ठर मे मुह मारती थी अब तिनके की तरह कटे तीन लोग पडे है, और उनमे, डबरो मे जमे उनके फेनिल खून मे अब मुर्दो की हल्की-सी बू फैलने लगी है।

सुनहरे बालोवाला अस्वाभाविक मुद्रा मे सिर मोडे पडा था अगर सिर बर्फ मे न चिपका होता तो यह लग सकता था कि वह टाग पर टाग रखकर लेटा हुआ बेफिक्री से आराम कर रहा है।

दूसरा चेचक के दाग और काली मूछोवाला कधे उचकाकर धनुष की तरह पडा था, उसके अधखुले मुह मे चमकते दातो पर अडिगता और क्रोध का भाव था। तीसरा पुआल मे सिर छिपाये बर्फ पर तैराक की मुद्रा मे औधा पडा था उसकी फैली निर्जीव बाहे इतनी शक्तिशाली लगती थी।

गवरीला सुनहरे बालोवाले के ऊपर झुका काले पडे चेहरे को ध्यान से देखकर वह करुणा से सिहर गया उसके सामने कोई उन्नीसेक बरस का छोकरा पडा था, न कि गुस्सैल, कटखनी आखोवाला खाद्य-कमिसार। मूछो के पीले रोयो के पास होठ पर पाला जम रहा था, बस माथे पर आडी काली झुर्री थी – गहरी और गभीर।

गवरीला ने यू ही हाथ से उसकी नगी छाती को छुआ। आकस्मिकता ने उसे झिझोड दिया उसकी हथेली को बर्फीली ठड मे बुझती गर्मी की अनुभूति हुई

जब कराहता और हाफता गवरीला खून से लथपथ, अकडे शरीर को पीठ पर लादकर लाया तो बुढिया का मुह खुला का खुला रह गया,

वह सलीब बनाते हुए अलावघर के पास हट गयी।

गवरीला ने उसे बेच पर लिटाया, ठडे पानी मे धोया, और मोटे ऊनी मोजे मे हाथ, पाव, छाती को तब तक रगडता रहा जब तक खुद पसीने से तर होकर निढाल न हो गया। उसने घिनौनी ठडी छाती मे कान लगाया और बडी मुश्किल से उसे दिल की धडकन सुनायी दी, दिल रुक-रुककर धडक रहा था।

* * *

चार दिन से वह मुर्दे की भाति केसरी-पीला कमरे मे लेटा था। माथे से लेकर गाल तक तलवार के लाल घाव मे खून जम गया था, कसकर पट्टी मे बधी छाती कबल को ऊपर-नीचे उठाती घरघर्र, गुडगुड करती फेफडो मे हवा भरती थी।

रोज गवरीला उसके मुह मे अपनी फटी, रूखी उगली डालता, छुरी की नोक से, सावधानी के साथ, उसके भिचे जबडो को खोलता और बुढिया सरकडे की नली से गर्म दूध और भेड की हड्डियो की यखनी डालती।

चौथे दिन सुनहरे बालोवाले के गालो पर हल्की-सी लाली छा गयी दोपहर तक उसका चेहरा दहकते अगारे जैसा लाल हो गया, सारा शरीर कापने लगा और ठडा चिपचिपा पसीना आने लगा।

तब से वह बेहोशी मे बडबडाने लगा पलग से उठने की कोशिश करने लगा। गवरीला और बुढिया दिन-रात बारी-बारी से उसके पास बैठे रहते।

जाडे की लम्बी राता मे जब दोन के दियारे से आती पुरबिया काले आकाश मे उथल-पुथल करती गाव के ऊपर ठडी घटाओ को बिछा देती, गवरीला हाथो पर सिर टिकाकर घायल के पास बैठा अपरिचित बोली मे उसकी बडबडाहट को कान लगाकर सुनता, देर-देर तक उसकी काले गड्ढोवाली बद आखो की आसमानी पलको को देखता रहता। और जब बदरग होठो से लम्बी कराह, फटे स्वर मे कोई फौजी आदेश या भद्दी गाली निकलती और चेहरा क्रोध व दर्द से विकृत हो उठता — गवरीला का दिल पसीज जाता। ऐसे क्षणो मे करुणा बिनबुलाये मेहमान की तरह मुह उठाये आ जाती।

गवरीला देख रहा था कि हर दिन के साथ, बिना पलक मूंदे बितायी गयी हर रात के साथ बुढ़िया पलंग के पास बैठी-बैठी सूखती जा रही है। गवरीला ने उसके झुर्रियों से ढके गालों पर आंसू भी बहते देखे थे और वह समझ गया, सच कहा जाये तो अपने दिल से उसने महसूस किया कि भगवान को प्यारे हुए बेटे पेत्रो के प्रति उसके मन में बची ममता इस निर्जीव-से, मौत के मुंह से निकले पराये बेटे को देखकर धधक उठी है।...

एक बार गांव से गुज़रती रेजिमेंट का कमांडर आया। घोड़े को फाटक पर ही अर्दली को सौंपकर तलवार और महमेज़ें खड़काता दौड़कर ड्योढ़ी पर चढ़ गया। कमरे में उसने टोपी उतार दी और बड़ी देर तक घायल के पास मौन खड़ा रहा। घायल के चेहरे पर धुंधली छायाएं तैर रही थी, बुख़ार से फटे होंठो से ख़ून रिस रहा था। कमांडर ने समय से पहले सफ़ेद हुए बालोंवाला अपना सिर हिलाया और धुंधली आंखों से न जाने किस ओर देखते हुए गवरीला से बोला:

"बाबा, हमारे साथी को बचा लो!"

"बचा लेंगे!" गवरीला ने दृढ़ता से उत्तर दिया।

दिन और सप्ताह बीतते जा रहे थे। बड़ा दिन गुज़र गया। सोलहवें दिन सुनहरे बालोंवाले ने पहली बार आंखे खोली और गवरीला को अस्फुट स्वर सुनायी पड़ा:

"बाबा, यह तुम हो?"

"हां।"

"मेरी ज़बर्दस्त हजामत बनायी थी?"

"भगवान किसी की ऐसी न करे!"

उसकी निर्मल, दुर्ग्राह्य नज़रों में गवरीला को मासूम कटाक्ष का आभास-सा हुआ।

"और मेरे साथी?"

"उन्हें वो... उन्हें चौक पर दफ़ना दिया है।"

उसने कंबल पर टिकी उंगलियां हिलायी और छत के बिना रंगे तख़्तो की ओर आंखें उठा ली।

"तुम्हारा नाम क्या है?" गवरीला ने पूछा।

नसों से ढकी आसमानी पलकें धीरे से झुकीं।

"निकोलाई।"

"पर हम तुम्हे पेत्रो कहकर पुकारा करेगे   हमारा बेटा था पेत्रो   " गवरीला ने उसे ममझाया।

कुछ सोचकर और किसी चीज के बारे मे पूछना चाहता था पर उमे नाक की खर्र-खर्र सुनायी पडी और वह बाहे फैलाकर दबे पाव पलग के पाम से हट गया।

* * *

उसमे जीवन धीरे-धीरे, मानो अनिच्छा से लौट रहा था। दूमरे महीने मे वह बडी मुश्किल मे अपना सिर तकिये मे उठा पाया था, पीठ पर लेटे रहने के कारण चकत्ते पड गये थे।

हर दिन के साथ गवरीला को भय के साथ यह अनुभूति होती कि उसे नये पेत्रो से गहरा लगाव होता जा रहा है और पहले, अपने बेटे की छवि उमी तरह धूमिल होती जा रही है जैसे मकान की अभ्रक जडी खिडकी पर अस्ताचलगामी सूरज की चमक। वह पहलेवाले दु ख और पीडा को लौटाने की लाख कोशिश करता पर अतीत दूर, बहुत दूर होता जाता और इमसे गवरीला को मन ही मन शर्म आती, अट-पटा लगता।   मवेशियो के बाडे मे जाकर घटो कुछ न कुछ करता रहता पर यह याद करके कि पेत्रो के पलग के पास बुढिया निरतर बैठी है उमे ईर्ष्या होती। घर मे जाकर मिरहाने के पाम खडा हो जाता अपनी अकडी उगलियो से तकिये का गिलाफ ठीक करता और बुढिया की क्रुद्ध नजर को देखकर चुपचाप बेच पर बैठ जाता।

बुढिया पेत्रो को मारमोट की चर्बी और वसत मे जमा की गयी जडी-बूटियो का काढा पिलाती। इस वजह से या बीमारी पर जवानी की शक्ति के हावी होने के कारण घाव भर गये, भर आये गालो पर लाली छाने लगी, बस दाया हाथ चगा होने मे देर लगा रहा था, क्योकि घाव के साथ हड्डी भी टूट गयी थी लगता था कि वह बेकार ही हो जायेगा।

फिर भी ईस्टर उपवास के दूसरे सप्ताह पेत्रो पहली बार खुद, किमी की सहायता के बिना, पलग पर बैठ गया, उसे अपनी शक्ति पर आश्चर्य हो रहा था, बडी देर तक वह मुस्कराता रहा, उसे विश्वास नही हो रहा था।

रात को, रसोई मे अलावघर की टाड पर खासते हुए गवरीला ने फुसफुसाकर पूछा

"तू मो रही है, बुढिया?"

"क्या चाहिये?"

"हमारेवाला तो पैरो पर खडा होने की तैयारी कर रहा कल सदूक मे पेत्रो की पतलून निकाल लेना मारे कपडे तैयार कर देना उमके पाम पहनने को तो कुछ है नही।"

"मै खुद जानती हू! कबके निकाल रखे है!"

"बडी चट है! खाल का ओवरकोट तो निकाला नही?"

"छोरा क्या ऐसे ही ठड मे घूमेगा भला!"

गवरीला करवटे बदलने लगा नीद बस आ ही गयी थी, पर याद करके उमने विजेता की तरह मिर उठाया

' और टोपी? टोपी के बारे मे तो भूल गयी होगी तू बुड्ढी बत्तख?"

"छोडो भी मेरा पिड! मौ बार पाम मे गुजरे एक बार तो देख लिया होता दो दिन मे वहा कील पर टगी है! "

गवरीला खीजकर खामा और चुप हो गया।

चचल वमत दोन को बर्फ की जकड मे मुक्त करने लगा। बर्फ काली भुरभुरी और ऊबड-खाबड हो गयी मानो उमम कीडे पड गये हो। पहाडी गजी हो गयी। बर्फ स्तेपी मे रेगकर बीहडो और घाटियो म दुबक गयी। दोन का दियारा धूप की बाढ मे डूबा मुप्त था। स्तेपी मे आती हवा नागदौन की स्फूर्तिदायी कमैली गध अपने साथ लाती थी।

मार्च का महीना ममाप्त हो रहा था।

* * *

बाबा आज खडा हो जाऊगा!"

हालाकि गवरीला के घर मे आनेवाले मभी लाल मैनिक उसके सफेद बालो को देखकर गवरीला को 'बाबा' कहकर ही पुकारते, पर इम बार स्वर मे उमे अपनेपन की अनुभूति हुई। उमे शायद ऐसा लगा या फिर वास्तव मे ही पेत्रो ने इस शब्द मे पुत्र का प्रेम भरा, जो भी हो गवरीला बिलकुल लाल हो गया, उमे खामी आ गयी और लजाई खुशी का छिपाकर बुदबुदाया

"तीसरा महीना लग गया तुम्हे लेटे-लेटे अब तो पेत्रो, उठने का वक्त आ गया!"

पेत्रो गेंडियो की तरह पैर रखता ड्योढी मे निकला और फेफडो मे घुसे हवा के तेज झोके से उसका दम घुटते-घुटते बचा। गवरीला उसे पीछे से सहारा दे रहा था और बुढिया ड्योढी के पास बेचैन खडी अपने आसुओ को पल्ले से पोछ रही थी।

बखार के पास से गुजरते हुए धर्म-पुत्र – पेत्रो ने पूछा

"सब अनाज दे आये थे?"

"दे आया " गवरीला अनमने मे बुदबुदाया।

"बहुत अच्छा किया, बाबा!"

और फिर 'बाबा' शब्द सुनकर गवरीला गदगद हो गया। रोज पेत्रो बहगो का सहारा लेकर लगडाता हुआ धीरे-धीरे अहाते मे टहलता। गवरीला चाहे जहा होता, खलिहान मे ओसारे मे, सब जगह से वह अपने नये बेटे को बेचैन अन्वेषी नजरो से देखता। कही ठोकर खाकर गिर न जाये!

आपस मे वे कम ही बोलते थे, पर सबध उनके बीच सरल और मधुर हो गये थे।

उस दिन के कोई दो-एक दिन बाद जब पेत्रो पहली बार बाहर निकला था रात को सोने की तैयारी करते हुए गवरीला ने पूछा

"बेटे, तुम कहा के हो?"

"उराल से आया हू।"

"किसान-परिवार के हो?"

नही, मजदूर हू।"

"क्या मतलब? कोई धधा करते थे क्या, जैसे मोची या बढई का?'

"नही, बाबा, मै कारखाने मे काम करता था। लोहा ढालने के कारखाने मे। बचपन मे वही काम किया।'

"और अनाज वसूल करने कैसे आये?'

"फौज ने भेजा था।'

"तुम क्या उनके कमाडर थे?"

"हा।"

पूछते हुए झिझक हो रही थी पर बातचीत का मक़सद तो यही था :

"मतलब यह कि तुम पार्टी के आदमी हो?"

"हां, मैं कम्युनिस्ट हूं।" पेत्रो ने निश्छल मुस्कान के साथ कहा।

और इस निष्कपट मुस्कान के कारण गवरीला को पराया शब्द 'कम्युनिस्ट' अब भयावह नहीं लगा।

बुढ़िया ने मौक़ा देखकर झट से पूछा :

"पेत्रो प्यारे, तुम्हारा परिवार तो है न?"

"कोई नही है मेरा!.. आसमान में चांद की तरह अकेला हूं!"

"मां-बाप क्या मर गये?"

"बच्चा ही था, कोई सात-एक साल का था... बाप शराबियों की लड़ाई में मारा गया और मां कहीं गुलछर्रे उड़ा रही है... '

"देखो तो कुतिया को! मतलब तुम्हें, नन्हे-से को भाग्य के सहारे छोड़ गयी?"

"किसी ठेकेदार के साथ भाग गयी और मैं कारख़ाने में पला।"

गवरीला टांड़ से पैर लटकाकर बैठ गया, बड़ी देर तक चुप रहा, फिर एक-एक शब्द को तौलकर धीरे-धीरे बोलने लगा :

"तो बेटे, अगर तुम्हारा कोई रिश्तेदार नही तो हमारे पास ही रह जाओ... हमारा बेटा था, उसी की तरह हम तुम्हें पेत्रो कहकर बुलाते है.. था बेटा पर न रहा और अब मैं और बुढ़िया, हम दोनों अकेले रह गये हैं.. तुम्हारे लिये हमने कितनी मुसीबतें उठायी, शायद इसी से हमें तुम से लगाव हो गया। चाहे तुम में पराया ख़ून है, पर हमारा दिल तुम्हारे लिये अपने ही बेटे की तरह दुखता है... रह जाओ यही! तुम्हारे साथ मिलकर खेती करेंगे, दोन प्रदेश की ज़मीन बड़ी उपजाऊ है... तुम्हारे कपड़े-लत्ते बनवा लेंगे, बहू लायेंगे... मैंने तो जितना हो सकता था कर लिया, अब घर-बार तुम ही संभालो। बस तुम हमारे बुढ़ापे का ख़याल रखना, मरने तक दो वक़्त की रोटी देते रहना... हमें छोड़कर मत जाना पेत्रो..."

अंगीठी के पीछे से झींगुर की नीरस झंकार सुनायी पड़ रही थी।

हवा से खिड़की के किवाड़ चरमरा रहे थे।

"मैंने और बुढ़िया ने तुम्हारे लिये बहू की खोज शुरू कर दी

है! ." गवरीला ने कृत्रिम हर्ष से आंख मारी, पर होंठ कांपे और उन पर करुण मुस्कान आ गयी।

पेत्रो टकटकी बांधे ऊबड़-खाबड़ फ़र्श को देख रहा था, बायें हाथ की उंगलियों से वह बेंच पर ठक-ठक कर रहा था। रुक-रुककर आती यह ध्वनि व्यथित कर रही थी।

स्पष्टतः, वह अपने उत्तर पर विचार कर रहा था। और फ़ैसला करके उसने ठक-ठक बंद की, सिर झटका:

"बाबा, मैं आपके यहां ख़ुशी से रह जाऊंगा, पर ख़ुद देखते हो, मै ढंग का काम करने लायक़ रहा नही. हाथ मेरा चंगा होने का नाम ही नही लेता, साला! पर काम मैं करूंगा जितना हो सकेगा। गर्मी भर यही रहूंगा, बाद में देखा जायेगा।"

"और बाद में शायद तुम यही रह जाओगे!" गवरीला ने बात पूरी की।

बुढ़िया का चरखा हर्षोल्लास के साथ तकली पर रोयेंदार ऊन को लपेटता हुआ घरघराने लगा।

न मालूम वह थपक-थपककर लोरी सुना रहा था या मज़े की ज़िंदगी का लालच दे रहा था।

* * *

वसंत के बाद तपती धूप, स्तेपी की घनी धूल भरे दिन आये। बहुत दिनों के लिये मौसम साफ़ हो गया। अल्हड़ और तीव्र दोन में ऊंची-ऊंची लहरें उठने लगी। वसंत की बाढ़ का पानी गांव के छोर के मकानों तक चढ़ आया। दोन के हरित-श्वेत दियारे में फूलते पोपलरों की मधुर सुगंध व्याप्त हो गयी, मैदान में जंगली सेबो की झड़ी पंखुड़ियों से ढकी झील उषा की लालिमा की तरह दीप्तिमान थी। रातों में क्षितिज पर बिजलियों की चमक बालाओं की तरह आख-मिचौली खेलती, रातें भी क्षितिज पर बिजली की क्षणिक चमक की तरह छोटी हो गयी। दिन भर के काम के बाद बैलों को आराम नही मिल पाता था। ढोर चरागाहों में चरते थे।

हफ़्ते भर से गवरीला पेत्रो के साथ स्तेपी में ही रह रहा था। वे जुताई करते, हेंगा चलाते, बोवाई करते और रात को छकड़े के

नीचे दोनो एक ही ओवरकोट को ओढ़कर सोते। पर गवरीला ने कभी यह नही कहा कि नये बेटे ने उसे कितना कसकर अदृश्य सूत्र से बाध लिया है। हसमुख, कर्मठ सुनहरे बालोवाले ने दिवगत पेत्रो की छवि को धूमिल कर दिया। उसके बारे मे गवरीला अब बहुत कम ही सोचता था। और काम मे लगे रहने से सोचने का समय भी नही मिलता था।

दिन चोरो की तरह चुपचाप खिसकते जा रहे थे। घास काटने के दिन आ गये।

सुबह से पेत्रो घास काटने की मशीन को ठीक करने मे जुटा था। उसने लोहारखाने मे उसके ब्लेडो पर धार चढायी और टूटे हिस्सो की जगह नये बनाकर लगा दिये। गवरीला यह देखकर चकित रह गया। सुबह से घास काटने की मशीन मे लगा रहा और साझ ढलने पर कार्यकारिणी के दफ्तर चला गया किसी सम्मेलन का बुलावा आया था। उसी समय बुढिया जो पनघट पर गयी थी रास्ते मे डाकघर से एक चिट्ठी लायी। लिफाफा पुराना, चीकट था, पता गवरीला का था। लिफाफे पर लिखा था कामरेड निकोलाई कोसीख के लिये।

अनिष्ट की अस्पष्ट-सी अनुभूति के साथ बडी देर तक गवरीला कापिग पेंसिल से चौडी लिखावट मे लिखे धुधले अक्षरोवाले लिफाफे को हाथो मे पलटता रहा।

वह रोशनी की तरफ करके देखता पर लिफाफा किसी के रहस्य की मुस्तैदी से रक्षा कर रहा था और गवरीला को इस पत्र के प्रति, जिसने जीवन के शात क्रम को भग कर दिया, बढते क्रोध की अनुभूति हो रही थी।

मन मे विचार कौधा – फाड दू, पर कुछ सोचकर उसे दे देने का फैसला किया। फाटक पर ही उसने पेत्रो को खबर सुना दी

"बेटे, तुम्हारे लिए कही से चिट्ठी आयी है।"

"मेरे लिए?" उसे आश्चर्य हुआ।

"हा, तुम्हारे लिये है। जाओ, पढ लो!"

कमरे मे बत्ती जलाकर गवरीला पैनी, टोहक निगाहो से, पत्र पढते पेत्रो के खुश चेहरे को देख रहा था। उससे रहा न गया और पूछ बैठा

"कहा से आयी है?"

"उराल से।"

"किसकी है?" बुढिया ने कौतूहल के साथ पूछा।

"कारखाने के साथियो की है।"

गवरीला का माथा ठनका।

"क्या लिखते है?"

पेत्रो की आखो मे अधेरा छा गया। अनिच्छा के साथ उसने उत्तर दिया

"कारखाने मे बुला रहे है   उसे चालू करना चाहते है। मन् मत्रह मे रुका पडा है।"

"यह कैसे?   मतलब तुम जाओगे?" फटे स्वर मे गवरीला ने पूछा।

"पता नही   "

* * *

पेत्रो सूखकर पीला पड गया। रात को गवरीला उसे पलग पर करवटे बदलते, आहे भरते सुनता। बहुत सोच-विचार के बाद वह समझ गया कि पेत्रो गाव मे नही रहेगा, स्तेपी की अछूती श्यामल भूमि की छाती पर हल नही चलायेगा। पेत्रो को पाल-पोसकर बडा करनेवाला कारखाना एक न एक दिन उसे छीन ही लेगा और फिर से काले, मनहूस दिनो का क्रम शुरू हो जायेगा। बस चलता तो गवरीला घृणित कारखाने की ईट से ईट बजा देता, उसे मिट्टी मे मिला देता ताकि वहा सिर्फ बिच्छू बूटी और जगली घास ही उगे!

तीसरे दिन घास की कटाई के समय जब वे दोनो पडाव पर पानी पीने आये, पेत्रो बोला

"बाबा, मै यहा नही रुक सकता! कारखाने मे जाऊगा   वह मुझे बुलाता है, मन मे उथल-पुथल करता है   "

"क्या यहा की जिदगी अच्छी नही है?   "

"नही, यह बात नही   कारखाना अपना है, जब कोल्चाक* ने चढाई की तो डेढ हफ्ते तक उसकी रक्षा करते रहे, कोल्चाक के

* एडमिरल कोल्चाक (१८७४-१९२०) प्रतिक्रांतिकारी श्वेत सेना का नायक।–स०

8-1152

लोगो ने बस्ती पर कब्जा करते ही नौ जनो को फासी दे दी। और अब जो मजदूर फौज मे लौटे है, फिर से कारखाने को पैरो पर खडा कर रहे है वे खुद और उनके बाल-बच्चे भूखो मर रहे है, पर काम कर रहे है ऐसी हालत मे मै यहा कैसे रह सकता हू? मेरा जमीर क्या बोलेगा?"

"तुम क्या मदद कर पाओगे? एक हाथ तो तुम्हारा किसी काम का नही।"

"बाबा, आप भी अजीब बात करते है! वहा एक-एक हाथ अनमोल है!"

"मै तुम्हे नही रोकता। जाओ! " गवरीला ने खुद को ढाढस देते हुए कहा, "बुढिया को मत बताना कह देना कि लौट आओगे कुछ दिन रहकर लौट आओगे नही तो तडप-तडपकर मर जायेगी एक तुम ही तो हमारा सहारा थे "

आशा की अतिम किरण बची थी, गवरीला ने फुसफुसाकर, हाफते हुए पूछा

"क्यो सचमुच लौट आना। हू? क्या हमारे बुढापे पर इतना भी तरस नही खाओगे क्यो?"

* * *

छकडा चू-चू कर रहा था, बैल अपनी मौज मे चल रहे थे, पहियो से कुचलकर खडिया मिट्टी खर-खर बिखर रही थी। दोन के किनारे किनारे बल खाती सडक चैपल के पास बायी ओर मुड रही थी। मोड से कस्बे के गिरजे और बागो की हरियाली दिखायी पड रही थी।

गवरीला रास्ते भर बतियाता जा रहा था। वह मुस्कराने की कोशिश करता।

"इस जगह कोई तीन साल पहले लडकिया दोन मे डूब गयी थी। इसीलिये चैपल बना है।" उसने चाबुक की मूठ से चैपल की मनहूस चोटी की ओर इशारा किया। "यही हम विदा लेगे। आगे रास्ता नही है। पहाडी खिसक गयी है। यहा से कस्बे तक कोई वेर्स्ता भर की दूरी होगी, धीरे-धीरे पहुच जाओगे।"

पेत्रो ने पेटी मे लटके खाने के झोले को ठीक किया और छकडे

मे उतर गया। बडी मुश्किल मे रुलाई को दबाकर गवरीला ने चाबुक जमीन पर पटका और कापती बाहे फैलायी।

"अलविदा, मेरे प्यारे! तुम्हारे बिना हमारे लिये सूरज डूब जायेगा " और पीडा से विकृत, आसुओ से भीगे चेहरे को तिरछा करके तीखी, चिल्लाहट भरी आवाज में बोला "बेटे, खाने की चीजे तो नही भूले? बुढिया ने तुम्हारे लिये बनायी नही भूले? ठीक है, अलविदा! बेटे प्यारे, अलविदा! "

पेत्रो लगडाता हुआ सडक के सकरे किनारे पर चल पडा, वह लगभग दौड ही पडा था।

"लौट आना! " छकडे का सहारा लेकर गवरीला चिल्ला रहा था।

"नही लौटेगा! " मन मे गूज रहा था।

मोड पर आखिरी बार सुनहरे बालोवाला प्यारा सिर चमका, आखिरी बार पेत्रो ने टोपी हिलायी और उस स्थान पर जहा उसका पाव पडा, चचल हवा ने सफेद धूल का गुबार उडा दिया।

इंसान का नसीबा

१६०३ मे कम्युनिस्ट पार्टी की सदस्या
येव्गेनिया ग्रिगोर्येव्ना लेवीत्स्काया को समर्पित

लड़ाई के बाद का पहला वसन्त बड़ी तेज़ी से, बहुत ज़ोर-शोर दिखाता ऊपरी दोन के प्रदेश मे आया। मार्च के अंत में अज़ोव सागर के किनारे से गरम हवायें बहने लगी और दो दिनो मे ही दोन नदी के बायें तट की सारी बालू के ऊपर की बर्फ़ीली चादरें हट गयी। स्तेपी में बर्फ से भरी हुई घाटियां, नाले और खड्ड फूल-से गये, स्तेपी की नदियां बर्फ़ तोड़कर पागलों-सी उमड़ चली। रास्तों मे आना-जाना बिल्कुल दूभर हो गया।

साल के इस अटपटे समय में कुछ ऐसा हुआ कि मुझे बुकानोव्स्काया कस्बे में जाना पड़ा। दूरी कोई विशेष न थी—बस, कोई साठ किलोमीटर,—पर यही किलोमीटर जब तय होने पर आये तो काले कोसो में बदल गये।

मैं अपने मित्र के साथ सूर्योदय के पहले रवाना हुआ। मोटे-ताजे घोड़ों ने जोतों पर पूरा ज़ोर मारा, फिर भी भारी गाडी मुश्किल से खिंची। पहिये धुरो तक बालू, जमे हुए पानी और बर्फ़ के मिले-जुले गारे में धंसते रहे। एक घंटे के अंदर-अंदर घोड़ों की बग़लो और कूल्हों के बंदों के नीचे से झाग के बडे-बड़े दूधिया चकत्ते नज़र आने लगे। सुबह की ताज़ा हवा घोड़े के पसीने और साज़ पर पुते हुए और धूप में गर्म हो गये तारकोल की तीव्र और नशीली बास से भर गयी।

जहां घोड़ों को गाड़ी खीचने में ख़ास कठिनाई होती, वहां हम उतर जाते और पैदल चलते। हमारे पैर जहां भी पड़ते, बूटों के नीचे की ढीली बर्फ़ पिस-सी उठती और आगे बढ़ना बहुत ही टेढ़ी खीर लगता। परन्तु रास्ते के किनारों पर अब भी जमे हुए पानी की चमचमाती

परत बिछी हुई थी और उधर से जाना और भी दुस्तर था। गरज यह कि येलान्का नदी को पार करने तक की तीस किलोमीटर की मंजिल तय करने मे हमे छह घटे लगे।

मोखोव्स्की गाव के सामने बहती हुई छोटी-सी नदी जो गरमी में जगह-ब-जगह सूखी रहती थी, अब आल्डर के पौधो से भरी दलदलो की एक किलोमीटर की चौडाई तक बाढ मे उमडी मिली। यहा हमे नदी को पार करने के लिये एक नाव का सहारा लेना पडा चपटे तले की और अविश्वसनीय। उसमे अधिक से अधिक तीन आदमी एकसाथ बैठ सकते थे। तो, अब हमने घोडे वापस कर दिये। उस पार सामूहिक फार्म के शेड में खडी एक जीप हमारा इन्तजार कर रही थी। जीप पुरानी थी, उसके सारे अजर-पजर ढीले थे, और वह जाडे में वहा छोड दी गयी थी। मै और ड्राइवर हिचकते-झिझकते उस हिलती-डुलती डोंगी पर सवार हुए। मेरा मित्र सारे सामान के साथ किनारे पर ही रह गया। डोंगी ने किनारा छोडा ही था कि सडे हुए तख्तो मे पानी के छोटे-छोटे फव्वारे चालू हो गये। हमने जो हाथ आया उससे दरारे भरी और रह-रहकर पानी बाहर उलीचते रहे। इस तरह एक घटे में हम नदी के दूसरे किनारे पर पहुचे। ड्राइवर गाव मे जीप लाया, नाव के पास गया और डाड उठाते हुए बोला

"अगर यह सडा-गला, पुराना तसला टुकडे-टुकडे होकर पानी मे बह न गया, तो मै दो घटे मे आपके दोस्त को लेकर वापस आ जाऊगा। हा इससे कम वक्त न लगेगा।"

गाव नदी से काफी दूर था, और नीचे, पानी के पास एक अजब-सा सन्नाटा था। ऐसा सन्नाटा वीरान जगहो में या तो शरद के काफी बीतने पर छाता है, या फिर वसन्त के बिल्कुल आरम्भ मे घिरता है। पानी से सीली-सीली बू आ रही थी और इस बू मे सडते हुए आल्डरो की सडायध मिली हुई थी। बकाइनी धुध मे नहायी दूर की स्तेपी से धरती की सोधी-सोधी बास हवा के हलके-हलके लहरो के परो पर पडी चली आ रही थी। यह सदाबहारी बास इन्द्रियो की पकड में भी कठिनता से ही आती थी और ऐसी जमीन की थी, जिसे हाल ही में बर्फ की जकड से छुटकारा मिला था।

पानी से थोडी ही दूर बालू के ऊपर बेतो और शाखो की एक टूटी हुई बाड पडी थी। मै उस पर बैठ गया और सिगरेट का धुआ

उडाने की सोची। पर जेब मे हाथ डाला तो निराशा हाथ लगी— सिगरेट का पैकेट भीग गया था। बात यह है कि पानी की सतह से सटी नाव के ऊपर से गुजरती हुई एक लहर मुझे कमर तक मटियाले पानी से तर-ब-तर कर गयी थी। उस समय सिगरेट की बात सोचने का समय नही था मेरे पास, क्योंकि नाव को डूबने से बचाने के लिये मुझे उसी क्षण डाड रखकर पानी उलीच-उलीचकर बाहर फेकना पडा था। परन्तु इस समय अपनी लापरवाही पर काफी खीझ आयी। मैंने बहुत सावधानी से गीला, भूरा-सा पैकेट जेब से निकाला और उकडू बैठ एक-एक करके सारी सिगरेटे बाड पर बिछाने लगा।

समय दोपहर का था। सूरज मई के दिनो की तरह तप रहा था। मुझे उम्मीद थी कि सिगरेटे देखते ही देखते सूख जायेगी। गरमी तो सचमुच ऐसी थी कि मुझे अफसोस होने लगा कि इस सफर के लिये मैंने यह फौजी पतलून और यह रूई की जैकेट आखिर क्यो पहनी? जाडे के बाद यह सचमुच पहला गरम दिन था। अपने को पूरी तरह उस वीराने और सन्नाटे को सौप, अपनी पुरानी गर्म फौजी टोपी उतारकर वहा बैठना, मशक्कत की खेवाई के बाद बाल सुखाना और धुधलाये नीलम के बीच लहराते, उमडते-घुमडते बादलो को भर आख देखना मुझे बहुत भला लगा।

इसी समय गाव के सिरे के घरो के पीछे से निकलकर मैंने एक आदमी को रास्ते पर आते देखा। वह एक लडके का हाथ पकडे आ रहा था। लडके की उम्र मुझे कोई पाच या छह वर्ष की लगी अधिक नही। सो वे दोनो थके-मांदे-से नदी का पार करने की जगह की ओर बढे जा रहे थे पर जीप के पास पहुचकर मुडे और मेरी तरफ आने लगे। आदमी कद का लम्बा था, उसके कधे थोडे झुके हुए थे। वह सीधा मेरे पास आया और भारी-भरकम आवाज मे बोला

"नमस्ते भैया!"

"नमस्ते," मैंने उसके बडे-से, खुरदरे हाथ से हाथ मिलाया।

आदमी लडके की ओर झुका और बोला

"चाचा को नमस्ते कहो, बेटे! लगता है तुम्हारे बापू की तरह यह भी कोई ड्राइवर है। फर्क सिर्फ यह है कि हम और तुम चलाते थे ट्रक और यह इस छोटी-सी मोटर को दौडाता है।"

बच्चे ने आसमान की तरह निर्मल अपनी आखे मेरी आखो मे

डाली और जरा-सा मुस्कराते हुए अपना गुलाबी, ठण्डा हाथ मेरी ओर बढा दिया। मैने धीरे-से उसका हाथ दबाते हुए पूछा

"ठण्डक मे ठिठुरे जा रहे हो, बूढे-बाबा? आज तो ऐसी गरमी है और तुम्हारा हाथ इतना ठण्डा है, यह क्यो?"

हृदयस्पर्शी, बाल-सुलभ विश्वास के साथ लडका मेरे घुटनो के पास सट आया और अचरज से अपनी छोटी-छोटी, पीली भौहे ऊपर उठाते हुए बोला

"मै बूढा थोडे ही हू, चाचा, मै तो अभी लडका हू और ठण्ड भी मुझे नही लग रही है, मेरे हाथ इसलिये ठण्डे है कि मै बर्फ के गोले बना रहा था।"

पीठ पर से अधभरा सफरी थैला नीचे उतारते हुए पिता धीरे-से मेरी बगल मे आ बैठा और बोला

"मेरा यह नन्हा-मुन्ना मुसाफिर मेरा यार मुसलसल सिरदर्द है! इसने मुझे थका मारा है। आप लम्बा डग भरिये तो लडका दुलकी मारने लगता है, खैरियत तभी है कि आप उसके छोटे-छोटे कदमो से कदम मिलाकर चले। नतीजा यह कि जहा एक कदम मे मेरा काम चल सकता है, वहा मुझे तीन कदम भरने पडते है और हम घोडे और कछुए की तरह चलते जाते है। फिर यह क्या कर रहा है और क्या नही, इसके लिये दो आखे आपके सिर के पीछे होनी चाहिये। आपने पीठ फेरी नही कि साहबजादे या तो किसी गढे-गढैया मे उतर गये या जमे हुए पानी के किसी टुकडे को तोडने मे जुट गये और उसे मिठाई की तरह चूसने लगे। नही भाई, ऐसे बच्चे को साथ लेकर सफर करना आदमी के बस की बात नही कम से कम पैदल तो बिल्कुल ही नही।" इसके बाद थोडी देर तक वह चुप रहा और फिर उसने पूछा, "और तुम तुम अपनी कहो, भाई, अपने चीफ का इन्तजार कर रहे हो?"

उसे यह बतलाना अब मुझे अच्छा नही लग रहा था कि मै ड्राइवर नही हू, अतएव मैने उत्तर दिया

"हा, इन्तजार करना ही पड रहा है।"

"चीफ तुम्हारा उस पार से आनेवाला है?"

"हा, उस पार से ही आयेगा।"

"तुम्हे पता है, क्या नाव जल्दी ही आनेवाली है?"

"कोई दो घंटे में आयेगी।"

"काफ़ी वक्त है। ख़ैर, तो ज़रा सांस ले ली जाये। मुझे कोई जल्दी नहीं। मैं तो इधर से गुज़र रहा था कि तुम पर नज़र पड़ी। सोचा कि कोई अपना ही ड्राइवर भाई है, इन्तज़ार कर रहा है। चलूं मैं भी वहीं, उसके साथ दो-चार कश तम्बाकू के ही हो जायें। अकेले कुछ मज़ा नही आता... ऐसे ही जैसे अकेले दम तोड़ने में कुछ मज़ा नही। लगता है कि ठाठ से जीते हो, सिगरेटें पीते हो। भीग गईं सिगरेटें, ऐं? ख़ैर, मेरे भाई, गीला तम्बाकू और डाक्टरी इलाज के बाद घोड़ा, दोनों के दोनों बेकार। तो आओ फिर, सिगरेट के बजाय देसी तम्बाकू का ही सहारा लिया जाये।"

उसने अपने हल्के, ख़ाकी पतलून की जेब से नली की तरह लिपटी हुई गुलाबी रंग की एक पुरानी-सी थैली निकाली और खोली तो मेरी निगाह एक कोने पर कढ़े कुछ शब्दों पर पड़ी। लिखा था: "प्यारे फ़ौजी को—लेबेद्यान्स्क माध्यमिक स्कूल की छठी श्रेणी की एक छात्रा की ओर से।"

हमने देसी तेज़ तम्बाकू के कश लगाये और बहुत देर तक मौन साधे रहे। फिर मैंने सोचा कि इस लड़के के साथ वह आख़िर जा कहां रहा है, और क्या ऐसा काम आ पड़ा कि इन बुरे रास्तों का मुंह देखना पड़ा। परन्तु मैं पूछूं-पूछूं कि उसने ही पहले सवाल कर दिया:

"क्या पूरी लड़ाई भर ड्राइवरी ही करते रहे?"

"लगभग पूरी लडाई भर।"

"मोर्चे पर?"

"हां।"

"ख़ैर, भाई मेरे, वहां भी ऐसी मुसीबतें देखी, ऐसी तकलीफ़ें झेली कि... कुछ न पूछो... ज़रूरत से ज़्यादा झेली..."

उसने अपने बड़े, काले हाथ घुटनों पर टिकाये और कंधे झुका लिये। मैंने बग़ल से उस पर निगाह डाली तो अजीब ढंग से परेशान हो उठा... आपने कभी ऐसी आंखें देखी है जिनमें राख का छिडकाव नज़र आये, ऐसी कलप और उदासी से भरी आंखें कि उनकी तरफ़ देखने की हिम्मत ही न हो? बस, तो संयोग से मिले मेरे इस परिचित की आंखें बिल्कुल ऐसी ही थीं।

उसने बाड़ से ऐंठी हुई एक टहनी तोड़ी और एक क्षण तक बालू

पर उससे कुछ अजीब-सी चित्रकारी करता रहा। फिर बोला

"कभी-कभी रातो को मै पलक तक नही झपका पाता। मै बस अधेरे मे आखे गडाये रहता हू, गडाये रहता हू, और सोचता रहता हू – 'जिन्दगी, तुमने ऐसा क्यो कर किया, तुमने इस तरह मेरी आत्मा को कुचल क्यो डाला? तुमने मेरे तन-बदन से सारी जान क्यो निकाल ली, इस तरह बेजान क्यो कर दिया?' – पर न तो इन सवालो का कोई जवाब मुझे अधेरा देता है, और न दमकते सूरज का उजाला नही, मुझे कोई जवाब नही मिलता और शायद मुझे कोई जवाब कभी मिलेगा भी नही।" इतना कहकर वह अपने आपे मे आया, अपने बेटे को स्नेह से थपथपाते हुए बोला, "मुन्ने, जाओ, पानी के पास जाकर खेलो, बडी नदी हो तो छोटे बच्चो को खेल-खिलवाड के लिये कुछ मिल ही जाता है। पर देखो, ख्याल रखना तुम्हारे पैर न भीगने पाये।"

धुआ उडाते समय मैने मौका मिलते ही तेजी से एक निगाह बाप और बेटे दोनो पर डाली और एक बात मुझे बहुत ही अजीब लगी। लडके के कपडे सादे, पर अच्छे और साफ थे। मेमने की पुरानी खाल के अस्तरवाला, लम्बे पल्ले का छोटा-सा कोट उसके बदन पर बहुत ही फिट था, छोटे-छोटे बूटो मे ऊनी मोजो के समाने की अच्छी गुजाइश थी और कोट की एक आस्तीन का फटा हुआ हिस्सा बहुत ही सफाई से सिला हुआ था। यानी यह कि इन सब मे मा का कुशल हाथ था। पर पिता का हिसाब-किताब बिल्कुल दूसरा था। उसकी रूईदार जैकेट कई जगह से जली हुई थी और रफू भद्दा था। पुराने, खाकी पतलून पर लगा पैबद ठीक से सिला न था, मोटे-मोटे टाके लगाकर यो ही जोड दिया गया था। हाथ किसी मर्द का मालूम होता था। उसके फौजी जूते लगभग नये थे, पर मोटे ऊनी मोजो मे छेद ही छेद थे। उन्हे जैसे किसी औरत का हाथ नसीब ही न हुआ था इस पर भी अनुभव मैने यही किया कि या तो यह आदमी विधुर है या इसके और इसकी पत्नी के बीच कुछ न कुछ गडबड है।

उसने पानी की ओर दौडते हुए अपने बेटे को गौर से देखा, खासा और फिर बोलना शुरू किया। मै उसकी बात पूरे ध्यान से सुनने लगा। कहने लगा

"शुरू मे मेरी जिन्दगी बहुत ही साधारण रही है। मै वोरोनेज

प्रदेश का रहनेवाला हू और वहा सन् १९०० मे मेरा जन्म हुआ। गृह-युद्ध के जमाने मे मै किक्वीद्जे डिविजन मे लाल सेना मे रहा। १९२२ के अकाल के वक्त मै कुबान चला गया और वहा कुलको के लिये बैल की तरह खटा। इसलिये ही जिन्दा बच गया। पर मेरे परिवार के सारे लोग यानी पिता, माता और बहन घर पर ही बने रहे और भुखमरी के शिकार हो गये। इस तरह मै अकेला रह गया। जहा तक और नाते-रिश्तेदारो की बात है, मेरा नामलेवा कही कोई नही। खैर, तो एक साल बाद मै कुबान से लौटा और अपनी झोपडी बेचकर वोरोनेज चला गया। वहा पहले मैने बढई का काम किया, फिर एक कारखाने मे चला गया और मिस्तरी का काम सीख लिया। इसके बाद जल्दी ही मेरी शादी हो गयी। मेरी पत्नी का लालन-पालन बाल-सदन मे हुआ था। वह भी अनाथ थी। हा, पत्नी मुझे कायदे की मिल गयी। बडा मधुर स्वभाव, बडी हसमुख, हमेशा मेरी बडी चिता करनेवाली फुर्तीली और चुस्त भी वह मुझसे कही ज्यादा थी। बचपन मे उसने दुख-मुसीबते देखी थी। हो सकता है कि इस बात का भी उसके चरित्र पर प्रभाव पडा हो। तुम उसे अजनबी के नाते देखते तो कह लो कि कही कोई भी खास बात न लगती, पर, देखो न, मै तो उसे ऐसे नही देखता था। उसका पूरा व्यक्तित्व मेरे सामने रहता था, और मेरे लिये उससे ज्यादा खूबसूरत और प्यारी औरत न तब दुनिया मे थी और न अब कभी होगी!

"मै काम से घर आता – थकान से चूर और कभी-कभी तो ऐसा बौखलाता-बरसता कि कुछ न पूछो! पर नही, वह रुखाई और सख्ती का जवाब सख्ती से कभी न देती। हमेशा सदय और शात रहती, कम आमदनी होते हुए भी मुझे बढिया से बढिया भोजन खिलाने की कोशिश करती। उसे देखते ही मन हल्का हो जाता और मै एक क्षण बाद ही उसकी कमर मे हाथ डालता और कहता 'मेरी प्यारी-प्यारी इरीना, मुझे बडा दुख है कि मैने तुम्हारे साथ इस तरह का रूखा व्यवहार किया। जानती हो, आज काम पर दिन बहुत ही बुरा बीता।' और फिर हममे सुलह हो जाती और मेरा चित्त स्थिर हो उठता। और भाई, तुम जानते हो, कि काम करनेवाले के लिये इसके क्या मानी होते है? सुबह आख खुलती तो मै पलग से बन्दूक की गोली की तरह चालू होता और यह जा – वह जा कि फैक्टरी को रवाना।

फिर तो यह कि जिस काम को हाथ लगाता वही घड़ी की तरह सटीक चलता! यानी पत्नी के रूप में सचमुच समझदार मित्र के साथ होने के मानी यही होते हैं।

"कभी ऐसा होता कि मैं तनख्वाह के दिन यार-दोस्तों के साथ ढाल लेता और फिर लड़खड़ाते हुए, गिरते-पड़ते घर आता। देखने में ज़रूर ही बहुत भयानक लगता होगा। ऐसे में किनारे की कुल्हियों-गलियों की तो बात क्या, बड़ी सड़क की चौड़ाई भी मेरे लिये कम पड़ जाती। उन दिनों मैं हट्टा-कट्टा, गठीला जवान था, काफ़ी शराब पचा सकता था, और बिना किसी की मदद-सहारे के पीने के बाद अपने आप घर जा सकता था। पर कभी-कभी आख़िरी दौर में गाड़ी निचले गियर में आ जाती, और जानते हो, मामला हाथों और घुटनों के बल रेंगने तक आ पहुंचता। पर फिर भी पत्नी मेरी न मुझे डांटती, न फटकारती, न चीखती-चिल्लाती। मेरी इरीना केवल हस देती और सो भी ऐसी होशियारी से कि मैं नशे में उस हंसी का भी कोई ग़लत मतलब न लगा पाता। वह मेरे बूट खीचकर उतारती और फुसफुसाते हुए कहती, 'अंद्रेई, अच्छा हो कि आज तुम दीवार की तरफ़ लेटो – कहीं नीद में लुढ़ककर नीचे न जा रहो।' और मैं जई के बोरे की तरह पलंग पर ढह पड़ता और मेरे सामने की हर चीज़ जैसे नाचने-सी लगती। फिर अनुभव करता कि वह हल्के-हल्के मेरा सिर सहला रही है और धीरे-धीरे प्यार भरे कुछ शब्द कह रही है। इस पर भी मुझे बराबर लगता कि उसका मन मेरे लिये दुखी है...

"सुबह वह मुझे काम पर जाने के कोई दो घंटे पहले जगा देती ताकि मैं बिल्कुल अपने होश-हवास मे आ जाऊं और पूरी तरह चौकस हो जाऊं। वह जानती थी कि शराब पी लेने के बाद मै कुछ खाता नहीं, इसलिये वह अचारी खीरा या ऐसा ही कुछ ले आती और खुमार तोड़ने के लिये छोटे-से गिलास में वोद्का भर देती। कहती, 'यह लो, अंद्रेई, लेकिन अब दुबारा इस तरह की पिलाई न करना, मेरे प्यारे।' भला ऐसे और इस तरह विश्वास करनेवाले आदमी को नीचा कोई कैसे दिखला सकता है? मैं तुरन्त गिलास ख़ाली कर देता, नज़रों से ही धन्यवाद देता, उसे चूमता और चुपचाप काम के लिये चल पड़ता। पर मेरे नशे की हालत में यदि वह एक शब्द भी मेरे ख़िलाफ़ कहती या कोसा-काटी और डांटना-डपटना शुरू कर देती तो मैं दुबारा

पीकर घर आता। ईश्वर जानता है कि मैं बिल्कुल यही करता। जिन परिवारो में पत्निया बेवक़ूफ़ होती हैं, वहां यही होता है। मैंने यह कितनी ही बार देखा है, और मैं यह अच्छी तरह जानता हूं।

"ख़ैर, तो फिर जल्दी ही बच्चे पैदा होने लगे। पहले बेटा हुआ और फिर दो लड़किया... बस, तो इसके बाद मैं अपने यार-दोस्तों से कट गया और अपनी सारी तनख़्वाह घर लाकर पत्नी के हाथों में देने लगा। अब तक परिवार काफ़ी बड़ा हो गया था, और अब मैं पीने की बात सोच भी नही सकता था। छुट्टी के दिन मैं सिर्फ़ एक गिलास बीयर पीकर सन्तोष कर लेता था।

"१९२९ में मैं मोटरों में दिलचस्पी लेने लगा। मैंने ड्राइवरी सीखी और एक ट्रक पर काम करना शुरू कर दिया। फिर जब एक बार इस रास्ते पर पड़ गया तो दुबारा कारख़ाने मे जाने को मन न हुआ। ट्रक चलाना मेरे जी को ज्यादा भाया। इस तरह दस साल मैंने यों बिता दिये कि मालूम ही न हुआ कि समय कब आया और कब निकल गया। सब कुछ एक सपना था जैसे। पर क्या होते हैं दस वर्ष! ज़रा किसी ढलती उम्र के आदमी से पूछ तो देखो कि तुम्हारी इतनी ज़िन्दगी कैसे बीत गई? मालूम होगा कि उसने ज़र्रा बराबर भी कुछ नही देखा! गुज़रा हुआ ज़माना धुंध के पीछे छिपी, एक किनारे पड़ी दूर की उस स्तेपी की तरह होता है। आज सुबह मै उसे पार कर रहा था तो हर चीज़ चारों ओर साफ़ थी, पर अब मैं बीस किलोमीटर पार कर आया हूं तो धुंध का एक पर्दा-सा पड़ गया है। अब मै न पेड़ों को झाड़-झंखाड मे अलग कर देख सकता हूं और न जुते हुए खेत को चरागाह से अलगाकर।...

"उन दस वर्षो मे मैंने दिन-रात काम किया, ख़ासी रक़म कमाई और हम दूसरों से कुछ उन्नीस ढंग से नही जिये। बच्चे हमारे दिलों की खुशी रहे। तीनों बच्चे स्कूल की पढ़ाई में अच्छे निकले और सबसे बड़ा बच्चा अनातोली तो गणित मे ऐसा चमका कि उसका नाम एक केन्द्रीय अख़बार तक मे छपा। वैसे यह बड़ी प्रतिभा उसे किससे मिली, कहां से मिली, यह मैं तुम्हें नहीं बतला सकता, मेरे भाई। पर मेरे लिये यह बड़े ही सुख की बात रही, और मुझे उस पर अभिमान रहा – बड़ा अभिमान रहा!

"दस वर्षो मे हमने थोड़ी-सी रकम बचा ली और लडाई के पहले अपने लिये एक छोटा-सा घर खडा कर लिया—दो कमरे, स्टोर और गलियारा। इरीना ने दो बकरिया खरीद ली। भला हम और क्या चाहते? बच्चो की खीर के लिये घर मे दूध, सिर के ऊपर छत, शरीर पर कपडे और पैरो मे जूते, यानी सभी कुछ था, और ठीक था। अगर कोई कसर थी तो सिर्फ यह कि घर के लिये जगह अच्छी न थी। जो जगह मुझे दी गयी थी, वह हवाई जहाजो के कारखाने से कोई बहुत दूर न थी। हो सकता है कि अगर मेरा छोटा-सा मकान वहा न होकर कही और होता, तो मेरी जिन्दगी शायद कोई दूसरा मोड ले लेती

"और फिर छिड गयी लडाई। दूसरे दिन मेरे बुलावे के कागजात आ गये और इसके बाद—'कृपया स्टेशन पर रिपोर्ट कीजिये'। मेरे परिवार के चारो सदस्यो ने मुझे विदाई दी, यानी इरीना, बेटे अनातोली और मेरी दोनो बेटियो ने मुझे विदा किया। बच्चो ने हिम्मत से काम लिया, गोकि बेटियो की आखो मे रह-रहकर आसू छलकते रहे। अनातोली थोडा-सा सिहरा, जैसे कि उसे सर्दी लग रही हो। उस समय वह सत्रह वर्ष का होने जा रहा था। लेकिन मेरी वह इरीना हम दोनो सत्रह साल साथ रहे थे, पर इस रूप मे तो मैने कभी उसे देखा ही न था। उस रात को मेरी कमीज और मेरा सीना उसके आसुओ मे तर हो गये थे, और सुबह भी वही झडी थी हम स्टेशन पर आये तो उसके लिये मेरा मन इतना दुखा कि मै उसकी आख मे आख न मिला सका। आसुओ की बौछार मे उसके होठ सूज गये थे, बाल शाल के बाहर निकले हुए थे और आखे किसी बदहवास आदमी की तरह बेजान और धुधलाई हुई थी। अफसरो ने रेलगाडी मे सवार होने का हुक्म दिया, पर वह मेरे सीने पर ढह पडी, मेरी गरदन मे हाथ डाल लिये, और सिर से पैर तक इस तरह कापने लगी, जैसे कि वह कोई ऐसा पेड हो, जिसे काटा जा रहा हो बच्चो ने समझाने की कोशिश की और मैने भी पर सारी कोशिश बेकार रही। दूसरी औरते अपने पतियो और बेटो से इधर-उधर की बाते करती रही, पर मेरी पत्नी तो शाख की पत्ती की तरह मुझसे चिपक गयी, सारे समय सिहरती रही और उसके मुह मे एक शब्द न फूटा। मैने कहा, 'अपने को सम्भालो, मेरी प्यारी इरीना! मेरे जाने के पहले मुझसे

कम मे कम दो बाते तो कर लो।' इस पर सिसकियो के बीच उसने जो कुछ कहा, वह यह था– अंद्रेई मेरे प्रियतम हम अब कभी नही एक-दूसरे मे अब कभी नही मिलेगे इस दुनिया मे '

"इधर तो मेरा दिल खुद ही उसके लिये दर्द से फटा जा रहा था, और उधर वह मुझसे ऐसी बात कह रही थी! मुझे लगा कि उसे सोचना चाहिये कि उससे बिछुडना मेरे लिये भी कुछ आसान नही– फिर मै किसी दावत-पार्टी मे तो जा नही रहा। बस तो यह ख्याल आते ही मै अपने आपे मे न रहा। मैने उसके हाथ अपनी गर्दन से अलग किये और उसे एक ओर को हल्के-से झटक दिया। वह झटका मुझे तो हल्का-सा लगा पर उस समय मै बैल की तरह मजबूत आदमी था। नतीजा यह हुआ कि वह कोई तीन कदम तक लडखडाती पीछे चली गयी। इसके बाद छोटे-छोटे कदम रखते हुए फिर मेरी ओर बढी तो मै चीख पडा, इसी तरह विदा दी जाती है न? तुम मेरे मरने से पहले ही मुझे दफन कर देना चाहती हो क्या?' लेकिन फिर मैने उसकी हालत बिगडती देखी तो उसे अपनी बाहो मे बाध लिया '

इसके बाद आपबीती कहनेवाले की आवाज उसका साथ न दे सकी। वह एकायक ही चुप हो गया। इस मौन मे मैने एक सिसकी-सी सुनी और उसकी भावना ने अपनी गहराई मेरे अन्तर तक पहुचा दी। मैने कनखियो से देखा तो उसकी उन राख-सी धुधली आखो मे मुझे एक भी आसू नजर न आया। वह मायूसी से सिर झुकाये बैठा रहा। उसके सन्न से पडे, लटकते हाथ हल्के-हल्के काप रहे थे, उसकी ठोडी थरथरा रही थी और इसी तरह उसके हठीले होठ भी काप रहे थे।

"बीती बातो को मत दोहराओ मेरे दोस्त!" मैने धीरे-से कहा, पर लगा कि उसने मेरी बात सुनी ही नही। फिर बडी चेष्टा से उसने अपने को साधा और अजब ढग से बदली हुई, भर्राई-सी आवाज मे बोला

'जिन्दगी के आखिरी लमहे तक, अपनी आखिरी सास तक उसे इस तरह धक्का देने के लिये मै अपने को क्षमा न करूगा! "

अब वह फिर चुप हो गया और यह चुप्पी काफी देर तक बनी रही। उसने एक सिगरेट रोल करने की कोशिश की, पर अखबारी कागज का टुकडा उसकी उगलियो के बीच तार-तार हो गया और

तम्बाकू घुटनो पर बिखर गया। आखिरकार उसने जैसे-तैसे एक भद्दी-सी सिगरेट रोल की, दो-चार लम्बे-लम्बे कश खीचे, फिर गला साफ किया और अपनी दास्तान जारी रखी

"मैने किसी तरह अपने को इरीना से अलग किया, उसका चेहरा अपने हाथो से साधा और उसे चूमा। उसके होठ बर्फ की तरह ठडे लगे। मैने बच्चो से अलविदा कही और भागकर चलती हुई गाडी पर चढ गया। गाडी धीरे-धीरे आगे बढी, और इस तरह मै एक बार फिर अपने परिवार के सामने से गुजरा। मैने देखा कि बेचारे मेरे अनाथ बच्चे एक-दूसरे मे सटे हुए से, हाथ हिला रहे है और मुस्कराने की कोशिश कर रहे है, पर मुस्कान है कि चेहरे पर आने का नाम ही नही ले रही है। मैने देखा कि इरीना हाथो मे सीना थामे है, उसके होठ खडिया से सफेद पड गये है, वह कुछ बुदबुदा रही है, टकटकी बाधकर देख रही है और उसका सारा शरीर इस तरह आगे की ओर झुका हुआ है, जैसे कि वह तेज उलटी हवा से लडती हुई आगे बढने की कोशिश मे हो उसका यही चित्र हमेशा-हमेशा, जिन्दगी भर मेरी आखो के सामने रहेगा – हाथो मे सीना थामे, सफेद होठ और आसुओ से भरी हुई फटी-फटी-सी आखे अक्सर इसी रूप मे तो मै उसे अपने सपनो मे देखता हू क्यो मैने उसे इस तरह धक्का दिया था? आज भी जब यह याद करता हू तो मुझे ऐसे लगता है मानो कोई कुन्द छुरी से मुझे हलाल कर रहा हो

"हमे उक्राइना मे स्थित बेलाया त्सेरकोव मे अपने यूनिटो मे जमा दिया गया। मुझे एक तीन टनी ट्रक मिली और इस ट्रक के साथ मै मोर्चे पर गया। खैर, तो लडाई की चर्चा तुमसे क्या की जाये! वह तो तुमने खुद भी देखी है और तुम्हे पता ही है कि शुरू-शुरू मे कैसा-क्या रहा। मुझे घर-परिवार से बहुत-सी चिट्ठिया मिलती पर मै खुद कम ही लिखता। कभी-कभी लिखता, 'सब कुछ ठीक है, दुश्मन से थोडा-बहुत लोहा ले रहे है। अभी बेशक हम कुछ पीछे हट रहे है, पर चिन्ता की कोई बात नही। हम जल्दी ही अपनी ताकत जुटायेगे, और ऐसी मुह की देगे कि जर्मनो को मजबूर होकर आगा-पीछा सोचना पडेगा।' और भला लिखा भी क्या जाता? बडा विकट समय था। कुछ लिखने-लिखाने का मन ही नही होता था। वैसे यहा यह भी कह दू कि मेरी गिनती उनमे कभी रही भी नही जो पत्रो

मे रोने रोया करते। इसके साथ ही मोर्चे पर वे भी मुझे फूटी आखो न सुहाते जिनकी आखे डबडबाई रहती, जो मतलब-बेमतलब हर दिन अपनी पत्नियो और प्रेयमियो को खत लिखते और कागज पर भरी नाक छिनकते कि उफ, यहा की जिन्दगी का हाल कुछ न पूछो, बडी मुसीबत है, उफ, मेरी जान जा सकती है! तो, ये कुत्ते के पिल्ले, इस तरह शिकवे-शिकायत करते जाते, हमदर्दी जगाते जाते, और टसुए बहाते रहते। वे यह बात समझते ही नही थे कि घर-परिवार मे उनकी मुसीबत की मारी पत्नियां और बच्चे भी उतनी ही परेशानी की जिन्दगी बिता रहे है, जितनी कि हम यहा! यानी ये औरते और बच्चे सारा देश अपने कधो पर साधे हुए थे और जरा सोचो तो – कैसे कन्धे हभारी उन औरतो और बच्चो के होते कि वे इस बोझ के नीचे दबकर पिस न जाते! और वे सचमुच दबकर पिस नही गये, उन्होने यह बोझ सहा। फिर बच्चो की तरह ठुनकता कोई ऐसा ही आदमी दर्द मे भरा खत लिख देता और मेहनत-मशक्कत करनेवाली किसी औरत के पैरो के नीचे की धरती ही खिसक जाती। ऐसे पत्र के बाद बेचारी दुख मे गहरी डूब जाती समझ न पाती कि कैसे अपने को सम्भाले और अपने काम का क्या करे! नही! यही तो तू मर्द बच्चा साबित होता है यही तो पता चलता है कि तू सिपाही है तुझे ही तो हर परिस्थिति का सामना और जरूरत होने पर हर दर्द सहन करना होता है। लेकिन अगर भाई, तुम तबीयत से मर्द से ज्यादा औरत हो तो जाओ और चौडा स्कर्ट पहनो ताकि तुम्हारे हडीले चूतड ढक जाये फूले-फूले लगे, और तुम कम स कम पीछे से तो औरत लगो ही। इसके बाद चुकन्दर की निराई करो और गाये दुहा, तुम सरीखे लोगो की जरूरत मोर्चे पर नही। तुम्हारे बिना भी वहा काफी बदबू है!

'लेकिन मै एक साल भर भी लडाई मे हिस्सा न ले पाया इस बीच दो बार घायल हुआ मगर दोनो ही बार हल्की चोट आयी – एक बार बाजू पर तो दूसरी बार पैर पर, पहली बार एक हवाई जहाज मे गोली लगी तो दूसरी बार बम के एक टुकडे का शिकार हुआ। जर्मनो ने मेरी ट्रक की छत मे और अगल-बगल मे सूराख कर दिये, पर भाई, शुरू मे तो मै किस्मत का धनी साबित हुआ, किस्मत बराबर साथ देती रही। लेकिन बाद मे नसीबा फिर गया और १९४२ की मई मे मै लोजोवेकी मे दुश्मनो के हाथो मे पड गया और कैदी

बना लिया गया। बहुत ही अटपटी परिस्थिति मे यह सब कुछ हुआ। जर्मन जोर-शोर से हमला कर रहे थे कि हमारी १२२ मिलीमीटरवाली तोपो के गोले खत्म हो गये। मेरी ट्रक के ऊपर तक गोले भरे गये और खुद मैंने इस तरह जुटकर काम किया कि मेरी कमीज पसीने से सरा-बोर होकर चिपक गयी। बहुत जल्दी करने की जरूरत थी, क्योंकि दुश्मन हमारे नजदीक आते जा रहे थे। बायी ओर किसी के टैंक घडघडा रहे थे तो दायी ओर और सामने से गोलिया बरस रही थी। आसार कुछ अच्छे न थे

"'इस सब के बीच से निकल जा सकते हो, सोकोलोव?' हमारी कम्पनी के कमाडर ने पूछा। पर उसके इस सवाल की कोई जरूरत न थी। सोचने की बात है कि वहा मेरे साथियो की जान पर आ बन सकती थी। ऐसे मे मै भला कैसे हाथ पर हाथ रखे बैठा रह सकता था? इसलिये मैने जवाब दिया, 'यह भी कोई पूछने की बात है? मुझे तो बीच से जाना ही है और बस!' कमाडर बोला, 'तो फिर बैठो ट्रक मे और हवा हो जाओ!'

"और मै चल दिया। इस तरह मोटर या ट्रक मैने जिंदगी मे क्या ही कभी चलाई थी! मै जानता था कि मै आलू लिये नहीं जा रहा हू। मै जानता था ट्रक पर सामान ऐसा है कि मुझे ज्यादा से ज्यादा होशियारी बरतनी है, पर यह मै कर कैसे सकता था जबकि हमारे अपने जवान खाली हाथो लड रहे थे, और जबकि सारा रास्ता तोपो की आग के नीचे उबल रहा था। खैर, तो मैने छह किलोमीटर की दूरी तय की और मै ऐन ठिकाने के पास पहुच गया। अब मुझे तोपखानेवाली खाई तक पहुचने के लिये मुडकर सडक छोड देनी चाहिये थी। पर, मैने देखा क्या? मैने देखा कि हमारी प्यादा पलटन के सिपाही सडक के दोनो ओर के मैदान म से पीछे को भागे आ रहे है चारो तरफ से गोले बरस रहे है। अब मै क्या करू? लौट जाऊ यह तो करूगा नही! तो, अब मैने आव देखा न ताव, अपनी ट्रक पूरी रफ्तार से दौडा दी। तोपखान और मेरे बीच सिर्फ कोई एक किलो-मीटर का फासला था गाडी मै सडक से काट ही लाया था, पर भाई मेरे, अपने तोपखाने तक पहुच नही पाया हो न हो, कोई लम्बी मार करनेवाली तोप ही रही होगी, ट्रक के पास ही उसने कोई भारी गोला फेका। मैने न कोई धडाका सुना और न कुछ और। कोई

चीज़ सिर्फ मेरा दिमाग़ भेदती चली गयी, और इसके बाद क्या हुआ, मुझे कुछ पता नही। मुझे याद नही कि मै कैसे जिन्दा बचा और नही बता सकता कि कितनी देर तक खायी से कुछ दूर अचेत पडा रहा। मैने आखे खोली तो उठते न बना। मेरा सिर झटके खाता रहा और मै यो कापता रहा, जैसे कि मुझे बुखार हो। जिधर देखा उधर ही आखो के आगे अधियारा नजर आया। बाये कधे के अन्दर कोई चीज मुझे खुरचती और पीसती-सी लगी। बदन के जोड-जोड मे इस तरह दर्द का अनुभव हुआ जैसे किसी के हाथ जो पडा, उसने वही उठा-उठाकर पिछले दो दिनो मे बराबर मेरे बदन पर दे मारा हो। ऐसे मे कितनी ही देर तक मै पेट के बल पडा ऐठता रहा और आखिरकार जैसे-तैसे उठा। पर फिर भी समझ न पाया कि मै हू कहा और मुझे हुआ क्या है। मेरी याददाश्त जैसे पर लगाकर उड गयी थी। फिर से लेटने की बात सोचकर मेरा मन डरता था। मुझे लगा कि अगर लेटा तो फिर उठने की नौबत कभी न आयेगी। इसलिये तूफान की लपेट मे आये चिनार की तरह मै जहा का तहा खडा इधर-उधर झटके खाता रहा।

"जब मै सम्भला और मैने चारो तरफ निगाह दौडायी तो मुझे लगा जैसे कि किसी ने मेरे दिल को प्लास मे जकड रखा है जो गोले मै ले जा रहा था, वे मेरे चारो ओर फैले पडे थे मेरी ट्रक भी पास ही थी, टूटी-फूटी और मुडी-मुडायी। पहिये हवा मे थे। और लडाई लडाई मेरे पीछे चल रही थी हा, मेरे ठीक पीछे चल रही थी।

"मुझे आज यह मानने मे कोई शर्म नही कि यह बात समझते ही मेरी टागे जवाब दे गयी और मै ऐसे गिरा जैसे कि किसी ने कुल्हाडे से मुझे काट डाला हो। सबब साफ है। मैने अनुभव किया मै कटकर दुश्मनो की कतारो के पीछे रह गया हू, यानी साफ कहू तो, फासिस्टो का कैदी हो गया हू। ऐसे-ऐसे रग दिखाती है लडाई

"नही, यह समझना बहुत आसान नही है, मेरे भाई, कि आदमी अपनी इच्छा के विरुद्ध, अनचाहे ही कैदी हो जाये और जिस पर खुद कभी यह बीती नही, उसे यह बात समझने मे भी वक्त लगेगा कि आखिर इसके मानी क्या होते है।

"इस तरह मै वहा लेटा रहा कि जल्द ही मैने टैको की गडगडाहट सुनी, चार मझाले जर्मन टैक पूरी रफ्तार से मेरी बगल से गुजरे

और जिम दिशा से मै गोले लाया था, उस दिशा मे बढे तुम क्या मोचते हो कि उम समय मुझ पर कैसी गुजरी होगी? इसके बाद तोपे खीचती हुई गाडिया गुजरी और उसके पीछे एक चल-बावर्चीखाना। सबसे पीछे थी पैदल-मेना। पैदल-सेना बहुत नही थी–एक कम्पनी के बचे-खुचे जवान। मैने जब-तब चोर नजर से निगाह डाली और फिर अपना चेहरा धरती मे गडा लिया, आखे मूद ली उन्हे देखते ही मुझे घृणा होने लगती, कलेजा मुह मे आने लगता

"जब मैने सोचा कि सब के सब लोग जा चुके है तो सिर ऊपर उठाया और देखा कि कोई सौ कदम के फासले पर छह सबमशीनगन चालक मार्च करने चले आ रहे है। मेरे देखते-देखते वे सडक छोडकर सीधे मेरी ओर आये–छह के छह बिल्कुल चुपचाप। मैने सोचा कि अब खैर नही। मै लेटे-लेटे दम तोडना न चाहता था, इसलिये पहले तो मै उठकर बैठा और फिर खडा हो गया। अब उन छह मे से एक मुझसे कुछ कदमो की दूरी पर ठिठका और झटके से उसने अपनी मबमशीनगन कधे मे उतारी। आदमी जाने किम अजीब मिट्टी का बना होता है, पर उस समय मुझे जरा भी घबराहट नही हुई, मेरे दिल मे फुरेरी तक नही हुई। मै उस आदमी की तरफ देखता हुआ मोच रहा था–अभी चुटकी बजाते ही यह मेरा खेल खत्म कर डालेगा लेकिन जाने निशाना कहा माधेगा–मेरे सिर पर या मेरे मीने पर? जैमे कि मुझे इस बात मे कोई फर्क पडता था कि वह मेरे बदन के किम हिस्मे को छेदेगा!

"आदमी जवान था–हट्टा-कट्टा, बाल काले, होठ तागे की तरह पतले, और वह आखे मिकोडकर देखता था। मुझे लगा कि यह आदमी तो न आव देखेगा न ताव और बस मुझे गोली से उडा देगा। मचमुच ऐसा ही हुआ भी, उमने सबमशीनगन माध ली। मैने उसकी आखो मे आखे डाली और मुह मे कुछ नही कहा। पर इमी ममय उम्र मे उममे बडा कारपोरल या ऐमे ही कुछ एक दूसरे आदमी ने चिल्लाकर कुछ कहा, फिर उस आदमी को एक ओर को ढकेला और मेरी ओर आया। अब वह अपनी भाषा मे कुछ बुदबुदाया, मेरी कोहनी झुकाई और मेरी बाह की मामपेशिया टटोली। मेरे मजबूत पुट्ठे को टटोलते हुए खुशी से 'ओ-ओ-ह' कह उठा। उसने डूबते हुए सूरज की ओर जानेवाली सडक की तरफ इशारा किया और जैमे कहा, 'चलो, खच्चर, चलकर हमारे

राइख की मेवा करो।' कुत्ते का बच्चा, बडा मक्खीचूस किस्म का आदमी था!

"लेकिन काले बालोवाले की नजर मेरे बूटो पर थी। वे देखने मे काफी अच्छे और मजबूत थे। मो, उसने हाथ मे इशारा किया, 'उतारो!' मै जमीन पर बैठ गया, जूते उतारे और उसकी ओर बढाये। उसने उन्हे जैमे कि मेरे हाथ मे छीन ही लिया। इसके बाद मैने पैर की पट्टिया उतारी और उमकी आखो मे आखे डालकर उसे देखते हुए उमकी ओर बढायी। पर इस पर वह बरी तरह बिगडा, उसने गालिया दी और उमकी मबमशीनगन फिर तन गयी। दूसरे लोग हमते-हसते लोट-पोट होते रहे और फिर वहा मे हट गये। महज उमी काले बालोवाले ने सडक तक पहुचने के पहले मुडकर मुझे तीन बार देखा। उसकी आखो मे भेडिये के बच्चे की आखो जैसी आग धधक रही थी। ऐसा लगता था माना उसने नही बल्कि मैन उसके जते उतरवा लिये हो!

'तो दोस्त हो ही क्या सकता था! मै सडक पर आया वोरोनेज की जो बुरी मे बुरी और भयानक गालिया याद आयी वे बक दी और पश्चिम की ओर कदम बढाये। अब मै एक कैदी था!

'पर मुझमे चलने की ताकत न रह गयी थी। इसलिये एक घटे मे सिर्फ एक किलोमीटर चल पाता था—इससे ज्यादा नही। चलता भी यो था कि जैमे शराब के नशे मे होऊ, यानी मै सीधे बढने की कोशिश करता, पर कोई चीज मुझे सडक के एक सिरे से दूसरे सिरे की ओर ढकेल देती। इस तरह मैने थोडी दूरी पार की कि मेरे अपने ही डिविजन की टुकडी के लोग बन्दी बने हुए मेरे बराबर आ पहुचे। वे कोई दस जर्मन मबमशीनगनरो की हिरासत मे थे। सब से आगे-आगे चलनेवाला जर्मन मेरे पास आया, उसने न कुछ कहा, न सुना और मेरे सिर पर सबमशीनगन की ठोकर दी। ऐसे मे अगर मै गिर पडता तो वह जर्मन तडाक से गोली चलाता और मुझे जमीन से पाट देता। पर मेरे साथी फौजियो ने मुझे गिरते-गिरते थाम लिया और टुकडी के बीच मे कर लिया। कुछ देर तक वे मुझे सहारा दिये रहे। यही नही, मै जब जरा सम्भला तो एक साथी ने कान मे फुसफुसाते हुए कहा, 'ईश्वर के लिये गिरना मत! जब तक जरा-सी भी शक्ति बाकी रहे, चलते जाओ, वरना ये लोग तुम्हे मार डालेगे।' मेरे

बदन मे बेशक बहुत ही थोडी शक्ति बच रही थी, फिर भी मै जैसे-तैसे चलता रहा।

"फिर ज्यो ही सूरज डूबा, जर्मनो ने गार्ड बढा दिये। अब एक ट्रक मे २० सबमशीनगनर और आये और हमे अधिक तेज रफ्तार से हाक चले। हममे से जो लोग बुरी तरह घायल थे वे बाकी लोगो के कदमो से कदम मिलाकर न चल सके और उन्हे जर्मनो ने रास्ते मे ही गोली से उडा दिया। दो आदमियो ने भाग निकलने की कोशिश की, पर यह भूल गये कि चादनी रात मे आदमी एक मील की दूरी तक मैदान मे नजर आता है। मतलब यह कि गोलियो से भून दिये गये। आधी रात होते-होते हम एक अधजले गाव मे पहुचे। दुश्मन हमे चकनाचूर गुम्बदवाले एक गिरजे के अन्दर ले गये। रात हम सबने बिना फूस के एक तिनके के, पत्थर के फर्श पर बितायी। किसी के पास ओवरकोट नही था। सब ट्यूनिक पहने हुए थे इसलिए नीचे बिछाने के लिये कुछ नही था। हमम से कुछ के बदन पर तो ट्यूनिक भी न थे, सिर्फ नीचे पहनने की कमीजे थी। ये लोग ज्यादातर नान-कमीशड अफसर थ। उन्होने अपने ट्यूनिक इसलिये उतार दिये थे कि वे भी साधारण फौजियो जैसे नजर आये। तोपचियो के बदन पर भी ट्यूनिक न थे। वे अधनगे ही तोपो पर अपना काम कर रहे थे कि उन्हे कैदी बना लिया गया था।

उस रात मूसलाधार पानी बरसा और हम सब के सब तर-ब-तर हो गये। गिरजे का गुम्बज तोप के भारी गोले या बम से उड गया था। छत भी बिल्कुल टूटी-फूटी पडी थी यहा तक कि वेदी के ऊपर भी चप्पा भर सूखा जगह नहो थी। सो, हमने ठीक उसी तरह उस गिरजे मे पूरी रात बितायी जैसे भेडे एक अन्धेरे बाडे मे। कोई आधी रात के समय किसी ने मेरे बाजू पर हाथ रखा और पूछा 'तुम घायल हो क्या साथी?' मैने कहा, 'क्यो भाई तुम यह क्यो पूछ रहे हो?' जवाब मिला 'मै डाक्टर हू—तुम्हारी किसी तरह की मदद कर सकता हू?' मैने उसे बताया कि मेरा बाया कधा आवाज करता है सूजा हुआ है और बहुत दर्द करता है। व्यक्ति ने दृढतापूर्वक कहा, 'ट्यूनिक और अन्दर की कमीज उतार डालो।' मैने ये उतार डाले और वह अपनी पतली-पतली उगलियो से मेरे कधे को इधर-उधर से टटोलने और दर्द पहुचाने लगा। मैने दात पीसे और बोला, 'तुम जानवरो

के डाक्टर होगे, साधारण डाक्टर तो तुम हो नही सकते। जहा दर्द होता है, वही क्यो दबाते हो, संगदिल शैतान?' पर वह उसी तरह इधर-उधर टटोलता रहा और फिर बिगडते हुए इस तरह बोला, 'तुम्हारा काम है कि तुम अपना मुह सिये रहो, समझे! बडे बक्की हो तुम तो। हिम्मत से काम लेना, अभी और जोर से दर्द होगा।' और इसके बाद उसने मेरा हाथ इस तरह ऐठा कि मेरी आखो से लाल लाल चिनगारिया-सी फूट पडी।

"मै होश मे आया तो मैने उससे पूछा 'कम्बख्त फासिस्ट, तुम यह करते क्या हो? मेरे बाजू का जोड-जोड टूटा हुआ है और तुम उसे इस तरह ऐठते हो?' वह धीरे-से हसा और फिर बोला, 'मै तो समझता था कि तुम मुझ पर दाहिना हाथ जमा दोगे, पर लगता है कि तुम खासे ठण्डे स्वभाव के आदमी हो। बात यह है कि तुम्हारा हाथ टूटा नही था, जोड से खिसक गया था और मैने उसे उसकी जगह पर जमा दिया है। हा तो अब कुछ पहले से बेहतर है न?' और सचमुच ही मुझे कम दर्द होने लगा। मैने डाक्टर को दिल से धन्यवाद दिया। वह अधेरे मे धीरे-से यह पूछते हुए आगे बढा, 'कोई घायल है?' वह था असली डाक्टर! कैदी होने पर भी घुप अधेरे मे वह अपना महान कर्त्तव्य पूरा करता रहा।

"रात बडी बेचैनी से भरी थी। सीनियर-गार्ड ने हमे जोडो मे गिरजे के अन्दर हाकते हुए पहले से ही आगाह कर दिया था कि पेशाब-पाखाने के लिये भी बाहर नही जाने दिया जायेगा। और किस्मत का फेर कि हममे से एक ईसाई को पाखाना लगा। कुछ देर तक तो वह टालता गया, पर अन्त मे रो पडा 'मै पवित्र स्थान को तो अपवित्र नही कर सकता। मै आस्तिक हू मै ईसाई हू! यारो, मुझे बताओ मै क्या करू?' और तुम जानते ही हो अपने लोगो को? हममे से कुछ इस बात पर हसे कुछ ने भला-बुरा कहा और कुछ उसे उल्टी-सीधी मजाकिया सलाहे देने लगे। उसने हम सब का खासा मन बहलाया, मगर आखिर मे नतीजा बहुत बुरा हुआ वह जोर से दरवाजा खटखटाने और यह प्रार्थना करने लगा कि उसे बाहर निकलने दिया जाये। उसकी प्रार्थना 'स्वीकार' की गयी एक फासिस्ट ने दरवाजे के बीच मे गोलिया बरसानी शुरू कर दी, उसने उस ईसाई के साथ अन्य तीन लोगो को भी गोलियो से भून डाला। इनके अलावा एक आदमी इतनी बुरी

तरह घायल हुआ कि सुबह होते-होते दम तोड गया।

"हमने मुर्दो को खीचकर एक तरफ किया, फिर चुपचाप बैठकर मन ही मन सोचने लगे कि श्रीगणेश तो कुछ अच्छा नही हुआ इसी समय फुसफुसाहट शुरू हुई और लोग एक-दूसरे से पूछने लगे कि कौन कहा का है और कौन किस तरह दुश्मन के हाथो मे पडा, इसके बाद एक ही प्लाटून या एक ही कम्पनी के लोग अधेरे मे ही एक-दूसरे को सम्बोधित करने लगे। अपनी बगल मे ही मैने धीरे-धीरे यह बात-चीत होती सुनी एक बोला, 'अगर कल यहा से आगे ले चलने के पहले वे हमे कतार मे खडे करके पूछेगे कि हममे से कौन कमिसार है, कौन कम्युनिस्ट है और कौन यहूदी, तो तुम अपने को छिपाने की कोशिश न करना, प्लाटून-कमाडर! इस तरह जान नही बचेगी। तुम्हारा ख्याल है कि तुमने अपना ट्यूनिक उतार दिया है, इसलिये तुम मामूली फौजी समझ लिये जाओगे? इससे कोढ नही धुलेगा। फिर मै तुम्हारे कारण अपने को मुसीबत मे नही डालूगा! सबसे पहले तुम्हारी तरफ इशारा करूगा। मै जानता हू कि तुम कम्युनिस्ट हो। तुमने मुझे पार्टी मे लाने के लिये डोरे डालने की भी कोशिश की थी। आज यहा तुम उसका जवाब दोगे ' ये बाते जिस व्यक्ति ने कही, वह बिल्कुल मेरे पास ही, बायी ओर बैठा हुआ था। उसकी बगल मे बैठे हुए दूसरे व्यक्ति ने अपने युवा स्वर मे उत्तर दिया, 'क्रीज्नेव, तुम्हारे मामले मे हमेशा मेरे मन मे यह शका बनी रही थी कि तुम अच्छे आदमी नही हो। यह बात खास तौर पर तब मुझे महसूस हुई थी जब तुमने पार्टी का सदस्य बनने से इन्कार किया था और बहाना बनाया था कि तुम अपढ हो। लेकिन तुम गद्दार साबित होगे, यह मैने कभी नही सोचा था। तुमने ७ साला स्कूल की पढाई तो खत्म की है न?' दूसरे आदमी ने अलसाये-से स्वर मे जवाब दिया, 'हा, खत्म की है। तो इससे क्या?' इसके बाद कुछ देर तक वे दोनो चुप रहे। तब मैने दूसरी आवाज पहचानी और प्लाटून-कमाडर को धीरे-से यह कहते सुना, 'देखो, मुझे दुश्मनो को मत सौपना, साथी क्रीज्नेव।' क्रीज्नेव हल्के-से हस दिया, 'तुम्हारे साथी मोर्चे के उस पार रह गये है, मै तुम्हारा कोई साथी-वाथी नही, इसलिये मेरी मिन्नत समाजत करने मे कोई लाभ नही होगा। मै तो तुम्हारी तरफ इशारा करूगा ही। अपनी जान तो आदमी को सबसे ज्यादा प्यारी होती ही है।'

"उनकी बातचीत बन्द हो गयी, पर इस कमीनी हरकत की बात सोचते ही मुझे अपने शरीर मे फुरफुरी-सी अनुभव हुई। मैने मन ही मन सोचा, 'नही, कुतिया के पिल्ले, मै तुझे तेरे इस कमाडर के साथ गद्दारी नही करने दूगा! अपने पैरो के बल तो तू इस गिरजे मे बाहर जाने मे रहा, तुझे पावो मे घसीटकर ही बाहर फेकेंगे!' जब कुछ-कुछ उजाला हुआ तो मैने वही एक बडे थलथल चेहरेवाले आदमी को, सिर के पीछे हाथ बाधे, चित लेटे देखा। उसकी बगल मे एक छोकरा-सा बैठा था – उठी हुई छोटी-सी नाक, हाथ घुटनो के गिर्द, दुबला-पतला, पीला चेहरा और बदन पर महज एक कमीज। मैने सोचा, 'यह छोकरा इस साड को क्या साधेगा। मुझे ही इसका काम तमाम करना होगा।'

मैने छोकरे के बाजू पर हाथ रखा और फुसफुसाते हुए पूछा, 'तुम प्लाटून-कमाडर हो?' लडके ने मुह से कुछ न कहकर सिर्फ सिर हिला दिया। मैने चित लेटे आदमी की ओर इशारा किया और कहा, 'यही है न जो तुम्हे दुश्मन के हाथो सौप देना चाहता है?' उसने फिर सिर हिलाकर हामी भरी। मैने कहा, 'तो अच्छा, उसके पैर कसकर पकड लो ताकि वह लात न चला सके! और देखो, जल्दी करो!' अब मै कूदकर उस आदमी के ऊपर जा डटा, और मैने अपनी उगलियो मे उसकी गरदन जकड ली। उसे चीखने तक का मौका नही मिला। कुछ देर तक मैने अपनी पकड ज्यो की त्यो रखी और फिर हाथ ढीले कर दिये। उसकी जीभ बाहर लटक आयी। कर ले बेटा अब गद्दारी!

'इसके बाद मेरा जी बडा ही खराब हुआ। हाथ धोने की बडी इच्छा अनुभव की जैसे कि मैने आदमी का खात्मा न कर किसी रेगते हुए साप को कुचल डाला हो जिन्दगी मे पहली बार मैने किसी की जान ली थी – सो भी अपने ही एक आदमी की पर वह क्या खाक अपना था! वह तो दुश्मन से भी गया-बीता था, गद्दार था। आखिर मै उठा और मैने प्लाटून-कमाडर से कहा, 'साथी, यहा से कही और चलना चाहिये, गिरजा काफी बडा है!'

"जैसा कि क्रीज्नेव ने कहा था, सुबह होते ही हम सबको गिरजे के बाहर कतार मे खडा कर दिया गया। सबमशीनगनरो ने हमे चारो ओर से घेर लिया, और तीन जर्मन अफसर ऐसे लोगो को चुन-चुनकर अलग करने लगे जिन्हे वे खतरनाक समझते थे। उन्होने पूछा, 'कौन

कम्युनिस्ट, कौन अफसर और कौन कमिसार है?' पर ऐसा कोई हाथ नही लगा। फिर यह कि हममे उन्हे कोई ऐसा गद्दार भी नही मिला, जो गद्दारी करता, यद्यपि हममे से लगभग आधे लोग कम्युनिस्ट थे, कितने ही अफसर और कितने ही कमिसार थे। इस तरह २०० से अधिक लोगो मे से उन्होंने सिर्फ चार आदमी छाटे–आम फौजियो के बीच मे एक यहूदी और तीन रूसी। इन रूसियो की इसलिये मुसीबत आयी कि उनके बाल काले और घुघराले थे। सो, जर्मन अफसर उनके पास आये और बोले, 'यहूदी?' उन्होंने तीनो मे से जिससे पूछा उसी ने अपने को रूसी बतलाया, पर उन्होंने कान ही नही दिया। 'कतार से बाहर आ जाओ!'–और बात खत्म।

"तो उन्होंने इन बदकिस्मतो को गोली से उडा दिया और हमे आगे हाक ले चले। जिस प्लाटून-कमाडर ने गद्दार का गला घोटने मे मेरी मदद की थी वह पोजनान तक मेरे दाहिने चलता रहा। मार्च के पहले दिन तो वह रह-रहकर मेरे पास सट आता और चलते-चलते मेरा हाथ कृतज्ञता से दबा देता। पर पोजनान मे हम एक-दूसरे से अलग हो गये। घटना कुछ इस तरह घटी।

बात यह है भाई कि जिस दिन मै दुश्मनो के हाथ पडा था उसी दिन से भाग निकलने की बात मेरे दिमाग मे नाचने लगी थी। पर मामला पक्का होने पर ही कोशिश करना चाहता था। पोजनान पहुचने तक के रास्ते मे कोई ढग का मौका मेरे हाथ नही आया। पोजनान मे हमे कैम्प मे रखा गया यहा ऐसे लगा जैसे कि जो मुझे चाहिये, वह मुझे मिल गया। मई के महीने के आखिर तक हमारे कितने ही साथी पेचिश से मर गये–हमे उन्हे दफनाने के लिये कब्र खोदने को कैम्प के पास के एक छोटे-से जगल मे भेजा गया। यहा पोजनान की जमीन खोदते समय मैने जो इधर-उधर नजर दौडायी तो देखा कि हमारे गार्डो मे से दो तो बैठे कुछ खा रहे है और एक धूप मे बैठा ऊघ रहा है। बस तो मैने अपना फावडा रखा और चुपके-से एक झाडी के पीछे जा छिपा और फिर मै अपनी पूरी ताकत भर सीधे उस दिशा मे भाग चला जिधर से सूरज निकला था

"स्पष्टत गार्डो को काफी देर बाद ही मेरा ध्यान आया। मै सूखकर ऐसा हो चुका था कि हड्डी-हड्डी गिन लीजिये। नही जानता कि मुझमे इतनी ताकत कहा से आ गयी कि मैने एक दिन मे लगभग ४०

किलोमीटर की दूरी तय कर डाली। पर बात कुछ बनी नही चौथे दिन जब मै उस मनहूस कैम्प मे काफी दूर निकल गया था, दुश्मनो ने मुझे पकड लिया। उन्होंने खून के प्यासे शिकारी कुत्ते मेरी खोज में मेरे पीछे लगा दिये थे। जई के एक अनकटे खेत मे उन्होंने मुझे आ खोजा।

"सुबह-तडके मै एक खुले खेत मे आ निकला तो दिन के उजाले मे उसे पार करने की बात सोचकर मेरा मन काप उठा। जगल और इस खेत के बीच कम से कम तीन किलोमीटर का फासला था, इसलिये मै जई के बीच ज्यादा से ज्यादा दुबककर लेट रहा कि दिन कट जाये तो यहा से निकलू। यहा मैंने जई की बालो को ममला, कुछ दाने निकालकर खाये और कुछ जेब मे डाले कि कुत्तो के भूकने और मोटर-साइकल की घडघडाहट की आवाज मेरे कानो मे पडी मेरा दिल बैठ गया, क्योंकि कुत्ते नजदीक ही नजदीक आते जा रहे थे। मै पट लेट गया और मैंने अपना चेहरा हाथो से ढक लिया ताकि वे मेरा मुह न नोच डाले। खैर, तो वे मेरे पास आ पहुचे और पल भर म उन्होंने मेरे कपडे-लत्ते तार-तार कर डाले। मेरे बदन पर कुछ न रह गया और इस तरह मै बिल्कुल नगा हो गया। अब कुत्तो ने मुझे जई के बीच इधर-उधर घसीटा और जो मन भाया सो किया। आखिर मे एक बडे कुत्ते न मेरे सीने पर अपने अगले पजे जमाये और मेरे गले की ओर खरोच-खरोच शुरू की। लेकिन उसने फौरन दात नही गडाये।

'दो मोटरसाइकलो पर जर्मन आये। उन्होंने पहले तो कसकर मेरी मरम्मत की और फिर मुझ पर कुत्ते लुहा दिये कि बदन मे जहा-तहा मास निकल आया। मै बिल्कुल नगा और खून मे तर-ब-तर था। उसी हालत मे वे मुझे कैम्प मे वापस ले गये। इस तरह भागने के लिये मुझे एक महीने तक एकान्त मे कैद रखा गया, पर जिन्दा मै तब भी रहा जैसे-तैसे जिन्दा रहा ही!

"भाई मेरे, कैदी की शक्ल मे मुझ पर क्या-क्या गुजरी उसे याद करके ही दिल भारी हो जाता है, और उस सब का बयान करना तो खैर और भी मुश्किल है। जब याद आता है कि वहा जर्मनी मे हमारे साथ कैसा जानवरो का सा व्यवहार किया गया जब वे अपने ही सगी-साथी याद आते है जिन्हें कैम्पो मे तरह-तरह से सता-सताकर मार

डाला गया तो कलेजा मुह को आ जाता है, नीचे की सास नीचे और ऊपर की ऊपर रह जाती है।

"उफ, कैद के दो सालो के दौरान मुझे कहा-कहा की खाक नही छाननी पडी! आधा जर्मनी तो नाप ही डाला होगा मैने सैक्सोनी मे मैने सिलीकेट पत्थरो के एक कारखाने मे काम किया, रूहर प्रदेश मे एक खान से कोयला निकाला बवारिया मे कमर झुकाये हुए फावडे चला-चलाकर पसीने-पसीने होकर गला। कुछ समय तक थुरीगेन मे भी खटा। शैतान ही जानता है कि जर्मनी मे कहा-कहा मारे-मारे नही फिरना पडा। जगह-जगह कुदरत के अलग-अलग नजारे देखने को मिले, पर जिस ढग से उन्होने हमे गोली मे उडाया और मार-मारकर अधमरा किया, वह हर जगह एक जैसा ही रहा। नरक के इन अजदहो और आदमखोरो ने जिस तरह पीट-पीटकर हमारी खाल मे भुस भरा, उस तरह तो हमारे यहा जानवरो को भी नही पीटा जाता। वे हम पर घूसे बरसाते, ठोकरे जमाते, रबड के डडो से झोरते, जो भी लोहा हाथ मे आता उसे ही उठाकर दे मारते। राइफलो के कुदो और लकडी की अन्य चीजो की तो खैर चर्चा ही क्या की जाये।

वे हमे इसलिये पीटते थे कि हम रूसी थे कि हम अब तक दुनिया मे जिन्दा थे और कि हम उनके लिये खटते थे। वे इसलिये भी हमारी चमडी उधेडते थे कि उन्हे हमारा देखने का ढग पसन्द नही आया था कि उन्हे हमारी चाल अच्छी नही लगी थी, कि उनके मनपसन्द ढग से हम मुड नही पाये थे वे मारते ताकि हमारी जान निकाल ले, वे मारते कि हमारा ही खून हमारे गले मे अटक जाये और हम मार खाते-खाते ही इस दुनिया से चल बसे। मै समझता हू कि जर्मनी मे उस समय हमे जलाने के लिये शायद काफी भट्ठे नही थे

"फिर यह कि हम जहा भी जाते, खाना हमे एक-सा ही दिया जाता, यानी लकडी का बुरादा मिली 'इरसात्ज' रोटी और शलजम का पतला शोरबा। कहीं-कही हमे पीने को उबला हुआ पानी दिया जाता और कही-कही वह भी नही। इन बातो की चर्चा भी क्या की जाये? तुम खुद ही निर्णय कर सकते हो अब खुद ही सोच लो कि लडाई शुरू होने के पहले मेरा वजन ८६ किलोग्राम था और शरद के आते-आते मै पचास किलोग्राम से अधिक न रह गया था, सिर्फ हड्डिया

रह गयी थी और हड्डियो के ऊपर की खाल। ताकत इतनी भी नही कि इन हड्डियो का ही बोझ ढोया जा सके। लेकिन इस पर भी काम तो करना ही पडता था, और सो भी बिना मुह खोले। फिर यह कि काम भी ऐसा जो गाडी खीचनेवाले घोडे को भी भारी पडता।

' सितम्बर के शुरू मे हम १४२ सोवियत कैदियो को जर्मन कुस्त्रीन के पास के कैम्प मे द्रेज्देन के कैम्प मे ले गये। उस समय तक इस कैम्प मे हमारे कोई दो हजार कैदी थे। तो हम सब पत्थर निकालने की खान मे काम करते और जर्मन पत्थर अपने हाथो से काटते और तोडते थे। हमारे लिये मात्रा तय होती और हममे से हर एक को चार घन मीटर पत्थर हर दिन काटना पडता। जरा सोचो तो कि यह साधना पडता उस आदमी को जो किसी तरह अपने तन का बोझ ढो रहा था। नतीजा यह कि दो महीने के बाद हमारे दल के १४२ लोगो मे से महज ५७ रह गये। क्यो क्या ख्याल है तुम्हारा, भाई? ऐसा बुरा वक्त गुजरा कि कुछ न पूछो! हम अपने साथियो को दफनाने भी न पाये थे कि यह अफवाह कानो मे पडी कि जर्मनो ने स्तालिनग्राद पर कब्जा कर लिया है और साइबेरिया की ओर आगे ही आगे बढने जा रहे है। एक के बाद एक चोट दिल पर पडती। ये चोटे हमे इस तरह दबाये रखती कि हम जमीन से ऊपर नजर न उठा पाते, जैसे कि हम कह रहे हो कि हम जर्मनी की इस अजनबी धरती मे ही समा दीजिये! और ऐसे मे हर दिन कैम्प के गार्ड पीते, गला फाड-फाडकर गाते और मनमानी रग-रेलिया मनाते।

' एक दिन शाम को हम काम से अपनी बैरक मे लौटे। सारा दिन पानी बरसता रहा था और हमारे तन के चिथडे बिल्कुल तर-ब-तर हो गये थे। हम ठण्डी हवा के मारे कापते थे और हमारे दात किटकिटाते थे। चिथडे सुखाने या तन गर्माने की कही कोई जगह नही थी, फिर भूख भी ऐसी लगी थी कि दम निकला जा रहा था। लेकिन शाम को हमे खाने को कुछ भी नही दिया जाता था।

"खैर, तो मैने गीले चिथडे उतारे, अपने सोने के पटरे पर फेके और कहा, 'ये लोग माग करते है कि हम चार घन मीटर हर दिन निबटाये, लेकिन हममे से हर एक की कब्र के लिये तो एक घन मीटर ही बहुत काफी होगा।' सिर्फ इतना ही कहा मैने, लेकिन तुम यकीन करोगे कि हमारे अपने साथियो मे से ही एक आदमी ऐसा कुत्ता निकला

जिसने जाकर कैम्प-कमाडर से चुगली खा दी और मेरे कडवे शब्द दोहरा दिये।

"कैम्प-कमाडर या वहा के लोगो के लफ्जो मे कैम्प-फ्रेर एक जर्मन था और उसका नाम मूल्लर था – कद बहुत लम्बा नही, हट्टा-कट्टा, बाल मन के गुच्छे जैसे और खुद भी भूरा-भूरा-सा। उसके सिर के बाल भूरे थे, बरौनियो के बाल भी भूरे थे और आखे भी भूरी-भूरी थी, फूली-फूली-सी। रूसी वह तुम्हारी और मेरी तरह बोलता था। उच्चारण कुछ-कुछ वोल्गा-प्रदेश के लोगो जैसा था, जैसे कि वही कही पैदा और बडा हुआ हो। रही गालिया देने की बात, ओह, सो कुछ न पूछो! जाने उस कम्बख्त ने इस धधे मे ऐसा कमाल कैसे हासिल किया था?

"जर्मनो के शब्दो मे ब्लाक यानी बैरक के सामने हमे कतार मे खडा होने का हुक्म देता और अपने दुमछल्लो से घिरा दाहिना हाथ ताने हुए एक सिरे से दूसरे सिरे तक बढता चला जाता। वह चमडे के दस्ताने पहनता और चमडे के नीचे उगलियो के बचाव के लिये सीसे की एक पट्टी होती। वह हर दूसरे आदमी की नाक से खून की धार बहाता जाता। इसे वह 'इन्फ्लुयेजाविरोधी टीका' कहता। और यह सिलसिला हर दिन चलता। कैम्प मे कुल चार ब्लाक थे। एक दिन वह ये टीके एक ब्लाक के लोगो को लगाता तो दूसरे दिन दूसरे ब्लाक के लोगो को, और इसी तरह यह क्रम चलता जाता। आदमी पक्का हरामी था। एक दिन का भी नागा न करता। लेकिन एक बात थी जो वह बेवकूफ समझ नही पाता था। होता यह कि अपनी गश्त शुरू करने के पहले वह सामने आकर खडा हो जाता और अपने को तैयार करने के लिये गालिया देना शुरू करता। तुम जानते हो, गालिया देना तो जी भर गालिया देता, और हम थोडे हरिया उठते। देखो न भाई, लफ्ज बिल्कुल अपने लगते और ऐसा अनुभव होता कि हवा का कोई झोका हमारे मुल्क-देश से आ गया है मै सोचता हू कि अगर वह यह बात जानता कि उसकी गालियो और कोसा-कासी से हमे सुख मिलता है तो वह हरगिज रूसी मे गालिया न देकर अपनी मातृभाषा का प्रयोग करता। और हमारा एक साथी, मास्कोवासी मेरा एक यार तो बहुत बौखला उठता। कहता, 'जब वह इस तरह गालिया देता है तो मै तो आखे मूद लेता हू और ऐसा लगता है जैसे

कि मास्को मे हू और किसी बीयरखाने मे बैठा हू। कुछ ऐसा वहा का सा रग होता है कि एक गिलास बीयर के लिये मन तडप-तडप उठता है।'

"तो, घन मीटरवाली बात के दूसरे दिन कैम्प-कमाडर ने मुझे बुलवा भेजा। शाम को एक दुभाषिया और दो गार्ड हमारी बैरक मे आये और आवाज दी, 'सोकोलोव अद्रेई?' मैंने जवाब मे हा की। वे बोले, 'चलो, आओ, हमारे पीछे-पीछे, जल्दी करो श्रीमान कैम्प-फूरेर ने खुद तुम्हे बुलाया है।' मै आगे का मामला कुछ फौरन ही समझ गया कि सीधे-सीधे गोली मार दी जायेगी।

"मेरे साथी भी यह बात जानते थे। मैने उनसे अलविदा कही, एक लम्बी सास ली और गार्डो के पीछे-पीछे चल दिया। कैम्प के मैदान को पार करते हुए मैने आख उठाकर सितारो को देखा, उनसे विदा ली और मन ही मन सोचा, 'खैर तुमने जुल्म-मुसीबत का अपना उधार पाट दिया, अद्रेई सोकोलोव, नम्बर ३३१।' इस समय इरीना और बच्चो के लिये मेरा मन कलपा, पर मैने अपने को साधा और बिना डगमगाये, एक फौजी की तरह पिस्तौल की नली का सामना करने के लिये साहस बटोरने लगा ताकि दुश्मन यह न ताडने पाये कि इस जिन्दगी से अलग होते समय आखिरी वक्त मुझे कितनी तकलीफ हुई

"कमाडर के कमरे मे खिडकी के दासे पर फूल रखे थे और कमरा हमारे क्लबो के किसी भी कमरे की तरह साफ-सुथरा था। मेज के पास कैम्प के पाचो अफसर बैठे थे। वे श्नाप्स शराब ढाल रहे थे और सुअर की चरबी चबा रहे थे। मेज पर श्नाप्स शराब की खुली हुई एक बडी बोतल, रोटी, चरबी सिरके से खट्टे किये हुए सेब और तरह-तरह के डिब्बे खुले रखे थे। मैंने सभी चीजो पर एक उडती नजर डाली और तुम यकीन न करोगे कि मेरा जी ऐसा खराब हुआ कि कै होने-होने को हो गयी। बात यह है कि मै भेडिये की तरह भूखा था और अब तक इन्सानी खुराक का जायका तक भूल चुका था। और यहा मेरी आखो के सामने तरह-तरह की चीजो के मजे उडाये जा रहे थे जैसे-तैसे मैने अपनी मतली पर काबू पाया, मगर उस मेज से अपनी निगाह हटा पाने के लिये मुझे काफी कोशिश करनी पडी।

"मेरे ठीक सामने बैठा था मूल्लर शराब के नशे मे आधा चूर–

10–1152

कभी एक और कभी दूसरे हाथ में पिस्तौल से खिलवाड़ करता हुआ। तो उसने अपनी निगाह मुझ पर गड़ा दी – बिल्कुल सांप की तरह। ख़ैर तो, मैंने टूटी हुई एड़ियां आवाज़ करते हुए मिलायीं, एटेंशन खड़ा हुआ और ऊंची आवाज़ में कहा, 'फ़ौजी क़ैदी अंद्रेई सोकोलोव आपकी सेवा में हाज़िर है, श्रीमान कमांडर।' वह बोला, 'तो रूसी इवान, चार घन मीटर पत्थर की निकासी तुम्हारे लिये बहुत ज़्यादा है, क्यों?' मैंने जवाब दिया, 'जी हां, श्रीमान कमांडर, बहुत ज़्यादा है।' इस पर वह बोला, 'और एक घन मीटर तुम्हारी क़ब्र के लिये काफ़ी है?' मैंने कहा, 'जी हां, श्रीमान कमांडर, बहुत काफ़ी है, कुछ बच भी रहेगा।'

"वह उठा और बोला, 'मैं तुम्हें बड़ी इज़्ज़त बख़्शूंगा और इन शब्दों के लिये ख़ुद गोली मारूंगा। लेकिन यहां ठीक नही, इसलिये वहां अहाते में चले चलो। वहा बाहर आराम रहेगा मरने में।' मैंने जवाब दिया, 'जैसा आप कहें।' अब वह एक मिनट तक खड़ा कुछ सोचता रहा, फिर उसने पिस्तौल मेज़ पर रखी, श्नाप्स शराब से गिलास भरा, रोटी का एक टुकड़ा लिया, उस पर चरबी का एक छोटा-सा टुकड़ा रखा, सब कुछ मेरी ओर बढ़ाया और बोला, 'रूसी इवान, मरने के पहले, जर्मनों की विजय का जाम पी लो।'

"मैं शराब का गिलास और रोटी उसके हाथ से लेने ही वाला था, लेकिन जब मैंने उसके लफ़्ज़े सुने तो मुझे अपने अन्दर आग-सी जलती अनुभव हुई। मैंने सोचा, 'मैं एक रूसी फ़ौजी, जर्मनों की जीत का जाम पीऊं? क्या और कुछ तुम मुझसे नही चाहोगे, श्रीमान कमांडर? मरना तो है ही मुझे, भाड़ में जाओ तुम और तुम्हारी यह श्नाप्स!'

"मैंने गिलास मेज़ पर रख दिया और उसके साथ ही रोटी भी। बोला, 'मेहमाननवाज़ी के लिये धन्यवाद, लेकिन मैं पीता नही।' वह मुस्कराया, 'तो तुम हमारी जीत का जाम नही पीना चाहते? ख़ैर, तो अपनी मौत का जाम पिओ।' इसमें मेरा भला क्या जाता था? 'अपनी मौत और इस यातना से निजात के लिये,' मैंने कहा, गिलास उठाया और दो घूंटों में सारी शराब गले के नीचे उतार गया। पर रोटी मैंने छुई तक नही। मैंने हल्के-से अपने होंठ पोंछे और कहा, 'इस ख़ातिर के लिये धन्यवाद। मैं तैयार हूं।

अब आप मुझे गोली से उडा सकते है, श्रीमान कमाडर।'

"मगर वह मुझे पैनी नजर से देखते हुए बोला, 'मरने के पहले दो कौर मुह मे डाल लो।' मैने कहा, 'पहले गिलास के बाद मै कुछ नही खाता।' इस पर उसने दूसरा गिलास भरा और मेरी ओर बढाया। मैने वह भी पी डाला, पर रोटी फिर भी नही छुई। मैने हिम्मत को अपना हथियार बनाया और सोचा, 'चलो, मरने के लिये बाहर अहाते मे जाने से पहले नशे मे हो लू।' कमाडर की भूरी भौहे ऊपर उठी, 'लेकिन तुम खाते क्यो नही, रूसी इवान? शर्माओ नही!' मै अपनी बात पर अडा रहा, 'माफ कीजिये, श्रीमान कमाडर, मै दूसरे गिलास के बाद भी कुछ नही खाता।' उसने अपने गाल फुलाये, नाक बजायी और फिर जोर का ठहाका लगाया। साथ ही उसने जर्मन भाषा मे जल्दी-जल्दी कुछ कहा। शायद मेरी बात का अपने साथियो के लिये अनुवाद किया। दूसरे भी हसे, अपनी कुर्सिया पीछे खिसकायी और मुझे देखने के लिये अपने थोबडे मेरी ओर किये। अब मैने उनकी आखो मे कुछ और ही यानी नर्मी का सा भाव लहरे लेते देखा।

'कमाडर ने मेरे लिये तीसरा गिलास भरा। इस बीच हसी के मारे उसका हाथ कपकपाता रहा। यह गिलास मैने जरा धीरे-धीरे खाली किया, जरा-सी रोटी काटी और बाकी मेज पर रख दी। मै इन शैतानो को यह दिखला देना चाहता था कि बेशक भूख से मेरा दम निकला जा रहा था, फिर भी उन्होने जो टुकडे मेरे सामने फेक दिये थे, मै उन्हे अपने मुह मे ठूसने नही जा रहा था। मै उन्हे यह जतला देना चाहता था कि मेरा अपना रूसी स्वाभिमान और रूसी मर्यादा है और लाख चाहने पर भी वे अभी मुझे आदमी से जानवर नही बना पाये है।

'इसके बाद उस कमाडर का चेहरा गम्भीर हो गया उसने अपने सीने पर दो क्रॉस सीधे किये, निहत्था मेज से आगे बढ आया और बोला, 'देखो, सोकोलोव, तुम सच्चे रूसी फौजी हो। तुम बढिया फौजी हो। मै भी फौजी हू और शानदार दुश्मन की इज्जत करता हू। मै तुम्हे गोली नही मारूगा। और जानते हो, आज हमारी बहादुर फौजे वोल्गा तक पहुच गयी है और उन्होने स्तालिनग्राद पर पूरी तरह कब्जा कर लिया है। यह हमारे लिये बहुत ही खुशी की बात है, इसलिये मै तुम पर रहम कर तुम्हारी जान बख्शता हू। इसलिये अपने

ब्लाक मे वापस जाओ और यह तुम्हारी हिम्मत का इनाम है, इसे अपने साथ लेते जाओ।' यह कहकर उसने एक पावरोटी और चरबी का एक लोदा मेरे हाथो मे थमा दिया।

"मैने उस रोटी को कसकर अपने सीने से चिपटा लिया और चरबी अपने बाये हाथ मे ले ली। सारी घटना के एकदम एक अप्रत्याशित मोड ले लेने मे मुझे इतनी हैरानी हुई कि मै धन्यवाद तक देना भूल गया। केवल बायी ओर मुडकर घूमा और दरवाजे की ओर बढ चला। पर हर समय मुझे यही लगता रहा कि अब मेरी पीठ पर गोली चली। और यह टुकडा मेरे साथियो तक न पहुच पायेगा। लेकिन कुछ नही हुआ। एक बार फिर मौत मेरी बगल से निकल गयी। सिर्फ उसकी ठडी सासो से मेरी सासे छुई, और बस

"मै कमाडर के कमरे से बिल्कुल सधे हुए कदमो से निकला, पर बाहर निकलते ही कभी इधर लडखडाया तो कभी उधर। गिरते-पडते बैरक मे पहुचा, अन्दर घुमा, सीमेट के फर्श पर ढह पडा और बेहोश हो गया। फिर अभी अधेरा ही था कि साथियो ने मुझे जगाया, 'बताओ तो कि हुआ क्या?' इस पर मुझे कमाडर के यहा की पूरी घटना याद आयी और मैने उन्हे सारा किस्सा सुनाया। 'पर रोटी हम आपस मे किस तरह बाटेगे?' कापती हुई आवाज मे मेरी बगल के पटरे के आदमी ने पूछा। मैने कहा, 'सभी को बराबर-बराबर।' फिर हमने उजाला होने की राह देखी और उजाला होने पर डोरे के एक टुकडे से रोटी और चरबी काटी। हर एक को दियासलाई की डिबिया के बराबर रोटी मिली और एक कण भी बरबाद नही किया गया। जहा तक चरबी का सवाल है, वह तो थी ही इतनी कि आदमी के होठ भर चिकने हो सके। लेकिन उससे भी हमने सभी के लिये बराबर हिस्से किये।

"जल्दी ही जर्मनो ने हममे से सबसे मजबूत ३०० लोगो को एक दलदल सुखाने के काम पर लगा दिया और फिर हम रूहर प्रदेश की खानो मे काम करने के लिये भेज दिये गये। वही मै १६४४ तक रहा। उस समय तक हमारी फौजो ने जर्मनो की थोडी अक्ल ठिकाने कर दी थी और फासिस्टो ने हम कैदियो की उपेक्षा करना बद कर दिया था।

"एक दिन जर्मनो ने हमे यानी सुबह की पाली के पूरे के पूरे

लोगो को एक कतार मे खडा किया और दौरे पर आये किसी ओबर-लेफ्टिनेट ने दुभाषिये के सहारे हमसे कहा, 'तुममे से जो फौज मे या लडाई के पहले मोटर-ड्राइवर रहे हो, वे एक कदम आगे आ जाये।' तो हममे से सात ड्राइवर आगे आ गये। जर्मनो ने हमे पुराने ओवरआल दिये और गार्डो की निगरानी मे वे हमे पॉट्सडम ले आये।

"वहा पहुचे तो हमे अलग कर दिया गया। मुझे 'टोड्त' मे काम करने के लिये भेजा गया। सडके बनाने और हिफाजत के कामो से सम्बन्ध रखनेवाली संस्था को जर्मन इसी नाम से बुलाते थे।

"तो 'टोड्त' मे मै जर्मन इजीनियरो के एक मेजर की 'ओपेल-एडमीरल' मोटर चलाने लगा। यह समझो कि वह फासिस्ट बेहद मोटा था! ठिगना-सा, जितना लम्बा उतना ही चौडा, पेट था कि बिल्कुल घडा, पीछे का हिस्सा बिल्कुल छिनालो जैसा। सामने लटकती हुई ठोढियो की गिनती एक नही तीन, गरदन के पीछे चारो ओर झूलती हुई मास की तीन परते। मेरे ख्याल मे बदन की शुद्ध चरबी का वजन कुछ नही तो पचास किलोग्राम होगा। चलता तो इजन की तरह हवा छोडता और हाफता और खाने बैठ जाये तो समझो कि भगवान ही खैर करे! सारा दिन मुह चलाता रहता और अपने फ्लास्क से उडेल-उडेलकर ब्राडी के बडे-बडे घूट घोटता रहता। जब-तब थोडा-बहुत हिस्सा मेरा भी लग जाता। वह सडक के किनारे मोटर रुकवाता, थोडी-सी सासेज और पनीर काटता और गिलास चढाता। कभी रग मे होता तो कुत्ते की तरह एक टुकडा मेरी ओर भी लोका देता। हा, हाथ मे सीधे कभी न देता। कभी नही – इसे तो वह अपनी शान के खिलाफ बात समझता। लेकिन जो भी हो, कैम्प से इस जिन्दगी का कोई मुकाबला नही था और धीरे-धीरे मै आदमी जैसा नजर आने लगा – यहा तक कि कुछ-कुछ मास भी हड्डियो पर चढने लगा।

"लगभग दो हफ्तो तक मै मेजर को पॉट्सडम से बर्लिन ले जाता और बर्लिन से पॉट्सडम वापस लाता रहा। इसके बाद वह हमारी फौजो के विरुद्ध किलेबन्दी के सिलसिले मे आगे के मोर्चे पर भेज दिया गया। फिर तो मेरी पलको की नीद हवा हो गयी। मै सारी रात यही सोचता रहता कि किस तरह यहा से भागकर अपने साथियो से जा मिलू, कैसे अपने देश वापस पहुचू!

"हम पोलोत्स्क नगर गये। वहा दो साल मे पहली बार अपनी

तोपों के धड़ाके मेरे कानों में पड़े। जानते हो, भाई, मेरा दिल कैसे खुशी से उछला था? यों समझो, दोस्त, कि इरीना के साथ शुरू की मुलाक़ातों में भी दिल इस तरह कभी न धड़का था! लड़ाई पोलोत्स्क से कोई १८ किलोमीटर के फ़ासले पर पूरब में चल रही थी। शहर के जर्मन बुरी तरह बौखलाये हुए थे, बुरी तरह घबराये हुए थे। ऐसे में मेरे घड़े-से पेटवाले अफ़सर ने पीने का हिसाब बढ़ाना शुरू किया तो बढ़ाता ही चला गया। दिन में वह मोटर में इधर-उधर चक्कर लगाता और किलेबंदी के सिलसिले में हिदायतें देता और रात को अकेले बैठकर ढालता। नतीजा यह कि वह फूलता चला गया और उसकी आंखों के नीचे बड़ी-बड़ी थैलियां लटकने लगीं ..

"मैंने सोचा, 'अब और देर नहीं करनी चाहिये, अब मेरा वक़्त आयां है! लेकिन अकेले मुझे यहां से बचकर नहीं जाना है, इस मोटे तोंदल को भी साथ ले जाना है, हमारे लोगों के काम आयेगा!'

"तो खंडहरों में मुझे दो किलोग्राम का बटखरा मिल गया। मैंने उसके चारों तरफ़ चिथड़े लपेट दिये ताकि इससे वार करने पर खून न निकले। फिर सड़क पर टेलीफ़ोन का एक लम्बा-सा तार भी मेरे हाथ लग गया, इस तरह मैंने ज़रूरत की हर चीज़ तैयार कर ली और अगली सीट के नीचे छिपा दी। जर्मनों को अलविदा कहने के दो दिन पहले, एक दिन शाम को, मैं मोटर में पेट्रोल डलवाकर लौट रहा था कि मैंने एक छोटे जर्मन अफ़सर को नशे में धुत्त दीवार को थामकर चलते देखा। बस तो मैं उसके पास पहुंचा, उसे एक टूटी हुई इमारत में ले गया, उसकी वर्दी और सिर की टोपी उतार ली। यह सब भी मैंने सीट के नीचे छिपा दिया। अब तैयारी पूरी हो गयी।

"२६ जून की सुबह को मेरे मेजर ने मुझे शहर से बाहर त्रोस्नीत्सा की तरफ़ ले चलने को कहा। वह वहां के रक्षा-सम्बन्धी निर्माण-कार्यों का संचालक था। हम मोटर में बैठे और रवाना हो गये। मेजर पीछे की सीट पर बैठा चैन से ऊंघने लगा और मेरा कलेजा उछलकर बाहर आने-आने को होने लगा। मैंने मोटर तेज़ चलायी, पर शहर के बाहर पहुंचकर रफ़्तार धीमी कर दी। फिर गाड़ी रोकी, बाहर निकला और चारों ओर नज़र दौड़ायी। पीछे बहुत दूर दो ट्रकें धीरे-धीरे आती देखीं। मैंने अपना वज़नी बटखरा निकाला और दरवाज़ा पूरा खोला। देखा कि घड़े-सी तोंदवाला मेजर सीट पर पड़ा इस तरह खर्राटे ले

रहा है, जैसे कि उसकी बीवी उसकी बग़ल में हो। बस, तो मैंने आव देखा न ताव, और बटखरा उसकी बायी कनपटी पर दे मारा। उसका सिर उसके सीने पर झूल गया। मामला पक्का करने के लिये मैंने एक चोट फिर की। पर मैं उमे मारना नही चाहता था। मैं उसे ज़िन्दा अपने माथ ले जाना चाहता था, हमारे लोग उससे कितनी ही काम की चीज़ें जान सकते थे। हा, तो, मैंने उसके केस मे पिस्तौल निकाली और उसे अपनी जेब मे डाल लिया। फिर मैंने पिछली सीट के पीछे एक ब्रैकेट घुसेडा और टेलीफ़ोन का तार मेजर की गर्दन के चारो ओर लपेटकर ब्रैकेट से बाध दिया ताकि मेरे तेजी से मोटर चलाने पर वह लुढके नही। अब मैंने जर्मन वर्दी डाटी, टोपी लगायी और मोटर सीधे उस ओर बढ़ायी जिस ओर धरती हाहाकार कर रही थी और लडाई चल रही थी।

"मैंने जर्मन मोर्चे की मीमा तोपो की भूमिगत चौकियो के बीच मे पार की। एक खाई से सबमशीनगनर्गों की एक टोली ने सिर बाहर निकाला। मैंने जान-बूझकर मोटर धीमी कर दी, ताकि वे देख लें कि मेरे साथ एक मेजर है। इस पर वे चीखने-चिल्लाने और हाथ हिला-हिलाकर मुझे आगे जाने से रोकने लगे, लेकिन मैं ऐसे बना जैसे कि कुछ समझ ही नही रहा, और मैंने मोटर अस्सी की रफ़्तार पर छोड़ दी। जब तक जर्मनों ने असलियत ममझी और गोली चलायी तब तक मै बिल्कुल ख़रगोश की तरह गढों से बचता-बचाता अधिकारहीन इलाक़े मे पहुंच गया।

'यहां जर्मन पीछे मे गोलिया बरमाते रहे कि आगे से मेरे अपने माथी तिलमिला उठे और मुझ पर निशाना माधने लगे। चार गोलिया विंड-स्क्रीन के पार हो गयी। उन्होंने रेडियेटर उड़ा दिया . पर पास ही एक झील की बग़ल में मुझे एक छोटा-सा जंगल नज़र आया और अपने कुछ साथी मोटर की ओर दौड़ते दीखे। मैंने गाड़ी जंगल की ओर बढ़ा दी। वहां पहुचकर दरवाज़ा सपाट खोल दिया और धरती पर लेटकर उसे चूमा। इस समय सांस मुश्किल से ही आती-जाती रही...

"जैमी मैंने पहले कभी नही देखी थी, वर्दी पर लगी ख़ाकी रंग की स्कंधिकाओंवाला एक जवान सबसे पहले मेरे पास आया और दांत निकालते हुए बोला, 'हा, तो, जर्मन शैतान, रास्ता भूल गया है तू?' मैंने झटके से जर्मन वर्दी चीर डाली, टोपी को पैरों के नीचे रौंदा

और उससे बोला, 'प्यारे-प्यारे, जवान बच्चे! मेरे राजा बेटे! मै और जर्मन वोरोनेज मे पैदा हुआ, वही बडा हुआ! मै तो फौजी कैदी रहा हू, समझे? और सुनो, अब उस मोटे को मोटर से बाहर निकालो, उसका ब्रीफ-केस अपने कब्जे मे करो और मुझे अपने कमाडर के पास ले जाओ।'

"मैने उन्हे पिस्तौल सौप दी और फिर शाम तक एक आदमी से दूसरे आदमी के पास भेजा जाता रहा। आखिर शाम को डिविजन के कर्नल-कमाडर के सामने पेश होने को कहा गया। उस समय तक मुझे खिलाया-पिलाया और नहलाया-धुलाया जा चुका था। तरह-तरह के सवाल पूछे जा चुके थे और नयी वर्दी मिल चुकी थी। इसलिये मै कर्नल की खाई मे गया तो कायदे से कायदे के कपडो मे, तन और मन मे निर्मल। कर्नल अपनी कुर्सी से उठा, सभी अफसरो के सामने उसने मुझे अपने सीने से लगाया और बोला, 'फौजी जो तोहफा तुमने हमे लाकर दिया है, उसके लिये बहुत-बहुत धन्यवाद! तुम्हारे मेजर और उसके ब्रीफ-केस मे हमे इतनी सूचना मिली है जितनी हमे मोर्चे पर बन्दी बनाये जानेवाले बीस जर्मनो से भी न मिलती। मै सरकारी सम्मान और पदक के लिये तुम्हारी सिफारिश करूगा। कर्नल के शब्दो और स्नेह ने मुझे इस तरह द्रवित किया कि हजार न चाहने पर भी मेरे होठ थरथरा उठे। मै सिर्फ इतना ही कह पाया 'साथी कर्नल, मेरी प्रार्थना है कि मुझे राइफल यूनिट मे शामिल कर लिया जाये।

'पर कर्नल हसा और मेरा कधा थपथपाया, तुम भला लडोगे क्या जब सीधे खडे भी नही हो सकते? मै तुम्हे अभी अस्पताल भेज रहा हू। वहा तुम्हारा जरूरी इलाज होगा और तुम्हे खिला-पिलाकर कुछ तगडा किया जायेगा। इसके बाद तुम एक महीने की छुट्टी पर घर जाकर अपने परिवार के लोगो से मिलोगे। जब वापस आओगे तब तय करेगे कि तुम्हे कहा भेजा जाये।'

"कर्नल और वहा उपस्थित सभी अफसरो ने मुझसे हाथ मिलाये और दिल से अलविदा कही। मै जब बाहर आया तो बहुत उत्तेजित और द्रवित था क्योकि युद्ध के कैदी के रूप मे पिछले दो वर्षो मे बिल्कुल भूल ही गया था कि इन्सान के साथ इन्सान का सा व्यवहार कैसा होता है। और, भाई, जरा गौर करना, एक जमाने तक मेरा

यह हाल रहा कि जब अपने ऊचे अफसरो मे बातचीत करता तो गर्दन कधो के बीच छिपाता रहता। हर वक्त यही खटका लगा रहता कि अब उनका हाथ उठा, कि अब उठा। हा, तो इस तरह का बना दिया गया था हमे फासिस्ट कैम्पो मे

"अस्पताल मे पहुचते ही मैंने इरीना को एक पत्र लिखा और इने-गिने शब्दो मे पूरी दास्तान दोहरायी कि मै कैसे कैदी बना और कैसे जर्मन मेजर को अपने साथ लिये हुए जान बचाकर भाग निकला। बच्चो की तरह डीग हाकने की मुझे यह क्या सूझी थी, कहना मुश्किल है। मै बिल्कुल सब्र से काम नही ले पाया और यह तक भी लिख दिया कि कर्नल ने पदक के लिये मेरे नाम की सिफारिश करने का वायदा किया है

"फिर दो हफ्तो तक मै सिर्फ सोना और खाता-पीता रहा। अस्पताल मे लोग एकबारगी खाना कम ही देते, पर दिन मे कई बार खिलाते। डाक्टर ने कहा कि अगर मुझे मनमाने ढग से खाने को दिया जाये तो मै मर जाऊगा। मै खूब स्वस्थ हो गया। लेकिन दो हफ्ते बाद तो एक कौर तक मुह मे डालने को मेरा मन न होता। इस बीच घर से कोई खत नही आया और मुझे यह मानना ही होगा कि मेरा मन बहुत परेशान रहने लगा। अब न खाने का ध्यान आता और न सोने का। तरह-तरह के बुरे ख्याल दिमाग मे चक्कर काटते रहते ऐसे मे तीसरे सप्ताह वोरोनेज से खत आया, पर पत्र इरीना का न था, बल्कि बढई का काम करनेवाले मेरे एक पडोसी इवान तिमोफेयेविच का था। ईश्वर न करे कि किसी को कभी ऐसा खत मिले! पडोसी ने लिखा था 'जर्मनो ने जून १६४२ मे हवाई जहाजो के कारखाने पर बमबारी की और एक बम सीधे तुम्हारे घर पर गिरा। जब बम गिरा तो इरीना और बच्चिया घर पर ही थी बाद मे हमे उनके नाम-निशान तक का पता न चला। जहा तुम्हारा मकान था, वहा गहरा गढा-सा बन गया ' पहली बार तो हिम्मत जवाब दे गयी और मै वह खत पूरा पढ नही सका। आखो के आगे अधेरा छा गया और दिल एकदम मुर्दा-सा हो गया और लगा कि बस अब खेल खत्म! मै पलग पर लेटा रहा और जब थोडी-सी हिम्मत और शक्ति लौटी तो मैने खत आखिर तक पढा। मेरे पडोसी ने लिखा था कि बम के गिरने के समय अनातोली शहर मे था। शाम को घर आया तो

उसने वहां गहरा गढ़ा देखा। वह उसी रात को शहर लौट गया। जाने के पहले उसने पड़ोसी से सिर्फ़ इतना कहा कि नाम लिखाकर लाम पर जा रहा है... और बस।

"जब मेरा दिल ज़रा क़ाबू में आया और तबीयत सम्भली तो मुझे याद आया कि स्टेशन पर मुझसे विदा होते समय इरीना कैसे मेरे साथ लिपटी रही थी। उसके औरत के दिल ने ज़रूर तभी उसे यह बता दिया होगा कि अब हम इस दुनिया में एक-दूसरे से कभी मिलेंगे नही। और मैंने उसे एक ओर को धकेल दिया था... कभी मेरा परिवार था, मेरा अपना घर था और इस परिवार और इस घर को बसाने मे सालों-साल लगे थे, पर एक झटके मे ही सब कुछ बरबाद हो गया था और मै अकेला रह गया था। मै सोचने लगा— मेरी यह अटपटी ज़िन्दगी क्या एक सपना, एक ख्वाब तो नहीं है? बेशक सपना ही है! जब मैं क़ैदी था तो हर रात को इरीना और बच्चे मेरे सपनों मे आते थे और मैं उन्हे यह कहकर ढाढ़स बधाने की कोशिश करता था कि तुम लोग दुखी न हो, मन छोटा न करो, मै जल्दी ही घर आऊगा, मैं मज़बूत आदमी हूं, सब कुछ सह सकता हू, हम ज़रूर एक न एक दिन फिर एक साथ होंगे . यानी दो साल तक मैं बराबर मुर्दो से बाते करता रहा था?!"

वह एक मिनट तक चुप रहा, फिर बदली हुई, धीमी आवाज़ मे रुक-रुककर बोला:

"आओ, भाई, एक सिगरेट हो जाये . जाने क्यो ऐसा लगता है जैसे कि कोई मेरा गला घोट रहा है।"

हमने सिगरेटें जलायी। बाढ़ की लपेट मे आये हुए जगल को गुंजाता हुआ कोई कठफोड़वा खट-खट कर रहा था। गर्म हवा आल्डेरों की सूखी पत्तियों को अब भी सरसरा रही थी। आसमान में बहुत ऊपर, नावों के कसे हुए दूधिया पाल जैसे बादल अब भी नीलम के बीच तैरते हुए सामने से गुज़र रहे थे। उदासी भरे मौन के इन क्षणों में वसन्त के विशद आगमन के लिये, जीवन में प्राण की अमर प्रतिष्ठा के लिये तैयार होता अपार जगत मुझे बिल्कुल दूसरा ही लगा।

चुप्पी जैसे काटने लगी, और मैंने पूछा:

"फिर... फिर क्या हुआ?"

अपनी कहानी कहनेवाले ने बेमन से जवाब दिया, "फिर... फिर

क्या हुआ? फिर मुझे कर्नल ने एक महीने की छुट्टी दे दी। एक सप्ताह बाद मैं वोरोनेज जा पहुंचा और पैदल उस जगह गया जहा कभी अपने परिवार के साथ रहता था। वहां जंग लगे पानी का एक बड़ा गढ़ा नज़र आया। हर ओर उगी हुई जंगली झाडियां कमर-कमर तक ऊची थी... हर तरफ़ गहरा सन्नाटा था, वीरानगी थी – क़ब्रगाह की तरह का सा सन्नाटा। भाई मेरे, उस समय कैसा लगा, कैसी तबीयत परेशान हुई, तुम्हें बतला नही सकता मैं! मैं वहा खडा रहा, भारी मन लिये हुए। इसके बाद मैं स्टेशन लौट आया। वहा तो एक घंटे रहना भी दुशवार हो गया। नतीजा यह कि उसी दिन डिविजन में वापस आ गया।

"लेकिन तीन महीने बाद मेरी जिन्दगी मे खुशी का एक क्षण अनजाने ही कौंधा, जैसे बादलो के बीच धूप की एक किरण। मुझे अनातोली की खोज-खबर मिली। उसने दूसरे मोर्चे से मेरे नाम खत भेजा। हमारे उसी पडोसी मे उसे मेरा पता मिल गया था। पता चला कि शुरू-शुरू में उसने तोपखाने के कालेज में प्रशिक्षण पाया और गणित में उसकी विशेष योग्यता उसके खामे दाहिने आयी। एक साल बाद उसने शानदार अक प्राप्त करके इम्तहान पास किया और लडाई पर चला गया। उसने लिखा कि उसे कप्तान का ओहदा मिल गया है, अब वह '४५' के एक तोपखाने की कमान सम्भाले है और अब तक उसे छह तमगे और पदक मिल चुके है। मतलब यह कि उसने अपने बूढ़े बाप को बहुत पीछे छोड़ दिया था और एक बार फिर मुझे उस पर बड़ा अभिमान हुआ! तुम जो चाहे सो कहो, पर यह कि मेरा अपना बेटा कप्तान और एक तोपखाने का कमाडर हो गया था, यह कोई मामूली बात नही थी! इतना ही नही, वह बहुत-से पदक भी पा चुका था। इससे क्या फ़र्क़ पड़ता है कि उसका बाप 'स्टूडीबेकर' लारी में तोप के गोले और ऐसी ही दूसरी चीज़ें इधर-उधर पहुंचाता फिरता था। उसके बाप का ज़माना गुज़र चुका था, लेकिन उसकी, मेरे उस कप्तान की तो सारी ज़िन्दगी उसके आगे पड़ी थी।

"और अब रातों को मैं बूढ़ों के से सपने देखने लगा कि लड़ाई खत्म होते ही मैं अपने बेटे की शादी करूंगा और नये परिवार के साथ रहूंगा। थोड़ी-बहुत बढ़ईगीरी और बच्चों की देखभाल करूंगा – यानी वह सब करूगा जो कोई भी बूढ़ा आदमी करता है। लेकिन ये सारे

सपने भी महज सपने ही रहे। जाडे मे हमारी फौजे बराबर आगे ही आगे बढती गयी और एक-दूसरे से चिट्ठी-पत्री करने को समय न मिला। पर लडाई के खात्मे के करीब यानी बर्लिन के बिल्कुल पास से मैने एक दिन सुबह अनातोली को एक खत लिखा और जवाब दूसरे ही दिन मिला। हुआ यह कि हम दोनो ही अलग-अलग रास्तो से जर्मनी की राजधानी तक पहुच गये थे और एक-दूसरे के बहुत ही पास थे। अब मुलाकात होने तक का एक-एक पल भारी हो गया। खैर, तो वह क्षण भी आया ऐन नौ मई को विजय दिवस की सुबह को मेरे अनातोली को एक जर्मन निशानची ने मार डाला

"दोपहर के बाद मुझे कम्पनी-कमाडर के सामने बुलाया गया। मैंने उसके साथ तोपखाने के एक अनजाने लेफ्टिनेट-कर्नल को बैठे देखा। मै कमरे के अन्दर घुसा तो वह इस तरह उठकर खडा हो गया, जैसे कि अपने से बडे किसी अफसर से मिल रहा हो। मेरे कम्पनी-कमाडर ने कहा, 'यह तुमसे मिलने आये है, सोकोलोव,' और खुद खिडकी की तरफ मुह करके खडा हो गया। मुझे तो जैसे बिजली का झटका-सा लगा मै समझ गया कि दुर्भाग्य की कोई बिजली टूटी है। वह लेफ्टिनेट-कर्नल मेरे सामने आया और धीरे-से बोला 'हिम्मत से काम लीजिये, बापू! आपका बेटा कप्तान सोकोलोव आज सुबह शहीद हो गया। आइये, मेरे साथ चलिये!

"मै लडखडाया पर मैंने अपने पैर साधे। फिर मलबे से अटी सडको पर उस लेफ्टिनेट-कर्नल के साथ उसकी बडी मोटर मे बैठकर मै जैसे गया, वह आज तक सपने-सा लगता है। सीधी लाइन मे खडे फौजियो और लाल मखमल से ढके ताबूत की आज मुझे महज धुधली-धुधली-सी याद है। पर भाई मेरे, मेरा अनातोली आज भी उसी तरह मेरी निगाहो के सामने है, जैसे तुम! मै ताबूत के पास गया। हा मेरी आखो के सामने मेरा बेटा था और फिर भी जैसे वह मेरा बेटा नही था। मेरा बेटा अनातोली तो मेरे सामने सदा बच्चे की शक्ल मे आया था—होठो पर हमेशा मुस्कान, कधे सकरे और पतली गर्दन की उभरी हुई कठी। लेकिन यहा तो मेरे सामने एक पूरा जवान था—कधे चौडे, देखने मे सुन्दर, आखे अधमुदी जैसे कि मुझे न देखते हुए कही दूर, अनजाने मे कुछ देख रहा हो। महज एक चीज ज्यो की त्यो थी और वह थी मेरे बेटे के होठो के कोनो पर हल्की-सी मुस्कान।

यही थी वह मुस्कान जिससे मै परिचित था मो, मैंने उसे चूमा और हटकर एक किनारे खडा हो गया। लेफ्टिनेट-कर्नल ने भाषण दिया। मेरे अनातोली के मित्र अपने आसू पोछ रहे थे, पर मेरी आखो मे एक भी आसू न आया। मुझे लगता है कि मेरे आसू मेरे दिल मे ही सूखकर रह गये थे। शायद इसीलिये मेरा दिल आज तक बुरी तरह टीसता है?

"मैंने अपनी आखिरी खुशी और उम्मीद उस परायी जर्मन धरती मे दफना दी। तोपो ने गोले दागकर अपने कमाडर को लम्बे सफर के लिये विदा दी। मुझे अपने अन्दर की कोई चीज जैसे दम तोडती-सी लगी मै अपने यूनिट मे वापस आया तो एकदम लुटा-लुटा-सा। इसके बाद जल्द ही मुझे सेना मे छुट्टी मिल गयी। जाऊ तो कहा? वोरोनेज? मन ने कहा नही हर्गिज नही! मुझे अपने एक दोस्त की याद आयी – वह लडाई मे अपाहिज होकर जाडे मे ही घर लौटा था और उर्यूपिन्स्क नगर मे रहता था। उसने एक बार मुझे अपने पास आने को कहा भी था -- तो बस, मै रवाना हो गया।

मेरे दोस्त और उसकी बीवी का कोई बच्चा न था और शहर के सिरे पर उनका छोटा-सा निजी घर था। दोस्त को अपाहिजी की पेशन मिलती थी, पर वह एक ट्रक-डिपो मे ड्राइवर का काम करता था। सो, मुझे भी वही काम मिल गया। मेरे दोस्त ने मुझे भी सिर छिपाने की जगह दे दी। हम ट्रको पर तरह-तरह के सामान लादकर आस-पास के इलाको मे पहुचाते। पतझड मे हम अनाज की ढुलाई करते। तो यही मेरा परिचय अपने नये बेटे से हुआ, यानी इस बच्चे से हुआ जो इस समय वहा बालू मे खेल रहा है।

"हम ड्राइवर लोग जब कोई लम्बा चक्कर लगाकर लौटते हैं तो सबसे पहले किसी चायखाने मे जाते है, मुह मे कुछ डालते है, और थकान मिटाने के लिये एक गिलास वोद्का गले के नीचे उतारते है। मै यह मानता हू कि उस वक्त तक यह मेरी खराब-सी आदत हो गयी थी सो, मै एक दिन चायखाने मे गया तो मैंने इस लडके को वहा देखा और दूसरे दिन गया तो इसे फिर वहा पाया। नन्हा-मुन्ना-सा यह बच्चा अजीब फटेहाल मे दीखा – चेहरा तरबूज के रस और धूल-गर्द से सना हुआ ऐसा गदा कि कहने की बात नही, चेहरे पर अस्त-व्यस्त बाल लेकिन आखे ऐसी जैसे कि बरखा-बूदी के बाद रात के सितारे!

बात बड़ी बेतुकी-सी लग सकती है, पर वह मेरे मन में ऐसा उतर गया कि न देखता उसे तो जैसे कोई कमी-सी खटकती। यही नही, मैं अपना काम जल्दी-जल्दी पूरा करता ताकि चायखाने पहुंचूं और जल्दी से जल्दी उसे एक नज़र देखूं। यह बच्चा उस चायखाने में ही खाता यानी जो कोई जो कुछ दे देता, वही इसका खाना हो जाता।

"चौथे दिन मैं अपनी ट्रक में अनाज भरे सीधा चायखाने आया और मैंने अपनी ट्रक वहां रोकी। बच्चा सीढ़ी पर बैठा पैर हिलाता नज़र आया। लड़का खासा भूखा है, यह बात उसके चेहरे पर एक निगाह डालते ही साफ़ हो गयी। मैंने खिड़की से बाहर सिर निकाला और चिल्लाकर कहा, 'ए वान्या, इधर आओ... चढ़ आओ ट्रक पर . मैं तुम्हे एलीवेटर तक ले चलूंगा। फिर हम यहां लौटेगे और खायें-पियेंगे।' लडका मेरी आवाज से चौंक गया, फिर सीढ़ियो से कूदा और ट्रक के पायदान पर चढ़ा। उसकी सितारों जैसी आंखें अचरज से फैल गयी। वह धीरे-से बोला, 'तुम्हे कैसे मालूम है कि मेरा नाम वान्या है?' लड़का आंखें फाड़कर मेरे जवाब का इन्तज़ार करने लगा। मैंने कहा, 'भैये, मेरी गिनती दुनिया के उन लोगो में है जो सभी कुछ जानते है।'

"लडका घूमकर दायी ओर आ गया। मैने दरवाज़ा खोलकर उसे अपनी बग़ल में बिठा लिया और हम चल दिये। लडका बड़ा ही जिन्दा-दिल लगा, लेकिन यकायक चुप हो गया और रह-रहकर अपनी लम्बी. छल्लेदार बरौनियो के नीचे से मुझे देखता और आह भरता रहा। सोचो कि इतना नन्हा-सा बच्चा और आहे भरे! मैंने पूछा, 'तुम्हारे बापू कहा है, वान्या?' बहुत धीमी आवाज़ में जवाब मिला, 'लड़ाई के मोर्चे पर मारे गये।'—'और तुम्हारी मा?'—'मा . हम गाड़ी मे सफ़र कर रहे थे कि एक बम आ गिरा और वह मर गयी।'—'गाड़ी में कहां से आ रहे थे तुम?'—'मालूम नही, मुझे याद नही .'—'यहा तुम्हारा कोई रिश्तेदार नही है?'—'नही, कोई भी नही है।'—'रात को तुम सोते कहां हो?'—'कही भी।'

"गर्म-गर्म आंसू छलकने को बेकरार होने लगे। मैंने तुरन्त ही फ़ैसला कर लिया कि मुझे क्या करना है। क्या जरूरत है हमें अकेले-अकेले और अलग-अलग यातनायें भोगने की! मैं इसे बेटा बना लेता हूं! . बस, तो इस ख्याल के साथ ही मन जैसे हल्का हो गया और

दिल मे जैसे एक तरह का उजाला हो गया। मै उसकी तरफ झुका और मैने बहुत धीरे-से पूछा, 'वान्या, तुम जानते हो कि मै कौन हू?' उसने गहरी सास लेते हुए पूछा, 'कौन हो तुम?'—'मै तुम्हारा बापू हू,' मैने पहले की तरह धीरे-से कहा।

"भगवान ही जानता है कि इसके बाद क्या हुआ! वह मेरी गर्दन से आ लिपटा, मेरे गाल, होठ और माथा चूमने लगा और गानेवाली चिडिया की तरह इतनी जोर से चहचहाने लगा कि केबिन उसकी आवाज से गूज उठी, 'मेरे प्यारे बापू! मै जानता था! मै जानता था कि तुम मुझे खोज लोगे! मै जानता था कि चाहे कुछ भी क्यो न हो जाये, तुम मुझे खोजकर ही दम लोगे! मै कब से तुम्हारी राह देखता रहा हू!' वह मेरे बदन से सट आया। वह हवा मे लहराती घास की पत्ती की तरह काप रहा था। मेरी आखे धुधला गयी और मै भी कापने लगा, हाथ थरथराने लगे मै स्टीयरिग कैसे साधे रहा, कह नही सकता! फिर भी गाडी सडक से नीचे उतर गयी और इजन बन्द हो गया। मेरी आखो से जब तक धुध हट नही गयी मुझे गाडी चलाते हुए डर महसूस हुआ कि कही किसी को कुचल न दू। हम कोई पाच मिनट तक वहा बैठे रहे और मेरा बेटा मेरे साथ बेहद सटा हुआ, बिल्कुल खामोश और सिर्फ कापता रहा। मैने अपना दाया हाथ उसके कधे पर रखा उसे प्यार से कसा, बाये हाथ से गाडी घुमायी और अपने घर वापस आ गया। तब तो एलीवेटर तक जाने का ख्याल ही न रहा।

"घर पहुचने पर मैने गाडी दरवाजे पर रोकी, अपने नये बेटे को गोदी मे उठाया और अन्दर ले आया। वह मेरे गले मे झूल गया और बस वही चिपककर रह गया। यही नही उसने अपना गाल मेरी बढी दाढीवाले गाल से चिपका लिया और फिर वही बनाये रखा। इसी रूप मे मै उसे घर लाया। मेरा मित्र और उसकी पत्नी दोनो घर पर थे। मैने उन्हे आखो से इशारे किये और उत्साह और खुशी से भरकर बोला, आखिर अपने नन्हे-मुन्ने वान्या को खोज ही लिया मैने! ये रहे हम दोनो, देखते हो!' मेरे सन्तानहीन मित्र-दम्पति तुरत ही सारी बात समझ गये और इधर-उधर दौडने-धूपने लगे। मगर बेटा था कि मुझसे चिपटा हुआ था। पर किसी तरह मैने उसे बहलाया। मैने उसके हाथ साबुन मे धोये और उसे खाने की मेज पर ला बिठाया।

मेरे मित्र की पत्नी ने एक तश्तरी शोरबा तुरत ही उसके सामने ला रखा और जब उसने बच्चे को शोरबे पर टूटते देखा तो उसकी आखे भर आयी। वह खडी पेशबन्द से अपने आसू पोछती रही। मेरे वान्या ने उसे रोते देखा तो वह दौडकर उसके पास पहुचा, स्कर्ट का सिरा खीचते हुए बोला, 'तुम रो क्यो रही हो, चाची? बापू ने मुझे चायखाने के पास पाया। इस पर सब को खुश होना चाहिये और तुम रो रही हो!' पर वह तो अब फूटकर रो पडी और फिर उसकी आखे ऐसी बरसी, ऐसी बरसी कि तन-बदन आसुओ से तर-ब-तर हो गया!

"खाने के बाद मै उसे नाई के पास ले गया और मैंने उसके बाल कटवाये। फिर घर वापस लाकर मैने उसे टब मे नहलाया और साफ चादर मे लपेटा। इसके बाद उसने मेरे गले मे बाहे डाली और उसी हालत मे सो गया। मैने उसे धीरे-से पलग पर लिटाया, ट्रक ले जाकर अनाज एलीवेटर मे खाली किया, ट्रक डिपो मे पहुचायी और जल्दी-जल्दी दूकानो की ओर बढा। यहा मैने अपने बेटे के लिये सर्ज का पतलून, कमीज, एक जोडी सैडल और तिनकोवाला एक टोप खरीदा। सभी चीजे गलत साइज की निकली और माल की निगाह से भी कोई बहुत अच्छी न रही। पतलून देखकर तो मेरे दोस्त की पत्नी ने मुझे डाट भी पिलायी, 'तुम्हारा दिमाग खराब है! ऐसी गरमी मे बच्चे को सर्ज का पतलून पहनाओगे!' यही नही, दूसरे ही मिनट उसने सिलायी की मशीन सामने रखी, सन्दूक उलटा-पलटा, कपडा निकाला और मेरे वान्या के लिये देखते-देखते सूती पतलून और एक सफेद कमीज सीकर तैयार कर दी। रात हुई तो मैंने उसे अपने साथ सुलाया और एक जमाने के बाद पहली बार मै चैन से सोया। वैसे रात मे मै कोई चार बार जगा। बच्चा हल्की-हल्की सासे लेता पत्तियो के नीचे बसेरा लेती गौरैया की तरह मेरी बाहो मे बधा सोता रहा। दोस्त, मेरे पास शब्द नही कि मै तुम्हे बतलाऊ कि मुझे कैसा और कितना सुख मिला! मैने कोशिश की कि हिलू-डुलू तक नही, कि कही बच्चे की नीद न टूट जाये। पर यह कोशिश बेकार रही। बीच-बीच मे मै बहुत धीरे-से उठता, दियासलाई जलाता और उसके सिरहाने खडा उसे प्यार से देखता

"उजाला होने के जरा पहले मै जागा और समझ नही पाया कि क्यो मुझे घुटन-घुटन-सी लगी। पर जरा देर बाद ही मालूम हुआ कि

बेटे-साहब अपनी चादर से बाहर आ गये है, मेरे सीने पर पसरे हुए है और नन्हा-सा पैर मेरे गले पर टिकाये है। साथ सोता है तो परेशान बहुत करता है, पर अब आदी हो गया हू। वह साथ नही सोता तो मुझे जैसे उसकी कमी-सी खटकती है। रात को मै कभी उसे सोते हुए भर आख देखता हू, कभी उसके बाल सूघता हू और जैसे दिल का दर्द कम हो जाता है, तबीयत हल्की हो जाती है। मेरा दिल तो दर्द सहते-सहते पत्थर हो गया था, मेरे भाई

"शुरू-शुरू मे तो यह हुआ कि मै ट्रक चलाता तो वान्या मेरे साथ-साथ ही रहता। लेकिन फिर मुझे महसूस हुआ कि इस तरह काम चलने का नही। मेरी अकेली जान को भला जरूरत ही किस चीज की होनी थी? एक टुकडा रोटी, एक अदद प्याज और एक चुटकी नमक, फौजी आदमी के सारे दिन के लिये काफी। मगर जब लडका रहता तो बात ही दूसरी होती। कभी उसे दूध की जरूरत पडती तो कभी उसके लिये एक अडा उबाला जाना जरूरी होता और कुछ न कुछ गरम चीज खिलाना तो बिल्कुल जरूरी था। लेकिन मुझे तो अपना काम भी करना होता। इसलिये मैने कलेजा कडा किया और उसे अपने दोस्त की पत्नी की देखरेख मे छोडने लगा। खैर तो, वह सारे दिन रोता रहता और शाम को मुझसे मिलने एलीवेटर पर आ जाता और काफी रात गये तक मेरी राह देखता रहता।

"शुरू-शुरू मे लडके के मामले मे काफी तकलीफो का सामना करना पडा। एक बार हम उजाला रहते ही पलग पर जा लेटे। दिन भर बहुत कडी मेहनत की थी मैने। लेकिन हमेशा गौरैया की तरह चहकनेवाला लडका आज बहुत ही उदास और शात लगा। मैने पूछा, 'बेटे, क्या सोच रहे हो तुम?' उसने छत की तरफ देखते हुए पूछा, 'तुमने अपने चमडे के कोट का क्या किया, बापू?' मेरे पास चमडे का कोट जिन्दगी मे कभी रहा ही नही था! मैने जैसे-तैसे बहलाया। कहा, 'कोट वोरोनेज मे रह गया।' – और मुझे खोजने मे तुम्हे इतने दिन क्यो लगे?' – 'बेटे, मैने तुम्हे खोजा जर्मनी मे, पोलैड मे और पूरे बेलोरूस मे, लेकिन तुम मिले यहा उर्यूपिन्स्क मे।' – 'क्या उर्यूपिन्स्क जर्मनी की तुलना मे निकट है? क्या पोलैड हमारे घर से दूर है?' यानी इस तरह हम तब तक बाते करते रहे जब तक कि नीद नही आ गयी।

"लेकिन शायद, दोस्त, तुम यह समझते हो कि चमडे के कोट का

सवाल लड़के ने योंही, बिना किसी खास वजह के किया? नहीं, ऐसा नहीं है। उस सवाल के पीछे अच्छा-खासा एक कारण था। इसका मतलब यह है कि उसके असली पिता के पास कभी कोई चमड़े का कोट था और उसे उस चमड़े के कोट की याद हो आयी थी। बच्चों की याददाश्त गरमी के दिनों की बिजली की तरह होती है कि अभी-अभी कौंधी और हर चीज़ दमक उठी और अभी-अभी ग़ायब! यानी उस बच्चे की याददाश्त ने भी बिल्कुल गरमी की बिजली की कौंधों का सा काम किया।

"हो सकता है कि उर्यूपिन्स्क में हम एक साल और साथ रहते, पर नवम्बर में मैं एक दुर्घटना कर बैठा। एक दिन एक गाव के दलदली रास्ते से ट्रक ले जा रहा था कि गाड़ी किनारे के सिरे पर फिसल्नने लगी और रास्ते में एक गाय आ गयी और टक्कर खाकर गिर पड़ी। तो तुम जानो कि औरतों ने बड़ा शोर-गुल मचाया, तमाम लोग इधर-उधर से आ जमा हुए, होते-होते एक ट्रैफ़िक-इन्स्पेक्टर भी वहां आ पहुंचा। मैंने उससे कहा कि जाने दीजिये, मामूली-सी बात है लेकिन उसने मेरा लाइसेंस ले ही तो लिया। गाय उठी और पूंछ नचाती हुई गली में भाग गई, मगर मेरा लाइसेंस छिन गया। फिर जाड़े भर मैंने बढ़ई का काम किया। इसके बाद ड्राइवर का काम करनेवाले एक पुराने फ़ौजी दोस्त से मेरा पत्र-व्यवहार हुआ और उसने मुझे अपने यहां आने को कहा। मेरा वह मित्र आपके कशारी ज़िले में रहता है। उसने लिखा, 'आओ और मेरे साथ रहो। तुम एक साल यहां बढ़ई का काम करना, इसके बाद तुम्हें हमारे इलाक़े में ट्रक चलाने का नया लाइसेंस मिल जायेगा..' इस तरह हम यानी मैं और मेरा बेटा कशारी के लिये पैदल रवाना हुए।

"लेकिन दुर्घटना से इसका कोई सम्बन्ध नहीं। गाय का मामला न होता तो भी मैं उर्यूपिन्स्क तो छोड़ ही देता। मेरा दर्द मुझे एक जगह जमकर रहने नहीं देता। लेकिन अब, जब मेरा वान्या बड़ा हो जायेगा और स्कूल जाने लगेगा तब शायद कहीं पैर जमाना ही पड़ेगा। लेकिन फ़िलहाल तो हम रूसी धरती मंझा रहे हैं।"

"लड़का इस तरह चलते-चलते थकता नहीं?" मैंने पूछा।

"वह अपने पैरों से तो बहुत ही कम चलता है। अक्सर तो वह मेरी सवारी करता है। मैं उसे कंधों पर बैठा लेता हूं और जब वह अपने पैर सीधे करना चाहता है तो नीचे कूद पड़ता है और मेमने की

तरह उछलते हुए सडक के किनारे-किनारे दौड लगाता है। भाई मेरे, इसकी तो कोई बात नही। किसी तरह हम जिदगी काट सकते है, पर बात यह है कि मेरे दिल मे कही कोई खटक होती है और इस मशीन का पिस्टन बदलना जरूरी हो गया है कभी-कभी इस तरह टीस उठती है कि आखे चकराने लगती है। मुझे तो डर है कि कही किसी दिन सोते ही सोते मेरा दम निकल जायेगा और मेरा बेटा सहम जायेगा। फिर एक दूसरी मुसीबत भी है लगभग हर रात को सपनो मे मै अपने दिल के उन टुकडो को देखता हू, जो आज इस दुनिया मे नही है जिन्हे मै खो चुका हू। अक्सर तो ऐसे देखता हू जैसे कि मै किसी काटेदार तार के इस तरफ हू और वे आजाद उस तरफ मै अपनी इरीना और बच्चो से बाते करता हू, लेकिन ज्यो ही इस काटेदार तार को बीच से तोड फेकने की कोशिश करता हू, त्यो ही वे दूर चले जाते है, मेरी आखो के सामने ही जैसे विलुप्त हो जाते है और इस मामले मे एक बात और भी है दिन मे तो मै अपने को साधे रहता हू, इसलिये न तो पलके गीली होती है और न मुह से उफ निकलती है पर रात मे कभी-कभी आख खुल जाती है तो पाता हू कि मेरा तकिया आसुओ से तर है '

इसी समय नदी की ओर से मेरे मित्र की और पानी मे डाडो के छपाके की आवाज आयी।

अब करीबी दोस्त लगनेवाले उस अजनबी ने लकडी के कुदे की तरह सख्त अपना हाथ मेरी ओर बढाया

विदा, भाई हमेशा किस्मत तुम्हारा साथ दे!"

"तुम भी मेरी शुभकामनाये स्वीकारो तुम्हारा कशारी का सफर सफल हो!"

"धन्यवाद अरे बेटे, सुनते हो, चलो नाव मे चले।"

लडका दौडकर अपने पिता की बगल मे आ गया और उसकी रूईदार जैकेट का सिरा पकडकर नाव की ओर नन्हे-नन्हे कदम बढाने लगा।

दो अनाथ, बालू के दो कण लडाई के भयानक तूफान मे उडकर किन अजीब कहरो के बीच जा पडे आखिर अब उनका भविष्य क्या है? मेरे अन्तर ने पूरे विश्वास से कहा कि यह रूसी, यह अदम्य इच्छा-शक्तिवाला आदमी सब कुछ सह जायेगा, टूटेगा नही और यह

11*

लडका अपने पिता की स्नेह-छाया मे रहकर एक नये साचे मे ढलेगा। वह एक ऐसा आदमी बनेगा, जो देश की पुकार पर कडी मे कडी मुसीबत सह सकेगा और बडी से बडी बाधा की कलाई मरोड सकेगा।

मैने पिता और पुत्र को जाते देखा तो मेरा मन बडा टीसा। शायद जुदा होते समय इतना अधिक दुख न होता, यदि अपनी पतली-पतली टागो मे कुछ कदम जाने के बाद वान्या मेरी ओर मुडकर अपना नन्हा-मुन्ना गुलाबी हाथ न हिलाता। और सहसा ही एक कोमल पर चगुलदार पजा मुझे अपना सीना जकडता-सा लगा। मैने झटपट मुह दूसरी ओर कर लिया। नही जिन सयाने लोगो के बाल लडाई के वर्षो न सफेद किये है वे नीद मे ही नही, बल्कि उठते-बैठते, चलते-फिरते भी रोते है। पर सबसे बडी बात है समय रहते आसू पोछ लेना। महत्त्व की बात यही है कि बच्चे का दिल न दुखे, उसे ऐसा मौका न मिले कि उसकी निगाह आदमी के गाल के एकमात्र दहकते हुए आसू पर जा पडे।

कुंवारी भूमि का जागरण

भाग १

भाग १

१

जनवरी के अत मे जब पहली बार बर्फ कुछ पिघलती है तब चेरी के बागो मे मौधी गध फैल जाती है। दोपहर को (अगर धूप मे कुछ गर्मी हो) हवा मे बचे स्थान पर पिघलती बर्फ की नम वाष्प के साथ हिम से झाकती, मृत पत्तियो मे ढकी भूमि की जीवत और शाश्वत मास मे बसी चेरी की छाल की उदास, हल्की-सी सुगध की स्पष्ट अनुभूति होती है।

बागो मे नीला अधेरा छाने तक, तब तक, जब तक पत्र-विहीन टहनियो मे चद्रमा का पन्ना जडित हसिया न लटक जाये, यह मादक गध विचरती रहती है जब तक अल्हड खरगोश बर्फ की सतह पर अपने पदचिन्हो की पखुडिया न बिखेर दे।

और फिर स्तेपी मे बहती हवा पाले मे ठिठुरे नागदौन की भीनी-भीनी गध को बागो मे भर देती है, दिन की सुगधे और स्वर धूमिल हो जाते है, जगली झाड-झखाडो और जुते खेत के ऊबड-खाबड लहरदार विस्तार पर चुपचाप भूरे भेडिये की तरह पूरब मे रात आ जाती है—झुटपुटे की परछाइयो के रूप मे स्तेपी मे अपने पदचिन्ह छोडती।

* * *

सन् १९३० की जनवरी की शाम को स्तेपी के पासवाली गली से एक घुडसवार ने ग्रेम्याची गाव मे प्रवेश किया। नदिया के पास उसने अपने थके घोडे को रोका और उतर गया। घोडे के पुट्ठो पर पाला जमा हुआ था। तग गली के दोनो ओर बागो की काली छायाओ के ऊपर, पॉप्लरो के टापुओ सरीखे कुजो के ऊपर कृष्ण-पक्ष के चाद का हसिया लटका हुआ था। गली मे अधेरा और नीरवता छाई हुई थी। नदिया के उस पार कही कुत्ता जोर-जोर से रो रहा था और कोई बत्ती टिमटिमा

रही थी। घुडसवार ने पाले की हवा मे गहरी सास खीची और आराम से दस्ताना उतारकर सिगरेट सुलगायी, फिर जीन की पेटी कसी, जीन के नीचे उगलिया डाली और घोडे की गर्म, पसीने से ढकी पीठ को महसूस करके फुर्ती मे उसने अपनी विशाल काया को जीन पर टिका दिया। उथली, सर्दियो मे भी न जमनेवाली नदिया को पार करने लगा। घोडा तली मे बिछे ककडो पर नालो मे ठकठक करता जा रहा था, उसने चलते-चलते पानी पीने के लिये गर्दन झुकायी पर सवार ने उसे हाका और घोडा ढलवा तट पर चढ गया।

सामने से उसे लोगो की बातो और स्लेज-गाडी के चलने की आवाज सुनायी पडी, घुडसवार ने फिर से घोडे को रोक दिया। घोडा चौकन्ना होकर मुडा। चादी का पेशबद और कज्जाक काठी का चादी जडा ऊचा हरना चाद की किरणो मे अधेरी गली मे दमक उठे। सवार ने हरने पर लगाम पटककर जल्दी-जल्दी ऊट के ऊन का बना हुड ओढ लिया जो अब तक उसके कधो पर लटका हुआ था। चेहरे को लपेटकर उसने घोडे को सरपट दौडा दिया। स्लेज-गाडी जब पीछे रह गयी तो फिर वह दुलकी चाल मे चल पडा पर हुड नही उतारा।

गाव मे पहुचकर उसने रास्ते मे मिली एक औरत मे पूछा

"अरे बुआ यह तो बताना कि यहा याकोव ओस्त्रोव्नोव कहा रहता है?"

'क्या याकाव लकीच?'

"हा-हा वही।'

"उधर पाप्लर के पीछे उसका मकान है खपरैल की छतवाला दिखायी दिया?

'समझ गया। शुक्रिया।

खपरैल की छतवाले बडे मकान के पास वह उतरा, फाटक मे घोडे को खीचकर अदर घुस गया। खिडकी को चाबुक की मूठ से हौले से खटखटाकर आवाज दी

"मालिक! याकोव लूकीच, एक मिनट के लिये जरा बाहर आ-ना।"

बिना टोपी के, कोट को हाथ मे बद किये मालिक ओसारे पर निकला, आगतुक के चेहरे को घूरते हुए वह ओसारे से उतरा।

"कौन बेवक्त आया है?" स्लेटी मूछो मे मुस्कराते हुए उसने पूछा।

"पहचाना नही, लुकीच? रात काटने दो यहा। घोडे को गर्म जगह मे बाधने का है कोई इतजाम?"

"नही, कामरेड, पहचाना नही। आप इलाकाई कार्यकारिणी से तो नही है? भूमि विभाग मे तो नही? कुछ-कुछ जाने-पहचाने लग रहे है आवाज आपकी मुझे परिचित-सी लग रही है"

आगतुक के सफाचट होठ मुस्कान मे सिकुड गये, हुड उतारकर वह बोला

'पोलोवत्सेव की याद है?'

याकोव लुकीच ने घबराकर इधर-उधर नजर डाली उसका चेहरा पीला पड गया, वह फुसफसाकर बोला

'जनाब! आप कहा से? येसाऊल* साहब! घोडे का इतजाम अभी कर देते है अस्तबल मे कितने साल गुजर गये '

"अरे तुम शोर मत मचाओ! वक्त बहुत गुजर गया तुम्हारे पास कोई झूल तो होगी? तुम्हारे घर मे कोई गैर तो नही है?'

आगतुक ने मालिक को लगाम थमा दी। घोडा पराये हाथ के आदेशो को आलस्य के साथ पूरा करता हुआ, तनी गर्दन पर सिर उठाकर अस्तबल की ओर चल पडा। उसने लकडी के फर्श पर जोर से खुर पटका, फुत्कार कर पराये घोडे की वहा बसी गध को महसूस किया। पराये आदमी का हाथ उसकी थूथनी पर पडा, उगलियो ने कुशलता और सावधानी के साथ रगड खाये मसूडो को लोहे के दहान से मुक्त किया और घोडा कृतज्ञता के साथ चारे पर झुक गया।

पेटी मैने ढीली कर दी है कुछ देर जीन मे खडा रहने दो कुछ दम ले लेगा तब जीन उतार दूगा, घोडे को ठडी झूल से ढकते हुए मालिक बोला। जिस तरह घोडे के सार की पेटिया बधी थी वह भाप गया कि मेहमान बडी दूर से आया है और आज उसने बडा लम्बा रास्ता तय किया है।

"अनाज है तुम्हारे पास याकोव लुकीच?"

'थोडा-सा है। पानी पिलाकर अनाज डाल देंगे। अच्छा, चलिये घर के अदर, अब आपको किस तरह पुकारू या नही पुरानी रीत

---

* यसाऊल – क्रातिपूर्व कज्जाक रेजिमेट का अफसर। – अनु०

से – आदत नहीं रही और वैसे भी अच्छा नहीं है . ." अंधेरे में मालिक बेढब ढंग से मुस्करा रहा था हालांकि जानता था कि उसकी मुस्कान दिखायी नहीं दे रही।

"पूरा नाम लेकर बुलाया करो। भूले तो नहीं?" अस्तबल से आगे-आगे निकलते हुए मेहमान बोला।

"कैसे भूल सकता हूं! जर्मन से पूरी लड़ाई साथ लड़ी और इसमें भी ... मैं आपको अकसर याद करता था, अलेक्सांद्र अनीसीमोविच। जब से नोवोरोसीस्क* में हम बिछुड़े आपकी कोई खैर-खबर नहीं मिली। मैं तो सोचता था कि आप कज़्ज़ाकों के साथ तुर्की चले गये।"

उन्होंने खूब गर्म रसोई में प्रवेश किया। आगंतुक ने हुड और मेमने की खाल की सफ़ेद टोपी उतारी, सफ़ेद, छितरे बालों से ढकी उसकी बड़ी, चौकोर खोपड़ी दिखायी पड़ी। झड़ते बालोंवाले भेड़िये जैसे माथे को सिकोड़कर उसने नज़र दौड़ायी और गहरी धंसी आसमानी आखो को मिचमिचाकर मुस्कराते हुए उसने बेंच पर बैठी मालकिन और बहू का झुककर अभिवादन किया।

"ठीक-ठाक हो, लुगाइयो?"

"भगवान का शुक्र है," मालकिन ने संयमित स्वर में उत्तर दिया, उसने पति की ओर प्रश्नवाचक नज़र डाली: "यह किस आद-मी को तुम लाये हो और उसकी आवभगत कैसे करनी है?"

"खाना परोसो," मालिक ने मेहमान को कमरे में मेज़ के पास आने का निमंत्रण देकर संक्षिप्त आदेश दिया।

अतिथि औरतों की उपस्थिति में बंदगोभी और सुअर के मास का शोरबा खाते हुए मौसम के बारे में, फ़ौजी साथियों के बारे मे बातचीत कर रहा था। उसका विशाल, मानो पत्थर से तराशा, जबड़ा धीरे-धीरे हिल रहा था; वह थके-मांदे, जुगाली करते बैल की तरह खाना चबा रहा था। खाना खाकर उठा, धूल से ढके काग़ज़ के फूलों से सजी देव प्रतिमाओं की पूजा करके, पुरानी, कंधों मे तंग क़मीज़ पर गिरे डबल रोटी के चूरे को झाडकर वह बोला:

* सन् १९२० के वसंत में देनीकिन की ध्वस्त सेना के दस्ते नोवोरोसीस्क बंदरगाह मे पलायन करके विदेश या क्रीमिया मे जनरल व्रांगेल के पास चले गये थे। – सं०

"रोटी-नमक के लिये शुक्रिया, याकोव लुकीच! और अब कुछ काम की बाते कर ले।"

बहू और सास ने जल्दी-जल्दी मेज साफ की, और मालिक की भौह के इशारे पर रसोई मे चली गयी।

२

दवीदोव पर तिरछी नजर डालकर, कमजोर आखो और सुस्त हरकतावाला, पार्टी की इलाकाई समिति का सचिव मेज के पास बैठकर आखे मिचमिचाता हुआ उसके दस्तावेज पढने लगा।

खिडकी के बाहर तेज हवा टेलीफोन के तारो मे अटककर सीटिया बजा रही थी, नीची बाड मे बधी घोडी की रीढ पर मटरगश्ती करता हुआ कौवा कुछ चुग रहा था। हवा उसकी पूछ मरोड रही थी, उसे फडफडाकर उडा रही थी पर वह फिर से बूढी उदास मरियल घोडी की पीठ पर बैठ जाता, विजयोल्लास के साथ अपनी वहशी आख मटकाता। कस्बे पर नीचे लटके बादलो के चिथडे तैर रहे थे। कभी-कभी सूरज की तिरछी किरणे नीचे पडती, गर्मियो की तरह नीले आकाश का टुकडा दृष्टिगोचर होता और तब खिडकी से दिखायी पडता दोन का मोड, उसके पार का जगल और क्षितिज पर पवनचक्कीवाला दूरस्थ दर्रा किसी कोमल मनोहारी चित्र की तरह लगते।

"तो तुम बीमारी के कारण रोस्तोव मे रुक गये थे? अच्छा, ठीक है बाकी आठ पच्चीस हजारी* तीन दिन पहले पहुच चुके है। सभा हुई थी। सामूहिक फार्मो के प्रतिनिधियो ने उनकी अगवानी की।" सचिव ने कुछ सोचते हुए होठ चबाये। "आजकल हमारे यहा हालत खास तौर से जटिल है। इलाके मे सामूहिकीकरण का प्रतिशत चौदह दशमलव आठ है। ज्यादातर सयुक्त कृषि सहकारिताये है। अमीर कुलको से अभी अनाज की काफी वसूली बाकी है। लोगो की

* सन् १९२९ मे पार्टी के आह्वान पर औद्योगिक केन्द्रो से २५ हजार अग्रणी मजदूर सामूहिक फार्मो की स्थापना मे सहायता देने के लिये देहात गये थे। — अनु०

जरूरत है। बहू-ऽ-ऽ-त सख्त! सामूहिक फार्मो ने तेतालीस मजदूरो का आवेदन किया था पर सिर्फ तुम नौ जनो को ही भेजा गया है।"

अपनी मूजी पलको को उठाकर वह किसी नये, कौतूहलपूर्ण भाव के साथ दवीदोव की आखो मे झाका, मानो यह अदाजा लगा रहा हो कि यह आदमी कितने पानी मे है।

"अच्छा, तो कामरेड मेरे, तुम फिटर हो? बहू-ऽ-ऽ-त अच्छा! और पुतीलोव कारखाने* मे कितने दिनो से काम कर रहे हो? लो सिगरेट पियो।"

"फौज से छुट्टी मिलने के बाद से। नौ साल हो गये है।" दवीदोव ने सिगरेट लेने के लिये हाथ बढाया और सचिव की नजर दवीदोव की कलाई पर धुधले नीले गोदने पर पडी, उसके लटके होठो के कोनो पर मुस्कान आ गयी।

"सुदरता के लिये है? नौसेना मे रहे थे?"

"हा।"

"वही तो देखता हू कि लगर गदा है "

"जवान था दिमाग मे भ्रम भरा था बस गोद डाला "

दवीदोव ने झेपकर आस्तीन खीची, उसने मन ही मन सोचा "जहा जरूरत नही वहा तेरी नजरे पैनी है। और अनाज-वसूली के मामले मे आख झपकता रह गया!"

सचिव कुछ देर तक चुप रहा और उसने अपने रुग्ण सूजे-से चेहरे से मेहमाननवाजी की निरर्थक मुस्कान का खदेड दिया।

"कामरेड तुम आज ही इलाकाई समिति के प्रतिनिधि की हैसियत से पूर्ण सामूहिकीकरण करने जाओगे। क्षेत्रीय समिति का नया निर्देश पढा है? जानते हो? हा, तो तुम ग्रेम्याची ग्रामीण सोवियत मे जाओगे। आराम बाद मे करना, अभी वक्त नही है इसके लिये। शत-प्रतिशत लोगो को सामूहिक फार्म मे शामिल करने पर जोर देना। वहा छोटो-सी सहकारिता है पर हमे तो विराट सामूहिक फार्म बनाने है। जैसे ही हम प्रचार अभियान दल का गठन करेगे फौरन तुम्हारे पास भेज देगे। और तब तक तुम वहा जाकर कुलको को सावधानी से दबाकर सामूहिक

* पुतीलोव कारखाना – लेनिनग्राद का सुप्रसिद्ध 'कीरोव प्लाट'। – स०

फार्म की स्थापना करने लगो। मभी ग़रीब और मझले किसानो को तुम्हारे सामूहिक फार्म मे होना चाहिये। फिर वहा सन् उन्नीस सौ तीस मे सामूहिक जोतो पर बोने के लिये बीज का आम कोष बना लेना। मावधानी से काम लेना। खासकर मझले किमानो मे! ग्रेम्याची मे तीन कम्युनिस्टो की इकाई है। इकाई का मचिव और ग्राम सोवियत का अध्यक्ष – अच्छे बदे है, लाल छापामार रह चुके है." और फिर होठ चबाकर उसने जोडा, "उनके स्वभाव पर इसका असर दिखायी पडता है। समझे मेरा मतलब? राजनीतिक दृष्टि मे अधकचरे है, गलतिया कर सकते है। अगर कोई कठिनाई हो तो इलाकाई केन्द्र चले आना। उफ, टेलीफोन लाइन अभी नही है, यही बुरी बात है! हा, एक बात और वहा की इकाई का मचिव 'लाल पताका' पदक से विभूषित, तेज स्वभाव का है, टेढे मिजाज का है।"

मचिव ने पोर्टफोलियो के ताले पर उगलिया बजायी और दवीदोव को उठता देखकर सजीव होकर बोला

"जरा रुको, एक बात और है रोज हरकारे के हाथ सूचनाये भेजते रहना, और उन लोगो को चुस्त बनाना। हा अब प्रबध विभाग के निदेशक को अपना मत्र दिखाकर रवाना हो जाओ। मै कह दूगा कि तुम्हे इलाकाई कार्यकारिणी के घोडे दे दे। बस तुम सामूहिकीकरण का शत-प्रतिशत तक उठा दो। प्रतिशत को देखकर ही तुम्हारे काम का मूल्याकन करेगे। अठारह गावो का विराट सामूहिक फार्म खडा कर देगे। हुई न बात? पुतीलोव कारखाने जैसा।' उसे अपनी तुलना इतनी पसद आयी कि मुस्करा दिया

"तुम मुझे कुलको के साथ सावधानी बरतने के बारे मे कह रहे थे। तुम्हारा तात्पर्य क्या था" दवीदोव ने पूछा।

"वह यह कि,' मचिव के होठो पर बडप्पन की मुस्कान फैल गयी, "एक कुलक तो अनाज वसूली का कोटा पूरा करता है और ऐसे भी है जो जान-बूझकर नही करते। ऐसो का मामला तो साफ है धारा* एक सौ सात थोप दो उस पर और काम खत्म। पर

* अपनी निजी आवश्यकता की पूर्ति के बाद बचनेवाला अनाज राज्य को न देनेवाले और अनाज की खुले आम चोरबाजारी करनेवाले धनिक किसानो – कुलको के खिलाफ सोवियत सत्ता दड विधान की धारा १०७ का प्रयोग करती थी। – स०

पहलेवाले का मामला जटिल है। उदाहरण के लिये तुम क्या करोगे उसके साथ ?"

दवीदोव कुछ सोचकर बोला

"मै तो उसे नया काम सौप देता।"

"क्या बात कही है! नही कामरेड, ऐसे काम नही चलेगा। इस तरह तो हमारे कदमो पर से लोगो का विश्वास ही उठ जायेगा। और तब मझोला किसान क्या कहेगा? वह कहेगा 'देखो तो कैसी है सोवियत सत्ता। किसानो को किस तरह सता रही है।' लेनिन ने हमें किसान वर्ग की मनोवृत्ति को गभीर रूप से ध्यान मे रखने की सीख दी थी, और तुम कह रहे हो 'दूसरा काम'। यह तो, भाई मेरे, बचकानी बात है।"

"बचकानी?" दवीदोव का चेहरा तमतमा गया। "क्यो, तुम्हारे खयाल से क्या स्तालिन गलती कर रहा है?"

"स्तालिन से इसका क्या वास्ता?"

"भाषण पढा था उसका सम्मेलन मे उन मार्क्सवादियो के, क्या कहते है, अरे उनको अरे वही, जो जमीन के मामलो को देखते है क्या नाम है उनका? अरे जमीनवालो के!"

"कृषिविदो के?"

"हा-हा उन्ही के सम्मेलन मे।"

"तो क्या हुआ?"

"इस भाषणवाला 'प्राव्दा'* तो मगवाओ।"

सेक्रेटरी 'प्राव्दा' ले आया। उसे खोलकर दवीदोव जल्दी-जल्दी नजर दौडाने लगा। सचिव उसके चेहरे को ताकता हुआ मुस्करा रहा था।

"यह रहा। सुनो 'जब तक हमारा रवैया परिसीमन का था, कुलको का निर्मूलन नही किया जा सकता था ' हा आगे देखो यह रहा 'और अब? अब — बात दूसरी है। अब हमे कुलक वर्ग

* 'प्राव्दा' के २६ दिसबर १६२६ के अक मे मार्क्सवादी कृषिविदो के सम्मेलन मे सोवियत सघ मे कृषि नीति के प्रश्नो पर स्तालिन का २७ दिसबर १६२६ का भाषण प्रकाशित हुआ था। — स०

पर निर्णायक चढायी करने, उसका प्रतिरोध तोडने और वर्ग के रूप मे उसका निर्मूलन करने की सभावना प्राप्त है' वर्ग के रूप मे, समझे? उससे अतिरिक्त अनाज देने को क्यो नही कहा जा सकता? क्यो उसे जू की तरह नही कुचला जा सकता?"

सचिव की मुस्कान बुझ गयी चेहरा गभीर हो गया।

"वहा आगे कहा गया है कि कुलक की बेदखली सामूहिक फार्म मे शामिल होनेवाले गरीब और मझोले किसानो का समूह करता है। क्या ठीक नही कह रहा? पढो।"

"अरे, तुम भी!"

"अरे-वरे नही कर!" सचिव तैश मे आकर बोला, उसकी आवाज तक काप गयी। "तुम क्या सुझाव दोगे? हरेक कुलक के खिलाफ बिना सोचे-समझे कानूनी कार्यवाही का। यह भी उस इलाके मे जहा सिर्फ चौदह प्रतिशत सामूहिकीकरण हुआ है, जहा मझोला किसान अभी यह सोच ही रहा है कि सामूहिक फार्म मे शामिल हो कि नही। इस काम मे पल भर मे गर्दन कट सकती है। आ जाते है ऐसे-ऐसे लोग जिन्हे यहा के हालात का कोई अदाज तक नही ' सचिव अपने को काबू मे करके शात आवाज मे बोला 'इस तरह सोचोगे तो अधाधुध गलतिया कर बैठोगे।'

यह तो तुम कह रहे हो "

"तुम फिक्र मत करो! अगर यह कदम आवश्यक और समयोचित होता तो क्षेत्रीय समिति हमे सीधे हुक्म देती! कुलको का सफाया कर दो! ' तब बात दूसरी है! एक मिनट मे कर देते। मिलीशिया पूरा अमला तुम्हारी खिदमत मे है पर अभी हम अनाज छिपानेवाले कुलको को जन न्यायालय के जरिये धारा एक सौ सात के अतर्गत आर्थिक दड ही दिलवा सकते है।"

"तुम्हारे कहने का मतलब है कि खेत मजदूर, गरीब और मझोले किसान कुलको की बेदखली के खिलाफ है? कुलक के पक्ष मे है? कुलक पर चढाई मे उनकी अगुआई करने की क्या जरूरत नही है?"

सचिव झटके मे पोर्टफोलियो का ताला बद करके रूखे स्वर मे बोला

"नेता के किसी भी शब्द का तुम जो चाहो अर्थ निकालो, पर इलाके की जिम्मदारी इलाकाई समिति के ब्यूरो और व्यक्तिगत रूप

मे मुझ पर है। जहा हम तुम्हे भेजेगे वहा हमारी नीति चलाने का कष्ट करना न कि अपनी ईजाद की हुई। और मुझे माफ करो, मेरे पास तुम से बहस करने का वक्त नही। मेरे पास इसके अलावा भी ढेरो काम है," यह कहकर वह उठ गया।

दवीदोव की आखो मे फिर खून उतर आया, पर वह अपने को काबू मे करके बोला

"मै पार्टी की नीति चलाऊगा, और तुम्हे कामरेड, मजदूर की तरह साफ-साफ कहे देता हू तुम्हारा रवैया भ्रामक है, राजनीतिक दृष्टि से गलत है, फैक्ट!"

"मै खुद जिम्मेदार हू अपन और तुम्हारी यह बात 'मजदूर की तरह' पुरानी पड चुकी है, जैसे "

टेलीफोन की घटी घनघनायी। सचिव ने चोगा उठाया। कमरे मे लोग जमा होने लगे और दवीदोव प्रबध विभाग के निदेशक के पास चल दिया।

"दाये पैर पर लगडाकर चलता है * फैक्ट!" इलाकाई समिति की इमारत से निकलते समय वह सोच रहा था। 'कृषिविदो के लिये भाषण को एक बार फिर पूरा पढ डालूगा। क्या सचमुच मै गलत हू? नही भइया माफ करो! अपनी सहिष्णुता की वजह से तूने कुलको को सिर पर बिठा लिया है। मडल समितिवाले भी क्या है, कहते थे कि काम का आदमी है, और उसने कुलको से पूरा अनाज तक नही वसूला। दबाव डालना एक बात है और काटे की तरह उसे जड समेत उखाडना - बिलकुल दूसरी। जनता को क्यो लामबद नही करते?' मन ही मन वह बहस किये जा रहा था। हमेशा की तरह सबसे विश्वसनीय दलीले बाद मे दिमाग मे आ रही थी। वहा इलाकाई पार्टी समिति मे भावावेश मे आकर जो बात मुह मे आती कहे जा रहा था। ठडे दिमाग से काम लेना चाहिये। वह हाट के चोक पर बर्फ की पपडी से ढके डबरो मे छप-छप करता, जमकर पत्थर बने गोबर के ढेरो मे ठोकरे खाता जा रहा था।

'दुख की बात है कि इतनी जल्दी बात खत्म कर दी नही तो

* दक्षिणपथी अवसरवादियो के समर्थको के बारे मे प्रचलित तुलना। - स०

मै तुझे निरुत्तर कर देता,' दवीदोव जोर से बोल पड़ा, पास से गुजरती औरत को मुस्कुराते देखकर वह झेपकर चुप हो गया।

* * *

'कज्जाक और किसान भवन' मे जाकर दवीदोव ने अपनी अटैची ली, यह याद करके वह मुस्करा दिया कि दो जोडी जांघिये-बनियान, मोजो और सूट के अलावा उसका मुख्य असबाब – पेचकस, प्लास, रेती, छेनी, परकार, रिंच और अन्य औजार थे, जो वह लेनिनग्राद से लाया था। "इनकी यहा कोई जरूरत न पडेगी! सोचा था ट्रैक्टर वगैरह ठीक करने मे काम आ जायेगे पर यहा तो ट्रैक्टर ही नही है। लगता है ऐसे ही प्रतिनिधि बना-बना घूमूगा पूरे इलाके मे। किसी सामूहिक फार्म के लोहार को दे दूगा,' स्लेज मे अटैची रखते हुए उसने सोचा।

जई पर पले कार्यकारिणी के हट्टे-कट्टे घोडे रगबिरगे चटकीले बेल-बूटेदार स्लेज को आसानी से खीच रहे थे। जैसे ही वे कस्बे से बाहर निकले दवीदोव ठड से अकड गया। ओवरकोट के मेमने की खालवाले घिसे कॉलर को खड़ा करने, टोपी माथे पर झुकाने के बावजूद उसे बेहद ठड लग रही थी हवा और नम हिम-कण कॉलर और आस्तीनो के जरिये अदर घुसकर बदन मे कपकपी दौडा रहे थे। पुराने जूतो मे पैरो को खास तौर से ठड लग रही थी।

कस्बे से ग्रेम्याची तक निर्जन मार्ग से अट्ठाईस किलोमीटर की दूरी थी। कुचली लीद से मैला रास्ता पहाडी की चोटी पर जाता था। चारो ओर जिधर देखो हिम-प्रातर ही दृष्टिगोचर होता था। जगली झाडिया बर्फ के बोझ से सिर झुकाय खडी थी। बस खड्डो के ढलानो पर भूमि के दुम्मट चकत्ते झाक रहे थे हवा के कारण बर्फ वहा टिक न पाती थी पर खड्डो और घाटियो की तली मे बर्फ के ढेर पडे थे।

दवीदोव बडी देर तक स्लेज के तख्ते को पकडकर दौडता रहा ताकि पैरो मे कुछ गर्मी आ जाये, फिर वह स्लेज पर चढ गया और दुबककर ऊघने लगा। कभी-कभी पाले से ढकी अधखुली पलको से दवीदोव को सडक से फुदककर उडते कौओ के धूप मे बैगनी बिजली

की तरह चमकते डैने दिखायी पडते और फिर मीठी तद्रा उसकी आखो को बद कर देती।

दिल को चुभोती ठड के कारण उसकी नीद टूट गयी और उसने आखे खोली। नम आखो मे उसे इद्रधनुषीय आभा मे लिपटा ठडा सूरज, मूक स्तेपी का अनत विस्तार, क्षितिज पर आकाश का सुरमई किनारा और पास ही मे टीले की सफेद चोटी पर ललौही लोमडी दिखायी पडी। लोमडी चूहो का शिकार कर रही थी। वह पिछली टागो पर खडी होती, बल खाती कूदती और अगली टागो पर गिरकर पजो से बर्फ खोदने लगती, उसका सारा शरीर शुभ्र हिमधूलि मे लिपट जाता और उसकी पूछ लाल ज्वाला की तरह बर्फ पर बिछ जाती।

साझ ढलने से पहले वे ग्रेम्याची पहुचे। ग्राम-सोवियत के बडे अहाते मे दो घोडोवाली खाली स्लेज खडी थी। ओसारे पर कोई सात-एक कज्जाक झुड बनाकर सिगरेट का धुआ उडा रहे थे। जमकर बर्फ बने पसीने के कारण खुरदरी चमडीवाले घोडे ओसारे के सामने रुके।

"नमस्ते भले लोगो! अस्तबल कहा है?"

"नमस्ते," खरगोश की टोपी पहने एक अधेड कज्जाक ने सबकी एवज उत्तर दिया। "वह रहा अस्तबल, सरकडे के छप्परवाला।"

"उधर चलो," दवीदोव ने गाडीवान को आदेश दिया और कूदकर स्लेज से उतर गया। नाटे कद का उसका बदन गठा हुआ था। दस्तानो से गाल रगडता हुआ वह स्लेज के पीछे-पीछे चल पडा।

कज्जाक भी असमजस मे पडकर अस्तबल की ओर चल पडे क्योकि आगतुक जो देखने मे कर्मचारी लगता था और जिसका उच्चारण स्थानीय लोगो जैसा नही था, स्लेज के पीछे-पीछे जा रहा था न कि ग्राम-सोवियत मे।

अस्तबल के फाटक से लीद की घनी भाप निकल रही थी। इलाकाई कार्यकारिणी के गाडीवान ने घोडे रोके। दवीदोव फुर्ती के साथ लगाम उतारने लगा। पास मे झुड बनाये कज्जाक हैरत मे पड गये। औरतोवाला सफेद समूर का कोट पहने बूढा मूछो से लटके हिम-शकुओ को झाडकर, चुलबुलाकर बोला "देख के, दुलत्ती मार देगा, कामरेड!"

घोडे की पूछ को फदे से निकालकर दवीदोव बूढे की ओर मुडा, उसके काले से होठो पर मुस्कान फैली थी, आगे का एक दात गायब था।

"बाबा, मै मशीनगन चलाता था, ऐसे-ऐसे घोडों से मेरा वास्ता पड चुका है।"

"पर दात तो नदारद है, कही किसी घोडी ने तो नही तोड दिया?" कव्वे की तरह काली घनी घुघराली दाढीवाले एक कज्ज़ाक ने पूछा।

और सब मजाक पर हस पडे, पर दक्षता से जुआ उतारते हुए दवीदोव ने भी मजाक का जवाब मजाक मे दिया

"नही, दात तो कब का तुडवा चुका हू शराब की वजह से। चलो अच्छा ही हुआ, कम से कम लुगाइया तो नही डरेगी कि मै उन्हे काट खाऊगा। ठीक कह रहा हू न बाबा?"

मज़ाक पसद आया और बूढा कृत्रिम खेद के साथ सिर हिलाकर बोला

"मै तो छोरे, जितना हो सकता था काट चुका हू। मेरा दान तो कब का लटक गया है"

काली दाढीवाला कज्जाक सफेद दातोवाला मुह फाडकर घोडे की तरह हिनहिनाता हस रहा था वह कज्जाक अगरखे को कसे लाल कमरबद को बार-बार पकड रहा था, मानो उसे डर था कि कही ठहाको मे खुल न जाये।

दवीदोव ने कज्जाको को सिगरेटे बाटी और अपनी सिगरेट सुलगाकर ग्राम-सोवियत की ओर चल पडा।

"वहा है, वही है अध्यक्ष, जाओ। और हमारी पार्टी का सेक्रेटरी भी वहा है," दवीदोव के पीछे पीछे चलता बूढा बोल रहा था।

कज्जाक भी लम्बे-लम्बे कश खीचते साथ-साथ चल रहे थे। उन्हे यह बात बहुत पसद आयी कि आगतुक अन्य इलाकाई अधिकारियो की तरह स्लेज से उतरकर बगल मे बैग दबाये, लोगो का अभिवादन किये बिना ग्राम-सोवियत मे नही घुसा, बल्कि खुद घोडो को खोलने मे गाडीवान की मदद करने लगा और उसने यह काम बडी दक्षता से किया। इससे पता चलता था कि उसे घोडो का अच्छा ज्ञान है। पर साथ ही इन बातो से वे चकित भी हो रहे थे।

"कामरेड, तुम्हे घोडो को छूते घिन नही आती? भला यह नौकरी-पेशेवालो का काम है? और गाडीवान किसलिये है?" काली दाढीवाले से न रहा गया।

"हमारे लिये यह बडी अजीब बात है," बूढे ने साफ-साफ स्वीकार किया।

दवीदोव कुछ बोल भी न पाया।

"अरे यह तो लोहार है!" दवीदोव की, धातु के साथ काम करते-करते स्लेटी पडी हथेलियो, नाखूनो पर चोटो के पुराने निशानो की ओर इशारा करके पीली-सी मूछोवाला युवा कज्जाक निराशा के साथ चिहुककर बोला।

"फिटर हू," दवीदोव ने उसकी गलती ठीक की। "और आप लोग किसलिये ग्राम-सोवियत मे जा रहे है?'"

"यो ही, कौतूहलवश," ओसारे पर रुककर सबकी तरफ से बूढा बोला। "जानना चाहते है कि तुम किसलिये आये हो? अगर फिर अनाज-वसूली के लिये ..."

"सामूहिक फार्म के सिलसिले मे आया हू।"

बूढे ने निराशा के साथ लम्बी सीटी बजायी और सबसे पहले उल्टे पाव लौट गया।

* * *

नीची छतवाले कमरे मे भेड की खाल के गीले ओवरकोटो और लकडी की राख की तीखी बू फैली थी। मेज के पास लैम्प की बत्ती चढाता, दवीदोव की ओर मुह किये लम्बे कद का और सीधे कधो-वाला पुरुष खडा था। उसकी खाकी कमीज पर 'लाल पताका' पदक दमक रहा था। दवीदोव समझ गया कि यही ग्रेम्यार्ची की पार्टी इकाई का सचिव है।

"मै इलाकाई समिति का प्रतिनिधि हू। तुम कामरेड पार्टी इकाई के सचिव हो?"

"हा, मै इकाई सचिव नागूल्नोव हू। बैठिये कामरेड, सोवियत का अध्यक्ष अभी आता है।" नागूल्नोव ने दीवार पर घूसा मारा और दवीदोव के पास आया।

उसकी छाती चौडी और टागे रिसाले के सैनिको की तरह बाडी थी। उसकी बडी-बडी काली-स्याह पुतलियोवाली पीली-सी आखो के ऊपर घनी भौहे फैली थी। अगर बाज की तरह उसकी छोटी-सी नाक

के नथुने इतने खूंख्वार न होते, आखे धुधली न होती तो वह पुरुषोचित सुदरता का प्रतीक हो सकता था।

बराबर के कमरे मे बकरी की खाल की स्लेटी टोपी को पीछे की ओर झुकाकर लगाये हुए गठीले बदनवाला कज्जाक निकला। उसने फौजी कपडे की जैकेट और सफेद ऊनी मोजो मे ठूसकर कज्जाको की पट्टियोंवाली शलवारनुमा पैंट पहन रखी थी।

"यही सोवियत का अध्यक्ष अद्रेई रजम्योत्नोव है।"

अध्यक्ष ने मुस्कराते हुए अपनी बदरग-सी घुघराली मूछो पर हाथ फेरा और उसे गरिमा के साथ दवीदोव की ओर बढाया।

"और आप कौन है? इलाकाई समिति के प्रतिनिधि? अच्छा। आपके कागजात देखा, सकार? आप शायद सामूहिक फार्म के सिलसिले मे आये होगे?" वह दवीदोव को ग्रीष्म के आकाश की तरह निर्मल अपनी आखो को झपकता भोली-बेबाक नजर से घूरकर देख रहा था। उसके गेहुए, कई दिनो से बढी दाढीवाले चेहरे पर आतुरता का भाव व्याप्त था। माथे पर घाव का नीला तिरछा निशान बना था।

दवीदोव ने मेज के पास बैठकर पार्टी द्वारा चलाये जानेवाले सपूर्ण सामूहिकीकरण के दो महीने के अभियान के उद्देश्यो के विषय म बताया और कल ही गरीबो और सक्रिय लोगो की सभा बुलाने का सुझाव रखा।

स्थिति को समझाते हुए नागूल्नोव ने ग्रेम्याची की कृषि सहकारिता की बात छेडी।

रजम्योत्नोव उसकी बातो को भी उतने ही ध्यान के साथ सुन रहा था बस यदा-कदा कत्थई लाली ·ˇ ढके गाल पर हाथ टिकाये कोई बात जोड देता था।

'हमारे यहा सयुक्त खेती की तथाकथित सहकारिता है। मै आपको साफ कहे देता हू कामरेड मजदूर, यह सामूहिकीकरण का मखौल और सोवियत सत्ता का नुकसान ही है,' काफी भावावेश मे नागूल्नोव बोल रहा था। "उसमे अठारह कुटुम्ब शामिल है—सब बेहद गरीब। तो इसका क्या परिणाम निकलता है? मजाक ही बनकर रह जाता है। वे मिल गये, अठारह कुटुम्बो के पास चार घोडे और बैलो की एक जोडी हो गयी और खानेवाले एक सौ सात। वे कैसे करे गुजारा?

बेशक, उन्हे मशीने और खेत जोतने के लिये ढोर खरीदने के वास्ते दीर्घकालिक ऋण दिये जाते है। वे ऋण तो ले लेते है पर लम्बी अवधि मे भी उन्हे नही चुका सकेगे। अभी समझाता हू कि क्यो अगर उनके पास ट्रैक्टर होता तो बात दूसरी होती, पर ट्रैक्टर उन्हे नही दिया गया और बैलो के बूते इतनी जल्दी अपने पावो पर नही खडे हो सकते। यह भी कहे देता हू कि वे भ्रष्ट नीति चलाते है, मै तो कब का उनको विसर्जित कर देता क्योकि वे मरियल बछडे की तरह सोवियत सत्ता का थन तो चूसते है पर बडे नही होते। उनके बीच यह विचार भी घर कर गया है 'अरे, हमे तो हर हालत मे मिलेगा! पर कर्ज की वजह से हमसे ले क्या लेगे।' इसी कारण उनमे कोई अनुशासन नही रहा और कल ही यह सहकारिता स्वर्गवासी हो जायेगी। यह बिलकुल सही विचार है सबको सामूहिक फार्म मे शामिल करने का। यह जिदगी नही, पूरी मौज होगी! पर कज्जाक कौम बडी रूढि पसद होती है, और उसे तोडना पडेगा '

"आप मे से कोई इस सहकारिता मे शामिल है?" दवीदोव ने उनकी ओर देखकर पूछा।

"नही " नागूल्नोव बोला। "मै सन बीस मे कम्यून मे शामिल से इनकार कर दिया। मुझ पर सपत्ति से घृणा का भूत सवार है, इसलिये अपने बैल और औजार मैने पडोस के कम्यून नबर छह को दे दिये वह अब भी चल रहा है, हम मिया-बीवी के पास कुछ नही है। रजम्योत्नोव ऐसा उदाहरण नही दे सकता था। बात यह है कि वह विधुर है, बस बूढी मा ही बची है उसकी। अगर वह शामिल हो जाता तो तानो की बौछार लग जाती। कहते 'मढ दिया हे मा को हमारे मत्थे और खुद खेत मे काम करता नही।' ये सब बारीकिया ध्यान मे रखनी पडती है। और हमारी इकाई का तीसरा सदस्य – वह अभी बाहर गया हुआ है – लूला है। थ्रेशर मे कट गया था हाथ उसका। वह भी सहकारिता मे शामिल होने से शर्माता है, कहता है कि मेरे बिना भी वहा खानेवाले बहुत ज्यादा है।"

'हा, हमारी सहकारिता भी एक मुसीबत हे," रजम्योत्नाव ने हा मे हा मिलायी। "उसका अध्यक्ष अर्कोशा लोसेव काम का आदमी नही है। उन्होने कैसे को ढूढ कर चुना है! सच कहू, हमारी गलती है इसमे। ऐसे आदमी को नही पद पर बैठाने देना चाहिये था।"

"बात क्या है?" कुलकों की संपत्ति की सूची पर नज़र दौड़ाते हुए दवीदोव ने पूछा।

"अरे यही," मुस्कराते हुए रज़म्योत्नोव बोला, "वह बीमार आदमी है। भाग्य की रेखा के अनुसार तो उसे सौदागर होना चाहिये था। बस यही रोग है उसे: उसका बस चले तो हर चीज़ को बेच दे या अदला-बदली कर ले। सहकारिता का उसने भट्टा बिठा दिया! अच्छी नसल का साड खरीदा था, उसे उसके बदले मोटर साइकिल लेने की सूझी। अपने सदस्यों को फुसला लिया, हमसे सलाह नही ली, एक दिन देखते है कि स्टेशन से मोटर साइकिल लादकर ला रहा है। हमने अपना सिर पीट लिया! चलो ले आया, कोई बात नही, पर उसे चलाना किसी को आता नही। और उन्हे उसकी जरूरत भी क्या है? चाहे हंसो चाहे रोओ। कस्बे ले गया उसे। वहा जानकार लोग देखकर बोले, 'इसे रखकर फेक देने मे ही भला है।' उसमे कुछ ऐसे पुर्जे नही थे जो सिर्फ कारखाने मे ही बनाये जा सकते है। उन्हे तो याकोव लुकीच ओस्त्रोव्नोव जैसे अध्यक्ष की जरूरत है। बडा अक्लमद आदमी है! उसने क्रास्नोदार से नयी किस्म का गेहू मगवाया -- भीषण से भीषण लू को सह लेता है, खेत मे बर्फ को जमा रखता है, जिससे नमी की कमी नही होती। फसल उसके यहा हमेशा सबसे बढिया होती है। नसलदार मवेशी पालता है। यह सही है कि जब हम उस पर टैक्स का दबाव डालते है, तो बडबडाता ज़रूर है पर किसान वह अच्छा है, उसे प्रशसा-पत्र भी प्राप्त है।"

"वह अपनो मे कुछ पराया-पराया-सा है, हमेशा अलग, कुछ दूरी पर रहता है।" नागूल्नोव सदेह के साथ सिर हिलाकर बोला।

"अरे, नही! वह अपना ही आदमी है," विश्वास के साथ रज़म्योत्नोव बोला।

३

उस रात, जब याकोव लुकीच ओस्त्रोव्नोव के पास उसका भूतपूर्व रिसाला कमाडर येसाऊल पोलोवत्सेव आया, उनके बीच लम्बी बातचीत हुई। गाव मे याकोव लुकीच को बुद्धिमान, लोमड़ी की तरह चालाक

और सावधान आदमी माना जाता था, पर वह गावो मे भडकते प्रचड सघर्ष से परे न रह सका और भवर की तरह घटनाओ मे फस गया। उसी दिन से याकोव लुकीच का जीवन खतरनाक ढलान पर लुढकने लगा

तब खाने के बाद याकोव लुकीच ने तबाकू की थैली निकाली, मोटी ऊनी जुर्राबवाले पैर को मोडकर सदूक पर बैठ गया और इतने सालो से दिल का बोझ बना अपना दुखडा रोने लगा

"क्या बताऊ अलेक्सांद्र अनीसीमोविच? जीवन मे न कोई खुशी है, न आनद। बस, कज्जाक खेतीबाडी को सभालकर कुछ कमाने लगे। सन् छब्बीस या सन् सत्ताइस मे टैक्स कमोबेश ठीक ही थे। पर अब फिर बुरा हाल हो रहा है। आपके कस्बे मे क्या हाल है सामूहिकीकरण के बारे मे बाते हो रही है या नही?"

"हो रही है" मेहमान ने कागज पर थूक लगाकर सिगरेट बनाते हुए सक्षिप्त उत्तर दिया और मेजबान की ओर भौहे उठाकर ध्यान से देखा।

"मतलब, इस लोगो मे सब जगह आसू बह रहे है? चलिये मै आपको अपने बारे मे बताता हू सन बीस मे हार के बाद मै लौटा। काले सागर पर दो जोडी घोडे और सारा माल छूट गया। खाली घर मे लौटा। तब से काम मे दिन-रात एक कर दिया। पहली बार कामरेडो ने अनाज-वसूली से ठेस पहुचायी सारा अनाज बुहारकर ले गये। फिर मै इन ठेसो की गिनती ही भूल गया। वैसे गिनती तो की जा सकती है पहले तो ठेस पहुचाते है फिर रसीद छोड जाते है ताकि भूल न जाऊ।" – याकोव लुकीच उठा और शीशे के पीछे हाथ डालकर उसने, कतरी हुई मूछो मे मुस्कराते हुए कागजो का पुलिदा निकाला।

"ये रही रसीदे कि सन् इक्कीस मे मैने क्या-क्या दिया और दिया मैने उन्हे अनाज भी, मास भी और चमडा भी, ऊन भी मुर्गिया भी और पूरे के पूरे बैलो को भी वसूली के दफ्तर मे हाककर ले गया था। और ये रही लगान की रसीदे और बीमे वगैरह की रसीदे भी है और चिमनी से निकलते धुए का भी टैक्स दिया, इसका भी टैक्स दिया कि बाडे मे मवेशी सही-सलामत है जल्दी ही इन कागजो से बोरी भर जायेगी। मतलब यह, अलेक्सांद्र अनीसी-

मोविच, जमीन मेरा पेट भरती थी और मैं परायों का। मेरी चमड़ी कोई एक बार थोड़ी उतारी गयी, पर हर बार नयी आ जाती थी। पहले-पहल दो बछड़ों को पाला, वे बड़े हो गये। एक को मैंने सरकार को मांस के लिये दे दिया। बीवी की सिलाई की मशीन बेचकर दूसरा खरीदा। कुछ वक्त के बाद, सन् पच्चीस मे अपनी गायों मे एक जोड़ी और हो गयी। इस तरह मेरे पास दो जोड़ी बैल और दो गायें हो गयी। वोट मेरी नहीं छीनी, पर आगे के लिये मेरा नाम मझोले किसानो की सूची म दर्ज हो गया।"

"घोड़े है तुम्हारे पास?" अतिथि ने पूछा।

"जरा रुकिये, घोड़ों के बारे मे भी बताता हू। मैंने पड़ोसन से खालिस नसल की दोन की घोड़ी का साल भर का बछेड़ा खरीदा, गाव मे अकेली ऐसी घोड़ी बची थी। बछेड़ा बड़ा होकर ऐसी उम्दा घोड़ा निकला कि पूछो मत! कद छोटा रिसाले के घोड़े से कुछ छोटा पर तेज ऐसी – ढूंढे न मिले! जिले मे ग्रामीण जीवन की नुमायश मे मझे उसके लिये इनाम और खालिस नसल का प्रमाण-पत्र मिला। मे कृषिशास्त्री का कहना मानने लगा, जमीन की ऐसे सेवा करता जैसे बीमार लुगाई की। मकई मेरी गाव मे सबसे बढ़िया, फसल सबसे ज्यादा। मै बीज को भिगोता भी था और बर्फ का खेत से उड़ने न देता था ताकि धीरे-धीरे पिघलकर नमी देती रहे। मतलब यह कि मैं सभ्य किसान बन गया और इसके बारे मे मेरे पास प्रशस्ति-पत्र भी है जिले के भूमि विभाग का। वह देखिये।"

अतिथि ने उस ओर नजर डाली जिधर याकोव लूकीच की उंगली उठी हुई थी वहा लकड़ी के चौखटे मे जड़ा लाख की मुहरवाला सर्टिफिकेट देव प्रतिमाओं के पास वारोशीलोव के फोटो के साथ टगा था।

जी हा, सार्टिफिकेट दिया और कृषिशास्त्री मेरे गेहू की बालियां अपने अफसरों को दिखाने के लिये रोस्तोव नगर ले गया था,' याकोव लूकीच गर्व के साथ बोला। 'शुरू मे मै पाच देस्यातीना पर खेती करता था जब पावों पर खड़ा हो गया, तो पूरा जोर लगाकर तीन, चार, सात कुरा* तक बोये मैंने हुई न बात' मै अपने बेटे और

---

* कुरा – चार हक्टेयर। स०

बहू के साथ काम करता था। बस दो बार जब ज्यादा काम था मजदूर को रखा था। इन बरसो मे सोवियत सत्ता क्या हुक्म देती थी? – जितना हो सके उससे भी अधिक बोओ! और मै बोता था, इतना बोता था कि दिन मे तारे नजर आने लगते, भगवान की सौगंध! पर अब, अलेक्सांद्र अनीसीमोविच, यकीन मानिये – डरता हू! डरता हू कि इन सात रूगो की जोत की वजह से मेरा सब कुछ छिन जायेगा, बेदखली करवा देगे। हमारी सोवियत के अध्यक्ष, लाल छापेमार कामरेड रजम्योत्नोव ने, उस अंद्रेई के बच्चे ने मुझे इसमे फसवा दिया, उसकी मा की ऐसी की तैसी! कहता मुझसे 'याकोव लुकीच, जितना ज्यादा हो सकता है बो, सोवियत सत्ता की मदद कर, उसे आजकल अनाज की सख्त जरूरत है।' पहले मुझे शक ही था पर अब लगने लगा है कि यह 'ज्यादा से ज्यादा' मेरी टगडी तुडवा देगा भगवान की कसम!"

"तुम्हारे यहा सामूहिक फार्म मे नाम लिखे जा रहे है?" मेहमान ने पूछा। वह पलग के पास, हाथो को पीठ के पीछे पकडे खडा था चौडे कधे, बडा सिर और अनाज से ठसाठस भरे बोरे की तरह गठीला।

सामूहिक फार्म मे? अभी तक तो इतना जोर नही था पर कल गरीबो की सभा होगी। शाम को अधेरा होने से पहले घर-घर का फेरा लगाकर बता गये है। अपने तो बडे दिन से शोर मचा रहे है। 'शामिल हो, शामिल हो'। पर लोगो ने साफ-साफ इनकार कर दिया किसी ने अपना नाम नही लिखवाया। कौन खुद अपने पैर कुल्हाडा मारे? शायद कल भी फुसलायेगे। कहते है कि आज शाम इलाके से कोई मजदूर आया है और सबको सामूहिक फार्म मे हाकेगा। अत आ रहा है हमारी जिदगी का। कमर तोडकर कुछ कमाया, मरते दम हाथो मे छाले पडे रहेगे और अब सारा माल एक ढेर मे डाल दो, मतलब ढोर भी, अनाज भी, मुर्गे-मुर्गिया भी, मकान भी? वही बात हुई न राह चलते को बीवी देकर खुद कोठे पर जा और नही तो क्या। आप खुद ही बताइये, अलेक्सांद्र अनीसीमोविच, मै तो सामूहिक फार्म को बैलो की जोडी (एक जोडी तो मास का व्यापार करनेवाले सगठन को बेच चुका हू), बछेडे के साथ घोडी, सारे औजार, अनाज दूगा और दूसरा – जुओ से भरी अटी। मै और वह अपना-

अपना माल मिला लेगे और मुनाफा आधा-आधा बाटेगे। भला मुझे यह सुहायेगा? क्या पता वह जिदगी भर आराम मे लेटा मीठी रोटी के सपने ही देखता रहा और मै क्या कहू! जी मिचलाता है यह सब सोच के। अच्छा छोडिये भी ये बाते। आप कैसे है? किसी दफ्तर मे आजकल नौकरी करते है या कोई धधा?"

मेहमान याकोव लुकीच के पास आकर स्टूल पर बैठ गया और कागज मे तबाकू लपेटकर सिगरेट बनाने लगा। वह तबाकू की थैली मे नजरे गडाये हुए था और याकोव लुकीच उसकी पुरानी कमीज के तग कालर को टकटकी लगाये देख रहा जो कत्थई गर्दन मे गडा जा रहा था, और इससे टेटुए के पास गर्दन की नसे फूली हुई थी।

"लुकीच, तुम मेरे दस्ते मे थे याद है, एक बार येकातेरीनोदार* मे, शायद उन दिनो जब हम पीछे हट गये थे, कज्जाको के साथ सोवियत सत्ता के बारे मे मेरी बातचीत हुई थी? मैने तभी कज्जाको को चेतावनी दी थी, याद है? मैने कहा था 'यारो बहुत भयकर गलती कर रहे हो! कम्युनिस्ट तुम्हे शिकजे मे कस देगे, कचूमर निकाल देगे तुम्हारा। पछताओगे तुम, पर देर हो चुकी होगी।'" वह चुप हो गया, नीली-सी आखो की पुतलिया सिमटकर बिदु बन गयी, और वह मुस्कराया। "क्या मेरी बात सही नही निकली? मै नावोरोसीस्क से अपने लोगो के साथ नही गया। जा नही पाया। तब हमारे साथ गद्दारी की गयी थी स्वयसेवी और मित्र-देश** हमे अकेले छोड गये। मै लाल सेना मे भरती हो गया, स्क्वाड्रन कमाडर रहा, पोलिश मोर्चे पर जाते समय उनके यहा एक आयोग था, फिल्टरेशन आयोग, भूतपूर्व अफसरो की जाच का इस आयोग ने मुझे पद से हटा दिया और गिरफ्तार करके क्रातिकारी अदालत भेज दिया। सच कहू, कर देते कामरेड मेरा काम तमाम या यातना शिविर मे ठूस देते। पता है क्यो? कुतिया की औलाद, मेरे गाव के किसी कज्जाक ने

* अब क्रास्नोदार शहर। – स०

** स्वयसवी – दनीकिन की सेना के श्वेत गार्ड मित्र-देश – एन्टेट गट के देश इगलैड, स० रा० अमरीका, फ्रास व अन्य। – स०

रिपोर्ट कर दी कि मैंने पोदत्योल्कोव* को मृत्युदंड देने में भाग लिया था। रास्ते में मैं भाग गया... बहुत दिनों तक छिपकर रहा, दूसरे नाम से रहता रहा, और सन् तेईस में अपने कस्बे में लौट आया। इसके बारे में दस्तावेज़ कि मैं कभी लाल सेना में स्क्वाड्रन कमांडर था मैंने संभालकर रखा हुआ था, अच्छे लोगों से पाला पड़ा – बस मैं ज़िंदा बच गया। शुरू-शुरू में दोनचेका** के राजनीतिक ब्यूरो में पूछ-ताछ के लिये बुलाया जाता था। किसी तरह उनसे पिंड छुड़ाया और मास्टर बन गया। हाल ही तक पढ़ाने का काम करता रहा। पर अब... अब बात दूसरी है। काम से उस्त-खोप्योर्स्क जा रहा हूं, रास्ते में पुराने फ़ौजी साथी की तरह तुम्हारे पास रुका हूं।"

"मास्टर थे? यह बात है... आप पढ़े-लिखे आदमी हैं, पोथे पढ़े हैं। यह तो बताइये कि अब होगा क्या? ये सामूहिक फ़ार्म हमें ले कहां जायेंगे?"

"कम्युनिज़्म में, भइया। असली कम्युनिज़्म में। मैंने कार्ल मार्क्स को भी पढ़ा है और कम्युनिस्ट पार्टी के प्रसिद्ध घोषणापत्र को भी। पता है सामूहिक फ़ार्मों का क्या अंत होगा? पहले सामूहिक फ़ार्म होगा फिर कम्यून – संपत्ति का पूर्ण सफ़ाया। न केवल बैल बल्कि बच्चे भी तुमसे सरकार छीन लेगी। सब कुछ आम होगा... बच्चे... बीवियां, प्याले... चम्मच, सब। तुम हंस का शोरबा खाना चाहोगे पर तुम्हें सूखी रोटी खिलायेंगे। बंधुआ मजदूर बन जाओगे।"

"पर अगर मैं यह न चाहूं?"

"अरे, तुमसे पूछेगा कौन।"

"यह कैसे हो सकता है?"

"बस ऐसे ही।"

"बड़ी चालाकी की बात है!"

* पोदत्योल्कोव फ्योदोर ग्रिगोर्येविच (१८८६-१९१८) – क्रान्तिकारी कज्जाकों के एक नेता, दोन प्रदेश में सोवियत सत्ता की सुदृढ़ता के लिये संघर्ष के सक्रिय सेनानी। सन १९१८ के मार्च में दोन सोवियत समाजवादी जनतंत्र की स्थापना हुई। पोदत्योल्कोव उसके जन कोमिस्सारों की परिषद के अध्यक्ष चुने गये थे। – सं०

** दोन क्षेत्र में प्रतिक्रान्तिकारियों, भीतरघातियों और जमाखोरों-मुनाफ़ाखोरों से संघर्ष के लिये गठित आयोग। – सं०

"तुम क्या मोचते थे?। अच्छा अब मै तुमसे पूछना चाहता हू भला आगे इसी तरह रहा जा सकता है?"

"आगे है ही क्या?"

"अगर नही है तो कुछ करना चाहिये, मघर्ष करना चाहिये।"

'आप भी क्या कहते है अलेक्साद्र अनीमीमोविच! हमने कोशिश की थी, सघर्ष किया था बिल्कुल अमभव है। मोच भी नही मकता इसके बारे मे!"

"पर तुम कोशिश तो करो।" मेहमान बिलकुल मटकर बैठ गया, उसने रसोई के कसकर बद दरवाजे की ओर नजर मोडी और अचानक उसके चेहरे का रग उड गया, वह फुसफुसाकर बोला 'मै माफ-साफ तुमसे कहे देता हू मुझे तुम पर भरोसा है। हमारे कस्बे के कज्जाक विद्रोह की तैयारी कर रहे है। और तुम यह मत सोचो कि सब बस ऐसे ही हो रहा है कि उठाया और कर डाला। हमारे सबध मास्को मे है, उन जनरलो मे है जो अब लाल सेना म नौकरी करते है, उन इजीनियरो मे है जो फैक्टरियो और कारखानो म काम करते है और तो और विदेशो मे भी हमारा सपर्क है। हा-हा! अगर हम एक होकर अभी विद्रोह करे तो वसत तक विदेशी शक्तियो की मदद से दोन प्रदेश साफ हो जायेगा। वसत म तुम अपने बीज से, सिर्फ अपने लिये ही अनाज बोओगे अच्छा, बाद मे बताना। हमारे इलाके मे हमसे सहानुभूति रखनेवाले बहुत है। उन सबको एक करके सगठित करना है। इसी काम मे मै उस्त-खोप्योर्स्क जा रहा हू। तुम हमारा साथ दोगे? हमारे सगठन मे तीन सौ से अधिक भूतपूर्व कज्जाक सैनिक शामिल हो गये है। दुब्रोव्स्की वोयस्कोव्स्की, तुब्यान्स्की और मालीय ओल्खोवात्स्की मे हमारे लडाकू दल है। यहा गेम्याची मे भी ऐसे ही दल का गठन करने की जरूरत है अच्छा, बोलो।

"लोग सामूहिक फार्मो और अनाज-वसूली मे असतुष्ट है"

'रुको जरा बात लोगो के बारे मे नही, तुम्हारे बारे मे हो रही है। मै तुमसे पूछ रहा हू। बोलो?'

"भला ऐसी बातो का एकदम फैसला थोडे ही किया जाता है? बात फासी के फदे मे सिर घुसाने की है"

'सोच लो हुक्म मिलते ही एकसाथ सभी गावो से चढाई शुरू करेगे। तुम्हारे इलाके के कस्बे पर कब्जा कर लेगे, मिलीशिया

और कम्युनिस्टो का एक-एक करके उनके घरो मे ही काम तमाम कर देगे, और आगे तो दावानल की तरह फैल जायेगी विद्रोह की आग।"

"पर है क्या हमारे पास?"

' मिल जायेगा! तुम्हारे पास भी तो कुछ होगा?"

"क्या पता कही पडी है टूटी-फूटी, आस्ट्रियन बदूक "

"बस शुरू करने की देर है और एक हफ्ते बाद विदेशी जहाज तोपे भी और रायफले भी ले आयेगे। हवाई जहाज तक होगे हमारे पास। क्यो?"

"येसाऊल साहब, कुछ सोचने का वक्त दे! एक दम हाथ न बाधे मेरे "

अतिथि ने पलग मे पीठ टिकायी, उसके चेहरे का रग अभी नही लौटा था, वह फटे स्वर मे बोला

"हम सामूहिक फार्म मे नही बुला रहे, कोई जोर-जबर्दस्ती नही कर रहे। तुम्हारी जो मर्जी हो पर जबान देख लेना, लुकीच! छह तुम्हारे हिस्से की और सातवी " और उसने जेब मे रिवाल्वर की टिक-टिक करती मैगजीन उगली से घुमायी।

"जबान पर मेरी पूरा भरोसा रख सकते है। पर आपका काम जोखिम भरा है। मै छिपाऊगा नही ऐसे काम मे शामिल होते हुए डर लगता है। पर जिदगी ने कोई चारा नही छोडा।" कुछ चुप रहकर वह बोला "अगर अमीरो को न सताया जाता तो मै गाव का नबर एक आदमी होता। अगर आजादी होती तो मै अपनी मोटर रखता!" — पल भर के मौन के बाद मेजबान मलाल के साथ बोला। "पर अकेले इस काम को करने पलक झपकते गर्दन मरोड देगे।"

'पर अकेले क्यो?' हताश स्वर मे अतिथि ने उसकी बात काटी।

"नही, यह तो मै ऐसे ही कह रहा हू, पर दूसरे क्या करेगे? मतलब गाववाले? जनता देगी भी हमारा साथ?

"जनता तो भेडो के रेवड की तरह है। उसे हाकना होता है। तो तुमने कर लिया फैसला?"

"मैने कह तो दिया, अलेक्सान्द्र अनीसीमोविच "

"मुझे ठीक से मालूम होना चाहिये कर लिया तुमने फैसला या नही?"

"दूसरा चारा ही नही है इसलिये कर रहा हू फैसला। पर आप मोचने की कुछ मोहलत तो दे। कल सुबह अतिम फैसला बता दूगा।"

"इमके अलावा तुम्हे भरोमेमद कज्जाको को राजी करना होगा। ऐमे लोगो को ढूढना जो मावियत मत्ता मे मार खाये बैठे है," पोलोव-त्मव अब हुक्म देने लगा।

"ऐमी जिदगी मे कौन नही खाये बैठा।"

"और तुम्हारा बेटा?'

"हाथ मे हथेली कहा जायगी? जिधर मै उधर वह।'

"ठीक-ठाक है न मजबूत जवान है?"

"बढिया कज्जाक है," मौन गर्व के माथ मेजबान बोला।

मेहमान के लिय कमरे मे मोटे स्लेटी नमदे और ममूर के कोट का बिस्तर बिछा दिया गया। उसने बूट उतारे, पर कपडो मे ही लेट गया, ठडे परो की गद्दीवाले तकिये पर गाल टिकाते ही उमे नीद आ गयी।

भोर मे पहले याकोव लुकीच ने बगल के कमरे मे मोनेवाली अपनी अस्मी वर्षीया मा को जगाया। सक्षेप मे उसने अपने भूतपूर्व कमाडर के आने का प्रयोजन उसे बताया। बुढिया कान पर हाथ लगाकर पलग मे अपनी काली नसो म ढकी मखी गठिया से टेढी टागे लटकाकर मुन रही थी।

"माता जी आशीर्वाद दोगी?' याकोव लुकीच घुटनो के बल खडा हो गया।

'लडो लडो इन अधर्मियो मे मेरे लाल! भगवान आशीर्वाद देगे। गिरजे बद कर रहे है पापी पादरियो का जीना हराम कर दिया लडो इन मे!

सवेरे याकोव लुकोच ने मेहमान को जगाया

"कर लिया फैसला! हुक्म दीजिये!"

'पढकर दस्तखत कर दो। पोलोवत्सेव ऊपर की जेब से कागज निकालकर बोला।

"भगवान हमारे साथ है! मै दोन की महान सेना का कज्जाक प्रिय दोन मुक्ति मघ' मे शामिल होता हू अपने अधिकारियो के आदेश पर मै खून की आखिरी बूद तक शक्ति और सभी साधनो मे ईसाई धर्म क कट्टर शत्रुओ और रूमी जनता के शोषको—

कम्युनिस्टो-बोल्शेविको से लडने का वचन देता हू। अपने अधिकारियो और कमाडरो के आदेशो का पूरी आज्ञाकारिता से पालन करूगा। मै अपने सनातन पितृदेश पर अपना सर्वस्व अर्पित करने का वचन देता हू। मेरे हस्ताक्षर इसका प्रमाण है।"

४

बत्तीस आदमी – ग्रेम्याची के कार्यकर्त्ता और दरिद्रजन एक ही हवा मे साम ले रहे थे। दवीदोव कुशल वक्ता नही था पर वे लोग शुरू मे उसकी बातो को इतने ध्यान से सुन रहे थे जैसे किसी कथावाचक को भी नही सुना जाता।

"साथियो, मै लाल पुतीलोव कारखाने का मजदूर हू। हमारी कम्युनिस्ट पार्टी और मजदूर वर्ग ने मुझे सामूहिक फार्म का गठन और हमारा खून चूसनेवाले कुलको का सफाया करने मे आपकी मदद के लिये भेजा है। मै ज्यादा नही बोलूगा। आप सबको सामूहिक फार्म मे शामिल होना चाहिये, अपनी जमीन, अपना साजोसामान और मवेशी मिला लेने चाहिये। पर सामूहिक फार्म मे किसलिये? इसलिये कि अब आगे इस तरह जीना असभव है! अनाज की कमी इसलिये है कि कुलक उसे जमीन मे गाडकर सडा देता है, लड-झगडकर उससे अनाज वसूल करना पडता है! आप तो खुशी से दे देते, पर खुद आपको अनाज की कमी है। मझोले और गरीब किसानो के अन्न से सोवियत सघ का पेट नही भरा जा सकता। ज्यादा जमीन पर बोना चाहिये। पर तुम लकडी के हल या एक फालवाले हल से ज्यादा जमीन कैसे जोत सकते हो? सिर्फ ट्रैक्टर ही इसका इलाज है। फैक्ट! मुझे नही मालूम आपके यहा दोन प्रदेश मे एक हल से पूरे पतझड मे कितनी जमीन जोती जा सकती है ..."

"दिन-रात हल की मठ पकडे रहो तो सर्दियो तक कोई बारह देस्यातीना जोत सकते हो।"

"बस! बारह? और अगर जमीन कडी हो?"

"अरे आप भी क्या बाते कर रहे है?" तीखा महिला स्वर बोला। "एक हल के लिये तीन-चार जोडी बढिया बैलो की जरूरत

है पर हमारे पास कहा से आये? है, पर वह भी हरेक के पास नही, मरियल बैलो की जोडी ज्यादातार उन बैलो से जोतते है, धनवालो मे। अमीरो के पास है यह सब, हवा तक पीछे से धकेलकर उनकी मदद करती है "

"अरे बात इसकी नही हो रही! दामन मुह मे ठूसकर चुप बैठी रह," किसी ने भारी, फटी-फटी आवाज मे कहा।

"अरे तू अकलवाले! जाके अपनी बीवी को सिखा, मुझे इसकी जरूरत नही!"

'और ट्रैक्टर से? "

दवीदोव उनके चुप होने का इतजार करके बोला

"और ट्रैक्टर से भी. हमारे पुतीलोव कारखानेवाले को ही लो, अगर कुशल ट्रैक्टर चालक हो तो दिन भर मे दो पालियो मे बारह देस्यातीना भी जोती जा सकती है।"

सभा मे भाग लेनेवाले अवाक् रह गये। किसी के मुह से अनायास निकल पडा

"तेरी मा की !"

'यह हुई न बात! ऐसे घोडे से हल चलाना हो नसीब "

किसी ने ईर्ष्या भरी उसास छोडते हुए कहा।

दवीदोव घबराहट के कारण सूखे होठो पर हाथ फेरकर आगे बोला

"हम अपने कारखाने मे आपके लिये ट्रैक्टर बनाते है। ट्रैक्टर खरीदना गरीब या मझोले किसान के बस की बात नही है। मतलब यह कि उसे खरीदने के लिये खेत-मजदूरो, गरीब और मझोले किसानो को एक होना चाहिये। आप जानते है कि ट्रैक्टर ऐसी मशीन है जिसे जमीन के छोटे टुकडे पर चलाने मे नुकसान ही है, उसे बडी जोतो की जरूरत है। छोटी-छोटी सहकारिताओ का फायदा उतना ही है जितना एक जू से तेल।"

"अरे इससे भी कम!" पीछे से किसी की भारी आवाज सुनायी पडी।

"तब क्या किया जाये?' दवीदोव फब्ती पर गौर किये बिना आगे बोला, "पार्टी ने सपूर्ण सामूहिकीकरण की योजना बनायी है ताकि ट्रैक्टर से जोडकर आपको दरिद्रता से उबारा जा सके। अपनी

मृत्यु से पहले कामरेड लेनिन क्या कहा करते थे? सिर्फ़ सामूहिक फ़ार्म में ही किसान ग़रीबी से छुटकारा पा सकता है। नहीं तो उसका भट्टा बैठ जायेगा। कुलक-पिशाच उसका सारा ख़ून चूस लेगा ... और आपको पूरी दृढ़ता के साथ निर्देशित मार्ग पर चलना चाहिये। मज़दूरों के साथ संघ बनाकर सामूहिक किसान सभी कुलकों और दुश्मनों का सफ़ाया कर देंगे। मैं बिल्कुल ठीक कह रहा हूं। अब मैं आपकी सहकारिता की चर्चा करूंगा। वह छोटी-सी, कमज़ोर है और इस कारण उसका हाल बहुत दयनीय है। इस कारण सिर्फ़ शत्रुओं का लाभ हो रहा है ... अरे लाभ-वाभ कुछ नही बस उससे सिर्फ़ नुकसान ही हो रहा है! पर हमें इस सहकारिता को सामूहिक फ़ार्म में बदलना चाहिये, यह उसकी रीढ़ बनेगी और उसमे मंझोले किसान जुड़ जायेंगे ..."

"रुको, मैं तुम्हारी बात काट रहा हूं!" चित्तीदार चेहरेवाला भेंगा द्योम्का उशाकोव खड़ा हुआ, एक समय वह इस सहकारिता का सदस्य रह चुका था।

"पहले अनुमति मांग, फिर बोलना," दवीदोव और अंद्रेई रज़्म्योत्नोव के साथ मेज़ पर बैठे नागूल्नोव ने सख़्ती के साथ उसे रोका।

"मैं बिना पूछे ही कहूंगा," द्योम्का हाथ झटककर बोला, उसकी आंखें ऐसी तिरछी हुईं, लगता था कि वह एक साथ सभा में बैठे लोगों और मंच की ओर देख रहा हो – "क्यों हम, माफ़ कीजिये, घाटे में रहे और सोवियत सत्ता के लिये बोझ बन गये? मैं पूछता हूं, क्यों हम ऋण देनेवाली कपनी की रोटी मुफ़्त मे तोडनेवालो की तरह रहे? हमारी सहकारिता के पूजनीय अध्यक्ष की वजह से! अर्काशा बदलू की वजह से!"

"कुत्ते की तरह भौंक रहा है!" पीछे की पंक्तियो से पतली आवाज़ सुनायी पड़ी और अर्काशा कोहनियो से धकेलकर रास्ता बनाता हुआ मेज़ के पास आया।

"मैं सिद्ध कर दूंगा!" द्योम्का की आंखें नाक के बांसे को घूरने लगीं। रज़्म्योत्नोव मेज़ पर उभरी हड्डियोंवाले अपने हाथ से घूसे मार रहा था पर उसने कोई ध्यान नही दिया। अर्काशा की ओर मुड़कर वह बोला. "नहीं दे सकता तू सफ़ाई अपनी! हमारी सहकारिता का भट्टा इसलिये नहीं बैठा कि हम कम थे बल्कि तेरी अदला-बदली के कारण। और 'कुत्ता' कहने के लिये मैं तुझे मज़ा चखा दूंगा।

बिना किमी मे पूछे मोटर माइकिल के बदले माड नही दिया ? माड के बदले ही तो लाया ! अडे देनेवाली मुर्गियो की अदला-बदली की किसे सूझी "

"फिर झूठ बक रहा है !" अर्काशा उसकी बात काटे जा रहा था।

बग्घी के बदले तीन उम्दा मेढो और दो साल को बछिया देने के लिय तूने नही तो किमन कहा था ? मौदबाज कही का ! ठीक ही तो कहा मैने !" द्योम्का विजयोल्लास के माथ बोला।

'अरे होश मे आओ ! क्यो तुम मुर्गो की तरह लड रहे हो !" नागुलनोव ने उन्हे शात कराया, उसका लाल गाल फडकने लगा।

"मुझे भी बोलने दो," मेज के पास आकर अर्काशा बोला।

वह अपनी सुनहरी दाढी को मुट्ठी मे भरकर बोलना ही चाहता था पर दवीदोव ने उसे हटा दिया

"पहले मै अपनी बात पूरी कर लू और अब कृपया परेशान मत करो हा तो मै साथियो, कहता हू सिर्फ सामूहिक फार्म ही इसका इलाज है "

'अरे तुम हमे मत मनाओ ! हम तो वैसे भी सामूहिक फार्म म शामिल हो जायेगे," दरवाजे के पास बैठे लाल छापेमार पावेल ल्युबीश्किन ने उसकी बात काट दी।

"हम राजी है सामूहिक फार्म के लिये !'

'सब मिलकर तो किसी से भी टक्कर ले सकते है।"

'पर अक्ल से काम लेना चाहिये।'

वही ल्युबीश्किन कुर्सी से खडा हुआ, उसने अपनी काली टोपी उतारी – उसका कद ऊचा, कधे चौडे – पूरे दरवाजे को घेरे थे, वह जोर से चिल्लाया

"अरे, अजीब आदमी हो तुम भी ! क्यो हमारे बीच सोवियत सत्ता का प्रचार कर रहे हो ? अरे लडाई करके हमने उसे यहा अपने पावो पर खडा किया, खुद ही हमने उसे अपन कधे का सहारा दिया ताकि डगमगा न जाये। हमे मालूम है कि सामूहिक फार्म क्या है और हम उसमे शामिल होगे। हमे मशीने दो !" उसने फटी खालवाली अपनी हथेली पसारी। "ट्रैक्टर वाकई जबर्दस्त चीज है, मानते है, पर तुम मजदूरो ने कम बनाये है, और इसीलिये हम तुम्हे फटकारते

है! मुसीबत तो यह है कि हमारे पास कोई चारा नही। और बैलो मे तो सामूहिक फार्म के बिना भी हल चलाया जा सकता है, बस एक हाथ से हाकते और दूसरे से आसू पोछते रहेगे। अरे, मै तो खुद सामूहिक फार्मों के अभियान मे पहले ही कलीनिन* को चिट्ठी लिखने की सोच रहा था, कि किसानो को कोई नया जीवन शुरू करने मे मदद दिलवाये। पहले सालो मे तो पुराने शासन की तरह – लगान चुकाओ, और जैसे मर्जी हो गुजारा करो वाली बात थी। और कम्युनिस्ट पार्टी किसलिये है? ले ली हमने सत्ता अपने हाथ मे, और आगे क्या? वही पुरानी बात चलाओ हल – अगर उसमे जोतने को ढोर है तो। और अगर किसी के पास नही है, तो? हाथ पसारकर भीख मागे गिरजे के सामने? या फिर सोवियत सेठों और सहकारितावालो के लिये काम करना? अमीरो को जमीने चढा दी पट्टे पर, उन्हे खेत मजदूर रखने की इजाजत दे दी। क्या सन् अठारह मे क्राति ने यही करने को कहा था? आपने तो उसकी पलके मूद डाली है। और जब कहो 'आखिर किसलिये सघर्ष किया था?' तो वे कर्मचारी, जिन्होंने बारूद की गध तक नही सूघी, इन शब्दो पर हसते है और उनकी आड मे तरह-तरह के श्वेत प्रतिक्रातिकारी दरिंदे साजिशो के जाल बुनते है! तुम बेकार की बाते मत करो! बहुत सुन चुके हे हम सुदर-सुदर बाते। तुम हमे मशीन दो – उधार पर या अनाज के बदले, पर कोई हल-वल नही बल्कि बढिया मशीन! ट्रैक्टर दिलवाओ, जिसके बारे मे तुम बता रहे थे! मझे यह किसलिये मिला है?" वह बेच पर बैठे लोगो के घुटनो को फादता मेज की ओर चल पडा, रास्ते मे वह शलवारनुमा पतलून का नाडा खोलने लगा। पास जाकर उसने कमीज उठायी और ठोडी के नीचे दबा ली। गेहुए पेट और कूल्हे पर घावो के भयकर निशान थे। "प्रतिक्रातिकारियो का यह तोहफा किसलिये मिला मुझे?"

"बेशर्म कही का! पूरी पतलून ही उतार दे ना!" द्योम्का उशाकोव के पास बैठी विधवा अनीसिया क्षोभ के साथ पतली आवाज मे चिल्लायी।

---

* कलीनिन मिखाईल इवानोविच (१८७५-१९४६) सोवियत सघ के प्रथम राष्ट्रपति। – अनु०

"तू चाहती है?" द्योम्का ने उसकी ओर तिरछी नजर डालकर कटाक्ष किया।

"चुप भी हो जाओ अनीमिया बुआ! मुझ मजदूर आदमी को अपना घाव दिखाते शर्म नही आती। देखने दो! अगर आगे भी ऐसे ही जीना है तो कोई फर्क नही पडता, जल्दी ही इसे ढापने के लिये भी कुछ नही बचेगा! अब भी नाम की ही पतलून है। दिन मे लड-कियो के सामने इसे नही पहना जा सकता, नही तो देखकर डर जायेगी।"

पीछेवाली कतारो मे ठहाके गूज उठे पर ल्युबीश्किन ने सभी मे नजर दौडायी और फिर लैम्प की जलती बत्ती की चट-चट सुनायी पडने लगी।

'शायद मै इसीलिये प्रतिक्रातिकारियो मे लडा कि फिर से अमीर मुझसे बेहतर जिदगी गुजारे? ताकि वे मालपूडे खाये और मै प्याज के साथ सूखी रोटी? क्यो इसीलिये, कामरेड मजदूर? तुम सकार, बीच मत टोकाआ! मै साल मे एक बार बोलता हू बोलने दो।

"हा-हा बोलो, दवीदोव ने सिर हिलाकर कहा।

'बोल रहा हू। इस साल मने तीन देस्यातीना गेहू बोया। मेरे घर मे तीन बच्चे, अपाहिज बहन और बीमार बीवी है। दे दिया मैने अनाज का अपना कोटा रजम्योत्नोव?'

हा, दे दिया। शोर क्या मचा रहा है।'

मचाऊगा शोर! और कुल - फ्रोल नकट ने उसकी मा !

'जबान सभाल! नागुल्नोव मेज पर घूसा पटककर बोला।

'फ्रोल नकटे ने निर्धारित कोटा दिया नही'

"पर उस पर तो अदालत न जुर्माना ठोका और अनाज भी वसूल कर लिया,' रजम्योत्नोव बोल पडा उसकी आखे चमक रही थी वह बडे आनद के साथ ल्युबीश्किन की बाते सुन रहा था।

"तुझे यहा आकर देखना चाहिये, सुस्त घोडे!' दवीदोव को इलाकाई पार्टी समिति का सचिव याद आ गया।

"इस साल फिर उसे आदर के साथ फ्रोल इग्नातिच कहकर बुलाओगे! और बसत मे वह फिर मुझे काम पर बुलायेगा!" और उसने दवीदोव के पैरो मे अपनी टोपी पटक दी। "तुम मुझे सामूहिक फार्म के बारे मे क्या कह रहे हो?! कुलको की रीढ तोड दो तब शामिल

होगे! हमे उनकी मशीने, उनके बैल, उनकी ताकत दे दो, तभी हम बराबर होगे! नही तो बस बाते ही बाते सुनायी देती है, 'कुलक का सफाया करो' और वह है कि साल-ब-साल बढता जा रहा है, खर-पतवार की तरह, हमे पनपने नही देता।"

'हमे फ्रोल का माल दो और अर्काशा बदलू उसके बदले हवाई-जहाज ले आयेगा," द्योम्का बोल पडा।

"हो-हो-हो!"

"पलक झपकते ही अदला-बदली कर डालेगा।"

'आप लोग गवाह है मेरी बेइज्जती के!"

"चुप! सुनने नही दे रहा, चुप!"

"तुम अधर्मियो को किसी चीज का डर है भी?"

"अरे ओ, चुप भी रह!"

दवीदोव मुश्किल से लोगो को शात करा पाया।

"अरे यही तो हमारी पार्टी की नीति है! खुले दरवाजे को क्यो ठकठका रहे हो? वर्ग के रूप मे कुलक का सफाया करके उसकी सारी जायदाद सामूहिक फार्मो को दे देनी चाहिये, फैक्ट! और कामरेड छापेमार, तुमने बेकार ही टोपी मेज के नीचे पटक दी, तुम्हारे सिर को उसकी अभी जरूरत पडेगी। अब पट्टे पर जमीन चढाने और बटाई मजदूर रखने की बात ही नही हो सकती! कुलक को हम इसलिये सह रहे थे कि इसकी जरूरत थी वह सामूहिक फार्मो से ज्यादा अनाज देता था। पर अब उल्टा होगा। कामरेड स्तालिन ने इसके अकगणित का हिसाब लगाकर कहा कुलक को हमारे जीवन से मुअत्तल कर दो! उसकी सपत्ति सामूहिक फार्मो को दे दो तुम मशीनो का रोना रो रहे थे सामूहिक फार्मो की हालत सुधारने के लिये पचास करोड रूबल दिये जा रहे है, इस पर क्या बोलोगे? सुना है तुमने इसके बारे मे? तो क्यो बिना बात शोर मचा रहे हो? पहले सामूहिक फार्म तो पैदा करो फिर मशीनो की चिता करना। और तुम हो कि पहले जुआ खरीदना चाहते हो और फिर जुए के नाप का घोडा। हस क्यो रहे हो? ठीक ही तो कह रहा हू!"

"हो गयी ल्युबीश्किन की टाय-टाय फिस्स!"

"हो-हो"

"अरे हम तो जी-जान से सामूहिक फार्म मे शामिल होगे!"

"अरे इसने जुए के बारे मे क्या खूब कही "

"अरे अभी रात को ही तैयार है।"

"लिखो नाम अभी।"

"कुलको पर चढाई के लिये ले चलो।"

"कौन सामूहिक फार्म मे नाम लिखवाना चाहता है, हाथ उठाओ," नागूल्नोव ने प्रस्ताव किया।

गिनने पर तैतीस हाथ निकले। किसी ने बहककर दोनो हाथ उठा दिये थे।

घुटन ने दवीदोव का ओवरकोट और कोट उतरवा दिये। उसने कमीज के बटन खोले और मुस्कराता हुआ लोगो के शात होने की प्रतीक्षा करने लगा।

"आप लोग बहुत सचेत है, फैक्ट! पर आप सोचते है कि सामूहिक फार्म मे शामिल हो गये और बस? नही, यह काफी नही है! आप गरीब लोग–सोवियत सत्ता का सहारा हैं। अरे, मा के लालो, खुद भी सामूहिक फार्म मे शामिल हो जाओ और हिचकिचाते मझोले किसान को भी अपने साथ खीचो।"

"वाह तुम उसे कैसे खीचोगे अगर वह नही चाहता? वह कोई बैल तो है नही कि सीगो पर रस्सी बाधी और हाक ले गये?" अर्काशा बदलू ने पूछा।

"उसे मनाओ, विश्वास दिलाओ! तुम हमारी सच्चाई के कैसे प्रचारक हो कि दूसरे को नही समझा सकते? कल सभा होगी। खुद पक्ष मे हाथ उठाना और अपने पडोसी–मझोले किसान को भी इसके लिये मनाना। और अब हम कुलको की बात करेगे। उनको उत्तरी कार्कोशियाई प्रदेश मे निर्वासित करने का फैसला करेगे या कुछ और?'

"हम राजी है।'

'जड से काट दो उन्हे!"

"नही, बेहतर तो यही होगा कि उन्हे जड समेत उखाड दो, न कि जड से काटो।" दवीदोव ने बात ठीक की और रजम्योत्नोव की ओर मुडकर बोला "कुलको की सूची पढकर सुनाओ। अब उनकी बेदखली का फैसला करेगे।"

अद्रेई ने फाइल से एक पन्ना निकालकर दवीदोव को थमा दिया।

"फ्रोल दामास्कोव। क्या वह सर्वहारा के इस दड के योग्य है?"

लोगों ने एकसाथ हाथ उठाये। पर गिनते समय दवीदोव को एक आदमी मिला जिसने हाथ नहीं उठाया।

"सहमत नहीं हो?" उसने पसीने के कणों से नम भौंहें सिकोड़ी।

"मैं निष्पक्ष हूं," देखने मे दब्बू, साधारण-से कज़्ज़ाक ने संक्षिप्त उत्तर दिया।

"क्यों?" दवीदोव ने कौतूहल के साथ पूछा।

"क्योंकि वह मेरा पड़ोसी है, उसने बहुत बार मेरा भला किया। इसीलिये मैं उस पर हाथ नही उठा सकता।"

"निकल जाओ फ़ौरन सभा से!" नागूल्नोव ने उचककर कांपती आवाज़ में आदेश दिया।

"नही, ऐसे नही करते, कामरेड नागूल्नोव!" दवीदोव ने उसे सख़्ती से टोका। "नागरिक, तुम नहीं जाओ! अपना तर्क समझाओ। तुम्हारे ख़याल से दामास्कोव कुलक है कि नहीं?"

"ये सब बातें मैं नही समझता – अनपढ़ हूं और सभा से मेरी छुट्टी कर दीजिये।"

"नही, कृपया तुम हमें बताओ तो कि उससे तुम्हें क्या-क्या नेमतें मिलीं?"

"वह हमेशा मेरी मदद करता था, बैल देता था, बीज उधार देता था ... और भी बहुत कुछ ... पर मै सत्ता के साथ गद्दारी नही कर रहा। मैं सत्ता का हामी हूं . ."

"क्या उसने तुमसे उसकी वकालत करने का अनुरोध किया था? पैसे दिये या अनाज इसके लिये? अरे तुम स्वीकार कर लो, डरो नहीं!" रज़्म्योत्नोव बीच में बोल पड़ा। "बोल भी: उसने तुझे क्या लालच दिया था?" और इस आदमी पर आती शर्म व अपने बेतकल्लुफ़ सवालों के कारण उसके होंठो पर अटपटी मुस्कान छा गयी।

"कुछ भी नहीं। तुम क्या जानते हो?"

"झूठ बोल रहे हो, तिमोफ़ेई! तुम्हें ख़रीदा जा चुका है, मतलब तुम कुलक के चाकर हो!" कोई चिल्लाया।

"जो चाहे कह लो, मर्ज़ी तुम्हारी है ..."

दवीदोव ने इस अंदाज़ में, मानो गर्दन पर छुरी टिका रहा हो उससे पूछा:

"तुम सोवियत सत्ता के पक्ष में हो या कुलक के? तुम, नागरिक,

गरीब वर्ग की नाक मत कटवाओ, सभा को साफ-साफ बताओ तुम किस के पक्ष मे हो?"

"अरे क्यो इस पर समय बर्बाद कर रहे हो!" रोष के साथ ल्युबीश्किन बोला। "वोद्का की एक बोतल मे इसे इसके चिथडो समेत खरीदा जा सकता है। तुझे देखकर तिमोफेई, दिल कसकता है!"

मतदान मे भाग न लेनेवाला तिमोफेई बोश्चोंव अत मे बनावटी आज्ञाकारिता के साथ बोला

"मै सत्ता के पक्ष मे हू। क्यो पड गये हो हाथ धोकर मेरे पीछे? अपनी अनपढता के कारण " पर दोबारा मतदान कराये जाने पर उसने स्पष्ट अनिच्छा के साथ हाथ उठाया।

दवीदोव ने अपनी डायरी मे लिखा "तिमोफेई बोश्चोंव, वर्गीय शत्रु के प्रभाव मे। समझाने की जरूरत है।"

सभा मे और चार कुलको की बेदखली का एकमत से अनुमोदन किया गया।

पर जब दवीदोव बोला

'तीत बोरोदीन। कौन पक्ष मे है?" सभा मे कष्टकर चुप्पी छा गयी। नागूल्नोव ने झेपी नजर से रजम्योत्नोव की ओर देखा। ल्युबीश्किन टोपी से माथे का पसीना पोछने लगा।

"आप लोग क्यो चुप है? क्या बात है?' दवीदोव ने हैरानी के साथ पातो मे बैठे लोगो की ओर देखा पर किसी ने उससे नजर तक नही मिलायी। उसने नागूल्नोव की ओर नजरे मोडी।

"बात यह है," वह हिचकिचाहट के साथ बोला। "यह बोरोदीन जो है न, जिसे हम आपस मे तितोक कहकर पुकारते है, हमारे साथ सन् अठारह मे अपनी मर्जी से लाल गार्ड मे शामिल हुआ था। गरीब घर का होने के नाते वह बडी वीरता से लडा। घायल हुआ, पुरस्कार भी मिला—क्रांतिकारी कारनामो के लिये चादी की घडी। वह दुमेन्को के दस्ते मे था। और तुम समझते हो कामरेड मजदूर, कि उसने हमारा दिल किस तरह तोड दिया? जैसे गिद्ध लाश पर टूट पडता है, वैसे ही यह घर लौटते ही खेतीबाडी मे लग गया और हमारी चेतावनी के बावजूद अमीर बनने लगा। दिन-रात काम करता, बिलकुल वहशियो की तरह, सर्दी हो चाहे गर्मी एक ही सूती पतलून मे घूमता। तीन जोडी बैल और भारी बोझ उठा-उठाकर पाला हर्निया,

पर यह भी उसे कम लगा। दो-दो, तीन-तीन बटाई मजदूर रखने लगा। पवन-चक्की लगा ली, फिर पाच अश्वशक्ति का भाप का इजन खरीदा और कोल्हू बनाने की तैयारी करने लगा, मवेशी का व्यापार करने लगा। खुद रूखी-सूखी खाता और मजदूरो को भूखा मारता, हालाकि वे बेचारे दिन मे बीस घटे काम करते, पर रात को उठकर पाच बार घोडो और मवेशी को चारा डालते। हमने कई बार उसे पार्टी इकाई मे और सोवियत मे बुलाकर बडा शर्मिदा किया, उससे कहा 'छोड दे, तीत, यह सब, हमारी प्यारी सोवियत सत्ता के रास्ते मे रोडा मत बन! तूने खुद उसके लिये मुसीबते झेली, श्वेत गार्ड से मोर्चो पर लडा '' नागूल्नोव ने ठडी सास छोडकर हाथ पसारे। "क्या किया जा सकता है, जब आदमी पर भूत सवार हो? जायदाद घुन की तरह उसे थोथा कर रही है! हम उसे बुलाकर समझाते-बुझाते है, लडाइयो की, मिलकर झेली मुसीबतो की याद करते है, उसे मनाते है, डराते-धमकाते है कि अगर वह हमारे रास्ते मे आ रहा है, बुर्जुआ बन रहा है, विश्व-क्राति की प्रतीक्षा नही करना चाहता तो नेस्तनाबूद कर देगे।"

"तुम सक्षेप मे बताओ," दवीदोव ने बेसब्री मे अनुरोध किया।

नागूल्नोव का स्वर कापकर धीमा हो गया।

"इसके बारे मे सक्षेप मे नही बताया जा सकता। यह ऐसा दर्द है, खून मे रिसता घाव पर वह यानी तीत हमे उत्तर देता है 'मै सोवियत सत्ता का आदेश पूरा कर रहा हू, जोत बढा रहा हू। और मजदूर मेरे यहा कानूनन काम करते है, मेरी लुगाई को औरतो की बीमारी है। मै कुछ नही था और सब कुछ बन गया, मेरे पास सब कुछ है, इसी के लिये तो मैने लडाई मे खून बहाया था। और सोवियत सत्ता भी तुम लोगो पर नही टिकी है। मै अपने हाथो से उसको खाना देता हू और तुम तो कलम-घसीटू हो, मै थूकता हू तुम पर।' जब हम युद्ध और मिलकर भुगती कठिनाइयो के बारे मे उससे बाते करते है तो उसकी आखे नम हो जाती है, पर वह अपने आसुओ को टपकने नही देता, मुह मोडकर, दिल कडा करके कहता है 'जो हुआ सो हुआ!' और हमने उसे नागरिक मताधिकार से वचित कर दिया। उसने इधर-उधर दौड-धूप की, मास्को तक अर्जी भेजी। पर मै तो यही समझा कि केन्द्रीय सस्थाओ के प्रमुख पदो पर पुराने

क्रांतिकारी काम करते हैं और वे यह बात समझते है कि अगर ग़द्दारी की तो तुम दुश्मन हो और तनिक भी दया के पात्र नही!"

"फिर भी, तुम कुछ संक्षेप में बताओ..."

"अभी पूरी करता हूं बात। वहां भी उसका मताधिकार बहाल नहीं किया गया, पर वह अब तक नही बदला, हां मज़दूरों का हिसाब उसने ज़रूर कर दिया...

"तो फिर बात क्या है?" दवीदोव ने नागूल्नोव के चेहरे पर नज़र गडाकर पूछा।

पर उसने अपनी पलकें झुका ली। और बोला:

"इसीलिये लोग चुप है। मैने तो बस यही बताया कि आज का कुलक तीत बोरोदीन हमारे उन प्यारे दिनों में क्या था।

दवीदोव ने होंठ भींचे, उसका चेहरा तमतमा गया।

"तुम हमें करुणा भरे क़िस्से सुना किसलिये रहे हो? छापमार था – इसके लिये वह सम्मान का पात्र है, कुलक बन गया, यानी दुश्मन हो गया – कुचल दो! कोई दूसरी बात हो ही नही सकती!"

"नही मै उस पर तरस नही खा रहा। तुम, कामरेड, मुझ पर फालतू लांछन मत लगाओ!"

"कौन बोरोदीन की बेदखली के पक्ष में है?" दवीदोव ने नज़रों से वहां बैठे लोगों की पांतो को टटोला।

हाथ एकदम नही पर एक-एक करके खड़े हो गये।

सभा के बाद नागूल्नोव ने दवीदोव को अपने यहां रात बिताने के लिये बुलाया।

"और कल आप के लिये रहने की जगह ढूढ देंगे," सोवियत की अंधेरी ड्योढी मे टटोल-टटोलकर चलते हुए वह बोला।

वे किचकिचाती बर्फ़ पर साथ-साथ चल रहे थे। नागूल्नोव बरान-कोट के बटन खोलकर धीमे स्वर में बोलने लगा:

"प्यारे कामरेड मज़दूर, जब से मैंने सुना कि किसानो की सारी संपत्ति को सामूहिक फ़ार्म मे शामिल करना चाहिये, मेरा जी हल्का हो गया। बचपन से मुझे संपत्ति से नफ़रत है। सभी बुराइयो की जड़ वही है, विद्वान कामरेडो मार्क्स और एंगेल्स ने ठीक ही लिखा है। सोवियत सत्ता-काल तक में लोग इस रोग के बीज की वजह से नांद को घेरे सुअरों की तरह से छीना-झपटी, धक्का-मुक्की, चिल्लपों करते

है। और पुरानी सरकार के जमाने मे क्या होता था? सोचकर भी रोगटे खडे हो जाते है! मेरा बाप खाता-पीता कज्जाक था, चार जोडी बैल और पाच घोडे थे। जोत हमारी बहुत बडी थी, साठ, सत्तर, सौ देस्यातीना तक की। कुनबा भी बडा था, मेहनती। खुद करते थे सारा काम। सोचिये भी मेरे तीन शादी-शुदा भाई थे। मेरे दिमाग मे एक घटना काटे की तरह चुभ गयी जिसके कारण मैने सपत्ति के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। एक बार पडोसी का सुअर हमारी सागबाडी मे घुस गया और उसने आलू के कुछ पौधे खराब कर दिये। मा ने उसे देखकर खौलते देग से मग भरा और मुझसे बोली 'सकार बेटे, खदेडो उसे और मै फाटक पर खडी होती हू।' तब मेरी उम्र कोई बारह-एक बरस की रही होगी। और मैने उस अभागे सुअर को खदेडा। मा ने उस पर खौलता पानी उडेल दिया। उस बेचारे के बालो तक मे धुआ उठने लगा! गर्मियो के दिन थे, सुअर के घाव मे कीडे पड गये, घाव सडता ही गया और सुअर मर गया। पडोसी खार खाके बैठ गया। और एक हफ्ते बाद स्तेपी मे हमारे गेहू के तेईस गट्ठर जल गये। बाप को मालूम था कि यह किसकी करतूत है और उसने नालिश कर दी। तो उनमे ऐसी दुश्मनी हो गयी कि एक दूसरे को देख तक नही सकते थे! थोडी-सी पी लेते और हाथापाई कर बैठते। कोई पाच साल तक मुकदमेबाजी करते रहे और खून-खराबे पर उतर आये जाडे की विदाई के त्योहार के दिनो पडोसी के बेटे का खलिहान मे कत्ल हो गया। किसी ने उसकी छाती मे कई जगह पाचा भोक दिया था। मुझे कुछ बातो से अनुमान हो गया कि यह मेरे भाइयो का काम है। मामले की जाच हुई पर हत्यारे नही मिले यह रिपोर्ट बना दी गयी कि शराब के नशे मे वारदात हुई। तब मै बाप के यहा से चला गया और मजदूरी करने लगा। फिर लडाई के मोर्चे पर चला गया। वहा कई बार ऐसा होता था कि जर्मन हम पर भारी गोले बरसाता जमीन से आसमान तक काला धुआ उठता। लेटे-लेटे मन मे विचार आता 'आखिर किस के लिये, किस की सपत्ति के लिये मै यहा लेटा आतक सह रहा हू, मौत से आखे चार कर रहा हू?' गोलाबारी के समय कील बनकर जमीन मे सिर तक गड जाने को जी चाहता! मा की कसम से! गैसे सूघी, जहर चढ गया था। अब भी थोडी-सी चढाई चढते ही हाफने लगता हू, सिर चकराने लगता है, अभी तक

असर नही उतरा है। बुद्धिमान लोगो ने मोर्चे पर ही सब समझा दिया, बोल्शेविक बनकर वहा से लौटा। और गृह युद्ध मे, अरे उन हरामियो को मैंने बडी बेरहमी से मारा-काटा! कम्तोरनाया स्थान के पास मुझे धमाके से अदरूनी चोट लगी, फिर दौरे पडने लगे। और अब बम यही निशानी बची है," नागूल्नोव ने पदक पर अपनी चौडी हथेली रखी, और उसके स्वर मे अजीब-सी गर्माहट आ गयी। 'यह मुझे अब गर्मी देता है। आजकल मै, प्यारे कामरेड, गृह-युद्ध की तरह अपने को मोर्चे पर महसूस करता हू। चाहे जमीन मे गडना पडे पर सबको सामूहिक फार्म मे भरती करना चाहिये। विश्व-क्राति पास आ जायेगी।"

"तीत बोरोदीन को तुम अच्छी तरह जानते हो?" किसी सोच मे डूबे-डूबे दवीदोव ने पूछा।

"कैसे नही, अरे हम दोस्त थे, बस इसी वजह से टूट गयी दोस्ती कि उसे जायदाद से बेहद प्यार है। सन् बीस मे वह और मै दोनेत्स्क इलाके के एक प्रात मे विद्रोह को कुचलने के लिये गये थे। दो स्क्वाड्रनो और विशेष दस्तो ने विद्रोहियो पर चढाई की। कस्बे के बाहर ढेरो उक्राइनी मारे गये। तितोक रात को लौटा, साथ मे उसके बोरिया थी। उन्हे खोलकर उसने फर्श पर खाली किया। उनमे से आठ कटी टागे गिरी। 'पागल हो गया है, तेरी ऐसी की तैसी?!' साथी उससे बोला, 'फौरन ले जा यहा से!' पर तीत ने उसे उत्तर दिया 'अब करके देखे विद्रोह, मादर ! और चार जोडी बूट मेरे काम आयेगे। मेरा पूरा कुटुब अब नगे पाव नही रहेगा।' अगीठी पर रखकर उन्हे मुलायम किया और पिडली पर सिलाई के जोड को तलवार से उधेडकर बूट उतार लिये। नगी टागे जाकर पुआल के ढेर मे गाड दी। बोला 'दफना दिया।' अगर तब हमे मालूम पड जाता तो हम उसे दुश्मन की तरह गोली मार देते! पर उसके साथियो ने बात दबा ली। पर बाद मे मैने उससे पूछा कि यह सही बात है? वह बोला 'हा, सही है, ऐसे उतार नही सका, पाले से पैर अकडे हुए थे और मैने तलवार से टागे काट ली। मै एक मोची की हैसियत से यह कैसे सह सकता था कि अच्छे-खासे जूते जमीन मे सड जाये। पर अब याद करके सिहर उठता हू। कभी रात को आख खुल जाती है तो लुगाई से कहता हू कि मुझे दीवार के पास लेटने दे, नही तो किनारे पर डर लगता

है ...' ...लो आ गया मेरा घर।" नागूल्नोव ने आंगन में घुमकर दरवाज़े की सांकल खोली।

५

अंद्रेई रज़्म्योत्नोव को सन् १६१३ में फ़ौज में भरती किया गया। तब के नियमों के अनुसार उसे अपने घोड़े के साथ पलटन में जाना था। पर घोड़ा तो क्या उसके पास कज़्ज़ाक के लिये आवश्यक वर्दी ख़रीदने तक के लिये पैसे नही थे। अपने दिवंगत पिता से उसे विरासत में बस दादा की घिसी-पिटी म्यानवाली तलवार मिली थी। अंद्रेई जीवन भर के उस कटु अनुभव को न भुला सकेगा! बुज़ुर्गों ने पंचायत के ख़र्च पर उसे फ़ौजी सामान दिलाने का फ़ैसला किया. उसके लिये सस्ता-सा ललौहा घोड़ा, ज़ीन, दो बरानकोट, दो जोड़ी शलवारनुमा पतलूनें और बूट ख़रीद दिये.. "पंचायत के पैसे से तुझे सामान दिलाकर फ़ौज में भेज रहे है अंद्रेई, हमारा एहसान मत भूलना, गांव की नाक मत कटवाना, ज़ार की जी-जान से नौकरी करना..." बुज़ुर्गों ने अंद्रेई से कहा।

और अमीर कज़्ज़ाको के बेटे घुड़दौड के समय अच्छी-अच्छी नसलों के अपने घोड़ों, महंगी ज़ीनों, चादी के कामवाली लगामों और नये कपड़ो पर इतराते.. अंद्रेई की ज़मीन पंचायत ने ले ली। उधर अद्रेई परायी संपत्ति और परायी, भरपेट ज़िदगी की रक्षा करते हुए मोर्चो की धूल छानता रहा, उधर पचायत ने उसकी ज़मीन बटाई पर चढ़ा दी। जर्मनी से लड़ाई मे अद्रेई को अपनी वीरता के लिये तीन सेट जॉर्ज क्रॉस पदक मिले। 'क्रॉस' का भत्ता पत्नी और मां को भेजता रहा। बस इसी तरह सास-बहू गुज़ारा करती रहीं। अंद्रेई को अपनी मां के आंसुओं मे भीगे बुढ़ापे का चिराग़ बनने का काफी देर से मौक़ा मिला।

युद्ध के आख़िरी दिनों में अद्रेई की घरवाली ने पतझड़ के मौसम में खलिहानों में मज़दूरी करके कुछ पैसे जमा किये और मोर्चे पर अपने पति से मिलने गयी। वहा वह कुछ दिन रही (११वी दोन कज़्ज़ाक रेजिमेंट जिसमें अंद्रेई सेवारत था, उन दिनों चंडावल में आराम कर

रही थी), पति की बांह पर सिर टिकाकर सोयी। वे रातें पलक झपकते बीत गयीं। पर चिड़िया को पर मारने और भूखी औरत को मुख पाने में भला कोई देर लगती है? वह वहां मे आंखों में चमक लेकर लौटी और निश्चित समय पर उमने बिना पीड़ा और आंसुओं के, मानो अनायास ही, खेत ही मे लड़के को जन्म दिया, हूबहू अंद्रेई जैसे।

मन् अठारह में रज़म्योत्नोव कुछ देर के लिये ग्रेम्याची आया। गाव में वह ज़्यादा नही रहा: उसने कोठरियों की गली बल्लियों और कड़ियों को बदला, दो देम्यातीना ज़मीन जोती, एक बार दिन भर वह बेटे के साथ व्यस्त रहा, उसे कंधों में धंसी गर्दन पर बिठाकर कमरे में दौड़ता रहा, बहुत हस रहा था, उसकी चमकीली, प्रायः क्रुद्ध-सी रहनेवाली आंखों की कोरों में पत्नी को आंसू डबडबाते नज़र आये, उसे काटो तो खून नही: "क्या जा रहे हो, अंद्रेई?" – "कल। खाना बांध देना।"

और अगले दिन अंद्रेई, मकार नागूल्नोव, अतामान गार्ड रेजिमेंट का कज्ज़ाक ल्युबीश्किन, तीन वोरोदीन और मार्चे पर रह चुके आठ कज्जाक अंद्रेई के घर के पास जमा हुए। रंग-बिरंगे घोड़े उन्हे ले चले। पवनचक्की के पीछे जाकर वे अगोचर हो गये पर सडक पर हल्के नालोंवाले खुरों से उडती बमती धूल बडी देर तक तैरती रही।

कामेन्स्काया में अंद्रेई अपने साथियों से बिछुड़ गया। वोरोशीलोव के एक दस्ते के साथ वह मोरोज़ोव्स्काया – त्सारीत्सिन की ओर चढ़ाई में शामिल हुआ। मकार नागूल्नोव, ल्युबीश्किन और बाक़ी लोग वोरोनेज जा पहुचे। तीन महीने बाद क्रीवोई-मुज़्गा के पास ग्रेनेड की किरच से अंद्रेई को हल्का घाव लगा। पट्टी बंधवाने चिकित्सा केन्द्र गया, तो वहा उसे संयोगवश अपने ही गाव का आदमी मिला। उससे अंद्रेई को पता चला कि पोद्त्योल्कोव की पलटन की हार के बाद, अंद्रेई के गाव के श्वेत कज़्ज़ाकों ने, उसके लाल सेना में चले जाने का बदला लेने के लिये उसकी पत्नी के साथ बलात्कार किया और सारे गांव को इसका पता चल गया। उसकी पत्नी येव्दोकीया जग-हंसाई न सह सकी और उसने आत्महत्या कर ली।

..पाला पड़ रहा था। दिसंबर के अंत की बात है। ग्रेम्याची के मकान, कोठरियां, बाड़ें, पेड़ सब सफ़ेद झबरीले पाले से ढके थे।

दूर के टीले के पीछे लड़ाई हो रही थी। जनरल गुसेल्शिकोव की तोपें दहाड़ रही थीं। शाम को झाग मे ढके घोड़े को दौड़ाता अंद्रेई गांव पहुंचा। उसे अब तक यह याद है, बस आंख बंद करने की देर है और यादों के घोड़े उसे उस दिन में पहुंचा देते हैं... फाटक चरमराया। हांफता हुआ अंद्रेई लगाम को खीचता थकान से लड़खड़ाते घोड़े को आगन में लाया। मां सिर ढके बिना घर से दौड़ती निकली।

ओफ़, उसके मातमी रोने से अंद्रेई के कान फट गये!

"अरे, मेरे राजदुलारे! बंद हो गयीं उसकी निर्मल आंखें!.."

रज़्म्योत्नोव को लगा कि वह पराये घर में पहुंच गया है: ओसारे की रेलिंग मे उसने लगाम लपेटी और घर में घुस गया। मुर्दे की तरह धंसी आखों मे उसने खाली कमरे, खाली पालने को टटोला।

"बच्चा कहां है?"

मां पेशबंद में मुंह गडाये, अपने झीने बालोवाले, सफ़ेदी मे ढकने सिर को हिला रही थी।

बड़ी मुश्किल मे उसके मुह से जवाब निकला।

"नही बचा सकी मैं अपने लाड़ले को! येव्दोकीया के बाद दूसरे हफ्ते ही . स्कार्लेट बुख़ार मे।"

"नही चिल्ला... मुझे, मुझे कही से आंसू मिल जायें! किसने येव्दोकीया से बलात्कार किया?"

"अनिकेई देव्यात्किन उसे घसीटकर खलिहान मे ले गया था . मुझे – कोडे मे पीटा . साथियो को खलिहान में बुलाया। बेचारी की चिट्टी बांहें म्यान मे पीट-पीटकर काली कर दी लौटी तो चेहरे पर बस आंखें बची थी "

"इस वक्त घर पर है वह?"

"फरार है।"

"उनके घर पर है कोई?"

"उसकी लुगाई और बुड्ढा बाप। अंद्रेई! तुम उन्हें नही मारो! दूसरे के पाप के लिये वे दोषी नही हैं..."

"तू!.. तू मुझे यह कह रही है?!" अंद्रेई का चेहरा स्याह पड़ गया, दम घुटने लगा। उसने ग्रेटकोट के फ़ीते तोड़ दिये, जैकेट और क़मीज़ के कालर फाड़ दिये।

पानी से भरे लोहे के देग पर उभरी पसलियोंवाली नंगी छाती

को झुकाकर पीने लगा, पीते-पीते वह देग के किनारो पर दात गडा रहा था। फिर सीधा खडा हुआ और नजरे उठाये बिना उसने पूछा

"मा! मरने से पहले उसने मेरे लिये क्या सदेशा छोडा?"

मा ने देव-प्रतिमा के पीछे हाथ डालकर कागज का पीला-सा टुकडा निकाला। और मौत मे पहले लिखे गये शब्द प्रिय स्वर की तरह गूज उठे "मेरे प्यारे अद्रेई! पापियो ने मुझे अपवित्र कर दिया, मेरा और तुम्हारे से मेरे प्रेम का उपहास किया। मै अब तुम्हे और इस दुनिया को नही देख पाऊगी। मेरी आत्मा मुझे इस लाछन के साथ जीने की अनुमति नही देगी। मेरे अद्रेई, मेरे परम प्यारे! मै कितनी रातो से नही सोयी, तकिया आसुओ से भीग जाता है। हमारे प्रेम को मै नही भूली, उस लोक मे भी नही भूलूगी। बस मुझे एक बात का दुख है – बच्चे का और तुम्हारा, इस बात का कि हमारा सहजीवन, हमारा प्रेम उतना अल्पकालीन रहा। दूसरी को घर मे ले आओगे – भगवान के लिये, वह हमारे बच्चे पर रहम करे। तुम भी उस पर रहम करना, मेरे अनाथ बच्चे पर। मा जी को कह दो कि मेरे लहगे, दुपट्टे और चोलिया, सब मेरी बहन को दे दे। वह शादी के लायक हो गयी है, उसे जरूरत है इन चीजो की "

अद्रेई घोडे को सरपट दौडाता देव्यात्किन के घर पहुचा, उतरकर उसने म्यान से तलवार निकाली और लपककर ओसारे पर चढ गया। अनिकेई देव्यात्किन के बाप – ऊचे कद के बूढे ने उसे देखकर सलीब का निशान बनाया और देव-प्रतिमाओ के पास घुटनो पर खडा हो गया।

"अद्रेई स्तेपानिच!" वह बस यही बोला और अद्रेई के पैरो मे सिर झुका दिया, इसके बाद उसके मुह से न कोई बोल फूटा न ही उसने अपना गुलाबी खल्वाट सिर फर्श से उठाया।

'तू अपने बेटे की करतूत का जवाब देगा! तुम्हारे भगवानो, सलीब पर मै! " अद्रेई ने बाये हाथ से बूढे की सफेद दाढी पकडी, ठोकर मारकर दरवाजा खोला और देव्यात्किन को ओसारे पर घसीटने लगा।

बुढिया अगीठी के पास बेसुध पडी थी, पर घर की बहू – अनिकेई की पत्नी – बच्चो का झुड बनाकर (उसके पूरे छह अदद थे), रोती हुई ओसारे पर निकली। चुसी हड्डी की तरह सफेद अद्रेई बूढे की गर्दन

14–1152

पर तलवार तान चुका था पर तभी रोते-बिलखते-रिरियाते बच्चे उसके पांव पड़ गये।

"मार दे इन सबको! ये सभी अनिकेई के ही पिल्ले है! मुझे मार डाल!" अनिकेई की बीवी अव्दोत्या चिल्लाती हुई, अपनी गुलाबी शमीज़ के बटन खोलकर, ढेरों पिल्लोंवाली कुतिया जैसी सूखी, पिचकी चूचियां झुलाते हुए अंद्रेई की ओर बढ़ रही थी।

और अंद्रेई के पैरों पर छोटे-बडे बच्चे बिलख रहे थे...

आंखें फाड़कर वह पीछे हटा, तलवार को म्यान में डालकर, समतल ज़मीन पर कई बार ठोकर खाता हुआ घोड़े की ओर चल पड़ा। मौत के मुंह से बचने की ख़ुशी के साथ रोता हुआ बूढा फाटक तक उसके साथ-साथ चलता, वह बार-बार रकाब मे झूलते पैर को चूमने का प्रयास करता पर अंद्रेई घिन के साथ पैर हटा लेता, वह गुर्राता हुआ बोल रहा था·

"तेरी ख़ुशक़िस्मती है!. बच्चे..."

घर पर तीन दिन और तीन रात शराब पीता रहा, नशे में रोता, दूसरी रात को उसने वह कोठरी जला दी जिसकी कडी पर लटककर येव्दोकीया ने फांसी लगा ली थी, और चौथे दिन उसने चुपचाप मा से विदा ली, उसका मुंह सूजा हुआ था, देखने में वीभत्स लग रहा था। मा ने उसके सिर को छाती मे चिपटाते हुए पहली बार बेटे की सुनहरी लटों में, चांदी के धागों की तरह सफेद बाल देखे।

दो साल बाद अंद्रेई पोलिश मोर्चे से ग्रेम्याची लौटा। साल भर वह ऊपर दोन मडल में अनाज-वसूली दस्ते के साथ घूमता रहा, फिर घर लौटा। जब मां शादी करने की बात करती वह कुछ न कहता। पर एक बार मां ने उसके मुंह से जवाब निकलवाने की ठान ही ली।

"शादी कर ले, अंद्रेई बेटे! अब चौका-बरतन सभालना मेरे बस की बात नही रही। कोई भी छोकरी तेरे साथ ख़ुशी-ख़ुशी शादी करने को तैयार हो जायेगी। किस के यहां रिश्ता करूं?"

"मैं नही करूंगा, मां, मत करो मुझे परेशान!"

"एक ही रट लगाये जा रहा है! देख तो तेरे बाल पकने लगे हैं। आख़िर कब तू फ़ैसला करेगा? जब सिर सफ़ेद हो जायेगा? अरे मां की भी तो कुछ सोच। मैं तो सोचती थी कि पोतों को खिलाऊंगी। दो बकरियों के रोये इकट्ठे कर रखे है बच्चों की जुर्राबें बुनने के लिये...

पोतो को नहलाना-धुलाना ही मेरा काम है। गाय को दुहना भारी पड़ता है मुझे, अब उगलिया नही चलती।" और फिर वह रोने लगती "अरे मैने किसे जना है! बुत की तरह बैठा रहता है। चुप क्यो है? राक्षस!"

अद्रेई टोपी उठाता और चुपचाप घर मे चला जाता। पर बुढिया भी चैन मे न बैठती पडोसिनो से सलाह-मशविरा, कानाफूसी करती रहती

"येव्दोकीया के बाद किसी को घर मे न लाऊगा,' अद्रेई अपनी जिद्द पर अड़ा रहा।

और मा का गुस्सा सून बहू की ओर मुड़ गया।

'नागिन ने इस पर जादू कर दिया है!" वह पनघट जाते समय या शाम को अपने बाडे के पास से जानेवाली बुढियाओ को देखकर कहती। "डायन खुद तो फदे मे झूल गयी और उसका भी जीवन हर लेगी। दूसरी को नही लाना चाहता। मेरी हालत तो देखो? अरे मत पूछ प्यारी! दूसरो के पोतो को देखकर आसुओ मे डूब जाती हू दूसरी बुढियाओ के घर मे तो खुशिया बुढापे का सहारा है और मै अकेली जैसे बिल मे घुस "

उसी साल अद्रेई की यारी नावोचर्कास्क के पास मारे गये सार्जेंट मिखाईल पोयार्कोव की विधवा मरीना से हो गयी। उस पतझड मे मरीना की उम्र चालीस के ऊपर हो गयी थी पर उसकी गदरायी और मजबूत देह मे सावले चेहरे मे अभी भी स्तेपी जैसी सौम्य सुदरता थी।

अक्तूबर मे उसके मकान पर अद्रेई सरकडे का छप्पर डाल रहा था। शाम को उसने अद्रेई को घर मे बुलाया फुर्ती से मेज परोसी बोर्श्च का कटोरा रखा अद्रेई के घुटनो पर साफ कशीदाकारी से सजा नैपकिन बिछाया और खुद उसके सामने हाथ पर गाल टिकाकर बैठ गयी। अद्रेई कनखियो से चमकीले-काले बालो के जूडेवाले उसके गर्वीले सिर को देख रहा था। बाल उसके घने देखने मे घोडे की अयाल की तरह कडे थे पर छोटे-छोटे कानो के पास वे बाल-सुलभ सहजता से बिखरकर घुघरा रहे थे। मरीना अपनी काली आखो को मिचमिचाकर अद्रेई को ताक रही थी।

"और डालू?" उसने पूछा।

"ठीक है," अद्रेई ने स्लेटी मूछ पर हाथ फेरकर महमति व्यक्त की।

वह फिर से बोर्श्च खाने मे तल्लीन होने ही वाला था। मरीना फिर से मामने बैठी शिकार को ताकते हिंस्र पशु की आकुल नजर से देख रही थी, पर अचानक अद्रेई की दृष्टि उसकी गदरायी गर्दन पर तेजी से फडकती नीली नम पर पडी और न जाने क्यो वह सकपका गया, उमने चम्मच मेज पर रख दी।

"क्या हो गया?" उसने हैरान होकर पूछा, उसकी भौहे काले डैनो-सी तन गयी।

"पेट भर गया। शुक्रिया। कल सुबह आकर काम पूरा कर दूगा।'

मरीना उठकर उमके पाम आयी। धीरे-धीरे मुस्कान मे अपनी दतावली को उघाडते हुए, अपनी बडी, मुलायम छाती को अद्रेई मे सटाते हुए उमने फुमफुसाकर पूछा

"मेरे यहा ही रात गुजार लो?"

"ऐमा भी किया जा मकता है," किकर्त्तव्यविमूढ अद्रेई को और कुछ नही सूझा उत्तर मे।

और फूहड उत्तर का बदला लेते हुए मरीना ने अपनी गदरायी कमर झुकाकर कहा

"बहुत-बहुत शुक्रिया मेरे पालनहार! बेचारी विधवा का खयाल करने के लिये मै तो पापिन, डरती थी सोचती थी – मना कर दोगे "

उसने झट मे फूककर दिया बुझा दिया, अधेरे मे बिस्तर बिछाया, ड्योढी के दरवाजे की कुडी चढा दी और कुछ निराशा के साथ तिरस्कारपूर्ण स्वर मे बोली

'तुम मे कज्जाक खून की बूद तक नही है। ताम्बोव के ठठेरे ने तुम्हे बनाया है।"

"वो कैमे?" अद्रेई बुरा मान गया, वह बूट उतारते रुक गया।

"वैसे ही जैसे इस तरह के दूसरो को। आखो मे तो बडे जाबाज लगते हो पर लुगाई से मागते डरते हो। कहने को तो लडाई मे बडे-बडे तमगे पाये है!" वह दातो मे बालो के काटे दबाकर जूडा खोलते हुए अस्फुट स्वर मे बोली। "मेरे मीशा की याद है तुम्हे? वह कद मे मुझ मे छोटा था। तुम तो मेरे बराबर हो, पर वह कुछ छोटा था।

मै सिर्फ उसके साहस के कारण उससे प्यार करती थी। शराबखाने मे वह सबसे ताकतवर से भी नही डरता था हालाकि नाक से खून बहता पर वह हारता नही। शायद इसी वजह से वह मारा गया। उसे तो मालूम था कि मै क्यो उससे प्यार करती थी " गर्व के साथ उसने अपनी बात पूरी की।

अद्रेई को गाव के उन कज्जाको की बात याद आ गयी जो मरीना के पति की रेजिमेंट मे ही थे और जिन्होने अपनी आखो मे उसकी मौत देखी थी एक बार टोह के समय उसने अपने प्लाटून से दुगने बडे लाल सैनिको के दस्ते पर धावा बोल दिया, उन्होने 'लूईस' मशीनगन से उनमे भगदड मचा दी, चार कज्जाको को धराशायी कर दिया और मिखाईल पोयार्कोव को बाकी लोगो से काट दिया और उसे पकडने की कोशिश की। पीछा करनेवाले तीन लाल सैनिको को उसने घोडा दौडाते हुए गोली से मार दिया। और खुद – वह रेजिमेट का सर्वोत्तम शहसवार जो था – कलाबाजिया खाता हुआ गोलियो की बौछार से बचता रहा, पर घोडे का पैर किसी गड्ढे मे पड गया और उसने गिरते समय अपने सवार की टाग तोड दी। बस तभी जाबाज सार्जेट की अंतिम घडी आ गयी।

पोयार्कोव की मौत के किस्से को याद करके अद्रेई मुस्करा दिया।

मरीना लेट गयी अद्रेई से सटकर वह तेजी से सास लेने लगी।

आधे घटे बाद बात का सिलसिला जारी रखते हुए वह फुसफुसाकर बोली

"मीशा से मै उसके साहस के लिये प्यार करती थी, पर तुमसे बस ऐसे ही, कोई वजह है ही नही, ' और उसने अद्रेई की छाती पर अपना छोटा-सा दहकता कान टिका दिया। उसे झुटपुटे मे लगा कि उसकी आख चिगारी की तरह चमक रही है, उसमे अडियल, बेसधी घोडी की तरह अजेयता की झलक थी।

पौ फटने से पहले उसने पूछा

"कल आओगे छप्पर डालने ?"

"अरे, क्यो नही ?" अद्रेई ने आश्चर्य के साथ पूछा।

"नही आना "

"क्यो, क्या हो गया ?"

"अरे, तुम भी कैसे हो डालनेवाले ! बुड्ढा श्चुकार तुमसे बेहतर

डालता है," और खिलखिला पडी। "मैंने तुम्हे जान-बूझकर बुलाया था! और किस बहाने तुम्हे फसाती? तुमने तो मेरा नुकसान कर डाला! छप्पर तो नये सिरे से डालना पडेगा।"

दो दिन बाद बूढा श्चुकार मालकिन के सामने अद्रेई को कोसता छप्पर डाल रहा था।

और अद्रेई उस दिन के बाद से हर रात मरीना के पास आने लगा। और उसे अपने से दस साल बडी औरत का प्यार मीठा लगा, पाला लगे जगली सेब की तरह मीठा

जल्दी ही गाव मे उनके सबधो की तरह-तरह से चर्चा होने लगी। अद्रेई की मा रो-रोकर पडोसिनो से शिकायत करती "नाक कटवा दी! बुढिया से यारी कर बैठा! पर बाद म वह मन मारकर चुप हो गयी। पडोसी की बेटी न्यूर्का जिसके साथ अद्रेई हसी-मजाक, दिल्लगी करता था, अब उससे कन्नी काटने लगी। पर एक बार जगल मे सूखी टहनिया बटोरते समय पगडडी पर उसे देखकर न्यूर्का के चेहरे का रग उड गया।

बुढिया ने तेरी नाक म नकेल डाल दी?' उसने कापते होठो से मुस्कराते हुए पूछा वह अपनी डबडबाती आखो को छिपाने का प्रयास भी नही कर रही थी।

'अरे पूछो मत, दम घुटा जाता है!' अद्रेई ने मजाक मे उत्तर दिया।

'क्या कोई जवान नही मिल सकती थी?' जाने-जाते न्यूर्का ने पूछा।

"अरे देख तो मै खुद कैसा हू, अद्रेई ने टोपी उतारकर अगूठे से अपने पकते बालोवाले सिर की ओर इशारा किया।

"मै तो पगली, तुझ सफेद बालोवाले कुत्ते से प्यार कर बैठी थी! अच्छा तो अलविदा।' आहत होकर भी वह सिर उठाये चली गयी।

मकार नागूल्नोव बस यही बोला

अद्रेई मै अनमोदन नही करता! वह तुझे सार्जेट साहब और टटपुजिया बना देगी। छोड भी, मजाक कर रहा हू, देखता नही?"

"अरे अब कर ले उससे शादी रस्म से," एक बार मा पसीजकर बोली। "बहू बना दे।"

"बेकार की बात है," अद्रेई ने बात टालते हुए कहा।

मरीना की उम्र मानो घटकर आधी रह गयी। वह रात को अपनी तिरछी काट की आखो मे दबी-दबी चमक के साथ अद्रेई का स्वागत करती, मर्दो की शक्ति से उससे लिपटती और सुबह तक उसके उभरी हड्डीवाले गदुमी गालो मे लाली न उतरती। मानो उसका यौवन लौट आया! वह अद्रेई के लिये रेशमी टुकडो मे तबाकू की रग-बिरगी थैलिया सीकर उन पर कढाई करती, बादी की तरह उसके हर इशारे पर अमल करती, खुशामदी करती। फिर उसके मन मे प्रचड ईर्ष्या और अद्रेई को खो देने का भय घर कर गया। वह सिर्फ यह देखने के लिये सभाओ मे जाने लगी कि वह कही जवान औरतो से हसी-मजाक तो नही करता? किसी से दीदे तो नही लडाता? शुरू-शुरू मे अद्रेई इस रखवाली से चिढता, मरीना को डाटता, कई बार उसे पीटा भी पर बाद मे इसका आदी हो गया, उसमे बैठे मर्द को यह सुहाने भी लगा। मरीना ने दिल खोलकर उसे अपने पति के सारे कपडे दे दिये। और अब अद्रेई जो पहले फटे-पुराने कपडो मे घूमता था – बिना किसी शर्म के, उत्तराधिकारी के नाते ग्रेम्याची मे मार्जेट की ऊनी पतलून और कमीजे पहनकर ठाठ से चलता, जिनकी आस्तीने उसके लिये काफी छोटी और कालर तग थे।

वह अपनी रानी को घर-बार मे मदद देता, शिकार से उसके लिये खरगोश या तीतरो का पूरा गुच्छा मारकर लाता। पर मरीना ने कभी भी अपनी सत्ता का दुरुपयोग नही किया और अद्रेई की मा का हिस्सा नही लिया, हालाकि वह उससे मन-ही-मन कुढती रहती थी।

वह खुद ही आराम से घर-बार चला लेती थी और मर्द की मदद के बिना भी आसानी से काम चला सकती थी। कई बार अद्रेई उसे पाचे से गेहू की बालियो के तीन-तीन पूद* भारी गट्ठरो को उठाते, या रीपर पर बैठे-बैठे जौ की भारी बालियो के लूने ढेर को दाते से गिराते देखता। मन-ही-मन अद्रेई यह देखकर आनद लेता। मरीना मे मर्दो जैसी फुर्ती और शक्ति थी। घोडे को जोतते समय भी वह मर्दो

* पूद—१६ किलोग्राम। – स०

की तरह, बम से पैर टिकाकर पेटिया कसती।

समय के साथ मरीना से लगाव गहरा होता गया। अद्रेई कभी-कभार अपनी पहली पत्नी को याद करता, पर यादो मे अब पहले जैसी पीडा न होती। बम कभी, फ्रास मे बस गये अनिकेई देव्यात्किन के बडे बेटे को देखकर फक पड जाता बेटा हूबहू बाप लगता था।

और फिर काम की व्यस्तता, रोटी के टुकडे के लिये सघर्ष, जीवन की दौड-धूप मे विद्वेष विस्मृत होता जाता, वैसी ही चीसती, कसक भरी पीडा शात होती जा रही थी, जैसी वह कभी-कभार, माथे पर पुराने घाव मे, ह्गेरियन अफसर की तलवार द्वारा छोडी गयी निशानी मे महसूस करता।

* * *

गरीबो की सभा मे अद्रेई सीधा मरीना के पास गया। वह उसकी प्रतीक्षा मे बैठी ऊन कात रही थी। नीची छतवाले छोटे-से कमरे मे चरखे की उनीदी घर्रघर्र भरी थी, अगीठी से कमरा खूब तपा हुआ था। घुघराले बालोवाला मेमना कच्चे फर्श पर नन्हे-नन्हे खुरो से टप-टप कर रहा था, वह पलग पर कूदने की फिराक मे था।

रजम्योत्नोव ने झुझलाकर नाक-भौ सिकोडी

"बद कर चरखा!"

मरीना ने चरखे के पैडल मे पैर हटाया घोडे के पुट्ठो की तरह चौडी कमर झुकाकर मीठी जम्हाई ली।

"क्या हुआ सभा मे?"

"कल कुलको का सफाया शुरू कर रहे है।"

"सच?"

"आज सब गरीब एक होकर सामूहिक फार्म मे भरती हो गये," अद्रेई कोट उतारे बिना पलग पर लेट गया, उसने मेमने को उठा लिया। "तुम कल अर्जी ले जाना।"

"कैसी?" मरीना ने आश्चर्य के साथ पूछा।

"सामूहिक फार्म मे भरती होने के लिये।"

मरीना ने तैश मे आकर चरखे को अगीठी के पास पटका और बोली

"पागल तो नही हो गये? मुझे वहा क्या लेना है?"

"मरीना, इस बात पर बहस मत करो। तुम्हे सामूहिक फार्म मे शामिल होना चाहिये। क्या कहेगे लोग मेरे बारे मे 'लोगो को तो सामूहिक फार्म मे फसा रहा है पर अपनी मरीना को बचा रहा है।' ईमानदारी की बात नही होगी।"

"मै नही जाऊगी! हरगिज शामिल नही होऊगी!" मरीना पलग के पास से पसीने और गर्म देह की भभक छोडती गुजरी।

"तब, देखना, हमे बर्तन-भाडे बाटकर अलग होना पडेगा।"

"बहुत डरा दिया!"

"मै धमकी नही दे रहा, पर मेरे पास कोई और चारा नही।"

तो जाओ कौन रोकता है तुम्हे! मै अपनी गाय दे दूगी और खुद क्या करूगी? तुम तो खुद आकर खाना मागोगे!

'दूध आम होगा।"

"और लुगाइया भी आम होगी? क्या तुम मुझे इसी का डर दिखा रहे हो?'

कर देता तेरी पिटाई पर आलस आ रहा है!' अद्रेई ने सेमन को फर्श पर पटका, टोपी उठायी और गर्दन पर धारीदार ऊन का मफलर फदे की तरह डाला।

'हरेक साले की मिन्नत करनी पड रही है! मरीना तक बिदक रही है। कल आम सभा मे क्या होगा? पिटाई कर देगे, अगर ज्यादा जोर डाला," अपने घर जाते समय वह गुस्से मे सोच रहा था। उसे बडी देर तक नीद नही आयी, करवट बदलता रहा, उसने दो बार मा को, खमीर देखने के लिये उठते सुना। कोठरी मे मुर्गा शैतान की तरह चीख रहा था। अद्रेई बेचैनी से कल के बारे मे पुनर्निर्माण की ड्योढी पर खडी सारी कृषि व्यवस्था के बारे मे सोच रहा था। उसके मन मे यह आशका उपजी कि रूखा और कठोर दवीदोव (उसे वह ऐसा ही लगा) कही किसी असावधान कदम से सभोले किसानो का सामूहिक फार्म मे मुह न मोड दे। पर उसे दवीदोव का नाटा, गठा बदन तनावपूर्ण चेहरा, गालो के किनारे कडी झुर्रिया, चचल-बुद्धिमान आखे याद हो आयी, उसे याद आया कि जब ल्युबीश्किन भाषण दे रहा था दवीदोव ने नागूल्नोव की पीठ के पीछे से झुककर उससे कहा था "छापेमार चगा बदा है, पर आप लोगो ने उसे अपने हाल पर

छोड दिया, कोई शिक्षा न दी, फ़ैक्ट! उसे समझाने की ज़रूरत है।" यह याद करके अंद्रेई ने हर्ष के साथ सोचा: "नही यह ग़लती नही करेगा। अगर लगाम लगानी है, तो मकार पर! कही तैश में आकर कुछ उल्टा-सीधा न कर बैठे। अगर मकार की दुम पर पाव पड़ गया तो गया छकड़ा हाथ से .. क्या गया हाथ से? छकडा छकडा कहां से आ गया? मकार . तितोक.. कल .." दबे पांव आयी नीद चेतना को शून्य करती जा रही थी। अद्रेई नीद में डूबता जा रहा था, और उसके होठो मे, पत्ती से ढलते ओस कणों की तरह मुस्कान टपक रही थी।

६

सवेरे के कोई सात बजे जब दवीदोव ग्राम-सोवियत मे पहुचा तो वहा ग्रेम्याची के चौदह गरीब जमा हो चुके थे।

"अरे हम तो बहुत देर से आपकी बाट जोह रहे है, सुबह-सवेरे आ गये थे," ल्युबीश्किन अपनी चौडी हथेली मे दवीदोव का हाथ पकडकर मुस्कराया।

"सब्र नही हो रहा . ." बूढ़े श्चुकार ने स्पष्ट किया।

यह वही था जो औरतोवाला सफेद समूर का ओवरकोट पहने ग्राम-सोवियत के अहाते मे पहले दिन दवीदोव से मज़ाक कर रहा था। उस दिन से वह अपने को दवीदोव का निकट परिचित मानने लगा और उसके साथ दोस्ताना अंदाज़ में बाते कर रहा था, दूसरों की तरह नही। उसके आने से पहले बूढा श्चुकार कह रहा था "मै और दवीदोव जो फ़ैसला करेंगे वही होगा। परसो वह बडी देर तक मुझसे सलाह-मशविरा करता रहा। हां, गंभीर बातो के बीच मे हंसी-मजाक भी हुआ, पर हम दोनों ने ज्यादातार प्लान्स पर विचार किया कि सामूहिक फार्म कैसा हो। बडा हंसमुख आदमी है, मेरे ही जैसा "

दवीदोव ने सफ़ेद ओवरकोट से श्चुकार को पहचान लिया और अनजाने ही उसे बड़ी ठेस पहुंचा दी:

"अरे, यह तुम हो, बाबा? देखा न: परसो तुम यह जानकर कि मै किसलिये आया हूं, मानो निराश हो गये थे, पर आज खुद

सामूहिक फार्म के सदस्य हो। शाबाश!"

"वक्त नही था बिलकुल वक्त नही था, इसीलिये चला गया था" बूढा श्चुकार बडबडाता हुआ दवीदोव के पास से हट गया।

दो दल बनाकर कुलको को बेदखल करने के लिये जाने का फैसला किया गया। पहले दल को गाव के ऊपरी भाग मे और दूसरे को निचले भाग मे जाना था। पर नागूल्नोव ने, जिसे दवीदोव ने पहले दल की अगुआई का काम सौपा, साफ-साफ इकार कर दिया। लोगो की नजरो को देखकर वह सकपका गया, उसने दवीदोव को अलग से बात करने को बुलाया।

"यह क्या तमाशा कर रहे हो?" दवीदोव ने रूखे स्वर मे पूछा।

"मै दूसरे दल के साथ निचले हिस्से मे जाऊगा।"

"अरे फर्क क्या पडता है?"

नागूल्नोव ने होठ काटे और मुह मोडकर बोला

"इस बारे मे तो अरे, क्या फर्क पडता है, तुम्हे पता चल ही जायेगा! मेरी बीवी लूश्का तिमोफेई से यारी करती है, कुलक फ्रोल दामास्कोव के बेटे से। मै नही चाहता! लोग बाते बनायेगे। मै निचले भाग मे जाऊगा, रजम्योत्नोव को पहले दल के साथ भेज दो "

"अरे, भइया, बातो से डरने लगे खैर, मै जबरदस्ती नही करता। चलो मेरे साथ, दूसरे दल को लेकर।"

दवीदोव को अचानक याद आया कि आज ही तो उसने नागूल्नोव की बीवी की भौह के ऊपर पुराना, हरा-पीला-सा नील देखा था, जब वह उन्हे नाश्ता परोस रही थी। नाक-भौ सिकोडकर, गर्दन को रोम हिलाते हुए, मानो कालर के अदर कोई तिनका चुभ रहा हो, उसने पूछा "क्या तुम्हारी करतूत है? पीटते हो?"

"नही, मै नही।"

"तब कौन?"

"वह।"

"कौन है 'वह?"

"तिमोफेई फ्रोल का बेटा "

कुछ देर तक दवीदोव असमजस मे पडा चुप रहा, फिर चिढकर बोला

"मारो गोली! मै कुछ समझा नही! चलो, बाद मे पूरी बात करेगे।"

नागूल्नोव, दवीदोव, ल्युबीश्किन, बुड्ढा श्चुकार और तीन अन्य कज्जाक ग्राम-सोवियत से निकले।

"किससे शुरू करेगे?" दवीदोव ने नागूल्नोव की ओर देखे बिना पूछा। वे दोनो उनकी बातचीत के बाद कुछ अटपटा महसूस कर रहे थे।

"तीत से।"

वे चुपचाप सडक पर जा रहे थे। खिडकियो मे लुगाइया कौतूहल के साथ उनको देख रही थी। बच्चे उनके पीछे-पीछे झुड बनाकर चलने ही वाले थे, पर ल्युबीश्किन ने बाड का खूटा उखाड लिया और अक्लमद बच्चे वही खडे रह गये। जब वे तीत के घर के पास पहुचे तो नागूल्नोव किसी की ओर मुडे बिना बोला

इस घर मे सामूहिक फार्म का कार्यालय होगा। बडा है। और कोठरिया मे सामूहिक फार्म का अस्तबल बना देगे।'

घर वास्तव मे काफी बडा था। तीत ने पडोस के तुब्यान्स्की गाव मे उसे सन् बाइस म दुर्भिक्ष क समय बाझ गाय और तीन पूद आटे के बदले खरीदा था। पहले मालिक का पूरा परिवार मर गया। बाद म तीत से इस मुफ्त के सौदे के लिये मुकदमेबाजी करनेवाला नही बचा। वह अजर-पजर खोलकर घर को ग्रेम्याची मे ले आया, नयी छत डाल दी लट्ठो की कोठरिया और अस्तबल बनवा दिये, मतलब हमेशा के लिये जड डाल दी गेरू से पुते अग्रभाग पर किसी पेटर ने पुरानी स्लाव शैली मे लिख डाला था 'त० क० बोरोदीन। सवत् १९२३ ईसवी।'

दवीदोव कौतूहल के साथ घर को निहार रहा था। सबसे पहले नागूल्नोव फाटक मे घुसा। चटखनी की आवाज सुनकर खत्ती के नीचे से बडा-सा, भेडिये जैसी रगत का जजीर से बधा कुत्ता लपका। वह बिना भौके झपटा पिछली टागो पर खडा हो गया। उसका सफेद रोयेदार पेट चमक रहा था, गले मे कसे पट्टे के कारण हाफता हुआ वह गुर्राया। आगे-पीछे दौडकर उसने कई बार जजीर तोडने की कोशिश की, पर असफलता का मुह देखकर वह अस्तबल की ओर दौड पडा।

अस्तबल तक तने तार मे पिरोया हुआ उसकी जजीर का छल्ला झनझना उठा।

"अगर ऐसा शैतान झपट ले तो बचना मुश्किल है," बूढा श्चुकार बुदबुदाया और डर के मारे नजरे दौडाता हुआ बाड के पास-पास रहने की कोशिश करने लगा।

वे झुड बनाकर घर मे घुसे। तीत की दुबली, लम्बी पत्नी नाद से बछिया को पिला रही थी। उसने बिनबुलाये मेहमानो की ओर क्रुद्ध नजर डाली। दुआ-सलाम के उत्तर मे वह कुछ इस तरह से बडबडायी, "आ गये मुह उठाये।"

'तीत घर पर है?" नागूल्नोव ने पूछा।

"नही है।"

"कहा है वह?"

"नही पता," मालकिन ने दो टूक जवाब दिया।

"तुम्हे मालूम है पेर्फील्येव्ना, हम किसलिये आये है? हम

बुड्ढा श्चुकार पहेली बूझने के अदाज मे बोल पडा, पर नागूल्नोव ने उसकी तरफ ऐसे देखा कि बुड्ढा थक गटककर रह गया। वह आह भर-कर रोब के साथ समूर के सफेद ओवरकोट के पल्लो को थामे बेच पर बैठ गया।

"घोडे घर पर है?" नागूल्नोव ने रूखे सत्कार को अनदेखा करते हुए पूछा।

'घर पर है।"

"और बैल?"

"नही है। तुम लोग आये किसलिये हो?"

"तुम्हारे साथ हम नही " बुड्ढा श्चुकार ने फिर मुह खोला पर इस बार ल्युबीश्किन ने उसके ओवरकोट का पल्ला खीचकर उसे तेजी से कमरे से बाहर कर दिया और वह बात पूरी न कर पाया।

"बैल कहा है?"

"तीत उन्हे जोतकर ले गया है।"

"कहा?"

"मैने तुम्हे कह तो दिया कि नही जानती।"

नागूल्नोव ने दवीदोव को आख मारकर इशारा किया और बाहर

निकल गया। पास से गुजरते हुए उसने श्चुकार को घूसा दिखाकर सलाह दी

"जब तक तुम से कोई पूछता नही तुम चुप रहा करो।" और दवीदोव की ओर मुडकर बोला "हाल बुरा है। देखना चाहिये कि बैल कहा गये। कही वह उनको पार न कर दे "

"बैलो के बिना ही सही "

"अरे तुम क्या कह रहे हो!" नागूल्नोव सिहरकर बोला। "उसके बैल गाव मे सबसे बढिया है। उनकी कोई सानी नही। तुम कह क्या रहे हो! तीत और बैलो को ढूढना चाहिये।"

ल्युबीश्किन मे कानाफूसी करके वे ढोरो के बाडे और फिर वहा से कोठरी और खलिहान मे गये। कोई पाच मिनट बाद ल्युबीश्किन ने लम्बी लाठी मे लैस होकर कुत्ते को खत्ती के नीचे खदेड दिया और नागूल्नोव अस्तबल से ऊचे स्लेटी घोडे को निकाल लाया। घोडे को थपथपाकर उसने अयाल पकडी और सवार हो गया।

"अरे तू यह क्या कर रहा है मक्कार, बिना पूछे पराये घर मे मनमानी कर रहा है?" मालकिन दौडती हुई ओसारे पर आयी और कूल्हो पर हाथ टिकाकर चिल्लायी। 'मेरा आदमी जब लौटेगा, मै उसे! वह तुझे देख लेगा! "

"शोर मत मचा! अगर वह घर पर होता तो मै खुद उसे देख लेता। कामरेड दवीदोव जरा इधर तो आना!"

नागूल्नोव की हरकतो मे असमजस मे पडा दवीदोव उसके पास गया।

"खलिहान से बैलो के ताजे निशान सडक की ओर जा रहे है। लगता है, तीत को भनक पड गयी और वह बैलो को हाककर बेचने ले गया। गाडिया सारी कोठरी मे ही है। लुगाई झूठ बोलती है! तुम लोग इतने मे कोचेतोव के यहा काम पूरा करो और मै अभी तुब्यान्स्की होकर आता हू। वह सिर्फ वही उन्हे ले जा सकता है। जरा टहनी तो तोडकर देना मुझे घोडे को दौडाने के लिये।"

नागूल्नोव खलिहान से सीधा सडक की ओर चल पडा। उसके पीछे-पीछे बर्फ की सफेद धूल उडती जा रही थी जो बाद मे धीरे-धीरे रजत कणो मे बाडो और जगली घास की टहनियो को ढकती जाती। बैलो और एक घोडे के खुरो के निशान सडक तक जाकर लुप्त हो

गये थे। नागूल्नोव तुब्यान्स्की की ओर कोई दो-तीन सौ गज़ तक घोडे को दौडाता रहा। रास्ते मे बर्फ के ढेरों पर उसे वही चिन्ह नजर आ रहे थे, बस हवा ने उनमे बर्फ का बुरादा भर दिया था। वह निश्चित होकर कि सही दिशा मे जा रहा है, घोडे को दुलकी चाल मे दौडाने लगा। इस तरह वह कोई डेढ-एक मील चलता रहा पर अगले ढेर पर उसे खुरो के चिन्ह नजर नही आये। झट मे घोडे को मोडकर वह नीचे कूदा। वह ध्यान से देखने लगा कि कही बर्फ ने चिन्हो को ढक तो नही दिया। बर्फ का ढेर बिलकुल साफ था। बस ढेर के किनारे पर कौए के पजो के सलीब जैसे निशान थे। गाली देकर नागूल्नोव धीरे-धीरे उल्टा चल पडा, वह इधर-उधर नजरे दौडाता जा रहा था। शीघ्र ही उसे खुरो के निशान दिखायी पडे। चरागाह के पास बैल सडक मे उतर गये थे। घोडे को दौडाते समय बैलो के निशान उसकी नजर मे नही आये। वह समझ गया कि तितोक टीले पर चढकर सीधा वोयस्कोवोय गाव की ओर गया है। "शायद किसी जान-पहचानवाले के यहा गया है," निशानो के साथ-साथ, घोडे की रफ्तार को नियंत्रित करते हुए उसने सोचा। टीले के उस पार, स्योर्तवी खड्ड के पास बर्फ पर बैल का गोबर दिखायी पडा वह रुक गया। गोबर ताजा था, हाल ही मे उस पर बर्फ की पतली पपडी जमी थी। नागूल्नोव ने जेब म रिवाल्वर की ठडी मूठ को टटोला। वह धीरे-धीरे खड्ड मे उतरा। कोई आधे मील के सफर के बाद उसे कुछ दूरी पर पत्र-विहीन बलूत वृक्षो के कुज के पीछे घुडसवार और खुले बैलो की जोडी दिखायी दी। घुडसवार झुककर चाबुक घुमा रहा था। उसके कधो के आगे से तबाक का नीला धुआ उठकर हवा मे विलीन होता जा रहा था।

"उल्टा मोड!"

तीत ने हिनहिनाती घोडी को रोका, पीछे मुडकर देखा और मुह से सिगरेट थूककर धीरे-धीरे बैलो के आगे चला गया और धीमे से बोला

"क्या हुआ? हुत्त-हुत्त रुक!"

नागूल्नोव पास पहुचा। तीत ने उसे घूरकर देखा।

"तू किधर जा रहा है?"

"बैल बेचना चाहता था, मकार। मै कुछ छिपा नही रहा।"

तीत ने नाक सिनकी। मगोल की तरह लटकी ललौही मूछो को दस्ताने से रगड-रगडकर पोछा।

वे अपने घोडो पर आमने-सामने बैठे थे। उनके घोडे फुफकारकर एक-दूसरे को सूघ रहे थे। नागूल्नोव का हवा से लाल चेहरा गुस्से मे तमतमाया था। तीत देखने मे शात लग रहा था।

"बैलो को मोडकर घर चलो!" नागूल्नोव ने एक ओर हटते हुए आदेश दिया।

पल भर के लिये तीत हिचकिचाया वह उनीदे में सिर को झुकाकर लगाम से खेल रहा था, उसकी आखे अधखुली थी, गाढे के अपने स्लेटी ओवरकोट मे फटे झबरीले कनटोप पर हुड चढाये वह ऊघते बाज की तरह लग रहा था। "अगर इसने ओवरकोट मे कुछ छिपा रखा है तो वह अभी हुक खोलेगा," जड बैठे तीत को अपलक देखता नागूल्नोव सोच रहा था। पर उसने मानो तद्रा से जागकर चाबुक फटकारा। बैले उल्टे लौट पडे।

"ले लोगे? बेदखल करोगे?' अपना मौन तोडकर तीत ने भौहो तक झुके हुड के नीचे से नागूल्नोव की ओर अपनी नीलाभ आखे चमकाकर पूछा।

"बना ली न अपनी गत। तुझे बदी दुश्मन की तरह पकडकर ले जा रहा हू!" नागूल्नोव चिल्लाया, उसका सब्र टूट गया।

तीत सिकुड गया। टीले तक वह चुप रहा। फिर उसने पूछा

"मेरा क्या करोगे?"

"निकाल देगे यहा से। तेरे ओवरकोट के नीचे यह क्या उभरा हुआ है?"

"कट्टा,' तीत ने नागूल्नोव की ओर तिरछी नजर डाली और ओवरकोट का पल्ला खोल दिया।

कोट की जेब से, सफेद हड्डी की तरह, कट्टे का लापरवाही से बनाया गया मैला कुदा चमका।

'लाओ, मुझे दो।' नागूल्नोव ने हाथ बढाया, पर तीत ने उसे चुपचाप झटक दिया।

"नही, नही दूगा!" और लटकी मूछो के नीचे, धूम्रपान से काले दातो को उघाडकर मुस्करा दिया। वह नागूल्नोव को नेवले की तरह पैनी, पर चचल नजर से देख रहा था। "नही दूगा! जायदाद

मेरी छीन रहे हो, और आखिरी कट्टा भी छीनना चाहते हो? कुलक को कट्टे से लैस होना चाहिये, उसके बारे मे अखबार यही तो लिखते है। कुलक के पास कट्टा होना जरूरी है। क्या पता, मै इसकी मदद से अब अपनी रोटी कमाऊगा, क्यो? "

वह सिर हिला-हिलाकर हस रहा था, पर हाथ जीन के हरने पर टिके थे। नागूल्नोव ने कट्टा देने की माग नही की। "वहा, गाव मे मै तुझे देख लूगा," उसने फैसला किया।

"मक्कार, तू शायद सोच रहा है कि क्यो मै कट्टे के साथ गया?" तीत बोला। "बडी मुसीबत है इसके साथ यह मेरे पास पुराने ज़माने से है, याद है मै तब उक्राइनियो के विद्रोह मे लाया था? पडे-पडे जग लग गया। मैने इसको साफ करके तेल डाल दिया, – टिप-टाप कर दिया। सोचा था किसी जानवर या बुरे आदमी के खिलाफ काम आयेगा। और कल पता चला कि तुम लोग कुलको का माल जब्त करनेवाले हो बस यह नही मालूम था कि तुम आज ही शुरू कर दोगे नही तो बैलो को रात ही रात पार कर देता "

"किससे पता चला?"

"अरे यह भी तुझे बता दू! अफवाहे खूब उड रही है। हा-हा, और हम मिया-बीवी ने रात को बैलो को भरोसेमद आदमी को सौपने का फैसला किया। कट्टा भी साथ ले लिया, स्तेपी मे फेकना चाहता था ताकि तुम्हे मेरे घर मे न मिल जाये, पर फेकते हुए मुझे दुख हुआ और तू आ धमका। अरे मेरे तो घुटने ही काप गये!' वह आखे बनाता हुआ जोर-जोर से बोल रहा था और अपनी घोडी से नागूल्नोव के घोडे को धकेलता जा रहा था।

"तू मजाक बाद मे करना, तीत! अभी मुह बद करके बैठ।"

"अरे क्यो! अभी तो वक्त है मेरे लिये मजाक करने का। लडाई लडकर अपने लिये मीठी ज़िदगी जीती, इसाफपसद सत्ता की हिफाजत की और वही मेरी गुद्दी दबोच रही है " तीत का गला अचानक रुध गया।

और इस क्षण से वह चुप हो गया, वह जान-बूझकर अपनी घोडी को कुछ रोकता ताकि नागूल्नोव कुछ आगे हो जाये पर वह भी डर के मारे रुक जाता। बैल बहुत दूर चले गये थे।

"तेज-तेज चल!" नागूल्नोव जेब मे रिवाल्वर को थामे हुए तीत

की ओर घूरकर बोला। वह तो तीत की नस-नस पहचानता था! जितना वह जानता था उससे ज़्यादा और कोई नही। "अरे पीछे मत रह! अगर गोली चलाने की सोचता है, तो नही चला पायेगा, तुझे इसका वक़्त कहा मिलेगा।"

"अरे, तू तो डरपोक हो गया है!" तीत मुस्कराया और घोडी को चाबुक मारकर सरपट आगे चला गया।

७

जब अंद्रेई रजम्योत्नोव अपने दल के साथ फ्रोल दामास्कोव के यहा पहुचा, वह अपने परिवार के साथ दोपहर का खाना खा रहा था। मेज पर खुद फ्रोल – तिकोनी दाढी और बाये कटे नथुनेवाला (बचपन मे सेब के पेड से गिरकर उसका चेहरा बिगड गया था, इसीलिये उसे नकटा कहते थे) नाटा, जर्जर बुड्ढा, उसकी बीवी – हृष्ट-पुष्ट, रौबदार बुढिया, बाइस साल का बेटा तिमोफेई और सयानी बेटी बैठे थे।

सुदर-बाका तिमोफेई मेज पर से उठा। उसका चेहरा मा से मिलता-जुलता था। उसने कपडे से अपने चमकीले होठ पोछे, धृष्ट, उभरी आखे सिकोडी और गाव के नबर एक बाके की तरह, जिसको सभी लडकिया दिल दे बैठी थी, मनमौजी अदाज से इशारा करके बोला

"आइये, बैठिये, प्यारे नेता लोग!"

"हमारे पास बैठने का वक्त नही है," अंद्रेई फाइल से एक कागज निकालकर बोला "गरीबो की सभा ने तुझे, नागरिक फ्रोल दामास्कोव को, बेदखल करके सारी जायदाद और मवेशी जब्त करने का फैसला किया है। इसलिये खाना-वाना खाकर मकान खाली कर दो। इतने में हम सामान की सूची बना लेते हैं।"

"यह कैसे?" चम्मच पटककर फ्रोल खडा हो गया।

"कुलक वर्ग के रूप मे हम तेरा सफाया कर रहे है," द्योम्का उशाकोव ने उसे समझाया।

फ्रोल चमडे के तलवोंवाले नमदे के बूटो को चरमराता कमरे मे गया और वहा से एक कागज लाया।

"यह रहा सार्टीफिकेट, रजम्योत्नोव, तुमने खुद इस पर दस्तखत किये थे।"

"कैसा सार्टीफिकेट ?"

"ऐसा कि मैने पूरा अनाज दे दिया।"

"अनाज का क्या वास्ता इससे।"

"तब क्यो मुझे घर से निकालकर सब जब्त कर रहे हो ?"

"गरीबो का फैसला है, मैने तुम्हे समझा तो दिया।"

"ऐसा कोई कानून नही है!" तिमोफेई जोर से चिल्लाया। "तुम डाका डाल रहे हो! बप्पा, मै अभी इलाकाई कार्यकारिणी मे जाता हू। जीन कहा है ?"

"अगर चाहता ही है तो इलाकाई कार्यकारिणी तू पैदल जायेगा। घोडा नही दूगा," यह कहकर अद्रेई मेज के सिरे पर बैठ गया और उसने पेसिल-कागज निकाला

फ्रोल की कटी नाक नीली पड गयी, सिर कापने लगा। वह खडे-खडे फर्श पर धम्म से बैठ गया, उसकी फूली, काली-सी जबान मुश्किल से चल रही थी

हरामियो! कुतिया की औलादो! लूट लो! मार डालो!"

"बप्पा, भगवान के लिये उठ जाइये!" रोकर बेटी बाप की बगलो मे हाथ डालकर उसे उठाने की कोशिश करने लगी।

फ्रोल आपे मे आया और उठकर बेच पर लेट गया। वह अब उदासीनता के साथ द्योम्का उशाकोव और लम्बे कद के शर्मीले मिखाईल इग्नात्योनोक को सुन रहा था जो रजस्योत्नोव को लिखवा रहे थे

"सफेद लट्टुओवाला लोहे का पलग, परो भरा गद्दा, तीन तकिये, और दो लकडी के पलग "

"बर्तनो की अल्मारी। क्या एक-एक बर्तन का नाम गिनाऊ? अरे मारो भी गोली!'

"बारह कुर्सिया, एक टेकवाली बैच। एक अकार्डियन।"

"अकार्डियन नही लेने दूगा!" तिमोफेई द्योम्का के हाथ से छीनकर बोला "भेगे, मत छेड, नही थोबडा तोड दूगा!'

"मै तेरा ऐसे तोडूगा कि सगी मा भी न पहचान पायेगी!"

"मालकिन, सदूको की चाबिया ला।"

"नही दो इन्हे, अम्मा! तोड ले अपने आप ताले अगर इन्हे इसका हक है!"

"है हमारे पास तोडने का हक ?" सजीव होकर देमीद घुन्ने ने

पूछा, वह सिर्फ खास जरूरत पडने पर ही बोलता था, बाकी समय चुपचाप काम करता था, त्योहार के दिन गली मे जमा होनेवाले कज्जाको के साथ चुपचाप खडा होकर सिगरेट पीता था, सभाओ मे चुप बैठा रहता और बस कभी-कभार ही सभाषी के प्रश्नो का उत्तर देते हुए किसी मुजरिम की तरह मुस्कराता कि देखकर उस पर दया आती।

देमीद के लिये यह ससार बेकार की आवाजो से भरा पडा था। उनसे जीवन का जाम लबालब भरा था, ये आवाजे रात को भी बद नही होती, सन्नाटे को न सुनने देती, उस प्रज्ञ नीरवता को भग करती जो प्राय पतझड की ऋतु मे स्तेपी और वन मे व्याप्त होती है। देमीद को लोगो का गुल-गपाडा नही पसद था। वह गाव के आचल मे अलग रहता था, बडा मेहनती था और इलाके मे उस जैसा ताकतवर कोई दूसरा नही था। पर भाग्य उसका फूटा था, दर-दर की ठोकरे खिलाता उसे, सौतेला व्यवहार करता था पाच साल उसने फ्रोल दामास्कोव के यहा कमर तोडी, फिर शादी करके अपनी खेतीबारी शुरू कर दी। घर-बार खडा ही किया कि आग लग गयी। एक साल बाद फिर सब कुछ स्वाहा हो गया, बस धुए की गध छोडता हल ही बचा। शीघ्र ही बीवी भी छोडकर चली गयी, बोली "दो साल तेरे साथ रही, तेरे मुह से दो शब्द नही सुने। मुझसे नही होना, अकेला रह! जगल मे भेडिये के साथ भी मन इतना नही उचटेगा! तेरे साथ रहकर तो दिमाग का पेच ढीला हो जायेगा। मै खुद अपने से बोलने लगी हू "

लुगाई तो देमीद से हिल-सी गयी थी। हा, यह जरूर था कि पहले महीनो रोकर पति के पीछे पड जाती 'देमीद प्यारे! तुम मुझसे कुछ बात तो करो। अरे, एक शब्द ही बोल दो!" देमीद के होठो पर बस बाल-सुलभ मुस्कान ही आ जाती, वह अपनी छाती के बाल खुजलाने लगता। और जब पत्नी के हठ से ऊब जाता तो भारी आवाज मे कहता "तू तो मैना है, मैना!" और घर मे चला जाता। न जाने क्यो लोग-बाग देमीद को गर्वीला और चालाक, घाघ कहने लगे। शायद इसीलिये कि जिदगी भर वह लोगो के गुल-गपाडे और शोर से कन्नी काटता रहा?

इसीलिये तो देमीद की गरजती आवाज सुनकर अद्रेई ने सिर उठाकर उसका सवाल दोहराया

"हक?" वह घुन्ने को ऐसे ताक रहा था मानो पहली बार उससे मिला हो। "हा, है हक हमे!"

देमीद अपनी गीली, घिसी-फटी जूतियों से फर्श को गदा करता हुआ टेढे-मेढे कदम रखता अदर के कमरे की ओर चल दिया। मुस्कराते हुए उसने दरवाजे मे खडे तिमोफेई को टहनी की तरह हाथ से हटा दिया और उसके कदमों से झनझनाते बर्तनों की अलमारी के बराबर मे सदूक के पास गया। उसने उकडू बैठकर, भारी ताले को हाथ मे लेकर उलटा-पलटा। एक मिनट बाद टूटा ताला सदूक पर रखा था और अर्कांशा बदलू चकित होकर घुन्ने को देखता हुआ प्रशसा के भाव के साथ बोला

' ऐसे के साथ ताकत की अदला-बदली करनी चाहिये! '

अद्रेई ढग से लिख भी न पा रहा था। कमरे मे और बैठक मे ग्रोम्का उशाकोव, अर्कांशा और वसीलीसा ताई – अद्रेई के दल की एकमात्र महिला – विविध स्वरो मे चिल्ला रहे थे

'समूर का जनाना ओवरकोट दोनवाला! '

भेड की खाल का लम्बा ओवरकोट!"

तीन जोडी नये फुलबूट रबड के तलवोवाले!"

ऊनी कपडे के चार पीस!

अद्रेई! रजम्योत्नोव! लल्ला यहा तो इतनी चीजे है कि एक छकडा काफी नही होगा! छीट भी काली साटन भी और भी न जाने क्या-क्या है "

कमरे मे जाते समय अद्रेई को गलियारे से लडकी की हाय-तोबा मालकिन की चीख और इग्नात्योनोक की अनुनय-विनय सुनायी पडी। अद्रेई ने दरवाजा खोला

"क्या हो रहा है यहा? '

मालिक की बेटी दरवाजे का सहारा लेकर फूट-फूटकर रो रही थी उसका चेहरा आसुओ से सूजा था। उसके पास मा फुदक रही थी और शर्म से लाल इग्नात्योनोक झेपी-झेपी मुस्कान के साथ लडकी के लहगे के पल्ले को खीच रहा था।

"तू यह क्या कर रहा?!" अद्रेई ने बात को समझे बिना, गुस्से से तमतमाकर इग्नात्योनोक को जोर से धक्का दिया। वह पीठ के बल गिर पडा, नमदे के जूतोवाली उसकी लम्बी टागे ऊपर को

उठ गयी। "यहा चारो ओर राजनीतिक घटनाये हो रही है! दुश्मन पर चढाई हो रही है और तू कोने मे लौडियो से छेडखानी कर रहा?! इसके लिये तुझे अदालत "

"अरे तुम सुनो भी, मेरी बात!" इग्नात्योनोक सहमकर खडा हो गया। "मुझे इसकी जरूरत क्या पडी है! इससे छेडखानी! अरे तुम देखो तो यह नौवा लहगा चढा रही है! और मै उसे नही चढाने दे रहा, और तुम धक्का देने लगे मुझे "

तभी अद्रेई ने ध्यान दिया कि लडकी हडबडी का लाभ उठाकर कमरे से कपडो की पोटली उठा लायी और सचमुच उसने एक के ऊपर एक कई ऊनी पोशाके पहन ली। वह कोने मे दुबककर लहगा ठीक कर रही थी, बडी अजीब-सी बेढब लग रही थी इतने कपडे लादकर। उसकी गीली, खरगोश की तरह लाल आखो को देखकर अद्रेई को घिन और दया आने लगी। धडाम से दरवाजा बद करके उसने इग्नात्योनोक को कहा

"इसके कपडे मत उतारना! जो पहन लिया, सारी गोली पर पोटली ले लो!'

घर के सामान की सूची पूरी हो रही थी।

"कोठरी की चाबी," अद्रेई ने माग की।

जलकर कोयला बने ठूठ की तरह काले फ्रोल ने हाथ झाडकर कहा

'नही है चाभिया-वाभिया!"

"जा तोड दे," अद्रेई न देमीद को आदेश दिया।

वह कोठरी की ओर चल पडा, रास्ते मे उसने छकडे मे कीली निकाल ली।

पाच पौड का भारी ताला बडी मुश्किल से कुल्हाडे से टूटा।

"तू चौखट को तो मत काट! कोठरी अब हमारी है, तू अपनी चीज की तरह ध्यान से। देखकर! सभालकर!" हाफते घुन्ने को द्योम्का सलाह दे रहा था।

उन्होंने अनाज मापना शुरू किया।

"चलो अभी बो देते है, क्यो? वहा देखो खत्ती मे सूप भी है," खुशी के नशे में चूर इग्नात्योनोक ने सुझाव दिया।

सब उसकी हसी उडाने लगे, नापने के बर्तन मे उम्दा गेहू को

भरते हुए वे बडी देर तक हसी-मजाक करते रहे।

"इसमे से तो दो-एक सौ पूद अनाज वसूलीवालो को भी दिया जा सकता है," घुटनो तक अनाज मे धमा द्योम्का उशाकोव बोल रहा था। वह बेलचे से गेहू को खत्ती के मुह के पास डाल रहा था, कभी-कभी वह रुककर उसे मुट्ठी मे भर लेता और फिर उगलिया खोलकर बिखेर देता।

"बढिया फसल होगी इससे।"

"अरे कहा! गेहू नही कुदन है, पर लगता है मिट्टी मे गडा हुआ था देखते हो कुछ सीला-सा है।"

अर्काशा बदलू और दल का एक और लडका बाडे मे व्यस्त थे। अर्काशा अपनी सुनहरी दाढी को सहलाते हुए बैलो के गोबर की ओर दिखा रहा था, जिसमे मकई के अनपचे दाने नजर आ रहे थे

'अरे, ये काम कैसे नही करेगे? अनाज खाते है और हमारी सहकारिता मे तो भूसी भी पेट भर नही मिलती।'

अनाज की कोठरी म लोगो की गूजती आवाजे ठहाके, गेहू की सुगध भरी धूली बाहर फैल रही थी, कभी-कभी कोई चुनिदा गाली सुनायी पडती अद्रेई घर मे लौट आया। मालकिन ने बेटी के साथ बोरी मे बर्तन-भाडे भर लिये थे। फ्रोल मुर्दे की तरह छाती पर हाथ रखे बेच पर लेटा था उसके पावो मे बस मोजे ही बचे थे। तिमोफेई ने, जो अब कुछ शात लग रहा था, उसकी ओर घृणा के साथ देखा और खिडकी की ओर मुह मोड लिया।

कमरे मे अद्रेई को उकडू बैठा घुन्ना दिखायी दिया। वह फ्रोल के नये चमडे के तलवोवाले नमदे के बूट पहने था उसने अद्रेई को अदर आते नही देखा, वह टीन के पीपे मे से बडे चम्मच मे भर-भरकर चटखारे लेता हुआ, पीली, चिपचिपी बूदो को दाढी पर टपकाता हुआ शहद खा रहा था

८

तीत के साथ नागूल्नोव जब गाव लौटा तो दोपहर हो चुकी थी। उनकी अनुपस्थिति मे दवीदोव दो कुलक घरानो की जायदाद जब्त

करके, उनके मालिको को बेदखल करके तीत के घर लौटा और उपलों की कोठरी मे छिपे अनाज को ल्युबीश्किन के साथ नाप-तौल चुका था। बुड्ढे श्चुकार ने भेडो की नाद मे जूठन डाली और तीत को आते देख जल्दी-जल्दी भेडो के बाडे मे चला गया।

तीत जैकेट के बटन खोलकर, सिर उघाडे अहाते मे घूम रहा था। उसने खलिहान की ओर पाव मोडे पर नागूल्नोव चिल्लाया

"फौरन इधर, नही तो कोठरी मे बद कर दूगा! "

वह गुस्से मे उत्तेजित था, उसका गाल सामान्य से अधिक फडक रहा था न जाने कहा और कैसे तीत ने उसकी नजर बचाकर कट्टा फेक दिया था। खलिहान के पास पहुचकर ही नागूल्नोव ने उससे पूछा था

"कट्टा तो देगा या नही? नही तो छीन लेगे।"

'मजाक छोड!" तीत मुस्करा दिया था। "तूने सपने मे देखा होगा उसे। "

उसके ओवरकोट के नीचे भी कट्टा नही मिला। वापस लौटकर ढूढना व्यर्थ था गहरी बर्फ, जगली घास मे कहा मिलेगा। नागूल्नोव ने अपने पर कुढते हुए दवीदोव को इसके बारे मे बता दिया, और वह, जो तितोक को इतनी देर मे कौतूहल के साथ ताक रहा था उसके पास जाकर बोला

"नागरिक तुम हथियार तो दे दो! तुम्हारा ही फायदा है इसमे।"

"नही था मेरे पास कोई हथियार-वथियार! नागूल्नोव मुझसे बदला लेने के लिये चुगली कर रहा है।" तीत गधबिलाव की तरह आखे मटकाते हुए मुस्कराया।

'तो ठीक है, तुम्हे गिरफ्तार करके इलाकाई केन्द्र भेजना पडेगा।"

"मुझे?"

"हा, तुम्हे। तुम क्या सोच रहे थे? तुम्हारे पुराने जीवन का खयाल करेगे? तुम अनाज छिपाकर रखते हो, देसी "

"मुझे? " मानो कूदने के लिये झुककर सीटी की तरह सास लेते हुए तीत ने सवाल दोहराया।

सारी दिखावटी खुशमिजाजी, सयम और धीरज पल मे काफूर हो गये। दवीदोव के शब्द अब तक उसमे घुटते प्रचड क्रोध के विस्फोट का पलीता बन गये। उसने पीछे हटते दवीदोव की ओर कदम बढाया, अहाते

मे पडे जुए से ठोकर खाकर वह झुका और उसने झटके से उसका कीला निकाल लिया। नागूल्नोव और ल्युबीश्किन दवीदोव की ओर लपके। बुड्ढा श्चुकार भाग खडा हुआ। उल्टे मुसीबत यह कि वह दौडते हुए अपने ओवरकोट के हद मे ज्यादा लम्बे पल्लो मे उलझकर गिर पडा और जोर-जोर मे चिल्लाने लगा

"बचाओ, बचाओ! अरे मार डाला!"

दवीदोव ने तीत की बायी कलाई पकड ली पर उसने दाये हाथ मे उसके सिर पर प्रहार किया। दवीदोव लडखडाया पर गिरा नही। घाव मे फूटी खून की घनी धारा उसकी आखो मे भरने लगी, उसे कुछ दिखायी नही दे रहा था। दवीदोव ने तीत का हाथ छोड दिया, लडखडाते हुए उसने हथेली मे आखो को ढका। दूसरे प्रहार ने उसे बर्फ पर धराशायी कर दिया। उसी क्षण ल्युबीश्किन ने तीत को अपनी बाहो मे जकड लिया। पर वह शक्तिशाली होने के बावजूद उसे नही पकडे रह पाया। उसके हाथो मे छूटकर तीत छलागे लगाता खलिहान की ओर दौड पडा। नागूल्नोव ने उसका पीछा करके फाटक के पास, घन बालोवाली सपाट खोपडी पर रिवाल्वर की मूठ मे वार किया। तीत की लुगाई ने और भी गडबड कर दी। ल्युबीश्किन और नागूल्नोव को अपने पति के पीछे दौडते देखकर उसने कोठरी के पास जाकर झट मे कुत्ते की चेन खोल दी। उसने लोहे के पट्टे को खडखडाते हुए अहाते का तेजी मे चक्कर लगाया और बुड्ढे श्चुकार की भयाक्रात चीखो को सुनकर, बर्फ पर फैले उसके ओवरकोट की ओर लपककर झपट पडा भेड की खाल के सफेद ओवरकोट की धज्जिया उडने लगी। बुड्ढा श्चुकार उठ खडा हुआ और कुत्ते पर पटापट पैर चलाते हुए बाड के खूटे को उखाडने की कोशिश करने लगा। वह अपनी पीठ पर कालर दबोचे खूख्वार कुत्ते को कोई चार-पाच गज तक घसीटता ले गया। अतत पूरा जोर लगाकर वह खूटा उखाडने मे सफल हो ही गया। कुत्ता बिलबिलाकर पीछे हट गया पर जाते-जाते उसने बुड्ढे के ओवरकोट को उधेड दिया।

"मकार, जरा देना मुझे रिवाल्वर! . " आखे तरेर कर उत्साह मे बुड्ढा श्चुकार गला फाडकर चिल्लाया। "दे दो, अभी खून खौल रहा है! मै उसका और उसकी मालकिन दोनो का काम तमाम कर दूगा! "

तब तक दवीदोव को सहारा देकर घर के अंदर ले जाया चुका था। घाव के गिर्द बाल काट दिये, जिसमें से बुलबुले छोड़ता काला खून अभी तक रिस रहा था। अहाते में ल्युबीश्किन बर्फ़गाड़ी में तीत के घोड़े जोत रहा था। नागूल्नोव मेज़ पर बैठा जल्दी-जल्दी लिख रहा था।

"रा० प० उ०* के इलाक़ाई अधिकारी कामरेड ज़ख़ारचेन्को। मैं आपके पास प्रतिक्रांतिकारी तत्व के रूप में कुलक तीत कोन्स्तानतीनोविच बोरोदीन को भिजवा रहा हूं। इस कुलक के यहा ज़ब्ती के वक़्त इसने हमारे यहां भेजे गये पच्चीसहज़ारी कामरेड दवीदोव पर औपचारिक रूप से हमला किया और दो बार उनके सिर पर लोहे के कीले से वार करने में सफल हुआ।

"इसके अलावा मैं घोषित करता हूं कि मैंने बोरोदीन के पास रूसी माडल का रायफ़ल का कट्टा देखा था जो मै टीले पर होने के कारण और खून-ख़राबे के डर से नही छीन सका। कट्टा इसने आंख चुराकर बर्फ़ में फेंक दिया। मिलने पर आपके पास सबूत के तौर पर भिजवा देंगे।

अखिल संघीय कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की
ग्रेम्याची इकाई का सचिव और लाल पताका
पदक-धारक स० नागूल्नोव"

तीत को बर्फ़गाडी में बिठाया गया। उसने पानी पिलवाने और नागूल्नोव को उसके पास बुलवाने का अनुरोध किया। वह घर के ओसारे से चिल्लाया:

"क्या चाहिये तुझे?"

"मक्कार! याद रख!" अपने बधे हाथो को हिलाता हुआ, शराबियों की तरह चिल्लाकर तीत बोला: "याद रख, हमारे रास्ते फिर मिलेंगे! तू ने मुझे कुचला, पर तब मैं कुचलूंगा। मार के दम लूंगा।

* राजनीतिक महानिदेशालय – रूसी मे 'ग्लावनोये पोलीतीचेस्कोये उप्रवलेनिये' – तत्कालीन सुरक्षा विभाग। – स०

खुद गयी हमारी दोस्ती की क़ब्र!"

"जा यहां से, बैरी!" नागूल्नोव हाथ झटककर बोला

घोड़े सरपट दौड पडे।

६

सांझ ढलने पर ही अंद्रेई रज़म्योत्नोव ने उसके साथ काम करनेवाले ग़रीबों के सहयोग दल को छुट्टी दी, गायेव कुलक के घर मे ज़ब्त माल के आखिरी छकड़े को तीत के यहा रवाना किया, जहा सभी कुलकों का माल-असबाब जमा किया जा रहा था, और ग्राम-सोवियत की ओर चल दिया। सुबह ही उसने दवीदोव से वहां आम सभा से एक घंटे पहले मिलने की बात कर ली थी जो अंधेरा छाने पर शुरू होनेवाली थी।

ड्योढ़ी से ही अंद्रेई को ग्राम-सोवियत के कोनेवाले कमरे मे रोशनी दिखायी पडी और वह पटाक से दरवाज़ा खोलकर कमरे में घुसा। आहट सुनकर दवीदोव ने डायरी पर झुका सफ़ेद कपडे मे बंधा अपना सिर उठाया और मुस्करा दिया।

"लो रज़म्योत्नोव भी आ गया। बैठो, हम कुलकों के यहा मिले अनाज का हिसाब लगा रहे है। अरे हा, तुम्हारा काम कैसा रहा?"

"हो गया तुमने सिर क्यो कपडे मे लपेट रखा है?"

अखबार के पन्ने से लैम्प शेड बनाते हुए नागूल्नोव अनिच्छा के साथ बोला.

"तीत का काम है। कीले से। तीत को मैने ज़खार्चेन्को के पास ग० प० उ० मे भेज दिया है।"

"ज़रा रुको, अभी बतायेंगे।" दवीदोव ने मेज़ पर गिनतारा सरकाया। "जोड़ो एक सौ पंद्रह। जोड़ लिया? एक सौ आठ..."

"ठहरो! रुको ज़रा!" नागूल्नोव सावधानी के साथ उंगलियों से गिनतारे के मनकों को खिसकाते हुए चिंतित स्वर में बुदबुदाया।

अंद्रेई उन पर नज़र डालकर कांपते होंठों से, बैठे स्वर में बोला:

"आगे नही करूंगा काम।"

"क्या नहीं करेगा? कहां?" नागूल्नोव ने गिनतारे को एक ओर रखकर पूछा।

"बेदखली करने नही जाऊगा कुलको की। तू आखे फाडकर क्या देख रहा है? क्या दौरा पडवाना चाहता है?"

'तुम ने पी रखी है क्या?" दवीदोव ने आशकापूर्ण ध्यान के साथ अद्रेई के क्रुद्ध दृढता से भरे चेहरे पर नजरे गडायी। "तुम्हे क्या हो गया? क्या मतलब – क्यो नही करोगे?"

उसकी शात, पतली आवाज से अद्रेई तिलमिला गया, हकलाता हुआ वह आवेग मे चिल्लाया

"नही सीखा है मैने! मै मै ने नही सीखा है बच्चो के साथ लडना! मोर्चे की बात और है! वहा तलवार मे, चाहे जो हाथ मे हो उससे भाड मे जाओ तुम सब! मै नही जाऊगा!"

तनते तार की तरह अद्रेई का स्वर खिचता जा रहा था और लगता था कि अब टूटने ही वाला है। पर अद्रेई फुफकार के साथ निश्वास छोडकर अचानक फुसफुसाहट पर उतर आया

"यह भी भला कोई बात हुई? मै क्या हू? जल्लाद हू भला? या मेरा दिल पत्थर का है? युद्ध ने मेरा सब कुछ " और फिर वह जोर-जोर से चिल्लाने लगा "गायेव के ग्यारह अदद बच्चे है! हम वहा गये – उनकी चीख-पुकार से सिर चकराने लगा! मेरे रोगटे खडे हो गये! उन्हे घर से निकालने लगे तब मैने अपनी आखे मूद ली कानो मे उगलिया ठूस ली और बाडे मे भाग गया! लुगाइया रोये रो रही थी मानो कोई मर गया हो वह बच्चे बेसुध हो गये भाड मे जाओ तुम! "

तू रो ले! दिल हल्का हो जायेगा " नागूल्नोव ने सलाह दी। वह अपने फडकते गाल को हथेली से कसकर दबाये हुए चमकती आखो से अद्रेई को एकटक देख रहा था।

"हा रो पडूगा! तुझे क्या पता मुझे अपने छोरे की ' अद्रेई का गला रुध गया, खीसे निपोरकर उसने मेज की ओर पीठ कर ली।

कमरे मे नीरवता छा गयी।

दवीदोव धीरे-धीरे कुर्सी से उठा उसी तरह धीरे-धीरे उसके बिना पट्टीवाले गाल पर मुर्दे जैसी नीलिमा छाने लगी, कान पीला पड गया। अद्रेई के पास जाकर उसने उसके कधे पकडे और धीरे से उसे अपनी ओर घुमाया। वह अद्रेई के चेहरे पर नजरे गडाकर हाफता हुआ बोला

"तुम्हे उन पर दया आती है उन पर तुम्हे दया आती है। पर उन्होने हम पर दया की थी? क्या शत्रु हमारे बच्चो के आसुओ को देखकर रोते थे? अनाथो पर दया की थी? बोलो? मेरे बाप को हडताल के बाद कारखाने मे निकालकर साइबेरिया भेज दिया गया मा के हम चार थे मै सबसे बडा था, तब नौ साल का था खाने को कुछ था नही और मा तुम इधर देखो! मा सडक पर निकल गयी ताकि हम भूखे न मर जाये! हमारी कोठरी मे – तहखाने मे रहते थे – मेहमान को लाती बस एक पलग बचा था और हम पर्दे के पीछे फर्श पर मै नौ साल ही का था। उसके साथ नशे मे धुत्त आते और मै छोटी बहनो के मुह हाथो से बद रखता ताकि रोये नही हमारे आसू किसने पोछे? तुम सुनते हो? सवेरे मै यह नासपीटा रूबल लेता " दवीदोव ने अद्रेई के चेहरे के पास अपनी सख्त हथेली फैलायी और दात पीसकर बोला "मा की कमाई का रूबल और रोटी लाने जाता " और अचानक सीसे की तरह भारी अपनी काली मुट्ठी को मेज पर पटककर वह चिल्लाया 'तू!! तू कैसे दया कर सकता है?!

और फिर से सन्नाटा छा गया। नागुल्नोव नाखून गडाकर मेज को पकडे हुए था, जैसे चील अपने शिकार को। अद्रेई चुप था। हापते हुए दवीदोव न मिनट भर कमरे मे चहलकदमी की और फिर अद्रेई के कधे अपनी बाहो मे भरकर उसके साथ बेच पर बैठ गया और टूटी-सी आवाज मे बोला

'तुम भी पागल हो! आने के साथ ही चिल्लाने लगे नही करूगा काम बच्चे दया न जाने क्या-क्या कह डाला, होश मे आओ! आओ जी खोलकर बात करे। दया आ गयी कि कुलको के परिवारो को बेदखल कर रहे है? तो क्या हुआ? इसीलिये तो निकाल रहे है कि हमे नये जीवन का निर्माण करने मे खलल न डाले, ऐसो के बिना ताकि भविष्य मे फिर वही किस्सा न दोहराया जाये। तुम ग्रेम्याची मे सोवियत सत्ता हो और मुझे तुम्हो को समझाना पडे-गा?" और मुश्किल से जोर लगाकर मुस्करा दिया। "अच्छा, निकाल देगे कुलको को, सोलोव्की* मे निर्वासित कर देगे। अरे मर थोडे ही

* उत्तर म श्वेत सागर म स्थित सोलोवत्स्की द्वीप-पुज। – अनु०

जायेंगे? काम करेंगे – हम उन्हें रोटी देंगे। और जब निर्माण पूरा कर लेंगे तो ये बच्चे कुलकों के बच्चे थोड़े ही होंगे। मज़दूर वर्ग इन्हें शिक्षा देगा।" उसने सिगरेट का पैकेट निकाला, बड़ी देर तक कांपती उंगलियों से उसमें से सिगरेट को नही निकाल पा रहा था।

अंद्रेई नागूल्नोव के पीले पड़ते चेहरे को एकटक देख रहा था। अचानक वह तेज़ी से खड़ा हुआ, दवीदोव कुछ समझ न पाया, उसी क्षण नागूल्नोव उछला मानो उसे किसी ने उछाल दिया हो।

"बिच्छू!" मुट्ठियां कसकर वह गुर्राया। "तू कैसे क्रांति की सेवा कर रहा है? दया करता है? अरे मैं... अभी मेरे सामने हज़ारों बुड्ढों, बच्चों, लुगाइयों को खड़ा करो... और कहो कि इनका काम तमाम करना है .. क्रांति की ख़ातिर इसकी ज़रूरत है... मै मशीनगन से... उन सबको छलनी कर डालूंगा!" नागूल्नोव वहशियों की तरह चिल्लाया और उसकी विशाल, फैली पुतलियों मे पागलपन का उन्माद छा गया, मुह से झाग टपकने लगा।

"अरे, चिल्ला मत! बैठ जा!" दवीदोव चिंतित स्वर में बोला।

अंद्रेई कुर्सी को गिराकर तेज़ी से नागूल्नोव की ओर बढ़ा पर वह दीवार का सहारा लेकर, सिर को पीछे झुकाकर, तीखे स्वर में चिल्लाया:

"मार डालूंगा! " उसकी आंखें चढ़ गयी थी, गिरते-गिरते वह बायें हाथ मे हवा में म्यान को ढूंढ़ रहा था और दाये हाथ मे तलवार की अदृश्य मूठ को टटोल रहा था।

अंद्रेई ने झट से उसे पकड़ लिया, वह सकार के मानो सीसे से भरे भारी बदन की मांसपेशियों में भयकर तनाव को, इस्पाती कमानियों की तरह तनी टांगो को महसूस कर रहा था।

"दौरा पड़ा है... पैर इसके पकड़ो!.." अंद्रेई दवीदोव को बस यही कह पाया।

* * *

जब वे स्कूल पहुंचे तो वहां सभा में आये लोग ठसाठस भरे थे। सब लोग अंदर नही समा पा रहे थे। कज़्ज़ाकों, लुगाइयो और छोकरियों के झुंड गलियारे और ओसारे तक पर खड़े थे। खुले दरवाज़ों

के गर्भ मे तबाकू के धुए से मिली भाप उड रही थी।

नागूल्नोव आगे-आगे चल रहा था, उसका चेहरा पीला था और फटे होठों पर खून जमा हुआ था। ठक-ठक करते उसके बूटो के तले सूरजमुखी की गिरियो के छिलके कुरकुरा रहे थे। कज्जाक उसे रास्ता देते हुए सशय के साथ देख रहे थे। दवीदोव को देखकर कानाफूसी शुरू हो गयी।

"यही दवीदोव है?" रूमाल मे बधी गिरियो की पोटली से इशारा करके बेल-बूटेदार शालवाली छोकरी ने जोर से पूछा।

"ओवरकोटवाला ठिगना-सा है।"

"ठिगना है पर गठीला है, देख, उसकी गर्दन को, अच्छे-खासे साड जैसी है! हमारे यहा नसल सुधारने भेजा है," दवीदोव को अपनी गोल स्लेटी आखो से ताकते हुए एक छोकरी खिलखिलाकर हसी।

"उसके कधे तो देखो इस हजारी के, कितने चौडे है। यह अगर बाहो मे भर ले तो छोरियो ' फौजी की बीवी नताल्या अपनी रगी भवो को नचाकर बेशर्मी मे बोली।

किसी छोकरे की भौडी-सी, तबाकू से भारी आवाज ने कटाक्ष किया

हमारी नताल्नी-देनेवाली तो पतलूनवाले को देखते ही "

"अरे किसी ने इसके सिर पर चोच मार दी क्या? पट्टी बधी है "

"अरे नही, किसी के दातो का कमाल है "

नही। तीत ने '

"छोरियो! मुदरियो! अरे क्यो परदेसी को आखे फाडकर देख रही हो? क्या मेरा बुरा है?' अधेड उम्र के सफाचट दाढीवाले कज्जाक ने हो-हो हसते हुए अपनी लम्बी बाहो मे भरकर छोकरियो के पूरे झुड को दीवार से सटा दिया।

चिल्लपो मच गयी। कज्जाक की पीठ पर छोकरियो के मुक्के बरस पडे।

कक्षा के दरवाजे तक पहुचते-पहुचते दवीदोव पसीने से तर हो गया; भीड मे सूरजमुखी के तेल, प्याज, सस्ते तबाकू और डकारो की बू आ रही थी। छोकरियो और जवान लुगाइयो से सदूक से निकले

कपडो और क्रीम की गध फैल रही थी। स्कूल मे मधुमक्खी के छत्ते जैसी भनभनाहट व्याप्त थी। और लोग भी मधुमक्खियो के झुड की तरह उमड रहे थे।

"आपके यहा छोकरिया बडी चुलबुली है," मच पर चढते समय दवीदोव सकुचाकर बोला।

पतले तख्तो से बने मच पर दो डेस्को को जोडकर रखा गया था। दवीदोव और नागूल्नोव बैठ गये। रजम्योत्नोव ने सभा शुरू की। अध्यक्ष-मडल निर्विघ्न रूप से चुन लिया गया।

"सामूहिक फार्म के बारे मे इलाकाई पार्टी समिति के प्रतिनिधि दवीदोव बोलेगे," रजम्योत्नोव बोला, लोगो के गुलगपाडे के ज्वार मे भाटा आया और शाति छा गयी।

दवीदोव खडा हुआ, उसने सिर पर पट्टी ठीक की। वह कोई आधे घटे तक बोलता रहा, अत मे उसकी आवाज बैठ गयी। सभा चुप थी। घुटन बढती जा रही थी। दो लालटेनो की रोशनी मे दवीदोव को अगली पक्तियो मे बैठे लोगो के पसीने से चमकते चेहरे नजर आ रहे थे, और पीछे झुटपुटा छाया हुआ था। किसी ने भी उसे टोका नही, पर जब उसने बोलना समाप्त किया और पानी का गिलास उठाया, प्रश्नो की बौछार लग गयी

"सब कुछ का सामूहिकीकरण करना होगा?"

"और घरो का?"

"ये सामूहिक फार्म कुछ समय के लिये होगे या हमेशा के लिये?"

"जो अलग से खेती करते है उनका क्या होगा?"

"उनकी जमीन तो नही छीन लोगे?"

"क्या खाना भी मिलकर खाना होगा?"

दवीदोव बडी देर तक प्रश्नो का स्पष्ट-साफ उत्तर देता रहा। जब कृषि व्यवस्था के जटिल प्रश्नो की चर्चा होती तो नागूल्नोव और अद्रेई उसकी सहायता करते। सामूहिक फार्म का आदर्श विधान पढकर सुनाया गया परन्तु प्रश्नो की बौछार तब भी नही रुकी। अतत बीच की कतारो से एक कज्जाक खडा हुआ, उसने लोमडी के समूर का कनटोप पहन रखा था, काले, खाल के ओवरकोट के बटन खुले हुए थे। उसने बोलने की अनुमति मागी। छत मे लटकी लालटेन की तिरछी रोशनी उसकी घिसी टोपी पर पड रही थी जिसके ललौहे रोये आग

की तरह दमकते मानो धुआ छोड रहे थे।

"मै मझोला खेतिहर हू, पर नागरिको, मै यही कहूगा कि बेशक सामूहिक फार्म, यह काम नेक है, पर बहुत सोचने की जरूरत है! इस काम मे चट मगनी पट ब्याहवाली बात नही चलेगी। पार्टी के कामरेड प्रतिनिधि ने कहा 'मिलकर काम करोगे तो यह भी फायदे की बात होगी। कामरेड लेनिन ने भी यह बात कही थी।' कामरेड प्रतिनिधि खेतीबाडी को कम समझते है, मजदूर रहे इसलिये उन्होने कभी हल नही चलाया, उन्हे क्या मालूम कि बैल को किस ओर से जोतना चाहिये। इसी वजह से उनका निशाना कुछ चूक गया। मेरे ख्याल मे लोगो को सामूहिक फार्म मे इस तरह भरती करना चाहिये जो मेहनती है और जिनके पास ढोर-डगर है उन्हे एक फार्म मे, गरीबो को – दूसरे मे, खाते-पीतो को – बात माफ है – और सबसे आलसियो को देश-निकाला ताकि ग० प० उ० उन्हे काम करना सिखाये। सबको एक झुड मे हाकने का कोई फायदा नही, उसी कहानीवाली बात होगी जिसमे हस केकडा और मछली छकडे को खीचते है – हस ऊपर उडता है मछली पानी की ओर खीचती है और केकडा उल्टी दिशा मे '

सभा मे हल्की-सी हसी फैल गयी। पीछे से किसी छोकरी की तीखी चीख सुनायी पडी, झट से कोई झल्लाये स्वर मे चिल्लाया

अरे तुम, कमजोरा की औलाद! छेडखानी तो बाहर बाडे मे भी की जा सकती है। जाओ यहा से!"

घिसी टोपीवाले ने रूमाल से माथा और होठ पोछे और आगे बोला

"लोगो को उसी तरह चुनना चाहिये जैसे अच्छा किसान बैलो को। वह तो बराबर कद के और बराबर ताकत के बैलो की जोडी बनाता है। अगर बेमानी के जोत दो तो क्या होगा? जो ताकतवर होगा वह आगे-आगे दौडेगा और कमजोर रुक जायेगा, उसकी वजह से ताकतवर को भी बार-बार रुकना पडेगा। ऐसी जोडी भला किस काम की? कामरेड कह रहे थे सारा गाव एक सामूहिक फार्म मे, कुलको को छोडकर वही बात हुई न राम मिलायी जोडी एक अधा – एक कोढी! "

ल्युबीश्किन खडा हुआ, उसने ताव मे आकर अपनी घनी, काली मूछ को हिलाया और वक्ता की ओर मुडकर बोला

"अरे कुज़्मा, कभी-कभी तो तू इतना मीठा-मीठा बोलता है, इतनी सुंदर-सुंदर बातें करता है! लुगाई होता तो ज़िंदगी भर सुनता रहता तुझे!" (सभा में खिलखिलाहट दौड़ गयी।) तू सभा को इस तरह मना रहा है मानो यह पलागा कुज़्मीचोवा ..."

ठहाके गूंज उठे। लालटेन की लपट सांप की जीभ की तरह लपकी। सभी लोग इशारे को समझ गये, शायद यह कोई भौंडी, हंसने लायक़ बात थी। नागूल्नोव तक की आखों मे चंचलता छलक आयी। दवीदोव उससे हंसी का कारण पूछने ही वाला था कि ल्युबीश्किन बड़ी ज़ोर से चिल्लाया:

"सुर तो तेरा है पर गीत पराया! तुझे तो इसी तरह लोगों को चुनना अच्छा लगेगा। शायद तूने यह तभी सीखा होगा जब फ़ोल नकटे की मशीन कंपनी मे शामिल था? इजन तो तुम्हारा पिछले साल ही ज़ब्त हो गया। और अब हमने तेरे फ़ोल की मुंड़ाई कर दी! फ़ोल के इंजन के गिर्द तुम भी सामूहिक फ़ार्म की तरह जमा हो गये थे, पर कुलकोंवाले। तू भूला तो नही, कुटाई के लिये क्या लेते थे? क्या हर आठवां पूद नही? तू तो अब भी शायद अमीरों के झुड में घुसना चाहेगा ..."

ऐसा गुलगपाडा मच गया कि रज़्म्योत्नोव बडी मुश्किल से लोगों को शात करा पाया। पर बडी देर तक जबर्दस्त तू-तू, मैं-मैं होती रही.

"अरे सहकारिता बनाके ही तुमने क्या ख़ाक कमाया!"

"ट्रैक्टर से तो सारी जुए भी नही मार पाओगे!"

"कुलकों ने तेरा दिल पत्थर बना दिया!"

"चटा दे धूल!"

"तेरा सिर तो मूसल का ही काम दे सकता है!"

फिर पतली हालतवाले मंझोले किसान निकोलाई ल्यूश्न्या ने बोलने की अनुमति मागी।

"तुम बहम-वहम मत करना। बात साफ़ है," नागूल्नोव ने उसे चेताया।

"यह कैसे? तुम्हें क्या पता, अगर मैं विरोध करना चाहूं तब? या मुझे तुम्हारी बात के ख़िलाफ़ कुछ बोलने का हक़ नही? मैं तो यह कहूगा: सामूहिक फ़ार्म—यह स्वेच्छा की बात है, चाहते हो—हो

जाओ भरती, चाहते हो–दूर से देखो। इसलिये हम एक तरफ खडा होकर देखना चाहते है।"

"यह कौन है 'हम'?" दवीदोव ने पूछा।

"मतलब किसान।"

"तुम अपनी बात करो। दूसरे कोई अपनी जुबान बेच थोडे ही बैठे है, खुद कह देगे अपनी बात।"

"अपनी भी बात कह सकता हू। अरे अपनी ही बात तो कह रहा हू। मै पहले देखना चाहता हू कि सामूहिक फार्म मे कैसी होगी जिदगी। अगर अच्छी होगी तो नाम लिखवा लूगा, अगर नही, तो मै कोई पागल थोडे ही हू कि भरती होऊ। यह तो मछली ही पगली होती है, जाल मे सिर घुसेडती है "

"ठीक कहा!"

हम भरती होने मे जल्दी नही करेगे!"

"पहले दूसरो को देखने दो नयी जिदगी!"

"झट मे भरती हो जा! क्या देखना है वह कोई छोरी थोडे ही है?"

'अब अख्वात्किन बोलेगा। बोलो।"

"मै अपने बारे मे यह कहूगा, प्रिय नागरिको मै और मेरा सगा भाई प्योत्र साथ रहते थे। पर नही रह पाये! कभी लुगाइया आपस मे भिड जाती, एक दूसरे के बाल नोचती, कभी प्योत्र और मेरे बीच ठन जाती। और यहा तो पूरे गाव को, सबको एक झुड मे हाकना चाहते है! अरे यहा तो ऐसी गडबड होगी कि कुछ समझ न आयेगा। जब स्तेपी मे हल चलाने जायेगे, तो जरूर झगडा होगा। इवान ने मेरे बैलो को हद से ज्यादा दौडाया और मैने उसके घोडो का ख्याल नही रखा यहा तो मिलीशिया को दिन-रात तैनात रखना पडेगा। हरेक का थोबडा टूटा होगा। एक ज्यादा काम करेगा, दूसरा कम। काम हमारा तरह-तरह का है, यह कारखाने मे खराद चलाना नही है। वहा तो आठ घटे की पाली करी पूरी और छडी उठाकर चल दिये "

"तुम कभी कारखाने मे गये भी हो?

"मै, कामरेड दवीदोव, नही गया पर जानता हू।"

"तुझे मजदूरो के बारे मे कुछ पता नही! और अगर तू कारखाने मे नही गया, अपनी आखो से नही देखा, तो क्यो गाल बजा रहा है!

छड़ी लेकर टहलते मज़दूर के बारे में बातें कुलकों का प्रचार है!"

"चलो मान लिया, छड़ी के बिना ही सही। काम किया और छुट्टी। पर हमारे यहां मुंह अंधेरे उठकर हल चलाना पड़ता है। रात तक घड़ो पसीना बह जायेगा, पैरों में मुर्गी के अंडों जितने बड़े छाले पड जायेंगे और रात भर बैल चराओ, ख़बरदार अगर सोये: बैल का अगर पेट नही भरा तो वह हल नहीं खींच पायेगा। मैं तो सामूहिक फ़ार्म में जी लगाकर मेहनत करूंगा और दूसरा, अरे हमारे कोलीबा जैसा ही कोई, मेढ़ पर सोयेगा। चाहे सोवियत सत्ता कहती है कि ग़रीबों में आलसी नही होते, कि यह सब कुलकों की गढी बातें है, पर यह सच नही है। कोलीबा ज़िदगी भर आराम से अलावघर के ऊपर बनी टाड पर गरमी में लेटा रहा। सारा गाव जानता है कि एक बार जाड़े में वह अलावघर के ऊपर सोया था, पैर दरवाज़े की तरफ़ पसारे। सुबह तक उसके पांव पाले से ढक गये और बग़ल गरम इंटो से जल गयी। मतलब यह कि इतना आलसी हो गया कि जंगल-पानी के लिये भी अलावघर से उठकर बाहर नही जा सकता। मै ऐसे आदमी के साथ कैसे काम करूगा? नही होऊंगा भरती सामूहिक फार्म मे!"

"अब कोंद्रात माइदान्निकोव की बारी है। बोलो।"

पिछली कतारों से मझले कद का, स्लेटी जाकेट पहिने कज्जाक बड़ी देर तक रास्ता बनाता हुआ मंच की ओर आ रहा था। सिपाहियोंवाली बदरंग तिकोनी टोपी भेड की खाल की टोपियों, कनटोपों, लुगाइयो के सिरो पर बधे रग-बिरगे रूमालो के ऊपर से हिलती हुई पास आ रही थी।

पास आकर वह अध्यक्ष-मंडल की ओर पीठ करके खड़ा हुआ और आराम से शलवारनुमा पतलून की जेब मे हाथ डाला।

"पढ़कर सुनाओगे भाषण?" द्योम्का उशाकोव ने मुस्कराते हुए पूछा।

"टोपी तो उतार दो!"

"मुह ज़बानी सुना!"

"अरे यह तो अपनी सारी ज़िंदगी का काग़ज़ पर चिट्ठा बनाकर रखना है।"

"अरे, पढ़ा-लिखा जो है!.."

माइदान्निकोव ने मैली-चीकट डायरी निकाली और जल्दी-जल्दी

टेढे-मेढे अक्षरो से भरे पन्ने पलटने लगा।

"अरे तुम हसने की जल्दी ना करो, क्या पता रोना पड जाये! " वह गुस्से मे बोला। "हा लिखता हू कि कैसे रोटी कमाता हू। और अभी तुम लोगो को पढकर सुनाता हू। यहा तरह-तरह की आवाजे सुनायी दी, पर एक भी काम की नही। जिदगी के बारे मे कम सोचते हो "

दवीदोव का माथा ठनका। अगली कतारो मे मुस्काने दिखायी पडी, स्कूल मे कोलाहल सुनायी पडा।

"मेरी खेतीबाडी मझोली है," निसकोच, विश्वास के साथ माइदान्निकोव ने बोलना शुरू किया। "पिछले साल मैने पाच देस्यातीना पर अनाज बोया। जैसा कि आपको मालूम है मेरे पास बैलो की जोडी, घोडा, गाय, बीवी और तीन बच्चे है। काम करने को ये दो हाथ है आप खुद देख रहे है। फसल मे मुझे नब्बे पूद गेहू अठारह पूद मकई और तेइस पूद जौ मिले। परिवार का पट भरने के लिये मुझे खुद साठ पूद की जरूरत है, मुर्गे-मुर्गियो के लिये दसेक पूद की जरूरत है जौ घोडे के लिये पूरा पडेगा। राज्य को मै कितना बेच सकता हू? अडतीस पूद। एक रूबल दस कोपेक फी पूद की दर से हिसाब लगाओ इकतालीस रूबल का शुद्ध मुनाफा बनता है। ठीक है मुर्गे-मुर्गियो को बेच दूगा बत्तखे शहर ले जाऊगा, इससे कोई पद्रह रूबल इस तरह कमा लूगा। और आखो म दर्द की झलक के साथ वह चिल्लाकर बोला क्या मै इन पैसो स कपडे-जूते, मिट्टी का तेल, माचिस साबुन खरीद सकता हू? और घोडे की नाले जडवाने के भी तो पैसे लगते है? आप चुप क्यो हो? क्या मै आगे इसी तरह जी सकता हू? कम-ज्यादा फसल हुई तो गनीमत है। और अगर फसल न हुई तब? तब मै क्या बन जाऊगा? भिखारी! तुम्हारी मा की ऐसी की तैसी तुम्हे क्या हक है मुझे सामूहिक फार्म म जाने से रोकने का? क्या उसम मेरी जिदगी इससे बदतर होगी? बिना बात के बक-बक करते हो! तुम सबका, जो मझोले है यही हाल है। और पता है, क्यो तुम लोग हाथ-पाव मार रहे हो अपना और दूसरो का दिमाग खराब कर रहे हो, अभी बताता हू।"

"सुना, स्सालो को, कोद्रात!" ल्युबीश्किन जोश मे चिल्लाया।

"अभी उडाता हू धज्जिया इनकी ताकि होश मे आये! तुम लोग

इसलिये सामूहिक फार्म के खिलाफ हो क्योकि अपनी गाय व अपने दडबेनुमा मकान के अलावा तुम्हे दुनिया मे कुछ नजर ही नही आता। मेरा है – इसकी हवस तुम्हे खा रही है। तुम लोगो को कम्युनिस्ट पार्टी नये जीवन की ओर धकेल रही है और तुम अधे बछडे की तरह हो जिसे गाय के थन के पास ले जाते है पर वह टागे चलाता है और सिर नचाता है। और अगर बछडे ने थन न चूसा तो वह इस दुनिया मे खाक जियेगा! बस मैने कह दिया। मै आज ही बैठकर सामूहिक फार्म मे शामिल होने के लिये अर्जी लिख डालूगा और दूसरो से भी यही करने की अपील करता हू। और जो नही चाहता – वह कम से कम दूसरो को तो परेशान न करे।"

रजम्योत्नोव उठकर बोला

"बात साफ है, नागरिको! लालटेनो मे तेल खत्म हो रहा है और देर भी बहुत हो गयी है। हाथ उठाओ, कौन सामूहिक फार्म के पक्ष मे है। सिर्फ घर के मालिक ही हाथ उठाये।"

दो सौ सत्रह उपस्थित गृह-स्वामियो मे से सिर्फ सडसठ ने हाथ उठाये।

"कौन विरुद्ध है?"

एक भी हाथ नही उठा।

"सामूहिक फार्म मे नाम नही लिखवाना चाहते?" दवीदोव ने पूछा। "मतलब यह कि कामरेड माइदान्निकोव ने ठीक कहा था?"

"नही चा-ह-ते!" कोई औरत नकियाते स्वर मे बोली।

"तुम्हारा माइदान्निकोव कौन होता है हमे सिखानेवाला!"

"बाप-दादा रहते थे इसी तरह "

"तुम हम से जोर-जबर्दस्ती नही करो!"

और जब चिल्लपो शात हो गयी, पिछली कतारो से, सिगरेट के अगारो की चमक से आलोकित अधेरे से किसी की गुस्सा भरी तीखी आवाज सुनायी दी

"हमे उल्लू बनाने की कोई जरूरत नही है! तीत ने एक बार तेरा खून निकाला, और भी निकाला जा सकता है "

दवीदोव को मानो किसी ने कोडा मारा हो। भयावह सन्नाटे मे क्षण भर के लिये वह अवाक् रह गया, उसका चेहरा पीला पडने

लगा, टूटे दांतोंवाला मुंह अधखुला रह गया, फिर वह फटे स्वर में चिल्लाया :

"तू! दुश्मन की आवाज़! मेरा कम खून बहाया गया! मैं वह दिन देखने के लिये ज़िंदा रहूंगा जब तुझ जैसे सभी का हम सफ़ाया कर देंगे। पर अगर ज़रूरत पडी तो मैं पार्टी की खातिर .. अपनी पार्टी के लिये, मज़दूरों के ध्येय के लिये अपना सारा खून दे डालूंगा! सुन रहा है तू, कुलक बिच्छू? एक-एक बूंद तक!"

"कौन यह बोला?" नागूल्नोव तनकर खड़ा हुआ।

रज़्म्योत्नोव मंच से कूदा। पिछली क़तारों में बेंच चरमरायी और कोई बीसेक लोगों का झुंड शोर के साथ गलियारे में निकल गया। बीच की कतारों से भी लोग उठने लगे। टूटे काच की झंकार हुई: किसी ने खिडकी का काच तोड़ दिया। छेद में से ताज़ी हवा तेज़ी से अंदर आने लगी, सफ़ेद भाप बवडर की तरह उड़ने लगी।

"यह शायद तिमोशा चिल्लाया था! फ़ोल नकटे का.. "

"निकाल दो उन्हे गांव से!"

"नही, यह अकीम्का था! यहा तुब्यान्स्की के कज़्ज़ाक भी है।"

"निकाल दो गुडों को यहा से! .."

सभा आधी रात के भी बहुत बाद मे समाप्त हुई। सामूहिक फार्म के पक्ष और विपक्ष में खूब गर्मागर्म बहस हुई, लोगों के गले बैठ गये, आखों में अंधेरा छाने लगा। कही-कही, मच के पासवाले लोग तक, एक दूसरे का गरेबान खीच-खीचकर अपनी सत्यता को प्रमाणित करने लगे थे। कोंद्रात माइदान्निकोव के धर्मपिता और पडोसी ने मूडी तक उसकी क़मीज़ चीर दी। हाथापाई होते-होते बची। द्योम्का उशाकोव बेंचों को फांदता, बैठे लोगों के सिरों को लाघता कोंद्रात की सहायता के लिये लपका, पर दवीदोव ने बीच-बचाव कर दिया। और द्योम्का ने झट से माइदान्निकोव से कटाक्ष किया :

"अरे कोंद्रात, ज़रा हिसाब तो लगा, फटी क़मीज़ के लिये तुझे कितने घंटे हल चलाना पड़ेगा?"

"तू गिन तेरी लुगाई के कितने ..."

"संभल के! ऐसे मज़ाक़ के लिये मैं सभा से निकाल दूंगा।"

देमीद घुन्ना पिछली पंक्तियो मे बेंच के नीचे किसी जानवर की तरह दुबककर चुपचाप सोया पडा था, उसने बेकार के शोर मे कान

ढापने के लिये अगरखे के पल्ले मे सिर लपेट रखा था। वृद्धाए जो सभा मे भी अधबुने मोजे साथ लायी थी, ऊन के गोले और सलाइया गिराती हुई दडबे मे बैठी मुर्गियो की तरह ऊघ रही थी। बहुत-से लोग जा चुके थे। और जब कई बार भाषण दे चुका अर्काशा बदलू सामूहिक फार्म की हिमायत मे कुछ और बोलना चाहता था तो उसके गले से नाग की फुफकार-सी निकलकर रह गयी। अर्काशा ने टेटुए को सहलाया और कटु भाव के साथ हाथ झाडकर रह गया, पर फिर भी उससे न रहा गया और अपनी जगह पर बैठते हुए उसने सामूहिक फार्म के कट्टर विरोधी निकोलाई अल्वात्किन को यह दिखाने के लिये कि सपूर्ण सामूहिकीकरण के बाद उसका क्या होगा, अपने तबाकू से पीले अगूठे के नाखून पर दूसरा नाखून रखकर चट की आवाज की। फुसफुसाकर मा-बहन की गालिया देता निकोलाई बस थककर रह गया।

१०

कोद्रात माइदान्निकोव सभा से घर लौट रहा था। आकाश मे कृत्तिका नक्षत्र के तारे अलाव की तरह जगमगा रहे थे। इतनी नीरवता व्याप्त थी कि दूर से पाले के कारण कडकती जमीन की चटक, ठिठुरती टहनी की चट-चट सुनायी पड रही थी। घर पहुचकर कोद्रात सीधा बैलो के बाडे मे गया, उनकी नाद मे उसने सूखी घास का छोटा-सा गट्ठर डाल दिया। फिर याद करके कि कल उन्हे आम बाडे मे ले जाना होगा, उसने घास का भारी गट्ठर उठाया और बोला

"लो आ गयी विदाई की घडी अबे सरक गजे! चार साल तक हम, कज्जाक बैलो के लिये और बैल कज्जाक के लिये काम करते रहे और हम कुछ ढग से न कर पाये। तुम भी आधा पेट खाते और मै भी ऐसे ही। इसीलिये तो सामूहिक जीवन के बदले मे तुम्हे दे रहा हू। तू कान क्यो खडे कर रहा है, मानो सचमुच मे मेरी बाते समझ रहा है?" उसने हल मे दायी ओर जोते जानेवाले बैल को लात मारी और जुगाली करती, उसकी राल से सनी थूथनी को हाथ से धकेला। बैल की बैगनी आख मे नजरे चार होने पर उसे अचानक याद

आया कि पाच साल पहले इस बैल की कितनी प्रतीक्षा थी। बूढी गाय न जाने कब ग्याभन हो गयी – न चरवाहे ने देखा न कोंद्रात ने। पतझड मे काफी दिन तक पता नही चला कि वह ग्याभन है। "बाझ ही रह गयी, डाकिन!" यह सोचकर कोंद्रात सिहर जाता। पर नवबर के अत मे, सभी बूढी गायो की तरह ब्याहने से एक महीने पहले इसका पता चला। बडे दिन के सप्ताह के अत मे कोंद्रात कितनी बार ठडी रातो को, मानो किसी धक्के से जाग पडता और जाघिया पहने ही नमदे के बूटो मे पैर डालकर गर्म गोशाला मे देखने जाता कि कही ब्याह तो नही गयी? कडाके का पाला पड रहा था, मा के चाटने ही बछडा ठड से अकड सकता था अतिम दिनो कोंद्रात रात को न के बराबर ही सोता था। एक बार सुबह आन्ना, उसकी पत्नी बडी खुश-खुश अदर आकर बोली

"लगता है आज रात बुढिया ब्याह जायेगी।'

कोंद्रात शाम से ही कपडे उतारे बिना लेट गया, लालटेन भी नही बुझायी। सात बार वह गाय को देखने गया! और आठवी बार ही, पौ फटने से कुछ पहले, गौशाला का दरवाजा खोलने से पहले ही उसे गहरी पीडायुक्त कराह सुनायी पडी, उसने अदर प्रवेश किया गाय खेडी से मुक्त हो रही थी, और नन्हा-सा सफेद नथुनो खुरदरी खालवाला बछडा जिसे मा चाट चुकी थी थर-थर कापता ठडे होठो से थन को टटोल रहा था। कोंद्रात ने बाहर गिरी खेडी को हटाया ताकि गाय उसे न खा ले*, उसके बाद ही उसने बछडे को गोद मे लिया और अपनी सास से गर्मी देते हुए उसे अगरखे के पल्ले मे लपेटा और दौडता हुआ मकान के अदर ले गया।

"बैल है!" वह खुशी के साथ चिल्लाया।

आन्ना सलीब का चिन्ह बनाकर बोली

"हे प्रभू, तुम्हारा शुक्र है! दीन दयालु ने हमारी मुसीबत पर भी ध्यान दिया!

इकलौते घोडे के साथ कोंद्रात मुसीबत बहुत झेल चुका था।

* उत्तरी दोन प्रदेश मे यह मान्यता व्याप्त थी कि अगर गाय खेडी को खा ले तो बारह दिन तक उसका दूध पीने लायक नही होता। – ले०

बैल बड़ा हो गया, गर्मियों में और कड़ाके की सर्दियों में – साल भर सड़कों और खेतों में हल या गाड़ी खीचते समय अपने फटे खुरों से असंख्य डग भरकर वह कोंद्रात की अच्छी सेवा करता रहा।

बैल को देखते-देखते कोंद्रात का गला अचानक रुंध आया, आंखों में जलन महसूस हुई। वह रो पड़ा और बाड़े से निकल गया, आंसुओं से उसका मन मानो हल्का हो गया था। बाक़ी रात वह सोया नहीं, सिगरेट पीता रहा।

... सामूहिक फ़ार्म में कैसी होगी ज़िंदगी? क्या हरेक उसी की तरह महसूस करेगा, समझ लेगा कि बस एक ही रास्ता है – उसमें भरती होना और यह अवश्यंभावी है? बच्चों के साथ घर के कच्चे फ़र्श पर बड़े हुए ढोरों को ले जाकर समाज को सौंपने का चाहे कितना ही दुख क्यों न हो, पर ले जाना चाहिये। और अपनी संपत्ति से इस हरामी लगाव को कुचल देना चाहिये, दिल से निकाल देना चाहिये . खर्राटे लेती पत्नी की बग़ल में लेटा अंधेरे को ताकता कोंद्रात यही सोच रहा था। और वह यह भी सोच रहा था : "पर मेमनों को कहां रखेंगे? उन्हें तो गर्म घर की ज़रूरत है. ख़याल भी पूरा रहना चाहिये। उन बैग्यों का पता कैसे चलेगा, सब क़रीबन एक जैसे है? उनकी मांएं भी और लोग भी उन्हें पहचान नही पायेंगे। और गायें? चारा कैसे पहुंचायेंगे? रास्ते में ही कितना बेकार जायेगा! तब क्या होगा अगर लोग एक हफ़्ते बाद ही कठिनाइयों से डरकर भाग खड़े हुए? तब एक ही रास्ता है – हमेशा के लिये ग्रेम्याची छोडकर खान में नौकरी। अपने पास कुछ बचेगा नही।"

पौ फटने से पहले उसकी आंख लग गयी। नीद मे भी उसका मन भारी-भारी था। कोंद्रात के लिये सामूहिक फ़ार्म कोई आसान बात नही थी! आसुओं और खून के साथ कोंद्रात उसे अपनी संपत्ति, बैलों, ज़मीन के अपने टुकड़े से जोड़नेवाली नाल को काट रहा था ...

सवेरे उसने नाश्ता किया, बड़ी देर तक वह मन की यातना से माथा सिकोडता प्रार्थना पत्र लिखता रहा। अंतत. उसने यह लिखा :

"कामरेड मकार नागूल्नोव को, ग्रेम्याची की कम्युनिस्ट पार्टी की इकाई के नाम।

अर्जी

मै, कोद्रात माइदान्निकोव, मझोला किसान, अनुरोध करता हू कि मुझे, मेरी पत्नी और बच्चो तथा जायदाद और सभी ढोरो समेत सामूहिक फार्म मे भरती किया जाये। मै अनुरोध करता हू कि मुझे नये जीवन मे जाने दिया जाये चूकि मै उससे पूरी तरह राजी हू।

क० माइदान्निकोव"

"हो गये भरती?" पत्नी ने पूछा।

"हो गया।"

"मवेशी ले जाओगे?"

'अभी ले जाता हू अरे पगली, तू रो क्यो रही है? मैने क्या तुझे कम समझाया, इतना मनाया पर तू फिर वही पुराना राग अलाप रही है? तू तो राजी हो गयी थी!"

"मुझे कोद्रात बस गाय का दुख है मै राजी हू। बस दिल पीडा से बहुत कसक रहा है " पेशबद से आसुओ को पोछकर वह मुस्कराती हुई बोली।

मा के बाद चार साल की छोटी बेटी ख्रिस्तीश्का भी रो पडी।

कोद्रात ने बाडे से गाय और बैलो को निकाला और घोडे को थपथपाकर नदी की ओर हाककर ले गया। पानी पीकर बैल घर की ओर मुडे पर कोद्रात ने दिल मे उफनते गुस्से से घोडा अडाकर उनका रास्ता रोका और ग्राम-सोवियत की ओर उन्हे मोड दिया।

खिडकियो मे लुगाइया झाक रही थी, कज्जाक मर्द सडक पर निकले बिना बाडो के पीछे से छिप-छिपकर देख रहे थे। कोद्रात बडा अटपटा महसूस कर रहा था! पर सोवियत की इमारत के पास, नुक्कड पर मुडकर मेले की तरह भीड, बैलो, घोडो, भेडो की भरमार देखी। बगल की गली से ल्युबीश्किन निकला। वह सीगो से रस्सी बाधकर गाय को खीच रहा था जिसके पीछे-पीछे गर्दन से लटकी रस्सी को झुलाता बछडा दौड रहा था।

"चलो इनकी पूछे बाध दे और एक साथ हाककर ले चले," ल्युबीश्किन ने मजाक करने की कोशिश की पर वह खुद देखने मे गभीर, विचारो मे खोया-खोया लग रहा था। वह बडी कठिनाई से

गाय को ला पाया था, गाल पर ताजी खरोच इसका प्रमाण थी।

"किसने तुझे नोच लिया?"

"छिपाऊगा नही लुगाई ने! डाकिन गाय की वजह से भिड गयी।" ल्युबीश्किन ने मुछ का सिरा मुह मे दबाया और रोष के साथ दात भीच कर बोला "टैक की तरह चढ बैठी। बाडे के पास ऐसी खूनी मुठभेड हुई कि पडोसियो को मुह दिखाते शर्म आयेगी। चिमटा लेकर टूट पडी, तू यकीन नही करेगा। मै बोला 'अरे तू लाल छापे-मार पर हाथ उठाने की सोचती है? अरे हमने जनरलो तक की मिट्टी पलीद कर दी।' और मैने चट से उसकी चोटी पकडी। देखनेवालो के लिये तो यह तमाशा ही लगा होगा "

ग्राम-सोवियत मे तीन के घर की ओर चल दिये। सुबह को और बारह मझोले किसान रात भर सोचकर प्रार्थना पत्र ले आये, मवेशी हाक लाये।

नागूल्नोव दो बढइयो के साथ आल्डर के तनो को कुल्हाडे से तराश रहा था – ग्रेम्याची की पहली सामहिक चरनी बनाने के लिये।

११

कोंद्रात बडी देर से पाले से जकडी जमीन को सब्बल से फोडकर खूटो के लिये गड्ढे बना रहा था। उसके साथ ल्युबीश्किन भी काम मे जुटा हुआ था। पावेल की काली घटा जैसी झबरीली काली टोपी के नीचे से पसीने की धाराए फूट रही थी, चेहरा तमतमाया हुआ था। मुह खोलकर वह पूरे जोर से सब्बल चला रहा था, अकडी मिट्टी के टुकडे सभी दिशाओ मे बिखर रहे थे, दीवार से टकराकर वे ककडो की तरह बज रहे थे। जल्दी-जल्दी चरनी बना डाली और आयोग द्वारा चुन गये बैलो की अट्ठाईस जोडिया कोठरे मे हाक दी गयी। नागूल्नोव ने कोठरे मे प्रवेश किया, वह सिर्फ खाकी कमीज पहने था, मोढो पर वह पसीने से तर होने के कारण बदन से चिपकी थी।

"अरे दो बार कुल्हाडी चलायी और कमीज तर हो गयी? मकार, तुम भी कैसे मजदूर हो!" ल्युबीश्किन सिर हिलाकर बोला। "मुझे देखो! हइशा! हइशा! नितोक का सब्बल बढिया है हइशा!

अरे तुम जल्दी से कुछ पहन लो नही तो ठड लग जायेगी और टागे पसार दोगे।"

नागुल्नोव ने भेड की खाल का ओवरकोट कधो पर डाल लिया। उसके गालो में धीरे-धीरे परत-ब-परत खूनी लाली उतर रही थी।

"यह गैसो का असर है। थोडा-सा काम करने या चढाई पर चढने मे सास फूल जाती है, दिल धुक-धुक करने लगता है आखिरी खूटा है? बहुत अच्छा! देखो तो हमारे पास कितना माल है!" नागुल्नोव ने चिगारियो की तरह चमकती आखो मे नयी-नयी लकडी की छीलन की गध छोडती नादो के किनारे-किनारे बैलो की लम्बी पात पर नजर दौडायी।

जब वह खुले बाडे मे गायो को बाधने का प्रबध कर रहा था द्योम्का उशाकोव के साथ रजम्योत्नोव आया। नागुल्नोव को एक ओर बुलाकर उसका हाथ पकडकर बोला

"मकार, यार, कल की बात पर नाराज न हो बच्चो का रोना सुनकर मुझे अपने छोरे की याद आ गयी, बस दिल कसकने लगा "

"तुझ जैसे दयालु को अच्छी पिटाई की जरूरत है!"

"चलो अब हो गया काफी! मै तो तेरी आखो मे ही भाप गया कि तू मुझ पर नाराज नही है।"

"अरे जाने भी दे गप्पी! किधर जा रहा है? घास लानी है। दवीदोव कहा है?"

"वह बदलू के साथ सोवियत मे सामूहिक फार्म मे भरती के इच्छुको की अर्जिया देख रहा है। और मै एक कुलक बच गया है, सेम्योन लाप्शीनोव, उसी की ओर जा रहा हू"

"आकर फिर नखरे दिखायेगा?" नागुल्नोव ने मुस्कराकर पूछा।

"अब छोड भी! मै किसे अपने साथ ले जाऊ? ऐसी-ऐसी बाते हो रही है, सब कुछ गड्ड-मड्ड हो गया जैसे लडाई मे! ढोर ला रहे है, घास-चारा भी। कुछेक तो बीज भी ले आये। मैने वापस कर दिया। बीज का मामला बाद मे निपटायेगे। किसे ले जाऊ साथ अपने?"

"अरे कोद्रात माइदान्निकोव को ले जा। कोद्रात! अरे इधर आ। अध्यक्ष के साथ लाप्शीनोव को बेदखल करने चला जा। डरता तो

नही? नहीं तो ऐसे भी हैं जो नही चाहते, ज़मीरवाले, तिमोफ़ेई बोश्चोंव जैसे... चाटते वक़्त शर्म नहीं आती, पर लूट का माल ज़ब्त करते आत्मा कचोटती है..."

"नही, क्यों नहीं जाऊंगा? मैं ज़रूर जाऊंगा। खुशी-खुशी।"

द्योम्का उशाकोव भी आ गया और वे तीनों सड़क पर निकले। रज़म्योत्नोव ने कोंद्रात को कनखियों से देखकर पूछा:

"अरे तुम्हारा मुंह क्यों चढ़ा है? खुश होना चाहिये, देखो तो, गांव में क्या खलबली मची है, जैसे किमी ने चींटियों की बांबी छेड़ दी हो।"

"खुशी मनाने की जल्दी मत करो। बहुत कठिनाइयां आयेगी," कोंद्रात ने रुखाई से उत्तर दिया।

"कैसी?"

"बोवाई के वक़्त भी और ढोरों की देखभाल में भी। देख रहे हो उधर. तीन काम कर रहे हैं और दस बाड़ का सहारा लेकर उकड़ूं बैठे सिगरेट पी रहे है.."

"सब काम करेंगे! यह तो शुरू-शुरू की बात है। खाने को जब कुछ होगा नही तब सिगरेट पीना भूल जायेंगे।"

मोड़ पर उलटी बर्फ़गाड़ी पड़ी थी। बग़ल में सूखी घास का ढेर बिखरा पड़ा था। बर्फ़गाडी एक तरफ़ मे टूट गयी थी। अनजुते बैल बर्फ़ पर पड़ी चटक-हरी दूब खा रहे थे। एक युवक – सामूहिक फ़ार्म में भरती हुए सेम्योन कुभेन्कोव का बेटा – आलस्य के माथ तीन दातो-वाले पांचे मे सूखी घास बटोर रहा था।

"अरे तू मुर्दो की तरह क्यों कर रहा है? तेरी उम्र में मैं चाबी के खिलौने की तरह फुर्तीला था! भला ऐसे काम करते है? ला इधर दे पांचा!" द्योम्का उशाकोव ने मुस्कराते युवक के हाथ मे पाचा छीन लिया और ज़ोर लगाकर पूरा गट्ठर उठा लिया।

"कैसे पलट गयी तेरी गाड़ी?" बर्फ़गाड़ी का मुआयना करते हुए कोंद्रात ने पूछा।

"ढलान पर उलट गयी, तुम क्या जानते नही कैसे?"

"अच्छा जा, दौड़कर कुल्हाड़ी ला दोनेत्स्कोव के यहां से ले आ।"

बर्फ़गाड़ी को सीधा करके उन्होंने टूटे हिस्से की मरम्मत की। द्योम्का ने क़रीने से घाम लाद दी, पांचे से उसे बराबर कर दिया।

"अरे कुभेन्कोव के बच्चे! तेल में भीगी संटी से तेरी पिटाई करनी चाहिये और ऊपर से चीखने की इजाज़त न दी जाये तुझे। देख तो बैलों ने कितनी घास ख़राब कर दी! तू बाड़ के पास झोली भर घास डाल देता अलग से उनके लिये। इस तरह कौन खुला छोड़ता है?"

बैलो को हांककर युवक हंसता हुआ बोला:

"अरे अब वह हमारी थोड़े ही है, सामूहिक फ़ार्म की है।"

"देखा, कुतिया की औलाद को?" द्योम्का ने भैंगी आंखों से कोंद्रात और रज़म्योत्नोव की ओर देखा और उसके मुह से भद्दी गाली निकल पड़ी।

लाप्शीनोव के यहा जब वे माल-असबाब की फ़ेहरिस्त बना रहे थे अहाते में कोई तीस-एक लोग जमा हो गये। उनमें ज़्यादातार पड़ोस की लुगाइया थी, मर्द कम ही थे। ऊचे क़द के सफ़ेद सिर और तिकोनी दाढ़ीवाले लाप्शीनोव को जब घर खाली करने को कहा गया तो वहां जमा भीड में फुसफुसाहट और दबे स्वर मे वार्तालाप होने लगा।

"देखो तो सही! कमा-कमाकर घर भरा और अब जा टीले पर सो!"

"पुराना राग अलाप रहे है "

"उसे शायद छोड़ने हुए दर्द हो रहा है! क्यो?"

"हरेक को अपना दर्द दुखता है।"

"खुद को अच्छा नही लग रहा यह, पर जब इसने पुरानी सरकार के ज़माने में क़र्ज़ के बदले त्रीफ़ोनोव की जायदाद हड़पी तब नही सोचा इसके बारे में।"

"जैसी करनी वैसी.."

"इस शैतान, दाढ़ीवाले बक़रे के साथ ठीक कर रहे है। दुम मरोड दी साले की!"

"लुगाइयो, पराये दुखड़े पर हसना पाप है। क्या पता तुम्हारा भी यही हाल हो।"

"क्यो नही! जायदाद के नाम पर हमारे पास ठीकरे जो है। उनसे भला अमीर बना जा सकता है!"

"पिछले साल, दो दिन के लिये घास काटने की मशीन दी थी और मुझसे पूरे दस रूबल ऐंठ लिये। भला ईमान की बात है यह?"

अर्से से लाप्शीनोव पैसेवाला आदमी माना जाता था। लोगों को मालूम था कि युद्ध से पहले भी उसके पास काफ़ी माल था क्योंकि बुड्ढे को भारी ब्याज पर क़र्ज़ देने और लुक-छिपकर चोरी का माल ख़रीदने में कोई हिचकिचाहट नहीं थी। एक बार यह अफ़वाह गर्म थी कि उसके बाड़े में चुराये गये घोड़े छिपाये जाते हैं। कभी-कभी उसके पास, अधिकतर रात को बंजारे, घोड़ों के सौदागर आते थे। कहा जाता था कि लाप्शीनोव के ज़रिये चोरी के घोडे बड़ी संख्या में त्सारीत्सिन, तगनरोग और उर्यूपिन्स्क तक जाते थे। पूरे गांव को भली-भांति मालूम था कि पुराने ज़माने में लाप्शीनोव साल मे तीन बार कैथ्रीन * के नोटों को सोने के इम्पीरियलों ** में बदलवाने शहर जाता था। सन् १९१२ मे उसे लूटने तक की कोशिश की गयी थी पर बुड्ढा लाप्शीनोव – घाघ और ताक़तवार – सिर्फ़ सोटे से लुटेरों को मज़ा चखाकर घोड़े पर भाग गया। पर वह ख़ुद भी अपना फ़ायदा नहीं भूलता था: कितनी बार उसे स्तेपी में पराये अनाज के गट्ठरों के साथ रंगे हाथों पकड़ा गया – यह जवानी की बात है, और बुढ़ापे मे तो पराये माल पर हाथ साफ़ करना उसके लिये बायें हाथ का खेल हो गया: जो कुछ पड़ा दिखायी पडता सब उठा ले जाता। इतना कजूस था कि गिरजे में संत निकोलस की प्रतिमा के सामने एक कोपेक की मोमबत्ती बालता, कुछ जल चुकने के बाद लाप्शीनोव फूंककर बुझा देता और प्रतिमा के सामने हाथ जोडकर उसे जेब में रख लेता। पूरे साल भर एक ही मोमबत्ती बार-बार चढ़ाता, और जो लोग इतनी किफ़ायतख़ोरी और भगवान के लिये कजूसी करने के लिये उसे उलाहना देते उनको वह उत्तर देता "भगवान तुम बेवक़ूफ़ों से ज़्यादा अक्लमंद है! उसे मोमबत्ती नहीं आदर चाहिये। भगवान को मेरा नुकसान कराने की क्या ज़रूरत पड़ी है। वह तो गिरजे में व्यापार करनेवालों की रस्सी से पिटाई करता था।"

बेदख़ली के बारे में ख़बर सुनकर लाप्शीनोव को कोई बेचैनी

* कैथ्रीन का नोट – ज़ारशाही रूस में ज़ारीना कैथ्रीन द्वितीय के चित्रवाला सौ रूबल का नोट। – स०

** इम्पीरियल – क्रांतिपूर्व रूस मे दस रूबल का सोने का सिक्का। – स०

नही हुई। डरने की कोई वजह नही थी उसके पास। सारा माल वह पहले से छिपाकर, विश्वसनीय लोगो को सौप चुका था। वह खुद जायदाद की सूची बनाने मे मदद कर रहा था, हाय-तोबा मचाती अपनी बुढिया को सख्ती से पैर पटककर धमकाता, पर कुछ देर बाद शात होकर उससे कहता

"मत रो, भगवान हमारे कष्टो को ध्यान मे रखेगा। वह तो दीनदयाल है, सब देखता है "

"और वह यह तो नही देखता कि तुमने भेड की खाल का नया ओवरकोट कहा छिपा दिया?" मालिक के लहजे मे द्योम्का ने गभीर स्वर मे पूछा।

' कैसा ओवरकोट?"

'वह वाला जिसे पहनकर तुम पिछले इतवार को गिरजे गये थे।"

मेरे पास नही था नया ओवरकोट।'

'था और अब कही छिपा हुआ है!'

'द्योम्का तुम भी क्या कहते हो, भगवान की सौगध – नही था!'

बुढऊ भगवान तुम्हे सजा देगा! वह तुम पर कहर बरपायेगा!

'ईसा मसीह की कसम, तुम बेकार ही " लाप्शीनोव ने हवा मे सलीब का निशान बनाया।

'अपनी आत्मा पर पाप ले रहे हो!" द्योम्का ने वहा जमा लुगाइ-या और कज्जाको के चेहरो पर मुस्कान लाने के लिये आख मारी।

"मै उसके सामने निर्दोष हू, सच कहता हू!

' ओवरकोट तो तुमने छिपा दिया है! कयामत के दिन इसका जवाब तुम्हे देना पडेगा!'

"अपने ओवरकोट के लिये?! तैश मे आकर लाप्शीनोव बोल पडा।

'छिपाने के लिये जवाब देना पडेगा!"

"तू सोचता है कि भगवान तुझ थोथे चने की तरह बेवकूफ है! अरे वह इन मामलो मे कोई दखल नही देगा! नही है कोई ओवरकोट-वोट! तुझे शर्म नही आती बूढे की हसी उडाते। भगवान और लोगो की तो कुछ लाज-शर्म कर!"

"और तुझे शर्म नही आयी मुझसे दो बालटी जौ के बदले, जो मैने बोने के लिये लिया था, तीन बालटी लेते हुए?" कोद्रात ने पूछा।

उसका स्वर धीमा, फटा-फटा-सा था, गुल-गपाडे मे लगभग सुनायी नही पडा पर लाप्शीनोव नौजवानो की फुर्ती से उसकी ओर मुडा

"कोद्रात! तेरा बाप भला आदमी था और तू तू कम से कम उसकी याद पर तो कालिख मत पोत! बाइबल मे लिखा है 'गिरते को मत धकेल'—और तू क्या क्या कर रहा है? कब मैंने तुझसे दो के बदले तीन बालटिया ली? और भगवान? वह तो सब देखता है! "

"यह चाहता है कि इस भिखमगे को मुफ्त मे दे दे!" लाप्शीनोव की बीवी गला फाडकर चिल्लायी।

"शोर मत मचा! ईसा मसीह ने मुसीबते सही और हम को भी यही उपदेश दिया। उन्होंने काटो का ताज पहना और खून के आसुओ से रोये " लाप्शीनोव आस्तीन मे धुधले आसू को पोछकर बोला।

चिल्लपो मचाती औरते चुप हो गयी और आहे भरने लगी। लिखने का काम पूरा करके रजम्योत्नोव मस्ती मे बोला

"अच्छा, लाप्शीनोव बूढे, अब यहा से रफा-दफा हो जाओ। तुम्हारे आसू किसी काम के नही। तुमने बहुतो को सताया और अब हम तुम्हारे भगवान के बिना खुद तुम्हारा पत्ता साफ कर रहे हैं। निकलिये यहा से।'

लाप्शीनोव ने अपने हकले बावले-से बेटे का हाथ पकडा, उसके सिर पर टोपी पहनायी और घर से बाहर निकल गया। पीछे-पीछे भीड भी बाहर उमड आयी। अहाते में बूढा भेड की खाल के कोट का पल्ला बर्फ पर बिछाकर घुटनो के बल बैठ गया। उसने माथा सिकोडकर सलीब का चिन्ह बनाया और चारो दिशाओ में जमीन पर सिर टिकाया।

"जाओ! जाओ!" रजम्योत्नोव ने हुक्म दिया।

पर भीड मे भनभनाहट फैल गयी, कुछेक चिल्लाये

"अरे कम से कम अपने घरबार से विदा तो लेने दो!"

"अद्रेई, तू बेवकूफी मत कर! देखता नही कि आदमी का एक पैर कब्र मे है और तू "

"इतना जी लिया कि अब उसे दोनो उसमे डालने चाहिये।" कोद्रात चिल्लाया।

गिरजे के वार्डन बूढे ग्लादीलिन ने उसे टोका

"हुक्काम की चमचागिरी कर रहा है? तुम जैसो की धुनाई करनी चाहिये!"

"मै तुझे, चूहे की औलाद, ऐसा मजा चखाऊगा कि घर का रास्ता भूल जायेगा!"

लाप्शीनोव झुक-झुककर, छाती पर सलीब का निशान बनाता हुआ जोर-जोर से बोल रहा था ताकि सब सुने, औरतो के नर्म दिल पसीजे

"भले इसाइयो! अलविदा मेरे प्यारो! भगवान तुम्हारा भला करे मेरी खून-पसीने की कमाई का फायदा उठाओ। मै ईमानदारी से जीकर मेहनत करता था "

"चोरी का माल खरीदता था!" ओसारे से द्योम्का ने जोड दिया।

" खून-पसीना एक करके रोजी-रोटी कमाता था "

"लोगो को बर्बाद करता था, सूद खाता था, खुद भी चोरी करता था, मान ले! जी करता है तुझ कुत्ते की औलाद की गर्दन दबोच जमीन पर पटक दू!"

" रोजी-रोटी कमाता था और अब बुढापे मे "

औरतो की नाके सुड-सुड करने लगी, रूमालो के कोने आखो की ओर उठे। रजम्योत्नोव लाप्शीनाव को उठाकर अहाते से बाहर धकेलने ही वाला था, वह बस यही चिल्ला पाया "तू लोगो को नही भडका, नही तो " पर तभी ओसारे से जिसकी रेलिंग का सहारा लेकर द्योम्का खडा था अचानक शोर, छीना-झपटी की आवाज सुनायी पडी

लाप्शीनोव की पत्नी रसोई से निकली, उसके एक हाथ मे हस के अडो से भरा थैला, और दूसरे मे सहमो-सहमी, बर्फ और धूप की चमक से चुधियायी हसिनी थी। द्योम्का ने झट से थैला छीन लिया पर लाप्शीनोव की बीवी ने हसिनी को दोनो हाथो से कसकर पकड लिया।

"मत छू इसे, पापी! हाथ हटा!"

"अब सामूहिक फार्म की हसिनी है! हसिनी की गर्दन को पकडते हुए द्योम्का चिल्लाया।

लाप्शीनोव की बीवी हसिनी की टागे पकडे हुए थी। वे एक दूसरे को धकेलते हुए जोर लगाकर उसे अपनी-अपनी ओर खीच रहे थे।

"छोड दे भैगे!"

"नही छोडगा!"

"मै कहती हू छोड दे!"

"सामूहिक फार्म की हसिनी है! " द्योम्का हाफता हुआ चिल्ला रहा था। "बमत मे वह हमे चूजे देगी! छोड दे बुढिया, नही तो टगडी मार दूगा! तुम अपना हिस्मा खा चुके हो "

दहलीज पर जूता टिकाकर लाप्शीनोव की बुढिया चडी की तरह क्रोधोन्माद मे अपनी ओर खीच रही थी। हसिनी मनहूस काय निकालकर शात हो गयी, शायद द्योम्का ने उसकी श्वामनली दबा दी पर वह अभी भी तेजी मे डैने फडफडा रही थी। ओसारे पर बर्फ के गालो की तरह पख और रोये उडने लगे। लगता था कि बम क्षण भर की देगी है और द्योम्का बुढिया के उभरी हड्डियोवाले हाथो मे अधमरी हसिनी को छीन लेगा, पर तभी हमिनी की नाजुक गर्दन कुरकुराकर टूट गयी। लाप्शीनोव की बीवी धम-धम करती ओसारे की पैडियो पर लुढक गयी, उमका लहगा सिर तक उठ गया। और अपने हाथो मे सिर्फ हमिनी का सिर देखकर हक्का-बक्का द्योम्का उमके पीछे रखे अडो के थैले पर जा पडा, सारे अडे फूट गये। हसी के विस्फोट से घर की छत से लटके हिमशकु तक टपक पडे। लाप्शीनोव खडा हुआ, टोपी पहनी और लार टपकाते अपने उदामीन बेटे का हाथ गुस्से मे खीचकर मरपट अहाते मे बाहर चला गया। लाप्शीनोव की बीवी खडी हुई, उमका चेहरा दर्द और क्रोध मे तमतमा रहा था। लहगा झाडकर वह ओमारे की पैडियो पर छटपटाती हमिनी की ओर हाथ बढाने ही वाली थी कि पास ही म चक्कर काटते पीले शिकारी कुत्ते न खून बहता देख लिया, उसके रोगटे खडे हो गये, वह लपका और लाप्शीनोव की बीवी के देखते-देखते हमिनी को घमीट ले गया।

द्योम्का ने अनत आश्चर्य के माथ इस दुनिया को ताकती नारगी आखवाले हमिनी के सिर को लाप्शीनोव की बीवी की पीठ पर फेका और घर मे घुम गया। अहाते और गली मे बडी देर तक रुक-रुककर हमी के ठहाके गूजते रहे, जिनके कारण मूखी लकडियो के ढेर पर बैठी चिडिया डरकर उड जाती।

१२

ग्रेम्याची मे जीवन की तुलना किमी कठिन बाधा के समक्ष पिछली टागो पर खडे मुस्तैद घोडे मे की जा मकती थी। दिन मे कज्जाक गलियो और घरो मे जमा होकर सामूहिक फार्मों के विषय मे बहम करते, अटकले लगाते। चार दिन तक रोज ग्राम को मभाये बुलायी जाती रही जो सवेरे मुर्गे की बाग तक चली।

इन दिनो मे नागुल्नोव इतना दुबला हो गया, मानो लम्बे अर्से मे बडा बीमार था। पर दवीदोव पहले की तरह शात लगता था, बम होठो के ऊपर गालो के किनारे-किनारे हठीली मिलवटे अधिक गहरी हो गयी। किमी तरह उसने रजम्योत्नोव मे भी आत्मविश्वाम भर दिया जो पहले बडी जल्दी तैश मे आ जाता और उतनी ही जल्दी बिना बात के मत्रस्त हो जाता था। अद्रेई क्रुद्ध-मी आखो मे विश्वास की झलक के माथ गाव मे मवेशी के सामूहिक बाडो का निरीक्षण करता। अर्कादी बदल मे जिसे सामूहिक फार्म के प्रबध-मडल के चुनाव तक मारा काम मौपा गया था, वह अकमर कहता

"हम उन्हे चटा देगे धूल! मब मामूहिक फार्म मे भरती होगे।"

दवीदोव ने इलाकाई ममिति मे अपने घुडसवार मदेशवाहक के माथ यह सूचना भेजी कि अभी तक सामूहिक फार्म मे बत्तीम प्रतिशत लोग शामिल किये गये है पर मामूहिक फार्म बनाने का काम पूरे जोरो पर है।

अपने घरो मे बेदखल कुलक अपने रिश्तेदारो और सगे-सबधियो के यहा रहने चले गये। फ्रोल नकटा तिमोफेई को मीधे मडल अभियोक्ता के पाम भेजकर अपने दोस्त बोरश्चोव के यहा रहने लगा, उमी वाले के यहा जिसने एक बार गरीबो की मभा मे मतदान मे भाग लेने से इकार किया था। बोरश्चोव के दो कमरो के छोटे-से मकान मे कुलक मडली जमा होती।

दिन के समय पिछवाडो मे, खलियानो की तरफ मे एक-एक, दो-दो करके चोरी-छिपे वहा आते ताकि लोग-बाग न देख ले, कही ग्राम-सोवियत को भनक न पड जाये। दवीद गरोयेव वहा आता, बूढा घाघ लाप्शीनोव भी जो बेदखली के बाद ईसा के नाम पर भीख मागता, कभी-कभी याकोव लुकीच ओस्त्रोव्नोव भी टोह लेने आता। 'मुख्यालय' मे निकोलाई ल्यूश्न्या जैसे कुछेक मझोले किसान भी आख बचाकर

आते जो सामूहिक फार्मों के सख्त विरोधी थे। बोश्चोंव के अलावा दो गरीब तक शामिल थे एक ऊचे कद का, बिना भवो का, सिर और दाढी पर उस्तरा करनेवाला, अडे जैसा चिकना वसीली अतामान्चुकोव, जो अधिकतर चुप रहता और दूसरा निकीता खोप्रोव – गार्ड बैटरी का तोपची, उसी रेजिमेट का जिसमे पोदत्योल्कोव था। गृहयुद्ध मे वह सेना मे सेवा से कन्नी काटता रहा था, पर फिर भी सन् १६१६ मे उसे श्वेत काल्मीक कर्नल अश्तीमोव के दमनकारी दस्ते मे नौकरी करनी पड गयी। बस इसी तथ्य ने सोवियत सत्ता मे खोप्रोव के जीवन को नया मोड दे दिया। गाव के तीन निवासियो – याकोव ओस्त्रोव्नोव और उसके बेटे तथा बूढे लाप्शीनोव ने उसे सन् १६२० मे श्वेत सेना के पलायन के समय कुश्चेव्का मे अश्तीमोव के दमनकारी दस्ते के साथ देखा था, उसके कधो पर दफादार के सफेद फीते थे, उन्होंने उसे तीन काल्मीक कज्जाको के साथ कैद रेल मजदूरो को अश्तीमोव के पास पूछताछ के लिये ले जाते देखा था और नोवोरोस्सीस्क मे ग्रेम्याची लौटकर जब उसे पता चला कि ओस्त्रोव्नोव बाप-बेटा और लाप्शीनोव सही-सलामत है, उसकी जान खिसक गयी! प्रतिक्राति-कारियो के निर्मम दमन के वर्षो मे हट्टे-कट्टे गार्ड तोपची के दिल पर क्या-क्या बीती! और वह, जो नाल जडते समय किसी भी घोडे को पिछली टाग से पकड सकता था – धूर्त मुस्कानवाले लाप्शीनोव को देखकर पत्ती की तरह थरथराने लगता। वह सबसे अधिक उसी से डरता था। उसे देखकर कापती आवाज मे मुश्किल से होठ हिलाकर कहता

"दादा, मुझ लाचार पर रहम करो, मत खोलो मेरा भेद!"

लाप्शीनोव कृत्रिम रोष के साथ उसे शात करता

"अरे निकीता, तुम भी क्या हो! भला मै क्या पवित्र क्रास गले मे नही पहनता? ईसा मसीह ने क्या सीख दी थी 'अपने पडोसी से प्रेम करो।' तुम दिमाग मे भी न लाओ ऐसा विचार, कभी नही कहूगा! चाहे जान चली जाये। मेरा तो स्वभाव ही ऐसा है पर तुम भी जरूरत पडने पर मदद कर देना मेरी अगर सभा वगैरह मे कोई मेरे खिलाफ बोले या शासक मुझे सताये तुम भी मुझे बचाना ताली दो हाथ से बजती है। पर यह भी याद रखो कि तलवार उठानेवाला खुद तलवार से ही मारा जाता है। ठीक है न?

हा, मै तुममे अनुरोध करना चाहता था कि तुम खेत जोतने मे मेरा हाथ बटा दो। भगवान ने मुझे बेटा दिया, वह भी पागल, उसका कोई सहारा नही और किसी को भाडे पर रखना बहुत महगा पडता है ''

साल-ब-साल निकीता खोप्रोव लाप्शीनोव का 'हाथ बटाता' रहा, मुफ्त मे खेत जोतता, गुडाई करता, लाप्शीनोव के थ्रेशर मे लाप्शीनोव का गेहू कूटता। और फिर घर लौटकर मेज पर बैठता, अपनी लौह हथेलियो मे ललौही मूछोवाला चौडा चेहरा छिपाकर सोचने लगता "कब तक ऐसे चल सकता है? मार डालूगा उसे!"

याकोव लुकीच ओस्त्रोव्नोव अपने अनुरोधो से उसे नही सताता था, न धमकी देता था। उसे मालूम था कि जब जरूरत पडेगी खोप्रोव न केवल वोद्का की बोतल बल्कि और भी बडी चीज के लिये मना नही कर सकेगा। और वोद्का तो याकोव लुकीच उसके यहा अकसर पीता था और हर बार शुक्रिया अदा करना न भूलता।

"अटक जाये वह तेरे गले मे!" मेज के नीचे अपनी भारी-भरकम मुट्ठियो को घृणा के साथ भीचते हुए खोप्रोव मन ही मन सोचता।

पोलोवत्सेव अभी तक याकोव लुकीच के यहा उस कमरे मे टिका हुआ था जिसमे पहले ओस्त्रोव्नोव की मा रहती थी। वह अलावघर के ऊपर बनी टाड पर सोती और पोलोवत्सेव उसके कमरे मे छोटी-सी कोच पर लेटा अलावघर की गर्म दीवार पर अपने नगे पैर टिकाकर हरदम सिगरेट पीता रहता। रात को वह अकसर सोते घर मे टहलता। दरवाजो के कब्जो मे अच्छी तरह से हस की चर्बी लगी थी इसलिये एक भी नही चरमराता था। कभी-कभी वह कधो पर भेड की खाल का कोट डालकर, सिगरेट बुझाकर अपने घोडे को देखने जाता जो भूसी की कोठरी मे छिपा था। बेचैन घोडा दबे स्वर मे हिनहिनाता मानो उसे मालूम था कि पूरे जोर से अपना हर्ष प्रकट करने का समय अभी नही आया। मालिक उसे सहलाता, अपनी अकडी, लौह उगलियो मे उसकी टागो के जोडो को दबाकर देखता। एक बार बहुत ही अधेरी रात को उसने घोडे को भूसी की कोठरी से निकाला और जीन-काठी से बिना ही उस पर सवार होकर स्तेपी मे चला गया। वह पौ फटने से पहले लौटा। घोडा पसीने मे नहाया हुआ था, उसके पुट्ठे काप रहे थे। सुबह पोलोवत्सेव याकोव लुकीच से बोला

"मै अपने कस्बे गया था। वहा मेरी तलाश हो रही है कज्जाक तैयार है, बस हुक्म मिलने की देर है।"

सामूहिक फार्म के विषय मे जब गाव मे दुबारा आम सभा बुलायी गयी तो पोलोवत्सेव के कहने पर ही याकोव लुकीच ने सामूहिक फार्म मे भरती होने का आह्वान किया। उसके सतुलित और सकारात्मक भाषण से और गाव के गणमान्य याकोव लुकीच द्वारा सामूहिक फार्म मे शामिल होने की घोषणा के बाद एकदम इकतीस प्रार्थना-पत्र मिलने से दवीदोव को अत्यत हर्ष हुआ।

हा, याकोव लुकीच सामूहिक फार्म के बारे मे बहुत अच्छा बोला, पर अगले दिन घर-घर जाकर विश्वसनीय, सामूहिक फार्म के विरोधी मझोले किसानो को पोलोवत्सेव के पैसो से खरीदी वोद्का पिलाकर और खुद भी एक दो घूट पीकर बिल्कुल दूसरी बात कहता रहा

"भइया, तुम भी अजीब हो! तुम से ज्यादा तो मुझे सामूहिक फार्म मे भरती होने की जरूरत है, मै उसके खिलाफ बोल भी नही सकता। मै ठीक-ठाक रहता था इसलिये कुलक कहकर मुझे बेदखल कर सकते थे, पर तुम्हे क्या पडी है? क्या जुआ नही देखा? सामूहिक फार्म मे तुम्हारी नाक मे ऐसी नकेल डाल देगे कि इस दुनिया की सुध भूल जाओगे!" और चुपके से आगामी विद्रोह, पत्नियो के सामूहीकरण के बारे मे रटी-रटायी बाते छेड देता और अगर सभाषी हिचकिचाता, क्रोध मे कुछ भी करने को तैयार होता तो वह उसकी अनुनय-विनय करता, दड की धमकी देता, जब 'हमारेवाले विदेश से लौटेगे, और अत मे किला जीत लेता 'सघ' मे शामिल होने की स्वीकृति पाकर चला जाता।

सब ठीक-ठाक चल रहा था। याकोव लुकीच ने लगभग तीस कज्जाको को भरती किया और उन्हे सख्त हिदायत दी कि वे किसी को भी 'सघ' मे भरती होने और उससे हुई बातचीत के बारे मे न बताये। पर एक बार वह अपना काम पूरा करने के लिये 'कुलक मुख्यालय' मे गया (बेदखल कुलको और उनके साथियो पर उसे और पोलोवत्सेव दोनो को पूरा विश्वास था, इसलिये उनको शामिल करने के काम को आसान समझकर उन्होने बाद के लिये छोड दिया था), पर वही पहली बार अचानक उसका निशाना चूक गया याकोव लुकीच शाम ढलने पर लबादा लपेटकर बोर्श्चोव के यहा पहुचा। कमरे मे नीची

अगीठी जल रही थी। सब जमा थे। घर का मालिक तिमोफेई बोरर्चोव घटनो के बल बैठा अगीठी मे सूखी टहनिया डाल रहा था, बेचो और कोने मे 'सेट जॉर्ज क्रॉस' के फीतो की तरह नारगी और काली धारियो-वाले कद्दुओ के ढेर पर फ्रोल नकटा, लाप्शीनोव, गायेव, निकोलाई ल्यूश्न्या, वसीली अतामान्चुकोव और तोपची ख्रोप्रोव बैठे थे। फ्रोल नकटे का बेटा जो उसी दिन मडल के प्रशासनिक केन्द्र मे लौटा था खिडकी की ओर पीठ किये खडा था। वह बता रहा था कि अभियोक्ता किस तरह उसके साथ सख्ती से पेश आया, उसकी शिकायत पर गौर करने के बजाय उसको गिरफ्तार करके वापस इलाकाई केन्द्र भेजना चाहता था। याकोव लुकीच के आने पर तिमोफेई चुप हो गया पर पिता उससे बोला

"तिमोफेई, यह हमारा ही आदमी है। तुम डरो मत।"

तिमोफेई ने अपनी बात पूरी की और आखो मे चमक के साथ बोला

"जिदगी ऐसी है कि अगर कही कोई गिरोह होता तो घोडे पर सवार होकर कम्युनिस्टो का खून बहाने लगता!"

हा अब तो जीना दूभर हो गया है " याकोव लुकीच ने भी हा म हा मिलायी। अगर ऐसा ही जिदगी हो तब भी गनीमत है '

'और क्या मसीबत टूटनेवाली है?" गुस्से मे फ्रोल नकटे ने पूछा। "तुम्हारा कुछ नही बिगाडा इसलिये तुम तो मजे म हो पर मेरे अनाज पर तो हाथ साफ कर रहे है। जार के जमाने मे हम-तुम एक जैसे रहते थे और अब तुम तो सही-सलामत हो और मेरे पैरो के तो आखिरी जूते तक उतार लिये।'

"मेरा मतलब यह नही, मझे डर है कि कही कुछ हो न जाय

"ऐसा क्या हो सकता है?'

"यद्ध वगैरह '

भगवान करे! सत जॉर्ज की कसम मे! आज ही हो जाये! लिखा है न सतो के चरित मे "

"सन् उन्नीस मे व्योशेन्स्कायावालो की तरह खूटो से लडने को तैयार हू!"

"अरे मै तो जिदो की चमडी उतार दू! "

फिलोनोव्स्काया कस्बे के पास गले मे घायल हुआ अतामान्चुकोव गडरिये की बसी की तरह पतली, अस्फुट आवाज मे बोला

"लोगो मे इतना जनून है कि दातो-नाखूनो से लडेगे! "

याकोव लुकीच ने सावधानी से इशारा किया कि आस-पास की बस्तियो मे उथल-पुथल हो रही है, कही-कही तो कम्युनिस्टो को कज्जाक ढग से अक्ल सिखा रहे है वैसे ही जैसे पुराने काल मे मास्को की चाकरी करनेवाले अलोकप्रिय कज्जाक अतामानो को सिखायी जाती थी, विधि सरल थी–बोरी मे बद किया और पानी मे फेक दिया। वह धीरे-धीरे, हर शब्द को तौल-तौलकर बोल रहा था। बात ही बात मे उसने उल्लेख किया कि पूरे उत्तरी-काकेशिया प्रदेश मे अशाति व्याप्त है, नीचे की बस्तियो मे औरतो को सार्वजनिक सपत्ति बना दिया गया है और सबसे पहले कम्युनिस्ट ही खुले आम परायी लुगाइयो के साथ सोते है, बसत मे फौजे उतरनेवाली हैं। इसके बारे मे उसे, अपनी पुरानी रेजिमेंट के परिचित अफसर ने बताया है जो एक हफ्ते पहले ग्रेम्याची मे गुजरा था। याकोव लुकीच ने बस यह बात छिपा ली कि वह अफसर अभी तक उसके यहा छिपकर रह रहा है।

निकीता खोप्रोव ने जो अब तक चुप बैठा था, पूछा

"याकोव लुकीच, तुम हमे यह बताओ अच्छा, मान लिया हमने बगावत कर दी, अपने कम्युनिस्टो का तो सफाया कर लेगे पर आगे? मिलीशिया मे तो हम निबट लेगे पर जब हमारे खिलाफ फौज भेजी जायेगी तब क्या होगा? तब कौन हमारी अगुआई करेगा? अफसर नही है, हम अनपढ है, तारो को देखकर रास्ता ढूढते है पर लडाई मे तुक्केबाजी नही चलती, अफसर नक्शे देखकर रास्ता ढूढते है और नक्शे हेडक्वारटर मे बनाये जाते है। हमारे पास हाथ तो होगे, पर सिर नही।"

"अरे सिर भी होगा!" याकोव लुकीच जोश मे बोला। "अफसर भी हो जायेगे। वे लाल कमाडरो से ज्यादा अक्लमद है। अफसर बनने से पहले केडेट रह चुके है, बडे-बडे विज्ञान पढे है। और लाल कमाडर कैसे है? अरे हमारे मकार नागूल्नोव को ही लो। सिर काटने मे वह माहिर है पर भला रिसाले की कमान सभालना उसके बस की बात है? हरगिज नही! वह नक्शो को क्या खाक समझेगा?"

"पर अफसर आयेगे कहा से?"

"लुगाइया उन्हे पैदा करेगी!" चिढकर याकोव लुकीच बोला। 'निकीता, क्यो मेरे पीछे पड गये हो हाथ धोकर? पूछे जा रहे हो 'कहा से, कहा मे!' मुझे क्या पता?"

"विदेश से आयेगे! जरूर आयेगे!" फ्रोल नकटा आशा दिलाते हुए बोला और सत्ता पलट, खून मे बदला लेने की मधुर कल्पना करके आनद के साथ अपने साबूत नथुने को फुला-फुलाकर तबाकू के धुए से भरी हवा को गुडगुड अपने फेफडो मे भरने लगा।

खोप्रोव खडा हुआ, कद्दू को ठोकर मारकर उसने अपनी घनी ललौही मूछो पर हाथ फेरा और बोला

"यह तो सब ठीक है पर अब कज्जाक अक्लमद हो गये है। बगावतो के लिये उनकी जबरदस्त पिटाई हो चुकी है। वे अब सिर नही उठायेगे। कुबानवाले हमारा साथ नही देगे "

याकोव लुकीच के स्लेटी मूछोवाले होठो पर मुस्कान खेल रही थी, वह बस दोहराये जा रहा था

"कैसे नही देगे, जरूर देगे! और सारा कुबान भी धधकने लगेगा लडाई म क्या होता है अब की बार मै चित्त पडा हू और क्षण भर बाद दुश्मन चित्त पडा है और मै उसकी छाती पर बैठा उसका हाथ मरोड रहा हू।"

नही भाइयो, आप चाहे जो कहे, पर मै राजी नही हू!" अपने शरीर मे दृढता के सचार की अनुभूति मे सिहरकर खोप्रोव बोलने लगा "मै सरकार के खिलाफ नही सिर उठाऊगा और दूसरो को भी इसकी सलाह नही दूगा। और तुम, याकोव लुकीच, बेकार ही लोगो को ऐसी बातो मे फसा रहे हो वह अफसर जो तुम्हारे यहा टिका था, पराया है, पता नही कहा का आदमी है। वह गडबड करवा-कर अपने हाथ धो लेगा और फल फिर से हमो को भुगतना पडेगा। इस लडाई मे उन्होने हमे सोवियत सत्ता के खिलाफ झोक दिया, उन्होने कज्जाको के फीतो पर बिल्ले टाककर अधकचरे अफसर बना दिया और खुद पिछवाडे मे हेडक्वारटरो मे बैठकर पतली कमरवाली लौडियो मे इश्क लडाने लगे याद है जब हिसाब चुकाने का वक्त आया तो किस को उनकी करनी का दाम चुकाना पडा था? नोवोरोसीस्क मे जब लाल फौज घाटो पर काल्मीको के सिर काट रही थी, उसी समय अफसर व अमीर-उमराव स्टीमरो मे लदकर पराये, गर्म देशो को जा

रहे थे। पूरी दोन सेना नोवोचेरकास्क मे भेडो के रेवड की तरह जमघट बनाये हुए थी, पर जनरल कहा थे? अरे हा, मै पूछना चाहता था कि वह 'श्रीमान' जो तुम्हारे यहा रात को टिका था, अभी तुम्हारे यहा तो नही छिपा हुआ है? दो-एक बार मैने तुम्हे भूमी की कोठरी मे नाद मे पानी ले जाते देखा है सोचा कि बात क्या है, याकोव लुकीच को वहा पानी ले जाने की क्या जरूरत पडी है, किस शैतान को उसने वहा पाल रखा है? फिर एक बार वहा से घोडे के हिनहिनाने की आवाज सुनायी पडी।"

खोप्रोव को याकोव लुकीच के चेहरे का रग उडते देखकर आनद आ रहा था। सब लोग सकपकाकर भयभीत हो गये। खोप्रोव की छाती बदले की खुशी से फूल रही थी, उसे अपनी आवाज परायी सी लग रही थी।

"मेरे यहा कोई अफसर-वफसर नही है।" याकोव लुकीच ने निस्तेज स्वर मे उत्तर दिया। "मेरी घोडी हिनहिनायी होगी भूमी की कोठरी मे पानी भी नही ले गया था कभी-कभार जूठन ले जाता हू सूअर पाल रखा है वहा "

"तुम्हारी घोडी की आवाज मै पहचानता हू मुझे धोखा नही दे सकते! और वैसे मुझे इससे क्या लेना है? पर तुम्हारे काम मे मै भाग नही लेनेवाला और तुम खुद सोचो "

खोप्रोव ने भेड की खाल की टोपी पहनी और कमरे मे नजरे दौडा-कर दरवाजे की ओर चल पडा। लाप्शीनोव ने उसका रास्ता रोका। उसकी सफेद दाढी फडफडा रही थी और उसने अजीब ढग से फुदक फुदककर हाथ नचाकर पूछा

"खबर करने जा रहा है विश्वासघाती जूडस? बिक चुका है? और अगर हम कह दे कि तू काल्मीको के दमनकारी दस्ते म था, तब "

"बुड्ढे जरा सभल के!" लाप्शीनोव की दाढी के पास अपनी भारी मुट्ठी को लाकर खोप्रोव उन्माद मे बोला। "पहले मै अपने ही बारे मे बताऊगा, कह दूगा दमनकारी दस्ते मे था, दफादार था, चलाओ मुकदमा मुझ पर पर तुम लोग भी देखकर रहना! और तू घोडी की झाट के छल्ले और तू " खोप्रोव हाफने लगा, उसकी सास धौकनी की तरह चल रही थी। "तूने मेरा सारा खून चूस लिया!

कम से कम एक बार तो मै भी बदला ले लू।"

उसने हाथ घुमाये बिना सीधे लाप्शीनोव के मुह पर घूसा मारा और चौखट के पास गिरे बूढे की ओर देखे बिना धडाम से दरवाजा बद करके चला गया। तिमोफेई बोरचोंव खाली बालटी ले आया। लाप्शीनोव घुटनो के बल बैठकर बालटी पर झुक गया। उसके नथुनो से खून की काली धारा फूट पडी मानो कोई नस कट गयी हो। अवाक् नीरवता मे बस लाप्शीनोव की सुड-सुड और दात पीसने की आवाज, उसकी दाढी से रिसती खून की धाराओ की बालटी मे टपकती बूदो की टप-टप सुनायी दे रही थी।

"अब तो हम बिलकुल मारे गये!" बडे परिवारवाला बेदखल कुलक गारेव बोला।

निकोलाई ल्यूश्न्या भी झट से खडा हुआ, किसी से विदा लिये बिना नगे सिर ही वहा से चला गया। उसके पीछे-पीछे अनामान्चकोव भी धीरे-धीरे कदम रखता चल पडा जाते-जाते वह पतली, फटी-सी आवाज मे बोला

'तितर-बितर हो जाने म ही हमारा भला है।

कुछ देर तक याकोव लुकीच चुप बैठा रहा। उसकी जान मानो हलक मे अटक गयी। सास लेने मे मुश्किल हो रही थी। सिर मे कोई हथौडे चला रहा था, माथा पसीने से ढक गया। जब वह उठा, तब तक बहुत-से जा चुके थे। बालटी पर झुके लाप्शीनोव की ओर घिन के साथ देखकर तिमोफेई नकटे से धीमे स्वर मे बोला

"मेरे साथ चलो, तिमोफेई!"

उसने चुपचाप कोट और टोपी पहनी। वे बाहर निकले। गाव मे आखिरी बत्तिया भी बझने लगी थी।

'कहा जायगे? तिमोफेई ने पूछा।

"मेरे यहा।

' किसलिये?"

"बाद मे मालूम हो जायेगा, अब जरा फुर्ती से चल।'

याकोव लुकीच जान-बूझकर ग्राम-सोवियत के सामने से गुजरा, वहा रोशनी नही थी, खिडकियो की काली चौखटो मे अधेरा मुह बाये खडा था। उन्होंने याकोव लुकीच के अहाते मे प्रवेश किया। ओसारे के पास रुककर उसने तिमोफेई के कोट की आस्तीन खीची।

"जरा यहा ठहर। मै बाद मे बुला लूगा।"

"चगा।"

याकोव लुकीच ने दरवाजा खटखटाया, बहू ने साकल खोलते हुए पूछा

"पिता जी, आप है?"

"मै।" उमने दरवाजा भेडकर बैठक का किवाड खटखटाया। अदर से भारी, फटा-सा स्वर सुनायी पडा

"मै हू, अलेक्साद्र अनीसीमोविच। अन्दर आ मकता हू?"

"आ जाओ।"

पोलोवत्सेव काले शाल से ढकी खिडकी के पास बैठा मेज पर कुछ लिख रहा था। लिखायीवाले पन्ने को अपने हाथ से ढककर उसने अपना चौडे माथेवाला सिर घुमाया।

"हा, बोलो। क्या हाल-चाल है?"

"खराब मुसीबत आ गयी! "

"क्या? जल्दी बोल! " पोलोवत्सेव झट मे खडा हो गया, उमने लिखायी का पन्ना जेब मे ठूमा, जल्दी-जल्दी कमीज का कालर बद किया, उसका चेहरा तमतमाकर लाल हो गया। वह अपने शिकार पर झपटने के लिये तत्पर हिंस्र पशु की तरह आगे को झुका।

याकोव लुकीच ने अटकते-अटकते उमे पूरा किस्सा मुनाया। पोलोवत्सेव चुपचाप उमे मुन रहा था। गहरे गड्ढो मे उसकी नीली-मी आखे याकोव लुकीच को घूर रही थी। वह धीरे-धीरे मीधा तनके खडा हुआ, उमकी मुट्ठिया कभी खुलती, कभी बद होती, अपने होठो को टेढा करके याकोव लुकीच की ओर कदम बढाया।

"हरामी! बुड्ढे उल्लू, तू मुझे मरवाना चाहता है? मारे काम पर पानी फिरवाना चाहता है? तूने आधा काम तो अपनी लापरवाही मे बिगाड ही दिया है। मैने तुझे क्या हुक्म दिया था? क्या हुक्म दिया था मैने तुझे? पहले एक-एक करके, अलग-अलग मे उनका दिमाग टटोलना था! और तू दीवानखाने मे गैडे की तरह घुस गया! " उमकी दबी, भारी फुसफुसाहट से याकोव लुकीच के चेहरे का रग उड गया, उसका डर और घबराहट और भी बढ गयी। "अब क्या करे? इस खोप्रोव ने खबर कर दी है या अभी नही? क्यो?

नही? अरे बोल भी ग्रेम्याची के ठूठ! नही? वह किधर गया, तूने पीछा किया उसका?"

"जी नही अलेक्सान्द्र अनीमीमोविच, मेरे माई-बाप, हम मारे गये!" याकोव लुकीच ने सिर पीट लिया। उसके कत्थई गाल पर ढुलककर आसू की बूद सफेद मूछ पर जा पडी।

पर पोलोवत्सेव दात पीसकर बोला

"तू, जनखा! कुछ करना चाहिये न कि तेरा बेटा घर पर है?"

"पता नही मै अपने साथ एक आदमी को लाया हू।"

"किसको?"

"फ्रोल नकटे के बेटे को।"

'अहा। क्यो लाया है उसे?"

उनकी नजरे मिली और बिना शब्दो के ही वे एक-दूसरे को समझ गये। याकोव लुकीच ने ही पहले नजर झुकायी और पोलोवत्सेव के इस प्रश्न पर कि 'विश्वसनीय लडका है या नही?' उसने चुपचाप सिर हिला दिया। पोलोवत्सेव ने झटके से कील पर लटका अपना कोट उतारा, तकिये के नीचे से हाल ही मे साफ किया गया रिवाल्वर निकाला, उसका सिलिंडर घुमाया, उसमे निकिलदार गोलिया चमकी। कोट के बटन बद करते हुए पोलोवत्सेव ने लडाई की तरह साफ-सक्षिप्त आदेश दिये

"कुल्हाडी ले लो। सबसे छोटे रास्ते से ले चलो। कितने मिनट की दूरी है?"

'यही पास ही मे है, आठेक घर आगे है '

"उसके बाल-बच्चे है?"

"बस बीवी ही है।"

"पडोसी पास ही मे रहते है?"

"एक तरफ से खलिहान है और दूसरी तरफ से बाग।"

"और ग्राम-सोवियत?"

"वह बहुत दूर है "

"चलो!"

जब तक याकोव लुकीच कुल्हाडी लेने कोठरी मे गया, पोलोवत्सेव ने बाये हाथ से तिमोफेई की कोहनी दबाकर दबे स्वर मे कहा

"मेरी हर बात को मानना! हम वहा जायेगे और तुम अपनी आवाज को बदलकर कहना कि ग्राम-सोवियत के हरकारे हो, उसके लिये कागज लाये हो। ताकि वह खुद दरवाजा खोले।"

"कामरेड, आप सभलकर रहना, नाम आपका नही जानता, यह खोप्रोव बैल की तरह ताकतवर है, अगर सावधानी नही बरती तो घूसे मे ही " तिमोफेई बेतकल्लुफी से बोलने लगा।

"मुह बद कर! पोलोवत्सेव ने उसे टोक दिया और याकोव लुकीच की ओर हाथ बढ़ाकर बोला "उधर द। दिखा रास्ता।

कुल्हाडी की याकोव लुकीच के हाथ मे गर्म और नम मूठ को उसने कोट के अदर पतलून मे खोस लिया और कालर उठा लिया।

गली मे वे चुपचाप जा रहे थे। हट्टे-कट्टे पोलोवत्सेव के बराबर चलता तिमोफेई बिल्कुल छोकरा लग रहा था। वह डगमगाकर कदम रखते श्वेत कप्तान के साथ-साथ चलता उसका मुह देखने की कोशिश कर रहा था, पर अधेरे और कोट का कालर खडा होने के कारण वह देख न सका।

बाड को फादकर व खलिहान म घुसे।

"एक दूसरे के कदम के निशान मे पैर रखकर चलो ताकि बर्फ पर एक आदमी का निशान लगे ' फुसफुसाकर पोलोवत्सेव ने आदेश दिया।

बर्फ की सपाट सतह पर वे भेडियो की तरह, एक-दूसरे के पदचिन्ह म कदम रखते हुए चल दिये। अहाते के फाटक के पास दिल पर हाथ रखकर याकाव लुकीच बदबदाया

हे भगवान '

पोलोवत्सेव ने दरवाजे की ओर इशारा किया।

'खटखटा! " तिमोफेई होठो के हिलने ही समझ गया आदेश।

उसने धीरे से साकल खटकायी और तभी उसन दरवाजे के दायी ओर खडे सफेद टोपीवाले पराये आदमी को हडबडी मे कोट के बटन खोलते सुना। तिमोफेई ने एक बार फिर दरवाजा खटखटाया। बाडे म पड हल के नीचे मे छोटे-से कुत्ते को निकलता देखकर याकोव लुकीच के रोगटे खडे हो गये। पर ठड मे अकडा पिल्ला हल्के से भौककर, रिरियाता हुआ छप्पर मे ढके तहखाने की ओर भाग गया।

* * *

खोप्रोव विचारों में डूबा घर पहुंचा, रास्ते में वह कुछ शांत हो गया। पत्नी ने उसे खाना परोसा।

उसने बेमन से खाना खाया और उदास स्वर में बोला

"मार्या, इस वक्त तो तरबूज का अचार खाने को जी कर रहा है।

क्या, नशा उतारने के लिये?" वह मुस्कराकर बोली।

"नहीं, आज तो मैंने पी नहीं है। मार्या, कल मैं अधिकारियों को बताने जा रहा हूं कि मैं दमनकारी दस्ते में था। इस तरह जीना अब मेरे बस में नहीं रहा।"

"तुमने भी क्या सोची है! आज क्यों तुम बड़े अजीब-से लग रहे हो? मैं समझ नहीं पा रही।"

निकीता ललौंही मूछों को ताव देता मुस्करा रहा था और सोने से पहले फिर गंभीर स्वर में बोला

'तुम मेरे लिये रस्क बना देना या फीके पूड़े। मैं सजा काटने जाऊंगा।

और फिर बड़ी देर तक आंखें खोले लेटा पत्नी की अनुनय-विनय पर कोई ध्यान दिये बिना सोचता रहा 'अपने बारे में और आस्त्रोव्नोव के बारे में बता दूंगा उन हरामियों को भी गिरफ्तार होने दो! और मेरा क्या कर लेंगे? गोली तो मारेंगे नहीं? तीनेक साल की सजा होगी उराल पर लकड़ी काट के साफ लौटूंगा वहां से। तब कोई भी मुझे पुरानी बातों का उलाहना नहीं दे सकेगा। अपने पाप को छिपाने के लिये किसी पराये के लिये हाड़ नहीं तोड़ूंगा। ईमान से बता दूंगा कि अस्तीमोव के दस्ते में कैसे पहुंचा। साफ-साफ कह दूंगा मोर्चे पर नहीं जाना चाहता था, कौन चाहता है गोलियों की बौछार में सिर डालना? चलाने दो मुकदमा, पुराना किस्सा होने के कारण कुछ नरमी बरतेंगे। सब बता दूंगा! लोगों को खुद मैंने गोली मारी नहीं, और जहां तक बात कोड़े मारने की है हां, कोड़े जरूर मारे थे, कज्जाक भगोड़ों को भी और कुछेक बोल्शेविकों को भी तब मैं निरा मूढ़ था, मुझे भले-बुरे का कोई ज्ञान न था।'

सोचते-सोचते उसे नींद आ गयी। शीघ्र ही दरवाजा खटकने

से नीद उचट गयी। कुछ देर लेटा रहा। "कौन बेवक्त आया है?" उसने सोचा। दरवाजे पर फिर दस्तक हुई। निकीता बडबडाकर उठने लगा, वह लैम्प जलाना चाहता था, पर मार्या की भी आख खुल गयी और वह फुसफुसाकर बोली

"फिर सभा मे बुलाने आये होगे? मत जलाओ! दिन हो या रात कोई चैन नही है पागल हो गये है मरदुए!"

निकीता नगे पाव ड्योढी मे आया।

"कौन है?"

"मै हू निकीता चाचा, सोवियत से आया हू।"

किसी बच्चे की अपरिचित आवाज सुनायी पडी निकीता को बचैनी किसी अनिष्ट की-सी अनुभूति हुई, उसने पूछा

"अरे कौन है? क्या चाहिये?"

"यह मै निकोलाई कुर्भेन्कोव हू। अध्यक्ष ने तुम्हे चिट भेजी है, फौरन सोवियत मे आने को कहा है।"

"दरवाज के नीचे से सरका दे।"

दूसरी तरफ क्षण भर का मौन छा गया सफेद झबरीली टोपी के नीचे से घूरती आखो को देखकर पल भर को हडबडाया निमो-फेई सभल गया

"दस्तखत भी करने है चिट मिलने के खोलो दरवाजा।"

तिमोफेई का कच्च फर्श पर खाप्रोव के नगे पावो की बचैनी भरी रगडन की आवाज सुनायी पडी। काली सकल खटकी। दरवाजे की चौखट मे काली पृष्ठभूमि मे खाप्रोव की सफेद आकृति प्रकट हुई। उसी क्षण पोलोवत्सेव ने दहलीज पर बाया पैर रखा और कुल्हाडी घुमाकर उसके चपटे हिस्से से खाप्रोव की नाक के बासे के ऊपर प्रहार किया।

कसाई के प्रहार से बैल की तरह निकीता घुटनो पर ढह गया और धीरे-धीरे पीठ पर लुढक गया।

"अदर घुसो! दरवाजे पर सिटकनी चढा दो!" पोलोवत्सेव ने अस्फुट स्वर मे आदेश दिया। उसने अदर के दरवाजे का हेडल टटोला और कुल्हाडी को कसकर पकडे हुए उसे खोल दिया।

कोने मे पलग से टाट की खड-खड और आशकित महिला स्वर सुनायी पडा

"निकीता, तुमने कुछ गिरा दिया क्या? कौन आया है निकीता?"
पोलोवत्सेव ने कुल्हाडी पटकी और हाथ फैलाकर पलग पर झपटा।
"अरे कौन है? बचाओ!"
हडबडी मे घर मे घुसते समय तिमोफेई को चौखट से सिर मे जोर से चोट लगी। कमरे के कोने मे उसे हाफने और हाथापाई की आवाज सुनायी पडी, पोलोवत्सेव औरत के ऊपर गिर पडा और उसके चेहरे पर तकिया दबाकर तौलिये मे उसके हाथ बाधने लगा। उसकी कोहनिया औरत की कोमल चूचियो पर फिसल रही थी। पोलोवत्सेव को उसके मजबूत, मुक्त होने के लिये सघर्षरत बदन की गर्मी, कैद चिडिया की तरह धुक-धुक करते उसके दिल की अनुभूति हुई। क्षण भर के लिये उसमे तीव्र इच्छा जागी पर उसने गुर्राकर तकिये के नीचे हाथ डाले और दोनो हाथो मे औरत का मुह ऐसे फाड दिया मानो घोडे की थूथनी खोल रहा हो। उसकी उगली मे होठ रबर की तरह खिचा और फिर चिरता चला गया, उसकी उगली गर्म खून मे तर थी, पर औरत अब नही चिल्ला रही थी पोलोवत्सेव ने उसके मुह मे हलक तक लहगे को ससोसकर ठस दिया था।
पोलोवत्सेव बधी औरत के पास तिमोफेई को छोडकर, खुद बीमार घोडे की तरह हाफता ड्योढी मे चला गया।
"माचिस!"
याकोव लुकीच ने माचिस जलायी। उसकी धुधली रोशनी मे पोलोवत्सेव फर्श पर पडे खोप्रोव के ऊपर झुका। तोपची बेढब ढग से पैरो को मोडकर कच्चे फर्श पर गाल टिकाये पडा था। साम लेती उसकी छाती ऊपर-नीचे उठ रही थी जब वह सास छोडता तो हर बार उसकी ललौही मछ का सिरा लाल डबरे मे डूब जाता। माचिस की तीली बुझ गयी। पोलोवत्सेव ने खोप्रोव के माथे पर उस स्थान को टटोला जहा चोट लगी थी। उसकी उगलियो ने चकनाचूर हड्डी की किरकिराहट महसूस की।
'आप मुझे माफ कीजिये मुझे खून देखकर उल्टी आती है।" याकोव लुकीच फुसफुसाकर बोला। उसके बदन मे कपकपी दौड रही थी, घुटने काप रहे थे, पर पोलोवत्सेव ने उसे आदेश दिया
"कुल्हाडी ला। वहा पलग के पास पडी है। और पानी भी।"
पानी के छीटो से खोप्रोव को होश आ गया। पोलोवत्सेव ने उस-

की छाती पर घुटना टिकाकर पूछा

"गद्दार, तूने खबर कर दी? बोल! अरे, ओ! माचिस तो जला!"

माचिस की तीली ने फिर कुछ क्षणो के लिये खोप्रोव के चेहरे को, उसकी अधखुली आख को आलोकित किया। याकोव लुकीच का हाथ काप रहा था, नन्ही-सी रोशनी भी काप रही थी। ड्योढी के छप्पर मे लटकी मरकडो की बुहारियो मे रोशनी के पीले चकत्ते नाच रहे थे। माचिस की तीली याकोव लुकीच के नाखूनो को जला रही थी पर उसे दर्द नही महसूस हो रहा था। पोलोवत्सेव ने दो बार प्रश्न दोहराया और फिर खोप्रोव की उगलिया मरोडने लगा। वह कराहा और पेट के बल लेट गया बडा जोर लगाकर वह हाथ-पाव पर उठा। पोलोवत्सेव पूरा जोर लगाकर उसे फिर से पीठ पर लुढकाने की कोशिश करने लगा पर तोपची की भालू जैसी शक्ति ने उसे पैरो पर खडा कर दिया। बाये हाथ से उसने याकोव लुकीच का कमरबद पकड लिया और दाये से पोलोवत्सेव की गर्दन दबोच ली। वह कधो मे सिर को छिपाकर, गले को खोप्रोव की ठडी उगलियो से बचाते हुए चिल्लाया

"रोशनी करो! तुम्हारी ऐसी की तैसी करो भी रोशनी!"

वह अधेरे मे कुल्हाडी नही ढूढ पा रहा था।

तिमोफेई ने रसोई मे सिर निकाला, उसे नही पता था कि बात क्या हुई वह जोर-जोर से फुसफुसाकर बोला

'अरे तुम उसकी गर्दन पर कुल्हाडी की धार गडाओ तब वह झट से बता देगा!

अतत पोलोवत्सेव को कुल्हाडी मिल गयी, पूरा जोर लगाकर वह खोप्रोव के बगल मे मुक्त हुआ और कुल्हाडी की धार से दो वार किये। खोप्रोव गिर पडा, गिरते समय उसका सिर बेच से टकराया और उस पर रखी बालटी गिर गयी। बालटी गिरने की आवाज गोली के धमाके की तरह गूजी। पोलोवत्सेव दात भीचकर उसका काम तमाम करने लगा, पैर से उसका सिर टटोला और पूरे जोर से कुल्हाडी चला दी। उसे खून की बुल-बुल, गुड-गुड सुनायी पडी। फिर वह याकोव लुकीच को धकेलकर अदर के कमरे मे ले गया और दरवाजा बद करके दबे स्वर मे बोला

"अबे उल्लू के पट्ठे! पकड लुगाई का सिर, हमें यह पता करना है कि उसने खबर दे दी है या नही? ऐ, लड़के, तू इसके पैर दबाकर पकड ले!"

पोलोवत्सेव ने बधी औरत पर अपनी छाती टिका दी। पोलोवत्सेव के शरीर में पसीने की तीखी बू आ रही थी। उसने शब्द चबा-चबाकर पूछा

"शाम को घर लौटने के बाद तेरा खसम सोवियत मे या कही और गया था?"

कमरे के झुटपुटे म उसे भय में आक्रात, सूजी आखे, दम घुटने म काला पडा चेहरा दिखायी पडा। उसका जी मिचलाने लगा जल्दी से ताजी हवा में जाने की इच्छा हुई उसने क्रोध और घृणा के साथ औरत के कानो के पीछे के हिस्से को अगूठो मे दबाया। भयकर पीडा मे तडपकर वह मूर्च्छित हो गयी। फिर होश मे आकर उसने लार म भीगे कपडे को जीभ मे धकेलकर मुह म थूक दिया। पर वह चिल्लायी नही बल्कि सिसकिया लेती हुई फुसफुसाकर गिडगिडाने लगी

भले लोगो! भले मानसो दया करो! सब बता दूगी!'

उसने याकोव लुकीच को पहचान लिया। वह तो उसका रिश्तेदार लगता है कोई सात साल पहले उसकी बहन के बेटे के बप्तिस्मे म वे दोनो धर्मपिता और धर्ममाता बने थे। और बडी मुश्किल से अपने कटे फटे होठो को हिलाकर वह बोली

रिश्तेदार मेरे! मेरे प्यारे रिश्तेदार! क्यो? किसलिये?"

पोलोवत्सेव न डरकर अपनी चौडी हथेली मे उसका मुह ढक दिया। वह दया की आशा मे अपने खून स लथपथ होठो मे उसकी हथेली को चूमने की कोशिश करने लगी। वह जीना चाहती थी! वह भयभीत थी!

'गया था कही तेरा खसम?"

उसने सिर हिलाकर ना किया। याकोव लुकीच पोलोवत्सेव के हाथ पकडकर कहने लगा

साहब सान्न अलेक्सान्द्र अनीसीमोविच! इसे छोड दो हम इसे धमका देगे, यह किसी मे कुछ नही कहेगी! हरगिज नही कहेगी!"

पोलोवत्सेव ने उसे धक्का दिया। इन तनावपूर्ण मिनटो मे उसने पहली बार उल्टे हाथ से चेहरे का पसीना पोछा और सोचने लगा "कल ही भेद खोल देगी! पर यह औरत है, कज्जाक औरत, मेरे लिये, अफसर के लिये यह शर्म की बात है भाड मे जाये! आखे ढक देनी चाहिये इसकी ताकि अपना अत न देख सके " सूती शमीज को ऊपर उठाकर उसने औरत के सिर पर लपेट दिया, पल भर के लिये उसने इस तीस साल की कभी भी बच्चे की मा न बनी औरत के सुडौल बदन पर नजर डाली। वह घुटने को समेटकर आहत पक्षी की भाति पडी थी पोलोवत्सेव ने झुटपुटी रोशनी मे देखा की औरत की छाती और बादामी पेट अचानक पसीने से चमकने लगे। "मतलब, समझ गयी कि क्यो उसका सिर ढका गया है। भाड मे जाये! " पोलोवत्सेव ने हकार कर कुल्हाडी को शमीज म लिपटे चेहरे पर मारा।

याकोव लुकीच न देखा कि उसकी रिश्तेदार का शरीर ऐठकर तडपा। उसके नथुनो मे ताजे खून की कसैली बू भर गयी याकोव लुकीच लडखडाता हुआ अगीठो के पास तक जा पाया कि उसे जोर से उलटी आ गयी

ओसारे के बाहर पोलोवत्सेव शराबी की तरह लडखडाया और झककर रेलिग पर पडी ताजी, भुरभुरी बर्फ को चाटने लगा। व फाटक से बाहर निकले। तिमोफेई नकटा उनके साथ नही गया घूम-फिरकर वह स्कूल की ओर चल दिया जहा से अकार्डियन के सगीत की लहरिया गूज रही थी। स्कूल के पास युवक-युवतिया रगरेलिया मना रहे थे। तिमोफेई लडकियो को चोटता घेरे मे घुस गया और उसने अकार्डियन-वाले से उसका बाजा मागा।

'तिमाफेई! जिप्सी डास की धुन बजा, एक लडकी न अनुरोध किया।

बाजेवाले ने तिमोफेई को अकार्डियन थमाया पर उसने बाजा गिरा दिया। हल्की-सी हसी के साथ उसे उठाया पर फिर गिरा दिया। उगलिया उसका कहना नही मान रही थी। उसन उगलिया हिलायी और हसकर बाजा वापस कर दिया।

"पी रखी है इसने!"

'कही नशे मे धुत्त तो नही है?"

' अरे, इमने तो कोट पर उलटी कर रखी है।"

लडकिया तिमोफेई के पाम से हट गयी। अकार्डियन के मालिक ने बडबडाकर बाजा उठाया और उम पर चिपकी बर्फ को फूक-झाडकर जिप्सी धुन निकालने लगा। सबसे लम्बी लडकी उल्याना अख्वात्किना नीची एडियोवाली जूतियो को चरमराते हुए बहगी जैमे हाथ फैलाकर नाचने लगी। "यही बैठा रहना चाहिये सुबह तक, तिमोफेई ने किमी पराये की तरह मोचा, "तब मामले की जाच के वक्त कोई मबत नही मिलेगा।' वह उठा और जान-बूझकर शराबी की तरह लडखडाता हुआ स्कूल की ओसारे पर बैठी लडकी के पास गया, उमके गर्म घुटनो पर सिर टिकाकर बोला

"लाडो, मेरा मिर महला दे! '

* * *

और बदगोभी के पत्ते की तरह हरा याकोव लुकीच घर म घुमते ही पलग पर औधा पड गया। वह पोलोवत्मेव को नाद के ऊपर हाथ पर माबुन मलते, फुफकारकर हाथ-मुह धोते सुन रहा था, फिर वह अपने कमरे मे चला गया। आधी रात को पोलोवत्मेव ने याकोव लुकीच की पत्नी को जगाकर पूछा

उबले फलो का मत है मालकिन? प्याम लगी है।"

मत पीकर उमने गिलास से उबली नाशपाती निकाली (याकोव लुकीच उमे कनखियो मे देख रहा था), चपड-चपड उमे खाकर चल दिया सिगरेट का धुआ छोडता, लुगाइयो जैसी फूली अपनी नगी छाती को सहलाता हुआ।

कमरे मे पोलोवत्मेव ने अलावघर की अभी तक गर्म दीवार पर अपने नगे पाव टिका दिये। रात को उमे गठिया से दुखते पैरो को गर्म करना अच्छा लगता था। मन् १६१६ की मर्दियो मे बुग नदी को तैरकर पार करते समय, जब वह दिलोजान मे महामहिम जार की सेवा और मातृभूमि की रक्षा करते हुए उमके पैरो को ठड लग गयी। तब मे कज्जाक कप्तान पोलोवत्सेव मे गर्मी और नमदे के गर्म बूटो के लिये ललक उत्पन्न हुई

१३

ग्रेम्याची मे एक सप्ताह के प्रवास के दौरान दवीदोव के सम्मुख कई प्रश्न चट्टान की तरह उठ खडे हुए थे रात को ग्राम-सोवियत मे या तीत के बडे घर मे स्थित सामूहिक फार्म के कार्यालय मे लौटकर दवीदोव बडी देर तक कमरे मे टहलता रहता, सिगरेट पीता और फिर डाक मे आये 'प्राव्दा', 'मोलोत' समाचार-पत्र पढता और फिर मे ग्रेम्याची के लोगो, सामूहिक फार्म, दिन भर की घटनाओ के बारे मे सोचने लगता। घिरे भेडिये की तरह वह सामूहिक फार्म के बारे मे विचारो के घेरे मे निकलने का प्रयास करता, अपने खाते, मित्रो, अपने काम को याद करता, यह सोचकर उस पर हल्की-सी उदासी छा जाती कि वहा इतने परिवर्तन आ गये है और यह सब उसकी अनुपस्थिति मे, कि वह अब गियर-बॉक्स को सुधारने के लिये रात-रात भर कैटरपिलर ट्रैक्टर के इजन के नक्शो का अध्ययन नही कर सकता कि उसकी नखरीली खराद पर अब कोई दूसरा काम कर रहा होगा, शायद वह आत्मविश्वासी गोल्दस्मीद्त ही हो। यह सोचकर वह उदास हो जाता कि पच्चीसहजारियो की विदाई के समय जोशीले भाषणो मे नेक शब्द कहकर वे अब शायद उसके बारे मे भूल गये। पर अचानक फिर विचारो की शृखला ग्रेम्याची की ओर मुड जाती, मानो दिमाग मे कोई काटा बदलकर विचारो की दिशा मोड देता। देहात मे काम पर आते समय वह इतना भोला शहरी तो नही था पर वर्ग सघर्ष का विकास, उसकी जटिल गुत्थिया और अकसर छिपे छद्म रूप उसे इतने जटिल नही लगते थे जितने कि यहा ग्रेम्याची मे उसने पहले ही दिनो मे देखे। वह यह नही समझ पाता था कि सामूहिक फार्म की विशाल श्रेष्ठताओ के बावजूद अधिकाश मझोले किसान उसमे शामिल होने की कतई भी इच्छा नही रखते। बहुत-से लोगो और उनके आपसी सबधो को समझने की कुजी वह नही खोज पा रहा था। तीत जो कल तक लाल छापेमार था अब कुलक और शत्रु है। निमोफेई बोरश्चोव गरीब है पर कुलको की हिमायत करता है। ओस्त्रोव्नोव सभ्य किसान है, स्वेच्छा से सामूहिक फार्म मे शामिल हुआ, पर नागूल्नोव का व्यवहार उसके प्रति चौकसी भरा, द्वेषपूर्ण है। ग्रेम्याची के सभी निवासी दवीदोव के दिमाग मे घूम रहे थे और उनकी

बहुत-सी बाते उसकी समझ के परे थी, किसी अदृश्य पर्दे से ढकी थी। गाव उसके लिये नये डिजाइन के जटिल इजन की तरह था और दवीदोव पूरे ध्यान और शक्ति के साथ उसको अत तक जानने, उसके हरेक पुर्जे को छूकर देखने, इस जटिल मशीन की दैनंदिन, अथक धड़कन मे हरेक अनियमितता का कारण समझने की कोशिश कर रहा था

गरीब ख्रोप्रोव और उसकी पत्नी की रहस्यमय हत्या से उसके मन मे यह विचार उपजा कि इस मशीन मे कही छिपी कमानी सक्रिय है। उसको अस्पष्ट-सी अनुभूति हुई कि ख्रोप्रोव की हत्या के कारणो का सामूहिकीकरण, बटी खेती की ढहती इमारत मे तूफानी हवा की तरह घुसी नयी बातो से सीधा सबध है। सवेरे जब ख्रोप्रोव और उसकी पत्नी के शव मिले, रजम्योत्नोव और नागूल्नोव से उसकी लम्बी बातचीत हुई। वे भी अनुमान और अटकले ही लगा रहे थे। ख्रोप्रोव गरीब किसान था, पहले वह श्वेत गार्ड मे था, सामाजिक जीवन मे निष्क्रिय था, कुलक लाप्शीनोव से उसकी दाल गलती थी। किसी के द्वारा व्यक्त यह अनुमान बिल्कुल बेतुका था कि उसे लुटेरो ने मार डाला क्योंकि घर से कुछ नही गया और ख्रोप्रोव के पास लूटने लायक कुछ था भी नही। रजम्योत्नोव ने यह कहकर बात टाल दी कि लुगाई-वुगाई का मामला है, किसी की औरत का हाथ लगाया होगा इसीलिये कर दिया उसका काम तमाम।

नागूल्नोव चुप था उसे बिना सोचे-समझे बोलना पसद नही था। पर जब दवीदोव ने अपना यह अनुमान प्रकट किया कि हत्या मे किसी कुलक का हाथ है और उनको फौरन गाव से निकालने का सुझाव दिया तो नागूल्नोव ने उसका पूर्ण रूप से समर्थन किया

"उन्ही का काम है, दो राय नही हो सकती! भेज दो इन बिच्छुओ को ठडे इलाको मे!"

रजम्योत्नोव ने हसकर कधे उचकाये और बोला

"उन्हे निकालना चाहिये, इसमे कोई सदेह नही। वे लोगो को सामूहिक फार्म मे भरती नही होने दे रहे। पर ख्रोप्रोव के मारे जाने मे उनका कोई हाथ नही। यह सच है कि वह लाप्शीनोव के साथ ही ज्यादा उठता-बैठता था, हमेशा उसके यहा काम करता था, पर पेट भरा होने की वजह से थोड़े ही? गरीबी के बोझ से लाप्शीनोव का दामन पकडे था। हर बात कुलको के सिर तो नही मढनी चाहिये,

तुम लोग भी अजीब हो! नही, मानो या न मानो, पर यहा किसी लुगाई का मामला है!"

इलाके से जाच-अधिकारी और डाक्टर आये। उन्होने शव-परीक्षा की, ख्रोप्रोव के पडोसियो और लाप्शीनोव से पूछताछ की। पर जाच-अधिकारी को हत्यारे और हत्या के कारणो का कोई सुराग न मिला। अगले दिन, चार फरवरी को, सामूहिक फार्म के सदस्यो की आम सभा मे सर्वसम्मति से कुलक परिवरो को उत्तरी काकेशिया प्रदेश से निर्वासित करने का निर्णय पास किया गया। सभा मे सामूहिक फार्म के निर्वाचित प्रबध-मडल का भी अनुमोदन किया गया, जिसमे याकोव लुकीच ओस्त्रोव्नोव (नागूल्नोव के इतराज के बावजूद दवीदोव और रजम्योत्नोव ने उसकी उम्मीदवारी का उत्साह के साथ समर्थन किया), पावेल ल्युबीश्किन, द्योम्का उशाकोव शामिल हुए, अर्कांशा बदलू को बडी मुश्किल से जरूरी वोट मिले, पाचवा सदस्य दवीदोव था जिसे सबने अपने वोट दिये। काफी हद तक इसमे उस पत्र ने भूमिका निभायी जो एक दिन पहले इलाकाई कृषि सघ से मिला था। उसमे कहा गया था कि इलाकाई कृषि सघ की सहमति से इलाकाई पार्टी समिति अपने प्रतिनिधि, पच्चीसहजारी कामरेड दवीदाव को साम-हिक फार्म के अध्यक्ष के पद पर अपना उम्मीदवार खडा कर रही है।

* * *

दवीदोव अभी तक नागूल्नाव के यहा रह रहा था। वह बडे सदूक पर सोता था, पति-पत्नी के पलग और उसके बीच नीचा-सा छीट का पर्दा तना था। आगेवाले कमरे मे घर की मालकिन – नि-सतान विधवा रहती थी। दवीदोव समझता था कि वह मकान को कष्ट दे रहा है पर पहले दिनो की दौडधूप और चिताओ के कारण मकान ढूढने का समय ही नही मिल पा रहा था। नागूल्नोव की पत्नी लूश्का का दवीदोव के प्रति व्यवहार अत्यत मृदु था, पर इसके बावजूद, मकार के साथ उस दिन सयोगवश हुई बातचीत के बाद से जब उसने बताया कि उसकी पत्नी की तिमोफेई नकटे से यारी है, वह लूश्का के प्रति अपनी उपेक्षा को नही छिपा पाता था। उनके घर

मे अपनी अस्थायी उपस्थिति उसे बहुत बोझिल लगती। सवेरे दवीदोव कुछ बोले बिना अकसर लूश्का को कनखियो से देखता। देखने मे उसकी आयु पच्चीस से अधिक नही लगती थी। उसके लम्बोतरे कपोल घनी चित्तियो से ढके थे, उसका चितकबरा चेहरा कौवे के अडे जैसा लगता था। पर उसकी काली-काली आखो मे, उसकी दुबली सुडौल काया मे कोई ऐसी चीज थी जो उसको मोहक बनाती थी। उसकी धनुषाकर स्नेहमय भौहे हमेशा कुछ-कुछ उठी रहती, जैसे कि वह सदा किसी खुशखबरी के इतजार मे रहती हो। उसके चमकीले होठो के कोनो मे हमेशा मुस्कान की झलक रहती। वह अपने ढलवा कधो को इस तरह हिलाती हुई चलती थी मानो कोई बम अभी पीछे से उसके दुबले कधो को अपनी बाहो मे भर लेगा। वह ग्रेम्याची की बाकी कज्जाक औरतो जैसे ही कपडे पहनती पर शायद कुछ ज्यादा साफ-सुथरी रहती थी।

एक बार सुबह सवेरे जूते पहनते समय दवीदोव को पर्दे के पीछे से मकार की आवाज सुनायी दी

"मेरे कोट की जेब मे गेटिस है। तुमने कहा था सेम्योन से लाने का ' कल वह कस्बे से लौटा था तुम्हे देने को कह रहा था।"

सच, मकार प्यारे?" लूश्का की उनीदी चहक सुनायी पडी

वह शमीज मे ही पलग से कूदकर कील पर टगे पति के कोट के पास गयी, जेब से उसने जाघ पर पहननेवाले रबड के छल्ले नही बल्कि पेटीवाली असली गेटिस निकाली जैसी शहर की औरते पहनती है। शीशे मे वह दवीदोव को दिखायी दे रही थी। वह खडी हुई, अपनी सुडौल टाग पर गेटिस को पहना, और पतली गरदन को तानकर देखने लगी। दवीदोव को शीशे मे उसकी खुशी से चमकती आखे, चित्तीदार गालो पर हल्की-सी लाली नजर आ रही थी। टाग पर लम्बी काली जुराब चढाकर वह शीशे की ओर मुडी, उनकी आखे चार हुई, शमीज की काट मे उसके सावले तने स्तन कापे। लूश्का ने पर्दे के ऊपर से दवीदोव की ओर देखा और धीरे से बाये हाथ से कालर को ढक लिया, पर उसने मुह नही फेरा आखे मिचमिचाकर वह मुस्करा दी। "देख ले, कितनी सुदर हू मै!" उसकी बेहया आखे कह रही थी।

दवीदोव धम्म से सदूक पर बैठ गया, उसका चेहरा शर्म से लाल

हो गया, माथे से अपनी काली लट को हटाते हुए उसने सोचा "धत्त तेरे की! यह तो सोच बैठेगी कि मैं चोरी से देख रहा था क्यों खड़ा हो गया मैं, सोच बैठेगी कि मुझे उसमें रुचि है "

"अरी तू पराये आदमी के सामने तो नंगी मत घूम," दवीदोव का लजाकर खखारते सुनकर मकार असन्तोष के साथ बड़बड़ाया।

"उसे नहीं दिखायी दे रहा।"

"नहीं, दिखायी दे रहा है।"

दवीदोव पर्दे के पीछे से खाँसा।

"दिखायी दे रहा है तो देखने दो जी भरकर," वह उदासीनता के साथ लहंगा पहनते हुए बोली। "मकार प्यारे, पराये-वराये कुछ नहीं होते। आज पराया है और चाहूं तो कल ही मेरा हो जायेगा," वह हंसकर बोली और दौड़कर पलंग पर कूद गयी। "तुम भी कितने भोले हो, बछड़े की तरह।"

* * *

नाश्ते के बाद घर से बाहर निकलते ही दवीदोव बोला

'तेरी लुगाई दो कौड़ी की है!

"तेरा इसमें कोई वास्ता नहीं नागुल्नोव ने दवीदोव की ओर देखे बिना धीमे स्वर में उत्तर दिया।

'पर तेरा तो इससे वास्ता है! आज ही मैं घर बदल रहा हूं, देखकर मेरा जी मिचलाता है! तू ऐसा बांका जवान है, पर उसके साथ सख्ती से पेश नहीं आ सकता। खुद ही तो बता रहा था कि उसकी लुकटे से यारी है।"

"तो क्या पीटूं उसे?"

"पीट नहीं पर असर डाल! साफ-साफ कहता हूं मैं कम्युनिस्ट हूं, पर ऐसी बातें नहीं सह सकता, मैं तो उसे पीटकर घर से निकाल देता! वह तुझे लोगों के सामने बदनाम कर रही है और तू चुप है। रात-रात भर वह कहां गायब रहती है? जब हम देर रात सभा से लौटते हैं वह घर पर नहीं होती। मैं तुम्हारे अंदरूनी मामले में दखल नहीं दे रहा "

"तुम शादी-शुदा हो?"

"नही। तुम्हारे परिवार को देखकर तो जिंदगी भर शादी नही करूगा।"

"तुम औरत को सपत्ति की तरह देखते हो।"

"भाड मे जा तू। अराजकतावादी कही का! रट लगा दी सपत्ति की। वह तो अभी भी है? तू उसे क्यो रद्द कर रहा है? परिवार तो है? और तू... तेरी लुगाई के साथ... अनाचार फैला रहा है, सहिष्णुता दिखा रहा है। मै पार्टी इकाई मे यह सवाल उठाऊगा! तुझे तो किसान को उदाहरण दिखाना चाहिये। बहुत बढिया उदाहरण दिखायेगा!"

"ठीक है, मै मार डालूगा उसे!"

"जय हो!"

"अच्छा, तुम ऐसा करो... अभी इस मामले मे दखल मत दो," सडक के बीचोबीच रुककर मकार ने अनुरोध किया। "मै खुद कोई रास्ता ढूढ लूगा, अभी इसके लिये समय नही। अगर कल शुरू हुआ होता तो बात दूसरी थी पर मै तो इसका आदी हो गया... कुछ रुककर देखूगा... दिल भी अभी उससे जुडा हुआ है... नही तो कभी का... अच्छा, तुम किधर जा रहे हो? सोवियत मे?" उसने बात बदली।

"नही, ओस्त्रोव्नोव के पास जाना चाहता हू। उसके घर मे बैठकर बात करना चाहता हू। वह अक्लमद आदमी है। मै उसे प्रबधक बनाना चाहता हू। तुम्हारा क्या विचार है? ऐसे आदमी की जरूरत है कि पाई-पाई का हिसाब रखे। लगता है ओस्त्रोव्नोव ऐसा ही आदमी है।"

नागुल्नोव बौखलाकर बोला:

"फिर वही किस्सा! तुम्हारा और अन्द्रेई का तो इस ओस्त्रोव्नोव ने दिमाग खराब कर दिया! सामूहिक फार्म को उसकी उतनी ही जरूरत है जितनी बैलगाडी को तीसरे पहिये की। मै इसके खिलाफ हू। मै उसे सामूहिक फार्म से निकलवाकर रहूगा! दो साल तक इस अमीर हरामी ने अतिरिक्त कृषि कर चुकाया, लडाई से पहले कुलक था और हम अब उसकी सिफारिश करे?"

"वह सभ्य किसान है! तुम सोचते हो कि मै कुलक की हिमायत कर रहा हू?"

"अगर उमके पर न काटे होते तो कब का कुलको के साथ गुटर-गू कर रहा होता!"

वे बात को पूरी किये बिना एक-दूमरे मे रुष्ट होकर अपने-अपने रास्ते चले गये।

१४

फरवरी का महीना चल रहा था

ठड से खेत-जमीन अकडे पडे थे। सूर्य पाले की मफेद धुध मे उगता। जहा हवाओ ने बर्फ उडाकर जमीन को उघाड दिया था गत को कडककर दगरे पडती। म्तेपी मे टीले पके तरबूजो की तरह बल खाती दरारो मे ढके थे। गाव के बाहर खेतो मे बर्फ के ढेर धूप मे तीखे चमकते थे। नदी के तट पर पाप्लर वृक्षो पर मानो चादी मढी हुई थी। घरो की चिमनियो मे मनेरे पेडो के तनो की तरह नारगी धुआ उठता। और खलिहानो मे पाले के कारण गेहू की पुआल मे सुनहरे अगस्त, लू की तपिश और ग्रीष्म आकाश की सुगध फैलती।

ठडे बाडो मे बैल और गाये बेचैनी से गत गजारते। सुबह तक नादो म घाम का एक भी डठल न बचता। मर्दियो म पैदा हुए ममनो और बकरी के बच्चो को अब गत के ममय बाडो मे नही छोडा जाता। उनीदी औरते गत को उन्हे उनकी माओ के पाम ले जाती और फिर अपने लहगो के पल्लो मे लपेटकर घरो की घुटन भरी गर्मी मे ले आती। बकरी के बच्चो मे उनके घुघराले ऊन मे पाले की हवा, मूखी घाम, बकरी के मीठे दूध की मुगध फैलती। आधी रात को इतनी नीरवता छा जाती ठड आकाश मे बिखरे तारे ही टिमटिमाते— लगता कि जगत म कोई प्राणी ही न बचा।

रात को यदि नयी ब्याही घोडी अपने मखमली थनो मे दूध भरना महमूस करके हौले मे हिनहिनाती तो उसके हिनहिनाने की आवाज कई मील तक मुनायी देती।

फरवरी का महीना

पौ फटने मे पहले की नीलाभ नीरवता व्याप्त है।

आकाशगगा धूमिल पडती जा रही है।

घरो की काली खिडकियो मे आग की लालिमा दृष्टिगोचर होती अगीठिया जल रही है।

पनघट पर मब्बल की चोट से बर्फ झनझनाती है।

फरवरी का महीना।

* * *

याकोव लुकीच ने पौ फटने से पहले ही बेटे और औरतो को जगा दिया। उन्होने अगीठी जलायी। याकोव लुकीच के बेटे सेम्योन ने छुरियो पर धार चढायी। येसाऊल पोलोवत्सेव ने ऊनी मोजो पर कसकर पायतावे बाधे और नमदे के बूट पहने। सेम्योन के साथ वह भेडो के बाडे मे गया। याकोव लुकीच के पास सत्रह भेडे और दो बकरिया थी। सेम्योन को मालूम था कि कौनसी भेड ग्याभन है और किसके मेमने हो चुके है। वह टटोल-टटोलकर खस्सी भेडो, मेढो और जवान भेडो को चुनता और कोठरी मे धकेल देता। पोलोवत्सेव सफेद झबरीली टोपी को माथे पर झुकाकर मेढे के सर्पिल सीग पकडता और उसे जमीन पर पटककर उसका सिर उठाता और छुरे से गला काट देता, खून की काली धारा फूट पडती।

याकोव लुकीच चालाक आदमी था। वह नही चाहता था कि किसी फैक्टरी की कैटीन मे कोई मजदूर या लाल सेना का सिपाही उसकी भेडो का मास खाकर मोटा हो। वे सोवियत है और सोवियत सत्ता ने तो दस साल मे तरह-तरह के कर और टैक्स लगाकर याकोव लुकीच का बुरा ही किया, उसे अमीर नही बनने दे रही, उसे अपनी पाचो उगलिया घी मे डुबोने नही दे रही। सोवियत सत्ता उसकी जानी दुश्मन है। और याकोव लुकीच सोवियत सत्ता का। याकोव लुकीच जिदगी भर धन-दौलत पाने को ललकता रहा था ठीक उसी तरह जैसे कोई बच्चा आग को छूने को। क्राति से पहले वह मालदार होने लगा था, बेटे को वह नोवोचेर्कास्क के कैडेट कालेज मे भरती कराने की सोच रहा था, कोल्हू मशीन खरीदने की सोच रहा था, कुछ पैसे जोड भी लिये थे, तीनेक नौकरो को रखने की सोच रहा था (तब भावी सुख-समृद्धिपूर्ण जीवन के बारे मे सोचकर तो वह कितना पुलकित हो जाता था!), वह व्यापार शुरू करके घाटे मे चल रहे जमीदार–

फौजी अफसर झोरोव मे उसकी बेकार पडी चक्की खरीदने की सोच रहा था दिन-रात सपनो मे याकोव लुकीच अपने को खद्दर की पतलून मे नही बल्कि टसर के सूट मे, पेट पर लटकी सोने की चेन के साथ देखता, वह अपने फटे-रूखे हाथ नही बल्कि मुलायम गोरे हाथ देखता जिन पर से केचुली की तरह मैल से काले नाखून उतर गये। बेटा कर्नल बन जाता और अमीर घराने की पढी-लिखी लडकी से शादी कर लेता और एक दिन ऐसा आता कि याकोव लुकीच स्टेशन पर उन्हे लिवाने के लिये छकडे मे नही बल्कि अपनी कार मे जाता, वैसी ही, जैसी जमीदार नोवोपावलोव के पास है उस अविस्मरणीय काल मे याकोव लुकीच ने क्या-क्या सपने नही देखे थे, जब जीवन इतना उज्ज्वल था, उसके हाथ मे करारे नोट की तरह इद्रधनषी आभा छिटक रहा था! क्राति ने सब कुछ झकझोर दिया याकोव लुकीच के पावो तले जमीन खिसक गयी, पर उसने होश नही गवाया। अपने ठडे दिमाग और चालाकी की बदौलत उसने आते तूफान को भाप लिया और इतनी जल्दी से कि पडोसियो और गाववालो को भनक तक न पडी अपना सारा माल किनारे लगा दिया सन् १९१६ मे खरीदा भाप का इजन बेच दिया हडिया मे दस-दस रूबल के सोने के तीस सिक्के और चमडे की थैली म चादी के सिक्के भरकर गाड दिये, फालतू ढोर बेच दिये और खेती कम कर दी। वह पूरी तरह तैयार था। क्राति, यद्ध और मोर्चे उसके सिर पर से ऐसे गुजर गये जैसी स्तेपी की आधी घास के ऊपर से झुकाने को तो झुका दिया पर तोडा या उखाडा नही। आधी मे तो बलूत और पाप्लर के पेड जड समेत उखड जाते है पर सरकडे नही, वे तो बस झुककर जमीन पर लेट जाते है और फिर तनकर सीधे खडे हो जाते हैं। पर याकोव लुकीच को तो 'खडे होने का मौका ही न मिला! इसीलिये तो वह सोवियत सत्ता के विरुद्ध है, इसीलिये वह खस्सी साड की तरह नीरस जिदगी जीता है। उसके लिये न सृजन का उल्लास है न जीवन की मादक खुशी। इसीलिये अब पोलोवत्सेव उसे पत्नी से भी प्रिय और बेटे से भी सगा है। अब या तो उसके साथ वही पुरानी चमकीली, नये करारे नोट की इद्रधनुषी आभावाली जिदगी लौटवायेगा या फिर यह वाली भी छोड देगा! इसीलिये तो याकोव लुकीच – ग्रेम्याची के सामूहिक फार्म के प्रबध-मडल का सदस्य, चौदह भेडो को हलाल

कर रहा था। "येसाऊल पोलोवत्सेव के पैरो के पास भाप छोडते खून को चाटते इस काले कुत्ते को इन भेडो का मास डालना तो इससे बेहतर है कि सामूहिक फार्म के रेवड मे मोटी होकर, मेमने जनकर वे इस बैरी सत्ता का पेट भरे!" याकोव लुकीच सोच रहा था। अक्लमद येसाऊल पोलोवत्सेव ठीक ही कहता था 'ढोरो को काटना चाहिये! बोल्शेविको के पाव तले जमीन खिसका देनी चाहिये। बैलो को तो मरने दो बिना देखभाल के, बैल तो हम जुटा लेगे जब सत्ता छीनेगे! बैल तो हमारे लिये अमरीका और स्वीडन मे भेजे जायेगे। भुखमरी, तबाही और विद्रोह की मदद से हम बोल्शेविको का गला घोट देगे! और घोडों का दुख न करो, याकोव लुकीच! यह अच्छा ही है कि सारे घोडे समाज के हो गये। इससे हमी को फायदा है जब विद्रोह करेगे और गावो पर कब्जा करेगे हमे आम अस्तबलो मे घोडे लेने म सुविधा होगी, घर-घर जाकर नही खोजना पडेगा।' एक-एक शब्द खालिस सोने का है! येसाऊल पोलोवत्सेव का दिमाग भी उतना ही फुर्तीला है जितना कि उसके हाथ "

याकोव लुकीच कोठरी के पास खडा पोलोवत्सेव और सेम्योन को छत की बल्ली मे टगे धडो की खाल उतारते देख रहा था। लालटेन के प्रकाश मे मास के लोथडे चमक रहे थे। वे दोनो बडी फुर्ती से खाल उतार रहे थे। बिना सिर के उलटी लटकी भेड को, नाद के पास भेड के काले कटे सिर को देखकर याकोव लुकीच सिहर गया, उसके घुटने कापने लगे।

भेड की चमकती पीली पुतली मे मौत के भय की छाप थी। उसे देखकर याकोव लुकीच को खोप्रोव की बीवी, उसकी लडखडाती भयकर फुसफुसाहट याद आ गयी "रिश्तेदार! प्यारे! किसलिये?" याकोव लुकीच ने घिन के साथ भेड की बैगनी-गुलाबी लोथ की ओर देखा। तब की तरह खून की तीखी गध से उसका जी मिचलाया, पैर लडखडाये और वह तेजी से कोठरी से निकल गया।

'हे भगवान, मास तक नही देख पाता! गध तक नही सह पाता!'

"तू आया क्यो था? तेरे बिना भी कर लेगे, लिजलिजे!" पोलोवत्सेव खून मे सनी, भेड की चर्बी की दुर्गंध छोडती उगलियो से सिगरेट लपेटते हुए मुस्कराकर बोला।

नाश्ते तक ले-देकर उन्होने काम पूरा कर लिया। औरतो ने दुबो

को पिघला कर चर्बी निकाल ली। पोलोवत्सेव अपने कमरे मे बद हो गया (दिन भर वह वहा से नही निकलता था)। उसे भेड के मास के साथ बदगोभी का ताजा शोरबा दिया गया, याकोव लुकीच के बेटे की बहू उसके कमरे से खाली कटोरा लायी ही थी कि अहाते का फाटक खटका।

"पिता जी! दवीदोव हमारे यहा आ रहा है," सेम्योन चिल्लाया। सबसे पहले उसी ने दवीदोव को अहाते मे घुसते देखा।

याकोव लुकीच के चेहरे का रग उड गया। और दवीदोव ड्योढी पर झाडू से बूटो की बर्फ झाडकर जोर से खासता हुआ, रौब के साथ कदम रखता हुआ आ रहा था।

"मारा गया मै!" याकोव लुकीच सोच रहा था। "देखो तो कुतिया की औलाद को, कैसे चलता है! मानो पूरी दुनिया का मालिक हो! मानो अपने घर मे घूम रहा हो! अरे मारा गया मै तो! शायद निकीता के लिये गिरफ्तार करने आया है हरामी, लग गया पता।"

दरवाजा खटका और तीखी पतली-सी आवाज सुनायी दी

'आ सकता हू अदर?'

'आइये, आइये," याकोव लुकीच जोर से बोलना चाहता था पर उसके मुह से फुसफुसाहट ही निकली।

दवीदोव ने कुछ रुककर दरवाजा खोला। मेज पर बैठा याकोव लुकीच नही उठा (उठ नही सकता था! उसने कापते पैर तक फर्श से उठा लिये ताकि जूतो की एडियो की ठक-ठक न सुनायी दे)।

"नमस्ते मालिक!"

'नमस्ते कामरेड!' याकोव लुकीच और उसकी पत्नी समवेत स्वर मे बोले।

"बाहर तेज पाला पड रहा है "

'हा, पाला पड रहा है।"

"तुम्हारा क्या खयाल है, रई की फसल तो नही मारी जायेगी?" दवीदोव ने जेब मे हाथ डालकर राख की तरह मैला रूमाल निकाला और उससे नाक साफ की।

"आइये, कामरेड, बैठिये," याकोव लुकीच बोला।

"बडा अजीब है, डर क्यो गया?" मालिक का फक चेहरा, कापते होठो को देखकर दवीदोव ने आश्चर्य के साथ सोचा।

"हा, तो रई की फसल का क्या होगा?"

"नही-नही, कुछ नही होगा बर्फ ने अच्छी तरह ढक दिया है वही शायद कुछ जम जाये, जहा हवा से बर्फ उड गयी।"

"अनाज से बात शुरू कर रहा है और अभी शायद कहेगा 'चलो बाधो अपनी पोटली!' किसी ने कही पोलोवत्सेव की खबर तो नही कर दी? तलाशी लेगा क्या?" याकोव लुकीच सोच रहा था। धीरे-धीरे उसने अपने भय को काबू मे कर लिया, चेहरा तमतमाकर लाल हो गया, रोमो मे से पसीना फूटकर माथे पर ढुलकता सफेद-सी मूछो, दाढी से ढकी ठोडी को तर कर रहा था।

"आइये-आइये, बैठक मे चलिये।"

"मै तुम्हारे साथ कुछ सलाह-मशविरा करने आया था। तुम्हारा पूरा नाम क्या है?"

"याकोव, लुका का बेटा।"

"मतलब, याकोव लुकीच? हा तो, याकोव लुकीच, तुम सामूहिक फार्म के बारे मे सभा मे बहुत अच्छा बोले थे। बेशक, तुम ठीक ही कहते हो कि सामूहिक फार्म को जटिल मशीनो की भी जरूरत है। पर श्रम के गठन के मामले मे तुम गलती पर हो, फैक्ट! तुम्हे फार्म का प्रबधक बनाने की सोच रहे है। मुझे बताया गया है कि तुम अच्छे किसान हो "

"अरे आप अदर तो आइये कामरेड प्यारे! गाशा सामोवार चढा दे। आप कुछ शोरबा तो चख लीजिये? या नमकीन तरबूज काट दू? आइये-आइये अदर तो आइये, हमारे प्यारे मेहमान! नये जीवन की ओर हमे ले " याकोव लुकीच खुशी से नाच उठा, मानो किसी ने दिल पर पडा पत्थर हटा दिया हो। "विज्ञान का सहारा लेकर खेती करता था, आपने ठीक ही कहा अनपढ बाप-दादाओ के जमाने से चली आ रही रीत को बदलना चाहता था देखो तो कैसे जोतने है! यह तो धरती की लूट है! मुझे कृषि विभाग का प्रशस्ति-पत्र मिला है। सेम्योन! जरा सार्टिफिकेट तो लाना, वह जो फ्रेम मे जडा है। अच्छा रहने दे, हम वही जा रहे है।"

याकोव लुकीच मेहमान को अदर के कमरे मे ले जाने लगा और नजर बचाकर उसने सेम्योन को आख मारी। वह अर्थ भाप गया और पोलोवत्सेव के कमरे को बद करने के लिये गलियारे मे निकला। पर

जब वह पोलोवत्सेव के कमरे मे झाका तो उसके रोगटे खडे हो गये कमरा खाली था। सेम्योन बडेवाले कमरे मे गया। पोलोवत्सेव सिर्फ ऊनी मोज़ों में उस कमरे के दरवाजे के पास खडा था जहां दवीदोव और याकोव लुकीच बाते कर रहे थे। उसने इशारे से सेम्योन को वहा से जाने को कहा और हिंस्र पशु की तरह खडा अपना कान किवाड पर टिका दिया। "बिलकुल नही डरता, शैतान का बच्चा!" वहा से जाते हुए सेम्योन ने सोचा।

सर्दियो में ओस्त्रोव्नोव के घर के बडेवाले कमरे मे कोई नही रहता। रगे फर्श पर हर साल वे सन के बीज फैला देते थे। दरवाजे के पास सेब के अचार का लकडी का पीपा रखा था। पोलोवत्सेव पीपे के किनारे पर बैठ गया। उसे बातचीत का एक-एक शब्द सुनायी दे रहा था। तुषार से ढकी खिडकियो से हल्की-सी गुलाबी रोशनी छनकर अदर आ रही थी। पोलोवत्सेव के पैर ठिठुर रहे थे पर वह बिना हिले-डुले, किवाड के पीछे से जानी दुश्मन की फटी आवाज को कसक भरी घृणा के साथ सुन रहा था। "सभाओ मे भौक-भौककर कुत्ते की आवाज फट गयी! मै तुझे काश, अगर अभी इसका वक्त होता!" पोलोवत्सेव कसकर भिची मुट्ठियो को छाती से चिपकाये सोच रहा था।

किवाड के पीछे से सुनायी दे रहा था

"हमारे फार्म के नेता जी, मै तो यही कहूगा कि अब पुराने ढग से खेती करने मे कोई तुक नही। रई को ही लीजिये। क्यो उसे पाला मार देता है, देम्यातीना से अगर बीस पूद भी मिल जाये तो गनीमत है, कुछ तो बीज की भी भरपाई नही कर पाते? पर मेरे खेत मे इतनी घनी फसल होती है कि तुम चल नही सकते बालियो के बीच। अपनी घोडी पर बैठकर जाता हू और बालिया काठी से भी ऊची होती है। और बालिया भी हथेली से चौडी होती है। यह सब इसलिये कि मै बर्फ को उडने नही देता हू, जमीन की प्यास बुझाता हू। कुछेक नागरिक ऐसे है कि सूरजमुखी की फसल जड के पास से काटते है, इस लालच में कि डठल ईधन के काम आयेगे। उन हरामियो को गर्मियो में उपले बनाने का वक्त नही मिलता, पैदायशी आलसी जो है, वे यह नही सोचते कि अगर सूरजमुखी के फूल ही काटे जाये तो डठल बर्फ को रोके रहेगे, हवा उनके बीच से बर्फ को उडाकर नही ले जा पायेगी। बसत मे ऐसी जमीन पतझड मे सबसे गहरी

जुताईवाली जमीन से भी बेहतर होती है। अगर बर्फ को नही रोकोगे खेत मे, तो वह बेकार पिघल जायेगी, उसके पानी मे न आदमी को फायदा होगा न ज़मीन को।"

"हा, तुमने बिलकुल ठीक कहा।"

"कामरेड दवीदोव, मेरी पालनहार सोवियत सत्ता ने यू ही मुझे प्रशस्ति-पत्र तो नही दिया! मै तो सब समझता हू। वैसे तो कृषिशास्त्री भी हमेशा सही नहीं होते, पर उनके ज्ञान में बहुत-सी सही बाते भी है। उदाहरण के लिये ले, मै कृषि की पत्रिका मगवाता था, उसमे एक ऐसे खूब पढे-लिखे आदमी ने, जो छात्रो को पढाते है, लिखा था कि रई पाले मे नही मारी जाती बल्कि इसलिये कि वह जमीन जो बर्फ मे ढकी नही होती फटने लगती है और बालियो की जडो को काट देती है।"

"अच्छा! मैंने नही सुना था इसके बारे मे।"

"उसने ठीक ही लिखा है। मै उससे सहमत हू। जाच करने के लिये मैंने खुद प्रयोग किया था। खोदकर देखा कि सचमुच ही बीज से फूटी पतली-पतली जडे कटी हुई है। बीज को पानी नही मिलता और वह मर जाता है। अगर आदमी की नसे काट दो तो वह भला जी पायेगा? बीज का भी यही हाल होगा।"

"हा, याकोव लुकीच, तुम बिलकुल ठीक कहते हो। बर्फ को बचाकर रखना चाहिये खेतो मे। तुम मुझे ये कृषि पत्रिकाये पढने के लिये दे दो।"

"तुझे कोई फायदा नही होगा! वक्त नही मिलेगा उसका। तेरी जिदगी के गिने-चुने दिन बचे है!" मुस्कराकर पोलोवत्सेव मन ही मन बोला।

"और पतझड मे जुते खेतो मे बर्फ कैसे रोकी जाये? आडो की जरूरत है। मैने टहनियो से बनी आडे बनाने की तरकीब ढूढ निकाली है बीहडो का कुछ करना चाहिये नही तो वे हर साल एक हजार देस्यातीना से ज्यादा जमीन काट देते है।"

"यह तो सब ठीक है, पर तुम मुझे यह बताओ कि ढोरो के लिये बाडो को गर्म कैसे बनाये, ताकि लागत भी ज्यादा न आये और काम चगा हो, क्यो?"

"बाडो को? यह तो हम कर डालेगे! लुगाइयो को टहनियो

के बाड़ों पर मिट्टी लेपने को कह देंगे, यह हुआ एक तरीक़ा। अगर नही तो दोहरी बाड़ों के बीच ऊपर तक सूखा गोबर भर सकते है..."

"ठीक... अच्छा यह बताओ की बीजों की सफ़ाई कैसे करेंगे?"

पोलोवत्सेव पीपे पर आराम से बैठना चाहता था पर भारी ढक्कन उसके नीचे से खिसककर बड़े शोर के साथ गिर पड़ा। पोलोवत्सेव दात पीसकर रह गया जब दवीदोव ने पूछा·

"क्या गिरा?"

"शायद किसी ने कुछ गिरा दिया। सर्दियो में हम उस कमरे में नही रहते, गर्म करने के लिये बहुत ईधन की ज़रूरत पड़ती है . मैं आपको उम्दा क़िस्म की सन के बीज दिखाना चाहता हू। बाहर से मंगवाये है। उसी कमरे में रखे हैं। चलिये।"

पोलोवत्सेव उछलकर गलियारे में घुस गया, किवाड नही चरमराया क्योंकि पहले से ही उसके क़ब्ज़ो में हंस की चर्बी लगी थी, इसलिये पोलोवत्सेव चुपचाप वहां से चला गया...

दवीदोव बग़ल में पत्रिकाओं का पुलिंदा दबाये याकोव लुकीच के घर से निकला। वह उसके साथ हुई बातचीत से संतुष्ट था और उसे अब पूरा विश्वास हो गया कि ओस्त्रोव्नोव बडे काम का आदमी है। "ऐसे लोगो की मदद से तो साल भर में गांव की काया पलटी जा सकती है! अक्लमंद आदमी है, काफी पढ़ा-लिखा है। खेतीबाडी और ज़मीन की कितनी समझ है इसे! अपने काम का माहिर है! न जाने क्यो सकार को इससे चिढ है। बेशक, सामूहिक फार्म को ऐसे आदमी से फायदा बडा होगा!" ग्राम सोवियत की ओर जाते हुए वह सोच रहा था।

१५

याकोव लुकीच की देखा-देखी ग्रेम्याची में हर रात ढोर काटे जाने लगे। अधेरा छाते ही इधर-उधर से किसी भेड़ की दबी में ऽऽ, किसी सूअर का चीत्कार या बछड़े का क्रंदन भरा रंभाना सन्नाटे को भेदता सुनायी पड़ता। सभी काट रहे थे, सामूहिक फ़ार्म में शामिल होनेवाले भी और अपनी अलग से खेती करनेवाले किसान भी। बैलों,

भेडो, सूअरो, गायो तक को काट रहे थे। वे नमलदार ढोरो को भी काट रहे थे दो रातो मे ग्रेम्याची के ढोरो की सख्या आधी हो गयी। गाव भर के कुत्ते छीछडे छक रहे थे, भडारगृह और तहखाने मास मे ठसाठस भर गये। दो दिन मे सहकारी सस्था की दुकान मे डेढ साल से पडा कोई दो सौ पूद नमक बिक गया। "काट डालो, अब हमारे नही है।", "काटो, हर हालत मे कसाईखाने मे भेज देगे।", "काटो, सामूहिक फार्म मे तो मास का स्वाद ही भूल जाओगे।" इस प्रकार की अफवाहे फैलने लगी। और लोग अपने पशुओ को काट रहे थे, ठूस-ठूसकर खा रहे थे। छोटे-बडे, बूढे और जवान, सबके पेट दुख रहे थे। खाने के समय घर-घर मे मेजो पर उबले और भुने मास का ढेर होता। हरेक के होठ चिकनाई मे सने होते, हरेक ऐसे डकारे लेता मानो तेरहवी के भोज मे लौटा हो। ऐसी पेट पूजा मे हरेक की आखो मे खुमार छाया रहता।

बुड्ढा श्चुकार भी पीछे न रहा, उसने अपनी एक साल की बछिया हलाल कर डाली। बुड्ढा-बुढिया दोनो मिलकर उसे छत की कडी मे टागना चाहते थे ताकि खाल उतारने मे आसानी रहे, पर उनकी सभी कोशिशे बेकार गयी (खा-खाकर मोटी बछिया बहुत भारी जो हो गयी थी!), बछिया की लोथ उठाने के कारण बुढिया की कमर मे चिनक तक आ गयी और पूरे हफ्ते तक उसे झाड-फूक करनेवाली से कमर पर लोहे का देग चढवाना पडा। अगले दिन बुड्ढे श्चुकार को खुद खाना बनाना पडा, और या तो बुढिया की बीमारी की चिता के कारण या लालच के कारण, जो भी हो, वह दोपहर के खाने मे इतना अधिक उबला मास खा गया कि तब से कुछ दिनो तक घर मे घुसा ही नही, टाट की पतलून के बटन बद करने की नौबत ही नही आयी, कडकती ठड मे वह दिन-रात चौबीस घटे घर के पिछवाड़े मे सूरजमुखी के खेत मे गायब रहता। उन दिनो उसके टूटे-फूटे झोपडे के सामने से गुजरनेवाला कोई भी आदमी यह दृश्य देख सकता था पिछवाडे मे सूरजमुखी के डठलो के बीच मे बुड्ढे की टोपी एक ही स्थान पर जड दृष्टिगोचर होती, फिर अचानक बुड्ढा श्चुकार खेत से प्रकट होता और गली की ओर देखे बिना आडे-सीधे डग भरता दोनो हाथो से खुली पतलून को थामे झोपडे की ओर चल पडता। बडी मुश्किल से पैर घसीटता वह फाटक तक पहुचता और अचानक, मानो उसे

कोई फ़ौरी काम याद आया हो, मुडता और सरपट दौडता सूरजमुखी के खेत में घुस जाता। और फिर से सूरजमुखी के डठलो के बीच बुड्ढे की जड टोपी दिखायी देती। ठड तो कडाके की पड रही थी। और तेज हवा बुड्ढे को बर्फ की दीवार से घेर रही थी

दूसरे दिन शाम ही को रजम्योत्नोव को पता चला कि ढोर को व्यापक पैमाने पर काटा जा रहा है और वह दौडा-दौडा दवीदोव के पास आया।

"क्यो, बैठे हो?"

"पढ रहा हू।" दवीदोव ने छोटी-सी पीली पुस्तिका का पृष्ठ पलटा और किसी सोच मे डूबे मुस्कराया। "यह ऐसी किताब है कि कुछ पूछो नही!" टूटे दातवाला मुह खोलकर वह हस पडा।

"नावल पढ रहे हो! या प्रेम की कवितायें। और पता है गाव मे क्या "

'पागल हो तुम भी! कैसे नावल, कैसी कवितायें?!" दवीदोव ने हसते हुए अद्रेई को अपने सामने स्टूल पर बिठाया और उसके हाथों में पुस्तिका थमा दी। 'अरे यह तो रोस्तोव के पार्टी कार्यकर्ताओं के सम्मेलन में अद्रेयेव का भाषण है। भइया, इसके सामने तो दस नावल भी कुछ नही! सच कहता हू! पढना शुरू किया तो खाने की सुध ही न रही। अब तो शायद ठडा हो गया होगा।" दवीदोव के सावले-से चेहरे पर खीज की परछाई पडी। वह उठा और अपनी छोटी पतलून की जेबो मे हाथ ठूसकर रसोई की ओर चल पडा।

'तुम मेरी भी बात सुनोगे?" झुझलाकर रजम्योत्नोव ने पूछा।

"क्यो नही? जरूर सुनूगा। अभी आता हू।"

दवीदोव रसोई से बदगोभी के ठड शोरबे से भरी कूडी लाया। उसने रोटी का बडा टुकडा तोडकर मुह मे डाला और उसे चबाते हुए अपनी थकी, स्लेटी आखो से रजम्योत्नोव को टुकुर-टुकुर ताकने लगा। ठडे शोरबे की सतह पर वसा के नारगी चकत्ते जम गये थे, लाल मिर्च का तैरता टुकडा लपट की तरह चमक रहा था।

"मास के साथ है शोरबा?" अद्रेई ने कूडी की ओर उगली से इशारा करते हुए व्यग्यपूर्ण लहजे मे प्रश्न किया।

दवीदोव ने खीसे निपोडकर 'हा' मे सिर हिलाया।

"कहा से आया मास?"

"पता नही। क्यो क्या हुआ?"

"हुआ यह कि गाव मे आधे मवेशी काटे जा चुके है।"

"किसने काटे?" दवीदोव ने रोटी के टुकडे को हाथ मे उठाकर पलटा और फिर रखकर एक तरफ सरका दिया।

"शैतानो ने!" रजम्योत्नोव के माथे पर घाव का निशान लाल हो गया। "सामूहिक फार्म के अध्यक्ष कहलाते हो! विराट फार्म बनाना चाहते हो! तुम्हारे ही किसान काट रहे है, और कौन काटेगा? अलग खेती करनेवाले भी! सब पागल हो गये है! अधाधुध काटे जा रहे है, बैलो तक को काट रहे है!"

"तुम्हारी भी क्या आदत है ऐसे चिल्लाते हो जैसे सभा मे बोल रहे हो" शोरबा खाते हुए दवीदोव रुष्ट होकर बोला। "तुम मुझे शात होकर, सब्र से बताओ कि कौन काट रहा है और क्यो काट रहा है।"

"मुझे कैसे मालूम कि क्यो काट रहे है?"

"तुम हमेशा ऐसे ही चीख-चिल्लाकर बोलते हो। आखे बद करके लगता है कि वही सन् सत्रह का प्यारा समय लौट आया।"

"पूरी बात सुनकर तुम भी कम नही चिल्लाओगे!"

रजम्योत्नोव ने ढोरो की कटाई के बारे मे जो कुछ उसे मालूम था बताया। अत मे दवीदोव अनमने ढग से, बिना चबाये खाना निगल रहा था उसकी हसी काफूर हो गयी, आखो के पास झुर्रिया सिमटकर घनी हो गयी, देखते-देखते चेहरे पर बुढापा-सा छा गया।

'फौरन जाकर सभा बुलवाओ। नागूल्नोव को अच्छा रहने दो मै खुद उसके पास जाऊगा।'

"किसलिये बुलानी है?"

"क्यो किसलिये? ढोरो को काटने की मनाही कर देगे! सामूहिक फार्म से निकालकर मुकदमा चलायेगे। इसकी बेहद जरूरत है, फैक्ट! यह सब कुलको की कारस्तानी है! लो सिगरेट पियो और जाओ अरे हा, मै तो शेखी मारना ही भूल गया।"

दवीदोव के चेहरे पर हर्ष की मुस्कान दौड गयी, सख्ती से होठ सिकाडने पर भी वह अपनी खुशी को नही छिपा पा रहा था।

"मुझे आज लेनिनग्राद से पार्सल मिला है हा-हा साथियो ने भेजा है' उसने झुककर पलग के नीचे से पेटी निकाली और

खुशी से लाल होकर उसका ढक्कन उठाया।

पेटी मे सिगरेटो के पैकेट, बिस्कुट का डिब्बा, किताबे, लकडी का नक्काशीदार सिगरेट केस और न जाने क्या-क्या चीजे पुलिंदो और लिफाफो मे बेतरतीब पडी थी।

"साथी भूले नही मुझे, यह सब भेजा है यह भइया, हमारे लेनिनग्राद की सिगरेटे है। देखो चाकलेट तक भेजी है, मुझे क्या जरूरत है इसकी? किसी के बच्चो को दे दूगा। प्रमुख बात तो यह कि उन्होने मुझे भेजी है ये चीजे। ठीक है न? सबमे बडी बात तो यह है कि उन्होने मुझे याद किया, यह सब भेजा, चिट्ठी भी है "

दवीदोव का स्वर अस्वाभाविक रूप मे कोमल हो गया। कामरेड दवीदोव को अंद्रेई पहली बार इतना सुखी भावुक दीख रहा था। न जाने कैसे दवीदोव की मनोदशा रजम्योत्नोव पर भी हावी हो गयी। वह कुछ प्रिय बात कहना चाहता था पर उसके मुह से निकला

"चलो ठीक है। तुम बढिया आदमी हो, इसलिये शायद भेजा है। देखो तो माल एक-दो रूबल का नही है।"

"अरे बात इसमे थोडे ही है! तुम तो समझते हो, मै तो बिलकुल छडा हू न बीवी है, न ही कोई और है मेरा! पर देखो पार्सल आया है। कितनी मर्मस्पर्शी बात है चिट्ठी मे तो देखो कितने लोगो के हस्ताक्षर है।" दवीदोव एक हाथ मे सिगरेट बढा रहा था, उसके दूसरे हाथ मे हस्ताक्षरो से भरा पत्र था। हाथ उसके काप रहे थे।

रजम्योत्नोव ने लेनिनग्राद की सिगरेट सुलगाकर पूछा

"तुम अपने नये क्वार्टर मे तो खुश हो? मालकिन ठीक-ठाक है? कपडे धोने का कोई प्रबध किया? तुम या तो मेरी मा को दे दिया करो या फिर मालकिन से बात कर लो तुम्हारी कमीज तो मैल से इतनी चीकट है कि तलवार से भी न कटे और पसीने की भी ऐसी बू आती है जैसे किसी घोडे से।"

दवीदोव का चेहरा शर्म से लाल हो गया।

"हा, यह भी समस्या है नागूल्नोव के यहा इतना अच्छा नही लगता था सीने-धोने का काम जैसे-तैसे खुद कर लेता था। हा, यह सच है कि जब से आया हू एक बार भी नही नहाया। कमीज भी यहा की दुकान मे साबुन नही मिला, मालकिन से कहा था पर वह बोली 'साबुन लाओ'। साथियो को लिख दूगा कि कपडे

धोने का साबुन भेज दे। और मकान यह ठीक ही है, बच्चे-वच्चे नही है इसलिये आराम से पढाई-वढाई की जा सकती है।"

"ठीक है, तुम मेरी मा को दे जाना, वह धो देगी। तुम बिलकुल भी सकोच मे मत पडना। वह बहुत दयालु है।"

"अरे चिता मत करो, कोई जुगाड बिठा लूगा, शुक्रिया। हा, सामूहिक फार्म के लिये हम्माम जरूर बनाना चाहिये, सच कहता हू। बना डालेगे, फैक्ट! अच्छा, जाओ सभा का प्रबध करो।"

रजम्योत्नोव सिगरेट पीकर चला गया। दवीदोव ने पेटी मे यू ही पैकेट-पुलिदे उलटे-पलटे, अपनी कमीज का मैला कालर ठीक किया, काले बालो पर हाथ फेरा और ओवरकोट पहनने लगा।

रास्ते मे वह नागुल्नोव के यहा गया। उसने भौहे सिकोडकर नजरे मिलाये बिना दवीदोव का स्वागत किया।

"ढोर काट रहे है अपनी जायदाद का दुख हो रहा है। टुटपुजियो मे ऐसी खलबली मची हुई है कि कुछ पूछो मत।" अभिवादन करके वह बुदबुदाया। पत्नी की ओर पलटकर वह सख्ती से बोला "लुश्का, तू जा यहा से। कुछ देर मकान मालकिन के पास बैठ ले, तेरे सामने मै नही बोल सकता।"

लुश्का रसोई मे चली गयी, वह उदास लग रही थी। जिस दिन से कुलक परिवारो के साथ तिमोफेई नकटा चला गया था तब से वह कुम्हलायी-कुम्हलायी रहती थी। उसकी सूजी आखो के नीचे नीले-नीले गढ्ढे पड गये थे, नाक तक मुर्दो की तरह पैनी हो गयी थी। लगता था कि अपने प्रियतम के विछोह मे उसका दिल टूट गया। जब कुलक परिवार ध्रुवीय शीत क्षेत्र मे भेजे जा रहे थे वह खुलेआम बहयाई से दिन भर तिमोफेई की प्रतीक्षा मे बोरश्चोव के अहाते के पास मडराती रही। और शाम को जब कुलक परिवारो और उनके माल-असबाब से लदे छकडे ग्रेम्याची से रवाना हुए वह बर्फ पर ढहकर बिलख-बिलखकर रोने लगी। तिमोफेई छकडे से उतरकर उसकी ओर दौडने ही वाला था पर फ्रोल नकटे ने सख्ती से चिल्लाकर उसे रोक दिया। तिमोफेई घृणा और क्रोध के कारण अपने सफेद होठो को काटता हुआ मुड-मुडकर ग्रेम्याची की ओर देखता छकडे के पीछे-पीछे चला गया।

जिस तरह पाप्लर की झडी पत्तिया कर्णप्रिय खडखड नही करेगी

उसी तरह तिमोफेई के स्नेहपूर्ण शब्द सुनना अब लूश्का की किस्मत मे बदा नही। गुलाब के बिना तितली भला कैसे जियेगी! अब कौन उसकी आखो मे झाककर स्नेह के साथ कहेगा "लूश्का, आप इस हरे लहगे मे इतनी सुदर लगती है! इसमे तो आप पुराने जमाने के किसी अफसर की बीवी को भी मात देती है!" या फिर कौन उसे महिलाओ के गीत के इन शब्दो मे विदा किया करेगा "अलविदा मेरी सुदरिया। ले गयी दिल तेरी सुदरता।" सिर्फ तिमोफेई ही अपनी चापलूसी और बेहयाई से लूश्का के मन मे आग लगा सकता था।

उस दिन से वह पति के लिये बिलकुल परायी हो गयी थी। तब मकार शात स्वर मे, शब्दो को तौल-तौलकर बडी देर तक बोलता रहा

"चाहे तो कुछ दिन और रह ले मेरे यहा। फिर अपने फीते, गेटिस, क्रीम की शीशिया समेटकर मेरी नजरो से दूर हो जा। तुझसे प्रेम करके मै बहुत जग-हसाई सह चुका हू पर अब मेरा धीरज टूट गया! कुलक के बेटे से तूने यारी की, मै चुप रहा। पर अब जब तू उसके गम मे सामूहिक फार्म की सचेत जनता के सामने फूट-फूटकर रोयी – मै नही सह सकता! तेरे साथ तो विश्व क्राति का दिन देखना तो क्या नसीब होगा मै पहले ही पटरी से उतर जाऊगा। तू मेरे लिये फालतू बोझ की तरह है। मै उतारकर फेक रहा हू यह बोझ! समझी?"

"समझी," यह कहकर लूश्का चुप रह गयी।

उस शाम को दवीदोव और मकार के बीच खुलकर बात हुई।

"लुगाई ने भरे बाजार तुम्हारी नाक कटवा दी! नागूल्नोव, अब तुम कैसे सामूहिक फार्म के लोगो से नजरे मिलाओगे?"

"तुम फिर वही पुराना राग "

"तुम ठूठ हो! निरे उल्लू हो!" दवीदोव की गर्दन तमतमा गयी, माथे पर नसे फूल गयी।

"समझ मे नही आता, तुमसे बात कैसे करू?" नागूल्नोव कमरे मे चहलकदमी करते हुए बोला, उगलिया चटकाते हुए वह मद-मद चालाकी भरी मुस्कान के साथ कहने लगा "कुछ भी गलत बोलू तुम फौरन मुझ पर 'अराजकतावादी', 'विचलनवादी' का ठप्पा लगा देते हो। तुम्हे मालूम है कि मै इस लुगाई को किस नजरिये से देखता

हू और किमलिये मैने यह मब सहा ? तुमको बता तो चुका हू कि मै उमके बारे मे नही सोचता। तुमने कभी भेड की दुम के बारे मे मोचा है ?"

"न-नही " बातचीत के विषय मे इस आकस्मिक परिवर्तन मे चकित दवीदोव के मुह मे यही निकला।

"पर मैने इम विषय मे मोचा था, कि प्रकृति ने भेड को क्यो ऐसे भारी-भरकम चौडी दुम दी है। वैमे तो देखने मे बेकार लगती है। घोडे या कुत्ते तो अपनी दुम से मक्खिया उडाते है। पर भेड की दुम मे तो चार मेर चर्बी होती है, उमे थुल-थुल झुलाती चलती है, मक्खिया उडा सकती नही उममे, गर्मियो मे दुम मे गर्मी लगने के अलावा उमे और मिलना क्या है, ऊपर से गोखरू और चिपक जाते है "

"दुबो और दुमो का क्या वास्ता इमसे ?" दवीदोव को गुस्सा आने लगा।

पर नागूल्नोव कोई ध्यान दिये बिना आगे बोला

"मेरे ख्याल से लाज ढापने के लिये होती है उसकी दुम। आराम-देह तो नही है पर कोई चारा भी नही है उमके लिये। और मुझे भी लुगाई की, मतलब पत्नी की वैसे ही जरूरत है जैसे भेड को अपनी दुम की। मै तो विश्व क्राति की आस मे जीता हू। मै उसकी अपनी प्रिया की तरह बाट जोह रहा हू और लुगाई तो मेरे लिये कुछ नही बस ऐसे ही है। उसके बिना भी नही रहा जा मकता, लाज भी तो ढापनी होती है। मर्द मै बाका हू, चाहे बीमार ही मही पर कभी-कभी तो उस काम भी आ ही मकता हू। अगर टाग उठाना मेरी लुगाई की कमजोरी है तो जाये भाड मे! मैने उसमे माफ-साफ कह दिया था 'अगर तेरा जी मचलता है तो जा, पर एक बात याद रखियो, अगर दामन मे कुछ लायी या कोई बीमारी लगी तो गर्दन मरोड दूगा!' और तुम कामरेड दवीदोव यह मब ममझते नही। तुम तो लोहे की छड की तरह हो। और क्राति का भी तुम ठीक-ठीक अर्थ नही ममझते क्यो तुम बिना बात लुगाई का दोष मेरे सिर मढते हो ? और तो मब ठीक है पर हमारे वर्गीय दुश्मन के साथ यारी और उसके गम मे गला फाडकर रोने के लिये इस नागिन, इस बिच्छू को घर से निकाल दूगा। पर पीट मै उसे नही सकता। मै नये जीवन मे कदम रख रहा हू इस-

लिये अपने हाथ नही गदे करना चाहता। पर तुम होते तो शायद पीट देते, क्यो? पर तब तुम कम्युनिस्ट और पुराने ज़माने के किसी बाबू के बीच क्या फर्क रह जाता? वे तो हमेशा अपनी पत्नियो को पीटते थे। यही तो असलियत है! नही, भइया, तुम लूश्का के बारे मे मुझसे बात करना छोड दो। मै खुद निबट लूगा, इस मामले मे तुम फालतू हो। लुगाई का मामला बडा गभीर है! उस पर बहुत कुछ निर्भर करता है।" नागूल्नोव किसी सोच मे डूबा मुस्कराया और जोश के साथ आगे बोलने लगा "जब सारी सीमाए मिटा देगे, मै ही सबसे पहले जोर-जोर से चिल्लाकर कहूगा 'जरओ, दूसरी जातियो मे शादी करो!' सब घुल-मिल जायेगे और धरती पर गोरे, काले, पीले नही रहेगे, तब गोरे अपने को कालो से ऊचा नही कह सकेगे क्योकि सब एक जैसे गेहुए रग के होगे। कभी-कभी रात को मै इसके बारे मे भी सोचता हू "

"मकार, तुम तो सपनो की दुनिया मे रहते हो!" दवीदोव झुझलाकर बोला। "मै तुम्हारी बहुत-सी बाते समझ नही पाता। नसली भेदभाव को तो मै समझता हू पर बाकी सब रहन-सहन के प्रश्नो मे मै तुमसे सहमत नही हू। भाड मे जाओ! बस अब मै तुम्हारे यहा नही रहूगा। फैक्ट!"

दवीदोव ने मेज के नीचे से अपना सूटकेस निकाला (उसमे बेकार पडे औजार खडखडाये) और चल पडा। नागूल्नोव उसे सामूहिक फार्म के नि सतान किसान फिलिमानोव के यहा छोड आया जहा दवीदोव के रहने का प्रबध किया गया था। तब सारे रास्ते वे बोवाई के बारे मे ही बाते करते रहे, रहन-सहन और परिवार के प्रश्नो की चर्चा उन्होने फिर कभी नही की। तब से उनके सबधो मे और अधिक ठडक आ गयी।

इस बार भी नागूल्नोव ने नजरे मिलाये बिना दवीदोव का स्वागत किया पर जब लूश्का बाहर चली गयी वह कुछ सजीव होकर बोला

"ढोरो को काट रहे है, हरामी! चाहे सड जाये पर सामूहिक फार्म को न देना पडे। मै तो यह सुझाव दूगा कि आज ही सभा मे, ढोरो को काटनेवालो को गोली मारने की सिफारिश दी जाये।"

"क्या कहा?"

"कह रहा हू, गोली मार दो! कौन यह सजा दे सकता है?

लोक न्यायालय तो नही दे सकता, क्यो? ग्याभन गायो को काटनेवाले एक-दो को उतार देते मौत के घाट तो बाकी सब ठडे हो जाते! अब तो पूरी सख्ती से काम लेना चाहिये।"

दवीदोव सदूक पर टोपी पटककर कमरे मे चहलकदमी करने लगा। उसके स्वर मे असतोष का पुट था

"तुम फिर हद से ज्यादा तुम्हारे साथ तो मुसीबत है, मकार! अरे तुम खुद सोचो भला ढोर को काटने के लिये मौत की सजा दी जा सकती है? ऐसे कानून भी नही है। केन्द्रीय कार्यकारिणी और मत्री-परिषद की आज्ञप्ति निकली थी, उसमे भी इस विषय मे साफ-साफ कहा गया है दो साल की कैद, जमीन जब्त की जा सकती है, बार-बार ऐसा करनेवालो को निर्वासित किया जा सकता है और तुम कहते हो कि मृत्यु-दड की अपील करनी चाहिये। सचमच तुम भी अजीब ही हो "

"कोई अजीब-वजीब नही हू! तुम बस अपनी नाप-तौल मे व्यस्त हो। पर खेत कैसे जोतोगे? किस से जोतोगे अगर सामूहिक फार्म मे शामिल होनेवाले बैलो को काट देगे?"

मकार ने दवीदोव के पास आकर उसके चौडे कधो पर हाथ रखे, वह दवीदोव से एक सिर लम्बा था ऊपर से उसकी आखो मे झाककर वह बोला

"सेम्योन प्यारे! तुम्हारा दिमाग क्यो सुस्त है?" और लगभग चिल्ला पडा "अरे फसल नही बो पाये तो हम मारे जायेगे! तुम समझते नही? ढोर-डगर काटने के लिये दो-तीन को जरूर गोली मार देनी चाहिये! कुलको को मारनी चाहिये! उन्ही की करतूत है! ऊपरवालो से अनुरोध करना चाहिये!"

"तुम तो उल्लू हो!"

"मै फिर निरा उल्लू रह गया " नागूल्नोव ने सिर झुकाया और फिर उसे झटके मे सीधा करके चिल्लान लगा "सब कुछ काटेगे! गृह-युद्ध की तरह ही मोर्चा सभालने का वक्त आया है, चारो ओर स दुश्मन चढाई कर रहा है, और तुम! तुम जैसे लोग विश्व क्रांति का सत्यानाश कर दोगे! तुम जैसे बुद्धुओ की वजह से वह नही आ पायेगी! वहा सब तरफ पूजीवादी मजदूरो का खून चूस रहे है, लाल चीनियो की चटनी बना रहे है, काले लोगो पर जुल्म ढा रहे

हैं और तुम यहां दुश्मनों से लल्लो-चप्पो करते हो! शर्म की बात है! बड़ी शर्म की बात है! अपने उन सगे भाइयों के बारे में सोचकर कलेजा फटता है जिन पर विदेशों में पूंजीवादी जुल्म के पहाड़ ढा रहे हैं। इसी वजह से मैं अख़बार नही पढ़ पाता!.. अख़बार पढ़कर मेरा कलेजा मुंह को आ जाता है! और तुम... तुम अपने सगे भाइयों का ऐसे ख़याल रखते हो जो हमारे दुश्मनों की जेलों में सड़ रहे हैं! तुम्हें उन पर बिलकुल भी तरस नही आता!.."

दवीदोव ने ज़ोर से नाक सुड़की और अपने चिकने, काले बालों में उंगलियां फेरकर बोला:

"भाड़ मे जाओ तुम! कैसे तरस नही आता? फ़ैक्ट! और कृपा करके तुम चिल्लाओ मत! ख़ुद पगले हो और दूसरों को भी पगला बनाने पर उतारू हो! क्या युद्ध में मैंने लूश्का के सुंदर नयनों की ख़ातिर प्रतिक्रांतिकारियों का सफ़ाया किया था? तुम क्या कहना चाहते हो? होश मे आओ! गोली मारने की बात तक नही हो सकती! बेहतर तो यही होता कि तुम प्रचार का काम करते, हमारी नीति समझाते, और गोली मारना तो कोई मुश्किल काम नही है! तुम हमेशा इसी तरह की बाते किया करते हो! ज़रा-सी बात पर तुम बिदक जाते हो। अब तक तुम क्या कर रहे थे?"

"वही, जो तुम कर रहे थे!"

"यही तो बात है! हम ने इस अभियान में ढील दे दी और अब ग़लती ठीक करने के लिये काम करना चाहिये न कि गोली मारने की बाते! छोड़ दो तुम हिस्टीरिया करना! काम करो! लुगाई कहीं का! नेल पालिश से रंगे नाख़ूनोंवाली लुगाई से भी बदतर हो!"

"मेरे ख़ून में रंगे है!"

"सभी के ऐसे है जिन्होंने बिना दस्ताने पहने लड़ाई लड़ी थी!"

"सेम्योन, तुम कैसे मुझे लुगाई कह सकते हो?"

"बस यूं ही कह दिया।"

"तुम अपनी बात वापस लो," नागूल्नोव ने शात स्वर में अनुरोध किया।

दवीदोव ने उसकी ओर देखा और हंसकर बोला:

"अच्छा ले लेता हूं वापस। तुम शांत हो जाओ और चलो सभा में। ढोरों को काटने के ख़िलाफ़ ज़बरदस्त प्रचार करना चाहिये!"

"कल दिन भर मै घर-घर जाकर लोगो को समझाता रहा।"

"यह तो अच्छी बात है। हम सबको एक बार फिर जाना चाहिये घर-घर।"

"तुम फिर वही बात कल बाहर निकलते हुए सोचना कि मैंने उन्हे मना लिया, समझा लिया, पर जैसे ही बाहर निकलना किसी कटते सुअर की चे-चे सुनायी पडती। और मै तो थोडी देर पहले ही उस हरामी सपत्ति प्रेमी को एक घटे मे विश्व क्राति और कम्युनिज्म के बारे मे समझा रहा था! और कैसे बोल रहा था! खुद का दिल पसीज जाता, आखो मे आसू आ जाते। नही, उन्हे मनाने का कोई फायदा नही, पीट-पीटकर उसे सिखाना चाहिये 'कुलक के बहकावे मे मत आ, हरामी! उसकी तरह जायदाद मे मोह मत कर! हरामजादे ढोर-डगर को मत काट!' वह तो सोचता है कि बैल ही को हलाल कर रहा है, पर वास्तव मे तो वह विश्व क्राति की पीठ मे छुरा भोक रहा है!"

"किसी को पीटना चाहिये, किसी को सिखाना,' दवीदोव ने फिर अपना रवैया दोहराया।

वे अहाते मे निकले। गीली बर्फ की आधी चल रही थी। बर्फ के चिपचिपे गाले छतो पर गिरकर पिघल रहे थे, पुरानी मैली बर्फ का ढक रहे थे। घुप्प अधेरे मे वे स्कूल पहुचे। सभा मे केवल आधे निवासी जमा हुए थे। रजम्योत्नोव ने 'विद्वेषपूर्ण पशुवध के विरुद्ध सघर्ष के उपायो' के बारे मे केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति और मत्री परिषद की आज्ञप्ति पढकर सुनायी। फिर दवीदोव ने भाषण किया। अत मे उसने साफ-साफ यह सवाल उठाया

"नागरिको, हमारे पास सामूहिक फार्म मे भरती के लिये छब्बीस प्रार्थना-पत्र है। कल सभा मे उन पर गौर करेगे, और जिन लोगो न कुलको के फुसलावे मे आकर फार्म मे भरती होने मे पहले मवेशी काट दिये उनको हम भरती नही करेगे!"

"और सामूहिक फार्म मे शामिल हो चुके लोग अगर अपने जवान मवेशी काटेगे तो?" ल्युबीश्किन ने पूछा।

"उनको निकाल देगे!"

सभा मे खलबली मच गयी।

"तो कर दो बद फार्म! गाव मे एक भी घर ऐसा नही जहा

मवेशी न काटे गये हों!" बोश्चोंव चिल्लाकर बोला।

नागूल्नोव मुट्ठी भीचकर उस पर चढ़ गया:

"कुलक के चमचे तू चुप रह! तू फ़ार्म के मामलो मे अड़ंगा मत डाल, तेरी मदद नही चाहिये हमें! क्या तूने खुद तीन साल का बैल नही काटा?"

"अपने ढोरो का मैं खुद मालिक हू।"

"देख लेना, कल मैं तुझे जेल भिजवा दूंगा, वही दिखाना अपना मालिकाना।"

"यह तो बहुत ज्यादती है! बहुत ही ज़्यादा सख़्त कानून है!" कोई फटे स्वर मे चिल्लाया।

सभा मे हालांकि लोग कम थे पर फिर भी वह खूब गर्मागर्म रही। गांववाले चुपचाप स्कूल की इमारत से बाहर निकले और झुड बनाकर चलते हुए आपस मे विचार-विमर्श करने लगे।

"न जाने क्यों मैंने दो भेडे काट डाली?!" सामूहिक किसान सेम्योन कुझेन्कोव ल्युबीश्किन मे शिकायत कर रहा था। "निकाल लो तुम अब यह मास मेरे गले मे हाथ डालकर "

"अरे लडके, मै खुद तुम से बेहतर नही हू, बकरी काट डाली " ल्युबीश्किन ने उसास छोडकर कहा। "अब सभा के सामने नज़रे गडाकर खडे होना पड़ेगा। अरे इस लुगाई की वजह से हुआ यह सब! पाप मे ढकेल दिया, उसकी दुम मे खटखटा! रट लगा दी 'काट दो, काट दो।' मास खाने को जी कर आया उसका! लुगाई के भेस मे असली शैतान है! अभी घर पहुचते ही ऐसी धुनाई करूगा उसकी।"

"हा-हां, उसे सबक सिखाना चाहिये," ल्युबीश्किन के रिश्ते-दार – बूढ़े अकीम बेसख़्लेबनोव ने सलाह दी। "तुझे तो सचमुच ऐसी बात नही करनी चाहिये थी, तू तो सामूहिक फ़ार्म का सदस्य है।"

"यही तो बात है," उसास छोडकर ल्युबीश्किन बोला, वह अधेरे में मूछो से बर्फ के गाले झाडता, उबड़-खाबड़ सड़क पर ठोकर खाता चल रहा था।

"और अकीम दादा, तुमने भी अपना चितकबरा बैल काट डाला?" बेसख़्लेबनोव के पडोसी द्योम्का उशाकोव ने खांसकर पूछा।

"हां, बेटे, काट दिया। कोई चारा भी नही था। बैल टांग तोड़

बैठा। शैतान उसे ले गया तहखाने की तरफ, उसमे गिरकर टाग तोड बैठा।

"पर मैंने तो तडके तुम्हे और तुम्हारी बहू को मटियो मे हाककर उसे तहखाने की ओर ले जाते देखा था "

"तुम क्या कह रहे हो? क्या कहते हो तुम द्योम्का! सोचो भी!" अकीम बूढा घबराकर अधेरी गली के बीचोबीच स्तब्ध खडा रह गया।

"अरे चलो, चलो दादा," द्योम्का ने उसे ढाढस बधाया। "क्यो खेत मे फसे हल की तरह खडे हो गये? बैल को तुम ही ने तहखाने के गड्ढे मे गिराया था "

'द्योम्का, वह खुद गिर पडा था! झूठ मत बोलो! झूठ बोलना पाप है!"

'तुम बडे चालाक हो, पर बैल मे ज्यादा नही। बैल तो जीभ से अपनी दुम की जड को चाट सकता, पर तुम्हारे तो शायद यह बस की बात नही, क्यो? सोचते थे कि बैल को घायल कर दूगा तब कोई मझे कुछ नही कह सकेगा, क्यो ठीक है न?"

तेज नम हवा चल रही थी। नदी के तट पर कुजो मे पाप्लर और विलो वृक्ष साय-साय कर रहे थे। गाव अधेरे की घनी चादर मे लिपटा था कि हाथ को हाथ नही सूझ रहा था। रात की नमी मे देर तक आवाजे गूजती रही थी। बर्फ बरस रही थी। जाडा अपनी बची-खुची सौगात बिखेर रहा था।

१६

सभा के बाद दवीदोव रजम्यांत्नोव के साथ जा रहा था। भारी हिमपात हो रहा था। अधेरे मे कही-कही कोई रोशनी टिमटिमा रही थी। हवा के झोके गाव मे भौकते कुत्तो की मनहूस आवाज फैला रहे थे। दवीदोव को बर्फ जमा करने के बारे म याकोव लुकीच की बात याद आ गयी, उसने उसास लेकर सोचा "नही, इस साल तो इसकी फुर्सत नही है। वैसे तो इस तरह की बर्फीली आधी से खेतो मे कितनी बर्फ जमा हो जाती! दुख होता है यह सोचकर!"

"चलो, अस्तबल मे चलकर फार्म के घोडे देख ले," रजम्योत्लोव ने सुझाव दिया।

"चलो।"

वे गली मे मुड गये। शीघ्र ही उन्हे रोशनी टिमटिमाती नजर आयी। लाप्शीनोव के खत्ते के पास, जहा अस्तबल बना दिया गया था, लालटेन लटकी थी। उन्होने अहाते मे प्रवेश किया। अस्तबल के दरवाजे के पास ओसारे तले कोई आठ-एक कज्जाक खडे थे।

"आज कौन है ड्यूटी पर?" रजम्योत्लोव ने पूछा।

उनमे से एक ने बूट के तलवे से मसलकर सिगरेट बुझाकर उत्तर दिया

"कोंद्रात माइदान्निकोव।"

"पर यहा भीड क्यो लगी हुई है? आप यहा क्या कर रहे है?" दवीदोव ने कौतूहलवश पूछा।

"बस ऐसे ही, कामरेड दवीदोव खडे है मिलकर सिगरेट पी रहे है।"

"शाम को खलिहान मे सूखी घास लाये थे।"

"काम के बाद सिगरेट पीने लगे और बतियाते-बतियाते देर हो गयी। बर्फीली आधी के रुकने का इतजार कर रहे हैं।"

थानो मे खडे घोडे जुगाली कर रहे थे। वहा घोडो के पसीने, लीद और मूत्र की बू और सूखी घास की गध व्याप्त थी। हर थान के सामने खूटो पर जुए, रास या लगामे टगी थी। बीच के रास्ते पर बुहारी लगी थी, और नदी की पीली बालू बुरकी हुई थी।

"माइदान्निकोव!" अद्रेइ ने आवाज दी।

"हा," अस्तबल के दूसरे सिर मे उत्तर सुनायी पडा।

माइदान्निकोव पुआल का गट्ठर उठाकर ला रहा था। वह दरवाजे से चौथे थान मे गया और पैर से ठोकर मारकर उसने वहा पसरे काले घोडे को उठाया और फर्श पर पुआल बिछा दी।

"थोडा परे हट! शैतान की दुम!" वह ऊघते घोडे पर गुस्से मे चिल्लाया।

घोडे ने घबराकर खुर पटके और फुफकारकर नाद पर झुक गया। कोंद्रात दवीदोव के पास आया, उसके बदन से अस्तबल और पुआल की घनी बू आ रही थी। उसने अपना रूखा ठडा हाथ बढाया।

"क्यो, क्या हाल-चाल है कामरेड माइदान्निकोव ?"

"ठीक ही है कामरेड सामूहिक फार्म के अध्यक्ष।"

"तुम तो बहुत ज्यादा औपचारिकता दिखा रहे हो," दवीदोव मुस्कराकर बोला।

"मै इस समय ड्यूटी पर जो हू।"

"इन लोगो ने यहा क्यो भीड लगा रखी है?"

"आप खुद ही पूछिये इनसे!" कोद्रात के स्वर मे झुझलाहट की झलक थी। "रात को, जब घोडो के लिये बिचाली डालने का वक्त होता है बस मुह उठाये चले आते है। लोग अपनी सपत्ति के मोह से छुटकारा नही पा सकते। ये सब घोडो के मालिक है। आकर पूछते है 'मेरे कुम्मैत के लिये बिछा दी पुआल?', 'और मेरे समद को?', 'मेरी घोडी तो ठीक से है न?' पर आप ही बताइये उसकी घोडी को होगा क्या? आ-आकर अनुरोध करते है 'लाओ मै चारा डालने मे मदद कर दू!' और हरेक अपने घोडे को ज्यादा घास डालने की ताक मे रहता है मुसीबत कर रखी है इन लोगो ने! ऐसा आदेश जारी करवा देना चाहिये कि यहा फालतू लोग न जमा हुआ करे।"

"सुना तुमने?" अद्रेई ने दवीदोव को आख मारकर सिर हिलाया।

"भगा दो सबको यहा से!" सख्ती के साथ दवीदोव ने आदेश दिया। "ताकि ड्यूटीवालो के अलावा यहा कोई न रहे! घास कितनी डालते हो? तौलकर डालते हो?"

"नही। नही तौलता। अदाज से आधा-आधा पूद के हिसाब से डालता हू।"

"बिचाली सबके लिये डालते हो?"

"अरे आप भी क्या कहते है!" कोद्रात ने टोपी झाडी, उसकी सावली गर्दन और पुराने अगरखे के कालर पर गेये झडे। "हमारा प्रबधक ओस्त्रोव्नोव, याकोव लुकीच जो है न आज शाम को आया था और बोला 'घोडो को जूठन की बिचाली बिछाया करो।' यह कहा की बात हुई? वह सबसे बढिया किसान माना जाता है और ऐसी बेवकूफी भरी बात कहता है।"

"तो क्या हुआ?"

"अरे दवीदोव, तुम समझते नही! जूठन भी तो चारा है। भेड-बकरिया सब खा डालेगी और वह कहता है बिचाली डाल घोडो को!

मै उससे कहनेवाला था पर वह बोला. 'तू कौन होता है मुझे सिखानेवाला!'"

"हा, जूठन मत बिछाना। ठीक है! कल हम उसकी दुम मरोड देगे!" दवीदोव ने उसे वचन दिया।

"हा, एक बात और है कुए के पासवाले ढेर मे क्यो घास देने लगे है। किसलिये वहा से ले रहे है, मै पूछता हू?"

"मुझे याकोव लुकीच ने बताया कि यह घास इतनी अच्छी नही है। वह खराब घास सर्दियो मे खिलाना चाहता है और बढियावाली जुताई के समय।"

"अगर यह बात है तो ठीक है," कोद्रात ने सहमति व्यक्त की। "पर जूठन के बारे मे उसे जरूर कह दीजियेगा।"

"कह दूगा। अच्छा लो, लेनिनग्राद की सिगरेट पियो " दवीदोव खासकर बोला। "कारखाने के साथियो ने भेजी है घोडे तो सब ठीक है?"

"धन्यवाद। माचिस दीजिये घोडे सब ठीक है। कल रात रहवाल चालवाले हमारे घोडे की, जो पहले लाप्शीनोव का था, तबीयत कुछ गिरी गिरी थी, ठीक से देख-भाल नही हुई थी उसकी। पर बाकी सब ठीक है। एक और शैतान की दुम, लेटता नही, कहते है रात-रात भर खडा रहता है। कल अगली टागो मे नयी नाले जडेगे। फिसलन बहुत थी, बर्फ ने नाले घिस डाली। अच्छा, अब मै चलता हू। अभी सबके लिये बिचाली नहीं बिछायी है।"

रजम्योत्नोव दवीदोव को घर तक छोडने के लिये साथ चल पडा। बाते करते-करते वे उस गली तक पहुच गये जहा दवीदोव ने मकान किराये पर ले रखा था। पर मोड पर अद्रेई निजी खेती करनेवाले किसान लूका चेबाकोव के अहाते के सामने रुक गया, दवीदोव का कधा छूकर वह फुसफुसाया

"देखो!"

फाटक के पास, तीन कदम की दूरी पर किसी आदमी की काली आकृति खडी थी। रजम्योत्नोव ने दौडकर फाटक के पीछे खडे व्यक्ति को बाये हाथ मे पकड लिया और दाये मे रिवाल्वर कसकर पकड लिया।

"लूका, तुम हो?"

"अरे यह आप है, अद्रेई स्तेपानोविच?"

"तुम्हारे दाये हाथ मे क्या है? लाओ इधर दो! जल्दी से दो!"

"अरे यह आप है? कामरेड रजम्योत्नोव!"

"कह रहा हू दे दो! मार दूगा! "

दवीदोव अधेरे मे आखे मिचमिचाता आवाजो की ओर बढा।

"तुम क्या माग रहे हो उसमे?"

"दे दो, लुका! गोली मार दूगा नही तो!"

"अरे ले लीजिये, क्यो गुस्सा कर रहे है आप?'

"देखा क्या लेकर फाटक पर खडा था! तुम रात को छुरी लेकर क्या कर रहे थे? तुम किस की बाट जोह रहे थे? दवीदोव की तो नही? मै पूछता हू कि क्यो छुरी लिये खडे थे? हत्यारा बनने की इच्छा है क्या?"

सिर्फ अद्रेई की पैनी शिकारी आखे ही अधेरे मे फाटक के पास खडे व्यक्ति के हाथ मे छुरी की सफेद धार को देखने मे समर्थ थी। वही उसे निहत्था करने के लिये लपका। और निहत्था कर भी दिया। पर जब वह स्तब्ध खडे लुका से हाफते हुए पूछताछ करने लगा तो उसने फाटक खोलकर बदले-बदले स्वर मे कहा

"अगर आप बात को यह मोड दे रहे है तो मै चुप नही रह सकता। अद्रेई स्तेपानोविच आप सभी पर न जाने क्या शक कर बैठे! चलिये मेरे साथ।'

कहा?"

"कोठरी मे।"

"किसलिये?"

"आप चलकर देख लीजिये और आप सब समझ जायेगे कि क्यो मै छुरी लिये गली मे झाक रहा था "

"चलो देख लेते है,' दवीदोव ने लुका के अहाते मे घुसकर सुझाव दिया। "किधर जाना है?"

"आप मेरे पीछे-पीछे आइये।"

कोठरी मे, उपलो के बिखरे ढेर के पास तिपाई पर लालटेन जल रही थी, उसके पास लुका की सुदर, भरे चेहरेवाली पत्नी उकडू बैठी थी। पराये लोगो को देखकर वह सहमकर उठी, उसके पीछे दीवार के पास पानी से भरी दो बालटिया और चिलमची रखी थी। कोठरी के कोने मे पुआल की ताजी बिचाली पर खुर पटकता हट्टा-कट्टा सूअर

बडी नाद मे भरी जूठन को चपड-चपड खा रहा था।

"देखिये बात क्या है " सूअर की ओर इशारा करके लुका सहमे स्वर मे अटक-अटककर बोला। "चुपके मे सूअर को काटना चाहता था लुगाई उसे खिला रही है, मै उसे पटककर काटना ही चाहता था कि गली मे कुछ शोर-सा मुनायी पडा। मैने सोचा कि बाहर निकलकर देख आता हू, अगर किमी ने कुछ मुन लिया तो मुमीबत हो जायेगी। बम जैमे था – आम्तीने चढाये, पेशबद बाधे, हाथ मे छुरी लिये फाटक पर चला गया। और ये आप लोग वहा निकले! आपने मेरे बारे मे क्या सोच लिया? भला आदमी को मारने के लिये कोई आम्तीने चढाकर, पेशबद बाधकर जाता हे?" पेशबद उतारते हुए लुका के होठो पर झेपी-झेपी मुस्कान छा गयी और उमने दबे-दबे गुस्से मे पत्नी से चिल्लाकर कहा

"क्यो ठूठ की तरह खडी है? भगा सूअर को यहा मे "

"तुम इमे मत काटो," रजम्योत्नोव ने झेप भरे स्वर म कहा। "आज मभा हुई थी, ढोर काटने की मनाही कर दी गयी है।"

"अरे नही काटूगा। आपने मेरी इच्छा मार दी "

दवीदोव अपने घर तक अद्रेई की हमी उडाता रहा

"फार्म अध्यक्ष की हत्या का प्रयाम विफल कर दिया! प्रतिक्रा-न्तिकारी को निहत्था कर दिया! तीम मार खा कही का! हा-हा-हा! "

' कम मे कम मूअर की तो जान बचा दी " रजम्योत्नोव मजाक का जवाब मजाक मे द रहा था।

१७

अगले दिन ग्रेम्याची की पार्टी-इकाई की बद बैठक मे ग्रेम्याची के मामूहिक फार्म के मभी मदस्यो के छोटे-बडे मभी मवेशियो के मामूहिकीकरण का निर्णय लिया गया। मवेशी के अलावा मुर्गे-मुर्गियो, बत्तखो आदि का भी सामहिकीकरण करने का निर्णय लिया गया।

शुरू मे दवीदोव ने छोटे मवशी और पक्षियो के मामूहिकीकरण का कडा विरोध किया, पर नागूल्नोव ने दृढता मे कहा कि अगर मामू-

हिक किसानो की सभा मे सभी जानवरो के सामूहिकीकरण का फैसला नही लिया गया तो बसत की बोवाई नही हो पायेगी क्योंकि तब तक मुर्गे-मुर्गियो समेत सारे ढोर काट दिये जायेगे। रजम्योत्नोव ने उसका समर्थन किया और दवीदोव भी कुछ हिचकिचाकर सहमत हो गया।

इसके अलावा मवेशियो की निरकुश कटाई को रुकवाने के लिये कडा प्रचार अभियान छेडने का निर्णय भी लिया गया। इसके लिये पार्टी के सभी सदस्यो को उसी दिन घर-घर जाकर प्रचार करने का दायित्व अपने ऊपर लेना था। जहा तक मवेशी को काटनेवालो के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही का सवाल था तो फिलहाल किसी के खिलाफ यह न करने और प्रचार अभियान के परिणामो तक देखने का फैसला किया गया।

'अब ढोर-डगर वगैरह सुरक्षित रहेगे। नही तो बसत तक गाव मे एक भी बछडे की रभाहट और मुर्गे की बाग भी न सुनायी देगी." बैठक की कार्यवाही के नोटो को फाइल मे रखते हुए नागूल्नोव खुशी के साथ बोला।

सामूहिक फार्म की सभा ने मवेशियो के सामूहिकीकरण के निर्णय को सहर्ष स्वीकार कर लिया क्योंकि बैल-घोडो और दुधारू पशुओ का पहले से ही सामूहिकीकरण किया जा चुका था और यह निर्णय केवल बछडो, भेड-बकरियो और सूअरो से सबधित था पर मुर्गे-मुर्गियो के मामले पर गर्मागर्म बहस छिड गयी। विशेष रूप से औरते इसके विरुद्ध थी। अतत उनका प्रतिरोध भी तोड दिया गया। काफी हद तक इसमे नागूल्नोव का हाथ रहा। वही तो अपने पदक पर अपनी लबी-चौडी हथेलियो को रखकर बोला था

"मेरी प्यारी लुगाइयो! आप क्यो बिना बात मुर्गियो और बत्तखो की पूछ पकड रही है! अरे काठी मे नही टिक सकी तो भला दुम पर कहा टिक पाओगी! मुर्गियो को भी मिलकर रहने दो। बसत मे इकूबेटर मगवा लेगे और मुर्गियो के बजाये वह सैकडो अडो को सेकर चूजे देगा। हा-हा ऐसी मशीन होती है—इकूबेटर, वह बहुत बढिया चजे सेता है। कृपा करके आप लोग अपनी जिद छोड दे! मुर्गिया तो आप ही की होगी पर रहेगी आम दडबे मे। मुर्गिया किसी की जायदाद नही होनी चाहिये, मेरी प्यारी मौसियो! और मुर्गियो से आपको फायदा क्या ?! आजकल तो वे अडे देती नही। और बसत

मे उनमे आपको सिवाये परेशानी के कुछ नही मिलेगा। कभी वह, मतलब मुर्गी, सागबाडी मे घुसकर पनीरी खराब कर देगी, कभी ऐसे स्थान पर अडा दे देगी कि तुम्हे मिलेगा नही, कभी वह बीमारी से मर भी सकती है उसके साथ तो कुछ भी हो सकता है। और हर बार आप लोगो को दडबे मे घुसकर उन्हे टटोलकर देखना पडता है कि कौनसी अडा देगी और कौनसी बाझ है। दडबे मे तो मुर्गियो की जुए या कोई बीमारी आपको लग सकती है। उनके साथ तो बस परेशानी ही परेशानी देखनी पडती है। और सामूहिक फार्म मे वे कैसे रहेगी? बहुत मजे मे! देख-भाल उनकी अच्छी होगी, किसी रडुए बुड्ढे को, अरे दादा अकीम बेसख्लेबनोव को ही उनकी देख-रेख का काम सौप देगे, रेगने दो उसे दिन भर दडबे मे। काम बढिया और हल्का है, खास तौर से बुड्ढो के लिये। ऐसे काम से कभी नाल नही उतर सकती। मेरी प्यारियो, हो जाओ राजी।"

औरते हसकर, आहे भरकर कानाफूसी करके हो गयी राजी।

सभा के फौरन बाद नागूल्नोव और दवीदोव घर-घर का फेरा लगाने चल पडे। पहले ही टोले मे साफ हो गया कि हर घर मे मवेशी काटे गये दोपहर को वे बुड्ढे श्चुकार के यहा पहुचे।

"बडा सक्रिय आदमी है, खुद कहता था कि मवेशी को सभालकर रखना चाहिये। ऐसा आदमी कभी नही काटेगा," श्चुकार के अहाते मे घुसते हुए नागूल्नोव विश्वास के साथ बोला।

'सक्रिय आदमी' घुटने उठाकर पलग पर लेटा हुआ था। उसकी कमीज ससी दाढी तक उठी हुई थी और पतले पीले-से सफेद बालो से ढके पेट पर कोई छह-एक लीटर की गुजायशवाली हडिया औधी रखी थी। हडिया के दोनो ओर जोको की तरह दो लुटियाये चिपकी हुई थी। बुड्ढे श्चुकार ने दवीदोव और नागूल्नोव की ओर देखा तक नही। मुर्दे की तरह छाती पर रखे उसके हाथ काप रहे थे, दर्द की भयकर पीडा मे फटी आखो की पुतलिया धीरे-धीरे घूम रही थी। नागूल्नोव को लगा कि घर मे सचमुच ही मुर्दे जैसी दुर्गध भरी थी। श्चुकार की मोटी पत्नी अगीठी के पास खडी थी और पलग के पास चमगादड की तरह काली, फुर्तीली मामिचीखा दादी कुछ कर रही थी। वह आस-पास के पूरे इलाके मे नाल चढाने, हाथ-पाव के जोड बिठाने, खून रोकने का टोटका करने और बुनने की स्टील की सलाई

मे गर्भपात कराने के लिये प्रसिद्ध थी। वही इस समय बेचारे श्चुकार बुड्ढे को 'स्वास्थ्य-लाभ' करा रही थी।

अदर घुमते ही दवीदोव की आखे आश्चर्य मे फैल गयी।

"नमस्ते, बाबा! यह तुम्हारी तोद पर क्या है?"

"पे ऽऽ ट! दु ऽऽ ख रहा है!" बडी मुश्किल से बुड्ढे श्चुकार ने उत्तर दिया और पिल्ले की तरह रिरियाते हुए बोला "उ ऽऽ तार दे हडिया! उतार दे, चुडैल! ओह, मेरा पेट फाड देगी! ओफ, प्यारो, बचाओ मुझे!"

"सब्र कर! थोडा सब्र कर! अभी ठीक हो जायेगा," मामिचीखा पेट से कसकर चिपकी हडिया को हटाने का निष्फल प्रयास करते हुए फुसफुसाकर सात्वना दे रही थी।

पर श्चुकार बुड्ढा अचानक घायल हाथी की तरह चिघाडा और पैरो से ओझिन को धकेलकर उसने दोनो हाथो से हडिया को कसकर पकड लिया। तब दवीदोव झट से उसकी सहायता को आगे आया उसने पत्लैडी से बेलन उठाकर हडिया की औधी पेदी पर दे मारा। फूटी हडिया से सू करके हवा निकली श्चुकार बुड्ढे को गहरी हिचकी आयी और वह दर्द से छुटकारा पाकर जल्दी-जल्दी सास लेने लगा, लटियाये उतारने मे उसे कोई परेशानी नही हुई। फूटी हडिया के ठीकरो के बीच बुड्ढे की फूली नीली नाल को देखकर दवीदोव को हसी का दौरा पडा और वह बेच पर ढह गया। उसके गालो पर आसू बह रहे थे, टोपी गिर पडी और काले बालो की लटे आखो पर लटक गयी।

बुड्ढा श्चुकार भी जीवटवाला निकला! जैसे ही मामिचीखा दादी ने अपनी फटी हडिया का रोना शुरू किया वह कमीज को ठीक करके कूद उठा।

अरे नासपीटे ने मेरा बर्तन फोड दिया!" बुढिया सिर पीट-पीटकर स्यापा कर रही थी। 'तुम जैसो का इलाज करने मे फायदा क्या है!"

'रफूचक्कर हो जा बुढिया! फौरन सिर पर पाव रखकर भाग जा यहा से।" श्चुकार दरवाजे की ओर इशारा करके बोला। "तू तो मेरी जान लेने पर उतर आयी थी! तेरे सिर पर फोडनी चाहिये थी हडिया! छूमतर हो जा, नही तो तेरा खून कर बैठूगा! मै कुछ भी कर सकता हू!'

"कैसे हो गया तुम्हे यह?" धडाम से दरवाजा बद करके मामिचीखा के जाते ही नागूल्नोव ने पूछा।

"अरे बेटो, कुछ मत पूछो मरते-मरते बच गया। दो दिन से घर मे घुमा ही नही, अहाते मे पतलून पकडे घूमता रहा ऐसे जबर्दस्त दस्त लगे थे कि कुछ पूछो मत! मै तो ऐसे चू रहा था जैसे बरसात मे फूटा छप्पर, हर पल "

"मास ठूसा था?"

"मास "

"बछिया को काट डाला?"

"नही रही अब बछिया हजम नही हुई वह मुझे "

मकार ने नफरत के साथ बुड्ढे को देखा और दात भीचकर बोला

"तुझ बुड्ढे खूमट के पेट पर हडिया नही बल्कि मन भर का लोहे का देग चढाना चाहिये था! ताकि वह अतडियो समेत तुझे चूस लेता! जब तुझे फार्म मे निकाल देगे तब देखना कैसे दस्त लगेगे! तूने क्यो काटी?"

"मकार प्यारे, बस, मत मारो गयी बुढिया ने करवाया है यह तुम तो जानते हो कि रात की कोयल की कूक सबसे लबी होती है आप दया करो कामरेड दवीदोव! हम तो दोस्त थे, आप मुझे सामूहिक फार्म मे मत निकालो। मै तो अपनी सपत्ति के मोह की सजा भुगत चुका हू '

"अरे, इसके मुह लगने का क्या फायदा?" नागूल्नोव हाथ झाडकर बोला। 'दवीदोव, चलो। और तू बीमार की औलाद! बदूक के तेल मे नमक मिलाकर पी ले, झट मे ठीक हो जायेगा।"

बुड्ढा श्चुकार बुरा मान गया, कापते होठो मे वह बोला

"मजाक उडा रहा है मेरा?"

"सच कहता हू। पुरानी फौज मे हम पेट का ऐसे ही इलाज करते थे।"

"मै भला लोहे का हू? जिस चीज मे बेजान बदूक को साफ करते है, उसे मै भी पियू? नही पियूगा' चाहे सूरजमुखी के खेत मे मरना ही क्यो न पडे, पर बदूक का तेल नही पियूगा!"

अगले दिन मरने का नाम भूलकर बुड्ढा श्चुकार गाव मे मटरगश्ती कर रहा था। जो भी मिलता उसे वह बताता कि उसके पास दवीदोव

और नागूल्नोव आये थे, बोवाई मे पहले औजारो की मरम्मत और फार्म के दूसरे मामलो पर सलाह-मशविरा करने। अपनी दास्तान के अंत में बुड्ढा सिगरेट सुलगाकर कुछ देर चुप रहता और उसास लेकर कहता

"कुछ तबीयत ढीली हो गयी थी मेरी और वे दौडे-दौडे मुझे देखने आये। मेरे बिना उनका काम नही चलता। तरह-तरह की दवाए दे रहे थे। कहते थे 'दादा जी अपना इलाज ढग मे करवा लो, अगर तुम्हे कुछ हो गया तो तुम्हारे बिना हम कही के न रहेगे।' सचमुच, मेरे बिना वे क्या करेगे भगवान की कसम! बात-बात पर मुझे पार्टी इकाई में बुलवाते है, कुछ काम की सलाह लेने के लिये। तुम तो जानते ही हो मै बोलता कम हू पर जब बोलता हू तो पते की। मेरी बात अचूक होती है!" और वह सामने खडे व्यक्ति की ओर अपनी विजयपूर्ण आखे उठाकर यह भापने का प्रयास करता कि उसकी बात का सुननेवाले पर क्या असर हुआ।

१८

और ग्रेम्याची मे फिर खलबली मच गयी मवेशी काटना बद हो गया। पूरे दो दिन तक भेडो-बकरियो को हाककर, खीचकर, मुर्गियो को बोरियो मे भरकर सामूहिक बाडो और दडबो मे लाया जाता रहा। गाव भर मे पशु-पक्षियो की चिल्ल-पो गूज रही थी।

अब तक सामूहिक फार्म मे एक सौ साठ घराने शामिल हो गये थे। तीन टोलियो का गठन किया गया। सामूहिक फार्म के प्रबध-मडल ने याकोव लुकीच को आदेश दिया कि वह उन गरीबो को कुलको से जब्त किये गये कपडे-जूते आदि बाट दे जिनको उनकी जरूरत है। पहले से जरूरतमदो की सूची बनायी गयी। पता चला कि प्रबध-मडल सबकी आवश्यकताये पूरी करने मे असमर्थ है।

तीत के अहाते मे जहा याकोव लुकीच कुलको मे जब्त किये गये कपडे बाट रहा था रात तक लोगो की आवाजे गूजती रही। यही, भडार के पास बर्फ पर ही जूते उतारकर कुलको के बढिया बूट, जाकेटे, कोट ओवरकोट, ब्लाउज आदि पहनकर देखे जाते। वे सौभाग्यशाली

लोग जिनको आयोग ने अग्रिम भुगतान के रूप मे कपडे-लत्ते देने का फैसला किया था, वही भडार की ड्योढी पर अपने चिथडे उतारकर पोटली मे बाध लेते और खुशी से मुस्कराते हुए नये कपडे पहन लेते। और कोई चीज लेने से पहले क्या-क्या बाते होती, तरह-तरह की सलाहे दी जाती, तू-तू मै-मै होती दवीदोव ने ल्युबीश्किन को कोट, पतलून और बूट देने का आदेश दिया। नाक-भौ चढाकर याकोव लुकीच ने सदूक से कपडो का ढेर निकाला और ल्युबीश्किन के पावो पर पटक दिया ·

"मन-पसद चुन ले।"

भूतपूर्व गार्ड सैनिक ल्युबीश्किन की मूछे फडकी, हाथ काप उठे और कोट चुनने मे तो उसने खून-पसीना एक कर दिया। कभी कपडे को दात से खीचकर देखता, कभी रोशनी की ओर करके देखता कि कही कीडा तो नही लग गया, कभी दसेक मिनट तक कपडे को अपनी काली उगलियो मे ममलता रहता। बाकी लोग चिल्ल-पो मचा रहे थे

'ले-ले, तेरे बाद तेरे बच्चो के काम आयेगा।'

"अरे तेरे आखे भी है या नही! देखना नही पलटा हुआ है।

"बक-बक मत कर!"

"तू खुद क्यो नही ले लेता!"

"ले ले, पावेल!"

"नही ले, दूसरावाला पहन कर देख!"

ल्युबीश्किन का चेहरा ईट की तरह लाल हो गया। वह अपनी काली मूछ के सिरे को मुह मे डालकर चबाता, सहमी-सहमी नजर मे लोगो की ओर देखता और दूसरा कोट चुनने लगता। सभी तरह से बढिया कोट चुनता, अपनी लम्बी बाहे डालता आस्तीनो मे, पर वे कोहनियो तक ही आती, कधो पर सिलाई उखडने लगती। और फिर से झेपकर मुस्कराता और कपडो के ढेर को पलटने लगता। जैसे मेले मे ढेरो खिलौने देखकर बच्चे की आखे मचल जाती है वैसे ही उसका हाल था, होठो पर ऐसी भोली, बाल-सुलभ मुस्कान थी कि बस किसी को सात फुटे ल्युबीश्किन के सिर पर हाथ फेरने की कसर बाकी थी। दोपहर तक भी वह चुन न पाया। पतलून और बूट पहन लिये और हवा गटककर मुह चढे याकोव लुकीच से बोला

"अब कल आऊंगा अपने नाप का ढूंढ़ने।"

ल्युबीश्किन नयी पट्टीदार शलवारनुमा पतलून और चम्मगाते बूटों में वहां से निकला। उसकी उम्र एकदम दस साल कम लगने लगी। वह जान-बूझकर बड़ी सड़क की ओर मुड़ गया हालांकि उसका घर दूसरी तरफ़ था। रास्ते में अकसर रुक जाता, कभी सिगरेट पीने के लिये, तो कभी किसी से गप-शप के लिये। घर पहुंचने में उसने कोई तीन घंटे लगा दिये और शाम तक पूरे ग्रेम्याची में चर्चे फैल गये. "अरे ल्युबीश्किन को ऐसे कपड़े पहना दिये जैसे परेड में जा रहा हो। दिन भर कपड़े चुनता रहा... हर चीज़ उस पर नयी थी, पतलून तो त्योहारों पर पहने लायक़ है। मारस की चाल से जा रहा था, पाव तले ज़मीन महसूस नही कर रहा था।"

द्योम्का उशाकोव की बीवी तो संदूक के ऊपर झुककर स्तब्ध रह गयी, बड़ी मुश्किल से उसे वहां से हटाया गया। उसने चुन्नटदार ऊनी लहंगा पहना जो कभी तीन की लुगाई का था, पैरों में नयी जूतिया पहनी, सिर पर बेल-बूटेदार शाल ओढा, और सिर्फ़ तभी लोगों ने देखा. सिर्फ़ तभी उनका ध्यान इस ओर गया कि द्योम्का की बीवी का चेहरा बड़ा सलोना है, वह कितनी सुडौल औरत है। और वह बेचारी कैसे स्तब्ध न होती सदूक़ में भरी सामूहिक दौलत को देखकर, अपनी ज़िंदगी मे उस बेचारी को न कभी ढंग का खाने को, न कभी कोई नया कपड़ा पहनने को नसीब हुआ था? जब याकोव लूकीच ने संदूक से औरतों के कपड़ों का पूरा ढेर निकाला तो भला आधा पेट खाने. दुनिया भर की मुसीबते झेलने के कारण उसके बदरंग होंठ सफेद पड़े बिना रह सकते थे? वह एक के बाद एक बच्चे पैदा करती, उन्हें सड़े-गले पोतडों में, भेड़ की घिसी खाल में लपेटती रही थी। और खुद बेचारी, दु:ख और निरतर अभावो मे अपनी सुदरता, सेहत और ताज़गी खोकर गर्मियो में इकलौते छलनी बने लहंगे में घूमती थी, और सर्दियों में अपनी चिल्लड़ों से भरी इकलौती शमीज़ को धोकर बच्चो के साथ अलावघर पर नगी बैठती थी, क्योंकि पहनने को और कुछ न था।...

"प्यारो!.. मेरे प्यारो!.. ज़रा ठहरो, मै शायद यह लहंगा न भी लूं.. इसके बदले .. मुझे बच्चों के लिये कुछ... मीशा के लिये .. दून्या के लिये..." वह संदूक़ का ढक्कन कसकर पकड़े हुए

बुदबुदाये जा रही थी, आखे उसकी कपडो के रग-बिरगे ढेर पर गडी थी।

सयोगवश वहा आ निकले दवीदोव का दिल यह दृश्य देखकर पसीज गया वह भीड को चीरकर सदूक के पास गया और उससे पूछा

"तुम्हारे कितने बच्चे है?"

"सात " द्योम्का की पत्नी ने फुसफुसाकर उत्तर दिया, उसके मन मे कुछ ऐसी मधुर आशा उठी कि वह आखे उठाने की भी हिम्मत न कर पायी।

"तुम्हारे पास बच्चो के लिये कुछ है?" दवीदोव ने याकोव लुकीच से धीमे स्वर मे पूछा।

"है।"

"इस औरत को बच्चो के लिये जो यह मागे वह दे दो।"

"इतने ज्यादा से तो इसका पेट फट जायेगा!"

"यह क्या बदतमीजी है? निकालो? " दवीदोव ने गुस्से मे अपने टूटे दातोवाला मुह खोला और याकोव लुकीच झट से सदूक पर झुक गया।

द्योम्का उशाकोव जो आम तौर पर बातूनी और तीखी जबानवाला था अपनी पत्नी के पीछे खडा सास रोककर सूखे होठो पर जीभ फेर रहा था। पर दवीदोव के अतिम शब्द सुनकर उसने उसकी ओर नजर डाली और द्योम्का की भेगी आखो मे अचानक आसू फूट पडे, जैसे पके फल मे रस। वह बाये हाथ से भीड को चीरता और दाये हाथ मे आखो को ढककर भाग खडा हुआ। पैडी से कूदकर वह शर्म के मारे लोगो से अपने आसुओ को छिपाता हुआ वहा से चला गया। पर हथेली की काली ढाल के नीचे से ओस की बूदो की तरह निर्मल और चमकीले आसू गालो पर लुढके जा रहे थे।

शाम तक बुड्ढा श्चुकार भी आ धमका। वह सामूहिक फार्म के दफ्तर मे दौडा-दौडा आया और सीधा दवीदोव के पास गया

"नमस्ते, कामरेड दवीदोव! आपको सकुशल देखकर बडी खुशी हुई।"

"नमस्ते।"

"मुझे फारम दे दो!"

"कैसा फार्म?"

"कपडे पाने का फारम।"

"तुम्हे किस खुशी मे कपडे दे?" दवीदोव के पास बैठे नागूल्नोव ने अपनी भौहे तानकर पूछा। "इसलिये कि तुमने बछिया काट डाली?"

"मकार प्यारे, तुम्हे पता है कि पुरानी बात को याद करनेवाले का क्या होता है? तुम पूछते हो किसलिये? जब तीत को बेदखल कर रहे थे तो किसको कष्ट भोगना पडा? मुझे और कामरेड दवीदोव को। उनका तो सिर्फ सिर फोडा गया, यह तो मामूली-सी बात है पर कुत्ते ने भेड की खाल के मेरे ओवरकोट की क्या गत बनायी? ओवरकोट के चिथडे ही बचे है! मैने तो सोवियत सत्ता के लिये कष्ट उठाये और तुम कहते हो कुछ नही मिलना चाहिये मुझे। बेहतर तो यही होता कि तीत मेरा सिर फोड देता पर ओवरकोट न छेडता। ओवरकोट तो बुढिया का है या नही? अगर वह अपने ओवरकोट का रोना रो-रोकर मुझे कब्र मे धकेल दे, तब क्या होगा? हा-हा, बात तो यही है!"

भागे न होते तो कोट तुम्हारा साबूत होता।"

"कैसे नही भागा होता? तुमने सुना है मकार, कि तीत की चुडैल बीवी ने क्या करतूत की? उसने मुझ पर कुत्ता छोड दिया, शोर मचाने लगी हुश! पकड इसे! यही इनमे सबसे बुरा आदमी है!' कामरेड दवीदोव इसकी गवाही दे सकते है।"

"हालाकि तुम बुड्ढे हो, पर बकते हो खस्सी घोडे की तरह!

'कामरेड दवीदोव, आप ही गवाही दे दे!"

"पर मुझे तो ऐसा कुछ याद नही आता "

"ईसा मसीह की कसम! वह यही चिल्ला रही थी! मै बेशक, डर के मारे भाग खडा हुआ। वह कुत्ता अगर आम कुत्तो की तरह होता तो बात दूसरी थी पर वह तो पूरा शेर, अरे उससे भी खूख्वार था!"

"किसी ने तुम्हारे ऊपर कुत्ता नही छोडा था सब तुम्हारे मन की उपज है!"

"मकार, मेरे बहादुर, तुमको कैसे याद होगा! तुम तो खुद तब इतने डर गये थे कि तुम्हारे चेहरे पर हवाइया उड रही थी, तुम्हे भला कैसे याद होगा। तब मेरे मन मे खयाल आया था 'अभी

21–1152

मकार भागेगा सिर पर पाव रखकर।' और मुझे तो कुत्ते ने ऐसा घसीटा, ऐसा घसीटा कि मुझे अब तक एक-एक ब्योरा याद है! अगर कुत्ता बीच मे न आता तो तीत को मै जिदा न छोडता, भगवान की सौगध! मै बडा खतरनाक आदमी हू!"

नागूल्नोव ने ऐसा मुह बनाया मानो उसके दात मे दर्द हो और दवीदोव से बोला

"इसे चिट देकर, पिड छुडाओ।"

पर इस बार बुड्ढे श्चुकार का जी कुछ ज्यादा ही बतियाने को कर रहा था।

"मकार प्यारे! जवानी मे घूसेबाजी मे मेरा कोई सानी नही था "

"अच्छा ज्यादा मत बक-बक करो, बहुत सुन चुक है तुम्हारी गप्पे। तुम्हे पसेरी देग देने की चिट न लिख दे? नही तो पेट का कैसे इलाज करोगे?"

बुड्ढा श्चुकार बुरा मान गया उसने चिट ली और बिना कुछ कहे चला गया। पर याकोव लुकीच के हाथो से भेड की बढिया खाल का ढीला-ढाला कोट पाकर उसकी उत्तम मनोदशा बहाल हो गयी। उसकी आखो मे आनद और विजय की झलक थी। जैसे चुटकी से नमक लेते है वैसे ही वह लम्बे कोट के दामन को पकडता और उसे इस अदाज से ऊपर उठाता जैसे पानी के डबरे को पार करते समय औरते अपने लहगे को उठाती है। वह कज्जाको को चटकारे ले-लेकर बताता

"देखो, कैसा बढिया कोट है! खून-पसीना एक करके पाया है। सबको मालूम है कि जब हम तीत को बेदखल कर रहे थे, तो वह लोहे की छड लेकर कामरेड दवीदोव पर टूट पडा। मैने सोचा मारा गया मेरा दोस्त!' और झट से हीरो की तरह उसकी मदद को दौडा। अगर मै न होता तो समझो, दवीदोव का काम तमाम हो गया होता!"

"पर लोग तो कह रहे थे कि तुम कुत्ते से डर के भागे और गिर पडे और वह सूअर की तरह तुम्हारे कान नोचने लगा " उसकी बात सुननेवालो मे से कोई बोला।

'बकवास है यह! लोग भी कैसे है कि सच्चाई को कैसे तोड-

मरोड देने है! कुत्ता कहा से बीच मे आया? कुत्ता तो बेवकूफ और नीच जानवर है। वह कुछ समझता थोडे ही है " और बुड्ढा श्चुकार बडी कुशलता से बात बदल देता।

रात घिर आयी

१९

ग्रेम्याची से बहुत दूर, स्तेपी के टीलो, बीहडो, घाटियो, घने वनो के उस पार सोवियत सघ की राजधानी है। वह बिजली की रोशनी मे नहायी है। टिमटिमाती बत्तियो का नीलाभ प्रकाश ऊची-ऊची अट्टालिकाओ के ऊपर छाया हुआ है, चाद-तारे व्यर्थ ही चमक रहे है।

ग्रेम्याची मे डेढ हजार किलोमीटर दूर स्थित पत्थर से जडे मास्को मे रात को भी जीवन नही रुकता इजनो की मीटिया चिघाडती है, विशाल हार्मोनियम की तरह मोटरो के भोपू सरगम निकालते है, ट्रामे खडखड, टनटन करती है। और लेनिन समाधि के पीछे क्रेमलिन के प्राचीर के उस पार आलोकित आकाश की पृष्ठभूमि मे लाल ध्वज शीतल हवा मे फडफडाता है। सर्चलाइटो के नीचे मे पडते पुज मे वह दमकता है, बहते लाल रक्त की तरह चमकता है। ऊचाई पर हवा भवर की तरह घूमती है, पल भर को लटके ध्वज को फिर फड-फडाने लगती है, वह कभी पश्चिम की ओर मुडता है तो कभी पूरब की ओर, वह विद्रोहो की लाल ज्वाला की तरह दमकता है, सघर्ष का आह्वान करता है

दो साल पहले कोद्रात माइदान्निकोव जो उस समय मास्को मे सोवियतो के अखिल रूसी अधिवेशन मे भाग ले रहा था रात के समय लाल चौक पर गया था। लेनिन की समाधि और आकाश मे विजयपूर्वक फडफडाते लाल ध्वज को देखकर उसने झट मे अपनी टोपी उतार दी। नगे सिर, अगरखा खोले वह बडी देर तक एक ही स्थान पर मौन खडा रहा

ग्रेम्याची मे तो रात को मूक नीरवता छा जाती है। गाव के बाहर राजहस के परो की तरह कोमल ताजी बर्फ से ढके सुनसान टीले

चमकते है। घाटियो और सन के खेतो मे झाडो पर घनी-नीली परछाइया घिर आती है। सप्तर्षि झुककर क्षितिज को छूने लगता है। ग्राम-सोवियत के पास लगा पाप्लर वृक्ष काले आकाश को चूमती मीनार-सा लगता है। नदी मे गिरते चश्मे की धारा तिलस्मी कल-कल करती है। नदी के बहते पानी मे गिरते तारो की परछाइया प्रतिबिंबित होती है। रात की छद्म नीरवता मे कान लगाकर सुनने से टहनी को अपनी पीले दातो मे कुतरते खरगोश की आवाज सुनायी पडती है। चादनी मे चेरी के पेड के तनो पर जमी राल की बूदे कहरुबे के मानिद चमकती है। तोडने पर राल का टुकडा पके अलूचे जैसा लगता है। कभी-कभार टहनियो से बर्फ का कोई टुकडा गिरता है और रात की नीरवता मे उसकी बिल्लौरी टकार विलीन हो जाती है। चेरी की टहनियो पर स्लेटी धारीदार मजरिया निर्जीव लटकी होती है. बच्चे उन्हे 'कोयल के आसू' कहते है

नीरवता छायी है

और अब पौ फटने पर ही जब उत्तर मे, काली घटाओ के पीछे मे अपने शीत पखो मे बर्फ उडाती मास्को की हवा आयेगी, ग्रेम्याची मे प्रातःकालीन जीवन का कोलाहल फैलेगा कुजो मे पाप्लर वृक्षो की पत्र-विहीन टहनियो की खड-खड होगी, जाडा बिताने के लिये गाव के पास रुके तीतरो की च-चे सुनायी पडने लगेगी, जो रात को खलिहानो मे दाना चुगने आते है। दिन बिताने के लिये वे रेतीले टीलो की ढलानो पर उगी जगली झाडियो मे जाकर छिप जायेगे और बर्फ पर बस उनके पजो के चिह्न रह जायेगे। मा का थन चूसने की माग करते बछडे रभाने लगेगे, सामूहिकीकृत मुर्गे गला फाड-फाडकर बाग देने लगेगे, गाव मे उपलो के धुए की तीखी कडवी गध फैलने लगेगी।

पर अभी तो रात छायी हुई है। पूरे गाव मे शायद अकेला कोद्रात माटवेयेविच ही नही सो रहा था। उसके मुह मे देसी तबाकू का कडवा स्वाद भरा था, सिर सीसे की तरह भारी था धूम्रपान के कारण जी मिचला रहा था

आधी रात का समय था। कोद्रात की आखो के सामने बिजली की जगमगाहट मे डूबे मास्को का हर्षदायी दृश्य नाच रहा था, उसे क्रेमलिन के ऊपर, असीम विश्व के ऊपर प्रचड शक्ति से फडफडाती

लाल पताका भी दिखायी दे रही थी। इस विश्व मे सोवियत सघ की सीमाओ के बाहर रहनेवाले, कोद्रात जैसे सामान्य मेहनतकशो के अविरल आसू बहते है। उसे बचपन मे कहे गये मा के शब्द याद आ गये जो उसने नन्हे कोद्रात का रोना बद कराने के वास्ते कहे थे

"मेरे लाल कोद्रात, मत रो भगवान को नाराज मत कर। वैसे भी दुनिया भर के गरीब लोग रोज रोते है, भगवान से अपनी मुसीबतो की शिकायत करते है, सारी सपत्ति हडपनेवाले अमीरो की प्रभु से शिकायत करते है। पर भगवान ने गरीबो को धीरज रखने का उपदेश दिया है और भगवान को गुस्सा आ जाता है कि गरीब और भूखे दिन-रात रोते ही रहते है और वह उनके आसुओ को इकट्ठा करके उनसे कोहरा बनाता है और नीले सागर को उसमे लपेट देता है। और समुदर मे जहाज भटक जाते है। वे चट्टानो से टकराकर डूब जाते है। यह नही तो भगवान आसुओ की ओस बना देते है। एक रात को नमकीन ओस सारी धरती के अनाज के खेतो पर बरस जायेगी आसुओ के कडवे नमक से खडी फसले जल जायेगी और दुनिया मे भीषण अकाल पड जायेगा और भुखमरी फैल जायेगी मतलब यह कि गरीबो को हरगिज नही रोना चाहिये नही तो सिर पर मुसीबत आ पडेगी समझे मेरे लाडले? और सख्ती से बोली 'भगवान से प्रार्थना कर! तेरी प्रार्थना जल्दी पहुच जायेगी भगवान के कानो तक।

मा क्या हम गरीब है? पिता जी भी गरीब है? नन्हा कोद्रात अपनी धार्मिक मा से पूछता।

हा गरीब है।

कोद्रात पुरानी देव-प्रतिमा के सामने घटनो पर गिर पडता और अच्छी तरह से आसू सुखाकर प्रार्थना करने लगता कि कही गुस्सैल भगवान उसकी गीली आखे न देख ले।

कोद्रात लेटे लेटे अपनी स्मृति को ऐसे टटोल रहा था जैसे बहेलिया अपने फदो को। उसके पिता दोन के कज्जाक थे और वह अब सामूहिक फार्म का किसान है। स्तेपी की अनत राहो की तरह लम्बी रातो मे वह बहुत-सी बातो के बारे मे सोच चुका है। कोद्रात के बाप ने सैनिक सेवा के दौरान अपने दस्ते के साथ इवानोवो-वोजनेसेन्स्की के हडताली कपडा मजदूरो को कोडो से तलवारो से मार-पीटकर मिल-मालिको

के हितो की रक्षा की। बाप मर गया, कोद्रात बडा हो गया और सन् १६२० मे उसने अपनी सोवियत सत्ता की रक्षा करते हुए, मिल-मालिको और उनके भडैतो से इवानोवो-वोजनेसेस्क के उन्ही कपडा-मजदूरो की सत्ता की रक्षा करते हुए श्वेत-पोलो और व्रागेल के सैनिको को खूब मारा-काटा।

भगवान पर से कोद्रान का विश्वास उठ गया, वह कम्युनिस्ट पार्टी मे आस्था रखता है जो विश्व भर के श्रमजीवियो को मुक्ति की ओर ले जा रही है। वह अपने सारे पशु-पक्षियो को सामूहिक फार्म मे ले गया। वह तो इसके पक्ष मे है कि सिर्फ उसी को रोटी खाने और जमीन पर पाव रखने का अधिकार होना चाहिये, जो काम करता है। उसके रोम-रोम मे सोवियत सत्ता पर असीम आस्था भरी थी। पर कोद्रात को रातो नीद नही आती इसलिये नही आती कि उसके मन मे अपनी सपत्ति, अपने मवेशियो का दुख लुक-छिपकर कसक उठता हालाकि उसने स्वेच्छा से उनसे इकार किया दिल पर कुडली मारकर बैठी कसक से मन मे विषाद-सा भर जाता

पहले सुबह से शाम तक वह व्यस्त रहता था पौ फटते ही गाय-बैलो, भेडो और घोडे को चारा डालता, पानी पिलाता, दोपहर को फिर खलिहान से घास और भूसा ढोकर लाता, रास्ते मे यह खयाल रखता कि एक भी तिनका बेकार न जाये, रात से पहले फिर सफाई करता। और रात को भी कई-कई बार जाकर मवेशी के बाडे मे ढोरो को देखता नाद से गिरी घास को समेटकर वापस डालता। उसे अपने काम मे आनद मिलता। पर अब कोद्रात के बाडे मे मनहूस सन्नाटा छाया रहता है। अब देख-भाल के लिये कुछ नही रहा। नादे खाली पडी है, बाडे का फाटक खुला रहता है, और रात भर मे एक बार भी मुर्गे की बाग नही सुनायी पडती, समय का अदाजा लगाने के लिये कुछ भी नही है।

जब सामूहिक फार्म के अस्तबल मे ड्यूटी देने की बारी होती है तभी उसकी ऊब मिटती है। दिन मे वह जल्दी से घर से जाने की ताक मे रहता है ताकि काटने को दौडते खाली बाडे और पत्नी की विषाद भरी आखो को देखने से बच सके।

इस समय वह उसकी बगल मे लेटी निश्चिन्त सो रही है। अलाव-घर के ऊपर बनी टाड पर ख्रिस्तीश्का नीद मे हाथ-पाव चलाती,

बडबडा रही है "बापू, धीरे चलाओ! धीरे-धीरे!" नीद मे वह शायद बच्चोवाले उज्ज्वल सपने देखती है। उसको जीवन की कोई चिंता नही सताती। वह तो दियासलाई की खाली डिबिया से ही खुश हो जाती है। वह उससे अपने कपडे के गुड्डे के लिये स्लेजगाडी बनाती है। इस स्लेज से वह शाम तक खेलती रहती है और अगले दिन उसे मन बहलाव की कोई नयी चीज मिल जाती है।

पर कोद्रात के अपने ही विचार है। वह उनमे उसी तरह फसा है जैसे जाल मे मछली "कब छोडेगा तू मेरा पिंड, मलाल मेरे? कब तू मरेगा, पापी लोभ? समझ मे नही आता। घोडो के थानो के पास से गुजरता हू, पराये घोडो को देखकर कुछ नही होता पर अपनेवाले के पास पहुचते ही, उसकी पीठ को, उसके दगे कान को देखते ही मेरे दिल मे क्यो टीस उठती है, वह मुझे उस पल अपनी लुगाई से भी प्यारा लगता है। और उसे छाटकर मीठा चारा डालने की फिराक मे रहता हू। और दूसरो का भी तो यही हाल है! हरेक अपनेवाले के पास मडराता रहता है, परायो की क्या चिंता उसे?! पर अब पराये कहा रहे, सब हमारे है पर फिर भी ढोरो की देख-भाल नही करना चाहते, बहुतो के लिये वे पराये हो गये कल कुझेन्कोव की ड्यूटी थी, घोडो को पानी पिलाने खुद नही ले गया बल्कि एक छोकरे को भेज दिया और वह एक घोडे पर चढकर सारे झुड को नदी तक सरपट दौडाता ले गया। किसी ने पिया पानी, किसी ने नही पिया, इसकी कोई परवाह नही, वापस भी अस्तबल तक दौडाता ले आया घोडो को। पर किसी से कुछ कहो तो गुर्राकर कहेगे 'तू अपने काम से मतलब रख!' इसका कारण यह है कि मुझे हर चीज बडी मुश्किल से मिली। जिसकी पाचो उगलिया घी मे रही उसको इतना मलाल नही कल दवीदोव को यह बताना नही भूलना चाहिये कि कुझेन्कोव ने घोडो को पानी कैसे पिलाया था। ऐसी देख-भाल से तो घोडे बसत तक पाटे को हिलाने तक के काबिल नही रहेगे। कल सुबह से जाकर देखना चाहिये कि मुर्गिया कैसी है, लुगाइया कह रही थी कि भीड-भडक्के की वजह से कोई सातेक मुर्गिया मर गयी है। ओफ, कितना कठिन है यह सब! क्यो सारी मुर्गियो को एक दडबे मे ठूस दिया गया? कम से कम एक घर मे एक-एक मुर्गा तो छोड देते घडी का काम करने के लिये कोआपरेटिव दूकान मे कुछ नही

है और ख्रिस्तीश्का के पास पाव मे पहनने को कुछ नही। कही से चप्पलो का ही इतजाम हो जाये! दवीदोव से कहते हुए अच्छा नही लगता नही, यह जाडा तो घर मे ही निकाल देगी और गर्मियो मे तो कोई जरूरत नही रहेगी।" कोद्रात पचवर्षीय योजना पूरी कर रहे देश के सामने मुह बाये खडे अभावो के बारे मे सोच रहा था और टाट के कबल से ढकी अपनी मुट्ठियो को भीचकर उसने मन ही मन घृणा के साथ पश्चिम के उन मजदूरो को सबोधित किया जो कम्यु-निस्टो के समर्थक नही है "अपने मिल-मालिको से अच्छी तनखाह लेकर तुमने हमे बेच दिया! भर-पेट जिदगी के बदले, भाइयो, तुमने हमारे साथ गद्दारी कर डाली! अभी तक क्यो नही है तुम्हारे यहा सोवियत सत्ता? क्यो तुम अभी तक पीछे हो? अगर तुम्हारी जिदगी दूभर होती तो तुम कब के क्राति कर बैठे होते, पर लगता है कि अभी तुम्हारी दुम नही मरोडी गयी है, तुम अभी तक हिचकिचा रहे हो, लगडा रहे हो, कदम मिलाकर नही चल रहे पर देख लेना, तुम्हारी ऐसी दुम मरोडी जायेगी कि नानी याद आ जायेगी या तुम यह नही देखते सीमा के उस पार मे कि हम कितनी मुश्किल से देश का उत्थान कर रहे है? हम कैसी-कैसी कमियो को झेल रहे है अधनगे है पर दात भीचकर काम कर रहे है। बना-बनाया लेते हुए शर्म नही आयेगी तुम्हे, भाइयो! मेरा बस चलता तो ऐसा ऊचा खबा बनाता कि तुम सब देख सकते, और मै इस खबे पर चढकर तुमको चुन-चुनकर गालिया देता! " कोद्रात को नीद आ गयी। उसके होठो मे दबी सिगरेट गिर पडी और उसने कोद्रात की इकलौती कमीज मे एक बडा, काला-सा छेद कर दिया। जलन के कारण उसकी आख खुल गयी। वह कमीज पर बने छेद को सीने के लिये उठा और अधेरे मे फुसफुसाकर गालिया देता हुआ सुई ढूढने लगा, नही तो सुबह आन्ना ने अगर यह छेद देख लिया तो कम-से-कम दो घटे तक उसकी चखचख बद नही होगी पर उसे सुई मिली ही नही और वह फिर से सो गया।

भोर के समय उसकी आख खुली, वह शौच के लिये बाहर निकला तो उसे अचानक बडा अजीब-सा शोर सुनायी पडा सामूहिकीकृत, एक ही दडबे मे बद मुर्गे समवेत स्वर मे बाग दे रहे थे। कोद्रात कोई दो मिनट तक अपनी सूजी आखो को आश्चर्य से फाडकर मुर्गो की निर-

तर बाग को सुनता रहा, जब किसी मुर्गे की देर मे शुरू हुई 'कुकडे-कू' रुकी, वह उनीद मे मुस्करा दिया। "क्या गजब का शोर मचाते है शैतान की औलाद! बिलकुल बैड की तरह। जो उनके अड्डे के पास रहता है उसकी तो नीद हराम हो जायेगी। पहले तो गाव के कभी एक कोने मे बाग लगती थी तो कभी दूसरे मे। कोई मजा नही आता था यह हुई न जिदगी!" और नीद पूरी करने के लिये सोने चला गया।

* * *

सुबह नाश्ता करके वह मुर्गियो के बाडे की ओर चल दिया। उसे देखकर बूढे अकीम बेमल्लेबनोव ने गुस्से मे चिल्लाकर पूछा

"तू सुबह-सवेरे यहा क्या कर रहा है?"

"तुम्हे और मुर्गियो को देखने आया हू। क्या हाल-चाल है बाबा?"

"अच्छी-खासी जिदगी कट रही थी पर अब मत पूछो!"

"क्यो, क्या हो गया?"

"मुर्गियो की नौकरी ने जीना हराम कर दिया!"

"यह कैसे?"

"तू एक दिन यहा रुककर देख, तब समझ जायेगा! नामाकूल मुर्गे दिन भर आपस मे लडते रहते है, उन्हे अलग करते-करते तो मेरी टागे टूट गयी। मुर्गियो को ही लो, देखने मे लग सकता है कि जनानी जात है पर ये भी दिन भर एक-दूसरी की कलगी नोचती रहती है। भाड मे जाये ऐसी नौकरी! आज ही दवीदोव के पास जाकर मेरी छुट्टी करने को कहूगा, शहद की मक्खियो की देख-रेख के लिये भेजने को कहूगा।"

"बाबा, धीरे-धीरे वे एक दूसरे के आदी हो जायेगे।"

"जब तक वे आदी होगे, बुड्ढा कब्र मे उतर चुका होगा। भला यह मर्दो का काम है? आखिर को मै तो कज्जाक हू। तुर्को मे लडाई पर जा चुका हू। पर यहा मुझे मुर्गियो का कमाडर बना दिया गया। नौकरी शुरू किये दो ही दिन हुए है पर बच्चे मेरा पीछा नही छोडते। जब घर जाता हू वे मुझे देखकर चिल्लाने लगते है 'बुड्ढा मुर्गी-

छेड़! अकीम बाबा मुर्ग़ी-छेड़!' मुझे सबका मान-सम्मान प्राप्त था, पर बुढ़ापे में मुर्ग़ी-छेड़ की उपाधि लेकर मरूं क्या? नहीं, मैं बिलकुल नहीं चाहता!"

"अरे छोड़ो भी, अकीम बाबा। बच्चों से क्या लेना?"

"अरे अगर बच्चे ही कहते तो कोई बात नही पर कई लुगाइयां भी उनके साथ हो गयीं। कल दोपहर को खाना खाने घर जा रहा था। कुएं पर नास्तेन्का दोनेत्स्कोवा पानी खीच रही थी। पूछती है: 'बाबा, मुर्ग़ियों की संभाल कर पा रहे हो?' मै बोला, 'हां-हां।' – 'बाबा, मुर्ग़ियां अंडे भी दे रही हैं या नही?' मैं बोला, 'हां कुछेक दे रही हैं पर इतने ज़्यादा नही।' और वह कल्मीक घोड़ी पता है क्या बोली हंसकर? 'देखना, जुताई तक वे एक टोकरी अंडे दे दें नहीं तो तुमसे करवायेंगे मुर्ग़ो का काम।' ऐसे मज़ाक़ सुनने के लिये मै बुड्ढा हो गया हूं। और यह नौकरी मुझे बिलकुल पसंद नही!"

बूढ़ा कुछ और भी कहना चाहता था पर बाड के पास दो मुर्ग़े भिड़ गये, एक की कलगी से खून की धारा फूट पडी और दूसरे की गल-थैली से मुट्ठी भर पंखो का ढेर उड़ा। बुड्ढा अकीम सटी उठाकर उनकी ओर सरपट दौड़ पड़ा।

सामूहिक फ़ार्म के दफ़्तर में काफ़ी सुबह होने के बावजूद बड़ी भीड़ थी। अहाते में ओसारे के सामने दो घोड़ोंवाली स्लैज दवीदोव की प्रतीक्षा में खड़ी थी जो इलाक़ाई केन्द्र जा रहा था। लाप्शीनोव-वाला रहवाल भी खड़ा सुम से बर्फ़ खोद रहा था, और ल्युबीश्किन उसकी ज़ीन की पेटी कस रहा था। वह भी तुब्यान्स्की जाने की तैयारी कर रहा था, उसे वहां के सामूहिक फ़ार्म के अधिकारियों से ओसाई-मशीन के बारे में बात करनी थी।

कोंद्रात ने पहले कमरे में प्रवेश किया। हाल ही में क़स्बे से आया लेखापाल मेज पर बैठा बहियों को उलट-पलट रहा था। उसके सामने बैठा याकोव लुकीच कुछ लिख रहा था, इधर वह टूट-सा गया था। वही वे सामूहिक-किसान खडे थे जिनको घास लानी थी। तीसरी टोली का नायक चेचक के दाग़वाला आगाफ़ोन दुबत्सोव और अर्काशा बदलू गांव के एकमात्र लोहार इप्पोलीत शाली के साथ कोने में खड़े किसी विषय में बहस कर रहे थे। बराबर के कमरे मे रज़्म्योत्नोव का तेज़, हंसमुख स्वर सुनायी पड़ रहा था।

वह अभी-अभी आया था और हंसता हुआ, जल्दी-जल्दी दवीदोव को बता रहा था :

"सुबह-सवेरे मेरे पास चार बुढ़ियायें आयीं। मिखाईल इग्नात्योनोक की मां, उल्याना नानी उनकी चौधरानी है। तुम जानते हो उसे? नहीं? अरे ढाई मन की बुढ़िया है नाक पर मस्सेवाली। हां, तो वे आयी। उल्याना नानी आग-बबूला थी, उसकी नाक का मस्सा तक फुदक रहा था गुस्से में। आते के साथ ही बोली: 'अरे तू ऐसे-वैसे, तेरी ऐसी की तैसी!' लोग सोवियत में मेरा इंतज़ार कर रहे है, वह मुझे चुन-चुनकर गालियां दे रही है। मैं भी उससे सख़्ती से बोला: 'बक-बक बंद कर, नहीं तो सत्ता के अपमान के लिये क़स्बे भिजवा दूंगा। तुम्हें क्या पागल कुत्ते ने काट लिया है?' वह बोली: 'तुम लोगों ने बुढ़ियाओं का यह क्या मखौल बनाने की सोची है? तुम में हमारे बुढ़ापे का मज़ाक़ उड़ाने की हिम्मत कैसे हुई?' बड़ी मुश्किल से पूरी बात उगलवा सका उससे। हुआ यह कि उन्होंने किसी से सुना कि सभी बुढ़ियाओं को, जो काम करने में असमर्थ हैं, जिनकी उम्र साठ से ऊपर हो गयी है बसंत में सामूहिक फ़ार्म का बोर्ड..." रज़्म्योत्नोव ने बड़ी मुश्किल से हंसी रोककर बात पूरी की : "मानो अंडे सेने की मशीनों की कमी के कारण बुढ़ियाओं से यह काम करवाना चाहता है। बस वे बिगड गयी। उल्याना नानी चीखकर बोली, जैसे कोई उसका गला काट रहा हो: 'कैसे तुम्हारी हिम्मत हुई मुझे अंडों पर बिठवाने की? ऐसे कोई अंडे नहीं हैं जिन पर मैं बैठ सकूं! मैं तुम सबको बेलन से पीटकर खुद नदी में डूब मरूंगी!' बड़ी मुश्किल से उन्हें समझा पाया। मैं बोला 'नहीं डूबो, उल्याना नानी, हमारी नदिया में तो तुम्हारे डूबने लायक पानी है भी नहीं। यह सब झूठ है, कुलकों की मनगढ़ंत है।' देखा कामरेड दवीदोव, दुश्मन झूठ फैला रहे हैं, हमारे काम में अडंगा डालना चाहते हैं। मैं पूछने लगा कि कहां से यह अफ़वाह उन्होंने सुनी, पता चला कि वोयस्कोवोय से परसों गांव मे एक नन आयी थी, रात को तिमोफ़ेई बोश्चोंव के यहा टिकी थी, उसी ने बताया था कि इसीलिये मुर्ग़ियां इकट्ठी की जा रही हैं ताकि उन्हें शहरवालों के शोरबे में डालने के लिये भेजा जा सके और बुढ़ियों के लिये ऐसी कुर्सियां, खास ढंग की, बनायेंगे उन पर फूस बिछा देंगे और उन पर बिठाकर उनको अंडे सेने के लिये

मजबूर करेगे और जो बुढिया शोर मचायेगी उसे कुर्सी से बाध देगे।"

"कहा है यह नन इस समय?" वहा बैठे नागूल्नोव ने झट से पूछा।

"रफूचक्कर हो गयी। वह बेवकूफ थोडे ही है भौककर आगे चली जाती है।"

"ऐसी काली कौव्वियो को गिरफ्तार करके उचित जगह भेज देना चाहिये। मेरे हाथ नही आयी! मै तो उसका लहगा उठाकर ऐसे कोडे लगाता और तुम सोवियत के अध्यक्ष हो और जिसका जी चाहता है वही तुम्हारे गाव मे टिक जाता है। यह भी कोई बात हुई!"

"सब पर कहा नजर रखी जा सकती है!"

दवीदोव ओवरकोट के ऊपर भेड की खाल का लबादा पहने मेज पर बैठा था। वह जाने से पहले बसत मे खेती कार्यो की सामूहिक फार्म की सभा मे अनुमोदित योजना पर एक नजर डाल रहा था, उसने कागजो से सिर उठाये बिना कहा

"हमारे बारे मे झूठ फैलाना तो दुश्मन की पुरानी रीत है। वह हरामी तो हमारे सारे निर्माण पर कीचड उछालना चाहता है। पर कभी-कभी तो हम खुद ही इसमे उसकी मदद करते है, मुर्ग-मुर्गियो को ही लो "

'यह कैसे?' नागूल्नोव ने नथुने फुलाकर पूछा।

"ऐसे कि हमने पक्षियो का सामूहिकीकरण करने का फैसला किया।

'तुम गलत कहते हो!"

"बिलकुल ठीक कह रहा हू, फैक्ट! हमे मामूली बातो के झमेले मे नही पडना चाहिये था। हमने बीजो का प्रबध अभी किया नही और मुर्गे-मुर्गियो के चक्कर मे फस गये। क्या मूर्खता है! मेरा तो जी सिर के बाल नोचने को करता है और इलाकाई समिति मे बीजो के मामले पर मेरी खूब खिचाई की जायेगी, फैक्ट! सचमुच ही बडा अप्रिय फैक्ट है!'

"तुम यह बताओ कि क्यो मुर्गे-मुर्गियो को सामूहिकीकृत नही करना चाहिये? सभा तो राजी हो गयी थी?"

"अरे बात सभा की नही है!" दवीदोव नाक-भौ सिकोडकर बोला। "तुम समझते क्यो नही कि मुर्गियो की बात मामूली है पर

हमें तो मुख्य बाते करनी है – सामूहिक फार्म को मजबूत बनाना है, शत-प्रतिशत लोगो को उसमे शामिल करना है, और बोवाई भी तो आखिर करनी है। और मै, मकार, पूरी गभीरता से कहता हू कि साली मुर्गियो के मामले मे हमने राजनीतिक भूल की है, सचमुच हमने गलती की है! कल रात को मैंने सामूहिक फार्मो के गठन के बारे मे कुछ बाते पढी थी और समझ गया कि गलती कहा हुई आखिर हमारे यहा सामूहिक फार्म है यानी सहकारी सगठन, पर हम उसे कम्यून बनाने लगे। ठीक है न? यह अतिवामपथी प्रवृत्ति ही तो है! तुम ही सोचो। तुम ही ने तो यह करवाया। तुम्हारी जगह अगर मै होता तो बोल्शेविको के लिये लाक्षणिक साहस के साथ इस भूल को स्वीकार कर लेता और मुर्गे-मुर्गियो आदि को अपने-अपने घर ले जाने का आदेश दे देना। क्यो? और अगर तुम यह नही करोगे तो लौटते ही मै अपनी जिम्मेदारी पर यह कर दूगा। अच्छा, मै चला।"

उसने टोपी पहनी, कुलको मे जब्त भेड की खाल के लबादे का फिनाल की बू छोडता ऊचा कालर उठाया और फाइल के तस्मे बाधता हुआ बोला

तरह-तरह की नने-मठवासिनी घूमती रहती है और हमारे बारे मे न जाने क्या-क्या बकती रहती है। औरतो बुढियाओ को हमारे खिलाफ उकसाती है। और सामूहिक फार्म तो अभी इतने कच्चे है और इतने सख्त जरूरी है। सब हमारे पक्ष मे होने चाहिये! बुढियाये भी और औरते भी। सामूहिक फार्म मे औरत की भी अपनी भूमिका है, फैक्ट!" और यह कहकर वह लम्बे-लम्बे, भारी डग भरता बाहर चला गया।

'चलो, मकार, मुर्गियो की छुट्टी करने। दवीदोव ठीक ही कह रहा था।

रजम्योत्नोव बडी देर तक उत्तर की प्रतीक्षा मे नागूल्नोव को ताकता रहा वह खिडकी के दासे पर, ओवरकोट के बटन खोले बैठा, हाथो मे टोपी घुमाता कुछ बुदबुदा रहा था। इसी तरह कोई तीनेक मिनट बीत गये। मकार ने झटके से सिर उठाया, रजम्योत्नोव से उनकी नजरे मिली और वह बोला

"चलो। हम लोग चूक गये। बिलकुल ठीक है यह बात! टूटे दातोवाला दवीदोव शैतान तो बिलकुल ठीक बोला" और उसके

होठो पर झेप भरी मुस्कान फैल गयी।

दवीदोव स्लेजगाडी मै बैठ रहा था, उसके पास कोंद्रात माइदान्निकोव खडा था। वे किसी विषय मे बात कर रहे थे। कोंद्रात हाथ हिला-हिलाकर बडे जोश मे कुछ कह रहा था, गाडीवान बेचैनी से लगाम पकडे बैठा था। दवीदोव अपने होठ काटता उसकी बाते सुन रहा था।

ओसारे मे उतरते हुए रजम्योत्नोव ने दवीदोव को यह कहते सुना

"तुम चिता मत करो। शात हो जाओ। सब हमारे हाथो मे है, सब ठीक कर देगे, फैक्ट! जुर्माने की व्यवस्था लागू कर देगे, टोली नायको पर निजी जिम्मेदारी लाद देगे। अच्छा, अब मै चला!"

घोडो की पीठ पर चटककर चाबुक पडा। स्लेजगाडी बर्फ पर निशान छोडती हुई फाटक के बाहर चली गयी।

मुर्गी-फार्म के अहाते मे मैकडो मुर्गिया रगबिरगी गिट्टी की तरह बिखरी हुई थी। बुड्ढा अकीम सटी लेकर अहाते मे घूम रहा था। हवा उसकी मफेद दाढी से खेल रही थी, माथे पर पसीने की बूदो को सुखा रही थी। 'मुर्गी-छेड' नमदे के बूटो से मुर्गियो को धकेलना चल रहा था, उमके कधे पर चुग्गे से भरा झोला लटका था। बूढा भडार मे कोठरी की तरफ एक रेखा मे चुग्गा डालता चल रहा था। उसके पैरो मे ढेरो मुर्गिया फुदक रही थी, उनकी 'कु-क-ड कू' निरतर मुनायी पड रही थी।

खूटो से घिरे खलिहान मे चूने के ढेरो की तरह हसो के झुड थे। वहा मे पखो की फडफडाहट, कै-कै, चै-चै मुनायी पड रही थी। कोठरी के पाम लोगो का झुड घेरा बनाकर खडा था। उनकी पीठे और चूतड ही दिखायी दे रहे थे। सिर झुकाये वे घेरे मे कुछ देख रहे थे।

रजम्योत्नोव ने पाम जाकर पीठो के ऊपर से घेरे के अदर देखने का प्रयास किया। लोग हाफते, घुरघुराते दबी आवाज मे एक-दूसरे से कह रहे थे

"लालवाला जीतेगा।"

"अरे जाने भी दो! देखते नही उसकी कलगी लटक गयी है।"

"अरे क्या जबरदस्त चोट की है!"

"गलथैली फाड ली, निढाल हो गया "

बुड्ढे श्चुकार की आवाज सुनायी पडी
"धकेल मत! मत धकेल! वह खुद शुरू करेगा! नही धकेल, स्माले! मै तेरा थोबडा धकेलू! "
घेरे मे डैने फैलाकर दो मुर्गे चक्कर काट रहे थे, एक—सुर्ख-लाल और दूसरा कौए की तरह काला। उनकी नुची कलगिया जमे खून मे काली थी, पैरो मे काले और लाल पखो का ढेर बिखरा पडा था। लडाके थक गये थे। वे ऐसे घूम रहे थे मानो कुछ चुग रहे हो, पर उनकी चौकन्नी आखे एक-दूसरे पर टिकी थी। उनकी बनावटी उदासीनता जल्दी ही खत्म हो गयी कालावाला अचानक फुदककर उडा, लालवाला भी फुदका। हवा मे वे एक-दूसरे को टक्करे मारने लगे
बुड्ढा श्चुकार दुनिया की सुध भूलकर देख रहा था। उसकी नाक की नोक पर रेट झूल रही थी, पर उसे इसका होश न था। उसका सारा ध्यान लाल मुर्गे पर टिका था। लालवाले को जीतना चाहिये था। बुड्ढा श्चुकार देमीद घुन्ने के साथ शर्त बद रहा था। अचानक किसी के हाथ ने श्चुकार को इस तनावपूर्ण अवस्था से निकाला वह रुखाई के साथ कोट का कालर पकडकर बुड्ढे को घेरे के बाहर खीच रहा था। श्चुकार ने मुडकर देखा, उसका चेहरा भयकर क्रोध मे विकृत था, वह मुर्गे की तरह अपने शत्रु पर टूटने को आतुर था। पर क्षण भर मे चेहरे का भाव बदल गया, वह हसमुख हो गया यह नागूल्नोव का हाथ था। नागूल्नोव ने गुस्से मे दर्शको को धकेलकर मुर्गो को खदेडा और रोष के साथ बोला
"मुर्गो को लडाने के सिवा और कोई काम नही जाओ, लोफरो अपने-अपने काम पर! अगर कुछ करने को नही तो अस्तबल मे बिचाली डालो। सागबाडिया मे गोबर डालने जाओ। और दो जने घर-घर जाकर लुगाइयो से कह दो कि अपनी-अपनी मुर्गिया ले जाये।"
"क्या मुर्गियो का सामूहिक फार्म बद हो रहा है?" मुर्गो की लडाई के एक शौकीन लोमडी की खाल की टोपीवाले निजी किसान ने पूछा जिसे लोग हमामची कहकर पुकारते थे। "लगता है उनकी चेतना अभी सामूहिक फार्म लायक नही हुई। क्या समाजवाद मे मुर्गे लडेगे या नही?"

नागूल्नोव ने आंखें तरेरकर उसको ऊपर से नीचे तक देखा, उसका चेहरा तमतमा गया।

"तू ज़बान संभालकर मज़ाक़ कर! समाजवाद के लिये सबसे नेक लोगों ने अपनी जान क़ुर्बान की है और तू, कुत्ते का गू उसका मज़ाक़ उड़ाता है? भाग यहां से दुश्मन, नही तो अभी तुझे उस दुनिया का टिकट कटा दूगा। भाग, बिच्छू, यहां से जब तक मैंने तुझे मुर्दा नही बनाया! मुझे ख़ूब मज़ाक़ करना आता है!"

वह मौन खडे कज़्ज़ाकों के पास से चल पडा, अंतिम बार मुर्ग़े-मुर्ग़ियों से भरे बाड़े पर नज़र डालकर वह धीरे-धीरे, कधे झुकाये फाटक की ओर जा रहा था।

२०

इलाक़ाई पार्टी समिति में सिगरेट का नीला धुआ भरा था, टाइप-राइटर ठक-ठक कर रहा था, डच अगीठी की गर्मी भरी थी। दोपहर के दो बजे ब्यूरो की मीटिंग होनेवाली थी। इलाक़ाई समिति का सचिव हडबडी में था। उसका सफ़ाचट चेहरा पसीने से तर था, घुटन के कारण उसने ऊनी कमीज़ का कालर खोल रखा था। दवीदोव को कुर्सी पर बैठने का इशारा करके उसने अपनी फूली, गोरी गर्दन खुजलायी और बोला.

"वक़्त मेरे पास कम है, यह तुम ध्यान मे रखना। हा तो क्या हाल है तुम्हारे यहा? सामूहिकीकरण कितने प्रतिशत हुआ? सौ फ़ी सदी कब करनेवाले हो? संक्षेप मे बोलो।"

"शीघ्र ही करनेवाले है। पर बात प्रतिशत की नहीं है। आतरिक स्थिति का क्या करें? मैं बसंत में खेती के कामो की योजना लाया हू, देख लो।"

"नही-नही!" सचिव आशंका के साथ बोला, उसने अपनी विषण्ण आखे व्याकुलता से मिचमिचायी और रूमाल से माथे का पसीना पोंछकर बोला: "तुम यह इलाक़ाई कृषि संघ में लुपेतोव के पास ले जाओ। वही देखकर अनुमोदन कर देगा, मेरे पास वक़्त नही है, मंडल समिति से एक कामरेड आये है, ब्यूरो की मीटिंग होगी। अच्छा, यह बताओ

कि तुमने क्यों कुलकों को हमारे पास भेज दिया? बड़ी मुसीबत है तुम्हारे साथ तो .. मैंने तो तुम्हें साफ़-साफ़ रूसी भाषा में कहा था, चेतावनी दी थी: 'इसकी जल्दी मत करना क्योंकि हमारे पास सीधा निर्देश नही आया है।' और कुलकों के पीछे पड़ने के बजाये, सामूहिक फ़ार्म बनाने से पहले ही उनको बेदख़ल करने के बजाये तुमको व्यापक मामूहिकीकरण पूरा करना चाहिये था। और बीजों का क्या हाल है? तुम्हे फ़ौरन बीज तैयार करने के बारे में इलाक़ाई समिति का निर्देश मिला था? अभी तक क्यों यह निर्देश पूरा नही किया गया? आज ही ब्यूरो की मीटिंग में मुझे नागूल्नोव और तुम्हारा सवाल उठाना पड़ेगा। मुझे यह माग करनी पड़ेगी कि तुम्हें मज़ा दी जाये। यह तो शर्म की बात है! देखो दवीदोव! इलाक़ाई समिति के महत्वपूर्ण निर्देश को न पूरा करने मे तुम्हारे लिये बड़े अप्रिय परिणाम हो सकते है! अब तक तुमने कितने बीज जमा किये है? ठहरो मैं अभी रिपोर्ट देखता हू ..." सचिव ने दराज़ मे चार्ट निकाला, आखें मिचमिचाकर उस पर नज़र दौड़ायी और उसका चेहरा एकदम लाल हो गया। 'देख लो! एक भी पूद नही जमा किया! तुम चुप क्यों हो?"

"पर तुम मुझे बोलने ही कहा दे रहे हो। यह सच है कि बीजों का काम अभी शुरू नही किया। आज ही लौटकर शुरू कर देंगे। अब तक रोज सभाये बुलाते रहे, मामूहिक फार्म की स्थापना के प्रबध-मडल का, टोलियों का गठन किया। काम बहुत अधिक है, जैसा तुम चाहते हो वैसा कैसे कर मकते है, जादू की छड़ी तो है नही कि घुमाया और सब हो गया – मामूहिक फ़ार्म भी बन गया, कुलको का भी मफ़ाया हो गया, बीज भडार भी .. यह मब हम पूरा कर देंगे और तुम रिपोर्ट लिखने में जल्दबाज़ी मत करो, वक़्त आने पर लिख देना।"

"कैसे नही करूं जल्दबाज़ी अगर मडल और प्रदेशवाले दबाव डाल रहे है, सांस नहीं लेने दे रहे! बीज भंडार पहली फ़रवरी तक बन जाना चाहिये और तुम ..."

"और मैं उसे पंद्रह तारीख़ तक बना डालूंगा, फ़ैक्ट! आखिर फ़रवरी में तो बोवाई करेंगे नहीं। आज प्रबंध मडल के एक सदस्य को तुब्यान्स्की भेजा है ओसाई-मशीन के लिये। वहां के फ़ार्म का अध्यक्ष ग्नेदीख़ भी बड़ा चालू है। हमारे पत्र के उत्तर में कि कब उनकी ओसाई-

मशीन खाली होगी उसने लिखा 'भविष्य में।' बड़ा हाज़िर-जवाब बनता है।"

"तुम मुझे ग्नेदीख़ के बारे में नही, अपने सामूहिक फ़ार्म के बारे में बताओ।"

"हमने ढोर काटे जाने के विरुद्ध अभियान चलाया। अब नहीं काटे जा रहे। हाल ही में हमने मुर्ग़े-मुर्ग़ियों, भेड़-बकरियों आदि को इस डर से सामूहिकीकृत करने का फ़ैसला किया कि कही उन्हें भी न काट दें .. पर आज मैंने नागूल्नोव को कह दिया है कि वह मुर्ग़ियों को वापस बांट दे।"

"क्यों?"

"मैं मानता हूं कि भेड़-बकरियों और मुर्ग़ियों का सामूहिकीकरण ग़लत है और सामूहिक फ़ार्म को अभी इसकी ज़रूरत नही है।"

"सामूहिक फ़ार्म की सभा ने ऐसा निर्णय लिया था?"

"हा।"

"तब क्यों ऐसे कर रहे हो?"

"मुर्ग़ी-पालक नही है, किसानो का उत्साह फीका पड गया, फैक्ट। छोटी-छोटी बात पर उन्हे परेशान करने की ज़रूरत नही है। मुर्ग़ियो को सामूहिकीकृत करने की आवश्यकता नही है, आख़िर हम सामूहिक फ़ार्म का निर्माण कर रहे है कम्यून का नही।"

"बहुत अच्छा सिद्धात ढूढ़ निकाला! पर वापस करने की क्या ज़रूरत है? बेशक, मुर्ग़ियों को नही छेडना चाहिये था पर एक बार कर ही बैठे तो पीछे लौटने की ज़रूरत नही। तुम लोग तो एक जगह खडे पाव पटक रहे हो। कमर कमनी चाहिये! बीज भडार नही बनाया, सौ फी मदी मामूहिकीकरण नही किया, औजारो की मरम्मत नही हुई "

"आज लोहार मे बात कर ली है।"

"मै भी तो यही कह रहा हू, गति नही है! तुम्हारे यहां ज़रूर प्रचार दल भेजेंगे, वह सिखा देगा तुम्हें काम करना।"

"भेज देना। बहुत अच्छा होगा, फ़ैक्ट।"

"और जिस काम में जल्दी नही करनी चाहिये थी वह तुमने झट से कर डाला। लो, सिगरेट पियो," मचिव ने मिगरेट-केस बढ़ाते हुए कहा। "अचानक कुलकों से भरे छकड़े आ टपके। ग० प० उ० मे ज़खारचेन्को का फ़ोन आया कि वह उनका क्या करे। वह बोला: 'मंडल से कोई निर्देश मिला नहीं इसके बारे में। उन्हें भेजने के लिये

रेलगाड़ी चाहिये। कैसे भेजूं, कहां भेजूं?' देखा तुम लोगों ने क्या कर डाला! न कोई सलाह ली, न फ़ैसला किया हमारे साथ .."

"मुझे उनके साथ क्या करना चाहिये था?"

दवीदोव तैश में आकर बोला। जब वह गुस्से में होता तो जल्दी-जल्दी तीखी आवाज़ में बोलने लगता, उसकी जीभ दांतों की खुड्डी में फंस-फंस जाती। अब भी वह कुछ तुतलाते हुए अपनी पतली तीखी आवाज़ में ज़ोर-ज़ोर से बोल रहा था:

"क्या मैं उन्हें अपनी गर्दन पर बिठाये घूमता? उन्होंने ग़रीब ख़ोप्रोव और उसकी बीवी का ख़ून कर दिया?"

"जांच मे इसकी पुष्टि नही हुई," सचिव उसे टोककर बोला, "वहां दूसरे कारण भी हो सकते थे।"

"जांच करनेवाला अनाडी था इसीलिये नही हुई पुष्टि। दूसरे कारणों के बारे में बात में कोई जान नहीं! कुलको की ही करतूत थी! वे हर तरह से हमारे काम में अड़ंगा डाल रहे थे, सामूहिक फ़ार्म के विरुद्ध प्रचार कर रहे थे, इसीलिये निकाल दिया हमने उन्हें। एक बात मेरी समझ में नही आती कि तुम क्यों बार-बार इस की चर्चा कर रहे हो? मानो तुम इससे क्षुब्ध हो .."

बेतुकी बात करते हो! तुम ज़रा ज़बान संभालकर बोलो! ऐसे मामलों में जब योजना और योजनाबद्ध काम के स्थान पर छापेमारो की तरह मनमानी से काम किया जाता है, मै इसके ख़िलाफ़ हूं। और तुम पहले आदमी हो जिसने अपने गांव से कुलकों को निकालकर हमे बड़ी मुश्किल स्थिति में डाल दिया। तुम अपनी ही क्यो सोचते हो, अपने छकड़ों से तुमने उन्हें इलाक़ाई केन्द्र तक ही क्यों भेजा? क्यों सीधा स्टेशन तक, मंडल मुख्यालय तक नही भेजा?"

"छकड़ों की हमें ज़रूरत थी।"

"मैं भी तो यही कहता हूं – तुम अपनी ही सोचते हो! अच्छा, चलो ख़त्म करें। और निकट भविष्य के लिये तुम्हारा काम है: बीजों का पूरा भडार बनाना, बोवाई के लिये औज़ारों की मरम्मत, सौ फ़ी सदी सामूहिकीकरण। तुम्हारा फ़ार्म स्वतंत्र होगा। वह बाक़ी इलाक़ों से दूर है, खेद की बात है, इसलिये वह 'विराट' कृषि संगठन में शामिल नहीं हो सकेगा। मंडलवालों को भी समझना बड़ा मुश्किल है। कभी कहते हैं विराट फ़ार्म स्थापित करो तो कभी उनको छोटे-छोटों

मे बाट दो। सिर चकराता है।"

सचिव मिर पकडकर बैठ गया, पर कुछ देर बाद बिलकुल दूसरे लहजे मे बोला

"जाओ, कृषि सघ मे योजना का समन्वय करवा लो, फिर कैन्टीन मे खाना खा लेना, अगर नही मिला खाना तो मेरे घर चले जाना, मेरी पत्नी तुम्हे खिला देगी। ठहरो! चिट लिख देता हू।"

उमने जल्दी मे कागज के टुकडे पर कुछ लिखा और दवीदोव को थमा दिया और मेज पर पडे कागजो पर नजर गडाकर उमकी ओर ठडा, पसीने मे गीला हाथ बढाया और बोला

"और फौरन लौट जाना। अलविदा। ब्यूरो की मीटिग मे मै तुम्हारा मवाल उठाऊगा। चलो नही उठाऊगा। पर तुम जरा कम लो कमर। नही तो कार्यवाही करनी पडेगी।'

दवीदोव ने बाहर निकलकर कागज का पुर्जा खोला। नीली पेमिल से उम पर चौडी लिखाई मे लिखा था

लीजा! मै यह पुर्जा लानेवाले को तत्काल और निर्विवाद रूप मे खाना प्रदान करने का दो टूक प्रस्ताव रखता हू।

ग० कोर्चर्जीन्स्की।'

नही, ऐसे अधिकार-पत्र को ले जाने से तो खाना न खाना ही बेहतर होगा' इलाकाई कृषि सघ की ओर जाते हुए भूखे दवीदोव ने उदासी के साथ फैसला किया।

२१

योजना के अनुसार इस वर्ष के बसत मे ग्रेम्याची मे ४७२ हेक्टेयर की जुताई करनी थी जिनमे से ११० हेक्टेयर अछूती भूमि थी। पतझड मे निजी आधार पर ६४३ हेक्टेयर जोती जा चुकी थी, २१० हेक्टेयर पर रबी की रई बोयी गयी थी। जोतो को अनाज और तिलहन की बोवाई के लिये इम प्रकार बाटा गया था गेहू–६६७ हेक्टेयर, रई–२१०, जौ–१०८, जई–५०, ज्वार–६५, मकई–१६७, मूरजमुखी–४५ और मन–१३ हेक्टेयर। कुल मिलाकर १३२५

हेक्टेयर का क्षेत्र हुआ, इसके अतिरिक्त ग्रेम्याची के दक्षिण मे उभ्फाचीना घाटी तक फैली ९१ हेक्टेयर रेतीली जमीन पर पलेज बनाने का फैसला किया गया।

बारह फरवरी को उत्पादन के प्रश्नो पर सभा हुई जिसमे सामूहिक फार्म के चालीस से अधिक सक्रिय सदस्यो ने भाग लिया। प्रमुख प्रश्न थे बीज भडार की स्थापना, कृषि-कार्यो के कोटे का निर्धारण, बोवाई तक उपकरणो की मरम्मत और बसतकालीन कृषि-कार्यो के लिये चारे का प्रबध।

याकोव लुकीच की सलाह पर दवीदोव ने प्रति हेक्टेयर गेहू के सात पूद यानी कुल मिलाकर ४६६९ पूद बीज बोने का प्रस्ताव रखा। बस यह सुनते ही चिल्ल-पो मच गयी। हरेक दूसरे की बात सुनने के बजाये अपनी ही चिल्ला रहा था, शोर-शराबे से तीनवाले मकान की खिडकियो के काच कपकपाकर भ्फकार रहे थे।

"बहुत ज्यादा है!"

"कही पेट न फट जाये!"

"हमारी बालुई मिट्टी मे कभी इतना नही डाला गया!'

अरे सुरिगया तक हम पडेगी यह देखकर।

"ज्यादा से ज्यादा पाच पूद।

' चलो साढे पाच ही सही।"

"हमारे यहा ऐसी जमीन बित्ता भर है जहा सात पूद की जरूरत है! तुम्हारी योजना क्या कहती है जोतने को?"

"या पान्युश्किन की बैरक के पास की जमीन।"

"तुम भी क्या कहते हो! सबसे बढिया घासवाली जगह को जोतना चाहते हो? दिमाग से भी काम लो!'

"आप अनाज की बात करे, हेक्टेयर पर कितने किलो की जरूरत है।"

'तुम अपने किलो-विलो से हमारा दिमाग मत खराब करो! पूद के तौल से बताओ!'

'नागरिको! नागरिको, शात रहो! नागरिको तुम्हारी' चुप भी रहो, पागल हो गये हो क्या? मुझे भी एक शब्द कहने दो!" दूसरी टोली का नायक ल्युबीश्किन चिल्ला-चिल्लाकर बोला।

"अरे तुम एक क्या, सारे शब्द कह डालो!"

"अरे क्या लोग हैं, तुम्हारी दुम में खटखटा! पूरे ढोर हैं... इग्नात! क्यों तू सांड की तरह चिंघाड़ रहा है? चेहरा तक तेरा नीला पड़ गया..."

"तेरे मुंह से भी तो पागल कुत्ते की तरह झाग लटक रहा है!"

"ल्युबीश्किन को बोलने दो!"

"इतना शोर है, कान फटे जा रहे हैं!"

सभा में लोग पागलों की तरह चिल्लाये ही जा रहे थे। और जब सबसे ज़्यादा गला फाड़नेवालों के गले कुछ बैठ गये, दवीदोव ग़ुस्से में चिल्लाया:

"भला कौन तुम्हारी तरह सलाह करता है?.. क्यों शोर मचा रहे हो? हरेक को बारी-बारी से बोलना चाहिये और बाक़ी लोगो को चुप रहना चाहिये, फ़ैक्ट। यह कोई गुंडागर्दी की जगह है? कुछ तो समझना चाहिये!" और संयमित स्वर में बोलने लगा। "संगठित रूप से सभा करना आप को मज़दूर वर्ग से सीखना चाहिये। हमारे खाते में या क्लब में सभा बड़े संगठित ढंग से होती है। एक बोलता है, बाक़ी चुपचाप सुनते है, आप लोग सब एक साथ चिल्लाते है, कुछ भी पल्ले नही पड़ता!"

"अब जो कोई बीच में बोला उसके सिर पर यह सोंटा बजा दूंगा, भगवान की क़सम! जान से मार दूंगा!" ल्युबीश्किन ने बलूत का मोटा सोंटा घुमाकर कहा।

"तब तो तू सभा ख़त्म होते-होते हम सबके सिर फोड़ डालेगा," द्योम्का उशाकोव बोल पड़ा।

सब हंस पड़े और सिगरेट पीकर गंभीरता के साथ बोवाई के लिये बीजों की मात्रा के प्रश्न पर विचार-विमर्श करने लगे। पता लगा कि चीखने-चिल्लाने की कोई आवश्यकता ही नही थी... याकोव लूकीच ने सबसे पहले बोलने की अनुमति मांगी और फ़ौरन सारा वाद-विवाद समाप्त कर दिया।

"आप बेकार ही में चिल्ला रहे थे। पता है क्यों कामरेड दवीदोव ने सात पूद का सुझाव दिया? सीधी-सी बात है, यह हमारी आम राय है। मशीन से ओसाई करेंगे? करेंगे। बेकार बीज निकलेंगे? ज़रूर निकलेंगे। और हो सकता है बहुत ज़्यादा बेकार निकलें क्योंकि कुछ आलसियों के यहा के बीजों और थोथे अनाज में कोई फ़र्क़ नहीं

है। वे खाने के अनाज के साथ ही रखे जाते है। बोवाई भी वे जैसे-तैसे करते है। और अगर कुछ बीज बचे भी तो बेकार थोडे ही जायेगे? मुर्गियो और ढोरो को खिलाने के काम आयेगे।"

मात पूद प्रति हेक्टेयर के हिसाब से बोने का हो गया फैसला। पर जब हल स जुताई के कोटे का सवाल उठा तो लोगो की राय इतनी परस्पर विरोधी निकली कि दवीदोव का सिर चकरा गया।

"तुम कैसे पहले ही से मेरे हल का कोटा तय कर सकते हो अगर तुम्हे यही मालूम नही कि बसत कैसा होगा?" तीसरी टोली का नायक, चेचक के दागोवाला, हट्टा-कट्टा आगाफोन दुबत्सोव, दवीदोव पर टूट पडा। "क्या तुम जानते हो कि बर्फ किस तरह पिघलेगी और पिघलने के बाद जमीन गीली होगी या सूखी? तुम क्या जमीन के भीतर तक देख सकते हो?"

"तो तुम क्या सुझाव दोगे, दुबत्सोव?" दवीदोव ने पूछा।

'मै कागज बेकार न करने का यानी अभी कुछ न लिखने का सुझाव दूगा। बोवाई के बाद देखा जायेगा।"

"तुम तो टोली नायक हो, योजना का ऐसी नासमझी से तुम कैसे विरोध कर सकते हो? या तुम्हारे विचार मे उसकी जरूरत नही है?

पहले से कुछ कहना असभव है!" अचानक याकोव लुकीच दुबत्सोव का पक्ष लेकर बोला। "और कोटा कैसे तय किया जा सकता है? उदाहरण के लिये तुम्हारे हल के लिये तीन जोडी बढिया बैल है और मेरे पास कमजोर। भला मै तुम जितनी जुताई कर सकता हू? कभी नही!"

कोद्रात माइदान्निकोव बीच मे बोल पडा

"हमारे प्रबधक, ओस्त्रोव्नोव के मुह मे ऐसी बाते सुनकर हमे आश्चर्य होता है! पर कोटे के बिना तुम कैसे काम करोगे? भगवान की मर्जी से? मै हल की मूठ से हाथ नही हटाऊगा और तुम लेटकर धूप सेकोगे, पर पैसे हमको एक जितने मिलेगे? जय हो तुम्हारी याकोव लुकीच!"

"आपकी भी कोद्रात! पर यह तो बताओ कि जमीन और बैलो की शक्ति का तुम कैसे हिसाब लगाओगे? तुम्हारे पास मुलायम जमीन और मेरे पास कडी जमीन है, तुम्हारे पास तलहटी मे और मेरे पास

टीले पर। अगर तुम इतने अक्लमद हो तो मुझे भी बताओ।"

"कडी जमीन के लिये एक कोटा और मुलायम के लिये दूसरा। बैलो की भी बराबर की जोडिया बनायी जा सकती है। सब कुछ ध्यान मे रखा जा सकता है, तुम बेकार की बाते मत करो।"

"उशाकोव बोलना चाहता है।"

"बोलो!"

"भाइयो! मै तो यह कहना चाहता हू कि ढोरो को हमेशा की तरह बोवाई से एक महीना पहले ठोस चारा देना शुरू कर देना चाहिये जैसे बढिया घास, मकई और जौ। पर सवाल यह है कि हमारे पास चारे की स्थिति क्या होगी? अनाज-वसूली के बाद फालतू कुछ बचा नही।"

"मवेशी के बारे मे बाद मे अलग से बात होगी। अभी तो हम दूसरी बात कर रहे है, फैक्ट! जुताई का दैनिक कोटा निर्धारित करना है। एक हल, एक बोवाई मशीन को कितने हेक्टेयर कडी जमीन पर काम करना चाहिये।"

"बोवाई मशीने भी तरह-तरह की होती है! मै ग्यारह पक्ति-योवाली मे उतना नही कर पाऊगा जितना सत्रह पक्तियोवाली मे।"

"ठीक है! तुम अपना सुझाव दो। और नागरिक आप क्यो हमेशा चुप रहते है? आप सक्रिय सदस्य माने जाते है पर आज तक मैने आपकी आवाज भी नही सुनी।"

देमीद घुन्ने ने दवीदोव की ओर आश्चर्य के साथ देखा और भारी आवाज मे बोला

'मै सहमत हू।'

किस मे?"

'यही कि जुताई करनी चाहिये और बोआई भी।"

"और कुछ?"

"बस यही।"

"यही?"

"उहू।"

"हो गयी दिल खोलकर बातचीत," दवीदोव मुस्कराकर कुछ और भी बोला पर ठहाको के बीच उसकी बात सुनायी नही पडी।

फिर घुन्ने की जगह बुड्ढा श्चुकार बोला

"कामरेड दवीदोव, हमारे गाव मे मब इसे घुन्ना कहते है। सारी जिदगी चुप रहता है, कडी जरूरत पडने पर ही बोलता है, इमीलिये बीवी इसे छोडकर चली गयी। कज्जाक यह बेवकूफ नही है, पर कुछ पगला-सा है, अगर प्यार के माथ कहे तो दिमाग का कोई पेच कुछ ढीला-मा है। मुझे याद है कि जब यह छोकरा था तो सुस्त-मा, बेकार-सा था। बिना निकर के घूमता था, और उसमे कोई प्रतिभा नजर नही आती थी। और अब बडा होकर चुप रहता है। पुराने शासन के जमाने मे तूब्यान्स्की के पादरी ने इसके लिये तो उसे धर्म-समाज तक से निकाल दिया था। पाप-स्वीकृति के समय पादरी ने इसके सिर को काले कपडे मे ढक दिया और पूछा 'बच्चे मेरे, तुम चोरी करते हो?' यह चुप रहा। 'पर-स्त्री सभोग करते हो?' यह फिर कुछ न बोला। 'सिगरेट पीते हो? लुगाइयो से इश्क लडाते हो?' यह फिर कुछ नही बोला। उल्लू, यही कह देता, 'हा पापी हू फादर!' और पापो मे इसकी फौरन मुक्ति हो जाती "

"बद कर अपनी बक-बक!" पीछे मे कोई हमकर बोला।

" अभी एक सेकड मे खत्म करता हू! हा, तो यह चुप बैठा रहा, ऐसे आखे फाडे जैसे बकरा नये फाटक को ताकता है। पादरी का सब्र टूटने लगा पर फिर भी उसने कापते हुए पूछा 'तुम्हे कभी पडोसी की पत्नी या उसका गधा, या कोई और पशु पाने की इच्छा तो नही हुई?' इजील मे लिखी और भी बाते पूछने लगा देमीद फिर कुछ न बोला। और बोल भी क्या सकता था? मान लो कि वह किसी परायी पत्नी की चाह रखता भी, तो भी इसके हाथ कुछ न लगता मडियल मे सडियल लुगाई तक इसे न "

'बाबा बद करो! तुम्हारी कहानी का हमारी बात मे कोई वास्ता नही, दवीदोव सख्ती मे बोला।

"अभी उसका वास्ता हो जायेगा। अभी तो मैने भूमिका बाधी है। एक सेकेंड सब्र करो! काट दी न बात तुमने मेरी तेरी ऐसी की तैसी! भूल गया अपनी बात! याद नही आ रहा! ते-तेरी! ऐसी याददाश्त मे तो! हा, आ गया याद!' बुड्ढे श्चुकार ने अपनी गजी टाट को ठोका और मशीनगन की तरह पटापट बोलने लगा "हा, परायी औरत के मामले मे देमीद के हाल-चाल ढीले ही थे, और गधे या किसी और पवित्र जीव को पाने की उसे क्या पडी?

उसे इच्छा हो भी सकती थी क्योंकि घर पर उसके घोड़ा तक नहीं है। पर मैं आप से पूछता हूं नागरिको, हमारे यहां गधे कहां से आये? बाबा आदम के ज़माने से ही यहां गधे नहीं होते! शेर हों या गधे, ऊंटों के बारे में भी यही कहा जा सकता है..."

"आज तुम चुप भी होगे?" नागूल्नोव ने पूछा। "अभी यहां से निकाल दूंगा तुम्हें।"

"मकार प्यारे, पहली मई को स्कूल में तुम दोपहर से लेकर सूरज डूबने तक विश्व क्रांति के बारे में बोलते रहे थे। बड़ा नीरस और उबाऊ भाषण था तुम्हारा, एक ही बात को सौ-सौ बार दोहरा रहे थे। मैं तो चुपचाप बेंच पर लेटकर सो गया पर तुम्हें नही रोका, और तुम हो कि मेरी बात काट रहे हो..."

"करने दो बूढ़े को बात पूरी। वक़्त अभी बहुत है हमारे पास," चुटकुलों और मज़ेदार क़िस्सों का बड़ा शौक़ीन रज़म्योत्नोव बोला।

"हां, तो इसीलिये शायद देमीद चुप रहा, किसी को कुछ मालूम नहीं। पादरी दांतों तले ऊंगली चबा रहा था। उसने देमीद के सिर पर ढके कपड़े में अपना सिर घुसेड़कर पूछा: 'तू कही गूंगा तो नही है?' देमीद तब उससे बोला: 'नही, पर तुम्हारी बातें सुन-सुनकर ऊब गया मैं!' पादरी को ऐसा ग़ुस्सा आया, बताने को शब्द नही मेरे पास, उसका चेहरा हरा हो गया, वह धीरे से, ताकि आस-पास खड़ी बुढ़ियां न सुन सकें, फुफकारकर बोला: 'तेरी!.. तो क्यों तू लट्ठे की तरह चुप है?' और इसकी आंखों के बीचवाली जगह पर शमादान दे मारा!"

ठहाकों को चीरती देमीद की भारी आवाज़ गरजी:

"झूठ बोलते हो! नहीं मारा था।"

"सच? नही मारा था?" बुड्ढे श्चुकार ने हैरानी के साथ पूछा। "क्या फ़र्क़ पड़ता है, शायद मारना चाहता था... बस तभी पादरी ने इसे धर्म-समाज से निकाल दिया। ठीक है, नागरिको, रहने दो देमीद को चुप, पर हम तो बोलेंगे, हमें इससे क्या लेना। हालांकि भली बात, जैसी मेरी, चांदी की होती है पर मौन तो सोना होता है।"

"तुम अपनी सारी चांदी सोने में क्यों नही बदल लेते! कम से कम दूसरों को तो चैन मिलता..." नागूल्नोव ने सलाह दी।

रुक-रुककर ठहाके लग रहे थे। बुड्ढे श्चुकार की कहानी ने कामकाजी वातावरण को लगभग भंग ही कर दिया था पर दवीदोव ने चेहरे की मुस्कान बुझाकर पूछा .

"काम के कोटे के बारे में तुम क्या चाहते थे? अब काम की बातें करो!"

"मैं?" बुड्ढा श्चुकार आस्तीन से माथे का पसीना पोंछकर पलकें झपकने लगा। "मैं इसके बारे में कुछ नही कहना चाहता था... मैं तो देमीद के प्रश्न पर रोशनी डाल रहा था... कोटे की बात कहां से आ गयी..."

"इस सभा में अब तुम्हें मुंह नही खोलने दिया जायेगा! सभा में काम की बात करनी चाहिये, हसी-मज़ाक़ तो बाद में भी किया जा सकता है, फ़ैक्ट!"

"एक हल से एक देस्यातीना प्रतिदिन का कोटा ठीक रहेगा," एक कृषि सलाहकार, सामूहिक फ़ार्म का सदस्य इवान बाताल्शिकोव बोला।

पर दुबत्सोव रोष के साथ चिल्लाया:

"तुम पागल हो! अपनी दादी को देना झांसा! एक दिन में देस्यातीना जोतना असभव है! खून-पसीना एक करके भी इतना नही कर पाओगे!

"मै पहले जोत चुका हूं। हो सकता है इससे कुछ कम हो ."

"वही तो मैं कहता हू, कम ही होगा!"

"आधा देस्यातीना फ़ी हल। यह सख्त ज़मीन पर।"

लम्बी बहस के उपरात उन्होंने जुताई का निम्न दैनिक कोटा निर्धारित किया. एक हल से सख्त ज़मीन – ०.६० हेक्टेयर, भुरभुरी ज़मीन – ०.७५ हेक्टेयर।

और बोवाई का कोटा यह नियत किया गया· ग्यारह पंक्तियोंवाली मशीन से – ३¹/४ हेक्टेयर, तेरह पक्तियोंवाली से – ४ और सत्रहवाली से ४³/४ हेक्टेयर।

ग्रेम्याची मे कुल मिलाकर बैलो की १८४ जोड़िया और ७३ घोड़े थे इसलिये बोवाई की योजना कठिन नही थी। याकोव लुकीच ने भी यही कहा:

"अगर कमर बाधकर काम करेंगे तो जल्दी बोवाई हो जायेगी।

बसंत में बैल-घोड़ों के हिस्से औसतन साढ़े चार देस्यातीना ज़मीन आयेगी। यह तो कोई मुश्किल नही है! इसमें कोई शक नहीं।"

"और तूब्यान्स्की में एक जोड़ी के हिस्से आठ देस्यातीना पड़ेगा," ल्युबीश्किन ने बताया।

"अब जो चाहे करें वे! पिछली पतझड़ में हमने पाला पड़ने से पहले खेत जोत डाले थे और वे जलावन की लकड़ी के बंटवारे में ही लगे रहे। बेकार मे वक़्त गंवाते रहे।"

उन्होंने तीन दिन के दौरान बीज भंडार जमा करने का फ़ैसला किया। फिर लोहर इप्पोलीत शाली की घोषणा सुनी जिसे सुनकर कोई खुशी न हुई। वह बडे ज़ोर-ज़ोर से बोल रहा था क्योंकि खुद ऊंचा सुनता था। वह कालिख से सनी अपनी टोपी को काले, काम के समय लगी चोटों के निशान से ढके हाथों में मसोस रहा था। इतने सारे लोगों के सामने बोलते हुए उसे घबराहट हो रही थी:

"सब चीज़ों की मरम्मत की जा सकती हैं। अपनी तरफ़ से मैं कोई कसर नही छोड़ूंगा। पर चाहे जो भी करना पडे लोहे का फ़ौरन प्रबध हो जाना चाहिये। हल की फाल वगैरह के लिये एक भी टुकडा नही लोहे का। काम करने के लिये कुछ नही है। कल से बोवाई मशीनो की मरम्मत शुरू कर रहा हूं। मुझे एक मददगार और कोयले की भी ज़रूरत है। हा, और मुझे सामूहिक फार्म मे तनखा कितनी मिलेगी?"

दवीदोव ने उसे भुगतान के बारे में विस्तार से बताया और याकोव लुकीच को कल ही इलाक़ाई केन्द्र जाकर लोहा और कोयला लाने को कहा। चारे का प्रश्न बडी जल्दी हल हो गया।

फिर याकोव लुकीच ने बोलने की अनुमति मांगी.

"भाइयो, हमें बड़े ध्यान के साथ इस बात पर विचार करना चाहिये कि क्या, कहा और कैसे बोयें, और किसी अनुभवी, ज्ञानी को काश्तकार चुनना चाहिये। सामूहिक फ़ार्म से पहले हमारे यहा पांच कृषि सलाहकार रह चुके हैं पर काम उनका दिखायी नही देता। किसी बूढ़े कज़्ज़ाक को काश्तकार चुनना चाहिये जो अपनी पाचों उंगलियों की तरह हमारी ज़मीन के चप्पे-चप्पे को जानता हो। जब तक नयी चकबंदी नही हो जाती तब तक वह हमारे बड़ा काम आयेगा! मै तो यह मानता हूं: अब लगभग सारा गाव सामूहिक फ़ार्म में शामिल हो गया। धीरे-धीरे लोग शामिल होते ही जा रहे हैं। कोई तीन-चार दर्जन

घर ही ऐसे बचे है जो अलग खेती करते है, ये भी आज नही तो कल शामिल हो ही जायेगे इसलिये हमे विज्ञान के आधार पर खेती करनी चाहिये, जैसा वह कहता है वैसे ही। मेरे कहने का मतलब यह है कि जो दो सौ देस्यातीना हम जोतनेवाले है उनमे से आधे पर ख्वेर्सोन विधि से काम करना चाहिये। इस बसत मे एक सौ दस देस्यातीना अछूती जमीन जोतनेवाले है न, तो चलो उसी पर ख्वेर्सोन विधि को आजमाकर देखे।"

"हमने इसके बारे मे सुना तक नही!"

"यह ख्वेर्सोन किस बला का नाम है?"

"तुम हमे जरा विस्तार से समझाओ," मन ही मन अपने इतने अनुभवी प्रबधक के ज्ञान पर गर्व करते हुए दवीदोव बोला।

"इस विधि को अमरीकी विधि भी कहते है। यह बडी दिलचस्प है और बडी अक्ल की है! उदाहरण के लिये इस साल उस पर आप मकई या सूरजमुखी बोते है, आम बोवाई की तुलना मे खेत मे आधी पक्तिया होगी इसलिये फसल भी पचास प्रतिशत कम होगी। मकई के भुट्टे तोड लो, या सूरजमुखी के फूल उतार लो पर खूटिया छोड दो और इसी पतझड मे खूटियो के बीच की जमीन मे रबी का गेहू बो दो।"

"पर उसे बोयेगे कैसे? बोवाई की मशीन तो खूटिया तोड देगी?" मह खोलकर ये बाते सुनते कोद्रात माइदान्निकोव ने पूछा।

'क्यो तोड देगी? पक्तियो के बीच तो फासला बडा है, वह खूटियो को नही छुएगी। हा, तो खूटियो के बीच की जगह मे बर्फ जमा हो जायेगी। बसत मे वह धीरे-धीरे पिघलेगी और जमीन को काफी नमी मिलेगी। और बसत मे जब गेहू उग आयेगा, ये खूटिया हटाकर निराई कर दी जायेगी हैं। बडी रोचक विधि है। हालाकि मैंने इसे खुद तो पहले आजमाया नही पर इस साल इरादा रखता था। सौ फी सदी खरी है यह विधि।"

"यह हुई न बात! मै समर्थन करता हू! दवीदोव मेज के नीचे पैर दबाकर नागूल्नोव से फुसफुसाकर बोला "देखो? और तुम इस आदमी के खिलाफ थे "

"मै अब भी हू "

"यह तो हठधर्मी है! अडियल टट्टू की तरह "

सभा में याकोव लुकीच का प्रस्ताव मान लिया गया। इसके बाद और भी ढेरों छोटे-मोटे प्रश्नों का निपटारा किया गया। सभा समाप्त होने के बाद दवीदोव और नागूल्नोव ग्राम-सोवियत की ओर जा ही रहे थे कि उसके अहाते से चमड़े की जैकेट के बटन खोले मंझले क़द का एक युवक निकला और तेज़ी से उनकी ओर आने लगा। तेज़ हवा के थपेड़ों का सामना करते हुए चारख़ाने की शहरी टोपी पहने वह तेज़ी से उनके पास आ रहा था।

"शहर से कोई आया है," नागूल्नोव ने आंखें मिचमिचाकर कहा।

युवक ने पास आकर फ़ौजियों की तरह सेल्यूट किया।

"आप ग्राम-सोवियत से तो नहीं हैं?"

"आप किस से मिलना चाहते हैं?"

"यहां की पार्टी इकाई के सचिव या सोवियत के अध्यक्ष से।"

"मैं इकाई-सचिव हूं और यह सामूहिक फ़ार्म के अध्यक्ष।"

"बहुत अच्छा। कामरेड, मैं प्रचार दल का हूं। अभी-अभी पहुंचे हैं, सोवियत में आपकी प्रतीक्षा कर रहे है।"

नकचिपटे, गेहुए चेहरेवाले युवक ने दवीदोव पर नज़र दौडायी और मुस्कराकर पूछा:

"कामरेड, तुम दवीदोव तो नहीं हो?"

"हां, दवीदोव हूं।"

"मैंने तुम्हें पहचान लिया। दो-एक हफ़्ते पहले मंडल की पार्टी समिति में हम मिले थे। मैं शहर में तेल पेरने की मिल में काम करता हूं।"

तभी दवीदोव समझा कि जब यह युवक पास आया तो क्यों उसके नथुनों में सूरजमुखी के तेल की मोहक, मधुर सुगंध भर गयी। युवक की चमड़े की जैकेट में यह सुगंध सदा के लिये रम गयी थी।

२२

ग्राम-सोवियत के ओसारे पर दवीदोव की ओर पीठ किये नाटे क़द का एक आदमी खड़ा था। उसने नीची कुबानी टोपी और भेड़

की खाल का काला ओवरकोट पहन रखा था। कुबानी टोपीवाले आदमी के कधे और पीठ इतनी चौडी थी कि उसके पीछे से दरवाज़े की चौखट तक नही दिखायी दे रही थी। वह अपनी छोटी, मजबूत टागो को चौडा करके खडा था, उसकी तुलना स्तेपी मे उगनेवाले शक्तिशाली एल्म वृक्ष से की जा सकती थी। लगता था कि रीछ जैसी भारी भरकम काया के बोझ से उसके घिसी एडियो-वाले बूट ओसारे के फर्श मे धसते जा रहे है।

"यह हमारे प्रचार-दल के नायक, कामरेड कोन्द्रात्को है," दवीदोव के साथ-साथ चलते युवक ने कहा। और उसके होठो पर मुस्कान को देखकर वह फुसफुसाया "आपस मे हम मजाक मे 'पापा क्वाद्रान्को*' कहकर पुकारते है। वह लुगान्स्क के रेलवे इजन कारखाने म खरादी है। उम्र मे तो बाप के बराबर है पर छोरा चोखा है!"

तभी कोन्द्रात्को ने वार्तालाप सुनकर दवीदोव की ओर अपना लाल चेहरा मोडा, उसकी भूरी लटकी मूछो के नीचे श्वेत दतावली चमकी। वह मुस्कराते हुए उक्राइनी भाषा मे बोला

"लगता है तुम्ही सोवियत सत्ता के प्रतिनिधि हो? नमस्ते, भाइयो!"

"नमस्ते, कामरेड। मै सामूहिक फार्म का अध्यक्ष हू और यह पार्टी इकाई का सचिव।"

"बहुत अच्छा! आइये अदर चले, मेरे लडके बडी देर से बाट जोह रहे है। चूकि मै इस प्रचार-दल का मुखिया हू, इसलिये आइये आपके साथ दो बाते हो जाये। नाम मेरा कोन्द्रात्को है और अगर मेरे जवान आपको कहेगे कि मेरा नाम क्वाद्रात्को है तो आप कृपया उन पर विश्वास न करे, वे इतने शैतान है कि कुछ पूछिये मत " वह आडा होकर दरवाज़े मे घुसता हुआ अपनी गरजती आवाज मे बोला।

ओसिप कोन्द्रात्को बीस वर्ष से अधिक समय से दक्षिणी रूस मे काम कर रहा था। उसने पहले तगनरोग फिर रोस्तोव-ऑन-दोन, मरिऊपोल और अतत लुगान्स्क मे काम किया, वही युवा सोवियत

* रूसी मे क्वाद्रात का अर्थ होता है चौकोर। – अनु०

सत्ता को अपने चौडे कधो का सहारा देने के लिये लाल गारद मे भरती हुआ। इतने वर्षो से रूसियो के बीच रहने के कारण वह अपनी उक्राइनी बोली की शुद्धता खो बैठा था पर उसकी शेवचेन्को जैसी, लटकी मूछो को देखकर उसके उक्राइनी मूल का पता लगाया जा सकता था। सन् १६१८ मे वोरोशीलोव की कमान मे दोनेत्सक के खनिको के साथ वह प्रतिक्रातिकारी विद्रोहो की आग मे धधकते कज्जाक गावो से कूच करता त्सारीत्सिन पर चढाई करने गया था और बाद मे, जब गृहयुद्ध के, अतीत की धरोहर बने वर्षो की चर्चा होती, जिनकी प्रतिध्वनि उसके सभी सहभागियो के दिलो-दिमाग मे अमर बन गयी, कोन्द्रात्को विनम्र गर्व के साथ कहता "हमारा क्लीमेन्ती वोरोशीलोव लुगान्स्क का ही है हम एक-दूसरे को अच्छी तरह जानते है, क्या पता फिर कभी मिलने का मौका मिले। वह मुझे फौरन पहचान लेगा! त्सारीत्सिन के पास जब हम श्वेतो से लड रहे थे वह मुझसे हर बार मिलने पर मजाक करता 'क्या हाल-चाल है तुम्हारे, कोन्द्रात्को? तुम अभी जिदा हो बुड्ढे भेडिये?' मै कहता 'जिदा हू, क्लीमेन्ती येफ्रेमोविच, अभी मरने की फुर्सत नही, देखते है कैसे हम दुश्मन का सफाया कर रहे है? पागलो की तरह!' अगर हमारी मुलाकात हुई तो वह फौरन मुझसे लिपट जायेगा,' कोन्द्रात्को विश्वास के साथ अपनी बात पूरी करता।

युद्ध के बाद वह फिर लुगान्स्क पहुचा, वहा यातायात सुरक्षा सेवा मे काम किया, फिर उसे पार्टी-कार्य के लिये भेजा गया और बाद मे वह फिर से कारखाने मे काम करने लगा। वही से पार्टी ने उसे सामूहिकीकरण करनेवाले गावो की सहायता के लिये तामबद किया। पिछले वर्षो मे कोन्द्रात्को पर मोटापा छा गया था। अब उसके साथी उसी ओसिप कोन्द्रात्को को नही पहचान पायेगे जिसने सन् १६१८ मे त्सारीत्सिन के पास की लडाई मे चार कज्जाको और कुबान दस्ते के रिसालदार मामालीगा को गाजर-मूली की तरह काटा था, उसी मामालीगा को जिसे खुद व्रागेल ने अपने हाथो से बहादुरी के लिये सोने के कामवाली चादी की तलवार दी थी। ओसिप पर बुढापा छाने लगा था, चेहरे पर नीली-बैगनी नसो का जाल उभर आया था जिस प्रकार सरपट दौड और थकान से घोडा झाग से ढक जाता है वैसे ही समय ने ओसिप के बाल सफेद कर दिये थे, उसकी लटकी

मूंछों पर भी विश्वासघाती सफ़ेदी क़ब्ज़ा कर बैठी थी। पर मनोबल और शक्ति ने ओसिप कोन्द्रात्को का साथ नही छोड़ा था, और जहां तक निरंतर बढ़ते मोटापे की बात है तो इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। जब उसकी उम्र और बढ़ते मोटापे की ओर इशारा किया जाता वह कहता: "तरास बूल्बा तो मुझसे भी मोटा था, पता है कैसे लड़ता था पोलैंडवालों से? अगर फिर से लड़ना पडा तो भी मैं किसी श्वेत अफ़सर के आसानी से दो टुकड़े कर सकता हूं! और मेरी उम्र पचास की हुई तो क्या? मेरे पिता जी ज़ार के ज़माने में सौ साल जिये थे, मैं तो अब अपनी सोवियत सत्ता में डेढ़ सौ साल जियूंगा!"

कोन्द्रात्को ने आगे-आगे ग्राम-सोवियत के कमरे में प्रवेश किया।

"कृपा करके चुप हो जाओ, नौजवानो! यह सामूहिक फ़ार्म के अध्यक्ष और यह पार्टी इकाई के सचिव हैं। सबसे पहले हमें यहां के हाल-चाल का पता लगाना है तब हम फ़ैसला कर सकेंगे कि हमें क्या करना है। चलो, बैठ जाओ।"

प्रचार-दल के कोई पंद्रह लोग आपस में बातचीत करते हुए बैठने लगे। दो लोग शायद घोड़ों के पास बाहर चले गये। अपरिचित चेहरों में दवीदोव ने तीन इलाक़ाई कार्यकर्त्ताओं को पहचाना: ये थे कृषिशास्त्री, माध्यमिक स्कूल का शिक्षक और डाक्टर। बाक़ी मंडल से आये थे, उनमें से कुछेक फ़ैक्टरियों के मज़दूर लगते थे। लोग अभी कुर्सियां खिसकाकर, गला खंखारते हुए बैठ रहे थे, कोन्द्रात्को दवीदोव के कान में बोला:

"हमारे घोड़ों को घास डालने को कह दो और यह भी कहलवा दो कि गाड़ीवान कही जायें नहीं," और आंख मारकर बोला: "घोड़ों के लिये जई-वई नही मिल सकती?"

"जई नही है, बस बीज बचे हैं," दवीदोव ने उत्तर दिया, उसके रोम-रोम में सिहरन दौड गयी, उसे अपने से घृणा होने लगी।

चारे के लिये सौ पूद से अधिक जई थी पर उसने मना इसलिये किया कि बची जई को आंख की पुतली की तरह बसंत के कृषि-कार्यो के लिये संभालकर रखा जा रहा था। याकोव लुकिच रो-रोकर घोड़ों को (सिर्फ़ प्रबंध-मंडल के घोड़ों को!) एक-एक खप्पर अनमोल अनाज देता, वह भी लम्बी कठिन यात्राओ के लिये।

"यही है टुटपुंजियों की मनोवृत्ति! मुझ पर भी हावी होने लगी . "

दवीदोव ने सोचा। "पहले कभी ऐसा नहीं हुआ था, फ़ैक्ट! मारो गोली... दिलवा दूं जई? नहीं, अब एक बार मना करने के बाद अच्छा नहीं लगता।"

"जौ ही दिलवा दो?"

"जौ भी नहीं है।"

जौ सचमुच नहीं था पर दवीदोव कोन्द्रात्को की मुस्कराती, अर्थपूर्ण नज़रों को देखकर झेंप गया।

"सच कहता हूं जौ नही है।"

"तुम बहुत बढ़िया किसान बन सकते थे... क्या पता कुलक तक बन जाते..." हंसते हुए कोन्द्रात्को बोला पर दवीदोव की भौहें सिकुड़ते देखकर उसने उसे अपनी बाहों में भर लिया और उसे हल्का-सा उठाकर बोला: "अच्छा बस-बस! मैं तो मज़ाक़ कर रहा था। नही है तो नही सही! अपने लिये बचाकर रखो ताकि ढोरों को खिलाने के लिये कुछ हो... अच्छा भाइयो, अब काम की बात करें! मुर्दों की तरह चुप रहो!" दवीदोव और नागूल्नोव को संबोधित करके बोला: "आ-शा है कि आपको यह तो मालूम ही है कि हम काम में आपकी यथा-संभव मदद करने आये है। तो बताइये कि आपके यहां काम कैसे चल रहा है?"

सामूहिकीकरण और बीज भंडार जमा किये जाने के बारे मे दवी-दोव की ब्योरेवार रिपोर्ट मुनकर कोन्द्रात्को बोला:

"हम सब की यहा ज़रूरत नही है," उसने कराहकर जेब से डायरी और स्थानीय नक़्शा निकाला और उम पर उंगली सरकाकर बोला: "हम तुब्यान्स्की जायेंगे। मैं देखता हूं वह गांव ज़्यादा दूर नहीं है। और आपके यहां चार लोगों की टोली छोड़ देंगे, वे काम में आपकी मदद करेंगे। और जहां तक जल्दी से बीज भंडार जमा करने की बात है तो मैं आपको यह सलाह देना चाहता हूं: शुरू में आप सभा बुलाये, किसानों को सब कुछ अच्छी तरह समझा दें और सिर्फ़ इसी के बाद अपना व्यापक अभियान छेड़ें," वह धीरे-धीरे विस्तार से बोल रहा था।

दवीदोव को उसकी बातें सुनकर बड़ा आनंद आ रहा था, कभी-कभी वह उक्राइनी भाषा से अच्छी तरह परिचित न होने के कारण कुछ बातों को स्पष्ट रूप से समझ नही पा रहा था, पर वह अच्छी

तरह महसूस कर रहा था कि कोन्द्रात्को बीज के लिये अनाज जमा करने के अभियान के बारे मे बिलकुल सही बात कह रहा है। और कोन्द्रात्को ने उसी तरह आराम से वह नीति समझायी जो गाव के उन निजी खेती करनेवाले और समृद्ध किसानो के सबध में चलायी जानी थी अगर वे अड़ियल रुख अपनाये या सामूहिक फार्म द्वारा बीज के लिये अनाज जमा करने के काम का किसी न किसी तरह प्रतिरोध करने का प्रयास करे, उसने सबसे अधिक कारगर विधियो के बारे मे बताया जो अन्य ग्राम-सोवियतो मे प्रचार-दल द्वारा अर्जित अनुभव पर आधारित थी। वह बडी नम्रता मे बोल रहा था, उसकी बातो मे इसकी झलक तक नही थी कि वह उन्हे कोई निर्देश देना चाहता हो या सिखाना चाहता हो, बीच-बीच में वह कभी दवीदोव की राय पूछता तो कभी रजम्योत्नोव की और कभी नागूल्नोव से सलाह माग-ता। यह काम इस तरह करना चाहिये। और आप ग्रेम्याची के लोगो का क्या विचार है? मै भी ठीक यही सोचता हू!"

और मुस्कराता दवीदोव खरादी कोन्द्रात्को के लाल नीली नसो से ढके चेहरे का, उसकी धमी आखो की शैतानी भरी चमक को देखते हुए सोच रहा था 'बडे दिमागवाला है तू शैतान! हमारी पहल को दबाना नही चाहता, मानो हमारी सलाह पर चलना चाहता है, पर इसके सही दृष्टिकोण पर आपत्ति तो करके देखो, चारो खाने चित्त कर देगा! कसम से, मै ऐसे लोगो को देख चुका हू!"

एक और मामूली घटना ने कामरेड कोन्द्रात्को के प्रति उसके प्रेम को और गहरा बना दिया। रवाना होने से पूर्व कोन्द्रात्को ने तीन सा-थियो के साथ ग्रेम्याची में रुके टोली नायक को एक ओर बुलाया, उनके बीच यह बातचीत हुई

"तुमने ऊपर से क्यो रिवाल्वर लटका रखा है? झट से उतार दो!"

"पर, कामरेड कोन्द्रात्को, आखिर कुलको मे वर्ग-सघर्ष जो चल रहा है "

"तुम मुझे क्या समझा रहे हो? कुलक है तो क्या हुआ? तुम प्रचार करने आये हो, और अगर कुलको से डरते हो तो रिवाल्वर अपनी जेब मे रख सकते हो पर ऊपर लटकाने की हिम्मत मत करना। बडा आया है अक्लमद कही का! बच्चो की तरह रिवाल्वर लटकाकर

शेखी बघारता है... फ़ौरन इसे जेब में छिपा लो, नहीं तो कुलकों का कोई चमचा कहेगा: भले लोगो, देखो तो कैसे आये हैं प्रचार करने, पिस्तौलें लटकाकर!" और दांत भींजकर बोला: "बेवक़ूफ़ कहीं का..."

स्लेजगाड़ी में बैठते हुए उसने दवीदोव को पास बुलाया और उसके ओवरकोट के बटन से खेलता हुआ बोला:

"मेरे जवान जी जान से काम करेंगे! आप भी इसी तरह काम करें ताकि जल्दी हो जाये पूरा। मैं तुब्यान्स्की में हूंगा, अगर कुछ हो जाये तो ख़बर कर देना। वहां पहुंचकर शायद आज ही नाटक दिखाना पड़ेगा। देखने लायक़ है कि कैसे मैं कुलक की भूमिका निभाता हूं! मेरी काया तो स्टेज पर जीते-जागते कुलक की तस्वीर प्रस्तुत करने का मौक़ा देती है... देखो तो बुढ़ापे में कोन्द्रात्को को क्या करना पड़ रहा है! और जई के बारे में मत सोचो, मैं बुरा बिलकुल नही माना." और मुस्कराकर उसने स्लेज की सीट पर पीठ टिका दी।

"इसका तो दिमाग़ भी इतना बड़ा है जितने कि इसके कंधे और टांगें!" रज़म्योत्नोव खिलखिलाकर हंस रहा था। "बिलकुल ट्रैक्टर है!.. वह अकेला ही तीन जोड़ी बैलों से ज़्यादा हल खींच सकता है। हैरानी होती कि ऐसे लोग किस मिट्टी के बने होते है, क्यों, तुम्हारा क्या ख़याल है, मकार?"

"तुम बुड्ढे श्चुकार की तरह बातूनी बनते जा रहे हो!" वह झुंझलाकर बोला।

२३

याकोव लुकीच के घर मे येमाऊल पोलोवत्सेव सरगर्मी से वसत में विद्रोह की तैयारिया कर रहा था। सारी-सारी रात मुर्ग़ों की बांग तक वह अपने कमरे में बैठा कुछ लिखता रहता, कापिंग पेंसिल से कोई नक़्शे बनाता रहता, पढ़ता रहता। कभी-कभी जब याकोव लुकीच उसके कमरे में झांकता तो उसे मेज़ के ऊपर चौड़े माथेवाला सिर झुकाये पोलोवत्सेव होंठ हिलाकर कुछ पढ़ता दिखायी पड़ता। पर कभी-कभी याकोव लुकीच उसे गहरे सोच में डूबा पाता। ऐसे क्षणों में पोलोवत्सेव प्रायः मेज़ पर कोहनियां टिकाकर अपने झड़ते सफ़ेद-से

बालों में उंगलियां घुसेड़े बैठा होता। उसके भिंचे जबड़े ऐसे चलते मानो वह किसी अत्यंत कड़ी चीज़ को चबा रहा हो, आंखे अधमुंदी होतीं। दो तीन बार पुकारे जाने के बाद ही वह सिर उठाता, उसकी छोटी, जड़ पुतलियों में झुंझलाहट चमकती। वह गुर्राकर पूछता: "बोल क्या चाहिये?" ऐसे क्षणों में याकोव लुकीच उससे बहुत डरता और अपनी इच्छा के विपरीत उसका और भी आदर करने लगता।

गांव की, सामूहिक फ़ार्म की घटनाओं के बारे में पोलोवत्सेव को रोज़ सूचना देना याकोव लुकीच का कर्तव्य हो गया। वह बड़ी ईमानदारी से अपना कर्तव्य निभाता पर रोज़ पोलोवत्सेव को हताश करनेवाली ख़बरें लाता, जिनसे उसके गालों पर झुर्रियां गहरी ही होती जाती।

जिस दिन ग्रेम्याची से कुलकों को निर्वासित किया गया उस रात पोलोवत्सेव बिल्कुल भी नही सोया। उसके भारी क़दमों की दबी-दबी चाप भोर तक सुनायी देती रही। और याकोव लुकीच जब दबे पांव उसके कमरे के दरवाज़े के पास जाता तो उसे दांत पीसकर यह बड़बड़ाते सुनता:

"जीना हराम कर दिया! जड़ें काट रहे हैं मारना चाहिये! सबको मार डालना चाहिये! बेरहमी से!"

चुप होकर, नमदे के बूटों में अपने पैरों को संभाल-सभालकर रखते हुए फिर चहलक़दमी करने लगता, बदन खुजाने की आवाज़ सुनायी पड़ती, वह आदतन अपनी छाती खुजाता और फिर दबी-दबी आवाज़ में कहता:

"मारो! काटो!.." और आर्द्र स्वर में बोलता:

"हे प्रभु, सर्वशक्तिमान, सर्वदृष्टा, न्याय के रक्षक!.. मदद करो!.. कब आयेगी वांछित घडी?.. प्रभु, बना डालो इन्हें अपने कोप का भाजन!"

चिंतित याकोव लुकीच ने पौ फटने पर कमरे के दरवाज़े में छेद पर फिर कान लगाया: पोलोवत्सेव प्रार्थना बुदबुदाता, घुटने टेककर कराहता हुआ सिर नवा रहा था। फिर बत्ती बुझाकर लेट गया और उनीद में एक बार फिर फुसफुसाकर बोला: "एक-एक को मार डालना चाहिये!" और कराह पड़ा।

कुछ दिन बाद याकोव लुकीच को रात के समय खिड़की खटखटाने की आवाज़ सुनायी पड़ी, वह दालान में निकला।

"कौन है ?"

"खोलो दरवाजा !"

"कौन है यह ?"

"अलेक्सांद्र अनीसीमोविच से मिलना है " कोई बाहर से फुस-फुसाया।

"किनसे ? यहां ऐसा कोई नहीं रहता।"

"उन्हें कह दो कि मैं चोर्नी के पास से आया हूं, चिट्ठी लेकर।"

याकोव लुकीच ने कुछ रुककर दरवाजा खोल दिया "जो होना होगा सो होगा !" हुड से सिर ढके एक नाटे कद के व्यक्ति ने प्रवेश किया। पोलोवत्सेव उसे अपने कमरे में ले गया और दरवाजा कसकर बंद कर दिया। कमरे से कोई डेढ़ घंटे तक दबे स्वर में, सजीव वार्तालाप सुनायी देता रहा। इतने में याकोव लुकीच के बेटे ने संदेशवाहक के घोड़े को घास डाली, जीन की पेटी ढीली की और लगाम उतार दी।

फिर तो रोज घुड़सवार हरकारे आने लगे पर अब वे आधी रात को नहीं बल्कि पौ फटने से पहले आते, रात के कोई तीन-चार बजे। शायद वे पहलेवाले की अपेक्षा काफी दूर स्थानों से आते थे।

इन दिनों याकोव लुकीच बड़ी अजीब-सी दोहरी जिंदगी जी रहा था। सुबह सवेरे वह सामूहिक फार्म के दफ्तर जाता, दैवीदोव और नागूल्नोव के साथ, बढ़इयों और टोली-नायकों के साथ बातें करता। ढोरों के लिये बाड़े बनाने, अनाज के बीजों की तैयारी, कृषि उपकरण की मरम्मत की चिंताएं उसे किसी और बात के बारे में सोचने का वक्त नहीं देतीं। कामकाजी याकोव लुकीच ने अनायास ही अपने को मनपसंद काम की हड़बड़ी और ढेरों चिंताओं से घिरा पाया, बस फर्क यही था कि अब वह अपनी निजी समृद्धि की खातिर नहीं बल्कि सामूहिक फार्म के भले के लिये गांव-शहर की दौड़धूप में व्यस्त रहता। पर वह अपने मनहूस विचारों से ध्यान बटाने के वास्ते इसके लिये भी राजी था। वह काम में रुचि लेता, वह उसे सहर्ष करता, दिमाग में तरह-तरह की योजनायें उत्पन्न होतीं। बाड़ों को गर्म बनाने, स्थायी अस्तबल के निर्माण में उत्साह से जुट गया, सामूहिकीकृत खत्तियों को स्थानांतरित करने और सामूहिक फार्म की नयी खत्ती के निर्माण का निर्देशन करता। और शाम को जैसे ही काम की दौड़धूप थम जाती और घर जाने का समय आता तो यही सोचकर याकोव लुकीच का दिल हौल

जाता कि वहा कब्र पर बैठे गिद्ध की तरह मनहूस और एकाकी, भयावह पोलोवत्सेव उसकी बाट जोह रहा है। उसका अग-अग शिथिल हो जाता, शरीर मे असहनीय थकान छा जाती वह घर पर लौटता और रात का खाना खाने मे पहले पोलोवत्सेव के पास जाता।

"बोलो," वह आदेश देता और सिगरेट सुलगाकर आतुरता से उसकी बात सुनने की प्रतीक्षा करने लगता।

और याकोव लुकीच उसे सामूहिक फार्म की दौडधूप मे बीते दिन के बारे मे विस्तार से बताता। पोलोवत्सेव प्राय बिना कुछ बोले चुपचाप उसकी बाते सुनता, बस एक बार जब याकोव लुकीच ने उसे बताया कि कुलको के कपडे और जूते गरीबो को बाट दिये गये है वह तिलमिलाकर गुस्से मे बोला

"बसत मे उन सबके गले काट देगे जिन्होने लिये है! उन सभी के इन सभी हरामियो के नामो की फेहरिस्त बना लो! सुना?'

'फेहरिस्त मेरे पास है, अलेक्साद्र अनीसीमोविच।"

"इस समय तुम्हारे पास है?"

हा मेरे पास ही है।"

"इधर लाओ!'

उसने सूची लेकर करीने से उसकी नकल उतारी, लोगो के पूरे नाम और उन्हे मिली चीजो का ब्योरा लिखा और जिन लोगो को कपडे या जूते मिले उनके नाम के आगे उसने काटे का निशान बना दिया।

पोलोवत्सेव से बातचीत करके याकोव लुकीच खाना खाने जाता और सोने से पहले फिर उसके पास आकर अगले दिन के लिये निर्देश पाता।

पोलोवत्सेव के कहने पर ही ८ फरवरी को याकोव लुकीच ने दूसरी टोली के कार्य-निरीक्षक को बैलो के बाडो के लिये रेत लाने के वास्ते चार छकडे और लोगो को नदी पर भेजने का आदेश दिया। रेत आ गयी। याकोव लुकीच ने बैलो के बाडे के कच्चे फर्श को खूब अच्छी तरह साफ करके उस पर रेत बिछाने का आदेश दिया। जब काम समाप्त हो रहा था तब दवीदोव दूसरी टोली के बाडे मे आया।

"तुम रेत से यह क्या कर रहे हो?" उसने टोली के बैल-पालक देमीद घुन्ने से पूछा।

"बिछा रहे हैं।"

"किसलिये।"

सन्नाटा।

"मैं पूछ रहा हूं, किसलिये?"

"पता नहीं।"

"किसने यहां रेत डालने को कहा है?"

"प्रबंधक ने।"

"किसलिये बोला था वह?"

"सफ़ाई के लिये... कुतिया की औलाद, नयी-नयी बातें सोचता रहता है!"

"यह तो बहुत अच्छी बात है, फ़ैक्ट! सचमुच, अब सफ़ाई रहेगी, नहीं तो यहां गोबर के ढेर और बदबू ही रहती है, बैलों को गंदगी से कोई बीमारी भी लग सकती है। उन्हे भी सफ़ाई की ज़रूरत है, ढोरों के डाक्टर तो यही कहते हैं। तुम बेकार ही बड़बड़ा रहे हो। देखो तो कितना अच्छा लग रहा है बाडा, साफ़-सुथरा, रेत बिछी है, क्यों? तुम्हारा क्या ख़याल है?"

पर घुन्ने मे दवीदोव का वार्तालाप जुड़ा नही, वह बिना कुछ बोले चोकर की कोठरी में चला गया और दवीदोव मन ही मन अपने प्रबंधक की पहलक़दमी का अनुमोदन करता खाना खाने चला गया।

सांझ ढलने से पहले ल्युबीश्किन दौड़ा-दौड़ा उसके पास आया और ग़ुस्से में बोला·

"मतलब आज से बैलों को बिचाली की जगह रेत डाल रहे है?"

"हां, रेत।"

"अरे इम ओस्त्रोव्नोव को क्या हो गया? क्या उसे पागल कुत्ते ने काटा है? कौन ऐसे करता है? और तुम कहां देख रहे हो कामरेड दवीदोव?.. क्या तुम ऐमी मूर्खता का समर्थन करते हो?"

"ल्युबीश्किन, तुम परेशान मत होओ! बात सफ़ाई की है और ओस्त्रोव्नोव ने ठीक ही किया है। सफ़ाई से बीमारी का डर नही रहेगा।"

"यह भी कैसी सफ़ाई है, इसे क्या चाटना है?! बैल कहां लेटेगा? देखते नहीं कितना ज़बरदस्त पाला पड़ रहा है! पुआल पर तो गर्मी रहती है, और रेत पर तुम ज़रा लेटकर तो देखो!"

"नहीं, भई, तुम कृपया यह सब छोड़ दो! मवेशी की देखरेख का पुराना तरीक़ा त्याग दो! हमें सब कुछ वैज्ञानिक आधार पर करना चाहिये।"

"भला, यह कैसा आधार है? अरे!.." ल्युबीश्किन अपनी टोपी को पिंडली पर चाबुक की तरह पटककर बाहर दौड़ गया। उसका चेहरा तमतमाकर लाल हो गया था।

और अगले दिन सुबह तेइस बैल फर्श से नहीं उठ सके। रात को जमकर पत्थर बनी रेत बैलों के मूत्र को नही सोख पायी, बैल गीले फर्श पर ही पसर गये और सुबह तक जमी बर्फ़ से चिपक गये .. कुछेक पत्थर बनी रेत पर खाल के चिथडे चिपके छोडकर उठ गये, चार की फ़र्श मे चिपकी पूंछे टूट गयी और बाक़ी अकडकर बीमार पड गये।

याकोव लुकीच ने पोलोवत्सेव के आदेश को पूरा करने मे कुछ ज़्यादा ही लगन दिखा दी और प्रबंधक का पद खोते-खोते बचा। इसकी पूर्वसंध्या को पोलोवत्सेव ने कहा था: "इस तरीक़े मे इनके बैलों को ठंड से मरवा दो! ये बेवकूफ़ कर लेंगे यक़ीन कि तुमने यह सफ़ाई की ख़ातिर किया था। पर देखो घोड़ों का तुम ख़याल रखना ढग से ताकि वे हरदम तैयार रहें।" और याकोव लुकीच ने यह आदेश पूरा कर दिया।

सवेरे दवीदोव ने उसे अपने कमरे में बुलाया और दरवाज़े की कुडी चढ़ाकर आंखें मिलाये बिना पूछा:

"यह तुमने क्या किया?.."

"ग़लती हो गयी, प्यारे कामरेड दवीदोव! मैं तो. भगवान की क़सम . अपने बाल नोचने को तैयार हूं . "

"यह तूने क्या किया, बिच्छू! " दवीदोव के चेहरे का रग उड़ गया, उसने याकोव लुकीच की ओर क्रोध के कारण आंसुओं से भरी आखे पलटी। "तोड़-फोड करता है? तुझे पता नही कि थान में रेत नही बिछानी चाहिये? नही जानता था कि बैल फ़र्श से चिपक जायेंगे?"

"मै तो बैलों के भगवान गवाह है, मैं नही जानता था!"

"बंद कर मुंह! . मैं कभी विश्वास नही करूंगा कि तेरे जैसा तजुर्बेवाला आदमी नहीं जानता था!"

याकोव लुकीच रो पडा, वह नाक सड़ोप-सड़ोपकर बस यही बुद-बुदाये जा रहा था:

"सफ़ाई रखना चाहता था .. ताकि गोबर न जमा हो... मालूम नही था, सोचा नही कि ऐसा हो जायेगा..."

"जाओ, उशाकोव को चार्ज दे दो। तुम्हारे पर मुक़दमा चलायेंगे।"

"कामरेड दवीदोव! "

"निकल जाओ यहा मे!"

याकोव लुकीच के जाने के बाद दवीदोव ने शात होकर मारी घटना के बारे में फिर से मोचा। उसे अब लग रहा था कि याकोव लुकीच पर तोड़-फोड का सदेह करना बेढब लगता है। आखिर ओस्त्रोव्नोव कुलक तो था नही। अगर कोई उमे कभी-कभी कुलक कहता भी था तो इमका कारण व्यक्तिगत चिढ थी। एक बार प्रबधक के पद पर ओस्त्रोव्नोव की नियुक्ति के कुछ ममय बाद ल्युबीश्किन ने बात ही बात मे कहा था "ओस्त्रोव्नोव खुद भूतपूर्व कुलक है!" दवीदोव ने तब फ़ौरन जाच करके पता लगाया कि बहुत साल पहले याकोव लुकीच मचमुच मे काफ़ी अमीर किसान था पर एक बार फ़सल मारी जाने के कारण वह तबाह होकर मंझोला किमान बन गया। दवीदोव काफी सोच-समझकर इस निष्कर्ष पर पहुचा कि बैलों की दुर्गति मे याकोव लुकीच का दोष नही, बैलो के बाड़े मे उसने रेत बिछाने का आदेश या तो मफाई की इच्छा मे दिया होगा या नवाचार की अपनी उत्कठा के कारण। "नही, अगर वह तोड-फोड़ करनेवाला होता तो इतनी लगन से काम न करता और फिर उसके अपने बैलो की जोड़ी को भी नुकमान हुआ है इसमे," दवीदोव ने मोचा। "नही, ओस्त्रोव्नोव विश्वसनीय सामूहिक किसान है और रेतवाली घटना, दुखद भूल मात्र है।" उमे याद आया कि याकोव लुकीच ने कितनी कुशलता और प्रेम से गर्म बाडो का प्रबध किया, चारे की कितनी किफ़ायत करता था, एक बार जब सामूहिक फ़ार्म के तीन घोड़े बीमार पड़ गये वह शाम से सवेरे तक अस्तबल में रहा, उसने खुद अपने हाथों से घोड़ों को अलमी के तेल का एनीमा लगाया ताकि उनको दर्द मे राहत मिले, और फिर उसी ने तो सबसे पहले घोड़ों की बीमारी के दोषी — पहली टोली के साईस कुझेन्कोव को सामूहिक फ़ार्म से निकालने का प्रस्ताव रखा, जिसने पूरे हफ़्ते घोड़ों को सिर्फ़ रई की पुआल खिलायी। दवीदोव

ने ग़ौर किया कि घोड़ो का ख़याल याकोव लुकीच से अधिक और कोई नही करता। यह सब याद करके दवीदोव को शर्म आने लगी कि उसने बेकार ही गुस्सा किया। वह अपने को प्रबंधक के समक्ष दोषी महसूस करने लगा। उसे यह सोचकर बड़ा अटपटा लगा कि वह एक अच्छे सामूहिक किसान, फ़ार्म के प्रबंध-मडल के गणमान्य सदस्य पर इतनी बुरी तरह चिल्लाया और तो और उस पर तोड़-फोड़ का संदेह तक कर बैठा जबकि वह सिर्फ़ असावधानी का ही दोषी था। "क्या बकवास है!" दवीदोव बालो को सहलाकर उठा और कमरे से बाहर निकला।

याकोव लुकीच चाबियों का गुच्छा पकडे, लेखापाल से बात कर रहा था, उसके होंठ कांप रहे थे। ..

"ओस्त्रोव्नोव, सुनो इधर. तुम चार्ज मत सौंपो, काम जारी रखो। पर फिर कभी ऐसी बात हुई . तो, समझ लो। अच्छा, इला-काई केन्द्र से जानवरो के कपाउडर को बुलवा लो और टोली-नायकों से कह देना कि घायल बैलों से काम नही करवाये।"

सामूहिक फ़ार्म को क्षति पहुचाने की याकोव लुकीच की पहली कोशिश सफल रही। पोलोवत्सेव ने कुछ समय के लिये ओस्त्रोव्नोव को छुट्टी दे दी क्योंकि वह दूसरे काम में व्यस्त था उसके पास हमेशा की तरह रात को एक नया आदमी आया। उसने छकड़ा रवाना किया और घर में प्रवेश किया। पोलोवत्सेव फौरन उसे अपने कमरे मे लिवा ले गया और आदेश दिया कि कमरे में कोई घुसे नही। वे बडी देर तक बाते करते रहे और अगले दिन सुबह को पोलोवत्सेव ने याकोव लुकीच को अपने पास बुलाया। वह बड़ा खुश नज़र आ रहा था।

"आओ मेरे प्यारे, याकोव लुकीच, इनसे मिलो, यह हमारे संघ के सदस्य, हमारे जुझारू साथी सेकेंड लेफ़्टिनेंट वात्सलाव आवगुस्तोविच ल्यात्येवस्की है, कज़्ज़ाक फौज के ख़ोरूझी के बराबर है इनका ओहदा। तुम इनका जी-जान से ख़याल रखना। और यह घर का मालिक, कदीमी कज़्ज़ाक है पर आजकल सामूहिक फ़ार्म का प्रबंधक है. मतलब अब सोवियत कर्मचारी है .."

सेकेंड लेफ़्टिनेंट ने पलंग से उचककर याकोव लुकीच की ओर चौड़ा गोरा हाथ बढ़ाया। देखने में वह कोई तीस-एक वर्ष का लगता था, चेहरा पीला-सा और बदन छरहरा। उसके पीछे की ओर कढ़े काले

घुंघराले बाल साटन की क़मीज़ के खड़े कालर तक लटके थे। तने हंसमुख होंठों के ऊपर हल्की छल्लेदार मूंछें थी। बायी आंख शायद गोला फटने से लगी अंदरूनी चोट के कारण अधखुली रह गयी थी। आंख के नीचे की सूखी, मृत चमड़ी पतझड़ में झड़े निर्जीव पत्ते की तरह सिकुड़ी हुई थी। पर यह अधखुली आंख भूतपूर्व सेकेंड लेफ़्टिनेंट ल्यात्येवस्की के हंसमुख, चचल चेहरे को बिगाड़ने के बजाये और अधिक चंचल बना देती थी। लगता था कि वह बस अभी अपनी बादामी आंख मारकर खिलखिलाकर हंस पडेगा। उसने जान-बूझकर ढीले-ढाले कपडे पहन रखे थे, वे उसको उठने-बैठने मे कोई दिक्कत नही देते थे और उसकी बांकी चाल को भी नहीं छिपाते थे।

उस दिन पोलोवत्सेव असामान्य रूप से हंसमुख और याकोव लुकीच तक पर बड़ा कृपालु लग रहा था। शीघ्र ही औपचारिकता की बाते छोड़कर उसने ओस्त्रोव्नोव की ओर अपना चेहरा घुमाया और बोला

"सेकेड लेफ्टिनेंट ल्यात्येवस्की कोई दो हफ़्ते के लिये तुम्हारे यहा रहेगे और मै आज अधेरा होते ही चला जाऊगा। वात्सलाव आवगुस्तोविच की हर जरूरत पूरी करना, इनके हुक्म को मेरा हुक्म मानकर पूरा करना। समझे? यह हुई न बात याकोव लुकीच मेरे!" और ओस्त्रोव्नोव के घुटने पर हाथ रखकर बोला "जल्दी ही शुरू करनेवाले हैं! बस थोडा-सा और सब्र करो। हमारे लोगों को कह देना कि कुछ धीरज रखे। अच्छा अब जाओ, हमे अभी और भी बाते करनी है।"

लगता है कि कोई असामान्य बात हो गयी है जो पोलोवत्सेव को दो सप्ताह के लिये ग्रेम्याची मे जाने को विवश कर रही है। याकोव लुकीच कारण जानने को बडा आतुर था। इस लक्ष्य से वह उसी हाल मे गया जहा से कभी पोलोवत्सेव ने दवीदोव के साथ उसकी बातचीत को चोरी मे सुना था। उसने पतले पार्टीशन पर कान टिकाया। कमरे की दीवार के पीछे हो रहा वार्तालाप उसे बडी मुश्किल से सुनायी पड़ रहा था

ल्यात्येवस्की: "बेशक, आपको बीकादोरोव से संपर्क करना चाहिये   हिज़ एक्सीलेंसी नि:संदेह, मिलने पर आपको बता देंगे कि योजना. इससे अच्छी बात क्या हो सकती! साल्स्की मडल मे. बख्तरबंद ट्रेन . हार का मुंह देखने की हालत में ..."

पोलोवत्सेव: "श-श ऽऽ!"

ल्यात्येवस्की : "आशा है, कोई हमें सुन तो नहीं रहा?"

पोलोवत्सेव : "फिर भी... पूरी गोपनीयता रहनी चाहिये..."

ल्यात्येवस्की (और भी धीरे बोलने लगा और याकोव लुकीच को उसकी बातों के कुछ अंश ही सुनायी पड़ रहे थे) : "पराजय... बेशक... अफ़ग़ानिस्तान... उनकी मदद से बचने की..."

पोलोवत्सेव : "पर पैसे... ग०प०उ० ." (इसके बाद बड़बड के अलावा कुछ नही सुनायी दिया)।

ल्यात्येवस्की : "एक रास्ता यह है: सीमा पार करने... मीन्स्क में . बचकर... मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि सीमा रक्षक... हेडक्वार्टर के विभाग में ज़रूर मिलेगे... कर्नल हैं, मैं जानता हूं नाम... छिपने की जगह... अरे यह तो बड़ी ज़बरदस्त मदद होगी! ऐसा संरक्षण... आख़िर बात वित्तीय सहायता की नहीं . ."

पोलोवत्सेव : "और ख़ास राय?"

ल्यात्येवस्की : "मुझे पूरा विश्वास है कि जनरल दोहरायेगे... बहुत! मुझे मुह-ज़बानी कहने का आदेश मिला कि... मामला बहुत गभीर है. मौक़े को हाथ मे न जाने देना चाहिये..."

उनकी आवाज़ें फुसफुसाहट मे बदल गयी और याकोव लुकीच, जो उनके वार्तालाप के अंशों मे कुछ समझ न पाया, उसांस छोड़कर सामूहिक फ़ार्म के दफ्तर चला गया। और फिर से, जब वह तीन के मकान के पास पहुचा और उसकी नज़रे वहा लगे बोर्ड पर पड़ी, जिस पर लिखा था. 'ग्रेम्याची के सामूहिक फ़ार्म का प्रबंध-मंडल', उसे रोज़ की तरह अपने दोहरे अस्तित्व का भान हुआ। और फिर उसे सेकेंड लेफ़्टिनेंट ल्यात्येवस्की और पोलोवत्सेव के ये विश्वासपूर्ण शब्द याद आ गये· "जल्दी ही शुरू करनेवाले हैं!" उसने विद्वेष और अपने पर खीज के साथ सोचा: "जल्दी आ जाये वह दिन! नहीं तो मैं उनके और सामूहिक फार्म के बीच वैसे ही पिस जाऊंगा जैसे दो पाटो के बीच गेहूं।"

रात को पोलोवत्सेव ने अपने घोड़े पर ज़ीन कसी. खुरजीं में अपने सारे काग़ज़ात और खाने-पीने की चीज़े रखीं और विदा ली। याकोव लुकीच को खिड़की के पास से गुज़रते पोलोवत्सेव के घोड़े की मचलती टाप सुनायी पड़ी।

नया मेहमान बड़ा बेचैन और फ़ौजियों की तरह बेतक़ल्लुफ़ निकला।

दिन भर वह हंसता-मुस्कराता घर में घूमता रहता, घर की औरतों से ठिठोली करता, सिगरेट के धुएं से बेहद चिढ़नेवाली बुढ़िया को चैन न लेने देता। वह निश्चिंत होकर घूमता, उसे इसका कोई डर न लगता कि कहीं कोई पराया याकोव लुकीच के यहां न आ जाये। याकोव लुकीच ने उसे चेता तक दिया:

"आप थोड़ी सावधानी बरतें... साहब, क्या पता कोई आ जाये और आपको देख ले।"

"मेरे क्या माथे पर लिखा है कि मै साहब हूं?"

"नही, पर यह तो पूछ मकते हैं कि आप कौन हैं, कहां से आये हैं.."

"मेरी जेब मे ढेरों जाली कागज़ात हैं, अगर कोई परेशानी हुई तो यह वाला परिचय-पत्र दिखा दूंगा .. इमे दिखाकर तो कही भी जाया जा सकता है!" और उसने मुस्कराते हुए अदर की जेब मे काली माउसर पिस्तौल निकाली।

बाके सेकेंड लेफ्टिनेंट का हंसमुख स्वभाव याकोव लुकीच को उम दिन से विशेष रूप से खलने लगा जब एक बार शाम को दफ़्तर मे लौटने पर उसे अधेरे गलियारे में दबी आवाज़ें, हल्की-सी हंसी और खटर-पटर सुनायी पड़ी, उसने दियासलाई जलायी। चोकर की पेटी के पीछे, कोने में उसे ल्यात्येवस्की की इकलौती आख चमकती नज़र आयी और पाम ही में झेपकर लहगा और सिर पर खिसके रूमाल को ठीक करती बहू का तमतमाया चेहरा दिखायी दिया। याकोव लुकीच बिना कुछ कहे रसोई में घुसन लगा पर ल्यात्येवस्की ने ड्योढ़ी पर रोककर उसका कधा थपथपाया और फुसफुसाकर बोला:

"तुम कुछ मत कहना .. बेटे को अपने परेशान मत करना। तुम्हें मालूम है हम फ़ौजियों का नियम? झट से निशाना भेद दो! जवानी में किसने यह नही किया... अच्छा लो सिगरेट पियो तुम खुद तो बहू के साथ ऐसा-वैसा नही करते? बड़े घाघ हो!"

याकोव लुकीच इतना चकित था कि उसने सिगरेट ले ली और ल्यात्येवस्की की माचिस से सिगरेट सुलगाकर ही रसोई में घुसा। और वह याकोव लुकीच को तमीज़ सिखाने के अंदाज़ में, उबासी को दबाते हुए बोला:

"जब तुम पर कोई कृपा की जाती है, उदाहरण के लिये

माचिस दी जाती है तो धन्यवाद कहना चाहिये। तू, मूढ गवार, और कहलाता है प्रबधक! पुराने जमाने मे तो मै तुझे अर्दली की भी नौकरी न देता।"

"कहा से आ गयी मेरे सिर पर यह बला!" याकोव लुकीच ने सोचा।

ल्यात्येवस्की की धृष्टता से उसके मन मे अवसाद भर गया। बेटा सेम्योन घर पर नही था, वह पशु चिकित्सक को बुलाने के लिये कस्बे मे गया हुआ था। याकोव लुकीच ने उसे कुछ भी न बताने का निश्चय किया, पर उसने बहू को कोठरी मे बुलाया और उसे घोडे की रास से पीटकर सबक सिखाया। चूकि उसने चेहरे पर नही बल्कि पीठ और उससे नीचे पिटायी की इसलिये पिटाई के निशान दिखायी नही देते थे। सेम्योन तक को कुछ पता न पडा। कस्बे से वह रात को लौटा, पत्नी ने उसे खाना परोसा और बेच के ऐन किनारे पर बैठ गयी, सेम्योन ने आश्चर्य के साथ पूछा

"क्यो तू मेहमान की तरह बैठी है?"

"फुसी निकल आयी है" सेम्योन की बीवी का चेहरा लाल हो गया, वह खडी हो गयी।

'तू प्याज और रोटी चबाकर उसकी पुलटिस बाध ले, फौरन ठीक हो जायगी' वही पास मे बैठा रस्सी बटता याकोव लुकीच हम-दर्दी के साथ बोला।

बहू ने उसकी ओर शेरनी की नजर से देखा पर शात स्वर मे बोली

"शुक्रिया, पिता जी ऐसे ही ठीक हो जायेगी"

कभी-कभी ल्यात्येवस्की को सीलबद लिफाफो मे सदेश मिलते थे। वह उन्हे पढकर फौरन अगीठी मे जला देता था। अतत वह रातो को शराब पीने लगा, याकोव लुकीच की बहू से अब छेड-छाड नही करता था, उदास-सा रहने लगा और अकसर याकोव लुकीच या सेम्योन से 'अद्धा' लाने को कहता और हाथ मे दस-दस के करारे नोट पकडा देता। पीकर वह राजनीति की बाते करने लगता, हर चीज का अपने ही ढग से वस्तुगत मूल्याकन, व्यापक सामान्यीकरण करने लगता। एक बार उसने याकोव लुकीच को बडी नाजुक स्थिति मे डाल दिया। अपने कमरे मे बुलाकर उसने याकोव

लुकीच को वोद्का पिलायी और धृष्टता से आंख मारकर पूछा:

"सामूहिक फ़ार्म का भट्ठा बिठा रहे हो?"

"नहीं-नहीं, मुझे क्या पड़ी है इसकी ज़रूरत," कृत्रिम आश्चर्य के साथ याकोव लुकीच बोला।

"तो काम करने का तुम्हारा क्या तरीक़ा है?"

"आपका मतलब?"

"कैसा काम करते हो? आखिर तुम तो तोड़-फोड़ करनेवाले हो .. तो तुम क्या करते हो, घोड़ों को कुचले के सत से ज़हर देते हो, औज़ार ख़राब करते हो या कुछ ऐसा-वैसा करते हो?"

"मुझे घोड़ों को कुछ न करने का हुक्म मिला है, उल्टे उन्हें ..." याकोव लुकीच ने क़बूल कर लिया।

इधर अरसे से वह बिलकुल भी नही पी रहा था इसलिये वोद्का के गिलास ने उस पर तेज़ असर किया, उसका जी दिल खोलकर बात करने को हुआ। उसे इस बात की शिकायत करने की इच्छा हुई कि एक ही समय में गाव की सामूहिकीकृत व्यवस्था का निर्माण और सहार करते हुए उसकी आत्मा कितनी दुखती है, पर ल्यात्येवस्की ने उसे बोलने नही दिया, अपना गिलास खाली करके उसने फिर मे भरा, पर याकोव लुकीच को उसने नही डाली, और पूछा:

"अच्छा यह बता, तू काठ के उल्लू, क्यों तूने हमारे दामन को पकड़ रखा है? मैं पूछता हूं, क्यों? आखिर किसलिये? पोलोवत्सेव और मेरे पास कोई चारा नहीं है, हम मौत को बुलावा दे रहे है... हां-हां, मौत को! या हम जीत जायेंगे, हालांकि, तुझे मालूम है लुच्चे, जीतने की संभावना रत्ती भर की है... एक प्रतिशत के सौवें भाग जितनी, इससे अधिक नही! पर हमें तुम बदल नहीं सकते, जैसा कि कम्युनिस्ट कहते है, बेड़ियों के सिवा हमारे पास और कुछ नही। और तुझे क्या लेना-देना इससे? मेरे ख़याल से तू बलि का बकरा है। उल्लू, रहता मज़े से... मान लो कि मैं इसमें विश्वास नही करता कि तुझ जैसे टुच्चे समाजवाद का निर्माण कर सकेंगे, पर फिर भी... तुम लोग दुनिया के दलदल में कुछ उथल-पुथल तो कर ही सकते हो। जब विद्रोह होगा, तो सफ़ेद बालोंवाले शैतान, तुझे गोली मार देंगे या सीधे-सीधे क़ैद कर लेंगे और अर्खांगेल्स्क प्रांत में निर्वासित कर देंगे। वहा तू कम्युनिज़्म के दूसरे अवतार तक पेड़ काटता रहेगा... अरे,

तू काठ के उल्लू! मैं तो समझता हूं कि क्यों बग़ावत करनी चाहिये, आखिर मैं कुलीन हूं! मेरे बाप की क़रीब पांच हज़ार देस्यातीना जोतें थी और लगभग आठ सौ देस्यातीना जंगल। मुझे और मेरे जैसे दूसरे लोगों के लिये अपने देश से जाकर परदेस में पसीना बहाकर दो जून की कमाना कड़वे अपमान की बात है। और तू? तू है क्या? अनाज उगानेवाला और अनाज खानेवाला! गोबर में पनपनेवाला गुबरैला! गृह-युद्ध में तुझ जैसे कुतिया की औलाद कज़्ज़ाकों को क्या कम मारा गया!"

"पर हमारा तो जीना दूभर हो गया है!" याकोव लुकीच ने आपत्ति की। "टैक्सो से दम घोंट रहे है, ढोर छीन रहे हैं, आदमी अपनी मर्ज़ी से नही रह सकता, नही तो हमें कुलीनों और आप जैसे दूसरो की क्या ज़रूरत पड़ी थी। नही तो मै कभी भी ऐसा पाप अपनी आत्मा पर न लेता!"

"देखो तो सही, इसे टैक्स अच्छे नही लगते! मानो दूसरे देशो मे किसान टैक्स नही चुकाते। अरे, इससे भी ज्यादा देते है!"

"यह नही हो सकता।"

"मेरी बात पर यकीन कर।"

"आपको कैसे पता कि वहा लोग कैसे रहते है और कितना चुकाते है?"

"वहा रह चुका हू, सब जानता हू।"

"मतलब आप विदेश मे आये है?"

"तुझे इससे क्या लेना?"

"ऐसे ही कौतूहलवश पूछ रहा हू।"

"बहुत ज्यादा जानेगा तो बड़ी जल्दी बुड्ढा हो जायेगा। जा और वोद्का ले आ।"

याकोव लुकीच ने सेम्योन को वोद्का लाने भेज दिया और खुद एकात की इच्छा से खलिहान मे जाकर दो-एक घंटे तक पुआल के ढेर के पास बैठा सोचता रहा: "काना शैतान! इसकी बातों से तो सिर चकरा रहा है। या तो यह मेरी जाच कर रहा है कि क्या इनके खिलाफ़ तो नही हो जाऊंगा, मै अगर कुछ कहता तो यह अलेक्सांद्र अनीसीमोविच को बता देता और वह आकर ख़ोप्रोव की तरह मेरा काम तमाम कर देता। या क्या पता यह सचमुच ही ऐसा सोचता हो? कहते तो हैं

न कि शराब पीकर दिमाग़ की बात ज़बान पर आ जाती है... क्या पता पोलोवत्सेव से नाता तोड़ने में ही भला हो? सामूहिक फ़ार्म में ही चुपचाप दो-एक साल सह लूं। यह भी हो सकता है कि सामूहिक फ़ार्मों की बुरी हालत देखकर सरकार उन्हें बंद ही कर दे? तब तो मैं फिर से आदमी की ज़िंदगी जी सकता हूं... हे प्रभु! प्रभु मेरे! अब क्या करूं? मेरा सिर ज़रूर कट के रहेगा... पर अब तो कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता... चाहे उल्लू को ठूंठ पर दे मारो या ठूंठ को उल्लू पर, पर उल्लू का तो हाल एक ही होना है.."

खलिहान में बाड़ को लांघकर हवा घुसी और मनमानी करने लगी। वह फाटक के पास बिखरी पुआल को ढेर के पास ले आयी, उसे कुत्तों द्वारा खोदे गये गड्ढों में भर दिया पुआल के ढेर पर पड़े बर्फ़ के चूरे को फूंककर उड़ा दिया। हवा बहुत तेज़ और ठंडी थी। याकोव लुकीच बड़ी देर तक यह पता लगाने का प्रयास करता रहा कि वह किस दिशा से चल रही है पर असफल रहा। लगता था कि हवा पुआल के ढेर के चारों ओर घूम रही है, बारी-बारी से सभी दिशाओं से आ रही है। पुआल के ढेर में हवा से चिंतित चूहे कुलबुलाने लगे। वे चूं-चूं करते अपनी गुप्त पगडंडियो पर दौड़ रहे थे, कभी-कभी वे पुआल के ढेर में पीठ धंसाकर बैठे याकोव लुकीच के बिलकुल पास से गुज़रते। हवा की सांय-साय, पुआल की खड़-खड़, चूहों की चीं-चीं और ढेंकली की चर्र-मर्र सुनते-सुनते याकोव लुकीच को नींद-सी आ गयी: रात्रि के सभी स्वर उसे कही दूर से सुनायी पड़ते अजीब-से, उदास संगीत की तरह लग रहे थे। अपनी अधखुली, पानी से भरी आंखों से वह तारा-जडित आकाश को देख रहा था, उसके फेफड़ों में पुआल और स्तेपी की हवा की सुगंध भर रही थी। उसे यह दुनिया सुंदर और सरल लग रही थी।

पर आधी रात को वोयस्कोवोय गांव से घुड़सवार पोलोवत्सेव का संदेश लाया। लिफ़ाफ़े पर लिखा था 'अर्जेंट', ल्यात्येवस्की ने पत्र पढ़ा और रसोई में सोते याकोव लुकीच को जगाया:

"लो, पढ़ो।"

याकोव लुकीच ने आंखें मसलकर ल्यात्येवस्की के नाम आये पत्र को लिया। डायरी से फाड़े गये पन्ने पर पेन से पुरानी वर्त्तनी में स्पष्ट लिखावट में लिखा था:

"श्रीमान लेफ्टिनेंट महोदय!"

हमे इसके विषय मे विश्वसनीय सूचना मिली है कि बोल्शेविको की केन्द्रीय समिति कृषक जनता से मानो सामूहिक फार्मो मे बोवाई के लिये अनाज जमा कर रही है। पर वास्तव मे यह अनाज विदेश मे बेच दिया जायेगा और सामूहिक फार्मो के सदस्यो समेत सभी किसानो को भयकर भुखमरी का सामना करना पडेगा। सोवियत सत्ता अपने निकट और अवश्यभावी पतन को महसूस करके रूस को पूरी तरह तबाह कर रही है। मै आपको ग्रेम्याची मे, जहा इस समय आप हमारे सघ का प्रतिनिधित्व कर रहे है, जनता के बीच तथाकथित बीजो के सग्रह के विरुद्ध आदोलन छेडने का आदेश देता हू। मेरे इस पत्र से या० लु० को अवगत करा दे और उसे तत्काल प्रचार कार्य शुरू करने का आदेश दे। हर कीमत पर बीज के लिये अनाज जमा करने के काम मे बाधा डालना अत्यन्त आवश्यक है।"

सुबह याकोव लुकीच घर से सीधा हमामची और 'दोन मुक्ति सघ' मे उसके द्वारा भरती किये गये लोगो के घर गया।

२४

प्रचार-दल के मुखिया कोन्द्रात्को द्वारा ग्रेम्याची मे छोडी गयी तीन लोगो की टोली बीज जमा करने के काम मे जुट गयी। उन्होने एक कुलक के खाली मकान मे अपना मुख्यालय बनाया। सुबह मे युवा कृषि-शास्त्री वेत्यूत्नेव याकोव लुकीच के साथ मिलकर बोवाई की योजना की तैयारी और समन्वय करता, वहा आने-जाने कज्जाको को कृषि से सबधित प्रश्नो का उत्तर देता बाकी समय वह भडार मे आनेवाले बीजो के उपचार और सफाई पर नजर रखता। कभी-कभी जैसे कि खुद कहता 'वेटरनरी करने' के लिये – किसी की बीमार गाय या भेड का इलाज करने जाता। अपनी 'फीस' के रूप मे वह बीमार पशु के मालिक के यहा खाना खाता, पर कभी वह अपने साथियो के लिये दूध की हडिया या देगची भर उबले आलू ले आता। बाकी दो – मडल की सरकारी चक्की का मजदूर पोर्फीरी लुब्नो और वनस्पति तेल मिल का कोम्सोमोल कार्यकर्त्ता इवान नाइद्योनोव – मुख्यालय मे ग्रेम्याची के

निवासियो को बुलाते, खत्ती के प्रधान की सूची मे देखकर पता लगाते कि वहा बुलाये गये अमुक नागरिक ने कितना बीज दिया और यथासभव प्रचार कार्य करते।

पहले ही दिन से स्पष्ट हो गया कि बीज भडार बनाने मे बडी कठिनाइया आयेगी और इस काम मे काफी समय लगेगा। बीज जमा करने मे तेजी लाने से सबधित, टोली और स्थानीय पार्टी इकाई के सभी कदमो का अधिकाश सामूहिक किसानो और निजी खेती करनेवाले कृषको द्वारा जबरदस्त प्रतिरोध किया जा रहा था। गाव मे अफवाहे फैल रही थी कि अनाज विदेश भेजने के लिये जमा किया जा रहा है, कि इस साल बोवाई नही की जायेगी और किसी भी क्षण युद्ध छिडनेवाला है नागूल्नोव रोज सभा बुलाता, प्रचार-टोली की मदद से लोगो को समझाता-बुझाता, बेसिरपैर अफवाहो का खडन करता, 'सोवियत विरोधी प्रचार' करनेवालो को कठोरतम दड की धमकी देता पर अनाज अत्यत धीमी गति मे जमा हो रहा था। कज्जाक ग्राम-सोवियत या प्रचार-टोली के मुख्यालय के बुलावे से बचने के लिये सुबह से ही घर से निकल जाते, कभी जगल मे जलावन की लकडी लाने के बहाने या घास-फूस लाने के लिये या कभी पडोसी के साथ जाकर कही सुरक्षित जगह पर छिपकर आशकापूर्ण दिन बिताते। औरतो ने तो सभाओ मे आना ही छोड दिया और जब ग्राम-सोवियत का चपरासी घर पर आता तो यह कहकर अपना पिड छुडाती 'मेरा मालिक घर पर नही है और मझे कुछ नही मालूम।

मानो किसी का शक्तिशाली हाथ अनाज को रोके हुए था।

प्रचार-टोली के मुख्यालय मे प्राय इस प्रकार की बाते सुनने मे आती

"बीज के लिये अनाज जमा कर दिया?"

'नही।"

"क्यो?"

' अनाज नही है।"

"कैसे नही है?"

"सीधी-साधी बात है सोचा था कि बोवाई के लिए कुछ बचाकर रख लूगा, पर अनाज वसूलीवालो को फालतू दे दिया, और अपने

खाने के लिये कुछ बचा नही इस लिये बीज के लिये बचा अनाज खा डाला।"

"तो क्या तुम बोने की नही सोच रहे थे?"

"सोच तो रहा था पर है नही कुछ बोने को "

बहुत-से लोग कहते कि अनाज वसूली के समय उन्होने बीज भी दे दिये। दफ्तर में दवीदोव और मुख्यालय मे इवान नाइद्योनोव सूचियो और वसूली केन्द्र की रसीदो की जाच करते और गलत जानकारी देनेवाले का भडाफोड करते हिसाब मे तो बोने के लिये बीज उनके पास होने चाहिये थे। कभी-कभी इसका हिसाब लगाने के लिये सन् उनतीस की फसल और वास्तव मे वसूली केन्द्र को दिये गये अनाज की मात्रा के घटाया जाता तो पता लगता कि अनाज जरूर बचा होना चाहिये। पर अपनी बात पर अडे लोग तब कहते

"हा, गेहू बचा था, मै मना थोडे ही कर रहा हू। पर आप तो जानते ही है कामरेड, घर-गृहस्थी मे क्या होता है? हम तो बिना नापे-तौले रोटी खाने के आदी है। हमने हरेक के हिस्से महीने में एक-एक पूद के हिसाब मे अनाज रखा था, पर, उदाहरण के लिये मुझे ही लो, दिन मे डेढ-दो सेर खा जाता हू। इसीलिये ज्यादा खा जाता हू कि साथ मे और कुछ खाने को नही। बस यही कारण है कि खत्म हो गया। नही अनाज मेरे घर मे, चाहे तो तलाशी ले लीजिये!"

नागूल्नोव पार्टी-इकाई की सभा मे उन समृद्ध गाववासियो के यहा तलाशी लेने का प्रस्ताव रखना चाहता था जिन्हाने बीज नही जमा कराये, पर दवीदोव, लुब्नो, नाइद्योनोव और रजम्योत्नोव ने इसका विरोध किया। और इलाकाई पार्टी समिति के निर्देश मे भी तलाशी लेने की मनाही की गयी थी।

प्रचार-टोली और फार्म का प्रबध-मडल तीन दिन म सामूहिक किसानो मे केवल ४८० पूद और निजी खेती करनेवालो मे सिर्फ ३५ पूद जमा कर पाये थे। फार्म के सक्रिय सदस्यो ने अपने हिस्से का सारा अनाज दे दिया था। कोद्रात माइदान्निकोव, ल्युबीश्किन, दुबत्सोव, देमीद घुन्ना, बुड्ढा श्चुकार, अर्कोशा बदस्तू, लोहार शाली अद्रेई रजम्योत्नोव और अन्य पहले ही अनाज जमा करवा चुके थे। अगले दिन सुबह-सवेरे दो स्लेजो के साथ याकोव लुकीच और उसका बेटा सेम्योन साझी खत्ती पर आये। याकोव लुकीच फौरन दफ्तर चला गया

और सेम्योन स्लेजो से अनाज की बोरिया उतारने लगा। द्योम्का उशाकोव उन्हे लेकर तौल रहा था। सेम्योन ने चार बोरिया खाली कर दी पर जब उसने पाचवी खोली द्योम्का उस पर बाज की तरह झपटा

"तेरा बाप ऐसा बीज बोने की सोचता था?" उसने मुट्ठी मे अनाज भरकर सेम्योन के मुह के सामने की।

"कैसा, ऐसा?" सेम्योन तिलमिलाकर बोला। "अपनी भेगी आखो मे तुझे गेहू शायद मक्का लग रहा है!"

"नही, मक्का नही!" मै भेगा हू तो क्या, पर तुझ लुच्चे से पैनी है मेरी आखे! तू और तेरा बाप एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हो, सब मालूम है! यह क्या है? बीज है? नही, तू इधर देख, मुह क्यो फेरता है! बिच्छू की औलाद, तूने मेरे साफ अनाज मे क्या मिला दिया?"

द्योम्का सेम्योन के चेहरे के सामने अपनी हथेली हिला रहा था, उस पर मिट्टी और मटरी मिले अनाज की नन्ही-सी ढेरी थी।

"मै अभी लोगो को बुलाता हू "

"अरे चिल्लाओ मत!" सेम्योन डरकर बोला। "शायद गलती से यह बोरी आ गयी है अभी जाकर दूसरी ले आता हू तुम भी बडे अजीब हो! क्यो तुम घोडी की तरह बिदकते हो? कह तो दिया अभी बदल लाता हू, गलती से आ गयी यह बोरी "

द्योम्का ने चौदह मे से छ बोरिया वापस कर दी। और जब सेम्योन ने उससे खराब अनाजवाली एक बोरी को कधे पर रखने मे मदद देने को कहा तो द्योम्का ने तराज़ू की ओर मुह मोड लिया मानो उसने सुना ही न हो।

"मतलब मदद नही करोगे?" सेम्योन ने कापती आवाज मे पूछा।

"घर पर उठाते समय तो हल्की लगी होगी और यहा एक दम भारी हो गयी? खुद उठा, भूतनी के!"

सेम्योन ने बोरी को आडा करके उठाया और चल दिया, उसका चेहरा बोझ उठाने के कारण लाल हो गया।

इसके बाद के दो दिनो मे और कही से अनाज नही आया। पार्टी इकाई की सभा मे घर-घर का फेरा लगाने का निर्णय लिया गया। इसकी पूर्ववेला मे दवीदोव पडोस के इलाके के बीज चयन फार्म से योजना के अतिरिक्त गेहू के कुछ बीज लाने गया था। उस किस्म का

गेहू आमानी मे सूखे को सह सकता था और पिछले साल प्रायोगिक खेत मे सूखे के बावजूद उमकी बडी उम्दा फसल हुई थी। याकोव लुकीच और टोली नायक आगाफोन दुबत्सोव बीज चयन फार्म मे आयातित 'कैलिफोर्नियाई' और स्थानीय 'बेलोजेर्नकाया' किस्मो से मिले सकर जाति के गेहू की बडी तारीफ करते थे, और दवीदोव ने जो राते कृषि पत्रिकाये पढने मे बिताता था, नया गेहू लाने के लिये बीज चयन फार्म जाने का फैमला कर ही डाला।

वह ८ मार्च को वहा से लौटा और इससे एक दिन पहले यह घटना हुई मकार नागूल्नोव जिसे दूसरी टोली मौपी गयी थी सुबह से ल्युबी-शिकन के साथ लगभग तीस घरो का चक्कर लगा चुका था और शाम को जब रजम्योत्नोव और मचिव ग्राम-सोवियत से चले गये, उसने उन लोगो को बुलवाया जिनके घर वह दिन मे नही जा पाया था। चार लोगो को बिना किसी परिणाम के उमने छोड दिया। वे बस यही कहते "बीज के लिये अनाज नही बचा। सरकार से दिलवा दो।" शुरू मे नागूल्नोव ने शात स्वर मे उन्हे ममझाया-बुझाया फिर मेज पर मुक्के पटक-पटककर बोलन लगा।

'आप कैसे कह सकते है कि अनाज नही है? उदाहरण के लिये तुम्ही को ले, कोन्स्तानतीन गवरीलोविच, पतझड मे तो तुम्हारी फसल तीन मौ पूद की हुई थी!"

"मेरे बजाये तुमने सरकार को अनाज दिया था?"

"कितना दिया तुमने?"

'एक सौ तीस।'

"बाकी कहा है?"

"तुम्हे नही मालूम? खा डाला!"

"झूठ बोलते हो! इतनी रोटी खाकर तो तुम्हारा पेट फट जाता! घर मे तुम छह जने हो, भला इतना अनाज खा सकते हो? जाओ चुपचाप ले आओ, नही तो मामूहिक फार्म से निकाल देगे!"

"निकाल दो, जो मर्जी हो करो पर अनाज नही है, ईसा मसीह की सौगध! सरकार से ब्याज पर ले लो "

"तुम्हारी आदत हो गयी है सोवियत सत्ता को चूसने की। बीज बोने और घास काटने की मशीन खरीदने के लिये जो कर्ज लिया था

वह लौटा दिया तुमने? देखो तो सही! ये पैसे हज़म कर लिये, अब अनाज भी हड़पना चाहते हो?"

"अब तो बीज बोने की और घास काटने की मशीनें सामूहिक फ़ार्म की हो गयी, मैंने उनका फ़ायदा नही उठाया, तुम्हें ताना मारने का हक़ नही!"

"तुम अनाज लाओ नही तो देखना! झूठ बोल-बोलकर शर्म नहीं आती!"

"मैं तो ख़ुशी से दौड़ा-दौडा ले आता अगर होता मेरे पास ."

लाख कोशिश करने, समझाने-बुझाने, डर दिखाने के बावजूद नागूल्नोव को उन्हें छोड़ना पड़ा।

वे कमरे से निकले, कुछेक मिनट तक बरामदे में उनका वार्तालाप सुनायी दिया और फिर वे चले गये। कुछ देर बाद निजी खेती करनेवाला ग्रिगोरी हमामची कमरे में घुसा। शायद उसे कुछ देर पहले बाहर निकले किसानो से बातचीत का परिणाम मालूम पड़ चुका था, उसके होठो के कोनों मे आत्मविश्वास और चुनौतीपूर्ण मुस्कान फैली थी। नागूल्नोव ने कापते हाथों से मेज़ पर रखी सूची को फैलाया और फटे स्वर मे बोला·

"बैठो, ग्रिगोरी मतवेइच!"

"निमत्रण के लिये धन्यवाद।"

हमामची टागे फैलाकर बैठ गया।

"ग्रिगोरी मतवेइच, यह क्या कर रहे हो, तुम बीज क्यो नही ला रहे हो?"

"मुझे क्या पडी है उन्हे लाने की।"

"आम सभा का फ़ैसला जो है, सामूहिक फ़ार्म के सदस्यों और निजी खेती करनेवाले किसानो को एक जगह बीज जमा करने है। तुम्हारे पास है?"

"क्यों नही, ज़रूर है।"

नागूल्नोव ने सूची देखी. हमामची के नाम के सामने 'सन् १९३० में ख़रीफ़ की बोवाई का अनुमानित क्षेत्र' वाले ख़ाने में ६ का अक लिखा था।

"इस साल तुम छह हेक्टेयर बोनेवाले थे?"

"ठीक कहा।"

"मतलब तुम्हारे पास बयालीस पूद बीज है?"

"एक रत्ती भी कम नही, छने और बिने, ठोस सोने की तरह!"

"अरे तुम तो पूरे शेर निकले!" राहत की सास लेकर नागूल्नोव ने उसे शाबाशी दी। "कल उसे साझी खत्ती मे ले आना। चाहो तो अपनी बोरियो मे रख सकते हो। अलग खेती करनेवालो से, अगर वे बीज नही मिलाना चाहते, उन्ही की बोरियो मे ही लेने है। लाकर भडारी को तौलकर सौप देना, वह बोरियो पर सील लगा देगा और तुम्हे रसीद दे देगा, और बसत मे तुम्हे अपना अनाज सही-सलामत वापस मिल जायेगा। नही तो बहुत-से लोग शिकायत करते है कि बचा न पाये, सारा खा गये। खत्ती मे तो वह सही सलामत रहेगा।"

अरे, तुम छोडो ये बाते कामरेड नागूल्नोव!' हमामची ने लापरवाही से मुस्कराकर अपनी स्लेटी मूछो पर हाथ फेरा। "तुम्हारी यह चाल नही चलेगी! अनाज मै तुम्हे नही दूगा।"

"अच्छा यह तो बताओ कि क्यो?"

"क्योकि मेरे पास वह सही-सलामत रहेगा। और अगर तुम को दे दू तो बसत मे खाली बोरिया तक नही मिलेगी। हमे भी अब अकल आ गयी है, अब हमे झासा नही दे सकते!"

नागूल्नोव की भौहे तन गयी चेहरे का रग उड गया।

"तुम कैसे सोवियत सत्ता पर शक कर सकते हो? मतलब तुम्हे उस पर विश्वास नही?"

"हा-हा, नही है विश्वास! तुम लोगो की बहुत बक-बक सुन चुके है!"

"कौन बका था? क्या बका?" नागूल्नोव का चेहरा फक पड गया, वह धीरे-धीरे उठने लगा।

पर हमामची मानो उसकी ओर कोई ध्यान नही दे रहा था, वह बैठा हुआ अपने सफेद सुघड विरले दातो को चमकाकर मुस्कराये जा रहा था, वह क्रोध के कारण बस कपकपाये स्वर मे बोला

"अनाज जमा करके फिर उसे जहाजो मे भरकर विदेशो को भेजोगे न? मोटरे खरीदने के लिये ताकि पार्टीवाले अपनी बाल कटी लुगाइयो के साथ उन पर बैठकर सैर करे? हमे मालूम है कि क्यो तुम हमारे गेहू को लेना चाहते हो! यही है क्या बराबरी!"

"क्या तुम पागल हो गये हो? क्या बक-बक करते हो!"

"जब तुम छाती पर बैठे हो तो कोई भी पागल हो सकता है! एक सौ सोलह पूद अनाज वसूली में ले लिये! और अब बाक़ी, बीज के लिये बचा अनाज भी मांग रहे हो, मेरे बच्चों को भूखों मारना चाहते हो!"

"चुप! झूठ मत बोल, बिच्छू!" मेज़ पर घूंसा पटककर नागूल्नोव चिल्लाया।

मेज़ से गिनतारा फ़र्श पर गिर पड़ा, स्याही की दवात उलट गयी। घनी, चमकीली बैंगनी धारा काग़ज़ पर रेंगती हुई हमामची के भेड़ की उल्टी खाल के ओवरकोट के पल्ले पर टपक पड़ी। हमामची हथेली से स्याही को झाड़कर खड़ा हो गया। आंखें तरेरकर वह ग़ुस्से को क़ाबू में करते हुए गुर्राया:

"तू मेरा मुंह बंद मत कर! तू अपनी बीवी लूश्का से कर घूंसे पटककर बात, मैं तेरी लुगाई नही हू! अब सन् बीस का ज़माना नही है, समझा? अनाज मैं नही दूंगा... मेरा ठेंगा चूस!.."

नागूल्नोव ने मेज़ के ऊपर से झुककर उसकी ओर हाथ बढ़ाया, पर लड़खड़ाकर सीधा खड़ा हो गया।

"तू किस से सुनी बाते बक रहा है?. दुश्मन, यह तू क्या बक-बक कर रहा है?. समाजवाद की हंसी उड़ाता है, सांप!.. मैं अभी "

वह शब्द नही ढूंढ़ पा रहा था, क्रोध से उसका दम घुटा जा रहा था, पर किसी तरह अपने को संभालकर उसने हथेली से चेहरे का पसीना पोंछा और बोला: "अभी मुझे काग़ज़ लिखकर दे कि कल ही अनाज जमाकर देगा और कल ही तुझे वही भिजवा दूंगा जहां तुझे होना चाहिये। वहा तुझ से सब उगलवा लेंगे कि किस की बाते तू दोहरा रहा है।"

"गिरफ्तार तुम मुझे कर सकते हो पर लिखकर मैं कुछ नही देनेवाला और कोई अनाज-वनाज भी नही दूंगा!"

"मै कहता हूं लिख!"

"मुझे कोई जल्दी नही पड़ी, तुम भी इंतज़ार करो कुछ..."

"चुपचाप लिख दे..."

हमामची उठकर बाहर जाने लगा, ग़ुस्से में उसका ख़ून खौल रहा था और वह उस पर क़ाबू न कर पाया, दरवाज़ा खोलते ही वह बोला:

"अभी जाकर यह अनाज सूअरो को डाल दूगा! तुम परायी रोटी तोडनेवालो को देने से तो अच्छा ही है कि वे ही ठूस ले!"

"सूअरो को? बीज का अनाज?!"

नागूल्नोव लपककर दरवाजे के पास पहुच गया, जेब से रिवाल्वर निकालकर उसके कुदे मे उसने हमामची की कनपटी पर चोट की। हमामची लडखडाया और दीवार के सहारे टिककर, सफेदी को पीठ से पोछता हुआ धीरे-धीरे फर्श पर ढह गया। कनपटी पर घाव से बालो को रगता गाढा खून रिस रहा था। नागूल्नोव आपे मे बाहर हो चुका था, उसने जमीन पर पडे हमामची को कई बार ठोकर मारी और एक तरफ हट गया। हमामची ने पानी से बाहर निकली मछली की तरह एक-दो बार मुह खोला और दीवार का सहारा लेकर उठने लगा। खडे होते ही घाव से खून की तेज धारा फूट पडी। वह चुपचाप आस्तीन मे खून पोछ रहा था, उसकी पीठ मे सफेदी का चूना झड रहा था। नागूल्नोव जग को मुह मे लगाकर कुनकुना पानी पी रहा था जग के सिरे पर उसके दात किटकिटा रहे थे। उसने कनखियो से हमामची को खडा देखा, पास जाकर उसने कसकर हमामची की कोहनी पकडी, धक्का देकर उसे मेज के पास लाया और पेसिल थमाकर बोला

"लिख!'

"मै तो लिख दूगा, पर अभियोक्ता को इसकी खबर दे दूगा पिस्तौल की नोक पर तो मै कुछ भी लिख दूगा सोवियत सत्ता मे पीटने की मनाही है पार्टी भी इसके लिये तुम्हे पुचकारेगी नही!" निढाल होकर तिपाई पर बैठते हुए हमामची भर्राये स्वर मे बुदबुदा रहा था।

नागूल्नोव सामने पिस्तौल तानकर खडा हो गया।

"आहा, तू क्राति का दुश्मन अब सोवियत सत्ता और पार्टी की दुहाई दे रहा है! तेरा फैसला लोक अदालत नही, मै ही अभी कर देता हू। अगर नही लिखेगा तो जहरीले साप की तरह तुझे गोली मार दूगा और फिर चाहे दस साल भी जेल काटनी पडे तो भी कोई फिक्र नही! मै तुझे सोवियत सत्ता पर कीचड नही उछालने दूगा! लिख 'हलफनामा'। लिख लिया? आगे लिख 'मै, भूतपूर्व सक्रिय श्वेत-गार्ड, जिसने हथियार उठाकर लाल सेना से लडाई की थी, अपने शब्द

वापस लेता हू ' लिख लिया? ' अपने शब्द जो अखिल सघीय कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक)' – बोल्शेविक ब्रेकेट मे लिख लिया? 'और सोवियत सत्ता को अपमानित करते है। मै उनसे माफी मागता हू, हालाकि मै उनका छिपा दुश्मन हू पर वचन देता हू कि आगे '"

"नही लिखूगा! तुम क्यो जोर-जबरदस्ती कर रहे हो?"

"नही, तू जरूर लिखेगा! तू क्या सोचता था? तू सोचता था कि मै, श्वेत-गार्ड से लडाई मे घायल, अपाहिज होनेवाला, तेरी बातो को एक कान से सुनकर दूसरे मे निकाल दूगा? तू मेरे सामने सोवियत सत्ता पर कालिख पोतेगा और मै चुप रहूगा! लिख, नही तो जान निकाल दूगा! "

हमामची मेज पर झुक गया और उसके हाथ की पेसिल फिर से कागज पर चलने लगी। पिस्तौल के घोडे से उगली हटाये बिना नागूल्नोव इमला बोल रहा था

"' हालाकि मै छिपा दुश्मन हू पर सभी मेहनतकशो को प्यारी और मेहनतकश जनता का खून बहाकर स्थापित की गयी सोवियत सत्ता के खिलाफ फिर कभी न कुछ बोलूगा, न लिखूगा और न ही कुछ करूगा। मै उसे गालिया नही दूगा उसे परेशान नही करूगा और चुपचाप विश्व क्राति की प्रतीक्षा करूगा जो विश्वव्यापी पैमाने पर उसके हम सभी दुश्मनो का सफाया कर देगी। मै यह भी वचन देता हू कि कभी भी सोवियत सत्ता के रास्ते आडा नही आऊगा और फसल नही छिपाऊगा तथा कल ३ मार्च सन् १९३० को साझी खत्ती मे '"

तभी कमरे म चपरासी के साथ सामूहिक फार्म के तीन सदस्यो ने प्रवेश किया।

"जरा बाहर इतजार करो! नागूल्नोव चिल्लाया और आगे बोला "'गेहू के बयालीस पूद बीज जमा करवा दूगा।' नीचे दस्तखत कर!"

हमामची जिसके चेहरे की लाली लौट आयी थी हस्ताक्षर करके खडा हुआ और बोला

"तुम्हे इसका जवाब देना होगा, मक्कार नागूल्नोव! "

"हम दोनो मे से हरेक को अपने किये का जवाब देना होगा पर अगर कल अनाज नही जमा किया तो जान से मार दूगा!"

नागूल्नोव ने हलफनामे को तह करके अपनी खाकी कमीज की

ऊपरवाली जेब में रख लिया, रिवाल्वर को मेज पर पटका और हमामची को दरवाजे तक छोड आया। आधी रात हो गयी थी पर वह ग्राम-सोवियत से नही गया। चपरासी को भी वही रहने का आदेश दिया। चपरासी की मदद से उसने बीज देने से इकार करनेवाले और तीन किसानो को बगल के खाली कमरे मे बद कर दिया। आधी रात के बहुत बाद वह ग्राम-सोवियत की मेज पर ही, दिन भर की थकान से निढाल होकर अपना भारी सिर चौडी हथेलियो पर रखकर सो गया। पौ फटने तक उसे सपने मे सुदर-सुदर कपडे पहने लोगो की भीड दिखायी दे रही थी, जो बाढ के पानी की तरह स्तेपी मे हिलोरे ले रही थी। भीड के बीच घुडसवारो का रिसाला चल रहा था। रग-बिरग घोडे स्तेपी की नर्म जमीन को अपने खुरो से खोदते चल रहे थे पर न जाने क्यो उनकी टापे ऐसे गरज रही थी, मानो टीन की चादरो पर रिसाले दौडते जा रहे हो। मकार बिल्कुल पास ही मे अपने रुपहले बाजो में बैड अचानक 'इटरनेशनल' की धुन बजाने लगा और हमेशा की तरह भावुकता से मकार का गला रुध गया वहा से गुजरते अश्वारोही दस्ते की पिछली कतार मे उसे अपना मित्र मीत्का लोबाच दिखायी पडा जिसे सन् १९२० मे कार्ग्वोव्का के पास व्रागेल के सैनिको ने मार डाला था, पर मकार को कोई आश्चर्य नही हुआ, उल्टे उसे खुशी हुई और वह लोगो को धकेलता हुआ अश्वारोही दस्ते की ओर दौड पडा। 'मीत्या! मीत्या! रुक!" वह चिल्लाये जा रहा था पर उसे स्वय अपनी आवाज नही सुनायी दे रही थी। घोडे पर बैठे मीत्या ने मुडकर मकार की ओर किसी अपरिचित की तरह उदासीनता-पूर्ण आखो से देखा और अपने घोडे को एड लगा दी। तभी मकार को अपना भूतपूर्व अर्दली त्यूलिम दिखायी पडा। वह भी सन् बीस में ही ब्रोदी के पास पोलिश गोली से मारा गया था। त्यूलिम मुस्कराता हुआ अपने घोडे को दौडाता मकार के पास आ रहा था, उसके दाये हाथ में मकार के घोडे की लगाम थी। और उसका सुडौल सिर और सफेद टागोवाला घोडा गर्दन को धनुष की तरह तानकर गर्व से सिर उठाये दौड रहा था।

सारी रात चली वसत की तेज हवा से चरमराते कपाटो की चू-चर्र मकार को सपने मे सगीत और छत के टीन की खड-खड घोडो की टाप लग रही थी रजम्योत्नोव प्रात कोई छह बजे ग्राम-सोवियत

में आया, नागूल्नोव अभी सो रहा था। मकार के पीले गाल पर मार्च के सूर्योदय की बैंगनी-सी लालिमा पड़ रही थी, होंठों पर तनाव और आतुरतापूर्ण मुस्कान ठिठकी हुई थी, आंतरिक तनाव और उथल-पुथल के कारण उसकी भौंहो पर बल पड़ रहे थे. रज़्म्योत्नोव ने मकार को झंझोड़कर लताड़ा:

"कारस्तानियां करके चैन से सो रहे हो? अच्छे-अच्छे सपने देखकर खीसे निपोर रहे हो! हमामची को क्यों पीटा? वह पौ फटते ही बीज लाया और उन्हें जमा करके फ़ौरन इलाक़ाई केन्द्र चला गया। ल्युबीश्किन आया दौड़ा-दौड़ा मेरे पास और बोला कि हमामची तुम्हारे ख़िलाफ़ मिलीशिया मे रपट लिखाने गया है। अब देखना मज़ा! दवीदोव आकर क्या कहेगा? अरे, मकार-मकार! ."

नागूल्नोव ने मेज़ पर सोने के कारण मूजे चेहरे पर हाथ फेरा और विचारमग्न मुद्रा में मुस्कराकर बोला:

"अरे यार अंद्रेई! अभी मैंने ऐसा बढ़िया सपना देखा था! बहुत ही दिलचस्प!"

"तुम अपने सपनों की बात छोड़ो! हमामची के बारे मे रिपोर्ट दो!"

"ऐसे ज़हरीले नाग के बारे में मैं बोलना तक नहीं चाहता! तुम कहते हो कि वह अनाज ले आया? मतलब असर हुआ उस पर... बयालीस पूद बीज का अनाज कोई मामूली बात नहीं है। अगर हरेक क्रांतिविरोधी से एक ही चोट में चालिस पूद अनाज निकलता तो मैं ज़िंदगी भर घूमघूमकर उन्हें मारता रहता! जैसी बातें उसने कही थी उनके लिये तो ऐसी पिटाई तो कुछ भी नहीं! ख़ैर मनाये कि मैंने उसकी टांगें नही चीरीं!" और आंखों में क्रोध की चमक के साथ उसने अपनी बात पूरी की: "वह हरामज़ादा जनरल मामोन्तोव का दुमछल्ला था। जब तक काले सागर में डुबकी नही लगवायी तब तक हम से लड़ता रहा। और अब भी रोड़े अटकाने मे बाज़ नहीं आता, विश्व क्रांति के ध्येय को नुक़सान पहुंचाता है। सोवियत सत्ता और पार्टी के बारे में कैसी-कैसी बातें कहता रहा था। मेरे तो ग़ुस्से के मारे रोंगटे खड़े हो गये।"

"कुछ भी हो पर तुम्हें उसे पीटना नहीं चाहिये था, बेहतर तो यही था कि गिरफ़्तार कर लेते।"

"नहीं, गिरफ्तार नहीं, उसे गोली मार देनी चाहिये थी!" नागूल्नोव ने निराशा के साथ हाथ झाड़ा। "समझ में नहीं आता कि क्यों मैंने उसका काम तमाम नहीं किया? मुझे बस इसी का अब दुख है।"

"अगर तुम्हें बेवक़ूफ़ कहूं तो बुरा मान बैठोगे पर बेवक़ूफ़ी तो तुम मे कूट-कूटकर भरी है! देखते रहना, दवीदोव आकर तुम्हें ऐसा सबक़ सिखायेगा!"

"सेम्योन मेरा ही पक्ष लेगा वह तेरी तरह ठूंठ नही है!"

रज़्म्योत्नोव ने हंसते हुए उंगली मोडकर मेज़ ठोकी, फिर मकार का माथा और बोला

"आवाज़ तो दोनो की एक ही जैसी है!"

पर मकार ने ग़ुस्से में उसका हाथ झटका और ओवरकोट पहनने लगा। दरवाज़े के पास पहुंचकर वह बिना मुड़े बोला

"अरे तू अक़्लमंद! बराबर के कमरे से टुटपुंजियों को छोड़ दे ताकि फ़ौरन अनाज जमा करा दें नही तो अभी हाथ-मुंह धोकर लौटने पर फिर से बंद कर दूंगा।"

आश्चर्य से रज़्म्योत्नोव की आंखें फैल गयी . वह बगल के कमरे की ओर दौडा जहां ग्राम-सोवियत के पुराने काग़ज़ात और पिछले साल की इलाक़ाई कृषि प्रदर्शनी में दिखायी गयी अनाज की बालियां रखी थी। रज़्म्योत्नोव ने दरवाज़ा खोला, कमरे में उसे सामूहिक फ़ार्म के तीन सदस्य क्रास्नोकूतोव, अतीप 'कौआ' और नाटा अपोल्लोन पेस्कोवात्स्की दिखायी दिये। पुराने अख़बार बिछाकर उन्होंने बड़े आराम से रात काटी थी, रज़्म्योत्नोव को देखकर वे खड़े हो गये।

"नागरिको, मैं आपसे ." रज़्म्योत्नोव ने मुंह खोला पर बूढ़े कज़्ज़ाक क्रास्नाकूतोव झट से उसकी बात काटकर बोला:

"अरे, अंद्रेई स्तेपानोविच, अब क्या कहें, दोष हमारा ही है... हमें छोड़ दो अभी अनाज ले आते हैं.. रात को हमने सलाह-मशविरा करके अनाज जमा कराने का फ़ैसला कर लिया है... अब क्या छिपायें आप से, गेहूं दबाकर रखना चाहते थे..."

रज़्म्योत्नोव, जो अभी-अभी नागूल्नोव की नासमझी के लिये माफ़ी मागना चाहता था, संभलकर झट से बोला:

"कब से यह कर देना था आपको! आखिर आप तो फ़ार्म के

सदस्य हैं! शर्म आनी चाहिये बीज छिपाते हुए!"

"कृपा करके हमें छोड़ दो, अब जो हो गया सो हो गया..." काली चमकीली दाढ़ी की पृष्ठभूमि में खीसें निपोरकर अंतीप 'कौआ' सहमकर मुस्कराया।

पूरा दरवाज़ा खोलकर रज़म्योत्नोव मेज़ के पास चला गया। उसके मन में यह विचार कौंधा: "कहीं मकार सचमुच ही ठीक तो नही कहता? अगर ज़रा ज़ोर डाला जाये तो एक ही दिन में सब जमा करवा दें बीज!"

२५

दवीदोव बीज चयन केन्द्र से अपनी सफलता पर हर्ष के साथ लौटा। वह अपने साथ बढ़िया गेहूं के बारह पूद बीज लाया था। मकान मालकिन ने उसे खाना परोसते हुए बताया कि उसकी अनुपस्थिति में नागूल्नोव ने ग्रिगोरी हमामची को पीटा और तीन किसानों को रात भर ग्राम-सोवियत मे बंद रखा। लगता था कि इसके बारे में सारे ग्रेम्याची मे ख़बर फैल गयी थी। दवीदोव ने जल्दी-जल्दी खाना खाया और चिंता के साथ फ़ार्म के कार्यालय चला गया। वहां मकान मालकिन की बात की पुष्टि हो गयी और नये ब्योरे भी उसे पता चले। नागूल्नोव के व्यवहार का सब भिन्न-भिन्न मूल्यांकन कर रहे थे: कुछ उसका अनुमोदन कर रहे थे, कुछ लोग धिक्कार रहे थे और कुछ चुप थे। उदाहरण के लिये ल्युबीश्किन दृढ़ता के साथ नागूल्नोव का पक्ष ले रहा था और याकोव लुकीच होंठों को सिकोड़े ऐसे खड़ा था मानो उसे ख़ुद नागूल्नोव की सज़ा भुगतनी पड़ी हो। शीघ्र ही मकार भी फ़ार्म के कार्यालय मे आ गया। देखने में वह सामान्य से अधिक कठोर लग रहा था, उसने संयमित स्वर से दवीदोव का अभिवादन किया, पर उसकी आंखो में चिंता और आतुरता की झलक थी। जब वे दोनों अकेले रह गये दवीदोव का संयम टूट गया, तीखे स्वर में उसने पूछा:

"तुम्हारे बारे में यह क्या ख़बर है?"

"जब तुम्हें मालूम है तो क्यों पूछ रहे हो..."

"ऐसी विधियों से तुम बीज जमा करने के अभियान का प्रचार कर रहे हो?"

"वह मेरे साथ ऐसी नीच बाते क्यो करता है? मैने दुश्मन से, श्वेत साप से बेइज्जती सहने की सौगध नही खायी है!"

"पर तुमने यह सोचा है कि दूसरो पर इसका क्या प्रभाव पडेगा, राजनीतिक दृष्टि से यह कैसा लगेगा?"

"तब सोचने का समय नही था।"

"यह भी कोई जवाब हुआ! तुम्हे शासन की मानहानि के लिये उसे गिरफ्तार करना चाहिये न कि पीटना! यह करतूत कम्युनिस्ट के लिये शर्मनाक है, फैक्ट! और आज ही हम पार्टी-इकाई मे तुम्हारे बारे मे प्रश्न उठायेगे। तुमने अपनी करतूत से हमे कितना नुकसान पहुचाया है! हमे उसकी भर्त्सना करनी चाहिये! सामूहिक फार्म की सभा मे भी इलाकाई पार्टी समिति की अनुमति की प्रतीक्षा किये बिना मै इसी के बारे मे बताऊगा, सच कहता हू! क्योकि अगर हम चुप रहे तो किसान सोचने लगेगे कि हम सब तुम्हारे साथ है और इस काम मे तुमसे सहमत है! नही भइया! हम तुम्हारी हिमायत नही करेगे और तुम्हारी भर्त्सना करेगे। तुम कम्युनिस्ट हो पर तुम्हारी करतूत जार की पुलिस जैसी है। कितनी शर्म की बात है! शैतान उधेडे तेरी चमडी तेरी करतूत के लिये!"

पर नागुल्नोव अक्खड बैल की तरह अड गया। दवीदोव उसे एक कम्युनिस्ट के लिये ऐसी करतूत की अवाछनीयता और राजनीतिक दृष्टि से उसकी हानिकरता के बारे मे समझाने की कोशिश कर रहा था पर दवीदोव की हर दलील का वह बस यही उत्तर दे रहा था

"मैने उसे पीटकर ठीक ही किया है! पीटा कहा बस एक ही बार मारा, उसकी तो अच्छी धुनाई करनी चाहिये थी। मेरा पिड छोडो! मुझे अब तुम क्या सुधारोगे, देर हो गयी। मै छापेमार रह चुका हू और मै अच्छी तरह जानता हू कि तरह-तरह के दुश्मनो से अपनी पार्टी की कैसे रक्षा करू!"

"मै यह थोडे ही कह रहा हू कि यह हमामची अपना आदमी है, भाड मे जाये वह! मै तो बस यही कह रहा हू कि तुम्हे उसे पीटना नही चाहिये था। बेइज्जती से पार्टी की रक्षा के लिये कोई दूसरा तरीका भी चुन सकते थे! अच्छा, जाओ, कुछ शात होकर सोचो तो और शाम को पार्टी-इकाई की सभा मे आकर तुम ही कहोगे कि मेरी बात सही थी।"

शाम को पार्टी-इकाई की सभा मे पहले जैसे ही मुह फुलाये मकार आया दवीदोव ने उससे पूछा

"सोचा ?"

"सोच लिया।"

"क्या ?"

"कम की मैने उस कुत्ते की औलाद की पिटाई। गोली मार देनी चाहिये थी!"

प्रचार-टोली ने पूरी तरह दवीदोव का समर्थन किया और नागूल्नोव की कडी प्रताडना के पक्ष मे वोट दिये। अद्रेई रजम्योत्नोव ने मतदान मे भाग नही लिया, वह पूरे वक्त चुप था पर जब सभा के बाद जाने से पहले मकार बडबडाकर बोला "मै अपनी गलती नही मानता," रजम्योत्नोव उछल के खडा हुआ और मा-बहन की गालिया देता कमरे से बाहर भाग गया।

अधेरी ड्योढी मे सिगरेट सुलगाते समय दियासलाई के धुधले प्रकाश मे नागूल्नोव के मुरझाये चेहरे को घूरकर दवीदोव सुलह करने के अदाज मे बोला

"तुम, मकार, बेकार ही मे हमारी बातो का बुरा मान रहे हो!"

"मै नही मान रहा बुरा।"

"तुम पुरानी, छापामार विधियो मे काम लेते हो, पर अब जमाना बदल चुका है, अब छापे नही मारे जा रहे बल्कि स्थैतिक युद्ध हो रहा है हम सब पर छापेमारी का रोग चढा था, खासकर हम नौसैनिको को, बेशक मुझे भी। हालाकि तुम्हारी नसे कमजोर है पर मकार प्यारे, अपने पर लगाम लगाने की जरूरत है, क्यो? तुम जवान पीढी को तो देखो हमारी प्रचार-टोली का कोम्सोमोल छोकरा वान्यूश्का नाइद्योनोव क्या करिश्मे कर दिखाता है! उसके मुहल्ले से सबसे अधिक बीज आये है, लगभग सारे लोग जमा करा चुके है। देखने मे तो वह कोई खास चतुर नही लगता, चेहरे पर चित्तिया है, कद भी ऊचा नही पर काम हम सबसे बढिया करता है। घर-घर जाकर बतियाता है, कहते है कि वह लोगो को कहानिया सुनाता है और लोग पिटाई के बिना, ठडे कमरे मे बद किये बिना अनाज ले आते है, सच कहता हू।" दवीदोव के स्वर मे मुस्कान और

स्नेह की झलक थी जब उसने नाइद्योनोव की चर्चा छेडी और नागूल्नोव को अपने मन मे चतुर कोम्सोमोल सदस्य के प्रति ईर्ष्या का-सा भाव उमडता महसूस हुआ। "तुम कौतूहल के नाते ही कल उसके साथ फेरा लगा आओ, देखो कि कैसे वह अपना काम पूरा करता है," दवीदोव कह रहा था, "सच कहता हू, इसमे तुम्हारे लिये शर्म की कोई बात नही। भइया, कभी-कभी हम नौजवानो से भी बहुत कुछ सीख सकते है! वह हमसे काफी भिन्न लगते है, वे हमसे कुछ चतुर है "

नागूल्नोव उस समय तो कुछ नही बोला, पर सुबह उठने के साथ ही उसने वान्या नाइद्योनोव को ढूंढा और बात ही बात मे बोला

"आज मै खाली हू, तेरे साथ जाना चाहता हू मदद देने के लिये। तुम्हारी तीसरी टोली मे कितना अनाज बकाया है?"

"बस नाम-मात्र का रह गया है, कामरेड नागूल्नोव! चलिये एक से दो भले, मन भी लग जायेगा।"

वे दोनो साथ-साथ चल पडे। नाइद्योनोव तेजी से, बतख की तरह हिलता हुआ चल रहा था। उसकी चमडे की जैकेट मे सूरजमुखी के तेल की खुशबू आ रही थी, जैकेट के बटन खुले थे, चारखाने की टोपी आखो तक झुकी थी। नागूल्नोव बगल से कौतूहल के साथ कोम्सो-मोल सदस्य के चित्तियो से ढके सामान्य-से चेहरे को देख रहा था जिसे कल दवीदोव ने बडे स्नेह के साथ वान्युश्का कहा था। इस चेहरे मे कोई अत्यत प्रिय आकर्षक बात थी शायद स्लेटी आखे या दृढता के साथ आगे को निकली किशोरसुलभ ठोडी

जब वे भूतपूर्व 'मुर्गीछेड' बूढे अकीम बेसख्लेबनोव के घर मे घुसे, उसका सारा परिवार नाश्ता कर रहा था। बूढा मेज के सामने-वाले कोने पर बैठा था, उसके पास कोई तालीस-एक साल का उसका बेटा बैठा था जिसका नाम भी अकीम था। उसके दायी ओर पत्नी और बूढी विधवा सास बैठी थी। दो सयानी बेटिया उनके सामने बैठी थी और मेज के दोनो ओर मक्खियो की तरह बच्चे चिपके बैठे थे।

"नमस्ते!" नाइद्योनोव ने अपनी चीकट टोपी उतारकर बाल सहलाये।

"नमस्ते, अगर मजाक नही कर रहे," सरल और हसमुख अकीम छोटे ने हल्के से मुस्कराकर उत्तर दिया।

मजाक भरे अभिवादन को सुनकर नागूल्नोव तो भौहे सिकोडकर

सख्ती से कहने ही वाला था "हमारे पास मजाक का वक्त नही है। अभी तक अनाज क्यो नही जमा कराया?" पर वान्या नाइद्योनोव ने मेजबानो के चेहरो के ठडे भाव पर मानो ध्यान ही न दिया। वह मुस्करा-कर बोला

"आपके घर मे धन-धान्य हो!"

सूखा "शुक्रिया" कहकर या "अपना खाता हू, तुझे क्या लेना" जैसा भद्दा मजाक करके अकीम उन्हे मेज पर बिठाये बिना ही टालने को मुह खोल भी न पाया कि नाइद्योनोव झट मे बोला

"अरे आप फिक्र न करे! कोई जरूरत नही! पर चलो नाश्ता करने मे क्या हर्ज है सच कहू तो मैने आज नाश्ता नही किया। कामरेड नागूल्नोव तो यही के है, वह तो बेशक पेट मे कुछ डाल आये होगे, पर हम तो रोज खाना भी नही खाते 'स्वर्ग की चिडियो' की तरह।"

"मतलब न बोते हो न काटते हो पर पेट भरा रहता है?" अकीम ने हसकर पूछा।

"पेट भरा हो या नही पर मुह पर मुस्कान हमेशा रहती है," ये शब्द कहकर नाइद्योनोव ने झट मे जैकेट उतारी और मेज पर बैठ गया।

मेहमान की बेतकल्लुफी को देखकर बूढे अकीम के मुह से आह निकली और छोटा अकीम हस पडा

"यह हुई फौजियो जैसी बात! बडी किस्मतवाला निकला तू लडके, मै तो अपना खाता हू तुझे क्या लेना' कहकर टालनेवाला था तुझे पर तू मुझसे भी चट निकला! लडकियो! इसे चम्मच दे दो!'

एक लडकी उठी और पेशबद मे मुह छिपाकर खिलखिलायी और चम्मच लेने चली गयी। पर चम्मच उसने नाइद्योनोव को ऐसे दी जैसे पुरुष को – झुककर – दी जाती है। मेज पर हसी-मजाक का वातावरण छा गया। अकीम छोटे ने नागूल्नोव को उनके साथ बैठने को कहा पर वह मना करके सदूक पर बैठ गया। सुनहरी भौहोवाली अकीम की पत्नी ने मुस्कराकर मेहमान की ओर डबलरोटी का टुकडा बढाया, चम्मच देनेवाली लडकी अदर के कमरे मे जाकर साफ नैपकिन ले आयी और उसे नाइद्योनोव के घुटनो पर बिछा दिया। अकीम छोटा कौतुक और

प्रशसा भाव के माथ चित्तीदार चेहरेवाले इस निर्भीक लडके को देख रहा था, जो उनके गाव के लडको जैसा नही था, और बोला

"देखा कामरेड, तुम मेरी बेटी को पसद आ गये। बाप को इसने कभी साफ नैपकिन दिया नही पर तुम्हे बैठते ही दे दिया। अगर रिश्ता भिजवाओगे तो मै फौरन हा कर दूगा!"

बाप के मजाक से लडकी का चेहरा लाल हो गया, हाथ से मुह ढककर वह उठी और नाइद्योनोव हसी मे और रग घोलते हुए बोला

"यह शायद चितकबरे से शादी नही करेगी। मै तो अधेरे मे ही शादी का सुझाव दे सकता हू, तब मै बडा सुदर लगता हू और लडकिया तभी मुझे पसद कर सकती है।"

उबले फलो का सत परोसा गया। बातचीत बद हो गयी। बस मुहो की चपड-चपड और देगची मे चलती लकडी की चम्मचो की आवाजे सुनायी दे रही थी। जब किसी बच्चे की चम्मच उबली नाशपाती की खोज करती देगची मे चक्कर लगाने लगती तभी नीरवता भग होती। तब बूढा अकीम अपनी चम्मच को चाटकर दोषी बच्चे के माथे पर टन्न से बजाता और कहता

'मत ढूढ!"

गिरजे जैसी शाति छा गयी है,' घर की मालकिन बोली।

'गिरजे मे भी हमेशा शाति नही होती, भरपेट दलिया और फलो का सत खाकर वान्या बोला। "हमारे यहा ईस्टर पर ऐसी घटना हुई कि हसते-हसते पेट मे बल पड जायेगे।"

मालकिन ने मेज से बर्तन उठाने बद कर दिये। अकीम छोटे ने सिगरेट सुलगायी और बेच पर बैठकर किस्सा सुनने को तैयार हो गया बूढा अकीम तक डकारे लेता सलीब का चिन्ह बनाता नाइद्योनोव को कान लगाकर सुनने लगा। बेसब्री के साथ बैठे नागूल्नोव ने सोचा

'आखिर कब यह अनाज की बात छेडेगा? लगता है यहा हमारी दाल नही गलेगी! दोनो अकीमो को समझाना आसान नही, पूरे गाव मे इन जैसा शैतान नही मिलेगा। और इनको डराया-धमकाया भी नही जा सकता क्योकि छोटा अकीम लाल सेना मे नौकरी करता था और पूरी तरह हमारा ही आदमी है। और अनाज वह इसलिये नही लायेगा कि उसे सपत्ति से मोह है, ऊपर से कजूस भी है। यह तो सर्दियो मे भी मागने पर बर्फ न देनेवालो मे है, मै तो जानता हू!"

इतने मे वान्या नाइद्योनोव कुछ रुककर बोला

"मै, तात्सीन्स्की इलाके का हू, और हमारे यहा एक बार ईस्टर पर यह घटना हुई प्रार्थना के लिये पूजापाठी लोग गिरजे मे जमा थे, भीड से दम घुटा जा रहा था, तिल धरने की जगह नही थी। पादरी और उपयाजक बेशक भजन गा रहे थे, पाठ कर रहे थे और गिरजे के जगले के पास लडके खेल रहे थे। हमारी बस्ती मे एक बछिया थी, इतनी मरखनी कि पूछो मत, बस छेडने की देर थी कि झट से सीग मारने दौड पडती। तो यह बछिया आराम मे जगले के पास चर रही थी, पर लडको ने उसे इतना छेडा कि वह उनमे से एक के पीछे दौड पडी, लगता था कि बस अभी उसे सीग मार देगी! वह लडका गिरजे के अहाते मे घुस गया, बछिया उसके पीछे-पीछे, लडका गिरजे की सीढियो पर चढा, बछिया ने भी पीछा नही छोडा। गिरजे के दरवाजे पर जमघट लगा था। बछिया ने दौडकर उस लडके के चूतडो पर ऐसे सीग मारे कि वह लुढककर एक बुढिया के पैरो मे जा पडा। बुढिया गिर पडी, उसका सिर फर्श से टकराया। वह जोर-जोर से चिल्लाने लगी 'बचाओ-बचाओ, भले लोगो! मार डाला मुझे!' बुढिया के बुड्ढे ने लडके की पीठ पर छडी दे मारी! 'भाड मे जा शैतान की औलाद!' उधर बछिया ने रंभाकर बूढे को सीगो से टक्कर मारी। बस तहलका मच गया! जो लोग वेदी के पास खडे थे वे समझ नही पा रहे थे कि क्या हुआ, दरवाजे से गुल-गपाडा सुनायी पड रहा था, वे प्रार्थना-वार्थना भूल-भालकर एक-दूसरे से पूछने लगे 'यह क्या शोर मच रहा है? क्या हुआ?'"

वान्या ऐसा मुह बना-बनाकर अपने गाववालो की कानाफूसी का दृश्य दिखा रहा था कि अकीम छोटा अपनी हसी को रोक न पाया और खिलखिलाकर हस पडा

"कमाल कर दिया बछिया ने!"

मुस्कराकर अपने सफेद दात चमकाकर वान्या ने आगे बताया

"एक मनचले ने मजाक मे कह दिया 'शायद पागल कुत्ता घुस आया है, भागना चाहिये यहा से!' उसके पास ही एक गर्भवती औरत खडी थी, वह डर के मारे गला फाडकर चिल्लायी 'ओ, मेरी अम्मा! वह तो सब को काट खायेगा!' पीछेवाले आगेवालो को धकेल रहे थे, शमादान उलट गये, धुआ फैलने लगा अधेरा छा गया। तभी

कोई चिल्लाया 'आग लग गयी!' बस मच गया हडकप! कोई चिल्लाना 'पागल कुत्ता!', कोई चीखता 'आग लग गयी!' कोई चिल्लाता 'कयामत का दिन आ गया!' दूमरे ने पूछा 'क्या? कयामत आ गयी? बीवी! जल्दी घर चल!' बस मब लोग बगलवाले दरवाजो की ओर पिल पडे, ऐसी धमाचौकडी मच गयी कि कोई भी न निकल पा रहा था। मोमबत्ती का म्टाल उलट गया, मिक्के बिखर गये, मोमबत्तीवाला गिरकर चिल्लाने लगा बचाओ, लूट रहे है! ' लुगाइया भेडो की तरह गर्भगृह मे घुम गयी, उपयाजक उनके मिरो पर धूपदानी मार-मारकर चिल्ला रहा था 'कहा घुम रही हो चुडैलो! तुम्हे मालूम नही कि लुगाइयो को यहा आने की मनाही है!' और बस्ती का चौधरी—खूब मोटा-ताजा था, तोद पर चेन लटकाये रहता था—दरवाजे की ओर बढना चाहता था। लोगो को धकेल-धकेलकर चिल्लाये जा रहा था 'रास्ता दो! रास्ता दो, हरामियो! यह मै हू बस्ती का चौधरी!' पर उमे कौन रास्ता देता जब कयामत का दिन ही आ गया!"

हमी के बीच वान्या न किस्मा पूरा किया

"हमारी बस्ती मे एक घोडा चोर था, अर्खीप चोम्बोव। हर हफ्ते किसी न किमी का घोडा चुरा लेना पर कोई भी उमे रगे हाथ नही पकड पाया। अर्खीप गिरजे मे अपने पाप धोन आया हुआ था। और जब कोई चीखा 'कयामत आ गयी! सब मर जायेगे!' तो अर्खीप खिडकी की ओर लपका, खिडकी उमने तोड डाली पर बाहर मे सीकचे लगे थे। मब लोग दरवाजो के पाम धक्का-मुक्की कर रहे थे, वह उधर गिरजे मे दौड रहा था, बीच-बीच मे रुककर हाथ उठाता और कहता 'देखो तो कहा मै पकडा गया! अब की बार तो मै मचमुच पकडा गया!'"

अकीम छोटा, उमकी बीवी और बेटिया हसते-हमते लोट-पोट हो गये, उनकी आखो मे आमू निकल आये। बूढा अकीम तक अपना पोपला मुह खोले हस रहा था, बस अकेली बुढिया आधी बात समझ पायी, वह कुछ ऊचा सुनती थी, अचानक न जाने क्यो वह रो पडी और आमुओ से सूजी अपनी लाल आखो को पोछकर वह बोली

"मतलब बिचारा, तीरथजात्री मारा गया! उशका क्या कर दिया?"

"किमका, दादी जी?"

"अरे उश शत का?"

"किम सत का, दादी?"

"अरे उश का जिशके बारे मे तू अभी बता रहा था गाधु का?"

"किस साधु का?"

"बेटा, मुझे नही मालूम ऊचा शुनती हू, बेटा, बहरी हो गयी ठीक शे शुनायी नही देता "

बुढिया की बाते मुनकर फिर ठहाके लग गये! अकीम हसी से लोट-पोट होकर बोला

"चोर भी क्या पकडा गया! नेरा किम्सा सुनकर मजा आ गया लडके!" वान्या का कधा थपथपाकर उसने तारीफ की।

वान्या ने बडी जल्दी से बात का रूख पलट दिया, उसने नि श्वाम छोडकर कहा

"यह तो बेशक मजेदार किम्मा है पर आजकल जो कुछ हो रहा है उसमे हमी नही आती आज मैने अखबार मे एक चीज पढी जिसमे दिल दहल गया "

"दिल दहल गया?" नये चटपटे किम्मे को मुनने के लिये तैयार बैठे अकीम ने पूछा।

'हा। इसमे दहल गया कि पूजीवादी देशो मे आम आदमी पर पाशविक अत्याचार किये जाते है। मैने पढा कि रूमानिया मे दो कोम्सो-मोल सदस्य किसानो की आखे खोल रहे थे, वे कहते थे कि जमीदारो से जमीन छीनकर आपस मे बाट लो। रूमानिया मे किमान बडी गरी-बी मे रहते है।"

"हा गरीबी मे रहते है मैने खुद अपनी आखो से देखा हे जब मन् मत्रह मे रूमानियाई मोर्चो पर था," अकीम ने पुष्टि की।

"हा, तो वे पूजीवाद को उखाड फेकने और रूमानिया मे सो-वियत व्यवस्था स्थापित करने के लिये प्रचार कर रहे थे। पर जालिम पुलिस ने उन्हे पकड लिया, एक को पीट-पीटकर मार डाला और दूसरे को यत्रणाए देने लगे। उसकी आखे फोड दी, सिर के बाल एक-एक करके उखाड दिये। और फिर लोहे की पतली सलाई को तपाकर लाल किया और नाखूनो के नीचे घुसेडने लगे "

"बूचड कही के!" अकीम की बीवी आह भरकर बोली, "नाखूनो के नीचे?"

"हा, नाखूनो के नीचे और पूछते है 'बता अपने साथियो के नाम और कोम्सोमोल से नाता तोड ले।'—'नही बताऊगा तुम्हे पिशाचो, कोम्सोमोल का मरते दम तक साथ नही छोडूगा,' वह कोम्सोमोल सदस्य बोला। तब पुलिसवालो ने उसके कान काट दिये नाक काट दी और पूछा 'बतायेगा?'—'नही, मर जाऊगा तुम कातिलो के हाथ पर हर्गिज नही बताऊगा! कम्युनिज्म जिदाबाद!' तब उन्होने उसे हाथो के बल छत से लटका दिया और उसके नीचे आग जला दी "

"देखो तो सही, कैसे कसाई है! कैसी मुसीबत टट पडी बेचारे पर!" अकीम आक्रोश के साथ बोला।

" वे उसे जिदा भुन रहे थे, और वह खून के आसू बहाता रहा पर अपने किसी साथी का नाम नही बताया, बस यही दोहराता रहा 'सर्वहारा क्राति और कम्युनिज्म जिन्दाबाद!'"

शाबाश! साथियो को नही बेचा उसने! ऐसे ही होना भी चाहिये! सिर ऊचा करके मर जाओ पर मित्रो पर आच न आये! बाइबल मे भी तो लिखा है कि अपने मित्रो के लिये जान दे दो '' बढा अकीम मेज पर घूसा पटककर आतुरता से बोला आगे आगे क्या हुआ?"

" वे उसे तरह-तरह की यातनाये देने लगे पर वह चुप रहा। सुबह से शाम तक यही सिलसिला चलता। वह बेहोश हो जाता तो पुलिसवाले उस पर ठडा पानी उडेलकर फिर से यातनाये देने लगते। जब उन्होने देखा कि ऐसे वे कुछ नही कर पा रहे तो उन्होने जाकर उसकी मा को गिरफ्तार कर लिया और थाने मे ले आये। उसकी मा से बोले 'देख, कैसे हम तेरे बेटे को अकल सिखायेगे! कह दे इसे कि मान ले बात हमारी नही तो मारकर इसकी बोटिया कुत्तो को डाल देगे!' मा बेचारी बेहोश होकर गिर पडी, जब उसे होश आया तो दौडकर अपने बच्चे से लिपट गयी उसके खून मे लथपथ हाथो को चूमने लगी

वान्या चुप हो गया, उसके चेहरे का रग उड गया था। उसने वहा बैठे लोगो पर नजर दौडायी लडकियो के मुह खुले थे आखो मे आसू

उमड़ आये थे। अकीम की पत्नी पेशबंद में मुंह छिपाकर सुड़सुड़ कर रही थी, सुबकियां ले-लेकर वह फुसफुसाती: 'बिचारी मां .. उसके मन पर क्या बीत रही होगी... अपने बच्चे को इस हाल में देखकर... हे भगवान!..' अकीम छोटे ने आह भरी और जल्दी-जल्दी काग़ज़ में तंबाकू लपेटकर सिगरेट बनाने लगा। बस संदूक़ पर बैठा नागूल्नोव ही देखने में शांत लग रहा था पर उसका भी गाल फड़का और मुंह टेढ़ा हो गया..

"..उसकी मा बोली, 'बेटे मेरे, मेरे लाल! अपनी मा की ख़ातिर मान ले इन पापियों की बात.' मां की आवाज़ सुनकर वह बोला: 'नहीं, अम्मा प्यारी! मैं साथियो से गद्दारी नही करूंगा, अपने आदर्श के लिये मर जाऊंगा, तुम मरने से पहले मुझे एक बार चूमो, तब मैं हंसते-हंसते मौत को स्वीकार कर लूंगा...'"

वान्या ने कांपती आवाज़ में पुलिस के जल्लादों के हाथों मारे गये रूमानियाई कोम्सोमोल सदस्य की कहानी पूरी की। कुछ देर के लिये शांति छा गयी. फिर मालकिन ने पूछा.

"बिचारे की उम्र क्या थी?"

"सत्रह," वान्या ने झट से उत्तर दिया और अपनी टोपी पहनकर बोला, "हा, मज़दूर वर्ग का वीर, हमारा साथी, रूमानियाई कोम्सोमोल सदस्य शहीद हो गया। उसने अपनी जान दे दी ताकि मेहनतकशों का जीवन बेहतर हो जाये। हमारा कर्त्तव्य उन्हें पूंजीवाद को उखाड़ फेंकने, मज़दूरों और किसानों की सत्ता स्थापित करने में मदद देना है। और इसके लिये सामूहिक फ़ार्मों की स्थापना और उन्हें मज़बूत बनाने की आवश्यकता है। पर हमारे यहा अभी भी ऐसे किसान है जो अपनी नासमझी के कारण ऐसे पुलिसवालों की मदद करते है और सामूहिक खेती मे बाधा डालते है—बीज के लिये अनाज नही देते... हां, नाश्ते के लिये धन्यवाद! अच्छा अब काम की बात करें जिसके लिये हम आपके यहां आये हैं। आपको अभी जाकर बीज के लिये अनाज जमा करा देना चाहिये। आप लोगों को पूरे सतहत्तर पूद जमा करवाने हैं। चलो, मालिक, ले जाओ!"

"पर-पर... अनाज तो इतना होगा भी नही..." इतनी तेज़ी से पलटी बात से भौंचक्का अकीम छोटा हड़बड़ा गया पर पत्नी ने उसकी ओर क्रुद्ध दृष्टि से देखा और रोककर बोली:

"छोड दो यह सब! जाओ बोरियो मे भरकर दे आओ!"

"सत्तर पूद नही होगा छना भी नही है," अकीम ने प्रतिरोध करने का क्षीण प्रयास किया।

"जाओ बेटा, दे आओ। जब जरूरत है तो दे देना चाहिये, क्यो बेकार मे अड रहे हो," बूढे अकीम ने बहू का समर्थन किया।

"हम घमडी नही है, छानने मे मदद कर देगे तुम्हारी," वान्या तत्परता के साथ बोला। "तुम्हारे यहा छाज तो होगा?"

"है पर कुछ टूटा हुआ है"

"तो क्या हुआ?! ठीक कर देगे! लाओ जल्दी से! तुम्हारे यहा तो हमने गपशप मे ही देर कर दी इतनी"

आधे घटे बाद अकीम छोटा सामूहिक फार्म के बाडे मे दो बैल गाडिया ले आया और वान्या भूसी की कोठरी मे छने ठोस, सुनहरे गेहू से भरी बोरिया उठाकर खत्ती के दरवाजे के पास रख रहा था। उसका चेहरा मोतियो की तरह पसीने की बूदो से ढका था।

"तुम क्यो अनाज भूसी की कोठरी मे रखते हो? खत्ती इतनी बडी है, पर अनाज इतनी लापरवाही मे रखा था?" उसने आख मार-कर अकीम की एक बेटी से पूछा।

"यह पिता जी ने सुझाया था" झेपकर उसने उत्तर दिया।

जब बेसख्लेब्नोव अपने हिस्से का सतहत्तर पूद अनाज लेकर सामूहिक खत्ती के लिये रवाना हो गया और वान्या व नागूल्नोव उन लोगो से विदा लेकर अगले घर के लिये चल पडे तो नागूल्नोव ने वान्या के थके चेहरे को हर्षपूर्ण आतुरता से घूरकर पूछा

"कोम्सोमोल सदस्य के बारे मे तुमने गढा था किस्सा?"

'नही, बहुत पहले एक पत्रिका मे ऐसी घटना के बारे मे पढा था।'

"पर तुम तो कह रहे थे आज पढा था"

'फर्क क्या पडता है? सबसे बडी बात तो यही है कि ऐसी घटना हुई थी, दुख तो इसी का है कामरेड नागूल्नोव!"

"पर तुमने अपनी तरफ से कुछ जोडा इसे मर्मस्पर्शी बनाने के लिये?"

"इसका इतना महत्व नही है!" वान्या ने झुझलाकर कहा और ठड से सिहरकर उसने जैकेट के बटन बद किये। वह बोला "सबसे

बडी बात तो यह है कि लोगो ने जल्लादो और पूजीवादी व्यवस्था के प्रति घृणा और हमारे सेनानियो के प्रति सवेदना का अनुभव किया। प्रमुख बात तो यह है कि बीज मिल गये हमे और वैसे भी मैने अपनी तरफ मे लगभग कुछ भी नही जाडा। हा, फलो का मत बहुत बढिया था! बेकार ही, कामरेड नागूल्नोव, आपने मना कर दिया।"

२६

दस मार्च की शाम मे ग्रेम्याची पर कोहरा छा गया, सवेरे तक घरो की छतो मे बर्फ पिघलकर टपकती रही, दक्षिण मे स्तेपी की पहाडियो के पार से ऊष्म और नम हवा के तेज झोके आ रहे थे। रात ने रेशमी कोहरे का परिधान पहनकर, नीरवता और वासती पवन की मादक महक के साथ ग्रेम्याची मे वसत का स्वागत किया। प्रात सूर्योदय के काफी देर बाद गुलाबी कोहरा उठ गया, नीला आकाश और सूरज चमकने लगे। दक्षिणी पवन सैलाब की तरह बहने लगा। हिम के मोटे कण खडखड करके पिघलने लगे छते स्लेटी हो गयी सडक काले धब्बो मे ढक गयी और दोपहर तक आसुओ की तरह निर्मल जल की असख्य धाराए टीलो से खड्डो और बीहडो की ओर दौडने लगी, कलकल करती व निचाई पर स्थित कुजो, बागो मे भरकर चेरी वृक्षो की कडवी जडो को चूमती नदी के तट पर सरकडो को डुबोती हिलोरे लेने लगी।

कोई तीन दिन बाद चारो ओर से हवाओ के लिये खुले टीलो की ढलानो पर ऊपर से लेकर नीचे तक गीली मिट्टी चमकने लगी, टीलो, पहाडियो मे बहते जल की धारा अब मटमैली हो गयी थी उसकी तेज लहरे पीले फेन के घने गुच्छो, खेतो मे अनाज के पौधो की जडो और जगली घास को बहाये ले जा रही थी।

ग्रेम्याची मे नदी मे बाढ आ गयी। कही ऊपर से धूप की गर्मी मे, मानो घुन लगे अनाज की तरह छिद्रो से ढके नीले हिम खड तैरते चले आ रहे थे। नदी के मोडो पर किनारे के पास वे घूम-घमकर एक दूसरे से रगडने लगते जैसे अडजनन के काल मे मछलिया। कभी-कभी तेज धारा उन्हे ऊचे किनारे पर पटक देती, तो कभी वे बाढ के पानी

के माथ बागो मे घुमकर पेडो के तनो को खुरचने, नन्हे पौधो को कुचलने लगते।

गाव के बाहर हिम मे मुक्त काले खेत पुकार रहे थे। पतझड से जुते खेतो मे हल मे पलटी चिकनी, काली मिट्टी से भाप उठ रही थी। दोपहर को स्तपो म भव्य नीरवता छा जाती। खेतो क ऊपर सूरज, दूधिया धुध, नीले आकाश को चीरती मारमो की चहकती डारे उडती थी।

पद्रह मार्च तक ग्रेम्याची मे बीज भडार बनाने का काम मपन्न हो गया। अलग खेती करनेवाले किसानो ने अपने बीज अलग खत्ती मे जमा करवाये जिसकी चाबी सामूहिक फार्म के प्रबध कार्यालय मे मरशिन थी। फार्म के मदस्यो ने छह माझी खत्तियो को खचाखच भर दिया था। बीजो की ओसाई रात को भी तीन लालटेनो की रोशनी म जारी रहती। इप्पोलीत शाली के लोहरखाने मे रात तक धौकनी चलती रहती, हथौडे की चोट मे आग के सुनहरे कण फूटते और निहाई झकार करती। शाली ने १५ मार्च तक मभी कृषि यत्रो की मरम्मत पूरी कर डाली। और १६ तारीख की शाम का स्कूल मे दवीदोव ने मामूहिक फार्म के किमानो की मभा मे उमे अपने लेनिनग्राद में लाये औजार पुरस्कार स्वरूप भेट किये और बोला

"हमारे प्यारे लोहार, कामरेड इप्पोलीत शाली को, मामूहिक फार्म के सभी मदस्यो के लिये अनुकरणीय, वास्तव मे अग्रणी श्रम के लिये हमारे प्रबध-मडल ने ये औजार भेट करने का निर्णय लिया है।

अग्रणी लोहार को पुरस्कार देने के समारोह म वह दाढी बनाकर धुली जर्मी पहनकर आया था। उसने मेज पर बिछे लाल कपडे पर रखे औजार उठाये और अद्रेई रज्म्योत्नोव ने मकोच से लाल इप्पोलीत को मच पर धकेला।

'आज तक कामरेड शाली ने मरम्मत का काम शत-प्रतिशत पूरा कर लिया है, सच कहता हू, नागरिको! कुल मिलाकर इसने चौवन हलो के फाल, बारह बीज बोने की मशीने और बहुत-मे अन्य यत्र काम के लिये तैयार किये है! हमारे प्यारे कामरेड, पुरस्कारस्वरूप हमारा मप्रेम उपहार स्वीकार करो और तुम आगे भी ऐसे ही जोश मे काम करते रहो, ताकि हमारे सामूहिक फार्म के मब के सब औजार

हमेशा बढिया हालत मे रहे। और आप बाकी लोगो को इसी तरह उत्साह के साथ खेत मे काम करना चाहिये।"

इन शब्दो के साथ दवीदोव ने लाल साटन के तीन मीटर के टुकडे मे पुरस्कार लपेटा और शाली को सौप दिया। ग्रेम्याची के निवासियो ने तालिया बजाकर प्रशसा करना अभी सीखा नही था पर जब शाली ने कापते हाथो से लाल बडल ग्रहण किया, स्कूल शोर-गुल से भर गया

"इसके काबिल है! खूब काम किया इसने!"

"बेकार पडी चीजो को काम लायक बना डाला।"

"औजार भी मिले, ऊपर से लुगाई के लिये कपडा भी मिल गया!"

"इप्पोलीत, अब तो मुह मीठा करवा दे, काले साड!"

"इसे हाथो मे उछालो!"

"जाने भी दो! यह बेचारा हथौडे को पकडकर कितना उछल चुका है!"

इसके बाद इतना शोर मचा कि कुछ सुनायी ही नही दे रहा था पर बुड्ढा श्चुकार लुगाइयो जैसी तीखी आवाज मे जोर से चिल्लाया

"अरे तू चुप क्यो खडा है?! बोल! जवाबी भाषण तो दे! देखो तो सही ऐसे खडा है जैसे ठूठ और पत्थर की औलाद हो।"

सबने श्चुकार की बात का समर्थन किया, वे लोग गभीरता के साथ और मजाक मे चिल्लाने लगे

"अरे देमीद घुन्ने को कह दो कि इसके बजाये वह बोल दे!"

"इप्पोलीत! बोल जल्दी कुछ नहीं तो गश खाकर गिर पडेगा!

"अरे देखो तो इसके घुटने आपस मे बज रहे है!"

"खुशी के मारे क्या जीभ ही गटक गया?"

"भाषण देना कोई हथौडा चलाना थोडे ही है!"

पर अद्रेई रजम्योत्नोव, जिसे सभा-समारोह बडे पसद थे और जो आज के समारोह का सचालन कर रहा था, लोगो को चुप कराकर बोला

"अरे आप लोग कुछ शात रहे! क्यो ऐसे चिघाड रहे है? क्यो बसत का नशा चढ रहा है? सभ्य लोगो की तरह ताली बजाओ पर चिल्लाने की कोई जरूरत नही है! कृपया चुप बैठिये और इसे चैन से बोलने दीजिये!" इप्पोलीत की ओर मुडकर उसने चुपके से मुट्ठी भीचकर उसे बगल मे टहोका मारा और फुसफुसाया "छाती मे खूब

हवा भर ले और बोल पड। इप्पोलीत, कृपा करके लम्बा-चौडा भाषण देना, विद्वानो की तरह। आज के समारोह के तुम हीरो हो इसलिये तुम्हे अच्छा-खासा, लम्बा भाषण देना होगा।"

इप्पोलीत शाली को कभी इतना सम्मान नही मिला था, अपनी जिदगी मे कभी भी उसने 'लम्बा-चौडा' भाषण नही दिया था, अपने काम के लिये उसे गाववासियो से ज्यादा से ज्यादा एक गिलास वोद्का मिल जाती। प्रबध-मडल के उपहार और इतनी धूमधाम के कारण वह अब पूरी तरह सकपका गया था। छाती से लाल बडल को चिपकाये उसके हाथ काप रहे थे, लोहारखाने मे हमेशा इतनी दृढता के साथ खडी होनेवाली टागो मे कपकपी दौड रही थी हाथो मे बडल को थामे उसने आस्तीन से आख मे आये आसू और इस विशेष अवसर पर रगड-रगडकर धुल मुह को पोछा और भर्रायी आवाज मे बोला

"औजारो की हमे बेशक जरूरत है हम शुक्रगुजार है प्रबध-मडल के भी और उनकी इस बहुत-बहुत धन्यवाद! और मै चूकि मै लोहारखाने का दीवाना हू तो मै तो मै हमेशा आज की तरह – सामूहिक फार्म का सदस्य हू मै दिल खोलकर और साटन बेशक मेरी लुगाई के काम आ जायेगी " उसने कक्षा के कमरे मे ठसाठस भरी भीड मे पत्नी को खोजने के लिये खोयी-खोयी-सी नजर डाली उसे आशा थी कि वह उसकी मदद कर देगी, पर इप्पोलीत को अपनी पत्नी नही दिखायी दी और उसने गहरी सास लेकर अपना अल्प भाषण इस प्रकार समाप्त किया

साटन के औजारो के लिये और हमारे काम के लिये आपको कामरेड दवीदोव और सामूहिक फार्म को बहुत-बहुत शुक्रिया!'

यह देखकर कि शाली का भावुक भाषण समाप्त हो रहा है रजम्योत्नोव पसीने से तर लोहार को व्यर्थ ही इशारे करने लगा। लोहार उन पर ध्यान नही देना चाहता था। झुककर लोगो का अभिवादन करके, मानो बच्चे की तरह हाथो मे बडल को उठाये वह मच से उतर गया।

नागुल्नाव ने झट से टोपी उतारकर हाथ से इशारा किया और दो बालालाइकाओ और एक वायोलिन के आर्केस्ट्रा ने 'इटरनेशनल' गान की धुन छेड दी।

टोलियो के नायक दुबत्सोव, ल्युबीश्किन, द्योम्का उशाकोव रोज घोडो पर सवार होते और स्तेपी मे जाकर देखते कि जमीन जुताई और बोवाई के लिये तैयार तो नही हुई। स्तेपी मे वसत की सूखी हवाये बह रही थी। मौसम अच्छा था और पहली टोली अपने क्षेत्र की रेतीली जमीन पर जोताई की तैयारी करने लगी थी।

प्रचार-दल की टोली वोयस्कोवोय गाव मे बुला ली गयी थी पर नागूल्नोव के अनुरोध पर कोन्द्रात्को और वान्या नाइद्योनोव को बोवाई पूरी होने तक ग्रेम्याची मे ही छोड दिया था।

जिस दिन शाली को पुरस्कार दिया गया था, उसके अगले दिन नागूल्नोव ने लूश्का से तलाक ले लिया। वह गाव के आचल मे अपनी चचेरी मौसी के यहा रहने के लिये चली गयी। कोई दो दिन तक उसने किसी को अपना मुह न दिखाया। एक बार सामूहिक फार्म के दफ्तर के पास दवीदोव से उसकी भेट हुई, उसे रोककर वह बोली

"अब मै कैसे जियू कामरेड दवीदोव, कोई सलाह दीजिये।"

"यह भी कोई पूछने की बात है! अरे हम शिशुशाला खोलने की सोच रहे है, जाओ वहा करो काम।"

"माफ कीजिये! अपने बच्चे पैदा किये नही, अब क्या दूसरो के पालूगी? आप भी कैसी बात करते है!"

"तो जाओ टोली मे काम करो!"

"मै काम करने लायक औरत नही हू खेत मे काम से मुझे चक्कर आने लगते है"

"बडी आयी नाजुक कही की! जा गुलछर्रे उडा पर रोटी नही मिलेगी। हमारा नियम है 'जो काम नही करता, उसे रोटी नही मिलती!'"

लूश्का ने गहरी सास ली और नुकीली जूती से नम रेत को कुरेदते हुए सिर झुकाकर बोली

"मेरे यार, तिमोफेई नकटे ने उत्तरी देस के कोतलास शहर से चिट्ठी भेजी है जल्दी ही आनेवाला है।"

"यह उसके बस की बात नही है!" दवीदोव मुस्कराकर बोला। "अगर आ भी गया तो हम उसे और भी दूर भेज देगे।"

"मतलब, उसे माफी नही मिलेगी?"

"नही! उसकी बाट मत जोह और आवारागर्दी छोड दे। काम करना चाहिये, सच कहता हू!" दवीदोव तीव्र स्वर मे बोला और चलने लगा पर लूश्का ने हल्के से झेपकर उसे रोक लिया। उसने स्वर मे उपहास और चुनौती के पुट के साथ कहा

"मुझे कोई दूल्हा-वूल्हा नही दिलवा सकते?"

दवीदोव गुस्से मे उसे घूरकर बुदबुदाया

"मै ऐसा काम नही करता! जाओ अब!"

"एक मिनट रुकिये! एक बात और पूछना चाहती हू!"

"बोल!"

"आप मुझे अपनी पत्नी नही बना सकते?" लूश्का के स्वर मे खुली चुनौती और उपहास गूजा।

अब दवीदोव के झेपने की बारी थी। उसका पूरा चेहरा शर्म से लाल हो गया, उसके होठ हिले पर आवाज नही निकली।

"आप मेरी तरफ देखिये तो, कामरेड दवीदोव" लूश्का विनम्रता का जामा ओढकर बोली, "औरत मै सुदर हू, प्यार करने लायक हू आप देखिये तो मेरी आखे कितनी सुदर हैं और भौहे भी मेरी टागे भी और बाकी सब भी" उसने चुटकी मे लेकर अपने हरे ऊनी लहगे को हल्का-सा उठाया और झटकाकर अवाक् दवीदोव के सामने घमी। "क्यो, क्या बुरी हू? आप साफ-साफ कह दे"

दवीदोव खीज के साथ अपनी टोपी को गुद्दी पर खिसकाकर बोला

"लडकी तू चगी है। और तेरी टाग भी सुदर है पर इन टागो से तू गलत रास्ते जा रही है यह बात पक्की है!"

"जहा मर्जी होती है वही जाती हू! मतलब यह कि आप पर मै कोई आशा न रखू?"

"हा बेहतर तो यही होगा।"

"आप यह मत सोच बैठियेगा कि मै आप पर मरती हू या आपको फसाना चाहती हू। मुझे बस आप पर दया आ गयी, सोचा 'जवान मर्द है, शादीशुदा नही है, छडा है, लुगाइयो मे रुचि नही लेता" जब आप मुझे देखते है आपकी आंखो मे भूख होती है, बस आ गयी मुझे दया आप पर"

26 1152

"तू यह क्या बकबक कर रही है... अच्छा, अलविदा! तेरे साथ गप्पें लड़ाने का वक़्त नही है मेरे पास," और मज़ाक़ में जोड़ दिया: "जब बोवाई पूरी कर लेंगे, तब झपट सकती हो भूतपूर्व मल्लाह पर, पर पहले मकार से अनुमति ले लेना!"

लूश्का खिलखिलाकर हंस पड़ी और बोली:

"मकार विश्व क्रांति के बहाने मुझे टालता रहा और आप बोवाई के। नही, माफ़ कीजिये! मुझे आप जैसों की ज़रूरत नहीं! मुझे तो दहकते प्यार की ज़रूरत है, आप से क्या मिलेगा?.. आप का ख़ून तो अधिक काम के कारण ठंडा पड़ गया, फूटे बर्तन मे भी कभी पानी उबला है!"

दवीदोव खोयी-खोयी मुस्कान के साथ दफ़्तर की ओर चल पड़ा। पहले उसने सोचा: "किसी तरह इसे किसी काम में लगाना चाहिये नहीं तो ग़लत राह पकड़ लेगी। सब काम में व्यस्त हैं और यह मज-धज कर घूम रही है, ऊपर से ऐसी बातें करती है..." पर फिर उसने मन ही मन कहा: "भाड़ में जाये! बच्ची थोड़े ही है, ख़ुद समझना चाहिये। मैंने क्या परोपकार का ठेका ले रखा है? काम सुझाया था – नही करना चाहती तो जाये भाड़ में!"

उसने नागूल्नोव से बस यही पूछा:

"तलाक दे दिया?"

"कृपा करके कोई सवाल मत पूछो!" अपनी लम्बी उंगलियो के नाख़ूनों को बड़े गौर मे देखते हुए मकार बुदबुदाया।

"मै ऐसे ही "

"और मै भी ऐसे ही!"

"भाड़ में जाओ! कुछ पूछ भी नही सकता!"

"पहली टोली को खेत में जाना चाहिये पर वे टाल-मटोल कर रहे हैं।"

"तुम लूश्का को सही रास्ते पर लगाने की सोचते तो अच्छा होता, अब वह अंट-शंट हरकतें करने लगेगी!"

"मैं कोई पादरी थोड़े ही हू! पिंड छोडो मेरा! मैं पहली टोली के बारे में कह रहा हूं कि कल उसे खेत में काम शुरू कर देना चाहिये .."

"पहलीवाली कल शुरू कर देगी... पर तुम क्या सोचते हो, तलाक़ दे दिया और हो गयी छुट्टी? औरत को क्यों कम्युनिस्ट भावना

मे सीख नही दी? तुम्हारे साथ तो मुसीबत ही मुसीबत है, फैक्ट!"

"कल मै खुद जाऊगा पहली टोली के साथ खेत मे क्यो तुम गोखरू की तरह चिपक गये? 'नही सिखाया, नही सिखाया!' की रट लगा दी। मै उसे क्या सिखाता जब खुद निरा बुद्धू हू? तलाक दे दिया, और क्या चाहिये तुम्हे? तुम भी दाद की खाज की तरह हो मेम्यान! इधर हमामची की वजह से मेरा हाल खराब है ऊपर से तुम भूतपूर्व बीवी को मढ रहे हो "

दवीदोव उत्तर देना ही चाहता था कि दफ्तर के अहाते मे कार का हॉर्न बजा। हिचकोले खाती, डबरे मे पिघली बर्फ से भरे पानी के छीटे उडाती इलाकाई समिति की 'फोर्ड' कार आकर रुकी। दरवाजा खोलकर इलाकाई नियत्रण आयोग का अध्यक्ष समोखिन कार से उतरा।

"यह मेरे मामले की जाच करने आया है " नागूल्नोव ने नाक-भौ सिकोडी और दवीदोव की ओर क्रुद्ध नजर डालकर बोला "देखो, तुम मेरी लुगाई के बारे मे मुह मत खोलना, नही तो मेरा भट्ठा बिठवा दोगे! पता है यह समोखिन कैसा है? पूछने लगेगा कि 'क्यो तलाक दिया, किन परिस्थितियो मे?' इसके लिए किसी कम्युनिस्ट का तलाक सीने मे खजर की तरह है। मानो पादरी हो न कि इस्पेक्टर। इस बडी खोपडीवाले शैतान को देखकर मुझे उल्टी आती है! और यह हमामची! जान से मार डालता तो अच्छा ही होता "

समोखिन ने कमरे मे प्रवेश किया तिरपाल के बैग को हाथ मे पकडे-पकडे, दुआ-सलाम किये बिना वह कुछ-कुछ मजाक के लहजे मे बोला

"क्यो, नागूल्नोव, शरारत कर डाली? और तुम्हारी वजह से मुझे ऐसे कीचड मे यहा आना पडा। और यह कामरेड कौन है? दवीदोव तो नही? अच्छा, नमस्ते।" नागूल्नोव और दवीदोव से हाथ मिलाकर वह मेज के पास बैठ गया। "कामरेड दवीदोव, तुम हमे आध-एक घटे के लिये अकेला छोड दो, मुझे इस गावदी से एक-दो बाते करनी है।"

"ठीक है, कर लीजिये।"

दवीदोव जाने के लिये उठा उसे यह सुनकर बडा आश्चर्य हुआ कि नागूल्नोव जिसने अभी कुछ देर पहले ही उससे तलाक की चर्चा

न करने का अनुरोध किया था, यह सोचकर कि 'जो होगा, सो होगा', फटाक से बोला

"यह सच है कि एक प्रतिक्रांतिकारी की पिटाई की, पर, समोखिन, यही नही "

"और क्या कर डाला?"

"आज बीवी को घर से निकाल दिया!"

"अरे ऽऽ!" चौडे माथेवाला दुबला-पतला समोखिन घबराकर बोला और जोर-जोर से फुफकारते हुए बिना कुछ बोले बैग मे कागजो को उलटने-पलटने लगा

२७

याकोव लुकीच को रात को नीद मे कदमो की आहट, फाटक के पास खटर-पटर सुनायी दी, पर वह जाग नही पा रहा था। और जब बडी मुश्किल से वह जागा तो उसे किसी के भारी बोझ से अहाते की बाड का तख्ता चरमराने और धातु की कोई चीज खटकने की आवाज सुनायी पडी। जल्दी से खिडकी के पास जाकर कपाट मे बने छेद पर उसने आख टिकायी। याकोव लुकीच को पौ फटने के पहले के घने अधकार मे कोई बाड फादता नजर आया। रात मे चमकी सफेद टोपी को देखकर उसने पोलोवत्सेव को पहचान लिया। कधो पर कोट डालकर और अगीठी पर सूखने नमदे के बूटो को पहनकर बाहर निकला। पोलोवत्सेव घोडे को अदर लाकर फाटक को बद कर चुका था। याकोव लुकीच ने उसके हाथ से लगाम ली। घोडा अयाल तक भीगा था, वह लडखडा रहा था। पोलोवत्सेव ने अभिवादन का उत्तर दिये बिना, फटे स्वर मे फुसफुसाकर पूछा

"वह ल्यात्येवस्की यही है?"

"सो रहे है। बडी मुसीबत है उनकी वजह से हर वक्त वोद्का पीते रहते है "

"भाड मे जाये! हरामजादा लगता है घोडे को मैने हद से ज्यादा थका डाला "

पोलोवत्सेव का स्वर बहुत धीमा था, याकोव लुकीच को उससे

किसी टूटेपन, गहरी आशका और थकान की झलक महसूस हुई

कमरे मे पोलोवत्सेव ने बूट उतारे, खुरजी मे कज्जाकोवाली नीली शलवारनुमा पतलून निकालकर कमर तक गीली अपनी पतलून बदली और उसे अगीठी के पास सूखने के लिये टाग दिया।

याकोव लुकीच कमरे की दहलीज पर खडा अपने अफसर की सुस्त हरकतो को देख रहा था, वह अगीठी के चबूतरे पर बाहो मे घुटनो को भरकर अपने तलवे सेक रहा था, पल भर के लिये वह तद्रा मे जड हो गया। शायद उसे बेहद नीद आ रही थी पर उसने जोर लगाकर आखे खोली और शराब के नशे मे धुत्त सोये ल्यत्येवस्की को देर तक ताकता रहा। फिर उसने पूछा

"कब से पीना शुरू किया?"

"पहले ही दिन से। बहुत ज्यादा पीता है! मुझे लोक-लाज का डर लगता है रोज वोद्का लानी पडती है लोगो को शक हो सकता है।"

"हरामजादा!" दात भीचकर प्रचड घृणा के साथ पोलोवत्सेव बोला। और फिर से बैठे-बैठे ही अपना बडा सफेद बालोवाला सिर हिलाते हुए नीद मे डूब गया।

पर कुछ मिनट बाद नीद को झटककर उसने फर्श पर पैर रखे और आखे खोली।

"तीन दिन से नही सोया हू नदियो मे बाढ आयी हुई है तुम्हारी ग्रेम्याचीवाली को तैरकर पार करना पडा।"

"आप लेट जाइये, अलेक्सांद्र अनीसीमोविच।"

"लेट जाऊगा। तबाकू दो। मेरा गीला हो गया है।"

दो गहरे कश खीचकर पोलोवत्सेव की जान मे जान आ गयी। उसकी आखो मे नीद उड गयी, आवाज सभल गयी।

"बताओ, क्या हाल-चाल है यहा के?"

याकोव लुकीच ने सक्षेप मे उसे बताया और फिर खुद पूछा

"आपकी क्या सफलताये है? जल्दी शुरू होगा?"

"बस एक-दो दिन मे या कभी भी शुरू नही करेगे। कल रात को तुम्हारे साथ वोयस्कोवोय जायेगे। वहा से शुरूआत करनी चाहिये, कस्बे के पास है। आजकल वहा प्रचार दल है। उसी से शुरू करेगे। वहा मुझे तुम्हारी जरूरत पडेगी। वहा के कज्जाक तुम्हे जानते है,

तुम्हारी बात का उन पर असर होगा।" पोलोवत्सेव चुप हो गया, बड़ी देर तक वह उसके घुटनों पर चढ़े काले बिल्ले को अपनी चौड़ी हथेली से सहलाता रहा, फिर फुसफुसाया, उसके स्वर में इतना स्नेह था कि उसे पहचानना कठिन था: "पूसी! पूसी रानी! मेरे बिल्ले! तुम कितने काले-कलूटे हो! लुकीच, मुझे बिल्लियां बहुत अच्छी लगती है! घोडा और बिल्ली सबसे साफ़-सुथरे जानवर होते है.. मेरे घर में साइबेरियाई बिल्ला था, बहुत बड़ा और झबरीला .. हमेशा मेरे साथ सोता था.. उसका रंग कुछ..." पोलोवत्सेव ने सोच में डूबकर आंखें मिचमिचायीं, फिर मुस्कराकर उंगलियां हिलाते हुए बोला, "कुछ-कुछ धुएं जैसा सलेटी, सफ़ेद चित्तियोंवाला। बहुत बढ़िया बिल्ला था! और, लुकीच, तुम्हें अच्छी लगती हैं बिल्लियां? और कुत्ते मुझे बिलकुल अच्छे नही लगते, कुत्तों से मुझे घृणा है! बचपन की बात है, तब मेरी उम्र कोई आठ साल की रही होगी। घर पर एक छोटा-सा पिल्ला था, मैं उसके साथ खेल रहा था, शायद खेल-खेल में मैंने उसे दर्द पहुंचाया और उसने मेरी उंगली काट ली, खून निकल आया। मुझे ऐसा गुस्सा आया कि लकड़ी उठाकर उसकी पिटाई करने लगा। वह भागता और मैं उसका पीछा करके पीटे जाता . इतना मज़ा आ रहा था! वह खत्ती के नीचे घुसा – मैं भी उसके पीछे-पीछे, वह दहलीज़ की पैड़ी के नीचे घुसा मैंने उसे निकालकर पीटना जारी रखा। उसकी ऐसी धुनायी की कि उसका पेशाब निकल गया और वह चीखने की जगह सुबकिया-सी लेने लगा... और तब मैंने उसे गोद मे उठा लिया..." पोलोवत्सेव झेंपकर दोषी की तरह मुस्कराया। "उसे गोद में लेकर मै दया के साथ रो पडा! तब मुझे फ़िट पड़ गया मा दौड़ी-दौड़ी आयी और मैं बग्घी के सायबान के पास ज़मीन पर पिल्ले के साथ पड़ा टांगें मार रहा था... तब से मुझे कुत्तो से नफ़रत हो गयी। पर बिल्लियो से बेहद प्यार है। और बच्चों से भी, नन्हे-मुन्नो से। इतना प्यार है कि दिल में कसक-सी होती है। बच्चो के आंसू नही देख सकता, मन में उथल-पुथल हो जाती है .. और तुम्हे, बुड्ढे, बिल्लिया अच्छी लगती है या नही?"

अपने अधेड़ उम्र के कांइयां अफ़सर के मुंह से जो जर्मनी से युद्ध के समय से ही अपने कज़्ज़ाक सैनिकों के प्रति पाशविक व्यवहार के लिये कुख्यात था ऐसी मानव सुलभ सीधी सरल बातें सुनकर याकोव

लुकीच अवाक् रह गया और उसने बस सिर हिलाकर नकारात्मक उत्तर दिया। पोलोवत्सेव कुछ देर चुप रहा और चेहरे पर गभीर भाव लाकर उसने रूखे, कामकाजी लहजे मे पूछा

"डाक आ रही है?"

"आजकल तो बाढ आयी हुई है, घाटियो मे पानी भरा है, सडके कटी हुई है। कोई डेढ हफ्ते मे डाक नही आ रही।"

"गाव मे स्तालिन के लेख के बारे म कोई खबर है?"

"किस लेख की?"

"अखबारो मे सामूहिक फार्मो के बारे मे उसका लेख छपा था।"

"नही, यहा तो कोई खबर नही आयी। लगता है ये अखबार हम तक नही पहुचे। उसमे क्या लिखा था, अलेक्सांद्र अनीसीमोविच?"

"ऐसे ही, बेकार की बाते तुम्हारे काम की कोई बात नही थी। अच्छा, जाकर सो जाओ। घोडे को तीन घटे बाद पानी पिला देना। और कल रात को सामूहिक फार्म के दो घोडे ले लेना और जैसे ही अधेरा छा जायेगा फौरन वोयस्कोवोय चल देगे। तुम बिना जीन के जाओगे, पास ही तो जाना है।"

सवेरे पोलोवत्सेव बडी देर तक ल्यत्येवस्की से बाते करता रहा जिसका नशा उतर चुका था। बातचीत के बाद ल्यत्येवस्की जब रसोई मे निकला तो उसका चेहरे का रग उडा हुआ था और वह क्रुद्ध था।

"तबीयत सुधारने के लिये शराब तो नही चाहिये?" याकोव लुकीच ने खुशामदी भाव के साथ पूछा, पर ल्यत्येवस्की उसके सिर के ऊपर से कही देखते हुए शब्द तौल-तौलकर बोला

"अब किसी चीज की जरूरत नही," और कमरे मे जाकर पलग पर औधा लेट गया।

रात को सामूहिक फार्म के अस्तबल मे इवान बाताल्शिकोव की ड्यूटी थी जिसे याकोव लुकीच ने 'दोन मुक्ति सघ' मे भरती किया था। पर याकोव लुकीच ने उसे भी नही बताया कि वे कहा और किस-लिये जा रहे है। 'हमारे काम के लिये यही पास ही मे जाना है,' यह कहकर उसने बाताल्शिकोव को टाल दिया। और उसने बेहिचक दो सबसे बढिया घोडे खोलकर उसे थमा दिये। याकोव लुकिच उन्हे पिछवाडो से ले जाकर कुज मे बाध आया और पोलोवत्सेव को बुलाने चला गया। जब वह उसके कमरे के दरवाजे के पास आया तो उसने

ल्यत्येवस्की को चिल्लाकर कहते सुना "पर इसका तो अर्थ हमारी हार है, आप समझे तो!" उत्तर मे पोलोवत्सेव अपनी भारी आवाज मे मस्ती में कुछ बोला। याकोव लुकीच ने अनिष्ट के पूर्वाभास के साथ हल्के से दरवाजा खटखटाया।

पोलोवत्सेव जीन बाहर लाया और वे घोडो पर सवार होकर उन्हे सरपट दौडाने लगे। गाव के बाहर उन्होने उथले स्थान पर नदी पार की। सारे रास्ते पोलोवत्सेव चुप रहा, उसने सिगरेट पीने की मनाही कर दी थी और सडक पर नही बल्कि उससे पचास-एक गज की दूरी बनाये रखकर चलने को कहा।

वोयस्कोवोय मे उनकी प्रतीक्षा की जा रही थी। याकोव लुकीच के एक परिचित कज्जाक के घर मे कोई बीस गाववासी जमा थे। ज्यादातर बूढे ही थे। पोलोवत्सेव ने सबसे हाथ मिलाया, फिर उनमे से एक के साथ खिडकी के पास जाकर पाच मिनट तक कानाफूसी करता रहा। बाकी लोग चुपचाप कभी पोलोवत्सेव की ओर देखते तो कभी याकोव लुकीच की ओर। और वह दहलीज के पास बैठा पराये लोगो, कम परिचित कज्जाको के बीच घबराया-सा, अटपटा-सा महसूस कर रहा था

अदर से खिडकियो पर टाट के पर्दे पडे थे, बाहर से कपाट बद थे, अहाते म घर के मालिक का दामाद पहरा द रहा था, फिर भी पोलोवत्सेव दबे स्वर मे बोला

'कज्जाक सज्जनो घडी पास आ रही है! आपकी गुलाम का काल समाप्त हो रहा है, बगावत शुरू करनी चाहिये। हमारा सैनिक सगठन तैयार है। परसो रात को शुरू कर रहे है। वोयस्कोवोय मे पचास घुडसवारो का दस्ता आयेगा, और पहली गोली चलते ही आपको दौडकर प्रचार टोली के लोगो को दबोच लेना है तांकि एक भी जिदा न बचने पाये! आपके दल की कमान मै दफादार मार्यिन को सौपता हू। चढाई से पहले टोपियो पर सफेद फीते टाकने की सलाह दूगा तांकि अधेरे मे अपने और परायो का भेद कर सके। हरेक के पास घोडा और कोई हथियार जैसे तलवार, रायफल या शिकारियो की बदूक ही सही, तथा तीन दिन का खाना तैयार रहने चाहिये। जब प्रचार टोली और अपने स्थानीय कम्युनिस्टो से निबट लोगे तो आपका दल उस दस्ते मे शामिल हो जायेगा जो आपकी मदद के लिये आयेगा।

तब आपके दल की कमान दस्ते के कमाडर के पास चली जायेगी। उसके हुक्म पर उधर जाओगे जहा वह ले जायेगा। " पोलोवत्सेव ने गहरी मास छोडकर हथेली से माथे का पमीना पोछा और जोर मे बोला "मेरे माथ ग्रेम्याची मे मेरी रेजमेट का मैनिक, याकोव लुकीच ओस्त्रोव्नोव आया है, आप सब उसे अच्छी तरह जानते है। वह आपको हमारे साथ मिलकर कम्युनिस्टो के जुए से दोन प्रदेश की मुक्ति के महान लक्ष्य की ओर बढने की ग्रेम्याची के अधिकाश निवासियो की तत्परता के बारे मे बतायेगा। बोलो, ओस्त्रोव्नोव!"

पोलोवत्सेव की कडी नजर ने याकोव लुकीच को स्टूल मे उठा दिया। वह भट मे खडा हुआ, उसे अपना शरीर मीसे की तरह भारी और हलक दहकता लग रहा था, पर उसे बोलने का अवसर नही मिला। वहा उपस्थित सबसे वृद्ध कज्जाक गिरजा परिषद का सदस्य, युद्ध मे पहले वोयस्कोवाय के गिरजे की पाठशाला का स्थायी प्राचार्य याकोव लुकीच के साथ ही उठा और उसका मुह खुलने से पहले वृद्ध ने पूछा

'महामहिम यसाऊल साहिब क्या आप ने सुना है कि आपके आने से पहले हमने आपस मे सलाह-मशविरा किया बडा दिलचस्प अखबार आया है '

"क्या? तुम क्या कह रहे हो, दादा?" फटे-से स्वर मे पोलोवत्सेव ने पूछा।

मै कह रहा हू कि मास्को मे अखबार आया है और उसमे सारी पार्टी के चेयरमैन की चिट्ठी छपी है "

"सेक्रेटरी की!" अगीठी के पास जमा भुड मे किसी ने ठीक किया।

"मतलब सारी पार्टी के सेक्रेटरी कामरेड स्तालिन की।* यह रहा इसी महीने की दो तारीख का अखबार," बूढे ने धीरे-धीरे अपनी पतली आवाज मे बोलते हुए कोट की अदर की जेब से करीने से तह किया हुआ अखबार निकाला। "आपके आने से कुछ देर पहले हमने

* कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के निर्णयानुसार स्तालिन का लेख सफलताओं से सिर चकराना २ मार्च १९३० को प्रकाशित हुआ था।—स०

इसे पढा, और यह अखबार हमारी और आपकी राहे जुदा कर देता है! हमारी यानी हलवाहो के जीवन की राह अब बदल गयी कल हमे इस अखबार की खबर पडी और आज सवेरे मै अपने बुढापे के बावजूद घोडे पर सवार हो कस्बे गया। लेवशोव बीहड को तैरकर पार किया, आखो मे आसू थे पर पार कर ही लिया। कस्बे मे एक जान-पहचान के आदमी से भगवान की दुहाई देकर इसे खरीदा। पद्रह रूबल मे! बाद मे जब देखा तो इस पर दाम पाच कोपेक ही छपा है! पैसे तो लोग मुझे चदा करके, हर घर से दस-दस कोपेक जमा करके लौटायेगे, यही फैसला हुआ है। पर इस अखबार का असली दाम तो इससे भी बहुत अधिक है "

"तू क्या कह रहा है, बुड्ढे? क्या अट-शट बक रहा है? कही सठिया तो नही गया? किसने तुझे सबकी ओर से बोलने का अधिकार दिया है?" गुस्से से कापते स्वर मे पोलोवत्सेव ने पूछा।

तब नाटे कद का, कोई चालीस-एक साल का सुनहरी छितरी मूछो और चपटी नाकवाला कज्जाक दीवार के पास झुड बनाकर खडे लोगो के बीच से निकला और चुनौतीपूर्ण, क्रुद्ध स्वर मे बोला

"कामरेड भूतपूर्व अफसर साहब, आप हमारे बूढो पर आवाज मत उठाइये, पुराने जमाने मे आप लोग क्या कम चिल्लाये थे इन पर। बस लद गये आपके दिन, अब बदतमीजी के बिना बात करनी चाहिये। सोवियत सत्ता मे हम ऐसे व्यवहार के आदी नही रहे, समझे कुछ? और हमारे बुजुर्ग ने ठीक ही कहा था कि हमने सलाह-मशविरा किया और अखबार 'प्राव्दा' मे छपे इस लेख की वजह से हमने विद्रोह नही करने का फैसला किया है। हमारे और आपके रास्ते और पग-डडिया बट गयी! हमारे गाव के अधिकारियो ने बेवकूफिया की है किसी-किसी को बेवकूफ बनाकर सामूहिक फार्म मे हाक दिया, बेकार ही मे बहुत-से मझौले किसानो को बेदखल कर दिया, पर एक बात हमारे गाव के शासक नही समझे कि किसी लौडिया को तो उल्लू बनाया जा सकता है पर पूरी जनता को नही। हमारी सोवियत के अध्यक्ष ने हमारी जीभो पर लगाम लगा रखी थी, सभा मे उसके खिलाफ बोलने तक की हिम्मत नही होती थी। इतनी सख्ती कर रखी थी कि कुछ पूछो मत, अच्छा मालिक तो अपने घोडे तक का ख्याल रखता है पहले हम, बेशक सोचते थे कि केन्द्र के हुक्म पर

हमें पीसा जा रहा है, यही समझते थे कि कम्युनिस्टों की केन्द्रीय समिति से यह सब प्रचार हो रहा है। आपस में हम यही बातें करते थे कि ऊपरवालों के इशारे पर सब हो रहा है। इसीलिये हमने सिर उठाने की सोची और आप के 'संघ' में शामिल हो गये। समझे आप? पर अब तो स्तालिन इन स्थानीय कम्युनिस्टों को, जिन्होंने ज़बरदस्ती लोगों को सामूहिक फ़ार्म में ठूंसा और बिना बात गिरजों को बंद कर दिया, बड़ी फटकार सुनाता है, पदों से हटा रहा है। अब हलवाहे चैन की सांस ले सकते हैं, चाहो फ़ार्म में भरती हो जाओ, नही चाहते तो अपनी अलग खेती करते रहो। बस इसीलिये हमने फ़ैसला किया कि आप चुपचाप हमें वे रसीदें लौटायें जिनपर हमने बेवकूफी में दस्तखत कर दिये थे और जहां चाहते हैं, जाइये, हम आपको कोई नुकसान नहीं पहुंचायेंगे क्योंकि खुद हमारा दामन भी मैला है.."

पोलोवत्सेव खिड़की के पास गया, चौखट से पीठ टिकाकर खड़ा हो गया, उसके चेहरे का रंग उड़ा था, पर आवाज़ उसकी संतुलित और सख्त थी जब उसने सब पर नज़र डालकर पूछा:

"यह क्या है, कज़्ज़ाको? गद्दारी?"

"जैसा आप समझे," एक और वृद्ध ने उसे उत्तर दिया, "जो चाहें कहें पर अब हमारे रास्ते अलग हो गये। अगर खुद देश का मालिक हमारी हिमायत कर रहा है तो हम क्यों ग़लत राह चलें? मुझे बेकार ही मताधिकार से वंचित कर दिया गया, निर्वासित करना चाहते थे, पर मेरा बेटा लाल सेना में है, मतलब मेरे अधिकार बहाल कर दिये जायेंगे। हम सोवियत सत्ता के खिलाफ़ नही बल्कि अपने गांव में गड़बड़ी के खिलाफ़ है, और आप हमे पूरी सोवियत सत्ता के खिलाफ़ मोडना चाहते थे। नही, हमें यह नही चाहिये! हमारी रसीदे वापस कर दीजिये, अभी तो प्यार से माग रहे है।"

एक और वृद्ध कज़्ज़ाक अपनी घुंघराली दाढ़ी को सहलाता हुआ बोला:

"हम चूक गये, कामरेड पोलोवत्सेव .. भगवान गवाह है, हमसे ग़लती हो गयी! बेकार ही में हमने आपसे नाता जोड़ा। पर चलो अभी भी कुछ बुरा नही हुआ, अब हमें समझ आ गयी है... पिछली बार आपने हमें सोने के पहाड़ दिलवाने के वायदे किये थे, आपको

सुनकर हम मन ही मन सोच रहे थे कि वायदे आपके हमारे कधो के लिये भारी पड सकते है। आप ने कहा था कि विद्रोह शुरू होते ही मित्र हमारे पलक झपकते ही ढेरो हथियार और फौजी सामान भेज देगे। हमारा काम बस कम्युनिस्टो को गोली मारना ही है। पर आपके जाने के बाद हम सोचने लगे कि हथियार तो वे ले आयेगे, माल सस्ता ही है पर अगर वे खुद हमारी धरती पर उतर गये तब? एक बार उतर गये तो जाने का नाम न लेगे! उन्हे भी रूस की धरती से खदेडने के लिये फिर हथियार का सहारा लेना पड जायेगा। कम्यु-निस्ट तो अपना ही खून है अपने ही लोग है पर वे न जाने कौनसी बोली मे बोलते है। और ऐसे अकडकर रहेगे कि सर्दियो मे भी मुट्ठी भर बर्फ मागने की हिम्मत न करो! सन् बीस मे मै परदेस मे रह चुका हू। गैलीपोली मे फ्रासीसी रोटी का स्वाद चखा, दिन-रात वहा से भागने के सपने देखता था। रोटी उनकी कडवी बहुत है! मैने ढेरो देशो के लोग देखे है पर रूसी जनता से प्रिय, दयालु कोई जनता नही है। कोन्स्तान्तीनोपोल और एथेस मे मै बदरगाहो मे काम के समय अग्रेजो और फ्रासीसियो को जी भरकर देख चुका हू। जहरीले नाग की तरह फन उठाकर मेरे पास से गुजरते और मुझे देखकर उनका मुह बिगड जाता क्योकि मै गदे कपडो म होता दाढी बढी होती और मेरे शरीर से पसीने की बू आती, मुझे देखकर उनका जी मितलाने लगता। वे तो अफसर की घोडी की तरह नीचे से लेकर ऊपर तक सज-धज साफ-सुथरे रहते। बस इसीलिये घमड के साथ हम देखते। शराबखानो म उनके मल्लाह हमे छेडते और मुक्के मारते। पर हमारे दोन और कुबान के कज्जाक धीरे-धीरे परदेस के आदी हो गये और उनको मुहतोड जवाब देने लगे!' कज्जाक मुस्कराया, उसकी दाढी की पृष्ठभूमि मे नीली-सी छुरी की तरह उसकी दतावली चमकी। 'हमारा आदमी किसी अग्रेज को रूसी घूसा सुघाता और वह चारो खाने चित्त हो जाता। रूसी घूसे के सामने वे कमजोर है, हालाकि खुराक उनकी अच्छी है पर अदर से पिलपिले है। हम इन मित्रो की रग-रग पहचाते है! नही, हमे माफ करो, अपनी सत्ता मे हम खुद किसी तरह मेल-मिलाप कर लेगे, क्यो बिना बात के घर का कूडा घर के सामने डाले रसीदे आप हमे वापस कर दीजिये!"

"यह तो खिडकी से कूद जायेगा पर मै रेत पर पडे केकडे की

तरह रह जाऊगा! मारा गया! मेरी मा, तूने मुझे बडी अशुभ घडी मे पैदा किया! क्यो इस पापी के जाल मे फस गया? शैतान ने मत मार दी!" बैच पर उद्विग्न बैठा याकोव लुकीच सोच रहा था, उसकी नजरे पोलोवत्सेव पर टिकी थी। पर वह खिडकी के पास शात खडा था, अब उसका चेहरा क्रोध और दृढता से दहक रहा था। माथे पर नसे फूल गयी, हाथ खिडकी के दासे को कसकर पकडे हुए थे।

"ठीक है, मर्जी आपकी है, कज्जाक, हमारा साथ नही देना चाहते। हम मिन्नत नही करेगे। रसीदे मै वापस नही दूगा, मेरे साथ नही है हेडक्वार्टर मे है। वैसे आप बेकार ही डरते है, मै भला थोडे ही जाऊगा ग० प० उ० को बताने।"

"बात तो ठीक है," एक वृद्ध ने सहमति व्यक्त की।

"और आपको डरना ग० प० उ० से नही " अब तक धीरे-धीरे बोलता पोलोवत्सेव पूरे जोर से चिल्लाया "हमसे डरना चाहिये! हम गद्दारो की तरह सबको गोलियो से मार डालेगे! हटो, रास्ता दो! सब दीवार से सट जाओ!" और रिवाल्वर निकालकर, उसे हाथ मे ताने दरवाजे की ओर चल पडा। भौचक्के कज्जाको ने रास्ता बना दिया और याकोव लुकीच ने पोलोवत्सेव से पहले दरवाजे पर पहुचकर उसे कधे से धकेला और गुलेल से छूटे पत्थर की तरह ड्योढी मे जा पडा।

अधेरे मे उन्होने घोडे खोले और उन्हे सरपट दौडाते अहाते से चले गये। मकान से उत्तेजित स्वर सुनायी दे रहे थे पर किसी भी कज्जाक ने उन्हे पकडने का प्रयास नही किया

* * *

ग्रेम्याची पहुचकर याकोव लुकीच तेज दौड से थककर चूर घोडे को सामूहिक फार्म के अस्तबल मे छोडकर जब घर पहुचा तो पोलोवत्सेव ने उसे अपने कमरे मे बुलाया। उसने न अपना ओवरकोट उतारा था न टोपी। घर पहुचते ही उसने ल्यात्येवस्की को चलने की तैयारी का आदेश दिया और उनके लौटने से पहले घुडसवार सदेशवाहक द्वारा

लाये गये पत्र को पढ़कर उसे अंगीठी में जलाया और खुरजी में अपना सामान ठूंसने लगा।

जब याकोव लुकीच ने कमरे में प्रवेश किया वह मेज़ पर बैठा था। ल्यत्येवस्की अपनी आंख चमकाता पिस्तौल साफ़ कर रहा था, वह फुर्ती के साथ उसके तेल से चिकने पुर्ज़ों को जोड़ रहा था। और पोलोवत्सेव ने किवाड़ की चरमराहट सुनकर माथे पर ढकी हथेली हटायी और याकोव लुकीच की ओर मुंह मोड़ा, उसने पहली बार येसाऊल की धंसी, लाल आंखों मे आंसू टपकते देखे, आंसुओं से तर नाक का चौड़ा बांसा चमक रहा था...

"इसलिये रो रहा हूं कि हमारा ध्येय सिद्ध नही हुआ . इस बार . ." पोलोवत्सेव ज़ोर से बोला और मेमने की खाल की अपनी टोपी उतारकर उससे आंसू पोंछे। "दोन की भूमि दरिद्र हो गयी, असली कज़्ज़ाक नहीं रहे यहां, अब वह ग़द्दारों और लुच्चे-लफंगों से फल-फूल रही है... अभी तो जा रहे हैं, लुकीच, पर हम लौटकर आयेंगे! यह चिट्ठी मिली है तुब्यान्स्की और मेरे क़स्बे में भी कज़्ज़ाकों ने बगावत करने से इंकार कर दिया। स्तालिन ने अपने लेख से उन्हें फुसला लिया। इस वक़्त वह मेरे हाथ लग जाता तो... लगता वह मेरे हाथ इस वक्त . ." पोलोवत्सेव के गले में गरगर की सी ध्वनि हुई, मुट्ठियां कसकर भिच गयी। गहरी सास लेकर उसने मुट्ठियां खोली और उपेक्षा के साथ मुस्कराकर बोला. "कैसे लोग हैं! नीच!.. बेवक़ूफ़!.. वे नही समझते कि यह लेख धोखा है, चाल है! पर वे बच्चों की तरह इसमें विश्वास करते है। इन बेवकूफ़ों को राजनीति का मोहरा बनाया जा रहा है, नकेल ढीली की जा रही है ताकि दम न घुट जाये पर वे इसमें यक़ीन करते हैं . अच्छा, करने दो! पर जब समझेंगे तो हाथ मलकर रह जायेंगे, पर तब देर हो चुकी होगी। हम जा रहे हैं याकोव लुकीच। मेहमाननवाजी के लिये भगवान तुम्हारा भला करे। मेरी सलाह सुनो सामूहिक फ़ार्म से नही निकलना, हर तरह से उन्हें नुक़सान पहुंचाओ, और जो हमारे 'संघ' में थे उनको मेरी तरफ़ से कहना: हम कुछ देर के लिये पीछे हट रहे हैं पर हम हारे नहीं। हम फिर लौटकर आयेंगे, तब उन लोगों की शामत आ जायेगी जो हमारा साथ छोड़ेंगे, हमारे साथ, मातृभूमि और दोन प्रदेश को अंतर्राष्ट्रीय यहूदियों के जुए से मुक्ति दिलाने के ध्येय से

ग़द्दारी करेंगे। कज़्ज़ाक शमशीरों से मरकर उन्हें इसकी क़ीमत चुकानी पड़ेगी, यही कह देना उनसे!"

"कह दूंगा," याकोव लुकीच फुसफुसाया।

पोलोवत्सेव की बातों और आंसुओं ने उसे भावविभोर कर दिया पर मन में वह इस बात से ख़ुश था कि इन ख़तरनाक मेहमानों से छुटकारा पा रहा है, कि इस सबका अंत कितना अच्छा हुआ, कि उसे अब अपनी संपत्ति और अपनी चमडी पर आंच आने का डर नहीं रहेगा।

"ज़रूर कह दूंगा," यह दोहराकर उसने साहस बटोरा और पूछा: "आप कहां जा रहे हैं, अलेक्सांद्र अनीसीमोविच?"

"तुम्हें यह जानने की क्या पड़ी है?" पोलोवत्सेव ने शंका के साथ पूछा।

"ऐसे ही, आपकी जरूरत पड़ सकती है या कोई आदमी आपसे मिलना चाहे।"

पोलोवत्सेव सिर हिलाकर उठा।

"नही, यह मैं तुम्हें नही बता सकता। पर कोई तीन हफ़्ते बाद मेरा इंतज़ार करना। अलविदा," और उससे अपना ठंडा हाथ मिलाया।

घोड़े को उसने ख़ुद बड़े करीने से कसा, ल्यत्येवस्की ने अहाते में याकोव लुकीच से विदा ली और चलते-चलते उसके हाथ में दो नोट ठूस दिये।

"आप पैदल जायेंगे?" याकोव लुकीच ने उससे पूछा।

"नही, फाटक तक जाऊंगा, सड़क पर कार मेरी इंतज़ार कर रही है," लेफ़्टिनेंट ने मज़ाक़ में कहा और जब पोलोवत्सेव घोड़े पर चढ़ गया उसने रकाब की पेटी पकडी और बोला "ले चल राजा, दुश्मन के ख़ेमे में, न रहूंगा मैं, पैदल भी तुझसे पीछे!"

याकोव लुकीच ने फाटक पर मेहमानों को विदा किया और हल्के मन से फाटक की कुंडी चढ़ायी, सलीब का निशान बनाया और ल्यत्येवस्की से मिले नोटों को जेब से निकाला, बड़ी देर तक, भोर के अंधेरे में देखने की कोशिश कर रहा था कि कितने के नोट हैं, उंगलियों में मसलकर जांच करने लगा कि कहीं जाली तो नही हैं।

बीम मार्च को डाकिया स्तालिन के लेखवाले बाढ के कारण अटके ममाचारपत्र लाया। 'मोलोत' की तीन प्रतिया दिन भर मे हर घर मे हो आयी, शाम तक वे चिक्कट चिथडो की तरह हो गयी। ग्रेम्याची के अस्तित्व मे किमी ममाचार-पत्र ने कभी भी इतने श्रोताओ को जमा नही किया जितना कि उस दिन। घरो, गलियो, खलिहानो, खत्तियो मे लोग झुड बनाकर उमे पढ रहे थे एक आदमी जोर-जोर से पढता और बाक़ी बडी शाति के माथ एक-एक शब्द को मुन रहे थे। हर जगह इम लेख को लेकर बहम हो रही थी। हरेक अपने ढग से लेख की व्याख्या कर रहा था, अधिकाश मनोवाछा के अनुसार उसका अर्थ समझ रहे थे। लगभग हर बार नागूल्नोव या दवीदोव को देखकर न जाने क्यो हडबडी मे एक दूसरे को अखबार थमाने लगते और वह मफेद पक्षी की तरह जन-समूह का चक्कर लगाकर किमी की चौडी जेब मे छिप जाना।

"अब, देखना, गले कपडे की तरह मामूहिक फार्मो की धज्जिया उड जायेगी," मबमे पहले विजयोल्लाम के माथ हमामची ने अपना अनुमान प्रकट किया।

"ए वह जायेगा, माना रह जायेगा" द्योम्का उशाकोव ने उसकी बात काटी।

"देखना कहीं उल्टा न हो जाये," हमामची ने कटाक्ष किया और दूमरे स्थान पर जमा विश्वमनीय लोगो के कान मे यह बात डालने के लिये चल दिया कि 'छोडो मामूहिक फार्म, अभी मौका मिल रहा है!'"

"मझौलो को तो देखो – टाग उठाये खडे है! एक पैर तो मामूहिक फार्म मे है और दूमरे को उठाया, वापम अपनी निजी खेती मे लौटने की फिराक मे है," मामूहिक फार्म मे शामिल मझौले किमानो को आपम मे सजीवता से बात करते देख पावेल ल्युबीश्किन अर्काशा बदलू मे बोला।

लुगाइया जो आधी बात ममझी, आधी नही, अपनी ही अटकले लगाने लगी। गाव मे सुनायी पडने लगा

"मामूहिक फार्म बद हो रहे है!"

"मास्को से हुक्म आया है गायें वापस करने का।"

"कुलकों को वापस लाकर सामूहिक फार्मों में भरती किया जा रहा है।"

"उन सब का मताधिकार बहाल किया जा रहा है जिनसे छीना गया था।"

"तुब्यान्स्की में गिरजा खोला जा रहा है और वहां जमा बीज का अनाज किसानों को खाने के लिये बांटा जा रहा है।"

महत्वपूर्ण घटनायें घटनेवाली थीं। सबको इसकी अनुभूति थी। शाम को पार्टी इकाई की निजी बैठक में दवीदोव अधीरता के साथ बोला

"कामरेड स्तालिन का लेख बहुत मौके से लिखा गया है! मकार की तो वह भौंह में नहीं सीधे आंख में चुभता है! सफलताओं से मकार का सिर चकरा गया, और हमारे सिर भी कुछ-कुछ चकराने लगे साथियो, अपने सुझाव दो, कौनसी गलतियां ठीक करनी है। चलो, मुर्गे-मुर्गियां तो हमने लौटा दीं, वक्त पर अकल आ गयी पर भेड़ों और गायों का क्या करें? मैं पूछता हूं, क्या करें उनका? अगर यह राजनीतिक आधार पर नहीं किया गया तो न जाने क्या हो जायेगा होगा यह कि यह 'भागो, जान बचाओ!', 'सामूहिक फार्म से भागो!' का संकेत बन जायेगा और भाग खड़े होंगे लोग, ढोर-डंगर ले जायेंगे वापस और हम मुंह ताकते रह जायेंगे!"

नागूल्नोव, जो सभा में सबसे बाद में आया था, उठा और अपनी अश्रुपूर्ण लाल आंखों से दवीदोव को घूरता हुआ बोलने लगा, दवीदोव को मकार के मुंह से शराब की तीखी गंध महसूस हुई

'तुम कहते हो कि यह लेख मेरी आंख में चुभता है? नहीं, आंख में नहीं, सीधे दिल में! आर-पार हो गया है दिल के! और सिर मेरा तब नहीं चकराया जब हम सामूहिक फार्म का गठन कर रहे थे, बल्कि अब, इस लेख के बाद "

"वोद्का की बोतल से चकरा रहा है तुम्हारा सिर," वान्या नाइद्योनोव धीरे-से बीच में बोला।

रजम्योत्नोव आंख मारकर मुस्करा दिया दवीदोव ने मेज पर सिर झुका लिया और मकार के नथुने फूल गये, उसकी आंखों में क्रोध का उन्माद चमका

"तू, कल के लौंडे, तेरे होंठों पर दूध सूखा नहीं और मुझे

सिखाता है, मेरी बात काटता है! जब तेरी नाल भी नही गडी थी मै उस वक्त सोवियत सत्ता के लिये जूझ रहा था, पार्टी मे शामिल था समझा! और आज मैने पी है यह बकौल दवीदोव के 'फैक्ट' है। मैने एक नही दो बोतले पी है!"

"यह कोई बडाई की बात है! इसीलिये तो अट-शट बक रहे हो" मुह चढाकर रजम्योत्नोव बोला।

मकार ने उसकी ओर तिरछी नजर डाली, पर धीरे-धीरे बोलने लगा, हाथ को बेकार मे हिलाना छोड कर उसे छाती पर रख लिया और अत तक उसे चिपकाये हुए बोलता गया।

"तुम गलत कह रहे हो अंद्रेई, मै अट-शट नही बक रहा हू! शराब मैने इसलिये पी कि स्तालिन का लेख गोली की तरह मेरे सीने के आर-पार हो गया और मेरा खून खौल गया" मकार की आवाज कापी, और भी धीमी हो गयी। 'मै यहा पार्टी इकाई का सचिव हू, ठीक? मैने किस तरह सामूहिक फार्म के लिये प्रचार किया? ऐसे, हमारे कुछेक बैरियो को मैने साफ-साफ कहा, हालाकि उनकी गिनती मझौलो मे होती थी 'सामूहिक फार्म मे भरती नही हो रहे? मतलब तुम सोवियत सत्ता के खिलाफ हो? सन् उन्नीस मे हमसे लडे थे खिलाफ थे हमारे, और अब भी विरुद्ध हो? तब मुझसे भले की आशा न करना। मै तुझ बिच्छू को ऐसे कुचलूगा कि कुछ पूछो मत!" मै ऐसे कहता था? कहता था! पिस्तौल तक तानकर धमकाता था! मै मुकरता नही! यह भी सच है कि हरेक से मै इस तरह बात नही करता था, पर कुछ से करता था जो अदर ही अदर हमारे बहुत खिलाफ थे। आप कृपया बेवकूफी की बाते न करे मै इस समय नशे मे नही हू! इस लेख को मै नही पचा सका, इसलिये छह महीने म पहली बार पी डाली। कैसा है यह लेख हमारे कामरेड स्तालिन ने यह लेख लिखकर मुझे, यानी मकार नागूल्नोव को ठोकर मार दी और मै कीचड मे औधा जा गिरा ऐसा क्यो? साथियो! मै तो स्वीकार करता हू कि मुर्गियो और दूसरे ढोरो के मामले मे मैने अतिवामपथी रुख अपनाया था पर भाइयो मेरे भाइयो, क्यो मैने ऐसा रुख अपनाया? और क्यो आप त्रोत्स्की को मेरे सिर मढ रहे हो, क्यो मुझे उसके साथ एक ही जुए मे जोत रहे हो? क्या मै उसकी लाइन पर चल रहा था? तुम दवीदोव,

हमेशा मुझे लताडते रहे कि मै वामपथी त्रोत्स्कीवादी हू। पर मै त्रोत्स्की जितना पढा-लिखा कहा हू और उसकी तरह किताबों के बल पर नही बल्कि अपने दिल मे पार्टी मे जुडा हू, पार्टी के लिये बहाये गये अपने खून मे!'

"तुम काम की बात करो, मकार! क्यों तुम कीमती वक्त बरबाद कर रहे हो? वक्त की कमी है। हमारी आम गलतियो को ठीक करने के लिये कोई सुझाव दो, ऐसे तो तुम त्रोत्स्की की तरह रटे जा रहे हो 'मै पार्टी मे, मै और पार्टी' "

"मुझे बोलने दो," भडककर मकार गुर्राया और उसने अपने दाये हाथ का और भी जोर मे सीने मे चिपका लिया। मै त्रोत्स्की पर थूकता हू! मुझे और त्रोत्स्की को एक पलडे पर रखने को मै अपनी बेइज्जती मानता हू! मै गद्दार नही हू और आपको पहले म चेतावनी देता हू कि अगर अब किसी ने मुझे त्रोत्स्कीवादी कहा तो थोबडा तोड दूगा! एक भी हड्डी साबुत नही छोडूगा! और मुर्गियो के साथ वामपथ पर त्रोत्स्की की खातिर नही गया, मै तो विश्व क्राति की जल्दी म था! इसीलिये म सपत्ति प्रेमी टटपूजिया की गर्दन मरोडने की जल्दी म था। विश्व पूजीवाद के सफाये के दिन की ओर एक-एक कदम बढाता जा रहा था। क्यो चुप हो? और अब, कामरेड स्तालिन के लेख के अनुसार मै क्या हू? इस लेख म देखो क्या लिखा है," मकार ने ओवरकोट की जेब से 'प्राव्दा' निकाला और उसे फैलाकर धीरे-धीरे पढकर सुनाने लगा "किस को इन विकृतियो, सामूहिकीकरण के आदोलन मे नौकरशाही की मनमानी, किसानो को इन अभद्र धमकियो की आवश्यकता है? हमारे शत्रुओ के सिवाये और किसी को नही! इन विकृतियो का क्या परिणाम हो सकता है? हमारे शत्रुओ का लाभ ओर सामूहिकीकरण के आदर्शो का बदनामी। क्या यह स्पष्ट नही है कि इन विकृतियो के रचयिता जो अपने को 'वामपथी' मानते है वास्तव म दक्षिणपथी अवसरवाद की पनचक्की पर पानी डाल रहे है?' इसका मतलब यह हुआ कि सबसे पहले मै मनमानी करनेवाला नौकरशाह और रचयिता हू, कि मैने सामूहिक फार्मो को बदनाम किया और दक्षिणपथी अवसरवादियो पर पानी उडेला, उनकी पनचक्की चालू की। और यह सब भेडो और मुर्गियो की वजह से, अरे भाड मे जाये वे! और इसलिये कि मैने कुछेक भूत-

पूर्व श्वेत गार्डों को धमकाया जो सामूहिक फर्म मे भरती होने में आनाकानी कर रहे थे। यह गलत है! बडी मुश्किल से हमने सामूहिक फार्म बनाया और यह लेख करे-कराये पर पानी फेर रहा है। मै पोलैड-वालो और व्रागेल मे लडाई मे दस्ते का कमाडर था और मै अच्छी तरह जानता हू कि एक बार हल्ला बोल दिया तो आधे रास्ते से कभी मत लौटो!"

"तुम अपने दस्ते से बहुत आगे निकल चुके हो " रजम्योत्नोव खीजकर बोला। पिछले समय वह हर बात मे दवीदोव का समर्थन कर रहा था। "मकार, अब बस भी करो कृपा करके! काम की बात करनी चाहिये! जब तुम्हे केन्द्रीय समिति का सचिव चुना जायेगा तब चाहो तो अधाधुध चढाइया करना, पर अभी तो तुम साधारण सैनिक हो और अनुशासन का पालन करो नही तो तुम्हारी लगाम कस देगे!"

"अद्रेई, तुम मुझे मत टोको! मै पार्टी के हरेक आदेश का पालन करता हू और आज इसलिये नही बोल रहा कि मै उसका विरोध करना चाहता हू बल्कि इसलिये कि मै उसका भला चाहता हू! कामरेड स्तालिन ने लिखा है कि स्थानीय परिस्थितियो को ध्यान मे रखकर काम करना चाहिये, ठीक है न? पर दवीदोव तुम क्यो कहते हो कि लेख सीधे मेरी आख मे चुभा? उसमे तो यह नही लिखा है कि मकार नागुल्नोव रचयिता और नौकरशाह है? क्या पता कि इन शब्दो का मुझ से कोई वास्ता ही न हो! और अगर कामरेड स्तालिन ग्रेम्याची मे आते तो मै उनसे साफ-साफ कहता 'हमारे प्यारे साथी स्तालिन तुम, मतलब, इसके खिलाफ हो कि हमारे मझौले किसानो को डराया-धमकाया जाये? तुम को उन पर दया आती है, तुम उन्हे प्यार से समझाना चाहते हो? अगर वह, यह मझौला किसान, पहले श्वेत कज्जाक था और अब तक सपत्ति से बेहद मोह है उसे, तो मुझे बताओ कि मै उसे कहा चाटू कि वह सामूहिक फार्म में शामिल हो जाये और सब के साथ विश्व क्राति की बाट जोहे? यह मझौला तो सामूहिक फार्म मे भरती होकर भी अपनी सपत्ति का मोह नही छोड सकता, हमेशा अपने ढोरो को अच्छा चारा डालने की ताक मे रहता है, ऐसा है वह!' अगर तब भी कामरेड स्तालिन ऐसे लोगो को देखकर फिर यही कहेगे कि मै विकृतियो का रचयिता हू और सामूहिक फार्मो की बेइज्जती की, तो मै उनसे साफ-साफ कहूगा 'ठीक है, कामरेड स्तालिन, शैतान को उनकी

इज्जत बढाने दो, पर मुझे माफ करें, मै मोर्चो पर खोयी अपनी सेहत की वजह से यह नही कर सकता। आप मुझे चीन की सीमा पर भेज दो वहा मै पार्टी के बहुत काम आऊगा और ग्रेम्यार्ची मे अद्रेई रजम्योत्नोव को सामूहिकीकरण करने दो। उसकी रीढ भी लचकीली है, भूतपूर्व श्वेत गार्डो के सामने झुक भी अच्छी तरह सकता है, आसू भी बहा सकता है यह इसी के बस की बात है!'"

"तुम मुझे मत छेडो, नही तो मै भी छेड सकता हू "

'अच्छा, बस! आज के लिये काफी है!" दवीदोव उठकर मकार के बिलकुल पास गया और ऐसी रुखाई मे पूछा जो उसके लिये लाक्षणिक नही थी

कामरेड नागूल्नोव, स्तालिन का पत्र यह केन्द्रीय समिति की नीति है। तुम क्या उससे सहमत नही हो?"

'नहीं।"

"अपनी गलतिया स्वीकार करते हो? उदाहरण के लिये मै अपनी गलतिया स्वीकार करता हू। तथ्य के सामने तुम क्या कर सकते हो। मै न केवल स्वीकार करता हू कि हमने भेड-बकरियो को, बछडो को सामूहिकीकृत करके गलती की बल्कि अपनी गलतियो को सुधारूगा भी। हम सामूहिकीकरण के प्रतिशत के फेर मे हद से ज्यादा पड गये और सामूहिक फार्म को वास्तव मे मजबूत बनाने के लिये कुछ नही किया। तुम यह मानते हो, कामरेड नागूल्नोव?"

मानता हू।

'तब फिर समस्या क्या है?'

'लेख गलत है।"

दवीदोव कुछ देर तक मेज पर बिछे गदे मेजपोश को हाथ मे सहलाता रहा फिर उसने न जाने क्यो मद्धिम जलती लालटेन की बत्ती ऊची कर दी, शायद अपनी उत्तेजना को शात करने का प्रयास कर रहा था पर सफल न हुआ।

"तू, उल्लू! शैतान की दुम! कही दूसरी जगह ऐसी बातो के लिये तुझे पार्टी से ऐसे निकाल देते जैसे दूध से मक्खी! फैक्ट! तू क्या पागल हो गया है? या तो फौरन यह अपनी यह अपना विपक्ष बद कर या फिर हम तेरे खिलाफ फैक्ट! अब तक हम बहुत सह चुके है तेरी बाते और अगर तू गभीरता से यह कह रहा है तो

हम पार्टी की नीति के खिलाफ तुम्हारी बातों की इलाकाई पार्टी समिति को औपचारिक रूप में सूचना दे देंगे।'

"दे दो! मैं खुद इलाकाई समिति में घोषणा कर दूंगा। हसामची और सब बातों के लिये इकट्ठा जवाब दे दूंगा "

सकार की व्यथित आवाज को सुनकर दवीदोव कुछ शांत हुआ पर उसका गुस्सा अभी भी ठंडा नहीं हुआ था। कंधे उचकाकर वह बोला

"सुनो सकार तुम जाकर सो जाओ, जब नशा उतर जायेगा तब हम तुमसे बात करेंगे। नहीं तो वही 'सफेद बछड़े' वाली कहानी का हाल हो रहा है 'हम दोनों जा रहे थे न?'–'हां, जा रहे थे।'–'हमें रास्ते में भेड़ की खाल मिली?'–'हां, मिली थी।'–'चलो आओ खाल को आधा-आधा बांट लें।'–'कौनसी खाल को?'–'अरे हम दोनों जा रहे थे न?'–'हां, जा रहे थे ' बस यही अनंत सिलसिला चलता है। कभी तुम कहते हो कि अपनी गलतियां मानते हो, इसके फौरन बाद कहते हो कि लेख गलत है। तब तुम कौनसी गलतियां मानते हो जब तुम्हारे अनुसार लेख ही गलत है? तुम्हें सिर-पैर का ही फर्क नहीं पता! और फिर यह बताओ कि हमारे यहां कब से इकाई के सचिव सभा में शराब पीकर आने लगे? यह क्या है नागुल्नोव? यह पार्टी अनुशासन का उल्लंघन है! तुम पार्टी के पुराने सदस्य हो लाल छापेमार, 'लाल पताका' पदक से विभूषित हो और अचानक ऐसी हरकत करते हो देखो तो नाइद्योनोव कोम्सो-मोल का सदस्य, तुम्हारे बारे में क्या सोच बैठेगा? और फिर इलाकाई नियंत्रण समिति को अगर यह खबर लग गयी कि तुम शराबखोरी कर रहे हो और वह भी ऐसे उत्तरदायी समय पर, कि तुम न केवल मझौले किसानों को बंदूक से धमकाते हो बल्कि अपनी गलतियों का बोल्शेविकों की तरह मूल्यांकन भी नहीं करते यहां तक कि पार्टी की नीति का विरोध करते हो तो पता है तुम्हारा क्या होगा? तुम्हें मालूम होना चाहिये कि तब तुम पार्टी इकाई के सचिव तो क्या उसके सदस्य तक नहीं रहोगे! मैं ठीक कहता हूं।" दवीदोव ने अपने बाल सहलाये और चुप हो गया। यह महसूस करके कि उसकी बातों से सकार को वेदना हुई वह आगे बोला "लेख पर बहस करने का कोई फायदा नहीं। पार्टी को तुम अपनी मनमानी से नहीं मोड़ सकते, उसने ऐसे-

ऐमों के मीग तोडकर अनुशासित किया कि उनके सामने तो तुम क्या हो? क्यो तुम यह नही ममझते?"

"अरे छोडो भी इसे ममझाना! यह घटे भर से गाल बजा रहा है, पर काम की एक बात नही कही। जाकर मोने दो इसे। जाओ, मकार! शर्म आनी चाहिये तुम्हे! शीशे मे अपना मुह तो देखो, देखने ही डर जाओगे थोबडा सूजा है, आखे पागल कुत्ते जैमी है। क्यो तुम ऐसी सूरत लेकर यहा आये हो? जाओ!" रजम्योत्नोव ने झटके के साथ उठकर गुस्मे मे मकार का कधा झिझोडा पर उसने धीरे-मे उमका हाथ कधे मे हटा दिया, उसकी गर्दन और भी झुक गयी

मौन के बोझिल क्षणो मे दवीदोव मेज पर उगलिया बजाने लगा। वान्या नाइद्योनोव ने जो पूरे ममय मकार को असमजसपूर्ण मुस्कराहट के माथ देख रहा था, अनुरोध किया

"कामरेड दवीदोव, आइये बात पूरी करे।"

"हा तो माथियो" दवीदोव मजीव होकर बोला, "मेरा मुझाव यह है कि फार्म के मदस्यो को भेड-बकरी सूअर और गाये वापस कर दी जाये पर जिन लोगो ने दो गाये दी थी उनको एक गाय सामूहिक फार्म के झुड मे ही छोडने के लिये मनाया जाये। कल सवेरे से ही मभा बुलाकर समझाने का काम शुरू कर देना चाहिये। अब जोर ममझाने पर ही होना चाहिये! मुझे डर है कि लोग सामूहिक फार्म मे निकलने लगेगे और हमे तो आज-कल मे बोवाई शुरू करनी है यहा तुम अपनी दिलेरी दिखाओ, मकार! लोगो को मना लो कि मामूहिक फार्म से न निकले, पर पिस्तौल के बल नही, तब हम जाने! अच्छा तो क्या मतदान हो जाये? मेरे प्रस्ताव पर करेगे मतदान? कौन पक्ष मे? मकार तुम निष्पक्ष रहे? ठीक है, यही लिख देगे एक निष्पक्ष रहा'"

रजम्योत्नोव ने अगले ही दिन मे मैदानी गिलहरियो मे मघर्ष शुरू करने का प्रस्ताव रखा। इस काम के लिये उन्होंने उनमे से कुछ मामूहिक किमानो को लामबद करने का निर्णय किया जो खेत मे व्यस्त नही थे। उनको पानी लाने के लिये कुछ बैल देने और गाव के स्कूल मास्टर श्पीन को बच्चो के साथ खेत मे मदद के लिये बुलाने का भी फैमला किया गया।

पूरे समय दवीदोव मन-ही-मन सोच रहा था कि मकार के खिलाफ कुछ कार्यवाही की जाये या नही ? स्तालिन के लेख के विरुद्ध कही गयी उसकी बातो, सामूहिक फार्म की स्थापना के दौरान की गयी 'वामपथी' त्रुटियो को दूर करने की उसकी अनिच्छा के लिये अनु-शासनात्मक कार्यवाही की जाये या नही ? पर सभा के अत मे मकार के पसीने से तर मुर्दो जैसे सफेद चेहरे, कनपटियो पर फूली नसो को देखा तो उसने फैसला किया "नही, कोई जरूरत नही! खुद समझ लेगा। जोर-जबरदस्ती के बिना समझने दो। पगला है, पर है तो अपना ही आदमी! और फिर उसकी बीमारी दौरे पडते है। नही मामला रफा-दफा कर देगे!"

और मकार सभा के अत तक चुप बैठा रहा। वह अपनी उत्तेजना को प्रकट नही कर रहा था। दवीदोव ने बस एक ही बार घुटनो पर रखे मकार के निशक्त हाथो मे कपकपी दौडती देखी।

नागुल्नोव को अपने घर ले जाओ, और देखना कि वह पिये नही" दवीदोव ने रजम्योत्नोव के कान मे कहा और उसने हा मे सिर हिला दिया।

दवीदोव अकेला घर लौट रहा था। ल्यूका चेबाकोव के बाडे के पास टूटी बाड पर कज्जाक बैठे थे, वहा से सरगर्म बातचीत सुनायी पड रही थी। दवीदोव सडक के दूसरे किनारे जा रहा था पास आकर उसे अधेरे मे किसी का अपरिचित भारी स्वर सुनायी पडा जो व्यग्यपूर्ण स्वर मे जोर-जोर से कह रहा था

जितना भी दो, जितना भी चुकाओ – इनके लिये सब कम है!' और कोई दूसरा बोला "आजकल सोवियत सत्ता के दो पख निकले है वाम और दक्षिण मतलब बाया और दाया। कब वह पक्षी बनकर हमारे पास से उडकर भाग जायगी ?

कहकहे लगे पर बडी जल्दी रुक गये।

'श ss! दवीदोव आ रहा है! " कोई घबराकर फुसफुसाया।

वही भारी स्वर फौरन सुनायी पडा पर अब उसमे व्यग्य की झलक नही थी कृत्रिम गभीरता से वह बोला हा अगर बारिशे नही हुई तो बोवाई का काम जल्दी पूरा कर सकते है। जमीन बडी जल्दी सूखती जा रही है। अच्छा भाइयो अब चला जाय ? फिर मिलेगे!'

खासने की आवाज और कदमो की आहट सुनायी पडी

२६

अगले दिन सामूहिक फार्म से निकलने के तेइस प्रार्थना-पत्र आये। मुख्य रूप से मझौले किसान निकले जो सामूहिक फार्म में सबसे बाद में शामिल होनेवालों में थे। सभाओं में प्राय चुप रहने, फोरमैनों से हमेशा बहस करते और अनिच्छा से काम पर जाते। उन्ही के बारे में नागूल्नोव कहता था "भला ये सामूहिक किसान है? ये तो धोबी के कुत्ते की तरह है, न घर के, न घाट के!" वे लोग फार्म से निकले जो वास्तव में टोलियों के लिये फालतू बोझ के समान थे, जो सामूहिक फार्म में या तो शासन के प्रकोप के डर के बचने के लिये या जनवरी में शुरू हुए सामूहिक फार्मों के शक्तिशाली अभियान के उत्साह में आकर भरती हुए थे।

प्रार्थना-पत्र लेते समय दवीदोव ने इनको भी समझाने-बुझाने का प्रयास किया, सोच-विचार करने, निकलने में जल्दी न करने की सलाह दी, पर वे अपनी बात पर अडे रहे और दवीदोव अतत हार मानकर बोला

"जाओ, नागरिको पर याद रखो, अगर दुबारा फार्म में शामिल होना चाहोगे तो पहले हम सोचेंगे कि तुम्हे ले या नही!"

"शायद ही हम वापस आये! फिर से सामूहिक फार्म के बिना जीने की आशा करते है और फिर, दवीदोव, पहले भी लोग सामूहिक फार्मों के बिना रहते ही थे, भूखों नही मरते थे, अपने माल के खुद मालिक थे, पराये लोग हमें यह नही सिखाते फिरते थे कि कैसे जोते, कैसे बोये, किसी की चाकरी नही करते थे अब भी आराम से जी लेंगे सामूहिक फार्म के बिना!" सबकी ओर से कत्थई मूछोंवाला, कल तक का सामूहिक किसान इवान बातालिश्कोव बोला।

"हम भी तुम्हारे बिना बडे आराम से जी लेंगे! सिर का बोझ हल्का हो जायेगा," दवीदोव ने दो टूक उत्तर दिया।

"चलो अच्छा है कि प्रेम से अलग हो रहे है। अलग-अलग खुश रहेंगे। टोलियों से अपने ढोर ले जाये?"

"नही, यह सवाल हम प्रबध-मडल में तय करेंगे। कल तक इतजार करो।"

"इतजार का वक्त नही है हमारे पास। तुम सामूहिक फार्मवाले

क्या पता पचाशती के बाद बोवाई शुरू करोगे पर हमे तो अभी से खेत मे जाना है। कल तक इतजार कर लेगे, अगर कल भी हमारे ढोर नही मिले तो हम खुद ले लेगे!"

बातार्ल्शिकोव के स्वर मे धमकी की स्पष्ट झलक थी। उसको उत्तर देते हुए गुस्से मे दवीदोव का चेहरा हल्का-सा लाल हो गया

"मै देख लूगा कि तू कैसे फार्म के अस्तबल मे कुछ लेगा! अव्वल तो लेने नही देगे और अगर ले भी लिया तो अदालत के कटघरे मे खडा कर देगे!"

"अपने ही ढोर लेने के लिए?"

"अभी वे सामूहिक फार्म के है।"

इन भूतपूर्व सदस्यो से जुदाई का दवीदोव को कोई दुख न था पर देमीद घुन्ने की अर्जी से उसे बडा अवसादपूर्ण आश्चर्य हुआ। देमीद साझ ढलने से कुछ पहले आया, उसने बहुत पी रखी थी। हमेशा की तरह वह चुप था। बिना दुआ-सलाम किये उसने अखबार का एक टुकडा बढा दिया जिस पर बस यही लिखा था "सामूहिक फार्म से छोड दीजिये।"

दवीदोव ने घुन्ने की छोटी-सी अर्जी को उलट-पलटकर देखा और असमजस व असतोष के साथ पूछा

"यह तुम क्या कर रहे हो?'

'जा रहा हू" घुन्ना जोर से बोला।

'किधर क्यो?'

'बस सामूहिक फार्म से जा रहा हू।"

"पर निकल क्यो रहे हो? कहा जाओगे?"

देमीद ने कुछ बोले बिना बाहे फैला दी।

"जिधर मन करा?" रजम्योत्नोव ने उसके इशारे का अनुवाद किया।

"हा-हा!"

"पर फिर भी तुम फार्म से निकल क्यो रहे हो?" चकित दवी-दोव मौन कार्यकर्ता, एक गरीब के सामूहिक फार्म से निकलने का कारण जानना चाहता था।

"लोग निकल रहे है उसकी देखा-देखी मै भी।"

"अगर लोग कुए मे कूदेगे तो तू भी कूदेगा ?" हौले-हौले मुस्कराते हुए रजम्योत्नोव ने पूछा।

"नही यह शायद ही करू !" घुन्ना जोर-जोर मे हमने लगा। उमकी हमी हूबहू खाली पीपे की घन्न-घन्न की तरह थी।

"अच्छा ठीक है, निकल जाओ," दवीदोव उमास छोडकर बोला, "गाय अपनी ले जा सकते हो। तुम गरीब हो इमलिये चुपचाप तुम्हे दे देगे। क्यो, रजम्योत्नोव, दे दे ?"

"हा, वापस कर देनी चाहिये," रजम्योत्नोव राजी हुआ पर देमीद फिर हो-हो करता हम पडा

"अरे मझे उस गाय की जरूरत नही ! फार्म को भेट करता हू। मै शायद घर-जवाई बन जाऊ। क्यो कैमी खबर है ? हैरानी होती है आपको ? और बिना विदा लिये बाहर चला गया।

दवीदोव खिडकी मे झाका घुन्ना ओसारे के पास जड खडा था। ढलता लाल सूरज उसकी भालू जैमी पीठ, सुनहरे घुघराले बालो से ढकी उमकी शक्तिशाली गर्दन को आलोकित कर रहा था। सामूहिक फार्म के अहाते मे पिघलती बर्फ का पानी भरा था। ड्योढी की पैडियो मे लेकर खत्ती तक विशाल जोहड-सा बन गया था। बाड के किनारे-किनारे भुरभुरी बर्फ और कीचड म पगडडी बनी थी। लोग डबरे मे बचने के लिये बाड से सटकर उसके खूटो को पकड-पकडकर चलते थे। देमीद किमी भारी मोच मे डूबा खडा था। फिर वह लडखडाया सीधे पानी मे उतरकर धीरे-धीरे दाये-बाये झूलता खत्ती की ओर चल पडा।

कौतूहल के माथ ताकते दवीदोव ने घुन्ने को खत्ती के दरवाजे के पाम पडे सब्बल को उठाकर फाटक की ओर जाते देखा।

"कही यह भालू हमारा सफाया तो करने की नही सोच रहा ?" खिडकी के पास आया रजम्योत्नोव मुस्कराकर बोला और हम पडा। उसे घुन्ने मे स्नेह था और उसकी शारीरिक शक्ति का वह कायल था।

घुन्ने ने थोडा-सा फाटक खोला और बर्फ के ढेर पर पूरे जोर मे सब्बल चलाया कि पहली बार ही मे बर्फ का कोई मन भर का तोदा तोड डाला। बर्फ का चूरा फाटक पर ओलो की तरह बरसा और शीघ्र ही सब्बल मे खुदी नाली से अहाते मे भरा पानी तेजी से निकलने लगा।

"अरे यह फिर से फार्म मे लौट आयेगा!" घुन्ने की ओर इशारा करके रजम्योत्नोव बोला। "गडबडी देखकर उसे ठीक किया और चला गया। मतलब यह कि दिल उसका हमारे फार्म मे ही रह गया! मै ठीक कहता हू?"

* * *

स्तालिन के लेखवाले समाचार-पत्र मिलने के बाद इलाकाई समिति ने ग्रेम्याची की पार्टी इकाई को लम्बा-चौडा निर्देश भेजा जिसमे ज्याद-तियो के परिणामो के दूर करने के विषय मे अस्पष्ट और धुधली-सी हिदायते दी गयी थी। हर बात मे महसूस हो रहा था कि पूरा इलाकाई प्रशासन किकर्त्तव्यविमूढ था, किसी भी इलाकाई अधिकारी के सामूहिक फार्मो म दर्शन नही हो रहे थे। सामूहिक फार्म से निकले लोगो की सपत्ति का कैसे निपटारा किया जाये, इस प्रश्न का न तो इलाकाई पार्टी समिति और न ही इलाकाई कृषि सघ कोई उत्तर दे रहा था। 'सामूहिक कृषि अभियान मे पार्टी की नीति की तोड-मरोड से सघर्ष' के विषय मे केन्द्रीय समिति के प्रस्ताव की प्राप्ति के बाद ही इलाकाई समिति ने कुछ करना शुरू किया। ग्रेम्याची मे फौरन बेदखल लोगो की सूची भिजवाने, सामूहिक किसानो को भेड-बकरिया, मुर्गे-मुर्गिया लौटाने मताधिकार से वचित लोगो की सूची पर पुर्नविचार करने के निर्देश आने लगे। इसके साथ ही नागुल्नोव को २८ मार्च को प्रात दस बजे इलाकाई पार्टी समिति के ब्यूरो और इलाकाई नियत्रण समिति की सयुक्त बैठक के समक्ष उपस्थित होने का नोटिस भी आया।

३०

एक सप्ताह मे ग्रेम्याची के सामूहिक फार्म से लगभग सौ किसान परिवार निकल गये। सबसे अधिक दूसरी टोली से लोग गये, उसमे केवल उनतीस परिवार बचे। और इनमे से भी बकौल टोली नायक ल्यूबीश्किन के कुछ लोग "भागने के उम्मीदवार" थे।

गाव मे एक के बाद एक घटनाये हो रही थी। हर नया दिन दवी-

दोव के लिये नयी-नयी मुसीबते खडा कर रहा था। दो बार पत्र द्वारा पूछने पर कि निकलनेवालो को लद्दू पशु और कृषि औजार अभी वापस करने है या बोवाई के बाद, इलाकाई कृषि सघ और पार्टी समिति ने उत्तर के रूप मे सख्त आदेश भेजा जिसका सार यह था कि ग्रेम्याचींवाले हर तरह से सामूहिक फार्म को टूटने से बचाये, सामूहिक किसानो को फार्म से न निकलने देने का यथासभव प्रयास करे और निकलनेवालों से हिसाब-किताब, उनकी सपत्ति की वापसी को पतझड तक स्थगित कर दे।

इसके कुछ समय बाद ग्रेम्याची मे इलाकाई भूमि विभाग का अध्यक्ष, इलाकाई पार्टी समिति के ब्यूरो का सदस्य बेगलीख आया। उसने हडबडी मे स्थिति से परिचय प्राप्त किया (उस दिन उसे और भी कई गावों मे जाना था) और कहा

"फार्म से निकलनेवालो को ढोर और औजार अभी हरगिज मत देना। पतझड तक रुकना, और तब देखा जायेगा।"

"पर लोग-बाग छाती पर चढ रहे है!" दवीदोव ने आपत्ति करने का प्रयास किया।

दृढ और कठोर बेगलीख मुस्कराकर बोला

"और तुम भी चढ जाओ। वैसे तो हमे बेशक उन्हे लौटा देना चाहिये था उनका माल पर मडल समिति का निर्देश है कि केवल अपवाद के रूप मे, वर्गीय आधार पर लौटाना चाहिये।"

"यानी?"

'यह तो तुमको 'यानी' के बिना भी अच्छी तरह मालूम होना चाहिये! गरीब को लौटा दो और मझौले किसान से पतझड का वायदा करो। समझे?"

"बेगलीख, कही शत-प्रतिशत सामूहिकीकरण जैसा हाल तो नही होगा? तब भी इलाकाई समिति को निर्देश मिला था 'चाहे जो हो जाये पर शत-प्रतिशत तक पहुचा दो और जल्दी से जल्दी।' इसके परिणामस्वरूप सिर चकरा गया मझौले किसान को मवेशी न लौटाने का मतलब तो वास्तव मे उस पर दबाव डालने के बराबर है, है न? वह कैसे जुताई, बोवाई कैसे करेगा?"

"इससे तुम्हे क्या लेना-देना। तुम उनके बारे मे नही अपने सामूहिक फार्म के बारे मे सोचो। अगर मवेशी लौटा दिये तो तुम कैसे करोगे

काम? और फिर यह हमारा निर्देश नही बल्कि मडल समिति का है और हम क्राति के सैनिको का कर्त्तव्य उसके हर आदेश का अक्षरश पालन करना है। अच्छा यह बताओ कि अगर तुम्हारे आधे मवेशी निजी खेती करनेवाले किसानो के पास चले जायेगे तो तुम योजना कैसे पूरी करोगे? किसी बहम-वहम की कोई जरूरत नही! मवेशी को दोनो हाथो से पकडकर रखना। अगर बोवाई की योजना पूरी नही की तो सिर धड पर टिकेगा नही तुम्हारा!"

घोडागाडी मे बैठते समय बात ही बात मे बोला

"कुल मिलाकर स्थिति आसान नही! ज्यादतियो के लिये, भइया, कीमत चुकानी पडेगी, किसी को बलि का बकरा बनाना पडेगा यही रीत है। इलाकेवाले अधिकारी नागूल्नोव के बडे खिलाफ है। उसने क्या कर डाला? किसी मझौले किसान को पीटा, गिरफ्तार करता था लोगो को, पिस्तौल दिखाकर धमकिया देता था। मुझे ससोस्किन बता रहा था। उसने पूरी फाइल बना डाली है नागूल्नोव के खिलाफ। देखो तो कितना 'वामपथी' निकला नागूल्नोव। और अब पता है कैसे आदेश है? पार्टी तक मे निकाल सकते है! अच्छा मै चलता हू। ढोर ढार मत देना!"

बेगलीख वोयस्कोवोय चला गया। हवा अभी उसकी घोडागाडी की लीक सुखा भी न पायी थी कि तीसरी टोली का नायक आगाफोन दूबत्सोव दौडा-दौडा आया। वह घबराया हुआ था

"कामरेड दवीदोव! मुझ से बैल और घोडे छीन ले गये वे जो फार्म मे निकल गये है। जबरदस्ती ले गये!"

"कैसे ले गये?!" लाल-पीला होकर दवीदोव चिल्लाया।

"बस ले गये! रखवाले का भूसे की कोठरी मे बद कर दिया और बैलो को खोलकर स्तेपी मे ले गये हाककर। अठारह जोडी बैल और सात घोडे। अब क्या करेगे?"

"और तुम?! और तुम क्या कर रहे थे?! कहा थे तुम? क्यो ले जाने दिया? बोलो?!"

आगाफोन के चेचकरू चेहरे पर सफेद चकत्ते पड गये, वह भी आवाज ऊची करके बोला

"मैने घुडसाल या बाडे मे रात-रात भर रहने का ठेका नही लिया है! मेरे ऊपर चिल्लाने की जरूरत नही है। और अगर आप

इतने बहादुर बनते है, तो जाकर लौटा लाइये बैलो को! क्या पता वे आपको लाठी का मजा चखा दे!"

साझ ढलने से कुछ पहले ही वे स्तेपी की चरागाह मे बैलो को वापस छीन पाये जहा उनके मालिको ने कडे पहरे मे उन्हे रख रखा था। ल्युबीश्किन, आगाफोन दुबत्सोव और तीसरी टोली के छह सामूहिक किसान घोडो पर सवार होकर स्तेपी को छानने निकल पडे। बीहड की सामनेवाली ढलान पर चरते बैलो को देखकर ल्युबीश्किन ने अपने छोटे-से दस्ते को दो हिस्सो मे बाटा

"आगाफोन, तुम तीन लोगो के साथ दायी तरफ से घोडो को दौडाते जाओ और बायी तरफ से मै उनको दबोचूगा।" ल्युबीश्किन ने अपनी काली मूछो पर हाथ फेरकर आदेश दिया "तैयार हो! मेरे पीछे-पीछे सरपट दौडते आओ!"

हाथापाई के बिना काम नही चला ल्युबीश्किन के चचेरे भाई अखार ल्युबीश्किन ने, जो फार्म से निकले और तीन लोगो के साथ बैलो की रखवाली कर रहा था, बैलो के पास अपना घोडा दौडाते आये मिखाईल उस्नात्यानोव की टाग पकडकर उसे घोडे से गिरा दिया और पलक झपकते जमीन पर घसीटकर उसके बदन पर ढेरो नील डाल दिये और कमीज फाडकर तार-तार कर दी। पास जाकर पावेल ल्युबीश्किन घोडे पर बैठे-बैठे अपने भाई की मोटे और लम्बे चाबुक से पिटाई करने लगा, इतने मे बाकी लोगो ने चरवाहो को खदेड दिया और बैलो को गाव की ओर हाककर ले चले।

दवीदोव ने रात को बैलो के बाडो और अस्तबलो पर ताला टागने और जगह-जगह सामूहिक किसानो की टोलियो का पहरा बिठाने का आदेश दिया।

मवेशो को रखवाली के इतने उपायो के बावजूद दो दिनो के दौरान फार्म से निकले लोग सात जोडी बैल और तीन घोडे भगाकर ले गये। ढोरो को वे स्तेपी मे दूरस्थ बीहडो मे हाककर ले गये और किशोरो को चरवाहो की जगह भेज दिया क्योकि बडो की अनुपस्थिति पर लोग ध्यान दे सकते थे।

सुबह से लेकर रात तक सामूहिक फार्म के दफ्तर और ग्राम-सोवियत मे भीड लगी रहती। अब भूतपूर्व सदस्यो द्वारा सामूहिक फार्म की जमीन पर कब्जे का खतरा वास्तविक हो गया था।

"फौरन हमे नयी जमीन दो नही तो अपनी पुरानी जमीन को जोतना शुरू कर देगे!" भूतपूर्व सदस्य दवीदोव की छाती पर चढ रहे थे।

"आप घबराइये नही, नागरिको, आपके हिस्से की जमीन कही नही जायेगी। कल आपके लिये जमीन काटना शुरू कर देगे। ओस्त्रोव्नोव के पास जाइये, वही यह काम करेगा, सच कहता हू," दवीदोव ने उन लोगो को शात कराते हुए कहता।

"पर हमे कहा दोगे जमीन? और कैसीवाली?"

"जहा खाली होगी।"

"पर क्या पता गाव से बहुत दूरवाली खाली हुई, तब?"

"कामरेड दवीदोव, तुम अपनी चालाकिया छोड दो! पास की जमीन सारी सामूहिक फार्म की हो गयी है, मतलब हमे दूरवाली जमीन मिलेगी? ढोर नही दे रहे हो, हमे खुद को या गायो को जोतकर हल चलाना पडेगा और हमी को सबसे दूरवाली जमीन मिलनी चाहिये क्या? यही है तुम्हारी इसाफ-पसद सरकार?"

दवीदोव लोगो को मनाता, समझाता कि वह जहा जिसने चाही वहा जमीन नही दे सकता, वह सामूहिक फार्म की जमीन को टुकडे-टुकडे नही कर सकता, पतझड मे की गयी चकबदी को नही तोड सकता। भूतपूर्व सदस्य शोर-शराबा करके चले जाते और कुछ ही मिनट म दूसरे लोगो का झुड आता और कमरे मे घुसते ही कहता

"जमीन दो! यह भी क्या बात है? तुम्हे हमारी जमीन हथियाने का क्या हक है? तुम तो हमे फसल नही बोने दे रहे! और कामरेड स्तालिन ने हमारे बारे मे क्या लिखा था? हम भी उन्हे लिख सकते है कि तुम ढोर ही नही बल्कि जमीन भी नही दे रहे, हमारी सारी सपत्ति छीन ली। वह ऐसी बातो के लिये तुम्हारी तारीफ नही करनेवाले है!"

'याकोव लुकीच, कल सवेरे इन्हे रची जोहड के पासवाली जमीन बाट दो।"

"वह अछूती जमीन?" लोग चिल्लाते।

"परती है, अछूती थोडे ही है! वह जुत चुकी है कोई पद्रह साल पहले," याकोव लुकीच समझाता।

और लोग चिल्ल-पो मचा देते

"नही चाहिये हमे कडी जमीन!"
"हम उसे कैसे जोतेगे?"
"मुलायम मिट्टीवाली दो!"
"ढोर दे दो, तब जोत लेगे कडी मिट्टी!"
"अपने प्रतिनिधियो को मास्को, सीधे स्तालिन के पास भेजेगे शिकायत करने!"
'तुम क्यो हमारा जीना हराम कर रहे हो?"
लगाइया तो चडी बन जाती। मर्द खुशी-खुशी उनको और उकसाते। उन्हे शात करने के लिए बडी शक्ति की जरूरत होती। प्राय दवीदोव का धीरज टूट जाता और वह चिल्लाकर कहता
'क्या तुम चाहते हो कि सबसे बढिया जमीन तुम्हे दे दे? हरगिज नही! सोवियत सत्ता सारी सुविधाये सामूहिक फार्मो को देती है न कि उनको जो सामूहिक फार्मो के खिलाफ है। जाओ भाड मे!'
कही-कही फार्म मे निकले किसान अपनी पुरानी जोतो पर जुताई-बोवाई करने लगे, जो अब सामूहिक फार्म मे चली गयी थी। ल्युबीश्किन ने उनको फार्म के खेतो से खदेड दिया और याकोव लुकीच ने लकडी का पैमाना लिया और दो दिन मे स्तेपी मे तथा रार्ची जोहड के पास निजी किसानो को जमीन बाट दी।
पच्चीस तारीख को द्योम्का उशाकोव की टोली बालुई मिट्टी को जोतने गयी। दवीदोव ने सबसे मेहनती लोगो को वहा भेजा। अधिकाश वृद्ध बडी खुशी से टोलियो मे बोवाई, पाटा आदि लगाने के लिये राजी हुए। उन्होने बोवाई हाथ मे न करने का फैसला किया। जर्जर बूढे, भूतपूर्व 'मुर्गीछेड' अकीम बेसख्लेबनोव तक ने बोवाई मशीन पर सहायक का काम करने की इच्छा व्यक्त की। शुक्रवार को दवीदोव ने फार्म-कार्यालय का मार्डम नियुक्त किया। पूरी तैयारी हो गयी थी। दो दिन तक निरतर वर्षा के कारण बोवाई रुक गयी।
सामूहिक फार्म मे लोगो का निकलना बद हो गया। अब विश्वसनीय, भरोसेमद लोग ही उसमे बचे थे। ग्रेम्याची मे फार्म मे निकलनेवालो मे रजम्योत्नोव की लाडो – मरीना पोयार्कोवा सबसे आखिरी थी। न जाने क्यो उनके सहजीवन मे दरार पड गयी। मरीना धर्म की ओर खिचने लगी, भगवान की बडी भक्त बन गयी, चालीसे का उसने व्रत रखा, तीसरे सप्ताह रोज तुब्यान्स्की के गिरजे मे प्रार्थना

करने गयी, पापस्वीकार किये और धर्मसमाज की दीक्षा ले ली। अंद्रेई के तानों को वह विनम्रता के साथ चुपचाप सह लेती, उसकी डांट का कोई उत्तर नहीं देती, हमेशा चुप रहती। वह 'अपनी शपथ भ्रष्ट' नहीं करना चाहती थी। एक बार काफ़ी रात गये घर लौटने पर अंद्रेई ने देखा कि अंदर के कमरे में देव प्रतिमा के सामने दीपक जल रहा है। वह झट से अंदर गया, छीके से दीपक उतारा, उसमें भरा तेल हथेली में उलटा और उसे अपने कड़े बूटों पर मल दिया और दीपक को एड़ी से चकनाचूर कर दिया।

"कितनी बार कह चुके हैं बेवक़ूफ़ो से कि यह धरम-वरम अफ़ीम की तरह है। पर फिर भी कान पर जूं तक नहीं रेंगी! लकड़ी की पूजा करते है, बेकार मे तेल और मोमबत्तियां फूकते है मरीना, तेरी हड्डिया खुजला रही है! कोई वजह ज़रूर है अकसर गिरजे में जाने की ."

वास्तव में वजह थी इसकी: मरीना ने २६ तारीख़ को सामूहिक फ़ार्म से निकलने की अर्ज़ी दी, इसका कारण उसने यह बताया कि सामूहिक फ़ार्म में शामिल होना 'भगवान की ख़िलाफ़त करना है।'

"और अंद्रेई के साथ एक पलंग पर सोना भगवान के ख़िलाफ़ नही है? या यह मीठा पाप है?" मुस्कराकर ल्युबीश्किन ने पूछा।

इस बार मरीना चुप रही, उसे इस बात का तनिक भी भान नही था कि कुछ मिनट बाद उसकी विनम्रता का नामोनिशान तक न रहेगा और अपने होंठों से वह 'पवित्र शपथ' को भ्रष्ट कर देगी।

ग्राम-सोवियत मे अंद्रेई गुस्से मे दौड़ा-दौड़ा आया, उसके चेहरे का रग उड़ा हुआ था। आस्तीन से माथे का पसीना पोंछकर वह दवीदोव और याकोव लुकीच के सामने ही उसकी अनुनय-विनय करने लगा:

"मरीना! मेरी प्यारी! मुझ पर रहम करो, नाक मत कटवाओ मेरी! तुम क्यों छोड़ रही हो फ़ार्म? क्या मैंने तुम्हें अपना लाड़-प्यार नही दिया? गाय तुम्हारी वापस कर दी ... और क्या चाहिये? अब मैं कैसे तुम्हारे साथ प्यार बांटूंगा अगर तुम अलग से खेती करना चाहती हो? तुम्हारी मुर्गियां तुम्हें वापस कर दी, मुर्गा भी .. और तुम्हारा प्यारा हम भी, जिसके लिये तुम मोती की तरह अनमोल आंसू बहाती थी, अब तुम्हारे ही बाडे में लौट आये है .. तुम्हें और क्या बला चाहिये? ले लो वापस अपनी अर्ज़ी!"

"नही, हरगिज नही!" गुस्से मे अपनी तिरछी आखो को तरेरकर मरीना चिल्लायी। "मै नही चाहती, नही चाहती, तुम लाख मनाओ! मै नही चाहती सामूहिक फार्म मे रहना! मै तुम्हारे पाप की भागीदार नही बनना चाहती! मेरा छकडा और हल लौटा दो।"

"मरीना, होश मे आओ! नही तो मै तुम्हे त्याग दूगा।"

"जा-जा भाड मे! रडे, हरामी, कुत्ते! क्यो दीदे फाड रहा है भूतनी के? कौन खडा था कल रात को गली मे मलाशा इग्नात्योन्कोवा के साथ? तू नही तो कौन था? हरामजादे, कुतिया की औलाद! त्याग दे, मै तेरे बिना भी आराम मे जी लूगी! मै देख रही हू तू कब मे इसकी ताक मे है!"

मरीना, मेरी लाडो, क्यो तुम ऐसे कह रही हो? कौनसी मलाशा के साथ? मै कभी भी उसके साथ नही खडा हुआ था! और सामूहिक फार्म मे इसका क्या वास्ता?" अद्रेई अपना सिर पकडकर बैठ गया, उसके पास बोलने को शायद कुछ बचा नही

"तुम इस हरामजादी के सामने नाक मत रगडो!" ल्युबीश्किन क्षुब्ध होकर बीच मे बोल पडा। "तुम इसके सामने क्यो गिडगिडा रहे हो, अपनी इज्जत का खयाल करो! तुम तो लाल छापेमार हो– क्यो इसकी चापलूसी करते हो? एक झापड रसीद कर दो! धुनाई कर दो इसकी, फौरन ठीक हो जायेगी!"

"तू क्यो परायी बात मे टाग अडा रहा है, सपोले कही के? तू बजारे के अधपके बीज, कलमुहे! मै तेरा मुह नोच लूगी! टोली नायक हुआ तो क्या मै तुझसे डरती हू? तेरे जैसे सैकडो को छठी का दूध याद दिला चुकी हू!'

"मै तुझे ऐसा मजा चखाऊगा! मै तेरी चर्बी पिघला दूगा "

कोने मे दुबकते हुए ल्युबीश्किन गरजा, वह हर तरह की अप्रिय आकस्मिकता के लिये तैयार था।

उसे तुब्यान्स्की की चक्की पर घटी घटना अच्छी तरह याद थी जब मरीना ने दोन पार के एक हट्टे-कट्टे कज्जाक को चारो खाने चित्त कर दिया और सब के सामने उसे अपनी तीखी जबान से मिट्टी मे मिला दिया। "चचा, लुगाई के ऊपर तेरा कोई काम नही!" दम लेकर वह तब बोली, "तेरी ताकत और पकड तो ऐसी है कि लुगाई के नीचे चुपचाप लेटे रहने मे ही तेरा भला है।" और सिर के बाल

और रूमाल ठीक करते हुए चक्की की तराजू के पास चली गयी। ल्युबीश्किन को याद था कि मरीना से पिटे कज्ज़ाक के गाल कैसे लाल दहक रहे थे जब वह जमीन पर बिखरे आटे और गोबर मे सना खडा हुआ, इसलिये उसने बायी कोहनी मोडकर आगे को की और चेताया

"तू हट परे, नही तो भगवान की कसम, तेरा भुरता बना दूगा! भाग यहा से!"

"तूने यह कभी सूघा है?" मरीना ने पल भर के लिये अपना लहगा उठाया और उसकी किनारी को ल्युबीश्किन की नाक के सामने घुमाया, उसके गुलाबी गोल घुटने और मक्खन की डली के रग की उसकी गदरायी देह नजर आयी।

उसका क्रोध अपनी पराकाष्ठा पर था। दुनिया देख चुका ल्युबीश्किन तक मरीना की गोरी, बलिष्ठ देह को देखकर एक कदम पीछे हट गया, सकपकाकर वह बडबडाया

"भूत चढ गया है! हट चुडैल! लुगाई नही, पूरी घोडी है! हट, डायन!" और दुबककर चीखती-चिल्लाती मरीना के पास से निकलकर थूकता, गालिया देता कमरे के बाहर चला गया।

दवीदोव मेज पर सिर रखकर, आखे मूदे, हो-हो करके हस रहा था। रजम्योत्नोव धडाम से दरवाजा बद करके ल्युबीश्किन के पीछे-पीछे चला गया, बस अकेले याकोव लुकीच ने मार्जेट की आग-बबूला विधवा को शात कराने का प्रयास किया

"अरे, चिल्ला क्यो रही है? बेशर्म! शर्म नही आती लहगा उठाने? तू कम से कम मुझ बुड्ढे का तो ख्याल करती!"

"चुप!" दरवाजे की ओर जाती मरीना उस पर चिल्लायी। "अच्छी तरह जानती हू इस बुड्ढे को! पिछले साल प्रभु-प्रकाश के दिन, जब घास ला रहे थे, तू नही तो कौन था, जो मुझ पर डोरे डाल रहा था? भूल गया? तुम सब एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हो!"

अहाते मे वह बवडर की तरह गुजरी। याकोव लुकीच खिडकी मे उसे देख रहा था, झेपकर गला खखारता हुआ सिर हिलाकर उसे धिक्कार रहा था

और आधे घटे बाद उसने देखा कि मरीना अपने छकडे मे खुद जुती, बडी आसानी से पहली टोली के अहाते मे हल और पाटा लादकर

ले जा रही थी। बारिश के कारण खेत से आया द्योम्का उशाकोव उसके माथ-साथ सुरक्षित दूरी पर चलते हुए अनुनय-विनय कर रहा था, मरीना के पास जाते हुए उसे शायद डर लग रहा था

"मरीना! ओ, नागरिक पोयार्कोवा! सुनती हो? मरीना! मै तुझे यह सामान नही दे सकता क्योकि अभी मेरे रजिस्टर मे दर्ज है!

"छोडो भी, दे सकते हो!"

"समझ तो पगली, यह सामाजिक औजार है! कृपा करके वापस ले जाओ, बेवकूफी मत करो। तू इनसान है या क्या? यह डकैती नही तो क्या है? इसके लिये तुझे अदालत मे जवाब देना पडेगा! दवीदःव के रुक्के के बिना मै कुछ नही दे सकता।"

"अरे आराम से दे सकते हो!" मरीना बस यही जवाब देती।

द्योम्का की भेगी आखे हताशा के साथ घूम रही थी, उसके हाथ अनुनय की मुद्रा मे छाती से चिपके थे और पसीने से तर मरीना चुप-चाप खडखडाते छकडे को खीचे ले जा रही थी उसके गाल लाल दहक रहे थे

"इससे छकडा छीन लेना चाहिये ताकि अक्ल ठिकाने लगे, बहुत जबान चलाती है। पर छीना कैसे जाये? इसको छेडना तो भिड के छत्ते को छेडने की तरह है, जीना हराम हो जायेगा!" याकोव लुकीच ने सोचा और एहतियात के तौर पर बगल की गली मे मुड गया।

* * *

अगले दिन रजम्योत्नोव मरीना के यहा से अपनी चीजे, बदूक, गोलियो की पेटी, कागजात अपने घर ले गया। मरीना से वियोग के कारण उसे बडा दुख हुआ, वह तडप रहा था और एकात मे बचने लगा। इसीलिये वह नागूल्नोव से गपशप करने, उदासी भगाने के लिये चल पडा।

ग्रेम्याची पर रात गहराती जा रही थी। बारिशो से धुला अर्द्धचद्र आकाश के पश्चिमी आचल मे चमकीली दराती की तरह लटका था। झरनो की मद कलकल ही गाव मे भरती मार्च की रात की नीरवता को तोड रही थी। अपने विचारो मे मग्न अद्रेई रात को कडे होते

कीचड मे किच-किच करता धीरे-धीरे जा रहा था। नम हवा मे वसत की मादक गधे बसी थी धरती की कसैली गध, खलिहानो मे गलती घास की बू, बागो मे भरी नशीली सुगध और बाडो के पास उगी हरी दूब की तीखी मोहक सुगध।

अद्रेई रात की विविध गधो को अपने फेफडो मे खीच-खीचकर भर रहा था, पैरो तले डबरो मे टिमटिमाते तारो की परछाइयो को देखता हुआ वह मरीना के बारे मे सोच रहा था, उसे अपनी आखो मे विरह के दुख के आसू उमडते महसूस हो रहे थे।

३१

बूढे श्चुकार को फार्म-कार्यालय के साईस के पद पर अपनी स्थायी नियुक्ति पर अपार हर्ष हुआ। उसे कामकाजी यात्राओ के प्रयोजन से प्रबध-मडलवालो के लिये रखे गये भूतपूर्व कुलको के दो घोडे सौपते हुए याकोव लुकीच ने कहा था

"इन्हे आख की पुतली की तरह सभालकर रखना! वे हमेशा तदुरुस्त रहने चाहिये सभालकर चलाना, ज्यादा दौडाना नही। यह सलेटी तीनवाला घोडा खालिस नस्ल का है और कत्थई भी दोन की अच्छी नस्ल का है। आना-जाना दूर का नही है, जल्दी ही इन्हे घोडियो के बाडे मे छोड देगे। तुम इनके लिए पूरी तरह जिम्मेदार हो।"

'तुम भी कैसी बाते करते हो!" बुड्ढा श्चुकार बोला। "भला मुझे क्या मालूम नही कि घोडो की कैसे देख-रेख करते है? अपनी जिदगी मे मै ढेरो पाल चुका हू। किसी के सिर पर भी उतने बाल न होगे जितने घोडो से मेरा वास्ता पड चुका है।"

पर वास्तव मे बूढे श्चुकार का पूरे जीवन मे केवल दो मरियल घोडियो से 'वास्ता पडा'। और उनमे से भी एक को वह गाय के बदले दे आया था। और दूसरी के साथ यह किस्सा हुआ। कोई बीस साल पहले उसने वोयस्कोवोय गाव से नशे मे धुत्त घर लौटते समय रास्ते मे बजारो मे उसे तीस रूबल मे खरीदा। जब खरीदते समय उसने घोडी की जाच की तो देखने मे वह गोल-मटोल थी, रग चूहे

जैसा और कान लटके हुए, एक आख कजी थी पर थी बडी चचल। बुड्ढा श्चुकार दोपहर तक बजारे मे मोल-भाव करता रहा। कोई चालीस बार सौदा पक्का करने के लिये उन्होने हाथ मिलाये, पर हर बार फिर मे मोल-भाव करने लगते।

"घोडी नही, मोना है, मोना! ऐसी दौडती है कि तुम आखे बद करो तो जमीन न दिखायी दे। बिजली की तरह दौडती है। चिडिया की तरह उडती है!" थके-मादे श्चुकार का कोट खीच-खीचकर बजारा भगवान की कसम ले-लेकर तारीफो के पुल बाध रहा था।

"दाढे पूरी घिस चुकी है, आख कानी है, मुम घिसे, पेट लटका है मोना कहा, मुसीबतो का पिटारा है!" बुड्ढा श्चुकार घोडी के नुक्स निकाल रहा था, वह चाहता था कि बजारा एक रूबल घटा दे, जिनकी वजह मे वे सौदा नही कर पा रहे थे।

"अरे, इमके दातो से तुम्हे क्या लेना? कम चारा खायेगी। पर घोडी जवान है, भगवान की कसम। घोडी नही, बच्ची है, बच्ची, दात तो एक बार बीमारी की वजह से गिर गये। कानी है तो क्या हुआ? वैसे भी यह कानी नही, कजी है! और सुम भी नये आ जायेगे हा, घोडी सुदर नही, पर तुम इसके साथ बिस्तर मे तो मोओगे नही, तुम्हे तो हल मे जोतने के लिये चाहिये न, ठीक कहा न मैने? तुम ध्यान मे देखो, इसका पेट क्यो मोटा है, ताकत की वजह मे! दौडती है तो जमीन कापती है, गिरती है तो तीन दिन नही उठती भले आदमी! तुम क्या तीस रूबल मे घुडदौड के लिये घोडा खरीदना चाहते हो? इतने पैसो मे तो [illegible] नही खरीद सकोगे, मरे का मास तो तुम्हे मुफ्त म मिल जायेगा

भगवान की दया मे बजारा बडा भला आदमी निकला कुछ मोल-भाव करके उमने आखिरी रूबल भी घटा दिया और श्चुकार को घोडी की लगाम थमा दी, गहरे नीले कोट की आस्तीन से कत्थई माथा पोछते हुए उसने बनावटी सिसकी तक ले डाली।

श्चुकार के हाथ मे लगाम आते ही घोडी की चचलता कही गायब हो गयी। वह बहुत खीचने पर मुश्किल से अपनी तिनके जैसी टागो को उठाकर अनिच्छा के साथ उमके पीछे चल पडी। बस तभी बजारा हस पडा, अपने खडिया जैमी शुभ्र दतावली को उघाडकर वह पीछे से चिल्लाया

"अरे, भले आदमी! दोन कज्जाक! मेरी नेकी को मत भुलाना! इस घोडी ने चालीस साल मेरी सेवा की, तुम्हारी भी इतनी ही करेगी, बस खिलाना उसे हफ्ते मे सिर्फ एक ही बार, नही तो पागल हो जायेगी! मेरा बाप इस पर सवार होकर रोमानिया से आया था और उसे मास्को से भागते फ्रासीसियो मे यह मिली थी। बहुत कीमती है यह घोडी!"

वह बडी देर तक चिल्लाता हुआ और भी कुछ श्चुकार को कहता रहा, जो अपनी खरीद को खीचकर ले जा रहा था। तबू के पास और बजारे की टागो के बीच उछलते-फुदकते कौए की तरह काले बजारे बच्चे चिल्ल-पो कर रहे थे, बजारिने खिलखिलाकर हस रही थी। पर बुड्ढा श्चुकार उनकी ओर कोई ध्यान दिये बिना चलता जा रहा था, वह सोच रहा था "खुद मालूम है कैसा ढोर खरीदा है। अगर पैसे होते तो मै भला ऐसी घोडी खरीदता। और यह बजारा भी बडा मजाकिया आदमी है, बडा हसमुख मेरी तरह ही चलो अब घोडी हो गयी अपनी। इतवार को बीवी के साथ कस्बे की हाट मे जायेगे।

पर वह तुब्यान्स्की तक भी न पहुचा पाया कि घोडी के साथ बडी अजीब बाते होने लगी जब सयोग मे मुडकर उसने पीछे देखा तो श्चुकार अवाक् रह गया उसके पीछे वह हट्टी-कट्टी घोडी नही, जो उसने खरीदी थी बल्कि पिचके पेट और बगलो मे गहरे गड्ढोवाली मरियल घोडी आ रही थी। कोई आधे घटे मे ही वह पहले से आधी रह गयी थी। सलीब का निशान बनाकर वह पिशाच-मोचन मत्र बुदबुदाने लगा, उसके हाथ से लगाम छूट गयी, उसका सारा नशा काफूर हो गया। घोडी का फेरा लगाकर ही उसे इतनी तेजी से उसके पतले होने का कारण पता चला। घोडी की सुतली के गुच्छे जैसी पूछ बडे बेहूदा ढग से एक ओर ऊपर की तरफ उठी हुई थी और उसकी जड के पास से सू-सू करती, फुफकारती बदबूदार हवा और पतली लीद के छोटे निकल रहे थे। "अरे, यह देखो तो! श्चुकार ने अपना सिर धुन लिया। और फिर घोडी की लगाम को पकडकर दस गुनी शक्ति से उसे खीचता हुआ चल पडा। तुब्यान्स्की तक उसके पेट का ज्वालामुखी शान्त नही हुआ, सडक पर शर्मनाक निशान छूटने जा रहे थे। शायद श्चुकार ग्रेम्याची तक सही-सलामत पहुच भी जाता अगर

वह घोडी की लगाम पकडे पैदल ही चलता रहता। पर जैसे ही वह तुब्यान्स्की गाव के पहले घर के पास पहुचा जहा उसका रिश्तेदार और बहुत-से परिचित रहते थे उसने घोडी पर सवार होने का, और चाहे दुलकी चाल ही सही, पर उस पर बैठकर जाने का फैसला किया। अचानक उसमे अपूर्व गर्व की भावना और सदा की तरह शेखी बघारने की उसकी इच्छा जाग उठी। वह दिखाना चाहता था कि देखो अब श्चुकार अपनी गरीबी से छुटकारा पा गया और चाहे खराब ही सही पर अपने निजी घोडे पर सवार होकर जा रहा है। सामनेवाले घर से परिचित कज्जाक को निकलते देख श्चुकार बडी जोर से घोडी पर चिल्लाया "रुक मरदुई! तुझे बस नाचने की लगी रहती है!" इन शब्दो के साथ उसने लगाम को झटका दिया और शान से खडा हो गया। उसकी घोडी जो शायद कभी अपने बचपन मे नाचती-कूदती होगी, अब वास्तव मे नाचने की सोच भी नही रही थी। वह सिर लटकाकर, पिछली टागे जोडकर खडी हो गयी। "इस कज्जाक के सामने से तो सवार होकर जाना चाहिये। देखने दो इसे!" श्चुकार ने सोचा और उछलकर घोडी की कटीली रीढ पर पेट के बल चढ गया। बस तभी वह घटना हुई जिसकी बहुत दिनो तक तुब्यान्स्की के कज्जाक बाते करते रहे उसी स्थान पर श्चुकार की इज्जत मिट्टी मे मिल गयी जिसके चर्चे आज तक लोगो की जबानो पर है और शायद अगली पीढी मे भी नही भुलाये जायेगे जैसे ही श्चुकार की टागे धरती से उठी और उसने घोडी की पीठ पर पेट के बल आडे लेटे ठीक से सवार होने की कोशिश की कि घोडी लडखडायी, उसके पेट मे गुड-गुड हुई और वह पूछ उठाकर उसी स्थान पर ढह गयी। हाथ फैलाये श्चुकार सडक के किनारे धूल भरी झाडियो मे जा गिरा। वह झट से उठ खडा हुआ और यह समझकर कि परिचित कज्जाक ने उसकी नाक कटती देख ली उसने स्थिति को सभालने की कोशिश की। वह चिल्लाकर घोडी को ठोकर मार-मारकर गालिया देने लगा। वह उठी और जैसे मानो कुछ हुआ ही न हो, मुरझाइ घास खाने लगी।

श्चुकार को देखता कज्जाक बडा मजाकिया और हसमुख था। वह बाड फादकर श्चुकार के पास आकर बोला "नमस्ते, श्चुकार! अरे, तुमने घोडी खरीदी है?" – "हा, खरीदी तो है पर चूक गया, बडी तेज-तर्रार है, जैसे ही इस पर बैठने लगो, जमीन पर लोट जाती

है। शायद अभी किमी ने इस पर मवारी नही की, सधी नही है।" कज्जाक ने दो बार चक्कर लगाकर घोडी की गौर से जाच की, मुह खोलकर उसके दातो को देखा और बडे गभीर लहजे मे बोला "हा, मचमुच अभी माधा नही गया इसे। पर घोडी है अच्छी नस्ल की। दातो को देखकर तो यही लगता है कि इसकी उम्र पचाम से कम नही, चूकि यह खालिस नस्ल की है इमलिये जिदगी भर कोई इसे माध नही सका।" श्चुकार ने उमके ऐसे महानुभूतिपूर्ण व्यवहार को देखकर, माहस बटोरकर पूछा "अच्छा यह तो बताओ, इग्नात पोर्फीरिच कि यह इतनी जल्दी दुबली कैसे हो गयी? देखते-देखते पतली हो गयी, उससे बदबूदार हवा और लीद ऐसे निकल रही थी जैमे ज्वालामुखी फूटता है। मारे रास्ते छीटे छोडती आयी!" – "तुमने कहा खरीदी? बजारो मे तो नही?" – "उन्ही से, तुम्हारे गाव के बाहर पडाव था उनका।" कज्जाक, जो घोडो और बजारो के बारे मे बहुत कुछ जानता था बोला "इसीलिये तो पतली हो गयी कि तुम्हे बेचने से पहले उन्होने उसमे हवा भर दी। जब कोई घोडा बुढापे मे दुबला हो जाता है वे उसे बेचने से पहल उसके चूनड मे छेदवाला सरकडा घुसेड देते है और बारी-बारी मे फूक मारकर हवा भरते है जब तक कि वह फूलकर गोल-मटोल न हो जाये। और फिर जब उसे गुब्बारे की तरह फुला लेते है तो झट से सरकडा निकालकर राल मे सना कपडा या भुट्टा ठूम देते है ताकि हवा न निकले। तुमने भी ऐसा ही फुलाया हुआ घोडा खरीदा है। रास्ते मे शायद डाट कही गिर गयी और तुम्हारी घोडी पतली होन लगी तुम जाकर अपनी डाट ढूढ लाओ हम झट से फिर फुला देगे" – "शैतान उन्हे फुलाये!" श्चुकार चिल्लाया और बजारो के पडाव की ओर दौड पडा पर टीले पर पहुचकर उमने देखा कि नदी के किनारे न उनके तबू है न छकडे। जहा उनका पडाव था वहा से अभी तक जलते अलाव का नीला धुआ उठ रहा था और दूरी पर स्तेपी की सडक पर सफेद धूल उड रही थी। जैसे किसी परीकथा मे होता है बजारे गायब हो गये। श्चुकार रो पडा। जब वह लौटकर आया तो इग्नात पोर्फीरिच फिर घर से बाहर आया और बोला "मै इसके नीचे झुककर खडा हो जाता हू ताकि वह फिर मे न गिर पडे अपनी शोखी की वजह से, और तुम मवार हो जाओ।" शर्म, दुख और पसीने मे तर श्चुकार ने उसकी सेवा स्वीकार कर

ली और ले-देकर घोडी पर चढ गया। पर उसकी मुसीबतो का अत यही नही होनेवाला था घोडी इस बार नही गिरी पर उसकी चाल बिलकुल असाधारण थी। वह पहले अपनी टागे आगे फेकती और फिर पिछली टागो को हवा मे ऊचा उछालती। इस प्रकार वह श्चुकार को अगली गली तक ले गयी। इस खौफनाक दौड से उसके सिर से टोपी गिर गयी और कोई तीन-चार बार भयकर झटको से पेट मे हौल उठी। 'हे भगवान! इस तरह नही जा सकता!" श्चुकार ने सोचा और चलती घोडी से कूद गया। वह टोपी उठाने के लिये वापस मुडा पर गली मे अपनी ओर लोगो को दौडते देखकर उल्टे पाव लौट पडा। अचानक इतनी चचलता दिखानेवाली घोडी को गाव के बाहर ले गया। पवनचक्की तक बच्चे उसे घेरे चल रहे थे पर बाद मे चले गये। पर श्चुकार मे अब फिर से बजारे के 'सोने' पर बैठने का साहस नही था, वह टीलेवाले लम्बे रास्ते को लेकर गाव के पास से गुजरा, पर टीले पर घोडी खीच-खीचकर थक गया। उसने घोडी को अपने आगे-आगे हाकने का फैसला किया। तभी उसे पता चला कि इतनी मुश्किल से खरीदी घोडी की दोनो आखे अधी है। वह सीधी गड्ढो और नालियो की ओर जाती और लाघने के बजाये उनमे गिर पडती, हाफती हुई उठती और फिर से चल पडती चलती भी थी वह बडे अजीब ढग से घेरे बनाती चल रही थी नयी खोज से स्तब्ध श्चुकार ने घोडी को पूरी छूट दे दी, उसने देखा कि घोडी एक चक्कर पूरा करके दूसरा शुरू कर देती और इसी तरह बिना रुके अदृश्य सर्पिल रेखा पर चल रही थी। तब श्चुकार बिना किसी की सहायता के खुद समझ गया कि उसने जो घोडी खरीदी है उसका सारा लम्बा और कठिन जीवन रहट चलाते बीता उसी मे जुती-जुती वह अधी और बूढी हो गयी।

साझ ढलने तक वह घोडी को टीले पर चराता रहा, दिन मे उसे गाव मे जाते हुए शर्म आ रही थी, रात को वह उसे हाककर घर ले गया। मोटी और गुस्सैल बीवी ने कैसे उसकी खबर ली, अपने बुरे सौदे के लिये दुबले-पतले श्चुकार पर क्या गुजरी, यह सब बकौल श्चुकार के तब के दोस्त लोकातेयेव मोची के 'अज्ञात अधेरे के गिलाफ से ढका है'। बस इतना ही पता है कि शीघ्र ही घोडी को खाज की बीमारी लग गयी, उसके सारे बाल झड गये और इसी भौंडे रूप मे वह परलोक सिधार गयी। और उसकी खाल को बेचकर मिले सारे

पैसे श्चुकार ने अपने मित्र लोकातेयेव के साथ शराब पर उडा दिये।

याकोव लुकीच को यह आश्वासन देते हुए कि वह, यानी श्चुकार बुड्ढा अपने जीवन मे ढेरो घोडे पाल चुका है, बुड्ढे श्चुकार को भली-भांति मालूम था कि याकोव लुकीच उस पर विश्वास नही कर सकता क्योकि याकोव लुकीच को उसके जीवन की एक-एक बात मालूम थी। पर बुड्ढे श्चुकार का स्वभाव ही ऐसा था शेखी बघारे बिना, झूठ बोले बिना उसका खाना नही हजम होता था। कोई अदृश्य निरकुश शक्ति उससे ऐसी-ऐसी बाते कहलवा देती कि कुछ ही मिनट बाद वह उनसे सहर्ष मुकर जाता

हा, तो बुड्ढा श्चुकार एकसाथ साईस और गाडीवान दोनो हो गया। यह मानना पडेगा कि वह अपने सीधे-साधे कर्त्तव्यो का पालन ठीक से करता था। बस नागूल्नोव को, जो तेज सफर का शौकीन था एक बात उसकी अच्छी नही लगती थी, वह यह कि रास्ते मे रुकना बहुत पडता था। अहाते से निकले नही कि श्चुकार लगाम खीचता और पुचकारकर घोडो को रोक देता। नागूल्नोव पूछता "क्यो रुक गये?" बुड्ढा श्चुकार उत्तर देता "घोडो की जरूरत के लिये " और तब तक सीटी बजाता रहता जब तक नागूल्नोव उसकी सीट के नीचे से चाबुक निकालकर घोडे की पीठ पर न बजा देता।

"अब जार का जमाना नही है कि गाडीवान पटरे पर बैठे और सवारी पीछे मुलायम गद्दी पर हिचकोले खाये। अब मै गाडीवान हू पर कामरेड दवीदोव के साथ-साथ गाडी मे बैठता हू। जब कभी सिगरेट पीने की इच्छा होती है तो उससे कहता हू 'जरा पकडना लगाम, मै सिगरेट सुलगा लू', वह कहता है, 'बडी खुशी से । लगाम सभालकर वह कई बार तो घटा-घटा भर चलाता रहता है और मै नवाब की तरह बैठा चारो तरफ का नजारा देखता रहता हू," बुड्ढा श्चुकार कज्जाको के सामने शेखी बघारता। वह बडा अकडकर चलता और बातूनी भी कम हो गया था। बसत के पाले के बावजूद उसने घोडो के साथ अस्तबल मे सोना शुरू कर दिया था पर बुढिया एक सप्ताह बाद सब के सामने उसे इसलिये खूब पीटकर और कडी डाट पिलाकर घर ले गयी कि मानो रात को बुड्ढे श्चुकार के पास जवान लुगाइया आती हो। लडको ने बुड्ढे पर यह झूठा आरोप बुढिया की टाग खीचने के लिये लगाया था, पर श्चुकार कुछ नही बोला और चुपचाप घर

में सोने चला गया पर हर रात दो बार अपनी ईर्ष्यालु अर्द्धांगिनी के पहरे मे घोडो को देखने जाता।

वह इतनी फुर्ती मे घोडो को जोतता कि ग्रेम्याची की फायर-ब्रिगेड से मुकाबला कर सकता था। जब वह अस्तबल से निकले अशात घोडो को सभालता हमेशा जोर मे चिल्लाता "बद करो हिनहिनाना! शैतानो की दुम! यह भी घोडा है तुम्हारे बराबर मे, घोडी नही!" उन्हे जोतकर गाडी मे बैठकर आत्मतुष्टि के साथ बोलता "चलो, आज का फेरा लगाकर रोटी कमा ले। मुझे तो यारो, ऐसी जिदगी मे मजा आने लगा है!"

* * *

सत्ताइस तारीख को दवीदोव ने यह जाच करने के लिये कि क्या सचमुच ही उसके आदेश के बावजूद पहली टोली के लोग सीतो के समानातर पाटा चला रहे है, खेत मे जाने का फैसला किया। लोहार इप्पोलीत शाली ने उसे इसकी सूचना दी थी जो खेत मे बोवाई मशीन ठीक करने गया था। उसने देखा था कि पाटे सीतो पर आडे नही सीधे चल रहे थे। गाव लौटकर वह सीधा फार्म के कार्यालय मे आया और दवीदोव से हाथ मिलाकर कडे स्वर मे बोला

'पहली टोली सीतो की सीध मे पाटा चला रही है। यह बिलकुल गलत है। तुम जाकर ठीक से करने का हुक्म दो। मैने उन्हे कहा था पर भेगा शैतान उशाकाव बोला तुम्हारा काम निहाई पर हथौडा चलाना और धौकनी फूकना है, इस काम मे अपनी सूड मत घुसेडो, नही तो अभी उस पर हल चला देगे!' मैने जवाब दिया 'धौकनी फूकने से पहले मै तुझ भेगे को फूला दूगा ' लडाई होते-होते बची।"

बुड्ढे श्चुकार को बुलाकर दवीदोव ने कहा

"जोतो घोडे!"

बेसब्री के कारण वह खुद जोतने मे उसकी मदद करने लगा। वे रवाना हो गये। आकाश धुध से ढका था और दक्षिण-पश्चिम से बहती नम हवा बारिश की भविष्यवाणी कर रही थी। पहली टोली बालुई मिट्टी के सबसे दूरवाले खेत मे काम कर रही थी। वह गाव से कोई दस किलोमीटर दूर पहाडी के पार ल्यूती जोहड के पास था। टोली अनाज बोने के लिये खेत को जोत रही थी और उस पर अच्छी

तरह पाटा चलाने की जरूरत भी ताकि वर्षा का पानी समतल जमीन पर रुका रहे न कि सीतो से नीचे की ओर घाटी मे बह जाये।

"जरा तेज चलाओ, बाबा!" घनघोर घटाओ को देखकर दवीदोव अनुरोध कर रहा था।

"मै तो वैसे भी तेज चला रहा हू। देखते नही सलेटीवाला झाग से ढकने लगा है।"

टीले पर की कच्ची सडक पर स्कूली बच्चे अपने वृद्ध शिक्षक श्पीन की अगुआई मे पक्ति बनाकर चल रहे थे। उनके पीछे-पीछे चार बैलगाडिया पानी के पीपे लेकर चल रही थी।

"बच्चे-कच्चे मार्मटो के शिकार पर निकल पडे," श्चुकार ने चाबुक से इशारा किया।

दवीदोव सयमित मुस्कान के साथ बच्चो को देख रहा था। जब उसकी घोडागाडी बच्चो के पास पहुची तो उसने श्चुकार से अनुरोध किया "जरा रोकना," और नजर दौडाकर कोई सात साल के नगे पाव और सुनहले बालोवाले बालक को चुना

"इधर आना जरा।"

"आने की क्या जरूरत है?" उसने बाप की लाल पट्टीवाली टोपी को गुद्दी पर झुकाकर तडी मे पूछा।

"कितने मार्मटो का सफाया किया?"

"चौदह का।"

"किसके बेटे हो?"

"देमीद उशाकोव का।"

"चलो बैठो मेरे साथ फेदोत सैर करा दू। और तुम भी बैठो" दवीदोव ने सिर पर रूमाल बाधी लडकी की ओर उगली से इशारा किया। बच्चो को बिठाकर उसने चलने का आदेश दिया और लडके की ओर मुडकर पूछा "तुम कौनसी कक्षा मे हो?"

"पहली मे।"

"पहली मे? तब तो तुम्हे अपनी नाक साफ रखनी चाहिये।"

"नही होती साफ। मुझे जुकाम है।"

"अरे, कैसे नही होगी साफ? लाओ इधर नाक!" दवीदोव ने पतलून से अपनी उगलिया अच्छी तरह पोछी और उसास लेकर बोला

"किसी दिन फार्म के दफ्तर मे आओ, मै तुम्हे टाफी दूगा,

चाकलेटवाली। कभी खायी है चाकलेट?"

"न-नहीं ..."

"तब आना मेरे पास दफ़्तर में, मैं तुम्हें खिलाऊंगा।"

"मुझे टाफ़ी की ज़रूरत ही नही!"

"अच्छा! ऐसा भी क्यों फ़ेदोत?"

"मेरे दांत गिर रहे हैं, नीचेवाले तो गिर भी गये, देखो!" बालक ने अपना गुलाबी मुंह खोला, नीचे के दो दांत वास्तव में ग़ायब थे।

"मतलब, फ़ेदोत, तुम्हारे मुंह में खुड्डी है?"

"खुद तुम्हारे मुंह में खुड्डी है!"

"हू.. अरे, तुम्हारी नज़र तो बड़ी तेज़ है!"

"मेरे तो दांत निकल आयेंगे पर तुम्हारे नही निकलेंगे? आहा! .."

"यह तो ग़लत कह रहे हो, भैया! मेरे भी निकल आयेंगे, सच कहता हूं।"

"बड़ा झूठ बोलते हो! बड़ों के नही निकलते। और मैं तो ऊपर-वाले दानों से काट सकता हूं, क़सम से!"

"अरे, तुम्हारे बस की बात कहां है!"

"लाओ उंगली! नहीं यक़ीन?"

दवीदोव ने मुस्कराते हुए अपनी तर्जनी बढ़ायी और आह करके झट से खीच ली: ऊपर के पोर पर दातों के नीले निशान पड़ गये।

"अच्छा फ़ेदोत, अब लाओ, मैं तुम्हारी उंगली काटता हू," उसने प्रस्ताव किया, पर फ़ेदोन कुछ झिझका और अचानक चलती गाडी से कूद पड़ा। टिड्डे की तरह एक टांग पर फुदकते हुए वह चिल्लाया:

"तुम मुझे काटना चाहते हो! पर अब नहीं काट सकते! .."

दवीदोव ज़ोर से हंस पड़ा। उसने लड़की को उतारा और बड़ी देर तक फ़ेदोत की टोपी की सड़क पर चमकती लाल पट्टी को मुड़-मुडकर देखता रहा। वह मुस्करा रहा था, दिल मे उसे अजीब-सी गर्मी और आंखों में नमी महसूस हो रही थी। "इनके लिये हम अच्छे जीवन का निर्माण करेंगे, फ़ैक्ट! आज यह नन्हा फ़ेदोत बाप की कज़्ज़ाक टोपी पहनकर घूमता है और कोई बीस साल बाद इसी धरती पर बिजली का हल चलायेगा... यह तो पक्का है कि इसे मेरी तरह मुसीबतें नहीं उठानी पड़ेंगी, जब मां की मृत्यु के बाद मुझे बहनों के कपडे धोने पडते, खाना बनाना पड़ता और भागकर कारखाने में

काम करने जाना पड़ता... फ़ेदोत की पीढ़ी सुखी होगी, फ़ैक्ट!" असीम कोमल हरियाली से ढकती स्तेपी में नज़रें दौड़ाता हुआ दवीदोव सोच रहा था। पल भर के लिये उसने कान लगाकर भरत पक्षियों की सुरीली सीटियां सुनी, दूरी पर उसे खेत में हल पर झुका हलधर और बैलों के पास सीता में ठोकरें खाता हंकवैया चलता दिखायी पड़ा। गहरी निःश्वास छोड़कर उसने सोचा: "मशीनें आदमी के लिये सारा भारी काम करेंगी... तब के लोग शायद पसीने की बू से अपरिचित हो जायेंगे.. काश मैं देख सकता वह ज़माना! नही तो ऐसे ही मर जाऊंगा, कोई फ़ेदोत मुझे याद तक नहीं करेगा। दवीदोव भइया, इसमें कोई शक नही कि तू तब तक मर जायेगा! संतान की जगह तू ग्रेम्याची का सामूहिक फ़ार्म छोड़ जायेगा। सामूहिक फ़ार्म कम्यून में बदल जायेगा और उसे पुतीलोव कारखाने के फ़िटर सेम्योन दवीदोव का नाम दे देंगे ." दवीदोव अपने विचारों के इस हास्यजनक मोड़ पर मुस्करा दिया। उसने श्चुकार से पूछा:

"कितनी देर में पहुंचेंगे?"

"बस दो बार पलक झपकते ही।"

"बाबा, तुम्हारे यहा कितनी ज़मीन बेकार पड़ी है, देखकर रोंगटे खडे हो जाते है! दो पचसालों के बाद हम यहा ढेरो कारखाने बना डालेगे। सब हमारे होंगे, सब हमारे हाथों में होंगे। बस थोडा ज़ोर लगाकर और दस साल जी लो और तुम्हारे हाथ में लगाम की जगह मोटर का चक्का होगा। बस एक्सीलरेटर दबाते रहोगे!"

बुड्ढा श्चुकार उसास छोड़कर बोला:

"थोडी देर हो गयी! अगर चालीस साल पहले मुझे मज़दूर बना दिया गया होता तो क्या पता मैं बिलकुल दूसरा ही आदमी होता... किसानी मे भाग्य ने मेरा साथ नही दिया। बचपन से ही मेरी ज़िंदगी पटरी से उतर गयी, अभी हाल ही तक यही हाल था। मुझे मानो जीवन भर आंधी उड़ाये ले जा रही थी, कभी दायी तरफ किसी चीज़ से टकरा देती, कभी बायी, कभी ऊपर उठाकर ज़मीन पर पटक देती..."

"ऐसी भी क्या बात हुई?"

"अभी पूरा क़िस्सा सुनाता हूं। घोड़ो को आराम से चलने दो और मै तुम्हें अपना दुखड़ा रोना रो देता हूं। हालांकि तुम बड़े सख़्त आदमी हो पर तुम्हें मुझे समझना चाहिये और मुझसे सहानुभूति दिखानी चाहिये... मेरे

साथ कितनी ही बार गभीर वारदाते हो चुकी है। शुरू से सुनाता हू मेरे पैदा होते ही दाई मेरी दिवगत मा से बोली 'तेरा बेटा बडा होकर जनरल बनेगा। जनरल बनने के सारे लक्षण है माथा उसका छोटा है और सिर कद्दू की तरह बडा, पेट भी फूला और आवाज भी भारी है। खुश हो मतर्योना!' और दो हफ्ते बाद दाई की सब बाते गलत निकलने लगी पैदा मै 'येव्दोकीय दिवस' को हुआ था पर मौसम बिलकुल उल्टा था, मेरी मा बताया करती कि उस दिन मुर्गी की प्यास बुझाने लायक पिघला पानी तो क्या मिलना जब गौरैया ही उडती-उडती बर्फ बनकर गिर जाती थी! ऐसे मे मुझे तुब्यान्स्की ले गये, गिरजे मे बपतिस्मा देने के लिये। पर खुद सोचो, भला ऐसी कडाके की सर्दी मे नन्हे-से बच्चे को कुड मे डुबकी दी जा सकती थी? उन्होने पानी गर्म करना शुरू किया, पादरी और उसका चेला नशे मे धुत्त थे। एक ने कुड मे गरम पानी भर दिया, दूसरे ने हाथ डालकर देखा नही और—'प्रभु यीशु, भगवान का दास बपतिस्मा ले रहा है' कहकर सिर के बल मुझे खौलते पानी मे ठूस दिया मेरी तो चमडी तक उतर गयी! जब मुझे घर लाये तो सारे बदन पर फफोले पडे थे। बस, इसी वजह से मेरी नाल उतर गयी क्योकि दर्द से बहुत जोर लगा-लगाकर रोता था बस तब से मेरी बदकिस्मती की शुरूआत हो गयी! और यह सब इसलिये कि मै किसानो के बीच पैदा हुआ। नौ साल की उम्र होने तक कुत्ते मुझे काटते रहे, हस ने भी बडी चोचे मारी और एक बार तो बछेडे ने दुलत्ती मारकर मेरी जान ही निकाल दी। और नौ साल पूरे होने के बाद तो मेरे साथ ऐसी-ऐसी बाते होने लगी कि कुछ पूछो मत। मुझे दसवा साल लगा था कि मै काटे मे फस गया '

"कैसे काटे मे?" दवीदोव न आश्चर्य के साथ पूछा, वह श्चुकार की बाते ध्यान से सुन रहा था।

"जिससे मछली पकडते है। तब ग्रेम्याची मे एक बहरा और जर्जर बुड्ढा रहता था, उसे सब कुपीर कहकर बुलाते थे। सर्दियो मे वह फदे और जाल से तीतर पकडता और सारी गर्मिया नदी के किनारे मछली-मारी मे निकाल देता। तब हमारी नदी गहरी थी, लाप्शीनोव की पनचक्की खडी थी वहा। उसके बाध के नीचे कार्प और बडी-बडी श्चूका मछलिया खूब होती थी, बस बुड्ढा बेद मजनू की झाडी

29-1152

के पास अपनी बसिया लेकर बैठ जाता। उसके पास कोई सातेक थी बसिया – किसी पर केचुए का चारा होता तो किसी पर आटे का, किसी पर कोई छोटी-सी जिंदा मछली वगैरह होती, श्चूका को पकडने के लिये। बस हम बच्चो को उसके काटे कुतरकर ले जाने का चस्का पड गया। बुड्ढा तो बिलकुल बहरा था, पत्थर की तरह, चाहे उसके कान मे पेशाब कर दो पर फिर भी नही सुनेगा। हम नदी के किनारे बुड्ढे के पास झाडियो मे छिप जाते, और हम मे से एक चुपचाप पानी मे उतर जाता ताकि लहरे न उठे, डुबकी लगाता और बुड्ढे की किनारे-वाली बसी की डोर पकडकर दातो से उसे कुतर काटा ले आता। और बुड्ढा बसी निकालता और गुस्से मे चिल्लाता 'फिर कुतर गयी ससुरी? हे भगवान!' वह सोचता कि यह श्चूका की करतूत है, और काटा खोकर उसे बडा गुस्सा आता था। वह तो दुकान मे खरीदता था काटे, पर हमारे पास खरीदने के लिये पैसे कहा, बस हम बुड्ढे के काटो का शिकार करते थ। एक दिन मै एक काटा लाया कुतरकर और दूसरे की ताक मे था। देखता हू बुड्ढे ने बसी डाली पानी मे और लगा दी मैने डुबकी। मैने बस धीरे से डोर पकडकर कुतरने के लिए मुह म डाली ही थी कि बुड्ढे ने झटके से बसी उठा ली! डोर तो मेरे हाथ से छूट गयी और काटा ऊपरवाले होठ मे गड गया। बस मै चिल्लाने की कोशिश करता पर मुह मे पानी भर डाला। बुड्ढा बसी खीचकर मुझे बाहर निकालने लगा। मै तेज दर्द की वजह से टागे चलाने लगा, काटे मे फसा हुआ था और मैने महसूस किया बुड्ढा मेरे नीचे पानी म कलछा ठमने लगा बस मुझ से न रहा गया मैन पानी से सिर निकाला और बडी जोर से चिल्ला पडा। बुड्ढे को काटो तो खून नही सलीब का निशान बनाना चाहता पर हाथ न उठे, डर के मारे चेहरा देग के पेदे से भी काला। और डरता क्यो नही? खीच रहा था श्चूका को और बाहर निकला लडका। कुछ देर ऐसे ही खडा रहा और फिर सिर पर पाव रखकर भाग पडा! जूतिया पीछे छूट गयी! और मै इस काटे के साथ घर पहुचा। बाप ने काटा तो निकाल दिया पर मेरी ऐसी धुनायी की कि होश उड गये। पर फायदा क्या था इसका? होठ ठीक हो गया, पर तब से मेरा नाम श्चुकार पड गया। बस यह फूहड नाम मेरा पिड नही छोडता अगले साल बसत मे मै हस के चूजे ले गया पवनचक्की के पास चराने के लिये। पवन-

चक्की घूम रही थी, पास ही मे मेरे चूजे दाना चुग रहे थे और उनके ऊपर चील मडरा रही थी। चूजे पीले थे, आकर्षक बस चील का दिल हो आया किसी को झपट्टा मारकर ले जाने को, पर मै तो उनकी चौकीदारी कर रहा था और चील को 'शू-शू' करके भगा रहा था। मेरे यार-दोस्त दौडे-दौडे आये और हम पवनचक्की के पखो पर झूलने लगे बारी-बारी से पख पकडते जब वह कोई दो-एक गज ऊपर उठना तो हम हाथ छोड देते और जमीन पर कूदकर लेट जाते नही तो दूसरे पख से चोट लग सकती थी। और बच्चे तो तुम जानते ही हो, शैतान की दुम होते है! हमने एक खेल सोचा, जो सबसे ऊपर जाकर हाथ छोडेगा वह 'राजा' बनेगा और दूसरे उसे अपने ऊपर लादकर पवन-चक्की से खलिहान तक ले जायेगे। स्वाभाविक है कि हम सब 'राजा' बनना चाहते थे। मैने भी सोचा 'अभी सबसे ऊपर जाता हू!' और इस के चूजो के बारे मे तो भूल ही गया। पख मुझे ऊपर उठा रहा था, मैने मुडकर देखा तो दिल धक से रह गया – चील चूजो पर झपट्टा मारने ही वाली थी। मै बुरी तरह डर गया, चूजो के लिये मेरी चमडी उधेड दी जायेगी मै चिल्लाया 'बच्चो! चील! चील को भगा दो!' इस चक्कर मे यही भूल गया कि मै पख पर लटका हू जब सुध आयी तो मै बहुत ऊचा उठ चुका था! नीचे कूदने हुए डर लग रहा था, ऊपर जाते हुए और भी ज्यादा। क्या करू समझ मे नही आ रहा था। मै अभी सोच ही रहा था कि पख ऊपर जाकर सीधा खडा हो गया और मै उस पर उल्टा लटक गया। और जब पवनचक्की का पख नीचे आने लगा मेरा हाथ छूट गया। पता नही मै कितने पल मे जमीन तक पहुचा पर मुझे तो लगा कि बहुत देर लग गयी, और स्वभाविक है धडाम से गिरा। घबराकर खडा हो गया, देखता क्या हू, कलाई पर जोड उतर गया। हड्डी बैठानेवाली ने तो उसे ठीक कर दिया, पर फायदा क्या हुआ? अगले साल फिर यही हो गया, और तो और रीपर ने मेरा कीमा बना दिया। सेट पीटर दिवस के बाद मै अपने बडे भाई के साथ बाजरे की फसल काटने गया। मै घोडे चला रहा था और भाई रीपर से कटी बालिया गिराता जा रहा था। मै घोडो को हाक रहा था, उनके ऊपर डास भिनभिना रहे थे, आसमान सफेद तपा सूरज भयकर गर्मी बरसा रहा था, मै गरमी से बेहाल था, ऊघकर सीट से गिर पडता। अचानक देखता हू कि बगलवाली सीता मे बहुत बडा

सारग पक्षी चाबुक की तरह पसरा पडा है। मैने घोडे रोके, भाई बोला 'अभी पाचा भोकता हू!' पर मै बोला 'भइया, मुझे इसे जिदा पकडने दो।' भाई बोला 'ठीक है।' और मै कूद पडा और उसे पकड लिया, पर वह फूदककर दौडने लगा! डैने खोलकर मेरे सिर पर मारने लगा, उछल-उछल मुझे घसीटे ले जा रहा था, और खुद डर के मारे (मतलब बहुत ज्यादा डर गया था!) मुझ पर अपनी पतली बीट छिडकता मुझे ऐसे घसीटे ले जा रहा था जैसे शोख घोडी पाटा खीचती है। न जाने क्यो उसे अचानक पीछे मुडकर दौडने की सूझी। वह घोडो की टागो मे टकराकर एक तरफ हो गया, पर घोडे डरपोक थे बिदककर मेरे ऊपर से कूदे और फुफकारकर दौड पडे। और मै रीपर के नीचे आ गया भाई ने झट से लीवर दबाकर रीपर को ऊपर उठा दिया। मै उसके बेलचे मे जा फसा और रीपर की धार की ओर खिचने लगा – उसके दाते दाये-बाये चल रहे थे। एक घोडे की टाग उसमे आ गयी नसे कट गयी और मेरी तो ऐसी दुर्गत हुई कि कोई पहचान भी न पाता। भाई ने किसी तरह घोडो को रोका, एक को खोलकर मुझे उस पर आडा लिटाया और सवार होकर उसे बेतहाशा दौडाता गाव मे ले गया। मै बेहोश, बीट और मिट्टी मे सना था और सारग साला, उड गया। धीरे-धीरे मै चगा हो गया कोई छह महीने बाद मै पडोसियो के यहा से लौट रहा था और गाव का साड मेरे रास्ते मे खडा था। मै उससे बचकर निकलने लगा और उसने खूख्वार शेर की तरह पूछ घुमायी और मेरी ओर सीग मोड लिये। मुझे क्या उसके सीगो पर झूलकर जान गवाने का शौक था? मै भाग खडा हुआ ओर उसने मेरा पीछा करके निचली पसली म ऐसा सीग मारा कि मै बाड के दूसरी ओर जा पडा। पसली तिनके की तरह चट से टूट गयी। अगर मेरे शरीर मे सौ पसलिया होती तो बात दूसरी थी, बेकार ही मे पसली कौन चाहेगा खोना इसकी वजह मे मुझे फौज मे नही लिया गया। और बाद मे मैने तरह-तरह के जानवरो से क्या-क्या नही भुगता, इसकी गिनती करना बडा मुश्किल है! लगता है मुझ पर बदकिस्मती की मुहर लगी है, कही भी जजीर से छूटा कोई कुत्ता हो, चाहे जहा हो मरदुआ पर मुझे काटने जरूर आ जायेगा या मै उसके सामने अचानक पहुच जाऊगा। मेरी पतलून फाड देगा, दात गडा देगा, भला मुझे इससे क्या फायदा? उझाचीना घाटी से

लेकर सडक तक बनबिलाव मेरा पीछा कर चुके है, स्तेपी मे जगली सुअरो मे भिडत हो चुकी है। एक बार साड की वजह से मेरी पिटाई हो गयी और अपने बूटो मे हाथ धोना पडा। एक बार रात को गाव मे जा रहा था, और दोनेत्स्कोव के मकान के सामने फिर एक साड मेरी तरफ आ रहा था। चिघाडकर, पूछ घुमाता। मैने सोचा, नही भई, तुम मुझे माफ करो, मै अब अक्लमद हो गया हू, तुम्हारी जान से कोई वास्ता नही रखना चाहता! मै मकान के पास-पास चलने लगा, साड मेरे पीछे-पीछे लग गया, मै दौड पडा, वह भी मेरे पीछे-पीछे फुफकारता आ रहा था। मकान की एक खिडकी खुली थी। मै चमगादड की तरह उसमे घुस गया, मैने कमरे मे नजरे दौडायी पर वहा कोई नही था। मैने सोचा, लोगो को परेशान नही करूगा, खिडकी से ही बाद मे चला जाऊगा। साड सीगो से दीवार कुरेदकर चलता बना। मै बस खिडकी से बाहर कूदने ही वाला था कि किसी ने मेरा हाथ पकडकर गुद्दी पर कोई कडी चीज मारी। यह बुड्ढा दोनेत्स्कोव था जो शोर सुनकर कमरे मे आया और मुझे पकडा लिया। उसने पूछा 'तू क्यो घुसा यहा लडके?' मै बोला 'साड से बचने के लिये।'—'जानते है तुम साडो को! तू हमारी बहू ओल्यूत्का से मिलने आया था न?' और बस उसने मुझे पीटना शुरू कर दिया, शुरू मे तो लगा मानो मजाक मे मार रहा हो, फिर जोर-जोर से पीटने लगा मुझे। बुड्ढे मे अभी काफी ताकत थी, वह खुद भी बहू पर डोरे डालने के फेर मे रहता था, बस गुस्से मे आकर उसने मेरी दाढ तोड दी। फिर बोला 'फिर आयेगा ओल्यूत्का के पास?' मै बोला 'नही, नही आऊगा, पिड छोड मेरा! तू अपनी ओल्यूत्का को गले मे टाग ले सलीब की जगह।' वह बोला 'चल उतार अपने बूट नही तो और करूगा धुनायी तेरी!' बस मैने बूट उतारकर फोकट मे उसे दे दिये। इस तरह अपने इकलौते बूट खोना भी बडे मजे की बात है! मै कोई पाच साल तक इस ओल्यूत्का से खार खाये बैठा था, पर फायदा क्या? आगे भी ऐसी बहुत-सी बाते होती रही अरे यही उदाहरण लो जब हम आपके साथ तीत को बेदखल करने गये थे मै पूछता हू क्यो उसके कुत्ते ने मेरे ही ओवरकोट चिथड-चिथडे कर दिया? कायदे से तो उसे मकार पर या ल्युबीश्किन पर झपटना चाहिये था पर नही, वह सरा, पूरे अहाते मे चक्कर लगाकर मुझ पर ही झपटा। चलो

यही अच्छा हुआ कि उसने मेरा गला नहीं दबोचा नहीं तो श्चुकार की 'राम नाम सत्य है' हो जाती। अरे हमें सब पता है। ऐसा इसलिये हुआ कि मेरे पास लिवाल्वर नही था। अगर मेरे पास लिवाल्वर होता तो भगवान जाने क्या हो जाता! क़त्ल हो जाता! ग़ुस्से में मैं कुछ भी कर सकता हूं। तब मैं कुत्ते को भी मार देता, तीत की लुगाई को भी और तीत की थूथनी में भी सारी गोलियां ठूंस देता! बस क़त्ल का मामला हो जाता और श्चुकार को जेल में ठूंसा जा सकता था... पर मुझे जेल की कोई ज़रूरत नहीं, मेरे शौक़ दूसरे हैं। हां... बस देख लो, बन गया मैं जनरल। अगर वह दाई आज ज़िंदा होती तो मैं उसे कच्चा चबा जाता! बेकार में अपनी ज़बान मत चला! नन्हे-मुन्नों को परेशान मत कर! लो आ गया टोली का पडाव!"

३२

ड्योढ़ी में झाडू से बूटों की कीचड़ साफ करते समय ही रज़म्योत्नोव को नागूल्नोव के कमरे के अधखुले दरवाज़े से रोशनी की तिरछी पट्टी पड़ती दिखायी दी। हौले से दरवाजा खोलते हुए अंद्रेई ने सोचा: "मकार नही सो रहा। क्यो उसे नीद नही आती?"

पाच बत्तियोंवाला मिट्टी के तेल का लैम्प अखबार के जले शेड से ढका था। उसका धुधला प्रकाश मेज़ के कोने में खुली किताब पर पड़ रहा था। मकार का बिखरे बालोंवाला सिर एकाग्रता से मेज़ के ऊपर झुका था, दायें हाथ पर उसका गाल टिका था और बाये की उंगलियां लट में उलझी हुई थी।

"नमस्ते, मकार! क्यों नीद नही आ रही?"

नागूल्नोव ने सिर उठाकर अप्रसन्नता से अंद्रेई की ओर देखा।

"कैसे आना हुआ?"

"बस गप-शप करने के लिये। तुम्हें तकलीफ़ तो नहीं दी?"

"दी या न दी, क्या फ़र्क़ पडता है, बैठो, तुम्हें भगाऊगा थोड़े।"

"क्या पढ रहे हो?"

"अपने लिये एक काम ढूंढ़ लिया है," मकार ने किताब को

हाथ से ढक लिया और रजम्योत्नोव की ओर देखा उसकी बात सुनने की प्रतीक्षा मे।

"मैने मरीना को छोड दिया। हमेशा के लिये " अद्रेई उसास लेकर बोला और धम्म से स्टूल पर बैठ गया।

"कब का छोड देना था।"

"क्यो?"

"क्योकि वह तुम्हारे लिये फालतू बोझ थी और अब जीवन ऐसा है कि अपने सिर से सब फालतू बोझ उतार देना चाहिये। आजकल हम कम्युनिस्टो के पास परायी बातो के चक्कर मे फसने का वक्त नही है।"

"यह परायी बात कैसे हुई अगर हम दोनो के बीच प्यार था?"

"अरे यह भी कैसा प्यार था? गर्दन से लटका चक्की का पाट था न कि प्यार। तुम सभा का सचालन करते और वह तुम पर नजर रखती, बैठी-बैठी डाह करती रहती। भैया, यह प्यार नही सजा है।

"तुम्हारे कहने का मतलब है कि कम्युनिस्टो को लुगाइयो के पास फटकना तक नही चाहिये? खस्सी बकरे की तरह घूमना चाहिये क्या?"

'और तुम क्या सोचते हो? जो पुराने जमाने मे अपनी बेवकूफी से शादी कर चुके है उन्हे तो अपनी बीवियो के साथ दिन पूरे करने दो पर युवा जवानो को मै आदेश निकालकर शादी करने की मनाही कर देता। वह कैसा क्रान्तिकारी बनेगा अगर उसे अपनी बीवी का दामन पकडे रहने की आदत पड जायेगी? हम लोगो के लिये लुगाई वैसे ही है जैसे लालची मक्खी के लिये शहद। चिपककर रह जाओगे। मै खुद भुगत चुका हू, खूब अच्छी तरह जानता हू! शाम को तुम कुछ पढने बैठते हो, अपना विकास करना चाहते हो पर बीवी सोने चली जाती है। थोडा-सा पढकर तुम भी लेट जाते हो पर वह करवट बदलकर मुह मोड लेती है। तुमको उसके ऐसे व्यवहार से बुरा लगता है, तुम या तो उससे झगड बैठते हो या चुपचाप सिगरेट पीते मन ही मन कुढते रहते हो, नीद नही आती। नीद पूरी नही हुई और तुम भारी सिर कोई राजनीतिक भूल कर डालते हो। यह आजमायी हुई बात है! और अगर किसी के बच्चे हो गये, तो वह समझो पार्टी के किसी काम का न रहा। पलक झपकते बच्चे के लाड-प्यार मे फस जायेगा, उसके मुह से आती दूध की गध का आदी हो जायेगा, और

बस गया काम से! वह खराब सेनानी, बेकार कार्यकर्त्ता होता है। जार के जमाने मे रगरूटो को सिखाता था तब मैने बहुत देखा लडके हमेशा हसमुख, समझदार होते पर अगर कोई जवान बीवी को घर पर छोडकर रेजिमेट मे भरती हुआ, तो वह उसकी याद मे आहे भर-भरकर निरा ठूठ बन जाता। उसके हर काम मे बेवकूफी टपकती, दिमाग मे उसके भुस भर जाता। तुम उसे सेवा के नियम बताते हो और वह बटनो जैसी आखो से तुम्हारा मुह ताकता है। लगता तो यह कि वह तुम्हे देख रहा है पर हरामजादे की आखे अदर की ओर मुडी अपनी बीवी को देख रही होती। यह भी भला कोई बात हुई? नही, कामरेड प्यारे, पहले तो तुम अपनी मर्जी से जी सकते थे, पर अब अगर तुम पार्टी मे भरती हुए हो, तो सब बेवकूफिया छोड दो। विश्व क्राति के बाद मेरी बला से तुम चाहे लुगाई के तलवे चाटो, पर अभी तुमको अपना रोम-रोम इस क्राति को अर्पित करना चाहिये।"

मकार ने खडे होकर अगडाई ली, चटकाकर अपने चौडे कधे सीधे किये और रजम्योत्नोव के कधे को थपथपाकर हल्की-सी मुस्कान के साथ बोला "तुम शायद मेरे पास अपना दुखडा रोने आये हो ताकि मै तुम्हारा दुख बाटू तुमसे सहानभूति प्रकट करू, कहू कि अद्रेई, मुझे तुम पर तरस आता है, लुगाई के बिना तुम्हे बडा कष्ट होगा। तुम बेचारे कैसे रह पाओगे लुगाई के बिना, कैसे सह पाओगे ये कष्ट? यही सुनना चाहते थे न? नही अद्रेई, चाहे कुछ और सही पर मेरे मुह से तुम यह नहीं सुन पाओगे! मुझे तो खुशी है कि तुम अपनी मार्जेट की विधवा से अलग हो गये। कब से उसके मोटे कूल्हे पर बेलन चलाने की जरूरत थी! उदाहरण के लिये मुझे ही लो, लूश्का को तलाक देकर बडे मजे से रह रहा हू। कोई मुझे परेशान नही करता, अब मै पैनी मशीन की तरह हू जो कुलको, कम्युनिज्म के अन्य शत्रुओ से सघर्ष के लिये मुस्तैद है। और अब तो मै पढ-लिख सकता हू, अपना ज्ञान बढा सकता हू।"

"तुम ऐसा भी क्या सीख रहे हो? कैसी पोथियो का पाठ कर रहे हो?" रजम्योत्नोव ने सर्द लहजे मे कटाक्ष किया।

मकार के शब्द उसे बडे चुभे, दुख मे उसके साथ सहानुभूति प्रकट करने के बजाये, उल्टे उसने खुशी प्रकट की और अद्रेई के विचार मे शादी के बारे मे निरी बकवास कर रहा था। मकार की गभीर, अटूट

विश्वास मे कूट-कूटकर भरी बातें सुनते हुए उसने सिहरकर सोचा· "कितनी अच्छी बात है कि भगवान मरखनी गाय को सीग नही देता, अगर मकार को शक्ति मिल जाती तो न जाने क्या कर बैठता ! यह तो ऐसा आदमी है कि सारी जिदगी को सिर के बल खडा कर दे ! इसका बस चलता तो सारी मर्द जात को बधिया करवा देता ताकि समाजवाद की ओर से ध्यान न बटे उनका !"

'तुम पूछते हो कि मै क्या सीख रहा हू?" मकार ने सवाल दोहराया और किताब बद करके बोला "अग्रेजी भाषा।'

"क्या ऽऽ?"

"अग्रेजी भाषा। यह किताब अग्रेजी गाइड ही तो है।"

नागूल्नोव न सतर्कता से अद्रेई की ओर देखा, उसे अद्रेई के चेहरे पर उपहास का भाव देखने का डर था, पर वह इस सूचना से इतना अवाक् रह गया था कि नागूल्नोव उसकी फटी आखो मे आश्चर्य के सिवा और कोई भाव नही देख पाया।

"क्या तुम उनकी इस भाषा मे लिख या बोल सकते हो?"

और नागूल्नोव छिपे गर्व के साथ बोला

"नही, अभी बोल नही सकता, यह इतनी जल्दी नही आता है पर कैपिटल अक्षरो मे लिखे शब्द समझने लगा हू। आखिर चौथे महीने सीख रहा हू।"

मुश्किल है?" रजम्योत्नोव ने मकार और पुस्तक की ओर अनभिप्रेत आदर के साथ देखा और लार गटककर पूछा।

मकार ने उसकी पढाई के प्रति रजम्योत्नोव के कौतूहल को देखकर अपनी झिझक को उतार फेका और खुलकर बोलने लगा

"इतनी मुश्किल कि कुछ पूछो मत ! इतने महीनो मे मै सिर्फ आठ शब्द याद कर पाया। वैसे तो यह भाषा कुछ-कुछ हमारी से मिलती-जुलती है। अग्रेजो के बहुत-से शब्द हमारी भाषा से लिये गये है पर वे उन्हे बिगाडकर बोलते है। 'प्रोलेतारियात' यानी सर्वहारा को वे 'प्रोलिटेरियट' बोलते है, 'कम्मुनिज्म' को 'कम्यूनिज्म' कहते है 'रेवोल्यूत्सिया' यानी क्राति को 'रेवाल्यूशन' कहते है। वे मानो गुस्से मे इन शब्दो को बिगाडते है पर भला उनसे बच सकते है? इन शब्दो ने दुनिया भर मे जड बना ली है, चाहो या न चाहो, पर उन्हे बोलना तो पडता ही है।"

"अच्छा... तो यह पढ़ रहे हो। मकार, पर इस भाषा की तुम्हें क्या ज़रूरत पड़ी?" अंततः रज़म्योत्नोव ने पूछ ही लिया।

नागूल्नोव ने उत्तर में मुस्कराकर कहा:

"तुम भी अजीब बात करते हो, अंद्रेई! तुम्हारी नासमझी पर आश्चर्य होता है... मैं कम्युनिस्ट हूं, ठीक है न? इंग्लैंड में भी तो होगी न सोवियत सत्ता? तुम सिर हिला रहे हो, यानी होगी न? पर हमारे यहां कितने रूसी कम्युनिस्ट हैं जो अंग्रेज़ी बोलते हैं? मैं भी तो कहता हूं बहुत कम। और अंग्रेज़ बुर्जुआ ने भारत पर, लगभग आधी दुनिया पर क़ब्ज़ा कर लिया और काले, सांवले लोगों का ख़ून चूस रहे हैं। यह भी भला कोई बात हुई? वहां सोवियत सत्ता आयेगी पर बहुत-से अंग्रेज़ कम्युनिस्टों को यह मालूम नही होगा कि वर्गीय शत्रु का असली चेहरा कैसा होता है और वे उसका पूरी तरह सफ़ाया नही कर पायेंगे। और तब मैं उन्हें सिखाने के लिये मुझे भेजने को कहूंगा क्योंकि मुझे उनकी भाषा का ज्ञान होगा और पहुंचते ही पूछूंगा. 'आपके यहां रेवोल्यूशन हुआ है? कम्युनिस्टीशन? जूं की तरह कुचल दो अपने पूंजीपतियों और जनरलों को! रूस मे सन् सत्रह में हमने अपने भोलेपन के कारण उन्हे छोड़ दिया और बाद में वे बिच्छू हमे डसने लगे। कुचल दो उन्हे ताकि गलतियों का फल न भुगतना पड़े ताकि सब आलराइट हो!'" मकार ने नथुने फुलाकर रज़म्योत्नोव को आंख मारी और आगे बोला: "इसीलिये मुझे उनकी भाषा की ज़रूरत पड़ी है। समझे? मैं रात-रात नही सोऊंगा, बची-खुची सेहत गंवा दूंगा पर..." दांत पीसकर उसने बात पूरी की, "भाषा यह सीख लूंगा! अंग्रेज़ी में बिना लल्लो-चप्पो के विश्व प्रतिक्रांतिकारियों से बात करूंगा! मेरे नाम से थर-थर कांपेंगे! मैं मकार नागूल्नोव उन्हें... वह कोई ऐरा-ग़ैरा नत्थू ख़ैरा नही है! उन्हे पता होना चाहिये कि उससे दया की कोई आशा नही रखनी चाहिये। 'ख़ून चूसा अंग्रेज़ मज़दूरों का, भारतीयों और दूसरे उत्पीड़ित राष्ट्रों का? दूसरों की मेहनत का फल खाया? खड़े हो जाओ दीवार के पास, अभी गोली मारता हूं तुम ख़ून चूसनेवालों को!' बस सबसे पहले यही शब्द सीखूंगा ताकि मैं फर्राटे से यह कह सकूं।"

वे कोई आधे घंटे तक इधर-उधर की बातें करते रहे, फिर अंद्रेई चला गया और नागूल्नोव अंग्रेज़ी की पुस्तक को खोलकर पढ़ने में मगन

हो गया। धीरे-धीरे होंठ हिलाता, पसीने से तर होता, अपनी घनी भौहें हिलाता वह ढाई बजे तक बैठा रहा।

अगले दिन सुबह-सवेरे उठकर उसने दो गिलास दूध पिया और सामूहिक फ़ार्म के अस्तबल में गया।

"मुझे कोई तेज़ घोड़ा दो," उसने अस्तबल के रखवाले से अनुरोध किया।

वह एक नाटा समंद घोड़ा लाया जो अपनी सहन शक्ति और तेज़ चाल के लिये प्रसिद्ध था। उसने पूछा. "कहीं दूर जा रहे है?"

"क़स्बे। दवीदोव से कह देना कि आज रात तक लौट आऊंगा।"

"सवार होकर जायेंगे?"

"सवार होकर, ज़ीन-काठी भी दे दो।"

मकार ने घोड़े पर ज़ीन कसी, उसकी अगाड़ी उतारकर सुंदर लगाम पहनायी जो कभी तीत की रही थी, रकाब में अभ्यस्त पैर डाला और सवार हो गया। घोड़ा झट से दौड़ पड़ा पर फाटक से निकलते समय अचानक ठोकर खा गया, घुटने ज़मीन पर टिके, गिरते-गिरते बच गया, किसी तरह सन्तुलन बनाकर फुर्ती से खड़ा हो गया।

"लौट जाओ, कामरेड नागुल्नोव, यह अपशकुन है!" फाटक के पास आता बुड्ढा श्चुकार एक ओर हटकर चिल्लाया।

बिना उत्तर दिये मकार घोडे को सरपट दौड़ाता गांव की प्रमुख सड़क पर पहुंचा। ग्राम-सोवियत के पास कोई दो दर्जन उत्तेजित औरतें झुंड बनाकर ज़ोर-ज़ोर से बकबक कर रही थी।

"कौव्वियो. हटो रास्ते से नही तो घोड़े से कुचल दूंगा!" मकार मज़ाक से चिल्लाकर बोला।

औरतें चुप होकर सड़क से हट गयी, और जब वह आगे जा चुका था तो उसे क्रोध में फुफकारती आवाज़ सुनायी पड़ी:

"कही तुझ पापी को ही न कुचल दिया जाये! देखता जा एक दिन तेरी शहसवारी का क्या अंत होगा .."

* * *

इलाक़ाई समिति के ब्यूरो की बैठक ग्यारह बजे शुरू हुई। उसकी कार्यसूची में पहले पांच दिनों में बोवाई की स्थिति के विषय में इलाक़ाई

भूमि विभाग के निदेशक बेगलीख की रिपोर्ट मुख्य प्रश्न थी। ब्यूरो के सदस्यो के अलावा बैठक मे इलाकाई नियत्रण आयोग का अध्यक्ष ममोखिन और इलाकाई अभियोक्ता भी उपस्थित थे।

"तुम्हारा प्रश्न, अन्य प्रश्नो के साथ हल किया जायेगा, कही जाना नही," सगठन विभाग के निदेशक खोमुतोव ने नागूल्नोव को चेताया।

बेगलीख की आधे घटे की रिपोर्ट बडी तनावपूर्ण शाति मे सुनी गयी। इसके बावजूद कि मिट्टी तैयार थी, इलाके मे कही-कही बोवाई अभी तक शुरू नही हुई थी, कुछ ग्राम-सोवियतो मे पूरा बीज भडार जमा नही किया गया था, वोयस्कोवोय ग्राम-सोवियत के क्षेत्र मे सामूहिक फार्म के भूतपूर्व सदस्य लगभग सारे बीज वापस ले गये, ओल्खोवात्स्कोय मे सामूहिक फार्म के प्रबध-मडल ने खुद फार्म मे निकलनेवालो को बीज बाट दिये। बेगलीख ने बोवाई की असतोषजनक स्थिति के कारणो की विस्तार से चर्चा की और अत मे बोला

"साथियो इस मे कोई शक नही कि बोवाई मे हमारे पिछडाव, मै तो पिछडाव नही बल्कि कहूगा एक ही स्थान पर खडा रहने शून्य बिंदु पर रहने का कारण यह है कि कई ग्राम-सोवियतो के क्षेत्र पर सामूहिक फार्म उन स्थानीय अधिकारियो के दबाव के फलस्वरूप अस्तित्व मे आये जो सामूहिकीकरण के प्रतिशत के चक्कर म आ गये, जैसा कि आपको पता है कही-कही तो लोगो को पिस्तौल दिखाकर भरती होने को मजबूर किया गया। अब ये कमजोर सामूहिक फार्म रेत की दीवार की तरह ढह रहे हे, वही तो फार्म के सदस्य खेत मे काम करने नही जाते और अगर जाते भी है तो बेगार टालते है।"

इलाकाई समिति के सचिव ने पेसिल मे जग के काच के ढक्कन को बजाकर चेताया

"आपका समय पूरा हो गया!"

"साथियो, बस अभी समाप्त करता हू! निष्कर्षो से अवगत कराने की अनुमति दीजिये जैसा कि मैने आपको सूचित किया भूमि विभाग के सूत्रो के अनुसार इलाके मे पहले पाच दिनो मे केवल तीन सौ तिरासी हेक्टेयर पर बोवाई हुई है। मेरे विचार मे सभी इलाकाई कार्यकर्त्ताओ को लामबद करके सामूहिक फार्मो मे भेजने की सख्त जरूरत है। मेरा मत तो यह है कि फार्मो के सदस्यो को निकलने से हर तरह से रोकना

चाहिये और सामूहिक फार्मो के प्रबध-मडलो व पार्टी इकाइयो के सचिवो को फार्म सदस्यो के बीच प्रचार करने और सामूहिक किसानो को व्यापक रूप से यह बताने को बाध्य करना चाहिये कि सरकार सामूहिक फामो को क्या-क्या रियायते देती है, बहुत-से स्थानो पर यह बिल्कुल भी नही बताया गया लोगो को। बहुत-से किसान अभी तक नही जानते कि सामूहिक फार्मो को कैसे-कैसे ऋण आदि दिये जा रहे है। इसके अलावा मै यह सुझाव देना चाहता हू कि ज्यादतियो के लिये दोषी लोगो के विरुद्ध फौरन कार्यवाही की जाये जिनके कारण हम बोवाई शुरू नही कर पा रहे और जिनको केन्द्रीय समिति के पद्रह मार्च के प्रस्ताव के अनुसार पद भार से मुक्त करना चाहिये। मै तत्काल उनके मामले पर विचार करके उनके विरुद्ध पार्टी विधान के अतगत कडी कार्यवाही करने का सुझाव देता हू। बस मै यही कहना चाहता था।"

"बेगलीख की रिपोर्ट पर कोई कुछ कहना चाहता है?" इलाकाई समिति के सचिव ने वहा बैठे लोगो पर नजर दौडाकर पूछा, वह जान-बूझकर नागूल्नोव से नजरे नही मिला रहा था।

"बोले बिना भी बात साफ है," ब्यूरो के सदस्य, इलाकाई मिलीशिया के हट्टे-कट्टे अधीक्षक ने कहा। उसकी चाल-ढाल सैनिको जैसी थी, उसका चेहरा हमेशा पसीने से तर रहता और घावो के अनेक निशानो से ढका उसका उस्तरा फिरा सिर चमकता।

"क्या बेगलीख के निष्कर्षो के आधार पर हम निर्णय लेगे?" सचिव ने पूछा।

बेशक।"

"अच्छा, अब नागूल्नोव के मामले को ले," बैठक के दौरान पहली बार सचिव ने नागूल्नोव की ओर कुछ सेकंड के लिये खोयी-खोयी, परायी-सी नजर डाली। "आपको पता है कि वह ग्रेम्याची की पार्टी इकाई के सचिव के पद पर पार्टी के विरुद्ध कई गभीर अपराध कर चुका है। इलाकाई पार्टी समिति के निर्देशो के विपरित सामूहिकी-करण और भडार बनाने की प्रक्रिया के दौरान उग्र वामपथी नीति चलाता था। उसने पिस्तौल से एक मझौले किसान को पीटा, सामूहिक फार्म के सदस्यो को ठडे कमरे मे बद करता था। कामरेड समोखिन ने खुद ग्रेम्याची जाकर इस मामले की जाच की और पाया कि नागूल्नोव

ने क्रातिकारी कानूनो का घोर उल्लघन किया, पार्टी की नीति को तोड-मरोडकर विकृत किया। कामरेड ममोखिन, ब्यूरो को नागूल्नोव की अपराधपूर्ण गतिविधियो की जाच के परिणामो के बारे मे बताओ।" सचिव ने अपनी सूजी पलके बद की और कोहनियो पर टिककर बैठ गया।

नागूल्नोव इलाकाई पार्टी ममिति मे पहुचते ही समझ गया कि उसका मामला काफी बिगड गया है और वह नरमी की आशा नही कर सकता। मचिव ने बडी रुखाई से उमका अभिवादन किया और कन्नी काटने के लिये इलाकाई कार्यकारिणी के अध्यक्ष से कोई सवाल पूछने लगा।

"मेरे मामले का क्या होगा, कोर्चजीन्स्की?" मकार ने उससे सहमकर पूछा।

"ब्यूरो फैसला करेगा," उसने अनिच्छा से उत्तर दिया।

और बाकी लोग भी मकार की प्रश्नसूचक आखो को देखकर मुह मोडते और उसमे कन्नी काटते। शायद वे आपस मे पहले से ही उमके प्रश्न को हल कर चुके थे, सिर्फ मिलीशिया का अधीक्षक बालाबिन मकार के साथ तपाक से हाथ मिलाते हुए सहानुभूतिपूर्ण मुस्कान के माथ बोला

"नागूल्नोव, साहस मत छोडो! तुमने गलती की तो क्या हुआ, भूल से ढेरो गलतिया कर बैठे तो क्या हुआ, आखिर हम सभी तो राजनीति मे कच्ची गोलियां ही खेले है। तुम मे भी बडे-बडे अक्लमद तक गलतिया कर बैठते है!" वह नदी के चिकने पत्थर जैसे अपने गोल-मटोल सिर को हिला-हिलाकर अपनी छोटी लाल गर्दन का पसीना पोछते हुए खेद के माथ अपने मोटे होठो को चटकारता बोल रहा था। "मुझे कडी फटकार सुनायेगे और सचिव के पद से हटा देगे," ममोखिन की ओर आशका के साथ देखता हुआ मकार सोच रहा था। यह नाटे कद का बडी खोपडीवाला आदमी, जो तलाको का जानी दुश्मन था, उसको सबसे अधिक चितित कर रहा था। और जब समोखिन ने ब्रीफकेस से मोटी फाइल निकाली मकार को आशका की पैनी चुभन हुई। उसका दिल धक-धक धडकने लगा, सिर मे हथौडे बजने लगे, कनपटिया दहक उठी और हल्की-सी मादक मतली आने लगी। दौरा पडने से पहले उसकी यही अवस्था होती थी। "बस अभी न पडे!"

मन ही मन कांपकर वह ध्यान के साथ धीरे-धीरे बोलते समोख्रिन को सुनने लगा।

"इलाक़ाई पार्टी समिति ने नियंत्रण आयोग को इस मामले की जांच सौंपी थी। मैंने ख़ुद जाच की। स्वयं नागूल्नोव, उसकी गतिविधियों से पीडित ग्रेम्याची के सामूहिक फ़ार्म सदस्यों और निजी किसानों से की गयी पूछ-ताछ और गवाहियों के आधार पर मै इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं · "निःसंदेह कामरेड नागूल्नोव ने अपने को पार्टी के विश्वास के योग्य नहीं प्रमाणित किया और अपनी गतिविधियों से पार्टी को विशाल क्षति पहुंचायी। फ़रवरी के महीने में, सामूहिकीकरण के समय घर-घर जाकर उसने पिस्तौल दिखाकर लोगों को फ़ार्म मे भरती होने को विवश किया। इस प्रकार उसने सामूहिक फार्म में सात मझौले किसानों को 'आकर्षित' किया। ख़ुद नागूल्नोव भी इससे इकार नही करता ."

"वे कट्टर श्वेतपंथी है!" नागूल्नोव ने कुर्सी से उठकर भर्राये स्वर में कहा।

"मैंने तुम्हें बोलने की अनुमति नही दी थी। चुपचाप बैठो!" सोत्निव ने उसे सख़्ती से टोक दिया।

" . फिर बीज के लिये अनाज जमा करते समय उसने पिस्तौल से मार-मारकर एक मंझौले किसान को बेहोश कर दिया और वह भी ग्राम-सोवियत के चपरासियों और वहां उपस्थित सामूहिक किसानो के सामने। पीटा इसलिये कि उक्त किसान ने फौरन बीज लाने से इंकार किया था . ."

"शर्म आनी चाहिये!" अभियोक्ता ज़ोर से बोला।

नागूल्नोव ने गले पर हाथ फेरा, उसके चेहरे का रग उड गया पर वह कुछ बोला नही।

"उसी रात, साथियो, ज़ार के किसी थानेदार की तरह इसने तीन फ़ार्म सदस्यों को ठडे कमरे में बंद कर दिया और रात भर उन्हें बंद रखा, ऊपर से वह उन्हें पिस्तौल दिखाकर धमकी दे रहा था अगर वे फ़ौरन बीज नही जमा करायेंगे।"

"उन्हें मैंने नही धमकाया था . "

"कामरेड नागूल्नोव, जो उन्होंने बताया था वही कह रहा हूं और कृपया मेरी बात न काटें! नागूल्नोव की माग पर ही मंझौले

किसान गायेव को बेदखल करके निष्कासित किया गया जिसको हरगिज बेदखल नही किया जाना था, क्योकि उसकी सपत्ति इतनी नही थी कि उसे कुलक माना जा सकता हो और बेदखल उसे नागूल्नोव की हठ पर इसलिये किया गया कि सन् उन्नीस सौ अट्ठाईस मे उसके पास खेत मजदूर था। पर यह कैसा खेत मजदूर था? साथियो, यह ग्रेम्याची गाव की ही एक लडकी थी जिसे गायेव ने सिर्फ एक महीने के लिये फसल की लुनाई के समय रखा था क्योकि सन् उन्नीस सौ सत्ताईस के पतझड मे उसके बेटे को लाल सेना मे अनिवार्य सेवा के लिये बुलाया गया था और गायेव जिसके बहुत सारे छोटे बच्चे है यह काम अकेला नही कर सकता था। सोवियत कानून भाडे के ऐसे श्रम की मनाही नही करते है। गायेव ने इस खेत मजदूरिन को खेत मजदूर समिति के साथ समझौते के आधार पर रखा था और उसे पूरा भुगतान कर दिया, मैंने इस तथ्य की जाच की है। इसके अलावा नागूल्नोव अस्वस्थ यौन जीवन बिताता है, पार्टी सदस्य का चरित्र आकने मे इसका भी कम महत्व नही है। नागूल्नोव ने पत्नी को तलाक दे दिया, तलाक क्या घर से निकाल दिया, कुत्ते की तरह निकाल दिया और वह भी सिर्फ इस आधार पर कि मानो ग्रेम्याची के किसी लडके से उसका इश्क था। अपने को आजाद करने के लिये इसने अफवाहो का फायदा उठाकर उसे निकाल दिया। आजकल वह कैसा यौन जीवन बिताता है मुझे नही पता पर साथियो, सारे तथ्य यही बताते है कि वह अनाचार कर रहा है। नही तो पत्नी को घर से क्यो निकालने की जरूरत पडी थी? नागूल्नोव की मकान-मालकिन ने मुझे बताया कि वह रोज रात को बडी देर से घर लौटता है, वह कहा जाता है, यह उसे पता नही, पर हमे तो, साथियो, पता है कि वह कहा जा सकता है! हम कच्चे नही है हम तो जानते है कि बीवी को घर से निकालनेवाला और नयी-नयी औरतो की सगति का शौकीन आदमी कहा जा सकता है हम तो जानते है! साथियो, बस यही उन कारनामो की (अपने अभियोग भाषण के इस स्थान पर ससोखिन विद्वेष के साथ मुस्कराया) सक्षिप्त सूची ही है जो अल्प-अवधि मे तीससारखा इकाई सचिव नागूल्नोव ने कर डाले। इसका क्या परिणाम हुआ? और ऐसी करतूतो की जडे कहा? यहा साफ-साफ कहा जाना चाहिये कि यह सफलताओं से सिर चकराना नही जिसकी हमारे जन नेता स्तालिन ने इतनी विलक्षण व्या-

ख्या की थी बल्कि यह उग्रवामपथी मनोग्रन्थि, पार्टी की नीति पर चढाई है। नागूल्नोव को न केवल पिस्तौल की नोक पर मझौले किसानो को बेदखल करके सामूहिक फार्म मे हाकने की सूझी बल्कि उसने मुर्गे-मुर्गियो, भेड बकरियो और दुधारू जानवरो को भी सामूहिकीकृत करने का निर्णय पास करवा दिया। कुछ सामूहिक किसानो का कहना है कि वह फार्म मे ऐसा निर्दयी अनुशासन लागू करना चाहता था कि खूनी जार निकोलाई के जमाने मे भी वैसा नही था।"

"मुर्गियो और ढोरो के बारे मे इलाकाई समिति ने कोई निर्देश नही दिया था," नागूल्नोव धीरे-से बोला।

वह अब छाती पर बाये हाथ को रखकर खडा हो गया था।

"नही, तुम माफ करो!" सचिव चिहुककर बोला, "इलाकाई समिति ने दिया था निर्देश। दूसरो पर अपना दोष मढने की कोशिश मत करो। श्रम सघ का विधान है, तुम दूध पीते बच्चे तो नही जो उसे समझते नही!"

"ग्रेम्याची के सामूहिक फार्म मे आत्मालोचना को दबाया जाता है," समोखिन आगे बोला। "नागूल्नोव ने आतक का वातावरण बना दिया, किसी को मुह नही खोलने देता। प्रचार कार्य करने के बजाय खेतिहरो पर चिल्लाता है पैर पटकता है, पिस्तौल से धमकाता है। इसीलिये ग्रेम्याची के फार्म मे गडबड मची है। आजकल बडी सख्या मे लोग फार्म से निकल रहे है, बोवाई अभी शुरू ही की है और इसमे कोई शक नही कि वे उसे पूरा नही कर पायेगे। इलाकाई नियत्रण आयोग, जिसका कर्तव्य पार्टी को भ्रष्ट तत्वो और तरह-तरह के अवसरवादियो से साफ रखना है जो हमारे महान निर्माण काय मे विघ्न डालते है, नागूल्नोव के सबध मे उचित निष्कर्ष निकालेगा।"

"और कुछ?" सचिव ने पूछा।

"नही।"

"अब हम नागूल्नोव को बोलने का मौका देगे। वह हमे बताये कि कैसे वह इतना नीचे गिरा। बोलो, नागूल्नोव।"

समोखिन के भाषण के अत मे नागूल्नोव मे खौलता क्रोध अचानक न जाने कहा गायब हो गया, उसका स्थान अनिश्चय और भय ने ले लिया। "ये मेरे साथ क्या कर रहे है? ऐसा कैसे किया जा सकता है? मरवाना चाहते है!" मेज के पास आते समय उसके दिमाग मे कौधा।

समोखिन के भाषण के समय जो खरी-खोटी बाते सुनाने की सोची थी वे सब दिमाग से उतर गयी। दिमाग मे रिक्तता भर गयी, एक भी काम का शब्द नही सूझ रहा था। मकार की स्थिति बडी अजीब-सी थी

"साथियो, मै क्राति के काल मे पार्टी मे हू   लाल सेना मे रहा   "

"यह हम सबको मालूम है। तुम काम की बात करो!" बेसब्री से सचिव ने उसे टोका।

"सभी मार्चो पर मै श्वेत सेना से लडा   और प्रथम अश्वारोही सेना मे भी   मुझे पदक प्रदान किया गया   "

"अरे तुम काम की बात करो!"

"क्या यह काम की बात नही?"

"नागूल्नोव, तुम टाल-मटोल मत करो! अब अपनी सेवाओ की दुहाई मत दो!' कार्यकारिणी के अध्यक्ष ने उसे टोका।

'अरे कामरेड को बोलने भी तो दो! क्यो तुम लोग उसका मुह बद कर रहे हो?' बाल्राबिन क्षोभ के साथ चिल्लाया। उसकी गोल चिकनी खोपडी पर रक्ताघात जैसे नीले चकत्ते पड गये।

"काम की बात करे!"

नागूल्नोव उसी तरह छाती पर बाया हाथ रखे खडा था और दाया हाथ धीरे-धीरे सूखे गले की ओर उठ रहा था। उसके मुह पर हल्दी पुत गयी बडी कठिनाई से वह आगे बोला

"मुझे बोलने दीजिये। मै तो दुश्मन नही क्यो मेरे साथ ऐसा व्यवहार कर रहे है? मै सेना मे घायल हुआ   कास्नोर्ना के पास भारी गोले के धमाके से भीतरी चोट लगी   " यह कहकर वह चुप हो गया उसके काले पडे होठ फडफडाते हुए हवा को अदर खीच रहे थे।

बाल्राबिन ने जल्दी से जग से गिलास मे पानी भरा और मकार की ओर देखे बिना उसको थमा दिया।

कोर्चजीन्स्की ने नागूल्नोव पर नजर डाली और झट से मोड ली नागूल्नोव का हाथ गिलास को भीचकर बेतहाशा काप रहा था।

कमरे मे छायी नीरवता मे गिलास के काच से टकराते उसके दातो की किटकिट साफ सुनायी दे रही थी।

"अरे तुम घबराओ नही, बोलो!" बालाबिन उद्विग्न होकर बोला।

कोर्चजीन्स्की ने नाक-भौ सिकोडी। उसके दिल मे बिनबुलायी दया उपजी पर उसने अपने को सभाल लिया। उसको पक्का विश्वास था कि नागूल्नोव पार्टी के लिये हानिकारक तत्व है और उसे न केवल पद से हटाया जाना चाहिये बल्कि पार्टी से भी निकाल देना चाहिये। बालाबिन के सिवाये सब उससे सहमत थे।

मकार ने एक घूट मे गिलास खाली कर दिया, दम लेकर वह बोलने लगा

'जो कुछ समोखिन ने कहा वह मै स्वीकार करता हू। सचमुच मैने ही यह सब किया। पर इसलिये नही कि मै पार्टी का विरोध करना चाहता था, उस पर चढायी करना चाहता था। यह समोखिन झूठ बोलता है। मेरे व्यभिचार के बारे मे भी वह कुत्ते की तरह झूठ बकता है। यह सब उसके मन की उपज है! मै लुगाइयो से कन्नी काटता हू, मुझे उनकी फुर्सत नही "

"इसीलिये तुमने बीवी को भी घर से निकाल दिया?" सगठन विभाग के निदेशक खोमुतोव ने कटाक्ष किया।

"हा, इसीलिये," मकार ने गभीरता के साथ उत्तर दिया। "पर यह सब मै मैने क्राति की भलाई के लिये किया। क्या पता, मै गलत सोचता था पता नही। आप लोग मुझसे ज्यादा पढे-लिखे है। आपने कोर्स पास किये है, आपको ज्यादा मालूम है। मै अपना दोष नही कम कर रहा। जो चाहो फैसला करो। एक बात समझने का अनुरोध करता हू " उसका फिर सास उखड गया। एक मिनट चुप रहकर वह आगे बोला "भाइयो, यह तो समझो कि मैने यह सब पार्टी के खिलाफ बुरे इरादे से नही किया। और हमामची को इसीलिये पीटा था कि वह पार्टी को गोलिया दे रहा था और बीज सूअरो को डालना चाहता था "

"किसी और को सुनाना ये किस्से!" समोखिन ने व्यग्य के साथ कहा।

"मै वही बता रहा हू जो वास्तव मे हुआ। अभी तक इसका मलाल है कि मैने उस हमामची को जान से क्यो नही मार दिया। मेरे पास और कुछ नही है कहने को।"

कोर्चजीन्स्की तनकर बैठा, उसकी कुर्सी चरमरायी। वह इस अप्रिय मामले को जल्दी से जल्दी निपटाना चाहता था। वह जल्दी-जल्दी बोला

"सब साफ है, साथियो। खुद नागूल्नोव स्वीकार कर रहा है अपना दोष। हालांकि गौण बातो के लिये अपनी सफाई देने की कोशिश कर रहा है, पर दलीले इसकी विश्वास नही जगाती। हरेक अपराधी अपने दोष को कम करने या उसे दूसरे के सिर मढने का प्रयास करता है। मेरा मत तो यह है कि सामूहिकीकरण अभियान मे पार्टी की नीति के घोर उल्लघन और एक कम्युनिस्ट के लिये अशोभनीय अनैतिक आचरण के लिये नागूल्नोव को पार्टी से निष्कासित कर देना चाहिये! हम नागूल्नोव की पुरानी सेवाओ को ध्यान मे नही रखेगे, यह बीती बात हो गयी। दूसरो को सबक सिखाने के लिये हमे इसको दड देना चाहिये। हरेक को, जो पार्टी को कलकित करने, उसे दाये या बाये खीचने की कोशिश करता है हम बेरहमी से कुचल देगे। नागूल्नोव और उस जैसे दूसरे लोगो के खिलाफ अधूरे कदमो से काम नही चलेगा। हम वैसे भी बहुत सह चुके है इसके नखरो को। पिछले साल ही कृषि सह-कारिता सघ की स्थापना के समय ही यह वामपथ की ओर लुढक रहा था, मैने तभी उसे चेतावनी दी थी। और इसने कहना नही माना तो दोष इसी का है! क्यो, मतदान हो जाये? कौन नागूल्नोव को पार्टी से निष्कासित करने के पक्ष मे है? जैसा कि आप समझते ही है मतदान मे सिर्फ ब्यूरो के सदस्य भाग लेगे। हा, तो चार पक्ष मे है न? और कामरेड बालाबिन, तुम इसके विरुद्ध हो?"

बालाबिन ने जोर से मेज पर हाथ पटका। कनपटियो पर नसे फूल गयी।

"मै न सिर्फ विरुद्ध हू बल्कि मुझे कड़ी आपत्ति भी है! यह सरासर गलत निर्णय है।"

"तुम अपने मत को अपने तक ही सीमित रखो," कोर्चजीन्स्की ने ठडे लहजे मे कहा।

"नही, तुम मुझे बोलने दो।"

"अब बोलने मे देर हो चुकी है, बालाबिन। नागूल्नोव के निष्कासन का निर्णय बहुमत से पास हो चुका है।"

"यह आदमी के प्रति नौकरशाही रवैया है! माफ करो, पर मै

इसे ऐसे नही छोडनेवाला हू! मै मडल समिति को लिखूगा! पार्टी के पुराने सदस्य, 'लाल पताका' पदकवाले को निष्कासित कर डाला क्या आप पागल हो गये है, कामरेडो? क्या कोई दूसरा दड नही बचा?!"

"इस विषय मे बहस करने की कोई जरूरत नही है। आखिर, मतदान तो हो चुका!"

"ऐसे मतदान के लिये थोबडा तोडना चाहिये!" बालाबिन का स्वर गुस्से मे चीखने से पतला हो गया, उसकी गठी गर्दन ऐसे फूल गयी कि लगता था कि छूते ही उसमे से खून की धारा फूट पडेगी।

"थोबडे के बारे मे जरा जबान सभालकर बोलो," दुर्भावना के साथ सगठन विभाग का निदेशक खोमुतोव बोला। "हम तुम्हारी भी लगाम कस सकते है। यह मिलीशिया का दफ्तर नही पार्टी समिति है।"

"तुम्हारे बिना भी मालूम है! पर तुम मुझे बोलने क्यो नही दे रहे?"

'क्योकि मेरे विचार मे यह फालतू है!' कोर्चजीन्स्की भी तैश मे आ गया बालाबिन की तरह उसका भी चेहरा तमतमाकर लाल हो गया, उसने कुर्सी के हत्थे कसकर पकड लिये। "यहा मै हू इलाकाई समिति का सचिव। मै तुम्हे बोलने की अनुमति नही देता और अगर चाहते ही हो तो जाओ बाहर जाकर बोलो!"

बालाबिन, बेकार मे मन खौलो! तुम क्यो आग-बबूला हो रहे हो? लिखकर भेज दो अपनी राय मडल समिति को अब तो तुम गलत कर रहे हो। वोट पड चुके है, अब क्या फायदा घूसे चलाने का जब लडाई ही खत्म हो गयी" कार्यकारिणी के अध्यक्ष ने मिलीशिया के अधीक्षक को शात करने का प्रयास किया।

वह फुसफसाकर कुछ कहते हुए बालाबिन को उसकी वर्दी की कमीज की आस्तीन खीचकर कोने मे ले गया।

इतने मे कोर्चजीन्स्की ने, जो बालाबिन से हुई झडप के कारण चिढ गया था सकार की ओर क्रोध से चमकती आखो से देखा और द्वेष को छिपाये बिना बोला

"खत्म हुई बात, नागरल्लेव! ब्यूरो के निर्णय के अनुसार तुम हमारी कतारो मे निष्कासित कर दिये गये हो। तुम जैसो की पार्टी

मे कोई जरूरत नही। रख दो यहा पार्टी-कार्ड!" और उसने ललौहे बालो से ढका अपना हाथ मेज पर पटका।

नागूल्नोव का चेहरा मुर्दे की तरह सफेद पड गया। उसके शरीर मे कपकपी दौड रही थी और जब वह बोला तो आवाज लगभग सुनायी ही नही दे रही थी

"पार्टी-कार्ड मै नही दूगा।"

"मजबूर कर देगे।"

"नागूल्नोव, सीधे मडल समिति मे चले जाओ!" कोने से बाला-बिन चिल्लाया और कार्यकारिणी के अध्यक्ष से हो रही बात को अधूरा छोडकर धडाम से दरवाजा बद करके चला गया।

"पार्टी-कार्ड मै तुम्हे नही दूगा!" मकार ने दोहराया। उसकी आवाज सभल गयी थी, माथे और उभरी हड्डियोवाले कपोलो मे नीलाभ सफेदी उतरने लगी। "और पार्टी को अभी मेरी और जरूरत पडेगी और मै भी पार्टी के बिना नही जी सकता! पर तुम्हारा आदेश मै नही मानूगा! यह रहा कार्ड छाती की जेब मे लेकर तो देखो! गला चबा जाऊगा!"

"हो गया शुरू दु खातक नाटक!" अभियोक्ता ने कधे उचकाकर कहा, "तुम जरा शात रहो

उसके शब्दो की ओर कोई ध्यान दिये बिना मकार कोर्चजीन्स्की की ओर देखता हुआ मानो विचारो मे डूबते-उतराते धीरे-धीरे बोल रहा था

"पार्टी के बिना मै कहा जाऊगा? और किसलिये? नही, पार्टी-कार्ड मै नही दूगा! मैने अपना सारा जीवन सारा जीवन लगा दिया " और अचानक बूढो की तरह मेज को टटोलने लगा, शब्दो मे उलझता अस्फुट स्वर मे बुदबुदाने लगा बेहतर तो यही होगा कि तुम लडको को हुक्म दे दो मुझे तब तो मेरा टिकट कटा दो और कोई चारा ही नही बचा मुझे अब जीने की क्या जरूरत, जिदगी से भी निष्कासित कर दो जब तक कुत्ता भौकता रहा तब तक उसकी जरूरत थी बूढा हो गया तो घर से निकाल दिया "

मकार का चेहरा मुखौटे की तरह जड था केवल होठ हिल रहे थे पर अतिम शब्दो के साथ उसकी निश्चल आखो मे, पहली बार सयाने जीवन मे, अश्रुधारा फूट पडी। कपोलो को भिगोते हुए, बहुत

दिनो मे बढती दाढी की कडी जडो मे अटकते हुए आमू छाती पर कमीज को काली बिंदियो से ढक रहे थे।

"बस हो गया! इससे कोई फायदा नही होगा, कामरेड!" मचिव ने वेदना के साथ नाक-भौ सिकोडकर कहा।

"तुम मेरे कामरेड नही हो!" नागूल्नोव चिल्लाया, "तुम भूखे भेडिये हो! और तुम सब जो यहा हो – जहरीले साप हो! मनमानी करते हो! चिकनी-चुपडी बाते बोलना मीख गये हो! खोमुतोव, तू क्यो खीसे निपोर रहा है स्सा ? मेरे आसुओ पर हस रहा है? तुझे याद है सन् इक्कीस मे जब फोमीन अपने गिरोह के साथ इलाके मे उत्पात मचा रहा था तो तू मडल ममिति मे गया था, याद है? याद हे तुझे, कुतिया की दुम? जाकर तूने पार्टी-कार्ड दे दिया और बोला खेती-बाडी करूगा तू फोमीन मे डरता था! इमीलिये तूने पार्टी-कार्ड पटक दिया और बाद मे फिर मे घुस गया पार्टी मे केचुए की तरह! और अब तू मेरे खिलाफ वोट देता है? और मेरे भीषण दुख पर हमता है?"

"बस हो गया, नागूल्नोव कृपया शोर मत मचाओ। हमे और भी कई प्रश्नो पर विचार करना है, बिना झेपे मावले चेहरेवाला, मृदर खामुतोव सुलह के अदाज मे बोला, उमकी काली मूछो के नीचे अभी तक मुस्कान बझी नही थी।

तुम्हारे माथ बम हो गया पर मै अपने लिये न्याय पाकर रहूगा! केन्द्रीय ममिति तक जाऊगा!"

"शाबाश! जाओ! वहा पलक झपकते सब हल हो जायेगा! कब मे वहा तुम्हारी बाट जोह रहे है ' खोमुतोव मुस्कराकर बोला।

मकार चुपचाप दरवाजे की ओर चल दिया, निकलते ममय उसकी कनपटी चौखट मे टकरायी, वह आह भरकर रह गया। क्रोध के अंतिम उबाल ने उसे नि शक्त कर दिया था। वह अन्यमनस्क होकर फाटक तक गया और बाड मे बधे अपने घोडे को खोला। न जाने क्यो वह खीचकर उसे ले चला। कस्बे के छोर पर उसे मवार होने की इच्छा हुई पर न चढ सका चार बार उसने रकाब की ओर पैर उठाया और शराबियो की तरह लडखडाकर उसके हाथ मे हुकना छूट जाता।

सिरेवाले मकान के पास चबूतरे पर बूढा, पर शोख बाबा बैठा था। वह बडे ध्यान के साथ मकार को घोडे पर बैठने की कोशिश करता

देख रहा था। फिर उत्साहवर्द्धक मुस्कान के साथ बोला

"जवा मर्द को देखो! सिर पर अभी सूरज चमक रहा है और यह टाग भी नही उठा पाता। किस खुशी मे सुबह से पी रखी है? या आज कोई त्योहार है?"

"त्योहार है, फेदोत दादा!" बाड के पीछे खडा उसका पडोसी बोला। "आज साइमन-आलसी का दिन है, शराबखानो की तीर्थयात्रा का।"

"अच्छा यह बात है," बूढा मुस्कराया, "क्या शराब से ताकतवर है कोई जवान? देखो तो जीन मे कैसे उछल रहा है! हिम्मत न हार, कज्जाक!"

मकार ने दात पीसे और बूट की नोक से रकाब को छूकर चिडिया की तरह फुदक कर घोडे पर बैठ गया।

उस दिन सवेरे यास्की गाव के सामूहिक फार्म से तेईस छकडे ग्रेम्याची स आये। पवनचक्की के पास हमामची की उनसे भेट हुई। वह कधे पर रस्सी डालकर अपनी घोडी को स्तपी मे खोजने जा रहा था। आगेवाला छकडा उसके पास पहुचा।

नमस्ते कज्जाक नागरिको कैसे हो!

' भगवान की दया है!" दुमकटे घोडो को चलाने काली दाढीवाले कज्जाक ने उत्तर दिया।

"कहा से छकडे आ रहे है?"

"यास्की से।"

"तुम्हारे घोडो की दुमे क्यो नही है? क्यो तुमने उन्हे बेशर्मी स कतर दिया?'

"होय, रुक! शैतान की औलाद! पूछे काट दी फिर भी फुदक रही है तुम पूछ रहे हो कि दुमे क्यो नही है? सरकार के लिये काट दी। शहर की लुगाइयां उनसे मक्खिया उडायेगी भले आदमी, सिगरेट नही है तुम्हारे पास? पिलवा दो, हमारे पास तबाकू नही है।" कज्जाक कूदकर छकडे से उतर गया।

पीछेवाले छकडे भी रुक गये। हमामची को अब मलाल हो रहा था उनमे बात छेडने का। उसने छकडो से उतरकर अपनी ओर आते कोई पाच लोगो को देखकर, जो चलते-चलते तबाकू लपेटने के लिये अखबार की पट्टिया फाडते आ रहे थे, अनिच्छा के साथ तबाकू की थैली निकाली।

"तुम तो मेरा सारा तबाकू खत्म कर दोगे " कजूस हमामची कराह कर बोला।

पता है, अब सब सामूहिक है? सब चीजे आम होनी चाहिये, ' दाढीवाले ने सख्ती से कहा और मानो अपनी ही थैली से उसने मुट्ठी भर घर का उगा तबाकू निकाला।

सब धुआ उडाने लगे। हमामची ने झट से थैली पतलून की जेब म ठूसी और मुस्कराता हुआ घिन व दया के साथ घोडो की लगभग जड तक कटी पूछो को देखने लगा। वमन से खून की प्यासी मक्खिया घोडो को भकोस रही थीं पसीने से तर कल्हो, जुए से रगड खाकर छिली गर्दनो पर बेखटके बैठ रही थी। घोडे अपनी आदत के अनुसार दुम हिला रहे थे पर बालो से वचित शर्मनाक ठूठो का कोई असर नही हो रहा था।

ये घोडे किस तरफ अपनी पूछ उठा रहे है?' हमामची ने कटाक्ष किया।

"सब उधर ही, सामूहिक फार्म की तरफ। क्या तुम्हारे यहा नही काटी गयी?"

"काटी थी, पर सिर्फ चार इच।'

"यह हमारे अध्यक्ष को सूझा था उसे इसके लिये इनाम भी मिला पर जब डास-मच्छर बढ जायगे तो घोडो का हाल बुरा होगा! अच्छा चलते है। तबाकू के लिये धन्यवाद। सिगरेट पीकर दिल पिघल गया, नही तो सारे रास्ते तबाकू के बिना तडप रहा था।

"तुम लोग किधर जा रहे हो?"

"ग्रेम्याची को।"

"मतलब हमारे यहा। किस काम से?"

"बीज लेने के लिये।'

"यह यह कैसे?"

"इलाक़े से हुक्म मिला है तुम्हारे यहां से चार सौ तीस पूद बीज लेने का। चल, घोड़े!"

"मैं तो यह जानता था!" हमामची चिल्लाया। रस्सी को घुमाता हुआ वह गांव की ओर दौड़ पड़ा।

यास्र्कीवाले फ़ार्म के दफ़्तर तक भी न पहुंच पाये थे कि आधे गांव को पता चला गया कि वे बीज लेने आये हैं। हमामची को घर-घर जाकर ख़बर करने में आलस्य नहीं आया।

शुरू में लुगाइया गलियो के नुक्कड पर जमा होने लगी, भयभीत तीतरों के झुंड की तरह शोर मचाकर उन्होंने आसमान सिर पर उठा लिया।

"अरे हमारा अनाज ले जा रहे हैं!"

"बोने के लिये कुछ बचेगा नही!"

"कहां से आ पड़ा मुसीबत का पहाड़ हमारे सिर!"

"भले लोगों ने कहा था कि साझी खत्ती में मत जमा करवाओ..."

"अगर कज़्ज़ाक सुनते भी हमारी बात!"

"जाकर कज़्ज़ाको से कहना चाहिये कि अनाज न दे!"

"अरे हम खुद ही नही लेने देंगी! चलो, लुगाइयो, खत्तियों की तरफ़! लाठियां लेकर खड़ी हो जायेगी तालों के पास!"

फिर कज़्ज़ाक मर्द भी आ गये। उनके बीच भी ऐसी ही बाते हुई। गली-गली, कूचे-कूचे से बड़ी भीड़ बनाकर खत्तियों की ओर चल पड़े।

इसी बीच दवीदोव ने इलाकाई कृषि सघ के अध्यक्ष लूपेतोव की चिट्ठी पढी, जो यास्र्कीवाले लाये थे।

"कामरेड दवीदोव," लूपेतोव ने लिखा था, "तुम्हारे यहा ७३ क्विंटल गेहूं पड़ा है जो वसूली केन्द्र को नही भिजवाया गया था। मै तुम्हें यह गेहूं (पूरे ७३ क्विंटल) यास्र्की के सामूहिक फ़ार्म को देने का प्रस्ताव देता हू। उनके पास बीज की कमी है। राजकीय अनाज वसूली दफ़्तर मे मैं बात कर चुका हूं।"

दवीदोव ने चिट्ठी पढ़कर, अनाज दे देने का आदेश दिया। यास्र्की-वाले फ़ार्म के दफ़्तर से खत्तियों की ओर चल पड़े, पर खत्तियों के पासवाली सड़क पर भीड़ उमड़ पड़ी थी। कोई दो सौ महिलाओं और पुरुषों ने छकड़ों को घेर लिया।

"कहां जा रहे हो?"

"हमारा अनाज लेने? कहां से तुम आ टपके!"

"उल्टे मुड़ जाओ!"

"नहीं देंगे!"

द्योम्का उशाकोव भागा-भागा दवीदोव के पास आया। और वह दौडता हुआ खत्तियों के पास पहुंचा।

"क्या बात है, नागरिको? आप लोग क्यों जमा हुए हैं?"

"तुम क्यों हमारा अनाज यार्स्कीवालों को दे रहे हो? क्या हमने उनके लिये जमा करवाया था?"

"दवीदोव, तुम्हें किसने इसका हक़ दिया?"

"और हम क्या बोयेंगे?"

पासवाली खत्ती की सीढ़ी पर चढ़कर दवीदोव ने शांति से समझाया कि अनाज वह इलाक़ाई कृषि संघ के आदेश पर दे रहा है, बीजोवाला नही बल्कि वह जो अनाज वसूली में राज्य को देना बाक़ी था।

"नागरिको, आप चिंता न करें, हमारा अनाज सही सलामत रहेगा। आपको बेकार घूमने, गिरियां चबाने के बजाय खेत में काम करना चाहिये। यह मत भूलो कि टोली नायक काम पर न आनेवालों के नाम लिख लेते है। जो नही जायेगा काम पर उस पर जुर्माना करेंगे।"

कुछ मर्द चले गये। बहुत-से लोग दवीदोव की घोषणा से शांत होकर खेत में चले गये। भंडारी यार्स्कीवालों को तौलकर अनाज देने लगा। दवीदोव दफ़्तर में चला गया। पर आधे घंटे बाद, अभी तक खत्तियों की चौकसी कर रही औरतों की मनोवृत्ति में अचानक बड़ा उग्र परिवर्तन आया। इसमें याकोव लुकीच का योग था, उसने कुछ मर्दों के कान में फुसफुसाकर कहा:

"दवीदोव झूठ बक रहा है! बीज ले जा रहे है! सामूहिक फ़ार्म तो बोवाई कर लेगा, पर अलग खेती करनेवालों ने जो बीज जमा करवाये हैं वे यार्स्की के फ़ार्म को दे देंगे।"

औरतों में खलबली मच गयी। हमामची, देमीद घुन्ना, बुड्ढा दोनेत्स्कोव और कोई तीस लोग आपस में सलाह-मशविरा करके तराजू के पास गये।

"नही देंगे अनाज!" सबकी ओर से दोनेत्स्कोव बोला।

"तुम से कौन पूछता है!" द्योम्का उशाकोव ने दो टूक उत्तर दिया।

उनके बीच तू-तू मैं-मैं शुरू हो गयी। यास्कींवालो ने द्योम्का का पक्ष लिया। वही काली दाढ़ीवाला कज्जाक जिसे हमामची ने तबाकू दिया था, छकडे पर तनकर खडा हो गया, पाच मिनट तक गुस्से मे मा-बहन की गालिया देता रहा और फिर चिल्ला-चिल्लाकर बोला

"आप लोग क्यो कानून तोड रहे है? क्यो आप हमारी बेइज्जती कर रहे है? हम अपना काम छोडकर चालीस वेर्स्ता का रास्ता तय करके आये है और आप हमे सरकारी अनाज क्यो नही लेने दे रहे? ग०पु०उ० तुम्हे सबक सिखायेगा! तुम्हे कुत्तो की औलादो, उत्तरी ध्रुव के पास के बर्फीले इलाके मे भेज देना चाहिये! कुत्ता की तरह न खुद खाते हो न दूसरो को खाने देते! क्यो तुम खेत म काम नही करने जाते? आज क्या कोई त्योहार है?"

"तुझे क्या लेना इससे? तेरी दाढी खुजला रही है? अभी खुजा देग! यह तो हम मिनटो मे कर देगे!" आस्तीने चढाते हुए छोटा अकीम बेसख्लेबनोव चिल्लाकर बोला, वह छकडे के पास आ रहा था।

यास्कीं का दाढीवाला कज्जाक छकडे स कूदा। उसने अपनी बदरग कत्थई कमीज की आस्तीने नही चढायी पर जबडे पर ऐसे जबरदस्त प्रहार से अकीम की अगवानी की कि वह पवनचक्की की तरह अपने हाथो को हिलाता कोई पाच गज की दूरी पर जा गिरा।

ऐसी हाथापाई शुरू हो गयी, जैसी ग्रेम्याची ने अरसे से नही देखी थी। यास्कींवालो की ऐसी धुनायी हुई कि व खून म लथपथ, अनाज की बोरियो को पटककर, छकडो पर चढ गये और चाबुको से मारकर घोडो को दौडा दिया चीखती-चिल्लाती औरतो की भीड को चीरकर वे भाग गये।

बस फिर ग्रेम्याची मे दगा शुरू हो गया। लोग-बाग द्योम्का उशाकोव से खत्तियो की चाबी लेना चाहते थे जहा बीज रखे थे, पर चट द्योम्का हाथापाई के समय भीड से खिसक लिया और फार्म के दफ्तर मे दौडा-दौडा आया।

"चाबियो का क्या करू, कामरेड दवीदोव? हमारे लोग यास्कीं-वालो को पीट रहे है और लगता है अब हमारी खबर लेने की फिराक मे है!"

"लाओ मुझे दो चाबिया," दवीदोव ने शात स्वर मे कहा।

चाबिया लेकर उसने जेब मे रख ली और खत्तियो की ओर चल पडा। इतने मे लुगाइया अद्रेई रजम्योत्नोव को ग्राम-सोवियत से बाहर खीच लायी और गला फाड-फाडकर चिल्लाने लगी

"मीटिग शुरू करो!"

'औरतो! मेरी मौसियो! चाचियो! ताइयो! मेरी मल्लानियो! यह मीटिगो का वक्त नही है! बावाई करनी चाहिये न कि मीटिग! तुम्हे क्या जरूरत पड गयी मीटिग की? यह सैनिको का शब्द है। उसको मुह पर लाने से पहले तीन साल खाइयो मे बैठना पडता है! युद्ध के मोर्चे पर जाना पडता है, जूए पालनी पडती है, इसके बाद ही मीटिग शब्द तुम अपनी जबान पर ला सकती हो," औरतो को समझाने की कोशिश मे रजम्योत्नोव बोला।

पर वे उसे नही सुन रही थी उसकी पतलून, आस्तीने और कमीज के पल्ले को खीच-खीचकर क्रुद्ध अद्रेई को घसीटती हुई स्कूल ले जा रही थी। वे चिल्ला रही थी

हम नही बैठना चाहती खदको मे!

मोर्चे पर नही जाना चाहती!

शुरू करो मीटिग, नही तो हम खद शुरू कर देगी!

कुतिया के पिल्ले झूठ बोलता है! तू अध्यक्ष है! तू जब चाहे मीटिग कर सकता है!'

अद्रेई ने औरतो को धकेलकर कानो मे उगलिया ठूसी और बडी जोर से चिल्लाकर बोला

चुप हो रडियो! थोडा पीछे हटो! तुम्हे किसलिये मीटिग की जरूरत है?

'अनाज के लिये! हम तुम्हारे साथ अनाज की बात करेगे!

हारकर रजम्योत्नोव को कहना पडा

"मै सभा शुरू करता हू।

'बोलने की अनुमति दो, विधवा येकातेरीना गुल्याशाया ने माग की।

बोल भी शैतान की दुम!

तू गाली मत बक अध्यक्ष! नही तो मै तुझे छठी का दूध याद दिला दूगी यह किसके हुक्म पर आपने हमारा अनाज खसोटने की

आज्ञा दी? किसने यास्कींवालो को देने को कहा और ऐसी भी किस जरूरत के लिये?" गुल्याशाया कूल्हो पर हाथ रखकर भटकते हुए उत्तर की प्रतीक्षा करने लगी।

अद्रेई ने नाक मे दम करती मक्खी की तरह उसे झिडका।

"कामरेड दवीदोव ने तुम्हे अधिकृत रूप से समझा दिया था। और सभा मैने ऐसी बेवकूफी भरी बातो के लिये नही बल्कि इसलिये बुलायी " अद्रेई उसास लेकर आगे बोला "कि प्यारी बहिनो, हमे गिलहरियो से सघर्ष के लिये अपनी पूरी शक्ति लगा देनी चाहिये "

अद्रेई की चाल चली नही।

"मार्मटो की फुर्सत नही हमे!"

"अनाज दो!"

"मरदुए, तुझे कौआ काटे! मार्मटो की बात करने लगा! और अनाज के बारे मे कौन बोलोगे?"

"उसके बारे मे बोलने को कुछ नही है!"

"आहा, कुछ नही? हमे लौटा दो हमारा अनाज!"

औरते गुल्याशाया की अगुआई मे मच की ओर बढने लगी। अद्रेई मच के सिरे पर खडा था। वह मुस्कराते हुए औरतो की ओर देख रहा था पर मन ही मन वह कुछ आशकित था औरतो के पीछे खडे कज्जाको के चेहरे कुछ ज्यादा ही सख्त थे।

"सर्दियो और गर्मियो मे बूट पहनकर घूमते हो और हमारे पास चप्पल खरीदने तक के पैसे नही है।"

"कोमिस्सार बन गये हो!'

"अभी हाल ही तक तो मरीना के पति की पतलून कौन घिस रहा था?"

"ठूस-ठूसकर थूथनी मोटी हो गयी!"

'उतार दो इसके कपडे, लुगाइयो!"

अधाधुध गोलीबारी की तरह चीख-चिल्लाहट मच गयी। कई दर्जन औरते मच के पास झुड बनाये खडी थी। अद्रेई उन्हे शात कराने का विफल प्रयास कर रहा था, उसकी आवाज ही नही सुनायी पड रही थी।

"उतार लो इसके बूट! चलो, लुगाइयो, मिलकर!"

पलक झपकते अनेक हाथ मच की ओर बढे। उन्होने अद्रेई की बायी टाग पकड ली। वह बूथ मे चिपक गया, गुस्से मे लाल-पीला होने लगा पर पैर से बूट उतारकर पीछे फेका जा चुका था। अनेक हाथ बूट को लपककर और भी पीछे फेक देते, भयावह ठहाके गूजने लगे। पिछली कतारो से मर्दो की उत्साहवर्द्धक आवाजे सुनायी दी

"उतार दो बूट इसके!"

"पतलून भी उतार दो!"

"दूसरा बूट भी उतारो!"

"लुगाइयो, गिरा दो साड को!"

और अद्रेई का दूसरा बूट भी खीचकर उतार लिया। उसने पैर झटककर पायताबे उतारे और गला फाडकर चिल्लाया

"और क्या पायताबे नही चाहिये? ले लो! शायद किसी की नाक पोछने के काम आ जाये!"

मच की ओर तेजी से कई नौजवान आ रहे थे। उनमे से एक– मोटे होठोवाला लब-तडग जवान, निजी किसान येफीम त्रूबाचोव औरतो को धकेलकर मच पर चढ गया।

"हमे तुम्हारे पायताबे नही चाहिये," वह हाफते हुए मुस्कराकर बोला, पर अध्यक्ष, पतलून हम तुम्हारी उतार लेगे"

"पतलून की हमे सख्त जरूरत है! गरीब लोग बिना पतलून के घूमते है और कुलको का माल सब के लिये काफी नही पडा," दूसरा, कद और उम्र मे कुछ छोटा, पर देखने मे बडा शातिर, लापरवाही के साथ बोला।

यह लडका जिसे सब लोग दिमोक कहकर पुकारते थे, बडे घुघराले बालोवाला था। उसकी पुरानी कज्जाकी छज्जेदार टोपी के नीचे से सुरमई बालो के ऐसे गुच्छे लटकते रहते थे कि मानो कभी कघी ने उन्हे छुआ ही न हो। दिमोक का बाप जर्मनी मे युद्ध मे मारा गया और मा की टाइफस मे मृत्यु हो गयी, नन्हा दिमोक अपनी बुआ के यहा पला। बचपन मे वह परायी साग़बाडियो मे खीरे और मालिया बागो मे चेरी और सेब, पलेज मे बोरियो मे भर-भरकर तरबूज चुराकर लाता, और जब सयाना हो गया, तो उसे गाव की लडकियो को खराब करने का चस्का पड गया और वह इसके लिये इतना बदनाम हो गया कि गाव की एक भी सयानी बेटीवाली मा दिमोक को, उसकी

नाटी, पर बाज़ की तरह चुस्त आकृति को चुपचाप नही देख सकती थी। उसे देखकर वह थूकती और फुफकारकर कहती

"कजा शैतान आ रहा है! लेडी-कुत्ते की तरह गाव मे मटकता फिरता है " और अपनी बेटी की ओर मुडकर कहती "तू क्यो आखे फाडे खडी है? क्यो खिडकी मे चिपकी है? तू लाकर देख इसमे कुछ अपने दामन मे, मै अपने हाथो मे तेरा गला घोट दूगी! जा कुतिया. उपले ला और गाय के लिये फाटक खोल!"

और दिमोक टूटी चप्पलो मे सतर्क जानवर की तरह दबे पाव, सीटी बजाता बाडो के पास टहलता, चमकीली, मुडी पलकोवाली आखो से खिडकियो, अहातो मे झाकता चलता, और जैसे ही कही लडकी नजर आती, तो देखने मे आलसी, फूहड दिमोक पलक झपकते ही बाज की तरह सिर घुमाकर चुस्त हो जाता। पर उसकी सफेद-सी आखो मे हिंस्र भाव नही बल्कि अगाध स्नेह टपकता, ऐसे क्षणो मे दिमोक की आखो तक का रग बदल जाता, वे जुलाई के निर्मल आकाश की तरह नीली हो जाती। लडकी का नाम लेकर वह कहता, "फकलूशा मेरी रानी! आज अधेरा होते ही मै पिछवाडे मे आ जाऊगा। आज तुम सोओगी कहा?" लडकी दौडकर हडबडी मे अभेद्य कठोरता से कहती "हाय, आप छोडिये भी ऐसी बाते!"

दिमोक समझपूर्ण मुस्कान के साथ उसे जाते देखता और आगे बढ जाता। सूर्यास्त के समय सामूहिक खत्ती के पास अपने निष्कासित मित्र तिमोफेई नकटे का अकार्डियन बजाता और जैसे ही बागो और कुजो मे अधेरा घना होने लगता लोगो और ढोरो की आवाजे शात हो जाती वह टहलता हुआ फकलूशा के घर की ओर चल पडता और उदास फुसफुसाहट करते पाप्लर वृक्षो की फुनगियो, नीरव गाव के ऊपर आकाश मे दिमोक की तरह ही एकाकी, गोल चेहरेवाला चाद विचरता।

लडकिया ही दिमोक का एकमात्र शौक नही थी, उसे वोदका से भी लगाव था और मार-पीट तो उसे सबसे प्रिय थी। जहा भी लडाई होती, वही दिमोक होता। शुरू मे वह पीठ के पीछे हाथो को कसकर पकडे, सिर टेढा करके देखता रहता, फिर उसके घुटने कापने लगते, कपकपी बढती जाती और दिमोक अपने जोश पर नियत्रण खोकर लडाई मे कूद पडता। बीस की उम्र तक वह कोई आधा दर्जन दात

खो चुका था। अनेक बार उसकी ऐसी धुनाई हो चुकी थी कि मुह से खून बहने लगता था। लडकियो की वजह से भी उसकी पिटाई होती और हाथापाई के माध्यम से होती परायी बहस मे टाग अडाने के लिये भी। खासकर खून थूकता दिमोक महीने भर, सदा अपने भाग्य का रोना रोती बुआ के यहा पडा रहता, और फिर से शाम को जमनेवाली लडके-लडकियो की मडली मे आ जाता। दिमोक की नीली-सी आखे और भी चमकीली हो जाती, बाजे की कुजियो पर उसकी उगलिया और भी चपलता से चलने लगती, बस आवाज ही बीमारी के बाद फटी-फटी-सी होती जैसे पुराने हार्मोनियम की घिसी धौकनी की।

दिमोक के शरीर से जान निकालना बडा मुश्किल था – वह बिल्ली की तरह नौ जीवनवाला था। उसे कोम्सोमाल से निकाला जा चुका था गडागर्दी और आगजनी के लिये उस पर मुकदमा चल चुका था। शांति भग करने के लिये अद्रेई कई बार उसे गिरफ्तार करके ग्राम-सोवियत की कोठरी मे रात भर के लिये बद कर चुका था। दिमोक के मन मे कब से उसके प्रति बडा क्रोध उफन रहा था और अब बदला लेने का उचित मौका देखकर वह हिसाब साफ करने के लिये मच पर चढा

वह अद्रेई के पास आता जा रहा था। उसके घुटने काप रहे थे लगता था कि वह मानो फुदककर चल रहा है।

"हम पतलून दो " दिमोक दहाडा चल जल्दी उतार! '

मच लगाइयो से भरता जा रहा था सहस्रबाहु भीड ने फिर से अद्रेई को कसकर घेर लिया।

"मै – अध्यक्ष हू!" रजम्योत्नोव चिल्लाकर बोला। "मेरी हसी उडाना सोवियत सत्ता की हसी उडाने जैसा है! हटो पीछे! मै अनाज तुम्हे नही लेने दूगा! मै सभा बद करता हू! "

"खुद ले लेगे अनाज!"

"हा-हा! बद कर दी!"

"खुद खोल लेगे!"

"चलो दवीदोव के पास, उसे भी जरा मजा चखाये!"

"अरे चलो, फार्म के दफ्तर!"

"रजम्योत्नोव को पकडे रखो!"

"अरे लौडो, कर दो इसकी पिटाई!

"क्यो ताक रहे हो इसका मुह?!"

"यह स्तालिन के खिलाफ है!"

"बद कर दो इसे!"

एक औरत ने मच पर रखी मेज से माटिन का लाल मेजपोश उतारा और पीछे से जाकर उससे रजम्योत्नोव का सिर लपेट दिया। जब अद्रेई धूल और स्याही की गधवाले मेजपोश को सिर से उतार रहा था, दिमोक ने उसकी पसलियो पर घूसा मारा।

अद्रेई ने सिर पर से मेजपोश उतारा। अपार क्रोध और दर्द मे हाफते हुए उसने जेब से रिवाल्वर निकाला। औरते चिल्लाकर पीछे हट गयी पर दिमोक येफीम त्रूबाचोव और मच पर चढे और दो कज्जाको ने उसके हाथ मरोडकर निहत्था कर दिया।

"जनता पर गोली चलाना चाहता था! देखो तो कुतिया की औलाद को!" सिर के ऊपर रजम्योत्नोव का, बिलकुल खाली, जिसके मैगजीन मे एक भी गोली नही थी, रिवाल्वर उठाकर येफीम त्रूबाचोव विजयोल्लास के साथ बोला।

खत्तियो के पास मे आती जनसमूह की गरज को सुनकर दवीदोव की चाल अनायास ही धीमी पड गयी। पुरुषो की भारी आवाजो के बीच औरतो की 'आई-ई-ई-ई अलग से सुनायी पड रही थी तीव्र वैसे ही जैसे पतझड मे पहल पाले के बाद जगल मे बडे शिकार का पीछा करनवाल कुत्तो की भौ-भौ के बीच शिकारी कुतिया की सिसक भरी भूक।

"दूसरी टोली को बुलवा लेना चाहिये, नही तो सारा अनाज उठा ले जायेगे," दवीदोव ने सोचा। उसने बीज की खत्तियो की चाबिया छिपाने के लक्ष्य मे दफ्तर मे लौटने का फैसला किया। द्योम्का उशाकोव घबराया फाटक पर खडा था।

"मै छिप रहा हू, कामरेड दवीदोव। नही तो चाबियो के लिये मेरी जान निकाल लेगे।"

"जो तुम्हारी मर्जी। नाइद्योनोव नही है?"

"वह दूसरी टोली के पास गया हुआ है।"

"दूसरी टोलीवाला कोई है यहा?"

"कोद्रात माइदान्निकोव है।"

"कहा है? यहा क्या कर रहा है?"

"बीज लेने के लिये आया है। वह आ रहा है दौडता हुआ!"

माइदान्निकोव तेजी से उनकी ओर आ रहा था। दूर ही से चाबुक घुमाकर वह चिल्लाया

"अद्रेई रजम्योत्नोव को जनता ने गिरफ्तार कर लिया! उसे तहखाने मे बद करके अब खत्तियो की ओर जा रहे है। कामरेड दवीदोव, तुम कही छिप जाओ नही तो न जाने क्या हो जाये लोग पागल हो गये है!"

"मै नही छिपूगा! तुम्हारा दिमाग तो ठीक है न! लो पकडो चाबिया और टोली मे जाकर ल्युबीश्किन से कह दो कि पद्रह-एक लोगो के साथ घोडो पर बैठकर फौरन यहा आ जाये। देखते हो यहा दगा शुरू हो रहा है। इलाकेवालो को परेशान नही करना चाहता, खुद निबट लेगे। तुम कैसे आये हो?"

घोडागाडी मे।"

"घोडे को खोल लो और उस पर सवार होकर, जल्दी से जाओ!"

"अभी पलक झपकते ही!" माइदान्निकोव जेब मे चाबिया ठूसकर दौड पडा।

दवीदोव आराम से खत्तियो के पास आ रहा था। उसके आने की प्रतीक्षा मे भीड कुछ शात हो गयी। 'आ रहा है, हरामी!" कोई औरत दवीदोव की ओर इशारा करके उन्माद मे चीखी। पर वह जल्दी मे नही था, सबके सामने वह सिगरेट सुलगाने के लिये रुका हवा की ओर पीठ करके उसने माचिस जलायी।

'आ, इधर तो आ! सिगरेट पीने का तो बहुत वक्त मिलेगा!"

"परलोक मे पी लेना जी भरकर सिगरेट!'

'पता नही चाबी ला रहा है या नही "

'शायद, ला रहा है! उसे तो मालूम है कि हम उसकी खबर लेनेवाले है।'

दवीदोव जेबो मे हाथ ठूसकर धुआ उडाता अगली कतारो के पास आया। भीड पर उसके आत्मविश्वास और शात चेहरे का विविध प्रभाव हुआ कुछ लोगो को महसूस हुआ कि इस आत्मविश्वास का कारण यह है कि दवीदोव को अपनी पीठ पीछे खडी शक्ति और श्रेष्ठता का बोध है। दूसरे उसके शात चेहरे को देखकर तिलमिला उठे। टीन की छत पर बरसते ओलो की तरह लोगो की चिल्लाहटे सुनायी पडी

"चाबी दो!"

"सामहिक फार्म बद करो!"

'बिस्तर गाल कर अपना! किसने तुझे बुलाया था?!"

'बीज दे!"

"हमे क्यो नही बोने देते?"

मद-मद बहती हवा औरतो के सिरो पर बधे रूमालो के कोनो मे खेल रही थी, खत्तियो के छप्परो को मरमरा रही थी, स्तेपी से सूखती मिट्टी की फीकी गध और हरी घास की कच्ची अगूरी की तरह मादक सुगध ला रही थी। पाप्लर वृक्षो की फूलती कलियो की मधुर सुगध इतनी मीठी थी कि जब दवीदोव ने बोलना शुरू किया तो उसे ऐसा आभास हुआ मानो उसके होठ चिपचिपे है और जीभ को तालू मे छूकर उसे शहद का स्वाद तक महसूस हो रहा था।

"नागरिको, आप क्यो सोवियत सत्ता के आदेश नही मान रहे? आपने यार्स्की के सामूहिक फार्म को क्यो नही दिया अनाज? क्या आपने यह नही सोचा कि इस प्रकार आपने बोवाई अभियान को भग किया और आपको अदालत के कटघरे मे खडा होना पडेगा? सच कहता हू! सोवियत सत्ता आपको इसके लिये हरगिज माफ नही करेगी!"

"इस समय तुम्हारी सोवियत सत्ता हमारी कैद मे बद है! चुपचाप बद है तहखाने मे!" नाटे और लगडे निजी किसान सीरोन दोव्रोदेयव ने उत्तर दिया, उसका तात्पर्य रजम्योत्नोव की गिरफ्तारी से था।

कुलेक हस पड़े पर हमामची आगे आकर गुस्से मे चिल्लाया

'सोवियत सत्ता यह नही कहती, जो तुम अपनी मनमानी से कर रहे हो! हम तुम्हारी और मकार नागूल्नोव की बनायी सोवियत सत्ता को नही मानते! यह कहा का फैशन है खेतीहर को बोवाई न करने देने का? यह क्या है? यह पार्टी की विकृति है!"

"क्या, तुझे नही बोने देते?"

"और क्या, नही?"

"तूने सामूहिक खत्ती मे बीज जमा करवाये थे?"

"हा, करवाये थे।"

"तुझे वापस मिल गये?"

"हा, मिल गये। तो आगे क्या?"

"कौन तुझे नही बोने दे रहा? यहा खत्ती के पास तेरा क्या काम?"

बात के इस अप्रत्याशित मोड़ मे हमामची कुछ सकपका गया, पर उसने अपनी सफाई देने की कोशिश मे कहा

"मै अपनी नही, उन लोगो की चिता करता हू जो सामूहिक फार्म से निकल गये और जिन्हे आप अनाज नही वापस कर रहे और सामान भी नही लौटाते। बात यही है! और मुझे भी तो आपने कौनसी जमीन दी है? क्यो इतनी दूरवाली दी है?"

"जाओ, रास्ता नापो!" दवीदोव से नही रहा गया। "तुम से हम बाद मे करेंगे बात, फैक्ट! और फार्म के मामलो मे अपनी नाक मत घुसेडो, नही हम झट से काट देंगे! तुम लोगो को भडकाते हो! जाओ, जाओ रास्ता नापो!"

हमामची धमकिया बडबडाता हुआ पीछे हट गया और उसका स्थान औरतो ने ले लिया। वे सब एक स्वर मे चिल्लाने लगी, दवीदोव को वे अपना मुह तक नही खोलने दे रही थी। वह किसी तरह समय खीचना चाहता था ताकि ल्युबीश्किन अपनी टोली के साथ आ जाये। पर औरतो ने उसे घेर लिया, पुरुषो के मौन समर्थन का सहसस करके वे जोर-जोर से चिल्ला रही थी।

दवीदोव ने इधर-उधर नजरे दौडायी, उसे कुछ दूरी पर मरीना पोयार्कोवा खडी दिखायी दी। वह कोहनी तक खुले अपने बलिष्ठ हाथो को बाधे खडी, औरतो से कोई बात कर रही थी, उसकी काली भौहे चढी हुई थी। दवीदोव पर उसकी द्वेषपूर्ण नजर पडी और तभी उसे मरीना के पास उत्तेजित मुस्कान के साथ याकोव लुकीच दिखायी दिया वह देमीद घुन्न के कान मे कुछ फुसफुसा रहा था।

"ला चाबिया! चुपचाप दे दे, सुना तूने?"

एक औरत ने दवीदोव का कधा पकडकर उसकी जेब मे हाथ डाला।

दवीदोव ने उसे जोर से धक्का दिया। औरत पीछे हटकर पीठ के बल गिर गयी और कृत्रिम स्वर मे चिल्लायी

"अरे, मार डाला! बचाओ भले लोगो, बचाओ! "

"यह क्या बदतमीजी है?" कोई भीड की पिछली कतारो मे पतली कापती आवाज मे बोला। "हाथापाई शुरू करना है? अरे

जग एक-दो हाथ तो झाडना, ताकि उसकी नाक से रेट निकल पडे! "

दवीदोव ने जमीन पर गिरी औरत को उठाने के लिये कदम बढाया ही था पर किसी ने उसकी टोपी गिरा दी, उसके मुह पर कई चाटे पडे और पीठ पर घूसे बरसे, किसी ने उसके हाथ पकड लिये। कधे झटककर उसने उसे पकडनेवाली औरतो को हटाया पर वे फिर चिल्लाकर उससे लिपट गयी, कमीज का कालर फाड दिया और कुछ ही सेकेड मे उसकी सारी जेबे टटोलकर उलट दी।

"नही है इसके पास चाबिया!"

"कहा है चाबिया? "

"दे दे! नही तो ताले तोड लेगे!"

हट्टी-कट्टी बुढिया – मिखाईल इग्नात्योनोक की मा, घुरघुराती हुई भीड को चीरकर दवीदोव के पास आयी और मा की गाली देकर उसके मुह पर थूककर बोली

"ले राक्षस, शैतान, नास्तिक कही का!"

दवीदोव का चेहरा सफेद पड गया, उसने पूरा जोर लगाकर हाथ छुडाने की कोशिश की पर लगता था कि कोई मर्द औरतो की मदद को आ गया था। किसी की लौह उगलियो ने सडसे की तरह पीछे से उसकी कोहनियो को जकड लिया। तब दवीदोव ने छूटने का प्रयास छोड दिया। वह समझ गया कि बात बहुत बढ गयी है और वहा उपस्थित कोई भी व्यक्ति उसकी मदद नही करेगा। इसलिये उसने दूसरा रास्ता अपनाने का फैसला लिया।

"नागरिको, खत्तियो की चाबी मेरे पास नही है। चाबिया हमेशा "
दवीदोव अटक गया वह कहना चाहता था कि चाबिया उसके पास नही रहती, पर उसके दिमाग मे कौधा कि अगर वह यह कहेगा तो भीड द्योम्का उशाकोव को ढूढने के लिये दौड पडेगी, शायद वे उसे ढूढ लेगे और तब द्योम्का की खैर नही, ये उसे जान से मार डालेगे। "कह दूगा कि मेरे घर पर है, वहा ढूढकर कह दूगा कि खो गयी। इतने मे ल्युबीश्किन भी आ जायेगा, मुझे जान से मारने की इनमे हिम्मत नही होगी। अरे, देख लेगे!" वह चुप हो गया, गाल पर लगी खरोच मे बहते खून को कधे से पोछकर वह बोला "चाबिया मेरे क्वार्टर मे है पर मै तुम्हे नही दूगा और ताले तोडने के लिये तुम्हे कडी सजा मिलेगी! तुमको यह समझना चाहिये!"

"ले चल अपने कौटर मे! हम अपने आप ले लेगे," इग्नात्योनोक की मा धकेलकर बोली।

उत्तेजना से उसके लटके गाल और नाक पर बडा मस्सा काप रहा था, झुर्रियो से ढके चेहरे पर निरतर पसीना बह रहा था। सबसे पहले उसीने दवीदोव को धकेला और वह सहर्ष, पर धीरे-धीरे अपने घर की ओर चल पडा।

'क्या चाबिया वही है? कही तुम भूल तो नही गये?" हमामची की पत्नी अव्दोत्या ने पूछा।

"वही है, मौसी मेरी!" सिर झुकाकर मुस्कान को छिपाते हुए दवीदोव ने उत्तर दिया।

चार औरते उसके हाथ पकडे और पाचवी पीछे-पीछे मोटी सोटी उठाये चल रही थी। दायी ओर थुल-थुल हिलती इग्नात्योनोक की बुढिया मर्दो जैसे लम्बे-लम्बे डग भरती चल रही थी और बायी ओर औरते छोटे-छोटे झुड बनाकर चल रही थी। मर्द चाबियो की प्रतीक्षा म खत्तियो के पास रह गये थे।

"हाथ छोड दो, मौसी जी। मै कही भागूगा नही," दवीदोव अनुरोध कर रहा था।

'कौन जाने तेरे मन की बात, कही भाग ही न जाये तू।"

"अरे नही!"

'हमारी पकड मे चल कम से कम हम शात रहेगी।"

वे दवीदोव के घर पर पहुचे, टहनियो की बाड और फाटक गिराकर औरते अहाते मे घुस गयी।

"जा, ला चाबिया! अगर नही लाया तो फौरन मर्दो को बुला लेगे, वे झट से तेरी गर्दन मरोड देगे!"

"अरे, मेरी ताइयो, बडी जल्दी तुम भूल गयी सोवियत सत्ता को। पर वह तुम्हे इसके लिये माफ नही करेगी!"

"आगे खड्ड और पीछे खाई! हमे कोई फर्क नही पडता, सजा भुगते या बोवाई न करने की वजह पतझड मे भूखो मरे! अरे, तुम जाओ, लेकर आओ!"

दवीदोव ने अपने कमरे मे प्रवेश किया, उसे मालूम था कि उस पर नजर रखी जा रही है, इसलिये उसने बडी लगन से खोजने का दिखावा किया। उसने सूटकेस पूरा उलट-पलट दिया, मेज़ पर एक-एक

काग़ज़ को झाड़कर देखा, पलंग और टेढ़े पायेवाली मेज़ के नीचे घुसकर देखा ...

"नही हैं चाबियां," बाहर निकलकर वह बोला।

"तो कहा है?"

"शायद नागूल्नोव के पास हों।"

"पर वह तो गया हुआ है!"

"तो क्या हुआ?! चाबियां तो क्या पता छोड़ गया हो। आज हमें दूसरी टोली को बीज देने थे।'

औरते उसे नागूल्नोव के घर की तरफ़ ले चली। रास्ते में उसे पीटने लगी। शुरू में तो हल्के से धक्के देकर गालिया सुना रही थी पर बाद मे इस बात से खीजकर कि वह हर वक़्त हसता हुआ मज़ाक किये जा रहा था वे उसकी कसकर पिटाई करने लगी।

"लुगाइयो! मेरी महबूबाओ! तुम कम से कम सोटियो से तो मत मारो," वह बड़ी मुश्किल से मुस्कराता सिर दुबकाकर, आस-पास की औरतो को नोचता हुआ अनुरोध कर रहा था।

उसकी चौडी झुकी पीठ पर दनादन मार पड़ रही थी, पर वह सिर्फ कराहकर कधे हिलाता और दर्द के बावजूद अभी भी मज़ाक़ करने का प्रयास करता:

'ओ नानी! तेरे मरने का वक़्त आ गया पर तू लड़ रही है। ला मै भी तुझे एक बार मारू, क्यों?"

"बुत कही का! ठडा पत्थर!" जवान नास्तेन्का दोनेत्स्कोवा, जो दवीदोव की पीठ पर अपनी छोटी-छोटी, पर मजबूत मुट्ठिया बरसा रही थी लगभग रोते हुए बोली, "मेरे हाथो मे चोट लग गयी पर यह उफ तक नही कर रहा!"

"सोटियो मे नही मारो!" सिर्फ़ एक बार दात भीचकर दवीदोव मस्ती से बुदबुदाया और किसी लुगाई के हाथ से भिसे की सूखी लकड़ी के खूटे को छीनकर घुटने से तोड़ दिया।

उसके कानो से खून बह रहा था, होठ और नाक फूट गये, पर वह अभी भी सूजे होंठों से मुस्करा रहा था। वह धीरे-धीरे उन औरतो को धक्का देता चल रहा था जो कुछ ज्यादा ही जोर मे उसे मार रही थी। इग्नात्योनोक की नाक पर हिलते मस्सेवाली बुढ़िया उसे बहुत मार रही थी। उसके मारने पर बडा दर्द होता, वह या तो आखो के

बीच या कनपटियो पर घूसे मारती और दूसरो की तरह नही बल्कि उभरी हड्डियोवाली तरफ से घूसा मारती। दवीदोव चलते-चलते उमकी तरफ पीठ मोडने का निष्फल प्रयास करता। वह घुरघुर करती औरतो को हटाकर दवीदोव के मामने जाकर फुफुकारती

"जरा मै इमका भमरा छेत दू! भमरा इमका!

"जरा देखके रहना शैतान की दुम घमा म बचत हुए दवीदोव गुस्से को छिपाते मोच रहा था, "जैसे ही ल्युबीश्किन दिखायी पडेगा, मै तुझे ऐसा मजा चखाऊगा कि छठी का दूध याद आ जायेगा तुझे!"

घुडसवारो के साथ ल्युबीश्किन अभी तक नही आया। भीड नागूल्नोव के घर के पास पहुची। इस बार दवीदोव के माथ औरते भी कमरे मे घुम गयी। उन्होने मब उलट-पलटकर देखा, कागज किनाबे कपडे मब बिखर दिये, मकान-मालिक तक की तलाशी ली। स्वभाविक ही था कि चाबिया नही मिली। वे धक्का देकर दवीदोव को बाहर लायी।

"कहा है चाबिया? तुझे मार डालेगे बता!"

'ओस्त्रोव्नोव के पास है" स्त्रियो के पाम भीड मे खडे याकोव लुकीच के दुर्भावना के माथ मुस्कराते चेहरे को याद करके दवीदोव बोला।

"झूठ! हमने उमसे पूछा था! उमने कहा कि तुम्हारे पास ही होनी चाहिये चाबिया!"

'नागरिको!' दवीदोव न अपनी मूजकर फूली नाक को छूआ और हौले मे मुस्कराकर बोला "नागरिको! बेकार ही तुमने मुझे पीटा चाबिया दफ्तर मे है मेरी मेज की दराज मे, फैक्टर! अब मझे याद आया।'

"अरे तो हमारी हसी उडाता है!" स्त्रियो से आयी येकातेरीना गुल्याशाया चीखकर बोली।

"मुझे उधर ले चलो। हसी की क्या बात है? बस, कृपया मार-पीट नही करो!"

दवीदोव ड्योढी से उतरा। उम प्यास और नपुमक क्रोध सता रहे थे। पिटाई उसकी बहुत बार हो चुकी थी, पर औरते पहली बार पीट रही थी, इस कारण वह बडा अजीब महसूस कर रहा था। "बस गिरू नही, अगर गिर पडा तो क्या पता नोच-नोचकर मार डाले।

बड़ी बेहूदा मौत होगी, फ़ैक्ट! कटक की ओर आशा के साथ देखता हुआ वह सोच रहा था। पर सड़क पर न तो घोड़ों के खुरों से उड़ती धूल और न ही घुड़सवारों का दल दिखायी पड़ा। क्षितिज पर सुदूर टीले तक फैला कटक निर्जन था... सड़कें भी इसी तरह निर्जन थीं। सब खत्तियों के पास जमा थे, वहां से कोलाहल आ रहा था।

फ़ार्म के दफ़्तर पहुंचते-पहुंचते दवीदोव की इतनी पिटाई की जा चुकी थी कि वह बड़ी मुश्किल से पैरों पर खड़ा था। वह अब मज़ाक़ नहीं कर रहा था। सपाट जगह पर ठोकरें खाता वह अकसर सिर को पकडता। वह भर्राये स्वर में अनुरोध करता:

"बस करो! मार डालोगी। सिर पर मत मारो... नही हैं मेरे पास चाबियां! रात तक तुम्हें ऐसे ही घुमाता रहूंगा, पर चाबियां नही... नहीं दूंगा!"

"अच्छा! रात तक?!" क्रुद्ध औरतें जोंक की तरह दवीदोव के निढाल शरीर से चिपक गयी, वे खरोचने, पीटने यहा तक कि दातो मे काटने लगी।

सामूहिक फ़ार्म के कार्यालय के अहाते के सामने दवीदोव सड़क पर बैठ गया। उसकी किरमिच की क़मीज़ खून से तर थी, उसकी छोटी शहरी पतलून (पायचों पर घिसी) घुटनों पर फट गयी थी, क़मीज़ के खुले कालर से सांवली गुदी छाती झांक रही थी। वह घुरघुर करता हांफता बड़ा दयनीय लग रहा था।

"उठ, कुतिया की औलाद!" इग्नात्योनोक की बुढ़िया पैर पटक-पटककर कह रही थी।

"हरामज़ादो, तुम्हारे लिये ही तो! अचानक दवीदोव ज़ोर से बोला। उसने अजीब-सी चमक भरी अपनी आंखें दौड़ायी। "तुम्हारे भले के लिये ही तो कर रहे है! और तुम मुझे मार रही हो.. हरामज़ादियो! नही दूंगा चाबियां। समझीं?! नही दूंगा!"

"अरे छोड़ दो इसे!" वहां दौड़ी आयी एक लड़की चिल्लायी। "कज़्ज़ाकों ने ताले तोड़ दिये हैं, अनाज बांट रहे हैं!"

औरतें दवीदोव को दफ़्तर के फाटक के पास छोड़कर खत्तियों की ओर दौड़ पड़ीं।

दवीदोव बड़ा ज़ोर लगाकर उठा, अहाते में घुसकर वह कुनकुने पानी से भरी बालटी ओसारे पर लाया, बड़ी देर तक पानी पीता

रहा, फिर सिर पर पानी डालने लगा। कराहते हुए उसने चेहरे और गर्दन से खून धोया, ड्योढ़ी पर टगी घोडे की झूल से हाथ-मुह पोछा और दहलीज पर बैठ गया।

अहाता सुनसान था। कही कोई आशकित मुर्गी कुट-कुट कर रही थी। चिडियो के लिये बने लकडी के घरौदे की छत पर बैठा काला भरत पक्षी सिर उठाकर कूज रहा था। स्तेपी मे मार्मटो की सीटिया सुनाई पड रही थी। बैगनी बादलो के झीने परदे ने सूरज को ढक दिया था, पर इसके बावजूद इतनी घुटन थी कि अहाते के बीचोबीच राख के ढेर मे नहाती गौरैया गर्दन पसारकर उड लेटी थी, बस कभी डैने खोलकर पखा-सा झलती।

घोडे की अस्फुट टाप सुनकर दवीदोव ने सिर उठाया फाटक मे जीन कसा नाटा समद घोडा सरपट दौडता घुसा। तेजी से मुडकर उसने पिछली टागो से जमीन खोदी और फुफकारते हुए अहाते का चक्कर लगाया, उसके पुट्ठो से तपती जमीन पर झाग टपक रहा था। अस्तबल के दरवाजे पर रुककर वह देहरी को सूघने लगा।

उसकी सदर चादी के कामवाली लगाम टूटी हुई थी गर्दन से लटकी हुई थी जीन अयाल तक खिसक गयी थी पगबद की टूटी पटिया जमीन तक लटकी काली सीपियो की तरह चमकते सुमो को छू रही थी। वह गुलाबी नथुनो को फुलाकर बुरी तरह हाफ रहा था। उसकी सुनहरी अलक और उलझी अयाल मे पिछले साल के मुरझाये गोखरुओ के कत्थई गुच्छे चिपके हुए थे।

दवीदोव आश्चर्य के साथ घोडे को देख रहा था। तभी फूस की कोठरी का दरवाजा चरमराकर खुला और बुड्ढे श्चुकार का सिर बाहर निकला। कुछ देर बाद बडी सावधानी से दरवाजा खोलकर डरते-डरते इधर-उधर देखकर वह खुद भी निकला।

पसीने से तर उसकी कमीज घास-फूस से ढकी हुई थी, गुच्छेदार दाढी मे घास के तिनके, पत्तिया, सूखे फूल फसे हुए थे। बुड्ढे श्चुकार का चेहरा पकी चेरी की तरह लाल था, उस पर असीम भय की छाप थी। श्चुकार की कनपटियो मे बहती पसीने की धारा कपोलो और दाढी को भिगो रही थी

"कामरेड दवीदोव!" उचककर पजो के बल चलते हुए ड्योढी के पास जाकर अनुनयपूर्ण फुसफुसाहट मे वह बोला, "भगवान के

लिये, आप छिप जाइये! जहा उन्होने लूट मचा दी, तो खून-खराबा होने मे भी देर नही। देखो तो आपकी क्या दुर्गत बनायी है, पहचानना मुश्किल है! मै फूस मे छिपा था घुटन बहुत जबरदस्त है, मै पसीने से पूरा तर हो गया पर मन के लिये शांति है, भगवान की कसम! आइये, दगा रुकने तक साथ छिपकर बैठे जाये, क्यो? अकेले तो जी घबराता है हमे क्या पडी है मुफ्त मे मौत को गले लगाने की। आप खुद सुनिये कैसे औरते भिड के छत्ते की तरह भाय-भाय कर रही है, लकवा मारे उनकी जबान को! नागूल्नोव का भी लगता है काम तमाम कर डाला। यह तो उसी का घोडा दौडा आया है इसी नाटे पर वह सुबह को कस्बे गया था। सवेरे फाटक से निकलते वक्त उसके इसी घोडे को ठोकर लगी थी। तभी मैंने उसे कहा था 'लौट आओ मकार, बडा खराब शकुन है!' पर उसने भला कभी किसी जानकार आदमी की बात सुनी है? जिदगी भर नही! हमेशा अपने मन की करता है, बस इसीलिये मारा गया। अगर मेरा कहना मानकर लौट आता तो अब कही आराम मे छिपकर बैठ सकता था।'

"क्या पता वह इस समय घर पर हो?" दवीदोव संशय के साथ बोला।

घर पर? तो घोडा क्यो खाली दौडा आया और ऐसे फुत्कार रहा है मानो उसने मुर्दे को सूघा हो! बात साफ है मकार कस्बे मे लौटा तो उसने देखा कि खत्तियो मे अनाज लूटा जा रहा है, बस उससे न रहा गया कुछ कह डाला खून तो उसका गर्म था, बस लोगो ने आदमी को मार डाला '

दवीदोव चुप था। खत्तियो के पास अब तक कोलाहल गूज रहा था, बैलगाडियो और छकडो की चर्र-चू सुनायी पड रही थी।

"अनाज ले जा रहे है " दवीदोव ने सोचा। "सचमुच, मकार को क्या हुआ? क्या वास्तव मे मारा गया? चलकर देखता हू!" वह उठा।

बुड्ढा श्चुकार यह समझ बैठा कि दवीदोव उसके साथ फूस की कोठरी मे छिपना चाहता है। वह हडबडी मे बोला

'चलिये, चलिये आफत से दूर! अगर कोई शैतान की बला से यहा आ गया तो हमे साथ देखकर हमारा भुरता बना देगे। वे तो

एक सेकेंड मे यह कर डालेंगे! और फूस की कोठरी में बहुत अच्छा है। घास-फूस की सुगंध इतनी सुहानी है, अगर खाने का प्रबंध होता तो मै तो महीने भर वही पड़ा रहता। बस बकरे ने मेरी नाक मे दम कर दिया मार डालता, मुसरे को! जब मैंने सुना कि लुगाइया सामूहिक फार्म को तहस-नहस कर रही है और अनाज के लिये आपकी बोटिया नोच रही है तो सोचा 'श्चुकार तू तो मुफ्त में मारा जायेगा!' आखिर एक-एक लुगाई को मालूम है कि ये कामरेड दवीदोव, आप और मै ही तो थे जिन्हे ग्रेम्याची में सामूहिक फार्म बनाने की सूझी, हम दोनों ही तो क्रांति के पहले दिन से अगली कतार में रहे और हमी ने तो तीन को बेदखल किया। सबसे पहले वे किसको मारेंगे? बात साफ है—मुझे और आप ही को तो! मैंने सोचा 'हालत हमारी पतली है, कहीं छिप जाना चाहिये, नहीं तो दवीदोव को मारकर मेरे पीछे पड़ जायेंगे। पर तब कौन इन्स्पेक्टर को बतायेगा कि कामरेड दवीदोव की मौत कैसे हुई?' बस मै झट से फूस में सिर छिपाकर लेट गया। मेरा दम घुटा जा रहा था पर छाती फुलाकर सास लेते हुए भी डर लग रहा था। और अचानक सुनता क्या हू कि कोई मेरे ऊपर फूस के ढेर पर चढ रहा है चढ रहा है और स्वभाविक ही है, नाक में धूल भरने से छींक रहा है। 'हाय अम्मा, मैंने सोचा, 'मुझे ही ढूढ रहे है, मेरी जान लेने के लिये ढूढ रहे है मुझे।' पर वह मेरे ऊपर चढा जा रहा था, और उसका पैर मेरे पेट पर पड़ा मै चुपचाप लेटा रहा! होश फाखता हो गये, डर के मारे जान निकल गयी पर मै पड़ा रहा चुपचाप क्योंकि कोई चारा ही नही था इसके सिवाये! और उसने फिर सीधे मेरे थोबड़े पर पाव रखा। मै ने झट से पकड़ लिया—मेरे हाथ में खुर था सारा बालो से ढका! मेरे रोंगटे खड़े हो गये डर के मारे प्राण गले मे अटक गये! बालोवाले खुर को छूकर पता है मैंने क्या सोचा? सोचा, 'शैतान है!' फूस की कोठरी मे घना अधेरा था और भूत-प्रेत तो अधेरे के प्रेमी होते है। मैने सोचा, 'अब यह मुझे पकडेगा और गुदगुदी करके मार डालेगा इससे अच्छा तो लुगाइया ही मेरी बोटिया नोच लेती।' हा-हा मुझे ऐसा डर लगा कि कुछ पूछो मत! मेरी जगह कोई दूसरा होता, कोई बुजदिल जवान, तो उसका तो पल भर मे दिल फट जाता डर के मारे। अचानक डर मे हमेशा फट जाता है दिल! पर मेरे तो सिर्फ हाथ-पाव फूले थे।

मै लेटा रहा। फिर मैने ध्यान दिया कि बकरी की बडी तेज बू आ रही है मै तो बिलकुल भूल गया कि तीत का जब्त बकरा फूस की कोठरी मे रहता है, मरदुए के बारे मे बिलकुल दिमाग से उतर गया! मैने सिर निकालकर देखा, वही था, तीत का बकरा, फूस के ढेर पर चढकर चुन-चुनकर घास खा रहा था बस फिर क्या था, मै उठकर उसकी ऐसी धुनायी करने लगा कि कुछ पूछो मत। मैने उसे दाढी खीचकर, और न जाने कैसे-कैसे पीटा! 'दाढीवाले शैतान, गाव मे दगा मचा हुआ है और तुझे फूस के ढेर पर चढने की सूझी है! बिना बात के मत घूम हरामजादे!' मुझे इतना गुस्सा आया कि मै उसे हलाल कर डालता, चाहे वह ढोर है पर इतनी तो समझ होनी चाहिये उसे कि कब फूस के ढेर पर मटरगश्ती करनी चाहिये और कब दुबककर चुपचाप बैठना चाहिये आप किधर चले, कामरेड दवीदोव?'

दवीदोव बिना कुछ बोले फूस की कोठरी के पास मे होता हुआ फाटक की ओर बढ गया।

आप कहा जा रहे है?' विस्मय के साथ बूढा रखवार फुसफुसाया। अधखुले फाटक मे उसने देखा कि दवीदोव मानो हवा के थपेडो से डगमगाता हुआ तेजी से सामूहिक खत्तियो की ओर जा रहा था।

३८

सडक के पास कब्र का टीला था। हवाओ से कटी उसकी चोटी पर नागदौने की सूखी झाडिया शोकपूर्ण खडखड करती है, झट-कटैया की लटे उदास-सी लटकी है, चोटी से लेकर तलहटी तक उसकी ढलानो पर फैदर घास के पीले रोयेदार गुच्छे बिछे हुए है। कडी धूप और वर्षा मे बदरंग उदास-से प्राचीन क्षरित मृदा पर उनके डठल पसरे है, वसत के चटकीले रगो के बीच भी वे अलग वृद्धो की तरह मुर-झाये उदास-से दिखायी पडते है। बस पतझड के पास आने पर ही उन पर पाले की शुभ्र धवलता छा जाती है। पतझड ही मे टीला रुपहला शल्की कवच धारण करके स्तेपी के सजग प्रहरी के समान खडा हो जाता है।

गर्मियो मे शाम को आकाश की ऊचाई से सुनहला उकाब उतरता उसकी चोटी पर। पख फडफडाता वह टीले पर मानो गिरता और दो-एक बेढब कदम रखकर कत्थई डैने फैलाता और उनके परो को टेढी चोच से साफ करने लगता। और फिर सिर उठाकर नीले आकाश को अपनी कहरुबे जैसी काले छल्ले मे घिरी पुतली से एकटक देखने लगता। शाम के शिकार से पूर्व उकाब विश्राम करता और फिर से उड जाता। सूर्यास्त तक उसके शाही डैनो की स्लेटी परछाई कई बार स्तेपी की सतह पर आर-पार फिसलती।

पतझड की ठिठुरन भरी हवाए उसे कहा ले जायेगी? कोहकाफ पर्वतो की नीली तलहटियो मे? मुगान्स्क स्तेपी मे? फारस मे? या अफगानिस्तान?

और सर्दिया म जब कब्र का टीला ममूर की तरह हिम का श्वेत आवरण ओढ लेता है रोज प्रात के नीले झुटपुटे म स्लेटी छाती वाला बूढा लोमड उसकी चोटी पर चढता है। वह बडी देर तक मानो लपट की तरह पीले करारा सगमरमर मे तराशी मूर्ति की तरह जड खडा रहता है बैगनी बर्फ पर अपनी लम्बौही दुम को बिछाकर, उसकी थूथनी हवा की दिशा मे उठी होती है। इस क्षण उसकी नम गोमेद जैसी नाक ही विविध गधो की शक्तिशाली दुनिया मे विचरती फूले फडकते नथुनो मे बर्फ की फीकी गध, पाले मे जमे नागदौने की कसैली गध, पास की सडक मे घोडो की लीद की ब और दूरी पर जगली झाडियो मे आती तीतरो की हल्की-सी अति उत्तेजक सुगध भरती थी।

तीतरो की सुगध मे और भी गधो को इतनी मिलावट होती कि लोमड को उसे जी भरकर सूघने के लिये टीले से उतरकर गहरी बर्फ मे धसते हुए, हिम शकुओ मे ढके अपने उदर को झाडियो के ऊपर से घसीटते हुए कोई सौ-एक गज जाना पडता। और सिर्फ तभी उसके फूले नथुनो मे ताजी बीट की कसैली-खट्टी बू और परो की दोहरी गध भर जाती। पख के ऊपरी हिस्से से जो घास को छूता है नागदौने की कडवी बू आती और उसका जो हिस्सा मास मे गडा रहता है उससे गर्म, नमकीन खून की सुगध आती

लू टीले की जमी मिट्टी को तराशती, दोपहर की धूप उसे तपाती, वर्षा उसे धोती, प्रभुप्रकाश के दिनो का कडकता पाला उसे काटता, पर टीला उसी तरह स्तेपी के शासक की तरह सीना

ताने खडा था जैसे वह कभी सैकडो साल पहले मारे गये पोलोवेत्स राजा की कब्र पर सैनिक सम्मान के साथ उसकी रानियो, सैनिको, रिश्तेदारो और गुलामो के हाथो बनाया गया था।

यह टीला ग्रेम्याची से आठ वेर्स्ता की टूटी पर कटक पर खडा था। पुराने जमाने मे कज्जाक उसे मौत का टीला कहते थे। किवदन्ती थी कि पुराने जमाने मे एक घायल कज्जाक की यहा मृत्यु हो गयी, शायद उसी की जिसके बारे मे एक प्राचीन गीत मे कहा गया है

शमशीर की धार मे
निकाली खूद चिंगारी
सलगा अलाव नागदौन का
चश्मे का कर पानी गर्म
धोये उसने जख्म,
मरे खून मे बहते जख्मो
मे तोड रहा हू दम!

कस्बे से बीसेक वेर्स्ता तक नागूल्नोव घोडे को सरपट दौडाता रहा और मौत के टीले के पास जाकर उसने अपने समद घोडे को रोका। उतरकर उसने घोडे की गर्दन से झाग को हटायाँ।

हालाकि वसत अभी शुरू ही हुआ था पर गर्मी बहुत थी। सूरज धरती को ऐसे तपा रहा था मानो मई का महीना हो। क्षितिज पर धुध तैर रही थी। स्तेपी के दूरस्थ जोहड मे जल पक्षियो का कलरव सुनायी पड रहा था।

मकार ने घोडे की लगाम उतारी और उसकी रास को अगली टाग मे बाध दिया, जीन की पेटी ढीली की। घोडा ताजी हरी घास पर टूट पडा, कभी-कभी वह पिछले साल से बची सूखी दूब पर भी मुह मार लेता।

टीले के ऊपर से बत्तखो की डार ची-चे करती गुजरी। जोहड पर वे उतरने लगी। मकार ने जो ऐसे ही खडा उन्हे ताक रहा था, उन्हे पत्थरो की तरह जोहड मे गिरते देखा, सरकडो से ढके छोटे-से टापू के पास पानी मानो खौल उठा। जोहड के बाध से डरे हसो का झुड उडा।

स्तेपी निर्जन थी। मकार बडी देर तक टीले के नीचे लेटा रहा। शुरू में उसे पास मे चरते घोडे की फूत्कार, उसके दहाने की खड-खड

सुनायी दे रही थी पर कुछ देर बाद घोडा घाटी मे उतर गया जहा हरियाली अधिक घनी थी, और ऐसी नीरवता छा गयी जैसी पतझड मे छा जाती है जब लोग स्तेपी मे काम पूरा करके घरो को लौट जाते है।

'घर पहुचकर अंद्रेई और दवीदोव मे विदा लूगा, वहीवाला फौजी ग्रेटकोट पहनूगा, जिसे पहनकर पोलिश मोर्चे से लौटा था और गोली मार लूगा अपने को! क्रान्ति को इससे कोई फर्क नही पडेगा। क्या कम लोग उसका समर्थन कर रहे है? एक कम, एक ज्यादा, क्या फर्क पडता है " पेट के बल लेटा मकार घास के तिनको को निहारता उदासीनता के साथ सोच रहा था, मानो अपने बारे मे नही बल्कि किसी पराये के बारे मे सोच रहा हो। दवीदोव शायद मेरी कब्र पर कहेगा 'हालाकि नागुल्नोव को पार्टी से निकाल दिया पर फिर भी वह अच्छा कम्युनिस्ट था। आत्महत्या करने की उसकी कार्यवाही का हम अनुमोदन नही करते, फैक्ट, पर उस ध्येय को जिस के लिये वह विश्व प्रतिक्रान्ति मे संघर्ष कर रहा था हम पूरा करेगे!' और यह कल्पना करके मकार का खून खौल उठा कि मुस्कराता हमामची अपनी सफेद-सी मूछो को ताव देता भीड मे यह कहता फिरेगा "भगवान का शुक्र है, एक से तो छुट्टी मिली! कुत्ता—कुत्ते की ही मौत मरा!"

"नही, साप की दुम! नही मारूगा अपने को गोली! पहले तुम जैसो का सफाया करके रहूगा!" मकार दात पीसकर जोर से बोला और ऐसे उछलकर खडा हुआ मानो उसे बिच्छू ने डक मारा हो। हमामची का खयाल आते ही उसने फैसला बदल दिया और नजरो से घोडे को खोजते हुए उसने सोचा "अगूठा चूसो! तुम सबको मारकर ही मरूगा! मेरी मौत की खुशिया मनाना तुम्हे नसीब नही होगा! और कोर्चजीन्स्की का फैसला क्या अतिम है? बोवाई पूरी होने पर मडल समिति जाऊगा। बहाल कर देगे! मास्को तक जाऊगा! अगर काम नही हुआ तो ऐसे ही, पार्टी की सदस्यता के बिना भी दुश्मनो से लडूगा!'

उसने चमकीली आखो से अपने चारो ओर नजर दौडायी। उसे महसूस हो रहा था कि उसकी स्थिति इतनी खराब, निराशाजनक नही है जैसी कि उसे कुछ घटे पहले लगी थी।

वह जल्दी से उस घाटी मे उतरा जहा घोडा था। उसके कदमो

32–1152

की आहट सुनकर जंगली घास से ढके तोदे पर मादा भेड़िया उठकर खड़ी हुई। पल भर वह आदमी को ताकती रही फिर कान झुकाकर, दुम दबाकर मांद में भाग गयी। उसके काले थन पिचके पेट पर थुलथुल लटके हुए थे।

जैसे ही मकार घोड़े के पास गया उसने झटके से सिर हिलाया। टांग से बंधी रास टूट गयी।

"पुच-पुच!" मकार फुसफुसाकर घोड़े को शांत करा रहा था, वह पीछे से जाकर घोड़े की अयाल या रक़ाब को पकड़ना चाहता था।

सिर हिलाते हुए समंद चाल तेज़ कर देता और कनखियों से सवारी को देखता। मकार दौड़ पड़ा पर घोड़े ने उसे पास नही आने दिया, वह बिदककर उछला और गांव की ओर सरपट दौड़ पड़ा।

मकार गाली देकर उसके पीछे-पीछे चल दिया। गांव के पास नज़र आते खेत की दिशा लेकर वह ऊबड़-खाबड़ रास्ते से कोई तीन-एक वेर्स्ता चलता रहा। लहलहाती घास के मैदानों में तरह-तरह के पक्षी विचर रहे थे ..

स्तेपी में महान सृजन हो रहा था: घनी घास उग रही थी, पशु-पक्षी ब्याह रच रहे थे, बस मानव द्वारा परित्यक्त जोते, बिना बीज पड़े खेत मौन आकाश को ताक रहे थे ..

मकार जोत में मिट्टी के सूखे लौंदों पर क़दम रखता ग़ुस्से में चल रहा था। वह झट से झुककर मिट्टी उठाता और हथेलियों मे मसलता। मुरझायी घास से मिली मिट्टी सूखी थी। बोवाई का समय निकलता जा रहा था! एक घंटे की भी देर किये बिना, फ़ौरन तीन-चार बार पाटा चलाकर, दबी मिट्टी को गोडकर ही भुरभुरी सीताओ में बोवाई मशीनें चलानी चाहिये ताकि गेहूं के सुनहरे बीज गहराई में गिरें।

"देर कर दी! ज़मीन का सत्यानास कर देंगे!" अकृष्ट काली निरवस्त्र जोतो को देखकर मकार के दिल में कसक उठी। उसने सोचा: "एक-दो दिन, और बस जोत बेकार हो जायेगी। ज़मीन भी घोड़ी की तरह है। मौसम आने पर झट से घोड़ा ढूंढ़ो नही तो वक्त निकलने पर वह नहीं ब्याहेगी। ज़मीन को भी आदमी की वक़्त पर ज़रूरत होती है! हरेक जानवर, हर पेड़ और ज़मीन भी अपना वक़्त जानते है पर लोग... हम किसी जानवर तक से बदतर हैं! देखो, इसीलिये नही आ रहे बोने कि माल-जायदाद उनके गले में अटक गयी... हराम-

जादे! अभी पहुचते ही सबको खेतो मे खदेड दूगा! एक-एक को!"

वह तेजी से चलता जा रहा था, कभी-कभी तो दौडने लगता। उसकी टोपी के नीचे से पसीना चू रहा था पीठ पर कमीज तर हो गयी, होठ सूख गये और गालो पर अस्वस्थ लाली के चकत्ते उभर आये

३५

जब वह गाव मे घुसा, अनाज का बटवारा पूरे जोरो पर था। ल्युबीश्किन अपनी टोली के साथ अभी तक खेत मे था। खत्ती के पास धक्का-मुक्की हो रही थी। हडबडी मे अनाज की बोरिया तराजू पर चढायी जा रही थी छकडे बारी-बारी से उसके पास आकर खडे होते जा रहे थे, मर्द और औरते गठरियो, बोरियो, चादरो मे अनाज उठाये लिये जा रहे थे, खत्ती की सीढियो पर अनाज की मोटी तह बिखरी पडी थी

नागूल्नोव फौरन स्थिति को भाप गया। गाववालो को धकेलते हुए वह तराजू के पास आया।

भूतपूर्व फार्म सदस्य इवान बाताल्शिकोव अनाज तौल-तौलकर दे रहा था, अदना अपोल्लोन पेस्कोवात्स्की उसकी मदद कर रहा था। खत्तियो के पास न रजम्योत्नोव था, न दवीदोव और न ही कोई टोली नायक। भीड मे पल भर के लिये मैनेजर याकोव लुकीच का अवाक् चेहरा दिखायी पडा पर वह भी बैलगाडियो के जमघट के पीछे छिप गया।

"किस ने अनाज ले जाने को कहा है?' बाताल्शिकोव को धकेलकर तराजू के पास खडे होकर मकार चिल्लाया।

"समाज ने "

' दवीदोव कहा है?"

"मै क्या उसके पीछे-पीछे घूमता हू!"

"प्रबध-मडल कहा है? प्रबध-मडल ने दी है अनुमति?"

देमीद घुन्ना जो तराजू के पास खडा था, मुस्कराया, उसने आस्तीन से पसीना पोछा। उसकी भारी आवाज सुनायी पडी

जिममें विश्वास और भोलेपन दोनो की झलक थी.

"हमने खुद, प्रबंध-मंडल के बिना अनुमति ली है। खुद ले रहे है!"

"खुद? . यह बात है?!" नागूल्नोव लपककर खत्ती की सीढ़ी पर चढ गया, देहरी पर खड़े लड़के को उसने घूंसा मारकर धराशायी कर दिया, और धडाके मे दरवाजा बद करके उम पर पीठ टिकाकर खड़ा हो गया। "अपने-अपने घर जाओ! अनाज नही दूंगा! और जो भी खत्ती के पास फटकेगा उमे सोवियत सत्ता का दुश्मन मानूंगा! .."

"ओहो!" दिमोक बोला जो किसी पड़ोसी को छकडे पर अनाज की बोरियां लादने में मदद कर रहा था।

नागूल्नोव को वहां देखकर अधिकाश लोग चकित रह गये। नागूल्नोव के कस्बे जाने से पहले ही ग्रेम्याची मे यह अफवाह गर्म थी कि हमामची को पीटने के लिये नागूल्नोव पर मुक़दमा चलाया जायेगा और उमे पद से हटाकर जेल मे डाला जायेगा मुबह से ही यह मुनकर कि मकार कस्बे गया है हमामची ने घोषणा की

"नागूल्नोव अब नही आयेगा लौटकर! अभियोक्ता ने मुझे खुद बताया कि वे उसे कडी मे कडी मज़ा देगे! अब मकार को नानी याद आयेगी! पार्टी मे निकाल देगे तब पता चलेगा उसे किसानो को कैसे पीटते है। अब पुराना जमाना नही रहा!"

इमीलिये तराज़ू के पास नागूल्नोव को देखकर लोग हक्के-बक्के रह गये। पर जब वह तराज़ू के पास से जाकर खत्ती के दरवाज़े को बद करके खडा हुआ तो अधिकाश लोगो के होश फौरन लौट आये। दिमोक के "ओहो!" के बाद चिल्ल-पो मच गयी

"अब हमारी अपनी सत्ता है!"

"जनता की!"

"जरा चखा दो इमे मजा!"

"जा जहा मे आया है!"

"बडा आया हुक्म चलानेवाला, तेरी..."

सबमे पहले दिमोक खत्ती की ओर बढा, वह बाको की तरह कंधे नचाता, मुस्कान के साथ पीछे मुड़-मुडकर देखता चल रहा था। उसके पीछे-पीछे कुछ और मर्द हिचकिचाते हुए चल पड़े। उनमें से एक ने झुककर पत्थर उठा लिया ..

नागूल्नोव ने आराम से पतलून की जेब से रिवाल्वर निकाला और उसका घोडा चढाया। दिमोक हिचकिचाकर रुक गया। बाकी लोग भी रुक गये। भारी पत्थर से लैस हुए आदमी ने उसे हाथो मे उलट-पलटकर देखा और एक ओर गिरा दिया। सब जानते थे कि अगर नागूल्नोव ने घोडा चढाया है तो जरूरत पडने पर वह उसे बेहिचक दबा देगा। और मकार ने भी इसकी फौरन पुष्टि कर दी

"पहले सात कुत्तो को मार डालूगा तभी तुम खत्ती मे घुसोगे। कौन है पहला? आओ!"

इच्छुक नजर नही आये पल भर के लिये सब किंकर्तव्यविमूढ खडे रहे। दिमोक कुछ सोच रहा था, वह खत्ती की ओर जाते हुए हिचकिचा रहा था। नागूल्नोव रिवाल्वर की नाल झुकाकर चिल्लाया

"अपने-अपने घर जाओ! फौरन चले जाओ नही तो गोली चलाना शुरू करता हू! "

वह बात पूरी भी न कर पाया कि उसके सिर से कुछ ऊपर दरवाजे पर लोहे की कीली आकर पडी। दिमोक के यार येफीम त्रूबाचोव ने मकार के सिर का निशाना लगाकर वह मारी थी पर निशाना चूकता देखकर वह झट से बैलगाडी के पीछे छिप गया। नागूल्नोव ने ऐसा महसूस किया मानो वह युद्ध लड रहा हो। भीड से आये पत्थर से बचकर उसने हवा मे गोली चलायी और दौडकर सीढियो से उतर गया। भीड के पाव उखड गये। आगेवाले पीछेवालो का गिराते धकेलते भाग पडे, छकडो और बैलगाडियो के बम चरमराकर टूटने लगे, जमीन पर गिरी कोई औरत जोर से चीखी।

"नही भागो! उसके पास सिर्फ छ गोलिया बची है!" कही से प्रकट हुआ हमामची लोगो का जोश बढा रहा था, उन्हे भागने से रोक रहा था।

मकार फिर से खत्ती के पास लौट आया पर सीढी पर नही चढा, बल्कि दीवार के पास ऐसे खडा हो गया कि बाकी खत्तिया भी उसकी नजर मे रहे।

"मत पास आओ!" फिर से तराजू के पास आते दिमोक, त्रूबाचोव व अन्य लोगो को देखकर वह चिल्लाया। "छोरो, पास मत आओ! गोली मार दूगा!"

खत्तियो से कोई सौ कदम की दूरी पर खडी भीड से इवान बाता-

ल्शिकोव, अतामान्चुकोव और फ़ार्म के तीन भूतपूर्व मदस्य निकले। उन्होंने चालाकी से काम लेने का फ़ैसला किया। कोई तीस क़दम की दूरी पर रुककर बाताल्शिकोव ने हाथ उठाकर चेताया:

"कामरेड नागूल्नोव! रुको, हथियार मत उठाओ!"

तुम्हें क्या चाहिये? अपने-अपने घर जाओ, मैं कहता हूं!"

"अभी चले जाते है, पर तुम बेकार ही नाराज़ हो रहे हो... हमें अनाज लेने की अनुमति मिली है..."

"किस की?"

"मंडल से कोई आया है .. मंडल कार्यकारिणी समिति से शायद, उसी ने हमें दी है अनुमति।"

"पर कहां है वह? दवीदोव कहां है? और रज़म्योत्नोव?"

"वे दफ़्तर में बैठक कर रहे हैं।"

"झूठ बकता है, साले! .. मैं कहता हूं, हट जा तराज़ू के पास से! हटेगा या नही? .." नागूल्नोव ने बायें हाथ को मोड़ा और उस पर रिवाल्वर की घिसकर सफ़ेद हुई नाल टिकायी।

बाताल्शिकोव निडरता के साथ आगे बोला:

"नही विश्वास करते तो जाकर देख लो ख़ुद, अगर नही तो हम अभी उन्हें बुला लाते हैं। हथियार से धमकी मत दो, कामरेड नागूल्नोव, नही तो ख़ैर नही होगी! तुम किस की ख़िलाफ़त कर रहे हो? जनता की! सारे गांव की!"

"नही आओ पास! एक भी क़दम नही बढ़ाओ! तू मेरा कामरेड नही है! तू – क्रांति का दुश्मन है क्योंकि सरकारी अनाज लूटता है! . मैं तुम्हें सोवियत सत्ता को नही रौंदने दूंगा।"

बाताल्शिकोव कुछ और भी कहना चाहता था पर खत्ती के पीछे से दवीदोव निकला। बुरी तरह पिटाई के कारण सारा नीलों, खरोंचों और ख़ून के सूखे निशानों से ढका दवीदोव लड़खड़ाता आ रहा था। उसे देखकर नागूल्नोव चिल्लाकर बाताल्शिकोव की ओर दौड़ा: "आ-हा, कुत्ते! धोखा देता है मुझे? .. हम पर हाथ उठाता है?!"

बाताल्शिकोव और अतामान्चुकोव भाग खड़े हुए। नागूल्नोव ने दो बार उन पर गोली चलायी पर निशाना चूक गया। दिमोक बाड़ का खूंटा उखाड़ने लगा, बाक़ी लोग वहीं खड़े रोष के साथ घुड़घुड़ाने लगे।

"मैं तुम्हें सोवियत सत्ता को नहीं रौंदने दूंगा!" भीड़ की ओर दौड़ता हुआ मकार दांत पीसकर चिल्लाया।

"मारो साले को!"

"अरे कोई बंदूक़-शंदूक़ ही होती!" पिछली क़तारों में खड़ा याकोव लुकीच हाथ नचा-नचाकर आहें भर रहा था, वह बेमौक़े गये पोलोवत्सेव को कोस रहा था।

"कज़्ज़ाको! पकड़ लो इसके हाथ, क्या मुंह देख रहे हो?!" मरीना पोयार्कोवा का रोबपूर्ण, उत्तेजित स्वर गूंजा। वह सामने से दौड़कर आते मकार की ओर कज़्ज़ाकों को धकेल रही थी। देमीद घुन्ने के हाथ पकड़कर वह घृणा के साथ बोली:

"तू कैसा कज़्ज़ाक है?! डरता है?!"

और अचानक भीड़ बिखरकर चारों ओर दौड़ पड़ी, मकार की ओर भी लोग दौडने लगे...

"मिलीशिया!!!" वहशी आतंक में नास्त्या दोनेत्सकोवा चीखी।

ढलान पर बिखरकर कोई तीसेक घुडसवार अपने घोडों को सरपट दौड़ाते गाव की ओर आ रहे थे। उनके घोड़ों के सुमों मे वासती धूल के झीने गुबार उड रहे थे...

पाच मिनट बाद खाली चौक मे खत्तियो के पास सिर्फ़ दवीदोव और मकार बचे थे। घोड़ो की टाप पास आती जा रही थी। गांव के मैदान में घुड़सवार प्रकट हुए। सबसे आगे पावेल ल्युबीश्किन, लाप्शीनोव के रहवाल पर बैठा आ रहा था, उसके दायें हाथ पर सोटे से लैस चेचक के दाग़ों मे ढके चेहरे पर दृढ संकल्प का भाव लिये आगाफ़ोन दुबत्सोव था और उनके पीछे रग-बिरंगे घोड़ों पर दूसरी और तीसरी टोली के सदस्य बिखरे थे...

शाम को दवीदोव के बुलावे पर इलाक़ाई केन्द्र से मिलीशियामैन आया। उसने इवान बातार्लिशकोव, अपोल्लोन पेस्कोवात्स्की, येफ़ीम त्रूबाचोव और खेत में कुछ भूतपूर्व फ़ार्म सदस्यों को गिरफ़्तार किया जो कुछ ज़्यादा ही 'सक्रिय' थे। इग्नात्योनोक की बुढ़िया को घर पर गिरफ्तार किया। उसने गवाहों के साथ उन सबको क़स्बे भेज दिया.. दिमोक खुद ग्राम-सोवियत में हाज़िर हुआ।

"आ गये, मेरे कबूतर?" रज़म्योत्नोव ने विजयोल्लास के साथ पूछा।

उमकी ओर व्यग्यपूर्ण नजर डालकर दिमोक बोला

"हाजिर हू। अब लुका-छिपी खेलने का क्या फायदा, जब पत्ते ज्यादा आ गये "

"कैसे पत्ते?" रजम्योत्नोव ने भौहे सिकोडकर पूछा।

"अरे, ताश के जब जरूरत से ज्यादा पत्ते उठा लेते हो, ममझे? मुझे कहा जाना है?"

"कस्बे जाओगे।'

"पर मिलीशियामैन कहा है?"

"अभी आता है, क्यो उमसे मिलने को बेताब हो? लोक अदालत तुझे सिखा देगी कैसे अध्यक्षो पर हाथ उठाना चाहिये! लोक अदालत तुझे सही पत्ते बाटेगी! "

"इसमे कोई शक नही!" दिमोक सहर्ष मान गया और उबासी लेकर उसने अनुरोध किया "रजम्योत्नोव, मुझे नीद आ रही है। जब तक मिलीशियामैन नही आता तुम मुझे कोठरी मे बद कर दो, और मै सो लूगा थोडा। कृपा करके दरवाजा बाहर से बद कर देना नही तो मै नीद मे भाग जाऊगा!'

अगले दिन लूटे गये अनाज को जमा करने का काम शुरू हुआ। कल जिन लोगो ने अनाज लिया था उनके घर जाकर मकार बिना दुआ-सलाम के नजर छिपाकर मर्यादित स्वर मे पूछता

"अनाज लिया था?'

"लिया था "

"वापस लाओगे?"

"कोई दूसरा चारा नही है "

'ले जाओ,' यह कहकर विदा लिये बिना चला जाता।

फार्म मे निकल बहुत-मे लोगो ने बीज का अनाज जितना जमा करवाया था उससे अधिक ले लिया था। बटवारा सवाल जवाब के आधार पर हुआ। बाताल्शिकोव बेसब्री से पूछता "कितना गेहू दिया था?" – "सात पूद के हिसाब से दो हेक्टेयर के लिये।" – "अच्छा, चढाओ बोरिया तराजू पर!"

पर वास्तव मे लेनेवाले ने बीज जमा करने के समय सात-चौदह पूद कम जमा करवाया था। इसके अलावा कोई सौ पूद अनाज औरते झोलियो और थैलो मे भरकर ले गयी।

शाम तक सारा गेहू जमा किया जा चुका था बस कुछेक पूद कम रहा। सिर्फ कोई बीस पूद जई और मकई की कुछ बोरिया कम पडी। शाम को ही निजी खेती करनेवालो को उनके सारे बीज वापस लौटा दिये गये।

ग्रेम्याची मे गाव की सभा अधेरा छाने के बाद शुरू हुई। स्कूल मे जमा अपूर्व भीड के सामने दवीदोव बोल रहा था

"नागरिको, अभी हाल ही तक फार्म सदस्य रह चुके लोगो और कुछ निजी किसानो के कल के दगे का क्या मतलब है? इसका मतलब है कि वे कुलक तत्वो की ओर झुक गये है! यह तथ्य है कि वे हमारे दुश्मनो के पक्ष मे झुक गये है। उन नागरिको के लिये यह बडी शर्म की बात है, जो कल खत्तियो से अनाज लूट रहे थे, पैरो से उसे कुचल रहे थे, झोलियो मे भर-भर कर उसे ले जा रहे थे। नागरिको, आप मे से कुछेक आवाजे लग रही थी कि औरते मुझे पीटे, और उन्होने जो हाथ लगा उससे मुझे पीटा, और एक नागरिकनी तो रो तक पडी जब मैने आह तक न की। मै तेरे बारे मे कह रहा हू!" और दवीदोव ने दीवार का सहारा लेकर खडी नास्त्या दोनेत्सकोवा की ओर इशारा किया, जब दवीदोव ने बोलना शुरू किया तो उसने हडबडाकर रूमाल से मुह ढाप लिया था। "यह तू ही तो थी जो मेरी पीठ पर मुक्के बरसा रही थी और खुद ही चिढकर रो रही थी, तू ही तो कह रही थी 'मै इसे पीटे जा रही हू पर यह पत्थर की मूरत की तरह उफ तक नही कर रहा!'"

नास्त्या का ढका चेहरा शर्म से लाल था। सब लोग उसकी ओर देख रहे थे और वह सिर झुकाकर शर्म से गडी जा रही थी, पीठ से दीवार की सफेदी पोछ रही थी।

"देखा तो पाव से कुचली नागिन की तरह बल खा रही है डायन!" द्योम्का उशाकोव से चुप न रहा गया।

"सारी दीवार की सफेदी झाड दी!" चेचकरू आगाफोन उशाकोव भी बोला।

"ओ छमकछल्लो, मत मटक! मारते वक्त तो शर्म नही आयी, अब क्यो नही मिलाती लोगो से आखे?!" ल्युबीश्किन गुर्रा कर बोला।

दवीदोव निष्ठुरता से बोले जा रहा था, पर फूटे होठो पर मुस्कान भी झलक आयी जब उसने कहा

"   यह चाहती थी कि मै घुटनो पर बैठकर दया की भीख मागू, खत्तियो की चाबिया इसे दे दू! पर, नागरिको, हम बोल्शेविक ऐसी मिट्टी के नही बने कि जो चाहे अपने साचे मे ढाल ले! गृहयुद्ध मे कैडेटो ने मुझे पीटा था पर कुछ बिगाड नही पाये। बोल्शेविको ने कभी भी किसी के सामने घुटने नही टेके और न कभी टेकेगे, फैक्ट!"

"बिल्कुल ठीक है!" मकार नागूल्नोव के कापते, उद्विग्न स्वर मे भावुकना की झलक थी।

"   नागरिको, हमे खुद को सर्वहारा के दुश्मनो के घुटने टिकवाने की आदत है। और हम टिकवाकर रहेगे।"

"   हा, दुनिया भर मे टिकवा देगे उनके घुटने, पर कल आपने मे बोल पडा।

"   हा, दुनिया भर मे टिकवा देगे उनके घुटने, पर कल आपने इस दुश्मन को अपना समर्थन दिया। यह क्या है, नागरिको, खत्तियो के ताले तोड लिये, मुझे पीटा और रजम्योत्नोव को पहले हाथ-पाव बाधकर तहखाने मे बद कर दिया और फिर ग्राम-सोवियत मे ले गये, रास्ते मे उसके गले मे सलीब लटकाना चाहते थे? यह प्रतिक्रातिकारी विद्रोह है! हमारे फार्म के सदस्य मिखाईल इग्नात्योनोक की मा, जिसे गिरफ्तार कर लिया गया है, जब रजम्योत्नोव को ले जा रहे थे, चिल्ला रही थी 'अधर्मी, ख्रीस्त-विरोधी को ले जा रहे है! नरक के शैतान को!' और औरतो की मदद मे वह उसके गले मे सलीब लटकाना चाहती थी, पर हमारा कामरेड रजम्योत्नोव एक सच्चे कम्युनिस्ट के नाते ऐसा उपहास नही सह सकता था। वह औरतो और पादरियो के बहकावे मे आयी कूढमगज बुढियो से कह रहा था 'मै ईसाई नही हू, मै कम्युनिस्ट हू! अपना सलीब हटाओ!' पर तब तक उन्होने इसका पिड नही छोडा जब तक इसने दातो से सलीब लटकानेवाली डोरी को नही कुतर दिया और सिर-टागे न चलाने लगा। यह क्या है, नागरिको? यह प्रतिक्राति है और कुछ नही! और लाक अदालत मिखाईल इग्नात्योनोक की मा जैसे लोगो को कडी सजा देगी।"

'मै अपनी मा के लिये जिम्मेदार नही हू! उसे खुद को मताधिकार प्राप्त है, अपने आप भुगते अपनी करनी को!" अगली कतारो से मिखाईल इग्नात्योनोक चिल्लाकर बोला।

"और मै भी तुम्हारे बारे मे थोडे ही कह रहा हू! मै उन लोगो

के बारे मे कह रहा हू जिन्होने गिरजे बद कराये जाने पर शोर मचाया था। उन्हे गिरजो का बद किया जाना अच्छा नही लगा, पर खुद जबरदस्ती एक कम्युनिस्ट को सलीब पहना रहे थे तो कोई बात नही हुई! उन्होने खुद अपने पाखड का पर्दाफाश कर दिया! उन लोगो को जिन्होने बलवा भडकाया और जिन्होने उसमे सरगर्मी दिखायी गिरफ्तार कर लिया गया है। पर बाकी लोगो को जो कुलको के बहकावे मे आ गये, समझना चाहिये कि वे सही रास्ते मे भटक गये। मै सच कह रहा हू किसी ने पुर्जा भेजा है, उसमे पूछा गया है 'क्या यह सच है कि जो लोग अनाज ले गये थे उन सबको गिरफ्तार करके उनकी सपत्ति जब्त कर ली जायेगी और यहा से निष्कासित कर दिया जायेगा?' नही, नागरिको, यह गलत है! बोल्शेविक बदला नही लेते, वे तो सिर्फ दुश्मनो को बेरहमी से कुचलते है पर आप लोगो को, हालाकि कुलको के कहने मे आकर आप सामूहिक फार्म से निकल गये, हालाकि आपने अनाज लूटा और हमे पीटा पर फिर भी हम दुश्मन नही मानते। आप लोग – हिचकिचाने मझौले किसान है जो कुछ समय के लिये भ्रम मे पडे है, और हम आपके खिलाफ कोई प्रशासकीय कार्यवाही नही करेगे, बल्कि आपकी आखे खोलेगे।"

स्कूल मे खुसर-पुसर होने लगी। दवीदोव आगे बोला

"और तू भी, नागरिकनी, डर मत, चेहरा खोल अपना, कोई तुझे कुछ नही करेगा हालाकि कल तूने मेरी बडी धुनायी की। पर अगर कल, जब बोवाई करने जायेगे तू ठीक से काम नही करेगी तो मै तेरी ऐसी धुनायी करूगा कि नानी याद आ जायेगी! पर मै पीठ पर नही, बल्कि कुछ नीचे मारूगा ताकि तू न बैठ सके, न लेट!"

हल्की-सी हसी पिछली कतारो तक जाते-जाते बेतकल्लुफ ठहाको मे बदल गयी।

" नागरिको, बस हो गयी मटरगश्ती! बोवाई का वक्त निकलता जा रहा है, काम करना चाहिये न कि गाल बजाना! बोवाई के बाद जी भरकर लड-झगड सकते हो मै सवाल को इस तरह रखता हू जो सोवियत सत्ता के पक्ष मे है वह कल से खेत मे जा रहा है और जो खिलाफ है, वह गिरिया चबाता रहे। पर जो कल बोवाई नही करने गया उसकी हम, यानी सामूहिक फार्म, जमीन छीन लेगे और खुद बो देगे!"

दवीदोव आकर मच पर रखी मेज पर बैठ गया और जब उसने पानी के जग की ओर हाथ बढाया, पिछली कतारो से, तेल के लैप के नारगी झुटपुटे मे किसी का हार्दिक, उल्लासित स्वर भावुक होकर बोला

"दवीदोव तुम्हारी जय! प्यारे दवीदोव! तुम कितने अच्छे हो बुरी बातो को दिल से निकाल देते हो, बुरी बाते भूल जाते हो लोग घबरा रहे है झेप के मारे नजरे छिपाते है, शर्म आती है लुगाइया भी शर्म से जमीन मे गडी जा रही है आखिर हमे तो साथ रहना है दवीदोव, आओ यह फैसला करे जो हो गया, सो हो गया! क्यो?"

* * *

अगले दिन सुबह फार्म के पचास भूतपूर्व सदस्यों ने उन्हे फिर से सामूहिक फार्म मे भरती करने के प्रार्थना-पत्र दिये। पौ फटते ही निजी किसान और ग्रेम्याची के सामूहिक फार्म की तीनो टोलिया खेतो मे चली गयी।

ल्युबीश्किन ने खत्तियो पर पहरा बिठाने का सुझाव दिया पर दवीदोव मुस्कराकर बोला

"अब, मेरे खयाल मे इसकी कोई जरूरत नही "

चार दिन मे सामूहिक फार्म ने पतझड मे जुती आधी जोतो पर बोवाई कर डाली। २ अप्रैल को तीसरी टोली ने बसत की जुताई शुरू कर दी। इन दिनो दवीदोव सिर्फ एक बार फार्म के दफ्तर मे गया था। उसने काम करने मे समर्थ सब लोगो को खेत मे भेज दिया, बुड्ढे श्चुकार तक को साईस के काम से अस्थायी छुट्टी देकर दूसरी टोली मे भेज दिया। वह खुद पौ फटते ही खेतो मे चला जाता और आधी रात के बहुत बाद जब मुर्गे सवेरा होने की तैयारी मे बाग लगाते, वह गाव लौटता।

३६

फार्म के प्रबध-मडल के अहाते मे नीरवता छायी थी। घास से ढका अहाता गाव के मैदान जैसा लग रहा था। खत्ती की छत पर ललौही खपरैले धूप मे तपकर चमक रही थी, पर कोठरियो की छाया मे कुचली घास पर अभी तक ओस की जामनी-सी बूदे लटकी थी।

अहाते के बीचो-बीच अत्यत दुबली भेड पिछली टागे चौडी करके खडी थी और पास मे घुटनो पर झुककर मा की तरह सफेद ऊनवाला मेमना थन चूम रहा था।

ल्युबीश्किन ने नाटी दूध पिलाती घोडी पर अहाते म प्रवेश किया। कोठरी के पास मे गुजरते हुए उसने गुस्से मे, छत पर से उसे अपनी शैतान जैसी हरी आखो मे घूरने बकरे को चाबुक मारा और बडबडाया

"शैतान की औलाद, तुझे छतो पर चढने का चसका पडा गया! भाग यहा से!"

ल्युबीश्किन गुस्से मे बहुत चिडचिडा था। वह स्तेपी मे आया था, घर गये बिना वह सीधा दफ्तर आया। उसकी नाटी घोडी के पीछे-पीछे अपनी झबरीली पूछ उठाये, पतली टागोवाला बछेडा, गले मे बधी घटी को टनटनाता दौड रहा था। ल्युबीश्किन के कद के हिसाब से घोडी इतनी नाटी थी कि रकाबे घोडी के घुटनो से नीचे झूल रही थी। ऐसा लगता था कि घुडसवार झुककर घोडी को अपनी टागो मे दबाकर ले जा रहा है जैसे एक कहानी का वीर ड्योढी पर खडा द्योम्का उशाकोव ल्युबीश्किन का देखकर चिहुक उठा।

"अरे, तुम तो गधे पर बैठकर येरुशलम जाते ईसा मसीह जैसे लग रहे हो हजरत!"

"तुम खुद गधे हो!" ड्योढी के पास पहुचकर ल्युबीश्किन घुडका। "और टागे तो ऊपर उठा लो, तुम तो पैरो से जमीन जोतते चल रहे हो!"

ल्युबीश्किन चुपचाप घोडे से उतरा और लगाम को रेलिग से बाधकर कडे स्वर म द्योम्का से पूछा

"दवीदोव यहा है?"

"यही है। बैठा-बैठा तुम्हारी याद मे तडप रहा है, तुम्हे देखने

को उतावला है। दो दिन से मुह मे अन्न-जल नही डाला, बस एक ही बात रटता रहता है 'कहा है मेरा पावेल ल्युबीश्किन? उसके बिना तो जीना बेकार है, इस दुनिया से मेरा मन भर गया!"

"और कर बक-बक! तेरी जीभ अगर लम्बी है तो मै अभी काट देता हू!"

द्योम्का ने ल्युबीश्किन के चाबुक पर तिरछी नजर डाली और चुप हो गया और ल्युबीश्किन अदर चला गया।

दवीदोव और रजम्योत्नोव ने अभी-अभी महिला सभा की प्रतिनिधियो के साथ शिशुशाला खोलने के प्रश्न पर विचार-विमर्श समाप्त ही किया था। जब औरते बाहर चली गयी, ल्युबीश्किन मेज के पास आया। उसकी पतलून मे बाहर निकली कधो पर मैली सूती कमीज मे पसीने धूप और धूल की भभक उठी

"मै टोली से आया हू"

"क्यो आये हो?" दवीदोव ने भौहे तानकर पूछा।

"कुछ काम नही बन रहा! मेरे पास काम करने लायक अट्ठाइस लोग बचे है पर वे काम नही करना चाहते, बेगार टाल रहे है मै उनके साथ कुछ कर नही पा रहा। इस वक्त मेरे यहा बारह हल काम कर रहे है। बडी मुश्किल से हलधरो को जुटाया। अकेला कोद्रात माइदान्निकोव बैल की तरह काम कर रहा है, पर अकीम बेसख्लेब्नोव, सेम्योन क्रूझेन्कोव या मुस्टडा अतामान्चुकोव और बाकी लोग तो खून के आसू है न कि हलधर! देखने मे तो ऐसा लगता है मानो उन्होंने जिंदगी मे कभी हल छुआ ही न हो! ले-देकर जोतते है। एक फेरा लगाकर सिगरेट पीने बैठ जाते है, लाख कहने पर टस मे मस नही होते।"

"दिन मे कितना जोतते हो?"

"माइदान्निकोव और मै दो-दो एकड जोतते है और ये–एक-एक से ज्यादा नही। अगर ऐसे ही जोतते रहे तो एकादशी पर मकई बोनी पड जायेगी।"

दवीदोव ने कुछ बोले बिना पेंसिल से मेज पर ठक-ठक की और चुपके से पूछा

"पर तुम आये क्यो हो? ताकि हम तुम्हे दिलासा दे?" और गुस्से से उसने आख तरेरी।

ल्युबीश्किन कुलबुलाकर बोला

"मै रोने के लिये नही आया। तुम मुझे लोग दो और हल भी बढा दो, मजाक तो मुझे भी करना आता है।"

"मजाक तो तुम्हे करना आता है पर काम का प्रबध करने मे ढीले हो। कैसे टोली-नायक हो?। आलसियो को ठीक नही कर सकते। और ठीक कर भी कैसे सकते हो जब तुमने अनुशासन मे ढील दे रखी है, हर चीज की सहिष्णुता पाल ली है।"

"तुम जरा ढूढकर तो दिखाओ अनुशासन को।" उत्तेजना के कारण पसीने से तर ल्युबीश्किन चिल्लाया। "वहा हर बात मे अतामान्चुकोव की चलती है। वही मेरे लोगो को बिगाड रहा है, उन्हे सामूहिक फार्म से निकलने को उकसा रहा है, उस हरामजादे को फार्म से निकालकर तो देखो वह अपने साथ दूसरो को भी ले जायेगा। तुम, सेम्योन दवीदोव, क्या मेरा मखौल उडा रहे हो? तुमने लगडे-लूलो को मेरे मत्थे मढ दिया और ऊपर से काम की माग कर रहे हो? उस बुड्ढे श्चुकार का ही मै क्या करू? वह बातूनी शैतान तो सिर्फ खेत मे पुतले की तरह खडे होकर चिडियो को डराने के काम के ही लायक है और तुमने उसे मेरी टोली पर मढ दिया। उसका फायदा क्या? हलधर का काम नही कर सकता, हकवैये का भी नही। आवाज उसकी चिडिया जैसी है, बैल तक उसे आदमी नही मानते, बिल्कुल भी नही डरते। वह जुए से लटक जाता है, ससुरा, और एक ही फेरे मे दस-दस बार गिर पडता है। कभी वह रुककर जूते बाधने लगता है, तो कभी लेटकर टागे उठाता है और अपनी नाल चढाने लगता है। और लुगाइया बैलो को छोडकर हसती हुई शोर मचाने लगती है 'श्चूकार की नाल उतर गयी!' और दौडकर यह देखने जाती है कि वह कैसे लटकी नाल को जगह पर बिठायेगा। यह काम कहा, नाटक है। उसकी नाल की वजह से कल हमने उसे बावर्ची का काम सौपा, पर वह वहा भी बेकार और नुकसानदेह निकला। मैंने उसे खिचडी मे डालने के लिये बैक-फैट दिया पर वह खुद उसे खा गया, और खिचडी मे इतना नमक डाल दिया और ऊपर से न जाने कहा से झाग आ गये। तुम बताओ मै उसका क्या करू?" ल्युबीश्किन की काली मूछो के नीचे होठ फडके। उसने चाबुक उठाया और निराशा के साथ बोला "मुझे टोली-नायक के काम से हटा दो, ऐसे लोगो से काम कराना मेरे बस

की बात नही, वे मेरे काम मे भी टगडी अडाते है! ."

"तुम दया की आशा छोड दो! हमे मालूम है कि तुम्हे कब काम से हटाना है, अब खेत मे जाओ और देखना कि शाम तक बारह हेक्टेयर पर जुताई पूरी हो जाये। अगर यह नही किया तो बाद मे बुरा मत मानना! दो घटे बाद आकर जाच करूगा। जाओ।"

ल्यूबीश्किन धडाक मे दरवाजा बद करके दौडता हुआ ड्योढी मे उतरा। रेलिग मे बधी घोडी उदास खडी थी। उसकी बैगनी-सी आखो मे धूप की सुनहरी रश्मिया प्रतिबिबित हो रही थी। काठी पर बिछे टाट को ठीक करके ल्युबीश्किन धीरे से उस पर सवार होने लगा। द्योम्का उशाकोव ने आखे मिचमिचाकर व्यग्यपूर्ण लहजे मे पूछा

"कामरेड ल्युबीश्किन, आपकी टोली ने जुताई काफी कर ली है?"

"तेरा इससे कोई वास्ता नही "

"अच्छा! पर जब तुम्हे मदद देने आना पडेगा तब तो मेरा वास्ता हो जायेगा!"

ल्यूबीश्किन ने कसकर मुट्ठी भीची कि उगलिया सुन्न हो गयी और द्योम्का को घूसा दिखाकर बोला

"आकर तो देखना! मै तुझ भेगे की आखे सीधी कर दूगा! गुद्दी पर लटका दूगा और उल्टे पाव चलना सिखा दूगा!"

द्योम्का ने उपेक्षा के साथ थूककर कहा

"बडा आया है हकीम कही का! तू पहले अपने हलधरो का तो इलाज कर ताकि वे जल्दी-जल्दी जुताई करे "

ल्युबीश्किन घोडे को सरपट दौडाता फाटक से निकला और स्तेपी की ओर मुड गया मानो चढाई करने जा रहा हो। बछेडे के गले मे लटकी घटी की टन-टन अभी सुनायी ही दे रही थी कि दवीदोव ने ड्योढी पर निकलकर द्योम्का से जल्दी मे कहा

"मै कुछ दिन के लिये दूसरी टोली मे जा रहा हू, तुम को अपने स्थान पर छोडे जा रहा हू। शिशुशाला के प्रबध पर नजर रखना, जरूरत पडने पर मदद कर देना। तीसरी टोली को जई मत देना, सुन रहे हो? अगर कोई परेशानी हो तो फौरन आ जाना मेरे पास। समझे? अच्छा, घोडा जोतो और रजम्योत्नोव को कह दो कि वह मुझे लिवाने आ जाये। मै घर पर हूगा।"

"मै न चला जाऊ अपने लोगो के साथ ल्युबीश्किन की मदद को?" द्योम्का ने प्रस्ताव किया पर दवीदोव झिडककर बोला

"तुम भी खूब हो! उन्हे खुद अपना काम करना चाहिये! जाकर उनकी दुम मरोडता हू, तब देखते है कैसे नही करेगे काम! जोतो घोडा!"

छकडे मे जुते फार्म-कार्यालय के घोडे को लेकर रजम्योत्नोव दवीदोव के घर पहुचा। दवीदोव फाटक के पास बगल मे छोटी-सी पोटली दबाये उसकी प्रतीक्षा कर रहा था।

"बैठो। तुम यह क्या खाना बाधकर ले जा रहे हो?" रजम्योत्नोव ने मुस्कराकर पूछा।

"कपडे है।'

"कैसे कपडे? किसलिये?"

' अरे कच्छा-बनियान है।"

"पर किसलिये?"

"अरे खडे क्यो हो? चलाओ। कपडे इसलिये ले जा रहा हू कि चीलडो को नही पालना चाहता, समझे? टोली मे जा रहा हू और मैने तब तक वही रहने का फैसला किया जब तक जुताई पूरी नही हो जाती। मुह बद करो और हाको घोडे को।"

"तुम कही पागल तो नही हो गये? तुम जुताई पूरी होने तक वहा करोगे क्या?"

"जुताई।"

"दफ्तर छोडकर जुताई करने जाओगे? वाह, क्या दूर की सोची है!"

"चलो-चलो!" दवीदोव नाक-भौ सिकोडकर बोला।

"तुम मुझे नही हाको!" रजम्योत्नोव को शायद गुस्सा आने लगा था। "तुम मुझे ठीक से समझाओ, क्या तुम्हारे बिना उनका काम नही चलेगा? तुम्हारा काम निर्देशन करना है, हल चलाना नही! तुम फार्म के अध्यक्ष हो "

दवीदोव की आखो म क्रोध चमका

"तुम मुझे सिखाओगे?! मै सबसे पहले कम्युनिस्ट हू, और फिर इसके बाद ही सामूहिक फार्म का अध्यक्ष! मेरे यहा जुताई का काम मारा जा रहा है और मै यहा हाथ पर

हाथ धरे बैठूगा ? चलो ! मै कहता हू, चलाओ !"

"मुझे क्या फर्क पडता है ! क्या, तू अधा हो गया है !" रजम्योत्नोव ने घोडे पर चाबुक बरसाया।

झटके से दवीदोव पीछे को लुढका, उसकी कोहनी बडे जोर से तख्ते मे टकराई। पहिये हौले मे खट-खट करते स्तेपी जानेवाली कच्ची सडक पर चलने लगे।

गाव से निकलकर रजम्योत्नोव घोडे को दुलकी चाल से चलाने लगा। घाव के निशानवाले अपने माथे को आस्तीन से पोछकर वह बोला

"तुम, दवीदोव, बेवकूफी कर रहे हो ! तुम उनके यहा काम का सही प्रबध करके फौरन लौट आओ। भइया, हल चलाना कोई बडी बात नही है ! अच्छे कमाडर का काम लडाई मे आगे-आगे चलना नही बल्कि अपने लोगो को सही आदेश देना होता है। मै तो तुम्हे यही कहूगा !"

"कृपा करके, अपने उदाहरण अपने पास ही रखो ! मुझे उनको काम करना सिखाना है और सिखाकर रहूगा, फैक्ट ! यही है अगुआई ! पहली और तीसरी टोली ने अनाज की फसले बो दी है पर दूसरी टोली पिछड गयी, लगता है ल्युबीश्किन अकेला नही सभाल पायेगा। और तुम हो कि 'अच्छे कमाडर' जैसी बाते कर रहे हो। तुम क्यो मेरी आखो मे धूल झोक रहे हो ? तुम क्या सोचते हो कि मैने अच्छे कमाडर नही देखे है ? वही अच्छा होता है जो कठिनाई के क्षणो मे अपना व्यक्तिगत उदाहरण दिखाकर लोगो की अगुआई करता है। और मुझे भी अगुआई करनी है ! "

"बेहतर तो यही होता कि तुम पहली टोली से उन्हे दो हल भिजवा देते।"

"और लोग ? लोग कहा से लाऊगा ? चलाओ ! कृपा करके तेजी से चलाओ !"

कटक तक वे मौन रहे। स्तेपी के ऊपर सूरज को छिपाकर सिर के ऐन ऊपर हवा से मथी ओलोवाली गहरी जामनी घटा छायी थी। उसकी हिम की तरह शुभ्र किनारिया उफन रही थी पर काली भयावह चोटी स्थिर खडी थी। घटा मे बने छिद्र से, सूरज द्वारा नारगी रगे किनारे से धूप की तिरछी किरणो का चौडा पुज धरती पर पड रहा

था। सूर्य की किरणे क्षितिज पर फैली सुदूर भूरी स्तेपी मे विचित्र रग भर रही थी, उसमे अल्हड-जवानी भर रही थी

घटा की छाया मे मौन स्तेपी वर्षा की प्रतीक्षा कर रही थी। हवा सडक पर सुरमई धूल का गुबार उडा रही थी। हवा मे अभी से वर्षा की नमी की सुगध बसी थी। और एक-दो मिनट बाद बारिश के मोटे छीटे पडने लगे। मोटी-मोटी ठडी बूदे सडक की धूल मे गिरकर कीचड की नन्ही-नन्ही गोलियो मे बदल जाती। मार्मट चिन्ता के साथ सीटिया बजाने लगे टिड्डो की चहचहाटे तेज हो गयी मादा को पुकारते हुकने की उत्तेजित आवाज रुक गयी। ज्वार की खूटी मे सतही हवा का तेज झोका आया और वह खड-खड हिलने लगी। स्तेपी मे सूखे झाड-झखाड की सरसराहट भर गयी। घटा के लटके सिरे के बिल्कुल पास, वायु प्रवाह मे डैने फैलाकर एक कौआ पूर्व की दिशा मे विसर्पण कर रहा था। आकाश मे सफेद बिजली चमकी और कौआ काय-काय करता अचानक तेजी से नीचे गिरने लगा। पल भर के लिये उस पर सूरज की किरण पडी और वह अलकतरे की धधकती मशाल की तरह चमका। उसके परो से कटती हवा तूफान की तरह सीटी बजा रही थी पर जमीन से कोई पचास गज की ऊचाई पर सीधा होकर डैने चलाने लगा और उसी क्षण कर्णभेदी गरज हुई।

कटक पर दूसरी टोली का शिविर दिखायी पडा रजम्योत्नोव का ढलान पर उतरता एक व्यक्ति नजर आया जो उन्ही की ओर आ रहा था। वह गड्ढो को फादता कभी-कभी फुदककर वृद्धो की तरह दौडने लगता। रजम्योत्नोव ने घोडे को उसकी ओर मोड दिया और दूर ही से उसने बुड्ढे इचुकार को पहचान लिया। लगता था कि इचुकार के साथ कोई अप्रिय घटना हुई है वह छकडे के पास आया। उसके नगे सिर पर बाल बारिश से गीले हो गये थे गीली दाढी और भौहो पर बाजरे के उबले दाने जगह-जगह चिपके थे। इचुकार के चेहरे पर हवाइया उड रही थी, उसे देखकर दवीदोव का माथा ठनका "टोली मे कुछ गडबड हो गयी झगडा हो गया!"

"क्या हुआ?" उसने पूछा।

"बडी मुश्किल से जान बचा पाया!" इचुकार ने नि श्वास छोडकर कहा। "मुझे जान से मारना चाहते थे"

"कौन?"

"ल्युबीश्किन और दूसरे।"

"क्यों?"

"उनके नखरों की वजह से... दलिये के कारण... मैं चुप रहने-वालों में नहीं हूं, मुझसे नहीं सहा गया... बस ल्युबीश्किन छुरा उठा-कर मेरे पीछे दौड़ पड़ा... अगर मैं फ़ुर्तीला न होता तो इस वक़्त छुरा मेरे आर-पार होता! मरा पड़ा होता!.."

"अच्छा गांव जाओ, बाद में देखेंगे," दवीदोव ने हल्की सांस लेकर उसे आदेश दिया।

...और आधे घंटे पहले बात यह हुई थी: बुड्ढा श्चुकार एक दिन पहले खिचड़ी में बहुत ज़्यादा नमक के कारण रुष्ट टोली को खुश करने के लक्ष्य से शाम को गांव के लिये रवाना हुआ, रात वहीं बिताकर सुबह को उसने घर से बोरी उठायी और रास्ते में गांव के छोर पर रहनेवाले क्रास्नोकूतोव के खलिहान की ओर मुड़ गया, बाड़ फांदकर वह चोकर के ढेर के पास चोर की तरह छिपकर बैठ गया। बुड्ढे श्चुकार की योजना बड़ी सरल-सीधी थी: सावधानी से मुर्ग़ी पकड़कर उसे हलाल करना और मुर्ग़ी के मांस के साथ दलिया बनाकर टोली का आदर-सम्मान प्राप्त करना। वह सांस रोककर कोई आधे घंटे लेटा रहा, पर मुर्ग़ियां दूरी पर ही दाना चुग रही थीं, चोकर के ढेर के पास फटकने का नाम ही नहीं ले रही थीं। तब बुड्ढा श्चुकार धीरे-धीरे उन्हें बुलाने लगा: "कुट-कुट-कुट!.." वह शिकारी पशु की तरह चोकर के ढेर के पीछे छिपकर फुसफुसाते उन्हें पुकार रहा था। संयोग से बूढ़ा क्रास्नोकूतोव खलिहान के पास ही था। मुर्ग़ियों को फुसलाते किसी व्यक्ति की चोर-आवाज़ उसे सुनायी पड़ी और वह बाड़ के पीछे छिपकर बैठ गया। मुर्ग़ियां चोकर के ढेर के पास चली आयीं और तभी क्रास्नोकूतोव ने देखा कि चोकर से निकले किसी के हाथ ने चितकबरी मुर्ग़ी की टांग पकड़ ली। श्चुकार ने बिल्ली की फुर्ती से मुर्ग़ी की गरदन मरोड़ी और उसे बोरी में ठूस ही रहा था कि किसी ने दबे स्वर में उससे पूछा: "मुर्ग़ियों को छेड़ रहे हो?" और उसे बाड़ के पीछे से उठता क्रास्नोकूतोव दिखायी दिया। बुड्ढा श्चुकार ऐसे सकपका गया कि उसके हाथ से बोरी छूट गयी, टोपी उतारकर, उसने बेमौक़े दुआ-सलाम किया: "नमस्ते, क्या हाल-चाल है, अफ़ा-नासी पेत्रोविच!" – "भगवान की दया है," वह बोला, "क्यों

मुर्गियो से खेल रहे हो?" – "हा-हा, यहा से गुज़र रहा था तो देखता क्या हू – चितकबरी मुर्गी! उसके पख इतने विचित्र थे कि मै अपने को रोक नही सका। सोचा, चलो पास से तो देखू कि यह कैसा विचित्र पक्षी है? बुड्ढा हो गया पर कभी ऐसी अजीब नही देखी!"

श्चुकार की वाक्पटुता यहा बेमौके की थी और क्रास्नोकूतोव ने उसे टोककर कहा "झूठ मत बोल खूसट बुड्ढे! मुर्गियो को बोरी मे डालकर नही देखते! सच बता, किसलिये चुराना चाहता था?" और श्चुकार ने अपना दोष स्वीकार करके कहा कि वह अपनी टोली के हलवाहो को मुर्गी के मास का दलिया खिलाना चाहता था। उसे बडा आश्चर्य हुआ जब क्रास्नोकूतोव कुछ भी नही बोला बल्कि सलाह दी "हलवाहो के लिये यह करना पाप नही है। अब तुमने एक मुर्गी की गर्दन मरोड ही दी तो उसे बोरी मे डाल लो और एक और ले लो, यह नही, यह वाली जो अडे नही देती, कलगीवाली एक मुर्गी से पूरी टोली के लिये कहा बनेगा दलिया। जल्दी से पकडो दूसरी और चपत हो जाओ, भगवान न करे अगर मेरी बुढिया ने देख लिया तो हम दोनो का जीना हराम हो जायेगा!'

बात के इस अत से बहुत खुश श्चुकार ने दूसरी मुर्गी पकडी और बाड फादकर चल पडा। दो घटे पहले वह टोली के शिविर मे पहुचा और जब ल्युबीश्किन गाव से लौटा तो बडे देग मे उबलते पानी मे बाजरा खदक रहा था, मुर्गी के मास के टुकडो से चर्बी पिघलकर निकल रही थी। बुड्ढे श्चुकार को बस एक बात का डर था कि कही दलिये मे सडे पानी की बू न रह जाये क्योकि पानी वह पासवाले उथले पोखर से लाया था जिसकी सतह पर हल्की-सी हरी परत जमी थी। पर उसका डर सही नही निकला सब खाते हुए तारीफो के पुल बाध रहे थे और टोली-नायक ल्युबीश्किन तो यह तक बोला "जिदगी भर कभी इतना बढिया दलिया नही खाया! बाबा, सारी टोली की तरफ से तुम्हे धन्यवाद!"

देग बडी जल्दी खाली हो गया। सबसे चट लोग पेदी से गाढा दलिया और मास के टुकडे निकालकर खाने लगे। और तभी वह घटना हुई जिसने हमेशा के लिये बावर्ची की हैसियत से श्चुकार का सारा 'कैरियर' बिगाड दिया ल्युबीश्किन ने मास का एक टुकडा निकाला

और उसे मुह मे डालने ही वाला था, पर अचानक सिर झटका और उसका चेहरा पीला पड गया।

"यह क्या है?" उसने श्चुकार से चिघाडकर पूछा, उसकी उगलियो मे उबले मास का मफेद टुकडा झूल रहा था।

"शायद मुर्गी का डैना है," बुड्ढे श्चुकार ने शात स्वर मे उत्तर दिया।

ल्युबीश्किन का चेहरा धीरे-धीरे लाल-पीला होने लगा।

"डै-ना? जरा इधर आकर देख, खानमामा!" वह गुर्राया।

"हे, भगवान!" एक औरत अम्ह करके बोली, "अरे इस पर तो नाखून है! "

"अरी डायन!" बुड्ढा श्चुकार औरत पर बरमकर बोला "डैने पर नाखून कहा मे आये? तू अपना लहगा उठाकर ढूढ अपने वहा नाखून!"

उमने मेजपोश पर अपनी चम्मच पटकी और ध्यान मे देखा ल्युबीश्किन के कापते हाथ में पतली-सी हड्डी लटकी थी, उसके सिरे पर झिल्लीदार पजे पर नन्हे-नन्हे नाखून थे।

"अरे!" अकीम बेमख्लेबनोव घबराकर बोला, 'हम तो मेढक खा गये! '

बम यही हुल्लड शुरू हो गया कुछ ज्यादा घिन करनेवाली एक औरत कराह कर फदकी और मुह को हाथ मे दबाकर खेत में बनी कुटिया के पीछे भाग गयी। बुड्ढे श्चुकार की आश्चर्य मे फैली आखो को देखकर कोद्रात माइदान्निकोव हमी मे लोट-पोट हो गया, वह बडी मुश्किल मे बोला 'अरे लुगाइयो! तुम्हारा तो धरम भ्रष्ट हो गया!" उन कज्जाको ने जो इतनी घिन नही करते उसकी हा मे हा मिलायी। "अब तुम्हारे पाप कभी माफ नही होगे।" कृत्रिम भय के साथ कुझेन्कोव चिल्लाया। पर हमी से चिढा अकीम बेमख्लेबनोव रोष के माथ चिल्लाया "हमने की क्या बात है?! श्चुकार के बच्चे की धुनाई करनी चाहिये! "

"देग मे मेढक कहा मे आ मकता था?" ल्युबीश्किन जानना चाहता था।

"अरे यह तो पोखर मे पानी लाया था, नही देखा इसने।"

"कुतिया के! खूमट बुड्ढे! तूने हमें क्या खिला दिया?!"

दोनेत्सकोव के बेटे की बहू अनीस्या चीखकर बोली और रो-रोकर कहने लगी "मै तो गर्भवत्ती हू! अगर तेरी वजह से, हरामजादे, गर्भ गिर गया तो? "

और उसने अपने कटोरे से बुड्ढे श्चुकार के मुह पर दलिया दे मारा!

बस तब तो हुडदग मच गया। औरते श्चुकार की दाढी नोचने के लिये हाथ बढा रही थी हालाकि भय से आतकित श्चुकार घबराकर चिल्लाये जा रहा था

'जरा रुको! यह मेढक नही है! भगवान की कसम मेढक नही है!"

"तब क्या है?" अनीस्या ने गुस्से मे चिल्लाकर पूछा।

"तुम्हे यह लग रहा है! तुम्हारी कोरी कल्पना है!' श्चुकार ने चालाकी दिखाने की कोशिश की।

पर 'कल्पित' हड्डी को चबाने का ल्युबीश्किन का प्रस्ताव उसने दृढता से ठुकरा दिया। शायद मामला इसी पर ठडा हो जाता अगर औरतो से चिढकर बुड्ढा श्चुकार यह नही चिल्लाता

'चुडैलो! डायनो! मेरा भसरा छेतना चाहती हो पर तुम्हे इतनी अकल नही कि यह मादा मेढक नही बल्कि शुक्ति है!"

"क्या ऽऽ?!" औरतो ने आश्चर्य के साथ पूछा।

"शुक्ति, एक प्रकार का पानी में रहनेवाला जीव होता है! मेढक तो नीच होता है पर शुक्ति ऊची जाति की होती है। मेरा एक रिश्ते-दार पुराने जमाने मे जनरल फिलीमोनोव का अर्दली था और उसने बताया था कि जनरल खाली पेट उन्हे सैकडो निगल जाता था! कच्चा खा जाता था! शुक्ति सिप्पी से निकली भी नही कि वह काटे से कुरेदकर सफाया कर देता! वह बेचारी चीं-चीं करती और जनरल उसे गले मे उतार देता। तुम्हे क्या पता यह चीज शुक्ति की जात की भी तो हो सकती है? जनरलो को पसद थी और मैने क्या पता तुम गवारो के लिये जान बूझकर दलिये मे डाली हो, स्वाद के लिये "

अब ल्युबीश्किन से न रहा गया उसने ताबे की कलछी उठायी और खडे होकर गला फाडकर चिल्लाया

"जनरलो को? स्वाद के लिये! मै लाल छापेमार हू और तू मुझे किसी जनरल की तरह मेढक खिलाता है?!"

श्चुकार को लगा कि ल्युबीश्किन के हाथ मे छुरी है और वह मुडकर देखे बिना सिर पर पाव रखकर भाग खडा हुआ

शिविर मे पहुचकर बाद मे दवीदोव को यह सब पता चला पर अभी श्चुकार को विदा करके उसने रजम्योत्नोव से घोडा तेज दौडाने का अनुरोध किया। वे शीघ्र ही टोली के शिविर मे पहुच गये। स्तेपी मे वर्षा अभी भी टप-टप कर रही थी। ग्रेम्याची से सुदूर जोहड तक आधे आकाश मे इद्रधनुष लटका था। शिविर मे कोई भी नही था। रजम्योत्नोव से विदा लेकर दवीदोव पासवाली जोत की ओर चल पडा। उसके पास खुले बैल चर रहे थे और हलवाहा अकीम बेसख्लेबनोव शिविर मे जाने के आलस्य के कारण सीता मे ही सिर तक ओवरकोट ओढकर बारिश की टप-टप सुनता ऊघ रहा था।

दवीदोव ने उसे उठाकर पूछा

"क्यो नही जोत रहे?"

अकीम अनिच्छा के साथ उठा और जम्हाई लेकर मुस्कराया।

"बारिश म जुताई नही की जा सकती, कामरेड दवीदोव। आप को यह नही पता? बैल ट्रैक्टर नही है। उसकी गर्दन के बाल थोडे से भीगे कि जुए मे रगड खाकर गर्दन पर गहरा घाव हो जायेगा और तब समझ लो कि बैल तुम्हारा अब किसी काम का न रहा। हा-हा, सच कह रहा हू!" दवीदोव की आखो मे अविश्वास को देखकर उसने इस प्रकार अपनी बात पूरी की और दवीदोव को सलाह दी "बेहतर तो यही होगा कि आप जाकर इन लडाके मुर्गो को अलग करे। सुबह से कोद्रात माइदान्निकोव हाथ धोकर अतामान्चुकोव के पीछे पडा हुआ है और अब वे उस पट्टी पर लड रहे है। कोद्रात उसे बैल खोलने को कह रहा है और अतामान्चुकोव कहता है 'मेरे बैलो के पास मत फटक, नही तो सिर फोड दूगा!' देखो तो शायद वे हाथापाई करने लगे!"

दवीदोव ने दूसरी पट्टी के सिरे की ओर देखा, वहा सचमुच कुछ हाथापाई-सी हो रही थी माइदान्निकोव लोहे की कीली को तलवार की तरह घुमा रहा था और लम्बा अतामान्चुकोव एक हाथ की मुट्ठी भीचकर कमर पर रखे दूसरे से उसे जुए के पास से धकेल रहा था। उनकी आवाजे नही सुनायी पड रही थी। उनकी ओर तेजी से जाते हुए दवीदोव दूर से ही चिल्लाया

"यह क्या हो रहा है?"

"अरे दवीदोव, देखो तो! बारिश हो रही है और जोते जा रहा है! ऐसे तो वह बैलों की गर्दन रगड देगा! मै कहता हू 'बारिश हो रही है, खोल दे बैलो को,' और यह मुझे मा-बहन की गाली देकर कहता है 'इसमे तेरा कोई सरोकार नही!' पर कुतिया की औलाद, किसका सरोकार है? किसका, लम्बू शैतान?" अतामान्चुकोव की ओर मुडकर कीली घुमाता हुआ माइदान्निकोव चिल्लाया।

लगता था कि वे पहले ही एक-दूसरे मे हाथापाई कर चुके थे माइदान्निकोव की आख के ऊपर अलूचे जैसा नीला पडा था और अतामान्चुकोव की कमीज आगे से फटी हुई थी, सफाचट, फूले होठ से खून रिस रहा था।

"मै तुझे सामूहिक फार्म को नुकसान नही पहुचाने दूगा!" दवीदोव के आने से उत्साहित होकर माइदान्निकोव चिल्लाया। "यह कहता है, 'बैल मेरे नही, फार्म के है!' अगर फार्म के है तो इसका मतलब कि तुम खाल उतार सकते हो? हट बैलो के पास से, हरामी!"

"तू कौन होता है, हुक्म चलानेवाला!? मुझ पर हाथ उठाने का भी तुझे हक नही! अभी खुरचनी उठाकर तुझे ऐसा उधेडूगा! मुझे कोटा पूरा करना है और तू मुझे रोक रहा है!" बाये हाथ से कमीज के बटनो को टटोलते हुए अतामान्चुकोव फटे स्वर मे चिल्लाया, उसका चेहरा सफेद पड गया था।

"बारिश मे जुताई की जा सकती है?" दवीदोव ने उससे पूछा और कोद्रात से कीली छीनकर जमीन पर पटक दी।

अतामान्चुकोव की आखे चमकी। अपनी पतली गर्दन को घुमाकर वह फुफकारकर बोला

"निजी खेतो मे नही की जा सकती, पर सामूहिक फार्म मे जरूरी है!"

"कैसे 'जरूरी' है?"

'ऐसे कि योजना पूरी करना जरूरी है! बारिश हो या न हो पर तुम्हारा काम जुताई करना है। अगर नही करोगे तो ल्युबीश्किन जीना दूभर कर देगा।"

"तू बक-बक मत कर कल जब मौसम साफ था तूने जुताई का कोटा पूरा किया?"

"जितना हो सकता था उतना जोता!"

माइदान्निकोव फुत्कार कर बोला

"आधा एकड जोती! देखो तो बैल इसके कैसे है! इतने तगडे कि सीगो तक हाथ नही जाता, पर कैसी जुताई की? दवीदोव, चलो! खुद देखो चलकर!" वह दवीदोव के ओवरकोट की गीली आस्तीन पकडकर उसे सीता पर ले गया, आवेश मे हाफता हुआ वह बुदबुदा रहा था 'छ इच से कम गहरी जुताई न करने का फैसला किया था और यह क्या है? खुद नापकर देखो!"

दवीदोव ने झुककर नर्म और चिपचिपी सीता मे उगलिया घुमे-डी। उसकी गहराई तीन-चार इच से ज्यादा नही थी।

"इसे जुताई कहते है? यह तो जमीन को खुजाना है न कि जो-तना! मै सुबह से ही रूसी लगन के लिये इसकी पिटाई करना चाहता था। जाकर देख लो सब जगह इसने इतनी ही गहरी जुताई की है!"

'अरे, इधर आओ! मैं तुम से कह रहा हू!' अनिच्छा से बैलों को खोलते अतामान्चुकोव को दवीदोव ने चिल्लाकर बुलाया।

वह धीरे-धीरे, आलस्य के साथ पास आया।

"तुम यह ऐसे जुताई करते हो?" दवीदोव ने धीरे से पूछा।

"और आप क्या चाहते है? डेढ फुट गहरी?" अतामान्चुकोव ने आखे तरेरी और मुडे सिर से टोपी उतारकर सिर झुकाया "माफ कीजिये! इससे गहरी आप खुद जोतने की कोशिश करे! बाते करने मे तो सब माहिर है पर काम करते नानी मरती है!"

'पता है हम क्या चाहते है, तुझ लुच्चे को फार्म से निकालना! दवीदोव चिल्लाया उसका चेहरा तमतमाकर लाल हो गया। "और निकालके रहेगे!"

'आप मुझ पर कृपा ही करेगे! मै खुद चला जाऊगा! मै सारी जिदगी तुम लोगो के लिये कमर नही तोडना चाहता। किस चीज के लिये मै अपना खून-पसीना एक करू!' और वह सीटी बजाता शिविर की ओर चल पडा।

शाम को जैसे ही सारी टोली शिविर मे जमा हुई, दवीदोव ने कहा

"टोली के सामने मै यह सवाल रखता हू सामूहिक फार्म के उस झूठे सदस्य के साथ क्या करे जो फार्म और सोवियत सत्ता को धोखा

देता है – छ इच गहराई की जुताई की जगह तीन इच की करता है? उसके साथ क्या करे, जो बारिश मे काम करके बैलो को जान-बूझकर बेकार करना चाहता है जबकि अच्छे मौसम मे सिर्फ आधा कोटा पूरा करता है?"

"निकाल दो!" ल्युबीश्किन बोला।

औरतो ने उसका जबरदस्त समर्थन किया।

"आपके बीच ऐसा नुकसानदायी सदस्य है। यह रहा!" दवीदोव ने छकडे के बम पर बैठे अतामान्चुकोव की ओर इशारा किया। "पूरी टोली यहा है। मै इस प्रश्न पर मतदान का प्रस्ताव रखता हू। कौन इसके पक्ष मे है कि विध्वसक और कामचोर अतामान्चुकोव को निकाल दिया जाये?"

सत्ताईस मे से तेईस ने पक्ष मे हाथ उठाये। दवीदोव गिनती करके अतामान्चुकोव से रूखाई के साथ बोला

"चले जाओ! अब तुम सामूहिक फार्म के सदस्य नही रहे, फैक्ट! एक साल बाद देखेंगे, अगर सुधर गये तो वापस ले लेगे। और अब साथियो, मै सक्षेप मे आपसे बडी जरूरी बात करना चाहता हू। लगभग आप सब ठीक से काम नही कर रहे है। बहुत खराब कर रहे है! माइदान्निकोव के सिवाये और कोई भी कोटा पूरा नही कर रहा। दूसरी टोली के लिये यह बडी शर्म की बात है! ऐसे काम से तो मुह पर कालिख पुत जायेगी! ऐसे काम नही चलेगा।"

"कोटा बहुत ज्यादा है! बैलो के बस का नही है," अकीम बेस-ख्लेबनोव ने कहा।

"बस का नही है! बैलो के? बेकार की बात है! पर माइदा-न्निकोव के बैलो के बस का कैसे है? मै आपकी टोली मे रुक रहा हू, अतामान्चुकोव के बैल लेकर मै आपको उसका जीता-जागता उदा-हरण दिखाऊगा कि एक दिन मे एक हेक्टेयर, सवा हेक्टेयर तक जमीन जोती जा सकती है।

"अरे दवीदोव, तुम तो बडे चालाक हो! बढिया चीज झट देख लेते हो", अपनी छोटी खिचडी दाढी को हाथ मे कसकर कुभेन्कोव हसकर बोला, "अतामान्चुकोव के बैलो से तो पहाड तक पलटे जा सकते है! उनसे तो मै तक पूरा हेक्टेयर जोत सकता हू"

"अपने बैलो से नही जोत सकते?"

"कभी नही!"

"तो चलो अदला-बदली कर ले? तुम अतामान्चुकोव के ले लो और मैं तुम्हारे! ठीक है?"

"चलो देख लेते है," कुछ सोचकर कुभेन्कोव सतर्कता के साथ गभीर स्वर मे बोला।

रात दवीदोव ने बेचैनी से काटी। वह खेत मे बनी कुटिया मे सोया था। रात को अकसर उसकी आख खुल जाती, कभी छतके टीन की खडखड से, कभी वर्षा मे नम ओवरकोट के अदर घुसती अर्द्धरात्रि की ठड मे, तो कभी भेड की खाल के बिछौने मे भरे पिस्सुओ के काटने से

मुह अधेरे कोद्रात माइदान्निकोव ने उसे जगा दिया। कोद्रात पूरी टोली को उठा चुका था। दवीदोव कुटिया मे बाहर आया। आकाश के पश्चिमी आचल मे तारे मद्धिम-मद्धिम चमक रहे थे, आकाश के सुरमई-नीले पटल पर चाद की रुपहली हसिया दमक रही थी। दवीदोव जोहड के पानी मे हाथ-मुह धो रहा था और पास ही मे खडा कोद्रात अपनी पीली-सी मूछ का सिरा चबाते हुए बोल रहा था

"एक दिन मे ढाई एकड से भी ऊपर, यह तो बहुत ज्यादा है कल तुम कुछ ज्यादा ही जोश मे कह गये, कामरेड दवीदोव! कही हमारी जग-हसाई न हो जाये"

"सब हमारे बस मे है, हमारी मुट्ठी मे है! बडे अजीब हो, डरने की क्या बात?" दवीदोव उसका ढाढस बधा रहा था पर मन ही मन उसने सोचा "चाहे जान देनी पडे खेत मे, पर करके रहूगा! रात को लालटेन जलाकर हल चलाऊगा, पर पौने तीन एकड जोत कर रहूगा, मुझे यह करके ही दिखाना है। नही तो सारे मजदूर वर्ग की नाक कट जायेगी"

इतने मे, जब अपनी किरमिच की कमीज के पल्ले मे दवीदोव मुह पोछ रहा था, कोद्रात ने अपने और उसके बैलो को जोता और चिल्लाकर बोला

"चलो!"

हलो के पहिये चू-चू कर रहे थे, कोद्रात दवीदोव को बैलो से चलनेवाले हल से जुताई के दर्जनो सालो से चले आ रहे सीधे-सरल सिद्धात समझाता चल रहा था।

"हम साक्कोव्स्की हल को सबसे बढ़िया मानते है। अकसाइस्की को ही लो, हल बुरा नही है, पर साक्कोव्स्की से वह कोई मुकाबला नही कर सकता। उससे वह सफाई नही। हमने इस तरह जुताई करने का फैसला किया है हरेक को पट्टी काट दी और अपनी मर्जी से जुताई करने की छूट दे दी। शुरू में बेसख्लेबनोव, अतामान्चुकोव और कुभेन्कोव एक पात बनाकर जुताई करने लगे, और तो और ल्युबीश्किन तक ने उसका पल्ला पकड लिया, वे बोले, 'अब हम सामूहिक फार्म मे काम करते है, इसलिये हमारे हल भी एक लाइन मे चलने चाहिये।' बस चला दिये। पर मैने देखा कि मामला कुछ जचा नही आगेवाला हल रुकता तो दूसरे को भी रुकना पडता। अगर आगेवाला काम मे ढील देता तो पीछेवालो को भी अनचाहे ही उसी की रफ्तार से काम करना पडता। बस मैने शोर मचा दिया, मै बोला, 'या तो मुझे आगे रखो या हरेक को अलग-अलग पट्टी दे दो।' ल्युबीश्किन भी तब तक समझ गया कि ऐसे जुताई करना बेकार है। किसी का काम दिखायी नही देता। सबको अलग-अलग पट्टिया दे दी गयी और बस मै निकल गया सबसे आगे। हमारी हरेक पट्टी ढाई-ढाई एकड की है तीन सौ सत्तर गज लम्बी और पैतीस गज चौडी।"

"पर बीच-बीच मे मेढे क्यो नही जोती?" जोत के किनारो की ओर देखते हुए दवीदोव ने पूछा।

"इसकी वजह यह है तुम लम्बाई मे हल चलाते हो और पट्टी खत्म होने पर बैलो को मोडना पडता है न? अगर तुम उन्हे एकदम मोड दो उल्टा तो बैलो की गर्दने छिल जायेगी जुआए मे और गये काम मे तुम्हारे बैल! इसलिये हल उठाकर पैतीस गज खाली चलना पडता है। ट्रेक्टर तो एक जगह पर उल्टा मुड सकता है, उसके अगले पहिये तो एकदम मुड जाते है और वह फिर उसी सीध मे उल्टा चलने लगता है, बैलो की तीन-चार जोडियो को भला ऐसे घुमाया जा सकता है? इसके लिये तो उन्हे फौजियो की तरह एक पाव पर उल्टा घूमना होगा ताकि मोड पर भी जमीन जुत जाये! इसीलिये बैलो से जुताई के लिये लम्बी पट्टिया नही काटी जा सकती। ट्रेक्टर के लिये तो जितनी लम्बी पट्टी हो उतना ही अच्छा है। अगर मै बैलो से तीन सौ सत्तर गज की लम्बाई मे हल चलाऊ, पर इसके बाद मेरे हल को जमीन

छुए बिना पट्टी को पार करना होगा। अभी मै आपको खाका बनाकर दिखाता हू," और कोंद्रात ने रुककर जमीन पर अपनी खुरचनी के पैने सिरे से लम्बोतर चौखाना बनाया। "मान लो यहा दस एकड है। तीन सौ सत्तर गज लम्बाई और एक सौ चालीस चौडायी। और मै लम्बाई मे पहली सीता मे हल चलाता हू, देखिये अगर मै ढाई एकड जोतता हू तब मुझे मोड पर पैतीस गज खाली चलना पडता है, और अगर मै दस एकड की पट्टी जोतू तो मुझे एक सौ चालीस गज खाली चलना पडेगा। फायदा क्या? आप समझे? वक्त की बर्बादी है "

"हा, समझ गया, तुमने बात अपनी सिद्ध कर दी।"

"आपने कभी हल चलाया भी है?"

"नही, भैया, कभी मौका नही मिला। हल मे तो मै थोडा-बहुत परिचित हू पर चला उसे नही सकता। तुम मुझे समझा दो मै बडी जल्दी समझ जाता हू।'

"अच्छा चलिये मै आपका हल बिठा देता हू, आपके साथ दो एक घेरे लगा लूगा फिर आप खुद ही सीख लेगे।'

कोंद्रात ने दवीदोव के हल को छ इच की गहरी जुताई के लिये सेट किया और अनायास ही 'तू' पर आकर बोला

"जब जुताई करते समय तुझे लगे कि बैलो को मुश्किल हो रही है तो तू इस चीज को थोडा घुमा देना। हम इसे पीपा कहते है देख रहा है, इसकी चेन बडी-छोटी हो सकती है। तू पीपा घुमायेगा तो फाल थोडा मुडकर तिरछा हो जायेगा और वह अपनी आठ इच की चौडाई पर नही बल्कि छ इच चौडी सीता काटने लगेगा और बैलो को थोडी आसानी हो जायेगी। अच्छा चलो!" और उसने बैलो को हाककर कहा "तू अपनी जान की परवाह मत कर, कामरेड दवीदोव!"

दवीदोव के किशोर हकवैये ने कोडा फटकारा और आगेवाले बैल तेजी से चल पडे। दवीदोव ने कुछ घबराहट के साथ हल की मूठ पर हाथ रखा और हल के पीछे-पीछे चल पडा। वह जमीन पर देखता चल रहा था। कोल्टर से कटकर चिकनी मिट्टी साप की तरह बल खाती मोल्ड-बोर्ड की चमचमाती लौह सतह पर फिसलती जा रही थी।

पट्टी के सिरे की छूट पर साडदान्निकोव दवीदोव के पास दौड़ा-दौड़ा आया और बोला

"हल को बायीं तरफ झुका दे ताकि पहिए पर चले और ताकि मोल्ड-बोर्ड न साफ करना पड़े, ऐसे कर, देख!" उसने हल का दायां हत्था दबाया और जमीन की सतह ने मोल्ड-बोर्ड पर चिपके कीचड़ को चाटकर साफ कर दिया। "देखो, कैसे करना चाहिये!" कोद्रात हल को पलटकर मुस्कराया। यह भी एक गुर है! अगर ऐसे न करता तो जब बैल सिरे की छूट को पार करते तुझे खुरचनी से इसे साफ करना पड़ता। अब तो वह ऐसा साफ है मानो धोया हो। और तू सिगरेट पीकर जी खुश कर सकता है। ले, पकड़!"

उसने दवीदोव की ओर तबाक की थैली बढ़ायी, अपने लिये सिगरेट बनाकर उसने सिर हिलाकर अपने बैलों की ओर इशारा किया

"देखो मेरी लुगाई कैसे जुताई कर रही है! हल अच्छा है, एक बार लगा दिया तो बाहर कम ही निकलता है, वह तो अकेली भी जुताई कर सकती है "

"क्या तुम्हारी बीवी तुम्हारे साथ हकवैये का काम करती है?" दवीदोव ने पूछा।

"हां। उसके साथ आसानी रहती है। खरी-खोटी कहने पर भी बुरा नहीं मानती अगर मान भी जाये तो रात तक के लिये रात सुलह करवा देती है, आखिर गैर तो नहीं है हम "

कोद्रात मुस्कराया और दायें-बायें हिलते-डुलते, लम्बे-लम्बे डग भरता जाने को पार करने लगा।

नाश्ते तक दवीदोव लगभग आधा एकड़ जमीन जोत चुका था। उसने अनिच्छा के साथ दलिया खाया और जब बैलों ने अपना चारा खा लिया वह कोद्रात को आंख मारकर बोला

"करें शुरू?"

' मैं तैयार हूं। अन्युत्का, चल बैलों को लेकर!"

और फिर से काल्टर और फाल से कटकर पलटती सदियों से जमी धरती पर हल रेखाएं बनती जातीं, 'सूखी घास की अकड़ी जड़ें उखड़कर आकाश को ताकने लगतीं, उसके डंठल कटकर काली मिट्टी में दबते जाते। मोल्ड-बोर्ड की बगल में मिट्टी लहरों की तरह हिलोरें लेती। काली मिट्टी की मीठी गंध मधुर और स्फूर्तिदायी थी। सूरज

अभी चढ़ा ही है पर पिछलेवाले बैल की खाल पसीने से काली हो गयी ...

शाम तक दवीदोव के पांवों में जूतों के काटने के कारण छाले पड़ गये, कमर में दर्द होने लगा। लड़खड़ाते हुए उसने अपनी पट्टी को मापा और फटे, धूल जमे होंठों से मुस्करा दिया। दिन भर में उसने ढाई एकड़ ज़मीन जोत डाली थी।

"क्यों, कितनी पलट डाली?" हल्की-सी व्यंग्यपूर्ण मुस्कान के साथ कुभेन्कोव ने पूछा जब दवीदोव पैर घसीटता खेत-शिविर में पहुंचा।

"तुम्हारे ख़याल से कितनी होगी?"

"क्यों, सवा एकड जोत दी?"

"नही, तेरी ऐसी की तैसी, ढाई एकड से ऊपर!"

पाटे के दाते से टांग पर आयी खरोचों पर मार्मोट की चर्बी का लेप करता कुभेन्कोव कराहकर उठा और दवीदोव की पट्टी को मापने चल दिया आधे घंटे बाद जब झुटपुटा छा गया था वह लौटा और अलाव से दूर बैठ गया .

"कुभेन्कोव, चुप क्यो हो?" दवीदोव ने पूछा। •

"टांग मे दर्द हो रहा है.. बोलना क्या है, जितनी जोत ली, उतनी जोत ली क्या बडी बात है इसमे!" उसने अनिच्छा से उत्तर दिया और अंगरखे से सिर ढककर अलाव के पास लेट गया।

"कर दिया तेरा मुह बंद? अब तो बक-बक नही करेगा?" कोंद्रात ठहाका लगाकर बोला पर कुभेन्कोव चुप रहा, मानो उसने कुछ सुना ही नही।

दवीदोव ने कुटिया के पास लेटकर आखें मूदी। अलाव मे लकड़ी की राख की गध आ रही थी। दिन भर चलते रहने के कारण तलवे जल रहे थे, पिडलियों में मानो सीसा भरा था, वह किसी भी तरह पैरों के लिये आरामदेह स्थिति नही ढूंढ़ पा रहा था... लेटते के साथ ही उसकी आखों के सामने हल मे पलटती काली मिट्टी तैरने लगा .. सिर में हल्के-से चक्कर और मिचली को महसूस करके दवीदोव ने कोंद्रात को आवाज़ दी।

"क्यों, नीद नहीं आ रही?" उसने उत्तर दिया।

"हा, हल्का चक्कर आ रहा है, आखो के मामने हल से पलटती जमीन तैर रही है "

"यह तो हमेशा होता है," कोद्रात के स्वर मे सहानुभूतिपूर्ण मुस्कान झलको। "दिन भर पाव तले देखते रहने से चक्कर आने लगते है। और मिट्टी की गध भी इतनी सौधी, नशीली होती है कि बिन पिये नशा चढ जाता है। तू, दवीदोव, कल पाव तले ज्यादा मत देखना, इधर-उधर देखते रहना।"

रात को दवीदोव को न पिस्सुओ के काटने की कोई खबर रही, न उसे घोडो के हिनहिनाने और न ही पास मे रात बिताते हसो की डार की चे-चे सुनायी पडी। वह बेसुध सोया पडा था। पौ फटने से पहले जब उसकी आख खुली तो उसे अगरखे मे लिपटा कोद्रात कुटिया की ओर आता दिखायी पडा।

"कहा गये थे?" उनीद मे, सिर उठाकर दवीदोव ने पूछा।

"तुम्हारे और अपने बैलो की रखवाली कर रहा था खूब चर चुके है बैल। मैने उन्हे घाटी मे हाक दिया है, वहा घास बढिया है "

कोद्रात की फटी-फटी-सी आवाज तेजी से दूर जाती हुई बुझने लगी दवीदोव ने पूरी बात नही सुनी नीद ने उसके सिर को फिर से ओस से भीगे भेड की खाल के कोट पर लिटा दिया और विस्मृति की चादर मे लपेट दिया।

उस दिन शाम तक दवीदोव ने ढाई एकड और दो सीते जोती। ल्युबीश्किन ने ठीक ढाई एकड, कुझेन्कोव ने ढाई एकड से कुछ ही कम जमीन जोती पर उनके लिये यह बिलकुल आकस्मिक बात थी कि अतीप कौआ' पहले स्थान पर आया जो इससे पहले तक उन फिसड्डी लोगो के बीच था जिन्हे दवीदोव मजाक मे कमजोर ताकतवाली टीम' कहता था। वह तीनवाले बैलो से जोत रहा था जो अब तक दुबले हो गये थे। दोपहर के खाने के समय वह इसके बारे मे कुछ नही बोला कि कितनी जोती है। खाना खाने के बाद उसकी पत्नी जो उसके हकवैये का काम कर रही थी, बैलो को अपनी झोली से खल खिलाने लगी और अतीप ने दस्तरखान पर गिरे डबल रोटी के चूरे तक को अपनी पत्नी की झोली मे डाल दिया – बैलो को खिलाने के लिये। ल्युबीश्किन ने यह देखकर खीसे निपोरी

"बडा जोर लग रहा है, अतीप!'

"क्यो नही?! हमारा सारा खानदान काम के मामले मे कभी पीछे नही रहा!" वसत की धूप मे और भी काला हुआ अतीप 'कौआ' चुनौतीपूर्ण स्वर मे बोला।

और उसने सचमुच कमाल कर डाला, शाम तक वह तीन एकड जमीन जोत चुका था। पर कोद्रात अधेरा छाने के बाद ही खेत-शिविर मे लौटा, जब दवीदोव ने उससे पूछा "कितनी जोत डाली?" वह बैठी आवाज मे बोला "साढे तीन से कुछ ही कम। तबाकू दो दोपहर मे सिगरेट नही पी " और उसने थकी पर विजयपूर्ण आखो से दवीदोव की ओर देखा।

रात का खाना खाने के बाद दवीदोव ने दिन के काम के निष्कर्ष निकाले

'दूसरी टोली के कामरेडो! हमारे यहा समाजवादी प्रतियोगिता बडी जबरदस्त रही! काम की गति बहुत प्रशसनीय है। जुताई के लिये टोली को सामूहिक फार्म के प्रबध-मडल की ओर से बहुत-बहुत शुक्रिया। प्यारे साथियो पिछडेपन से हम उबरकर रहेगे, फैक्ट! और क्यो नही उबरेगे, जब हम वास्तव मे सिद्ध कर चुके है कि कोटा पूरा किया जा सकता है? अब सारा जोर पाटा चलाने पर डालना है। और तीन सीतो पर एक साथ पाटा चलाना चाहिये! मैदान्निकोव को खास तौर से शुक्रिया क्योकि वह सचमुच ही बडा बढिया कामगार है!

३७

पद्रह मई तक इलाके मे अनाज की बोवाई लगभग पूरी हो गयी। तब तक ग्रेम्याची का सामूहिक फार्म बोवाई की योजना पूरी कर चुका था। दस तारीख को दोपहर तक तीसरी टोली ने बाकी बची आठ हेक्टेयर जमीन पर मकई और सूरजमुखी बो डाली और दवीदोव ने इलाकाई पार्टी समिति को बोवाई की समाप्ति की सूचना देने के लिये फौरन घुडसवार सदेशवाहक को रवाना कर दिया।

वसत के शुरू मे बोये गये गेहू के अकुरो को देखकर जी खुशी से भर जाता पर दूसरी टोली के क्षेत्र मे कोई सौ हेक्टेयर पर सई

के शुरू मे कुबान्का गेहू बोया गया था। दवीदोव को डर था कि देर से बोया गया कुबान्का गेहू ठीक से नही उगेगा, ल्युबीश्किन को भी यही आशका थी और याकोव लुकीच तो साफ-साफ कहता था

"अकुर नही फूटेगे! हरगिज नही निकलेगे! आप साल भर बोते रहना चाहते है, और चाहते है कि अकुर फूटे? किताबो मे लिखा है कि मिस्र मे साल मे दो बार फसल उतारी जाती है, पर कामरेड दवीदोव, ग्रेम्याची मिस्र नही है यहा बोवाई बडी पाबदी से करनी पडती है!"

"तुम क्यो अवसरवाद फैला रहे हो?" गुस्से मे दवीदोव कहता। 'हमारे यहा उगेगा! अगर हमे जरूरत पडेगी तो हम दो-दो फसले भी उगायेगे। हमारी जमीन है, अपनी ही जमीन है जो चाहे वही करवा सकते है इससे, फैक्ट!"

"बच्चो जैसी बाते करते है आप!"

"देख लेना। नागरिक ओस्त्रोव्नोव, तुम अपनी बातो मे दक्षिणपथी झुकाव दिखा रहे हो और यह पार्टी के लिये अवाछित और हानिकर झुकाव है वह यानी यह झुकाव बहुत बदनाम हो चुका है – तुम यह मत भूलो।"

'मै झुकाव के बारे मे नही, जमीन के बारे मे बोल रहा हू। आपके झुकावो-वुकावो मे मै कुछ नही समझता।"

दवीदोव को कुबान्का गेहू की शक्ति मे विश्वास था पर फिर भी वह अपनी शका से मुक्त नही हो पा रहा था। रोज वह फार्म-कार्यालय के घोडे की जीन कसकर धूप मे झुलसी, निर्जीव पडी मनहूस काली जोतो को देखने जाता।

जमीन तेजी से सूख रही थी। पूरा पोषण न मिलने के कारण बीजो से फूटे अकुरो मे बाहर निकलने की शक्ति नही थी। अकुरो की कोमल और क्षीण घुडिया तपी, धूप की गध से भरी मिट्टी के भुरभुरे ढेलो के नीचे, प्रकाश की उत्कठा लिये कुम्हलायी पडी थी। नमी से वचित मिट्टी की सूखी पपडी को वे फोड नही पा रही थी। दवीदोव खेत मे घोडे से उतरकर घुटनो पर बैठता और हाथ से मिट्टी हटाता। हथेली मे लेकर गेहू के कोमल अकुर को निहारते हुए उसे मिट्टी मे दबे उन लाखो दानो पर दया की कसक भरी अनुभूति होती जो सूर्य का प्रकाश देखने को तडपते थे और जिनकी मौत लगभग निश्चित

थी। अपनी असहायता पर उसे क्षोभ होता। वर्षा की आवश्यकता थी, तब तो कुबान्का हरे मखमली कालीन की तरह जोतो पर बिछ जाता। पर वर्षा नही हो रही थी और जोतो पर ढीठ जगली घास-फूस ही पनप रहे थे।

एक बार शाम को वृद्धो का शिष्टमडल दवीदोव के घर आया।

"हम आपके पास एक विनम्र अनुरोध लेकर आये है," बूढे अकीम मुर्गीछिड ने अभिवादन करके कहा, वह आखो से कमरे मे देव-प्रतिमा को खोजने का विफल प्रयास करने लगा।

"क्या अनुरोध है? बाबा, देवप्रतिमा नही है मेरे यहा, बेकार मत ढूढो।"

"नही है? खैर छोडो अनुरोध हम बुड्ढो का यह है "

"क्या है?"

"दूसरी टोली के खेत मे, लगता है, गेहू के अकूर फूटेगे नही?"

"बाबा, अभी कुछ नही लगता।"

"नही लगता पर आसार तो यही नजर आते है।"

"तो?"

"बारिश की जरूरत है।"

"हा, जरूरत है।"

"पूजा-पाठ के लिये पादरी को बुलाने की अनुमति देगे?"

"किसलिये? दवीदोव के गाल लाल हो गये।

"यह भी कोई पूछने की बात है, ताकि भगवान बारिश करे।"

"तुम भी क्या हो, बाबा जाओ-जाओ, बाबा, फिर कभी ऐसी बात न कहना।"

"कैसे नही कहू? गेहू क्या हमारा नही है?"

"सामूहिक फार्म का है।"

"पर हम क्या है? हम सामूहिक फार्म के सदस्य है।"

"और मै—सामूहिक फार्म का अध्यक्ष हू।"

"हम यह सब समझते है, कामरेड। आप भगवान को नही मानते, हम आपसे पूजा मे भाग लेने को नही कहते, पर हमे इसकी अनुमति दे दे, हम तो आस्तिक है।"

"नही दूगा अनुमति। आपको फार्म की आम सभा ने भेजा है?"

"नही। हम बूढो ने खुद आपसे अनुरोध करने का फैसला किया।"

"आप खुद सोचिये, आप कितने कम है, आम सभा कभी भी इसकी अनुमति नही देगी। बाबा, विज्ञान के कहने पर खेती करनी चाहिये न कि पादरियो के कहने पर।"

दवीदोव बडी देर तक उन्हे सावधानी से समझाता रहा ताकि वृद्धो की धार्मिक भावनाओ को ठेस न पहुचे। वृद्ध चुपचाप उसे सुन रहे थे। अत मे मकार नागूल्नोव भी आ पहुचा। उसने सुना कि आस्तिको के प्रतिनिधियो के रूप मे वृद्ध दवीदोव के पास पूजा की अनुमति मागने गये है, बस वह जल्दी-जल्दी वहा आया।

"मतलब, नही मिलेगी अनुमति?" बूढे अकीम मुर्गीछेड़ ने उठते हुए उसास छोडी।

'नही और कोई जरूरत भी नही। इसके बिना भी बारिश होगी।'

बूढे बाहर निकले और नागल्नोव भी उनके पीछे-पीछे ड्योढी मे निकला। उसने दवीदोव के कमरे का दरवाजा कसकर बद किया और फुसफुसाकर बोला

"ओ खूसट बुड्ढो! मै तुम्हारी रग-रग पहचानता हू। तुम बस अपनी मनमानी मे रहना चाहते हो। तुम्हारा बस चले तो तुम हर दिन कोई न कोई त्योहार मनाते रहो, देवताओ की तसवीरे उठाकर स्तेपी मे घूमते अनाज की फसलो को कुचलते फिरो अगर तुम अपनी मर्जी मे पादरी को बुलाकर खेतो की तरफ गये तो मै तुम्हारे पीछे-पीछे फायर-ब्रिगेड लेकर पहुच जाऊगा और तब तक तुम पर पपो मे पानी डलवाता रहूगा जब तक तुम खुद घुलकर पानी नही बन जाओगे। समझे? पादरी के न आने म ही उसका भला है। मै उस लम्बे बालो-वाले खच्चर के बाल सरे-आम भेडो को मडनेवाली कैची म कतर दूगा। मुह काला करके उसे भगा दूगा। तुम समझे?" यह कहकर वह मुह चढाये दवीदोव के पास लौटा और सदूक पर बैठ गया।

"बुड्ढो के साथ क्या फुसफुस कर रहे थे?" दवीदोव ने सशय के साथ पूछा।

"मौसम के बारे म बात कर रहे थे," मकार ने पलक झपके बिना उत्तर दिया।

"आगे?"

"आगे क्या, बस उन्होने पक्का फैसला किया कि पूजा-वूजा नही करवायेगे।"

"पर उन्होंने कहा क्या?" दवीदोव ने मुस्कान छिपाने के लिये मुह मोडकर पूछा।

"कहा कि वे समझ गये कि धर्म अफीम की तरह है तुम मेरे पीछे क्यो पड गये, मेम्योन? तुम बिल्कुल जोक की तरह हो, एक बार चिपक गये तो छूटने का नाम नही लेते! क्या कहा, क्यो कहा? अरे जो कहा सो कहा। तुम इनके साथ डेमोक्रेसी की बाते करते हो, मनाते हो, मिन्नते करते हो। अरे ये बुड्ढे ऐसी भाषा नही समझते। उनके तो दिमाग मे भुस भरा है। बातो का उन पर असर नही होता, इन पर तो सौ सुनारवाली नही एक लोहारवाली ठीक बैठती है!"

दवीदोव ने हसकर निराशा के साथ हाथ झाड दिया। नही, सकार को कोई दुरुस्त नही कर सकता था!

दो सप्ताह वह पार्टी की सदस्यता से वचित रहा और इस दौरान इलाकाई पार्टी समिति मे नेता बदल गये। कोर्चजीन्स्की और खोमुतोव को हटा दिया गया।

इलाकाई पार्टी समिति के नये सचिव ने मडल के नियत्रण आयोग मे नागुल्नोव की याचिका मिलने पर ब्यूरो के एक सदस्य को मामले की दुबारा जाच के लिये गेम्याची भेजा। इसके बाद ब्यूरो ने नागुल्नोव को पार्टी से निष्कासित करने के बारे मे अपने पुराने फैसले को रद्द कर दिया, उसे रद्द करने का कारण यह बताया गया कि दड दोष से कही अधिक सख्त था। इसके अलावा नागुल्नोव के विरुद्ध तब लगाये गये कई आरोप भी ('अनैतिक आचरण', 'अनैतिक यौन सबध') दूसरी जाच के समय सिद्ध नही हुए। सकार को सख्त चेतावनी दी गयी। इसी पर मामला समाप्त हो गया।

दवीदोव ने जो पार्टी इकाई का कार्यवाहक सचिव था, सकार को कार्यभार लौटाते हुए पूछा

"मिल गयी सीख तुम्हे? और फिर करोगे ज्यादती?"

'हा बडी सीख मिली। पर यह बताओ ज्यादती किसने की थी मैने या इलाकाई समिति ने?'

"तुमने भी और इलाकाई समिति ने भी। दोनो ने थोडी-थोडी।"

"पर मै तो कहता हू कि मडल समिति भी ज्यादती करती है।"

"कैसी, उदाहरण दो?"

"ऐसी सामूहिक फार्मो से निकलनेवालो को ढोर लौटाने का

आदेश क्यो नही दिया? क्या यह जबरन सामूहिकीकरण नही है? वही तो है! लोग सामूहिक फार्म मे निकले पर उन्हे न ढोर लौटाये जा रहे है न औजार। बात साफ है, उसके पास जीने के लिये कुछ नही, फिर से सामूहिक फार्म मे लौटने के अलावा कोई चारा नही। और वे चू-चू करके लौट रहे है।"

"पर ढोर और औजार तो सामूहिक फार्म के अविभाज्य कोष मे शामिल हो गये है!"

"भाड मे जाये ऐसा कोष अगर वे मन मारकर सामूहिक फार्म मे लौट रहे है! निकाल बहार करो उन्हे! कह दो उन्हे, 'लो, चाटो अपने औजार!' मै तो उन्हे सामूहिक फार्म के पास फटकने तक न देता पर तुमने ऐसे पूरे सौ लौटुओ को भर लिया, क्या सोचते हो कि व सचेत सामूहिक किसान बनेगे? ठेगा! वे बिच्छू रहेगे तो सामूहिक फार्म मे, पर आखिरी दम तक अलग खेती का सपना देखते रहेगे मै जानता हू उन्हे! और जो उन्हे ढोर व कृषि औजार नही लौटाये गये यह वामपथी झुकाव है और तुमने जो उन्हे वापस सामूहिक फार्म मे भरती कर लिया, यह दक्षिणपथी झुकाव है। भैया, मै भी अब राजनीतिक दृष्टि से विकसित हो गया हू, अब तुम मुझे उल्लू नहीं बना सकते!

तुम राजनीतिक दृष्टि से विकसित कहा हुए अगर यह तक तो समझते नही कि अभी, कृषिवर्ष पूरा होने से पहले हम फार्म से निकलने-वालो का हिसाब साफ नही कर सकते! "

'यह तो मै समझता हू।

"अरे मकार, मकार! तुम चैन से नही बैठ पाते, अकसर तुम्हारे दिमाग का कोई पेच ढीला हो जाता है, फैक्ट!'

वे बडी देर तक इसी तरह बहस करते रहे अतत उनमे झगडा हो गया और दवीदोव चला गया।

दो सप्ताहो मे ग्रेम्याची म बहुत-सी घटनाए हुई देमीद घुन्ने से मरीना पोयार्कोवा की शादी पर सारे गाव को बडा आश्चर्य हुआ। वह उसके यहा रहने चला गया, रात को बैलगाडी मे खुद जुतकर वह अपना सारा सामान, जो कुल मिलाकर बहुत थोडा था, उसके यहा ले गया। अपने घर की खिडकियो और दरवाजे पर तख्ते ठोक दिये।

"मरीना को जोडी मिल गयी। वे दोनो मिलकर तो ट्रैक्टर से ज्यादा काम कर सकते है!" गाववाले आपस मे कहते।

अपनी बहुत वर्षो की महबूबा की शादी से अद्रेई रजम्योत्नोव का दिल टूट गया, शुरू-शुरू मे उसने अपने को काबू मे रखने की कोशिश की पर यह ज्यादा समय नही चला और वह दवीदोव से छिपकर पीने लगा। पर दवीदोव से यह छिपा न रहा, एक दिन उसने चेतावनी देते हुए कहा

"अद्रेई, तुम यह छोड दो। अच्छी बात नही है।"

"छोड दूगा, सेम्यान, पर मुझे बेहद बुरा लगता है! किसको ले आयी कुतिया मेरे बदले? मेरे बदले किस को ले आयी?!"

"यह उसका निजी मामला है।"

"पर मुझे तो बुरा लगता है।"

"बुरा तुम मान सकते हो पर पियो नही। इसका वक्त नही है। जल्दी ही नलाई शुरू होनेवाली है।"

पर सयोग से मरीना अकसर अद्रेई के रास्ते आ जाती, देखने मे वह बडी सतुष्ट, सुखी लगती थी।

देमीद घुन्ना उसके छोटे-से घर-बार मे बैल की तरह जुता रहता। कुछ ही दिनो मे उसने मरीना के अहाते की सभी कोठरियो की मरम्मत कर डाली। एक ही दिन मे उसने तीन मीटर गहरा तहखाना खोद डाला, अकेला डेढ-डेढ क्विटल भारी बल्लिया और कडिया उठा लेता मरीना ने उसके सारे कपडे धो-धाकर सी डाले, बनियानो आदि मे पैबद लगा दिये, पडोसिनो मे देमीद के काम की तारीफ करते न थकती।

"वह मेरे घर मे बहुत काम का है। भालू की तरह तगडा है। हर काम फटाफट करता है। घुन्ना है तो क्या हुआ हमारे बीच तू-तू मै-मै कम ही होगी "

और अद्रेई अपने नये पति से मरीना के खुश होने की बाते सुन-सनकर उदासी के साथ बुदबुदाता

"अरे मरीना! क्या मै तुम्हारी कोठरियो की मरम्मत नही कर सकता था, क्या मै तुम्हारे लिये तहखाना नही खोद सकता था? तुमने मेरी जवानी बरबाद कर डाली!"

बेदखल गायेव निर्वासन से ग्रेम्याची मे लौटा। क्षेत्रीय निर्वाचन आयोग ने उसके नागरिक अधिकार बहाल कर दिये। जैसे ही बहुत

बच्चो का बाप गायेव गाव मे पहुचा दवीदोव ने उसे झट से फार्म के कार्यालय मे बुलवाया।

"कैसे जीने का इरादा रखते हो, नागरिक गायेव? अलग खेती करोगे या सामूहिक फार्म मे भरती होगे?"

"जैसी जुगाड बैठेगी," गायेव बोला, वह गैरकानूनी बेदखली के अपमान को नही भूला था।

"फिर भी?"

"लगता है, सामूहिक फार्म मे बचना मुश्किल ही है।"

"तो लिख दो अर्जी।"

"पर मेरी सपत्ति का क्या हुआ?"

"मवेशी तुम्हारे सामूहिक फार्म मे है, कृषि औजार भी। पर कपडे लत्ते, बर्तन-भाडे तुम्हारे हम बाट चुके है। इस मामले मे कठिनाई होगी। कुछ चीजे लौटा देगे बाकी के पैसे ले लेना।"

"अनाज तो तुमने मेरा सारा ले लिया था "

"अरे, यह मामूली बात है। जाओ मैनेजर के पास, वह स्टोर-कीपर से कह देगा तुम्हे शुरू के लिये दसेक पूद आटा देने को।"

यह सुनकर कि दवीदोव गायेव को सामूहिक फार्म मे भरती करने-वाला है मकार रोष के साथ अद्रेई रजम्योत्नोव से बोला

"हरेक ऐरे-गैरे नत्थू खैरे को फार्म मे भरती किया जाने लगा! तब तो दवीदोव को 'मोलोत' अखबार मे विज्ञापन छपवा देना चाहिये कि वह हरेक सजायाफ्ता को सामूहिक फार्म मे भरती करेगा।"

बोवाई के बाद ग्रेम्याची की पार्टी इकाई के सदस्यो की सख्या दुगनी हो गयी तीन के यहा तीन साल बधुआ रह चुका पावेल ल्युबीश्किन, तीसरी टोली का सामूहिक किसान नेस्तोर लोश्चीलिन और द्योम्का उशाकोव कम्युनिस्ट पार्टी के उम्मीदवार सदस्य बने। पार्टी इकाई की बैठक के दिन जब ल्युबीश्किन और दूसरो को पार्टी मे भरती किया जा रहा था, नागुल्नोव ने कोद्रात माइदान्निकोव को सुझाव दिया

"कोद्रात, हो जाओ भरती पार्टी मे, मै खुशी से तुम्हारा समर्थन करूगा। तुम मेरे दस्ते मे सेवा करते थे, बहादुर लाल अश्वारोही थे और अब अग्रणी सामूहिक किसान हो। मै पूछता हू तुम क्यो पार्टी से दूर खडे हो? हालात ऐसे है कि किसी भी वक्त विश्व क्राति शुरू हो सकती है और क्या पता हमे फिर से एक ही दस्ते मे शामिल होकर

सोवियत सत्ता की रक्षा करनी पड़े। और तुम इतने वक़्त बाद भी पहले की तरह ही पार्टी के सदस्य नहीं हो! अच्छी बात नहीं है! हो जाओ भरती!"

कोंद्रात ने उसांस छोड़ी और मन की बात कह डाली:

"नहीं, कामरेड नागूल्नोव, अभी मेरी आत्मा मुझे पार्टी में शामिल होने की इजाज़त नही देती सोवियत सत्ता की ख़ातिर लड़ने के लिये मैं फिर से तैयार हूं और सामूहिक फ़ार्म में भी ईमानदारी से काम करूंगा पर पार्टी में नाम नहीं लिखवा सकता..."

"क्यों?" नागूल्नोव ने भौंहें तानकर पूछा।

"इसलिये कि मैं अब सामूहिक फ़ार्म का सदस्य हूं पर फिर भी अपनी संपत्ति का मोह है मुझमें..." कोंद्रात के होंठ कांपे और वह जल्दी-जल्दी फुसफुसाकर बोलने लगा "मेरा मन अपने बैलों के लिये दुखता है, मुझे उन पर तरस आता है... उनकी ऐसी देखभाल नही होती जैसी होनी चाहिये.. अकीम बेसख़्लेबनोव ने गाड़ी में जोतकर जुए से मेरेवाले घोड़े की गर्दन रगड़ दी, यह देखकर दिन भर मेरा जी मुंह में कौर डालने को न हुआ .. भला छोटे से घोड़े को इतना बड़ा जुआ पहनाया जा सकता है? बस इसी कारण मैं भरती नही हो सकता। अगर अभी तक मैंने संपत्ति से मुंह नही मोड़ा तो मेरा ईमान मुझे पार्टी में शामिल कैसे होने दे सकता है। मैं तो यही मानकर चलता हूं।"

मकार कुछ सोचकर बोला

"तुम ठीक ही कहते हो। कुछ रुक जाओ, अभी नही भरती होओ। सामूहिक फ़ार्म में सब गड़बड़ियों से हम डटकर संघर्ष करेंगे, जुए सब सही नाप के होंगे। और अगर तुम सपनों में भी अपने बैलों को देखते हो तो पार्टी में तुम्हें भरती नहीं किया जा सकता। पार्टी मे संपत्ति का मोह त्याग कर ही भरती होना चाहिये। पार्टी में भरती होने के लिये कांच की तरह साफ़ होकर एक ही विचार मन मे रखना चाहिये कि कैसे विश्व क्रांति हो। मेरा बाप भी खाता-पीता था, बचपन से ही मुझे भी जायदाद से प्यार करना सिखाता था पर मेरा मन इसमें बिल्कुल भी नही लगता था, मेरे लिये संपत्ति का कोई मोल नही था। मैं अच्छे-खासे जीवन को, चार जोड़ी बैलों को ठोकर मारकर खेत मजदूर बन गया इसलिये अच्छा ही होगा अगर तुम तब तक पार्टी

मे भरती न होना जब तक सपत्ति का मोह न छूट जाये।"

यह खबर आग की तरह ग्रेम्याची मे फैल गयी कि ल्युबीश्किन, उशाकोव और लोश्चीलिन पार्टी मे भरती हो रहे है। किसी ने बुड्ढे श्चुकार से मजाक मे कहा

'अरे तुम पार्टी मे क्यो नही भरती होते? तुम तो सक्रिय लोगो मे हो, दे डालो अर्जी! तुम्हे कोई ओहदा-वोहदा दे दिया जायेगा, तुम चमडे का ब्रीफकेस खरीद लेना और उसे बगल मे दबाकर घूमना।"

श्चुकार ने इस सुझाव पर गौर किया और शाम को जैसे ही अधेरा छाया वह नागूल्नोव के घर पहुचा।

"नमस्ते, मकार!"

"नमस्ते। क्यो आये हो?"

लोग-बाग पार्टी मे भरती हो रहे है "

"तो?"

तो-तो क्या करते हो तोते की तरह?"

"आगे बोलो?"

'आगे यह कि मै भी भरती होना चाहता हू। भैया, मुझे जिदगी भर घोडो की रखवाली नही करनी। मैने उनसे ब्याह थोडे ही किया है।'

"तुम चाहते क्या हो?"

"मै कह तो रहा हू पार्टी मे भरती होना चाहता हू। यही पता करने आया हू कि मुझे कौनसा ओहदा वगैरह मिलेगा तुम मुझे यह बताओ मुझे क्या और कैसे लिखना है? "

"तुम क्या क्या तुम सोचते हो कि पार्टी मे लोग ओहदे पाने के लिये भरती होते है?"

"हमारे यहा तो सभी पार्टीवाले किसी न किसी ओहदे पर है।"

मकार ने अपने को सभालकर बात बदली

"ईस्टर पर तुम्हारे घर पादरी आया था?"

"यह भी कोई पूछने की बात है?"

"तुमने उसे दक्षिणा दी?"

"क्यो न देता? दो अडे और कोई आधा पाउड बैक फैट दिये थे।"

"मतलब, तुम अभी तक भगवान मे विश्वास करते हो?"

"नही, इतना ज्यादा तो नही पर अगर बीमार हुआ या कोई और मुसीबत आये या बिजली जोर से गरजे तो बेशक मै प्रार्थना करता हू भगवान की।"

मकार बुड्ढे श्चुकार मे भद्र व्यवहार करना चाहता था, उसे अच्छी तरह प्यार से ममभाना चाहता था कि क्यो उसे पार्टी मे नही लिया जा मकता, श्चुकार का मुह तो खुलवा दिया उसने पर अपने को मर्यमित न रख मका, इमलिये भट बोला

"भाड मे जा, खूसट बुड्ढे! पादरियो को अडो की दक्षिणा देता है और ऊपर से ओहदो-पदो के सपने देखता है? घोडो को तो कुट्टी डालनी आती नही। पार्टी को तुभ जैम थोथे चने की क्या जरूरत? तू क्या मजाक करने आया है? तू क्या सोचता है पार्टी मे हर राह चलते को भरती किया जाता है? तुभे तो बस गाल पीटना आता है, गप्पे हाकने के अलावा तुभे कोई काम नही। नाप अपना रास्ता, मुभे मत चिढा, मै आदमी नर्वस हू। मै बीमार आदमी हू, तुभसे शांति क माथ बात नही कर मकता। जा अपन रास्ते। मेरा मुह क्या ताक रहा है?"

"गलत ममय आया हू! दोपहर के खाने के बाद आना चाहिये था" बुड्ढे श्चुकार ने हडबडी मे फाटक बद करते हुए मलाल के माथ मोचा।

ग्रेम्याची मे तहलका मचानेवाली विशेषकर वहा की लडकियो को स्तब्ध करनेवाली आखिरी खबर दिमोक की मौत थी।

लोक न्यायालय द्वारा दडित येफीम त्रूबाचोव और बातालिशकोव न लिखा था कि रास्ते क रास्त दिमाक आजादी की लिय, ग्रेम्याची की याद मे तडपने लगा और उसने भागने की कोशिश की।

कैदियो के माथ जा रहे मिलीशियामैन ने तीन बार चिल्लाकर दिमोक मे रुकने को कहा, पर वह भुककर जोत को पार करता जगल की ओर दौडे जा रहा था। भाडियो तक कोई तीस गज की दूरी रह गयी थी कि तभी मिलीशियामेन एक घुटन को टिकाकर बैठा और रायफल तान ली और तीमरी गोली मे उसने दिमोक को मदा के लिये लिटा दिया।

बुआ क अलावा उम यतीम लडके के लिये आसू बहानेवाला था ही कौन, और दिमोक मे प्रेम का मरल विज्ञान मीखी

लडकियो ने आसू बहाये भी, तो दो पल के लिये।

कहते है न, 'बात पुरानी पड जाती है, देह का घाव भर जाता है ' और लडकियो के आसू तो सुबह की ओस की तरह है।

३८

सन् १९३० मे पहली बार तथाकथित 'मृत काल न रहा। पहले जब लोग पुराने ढर्रे मे रहते थे इन दो महीनो को व्यर्थ ही मृत काल नही कहा जाता था। बोवाई करके किसान धीरे-धीरे घास काटने की तैयारी करने लगते। चरागाहो मे बैल और घोडे चरते और भावी काम के लिये शक्ति जोडते रहते। और पुरुष कृषि यत्रो, बैलगाडियो आदि की मरम्मत करते शायद ही कभी कोई मई मे जुताई करने जाता। गावो मे बोझिल नीरवता छा जाती। दोपहर को गलियो म सन्नाटा छा जाता, किसी भी आदमी की सूरत न नजर आती। मर्द कही गये होते या घरो मे तहखानो मे आराम कर रहे होते या आलस्य के साथ कुल्हाडे से ठक-ठक करते। उनींदी औरते कही ठडक मे बैठकर एक दूसरे के सिर देखती। गावो मे निर्जनता और उनीदी नीरवता का राज होता।

पर सामूहिक जीवन के पहले ही वर्ष ग्रेम्याची मे 'मृत काल' भग हो गया। जैसे ही अकुर निकले निराई शुरू हो गयी।

'तीन बार निराई करेगे ताकि सामूहिक फार्म के खेतो मे जगली घास की एक भी पत्ती न बचे!' सभा मे दवीदोव ने घोषणा की।

याकोव लुकीच बेहद खुश था। उस जैसे फुर्तीले और अथक आदमी को ऐसी व्यवस्था बेहद अच्छी लगती थी जब सारा गाव किसी न किसी काम मे व्यस्त रहता। सोवियत सत्ता उड तो बहुत ऊची रही है, देखते है उतरेगी कैसे! निराई भी करो, परती भूमि भी जोतो, ढोर भी चराओ और औजारो की मरम्मत करो पर लोग काम करेगे भी? क्या लुगाइया निराई करने को राजी होगी? यह तो अनसुनी बात है। दोन के सारे इलाके म पहले कभी भी किसी ने अनाज के खेतो की निराई नही की। वैसे बेकार ही नही की। फसल और भी अच्छी होती। और मुझ फूहड बुड्ढे को भी निराई करनी

चाहिये थी। लुगाइया तो गर्मी भर हाथ पर हाथ धरे बैठी रहती थी," वह बडे मलाल के साथ सोच रहा था कि जब उसकी अपनी अलग खेती थी तो वह बेकार ही अपने खेतो मे निगाई नही करता था।

और दवीदोव के साथ बात करते समय कहता

"अब की बार तो, कामरेड दवीदोव, अनाज की कोई कमी नही रहेगी हमारे पास। पहले क्या होता था? आदमी बीज बिखेरकर बैठ जाता, जैसी होगी फसल वैसी होगी। पर अनाज के साथ ढेरो खर-पतवार उग जाते। काटते वक्त तो फसल अच्छी लगती, पर कूटकर जब तौलते तो एक देस्यातीना से मुश्किल से चालीस पूद ही गेहू निकलता, कभी-कभी तो इससे भी कम।"

उसके बाद जब ग्रेम्याची के लोगो ने सामूहिक फार्म की खत्तियो से अनाज लूटा दवीदोव ओस्त्रोव्नोव को मैनेजर के पद से हटाना चाहता था। दवीदोव के मन मे गहरा सदेह उपजा उसे खत्तियो के पास भीड मे दिखायी पडा ओस्त्रोव्नोव का चेहरा याद था जब उसके चेहरे पर न केवल घबराहट बल्कि आतुरता की विद्वेषपूर्ण मुस्कान भी छायी थी कम से कम दवीदोव को तो तब यही लगा था।

अगले ही दिन उसने याकोव लुकीच को अपने कमरे मे बुलाया और बाकी लोगो को बाहर भेज दिया। बाते वे फुसफुसाकर कर रहे थे।

"तुम कल खत्तियो के पास क्या कर रहे थे?"

"लोगो को समझा रहा था, कामरेड दवीदोव। दुश्मनो को समझा रहा था कि होश मे आये सामूहिक फार्म का अनाज न लूटे" याकोव लुकीच ने बिना अटके उत्तर दिया।

"और औरतो को तुमने औरतो को क्यो कहा कि खत्तियो की चाबिया मेरे पास होनी चाहिये?"

"आप भी क्या कहते है! मैने किसे कहा था? किसी से भी नही कहा था"

"खुद औरतो ने मुझे बताया था जब मुझे पकडकर ले जा रही थी"

"झूठ है! मै सौगध खाकर कह सकता हू। मुझसे चिढकर चुगली की है।"

और दवीदोव का इरादा डगमगा गया। याकोव लुकीच ने भी

शीघ्र ही निगराई की तैयारी, सार्वजनिक भोजन-प्रबंध के लिये चंदा जमा करने में ऐसी सक्रियता दर्शायी, प्रबंध-मंडल के सामने ढेरों उपयोगी योजनाएं रख दी कि दवीदोव फिर से अपने उद्यमी मैनेजर का क़ायल हो गया।

याकोव लुकीच ने प्रबंध-मंडल को टोलियों के खेतों के आस-पास कई नये जोहड़ बनाने का सुझाव दिया। उसने घाटियों में वे स्थान तक निश्चित कर दिये जहां वसंत में पिछली बर्फ़ का पानी आसानी से जमा किया जा सकता था। उसके विचार मे नये जोहड़ इस प्रकार अवस्थित होने चाहिये थे ताकि टोलियों के ढोरों को पानी पीने के लिये आधे किलोमीटर से दूर न जाना पड़े। दवीदोव को और प्रबंध-मंडल के अन्य सदस्यों को भी ओस्त्रोव्नोव की योजना की उपयोगिता को मानना पड़ा क्योंकि पुराने जोहड़ सामूहिक फार्म की आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं थे। वे स्तेपी में इधर-उधर बिखरे पड़े थे और वसंत मे टोली के शिविर मे मवेशी को पानी पिलाने के लिये ढाई-तीन किलोमीटर हांककर ले जाना पड़ता था। इसमें बहुत अधिक समय बेकार जाता था। थके-मादे बैलों को जोहड पर जाकर पानी पीकर लौटने में लगभग दो घटे लग जाते, और इतने समय में तो एक क्या, कई हेक्टेयर क्षेत्र को जोता जा सकता था। प्रबंध-मंडल ने नये जोहड़ों के निर्माण की अनुमति दे दी और याकोव लुकीच खेती के काम में अंतराल का फ़ायदा उठाकर दवीदोव की अनुमति से बांधों के लिये लकड़ी जमा करवाने लगा।

यही नही, याकोव लुकीच ने ईंट का भट्टा बनाने का भी सुझाव दिया और उसके औचित्य में संदेह करनेवाले अर्कांशा बदलू को आसानी मे सिद्ध कर दिया कि पक्के अस्तबल और पशुशालाओं के निर्माण के लिये अपनी ईंट बनाना, शहर से अट्ठाईस किलोमीटर की दूरी से लाने और साढ़े चार रूबल सैकड़ा के हिसाब से उनका दाम चुकाने से कहीं लाभदायक है। याकोव लुकीच ने ही तो तीसरी टोली के किसानों को दुर्नीय खड्ड को भरने के लिये राज़ी किया था जो धीरे-धीरे गांव के पास की उपजाऊ भूमि को काट रहा था जहां ज्वार और बडे-बड़े मीठे तरबूज़ों की उम्दा फ़सल होती थी। उसके निर्देशन में खड्ड के आर-पार बल्लियां गाड़ दी गयी, उनके बीच झाड़-झंखाड़, लीद-गोबर, कंकड़-पत्थर भर दिये गये। खड्ड की कटती ढलानों पर पाप्लर

और बेद की पौधें रोप दी गयी ताकि उनकी जड़ें आपस में गुंथकर भुरभुरी मिट्टी को जकड़ लें। इस प्रकार विशाल क्षेत्र को भू-क्षरण से बचाया जा सका।

इन सभी बातों के फलस्वरूप याकोव लुकीच की सामूहिक फ़ार्म में डगमगायी स्थिति मज़बूत हो गयी। दवीदोव ने पक्का फैसला किया कि वह किसी भी हालत मे अपने मैनेजर को नही खोयेगा और उसकी अथाह पहल-शक्ति का हर तरह समर्थन करेगा। नागूल्नोव तक याकोव लुकीच के प्रति नर्म पड़ गया।

एक बार पार्टी इकाई की सभा में उसने कहा.

"हालांकि विचारों की दृष्टि मे वह पराया है, पर किसान बढिया है। जब तक हम उस जितना जानकार अपना आदमी तैयार नही कर लेते, तब तक ओस्त्रोव्नोव को मैनेजर बनाये रखेंगे। पार्टी हमारी बहुत बुद्धिमान है। उसमे लाखो दिमाग़ है, इसीलिये वह इतनी तेज़ बुद्धिवाली है। ऐसे इजीनियर भी है जो मन ही मन हमे डसने को आतुर है, अपने विचारो के लिये वे गोली खाने के लायक है, पर उन्हे नही खिलायी जाती बल्कि उन्हे काम देकर कहा जाता है 'तुम पढे-लिखे आदमी हो! लो पैसे, ठूस-ठूसकर खाओ, अपनी लुगाइयो के लिये मनभावन रेशमी कपडे खरीदो, पर अपने दिमाग को चलाओ, विश्व क्रांति के वास्ते इजीनीयरिंग का काम करो!' और वे करते है। हालाकि पुराने जीवन की ओर मुड-मुडकर देखते है, पर काम करते है। गोली मारकर उनसे मिलेगा क्या? घिसी पतलून और शायद चेनवाली घडी। पर काम करके तो वह हजारो रूबल का फ़ायदा देता है। इसी तरह हमारा ओस्त्रोव्नोव है। लगाने दो उसे पेड खड्डो मे, बनाने दो जोहड। यह सब सोवियत सत्ता के फायदे मे है और विश्व क्रांति भी पास आती है इससे!"

याकोव लुकीच के जीवन मे फिर से कुछ सतुलन आ गया। वह समझता था कि वे सभी शक्तियां जो पोलोवत्सेव की पीठ पीछे खडी थी और विद्रोह की तैयारियो का निर्देशन कर रही थी इस बार हार गयी। उसे पक्का विश्वास था कि अब विद्रोह नही हो सकता क्योंकि मौका हाथ से निकल गया और सोवियत सत्ता से सबसे ज़्यादा खार खाये कज़्ज़ाको तक के विचारो मे कुछ मोड़ आ गया। "लगता है पोलोवत्सेव और ल्यत्येव्स्की विदेश भाग गये हैं," याकोव लुकीच सोच-

ता, उसे इस बात पर खेद की पैनी अनुभूति होती कि सोवियत सत्ता को झिझोडने का मौका नही मिला पर साथ ही सात्वनाप्रद हर्ष भी होता कि अब से याकोव लुकीच के निश्चित अस्तित्व के लिये कोई खतरा नही रहा। अब ग्रेम्याची आनेवाले मिलीशियामैन को देखकर डर के मारे मुह मे उबकाई नही आती थी, पहले तो मिलीशियामैन का काला ओवरकोट देखते ही उसके शरीर मे कपकपी दौडने लगती थी।

"क्यो, इन म्लेच्छो का शासन कब खतम होगा? हमारेवाले जल्दी आ रहे है?" एकात मे बुढिया मा ओस्त्रोव्नोव से पूछती।

और याकोव लुकीच मा के बेमौके सवाल से झुझलाकर कहता

'माता जी, आपको क्या फर्क पडता है?"

"फर्क क्यो नही पडता, गिरजे बद कर दिये, पादरियो को बेद-खल कर दिया यह कहा की बात हुई?"

"आपकी उम्र मे तो भगवान का नाम जपना चाहिये दुनि-यादारी से आपको क्या लेना-देना। हर बात म नाक जरूर घुसेडती है आप!"

"और वह अफसर कहा गये? वह लफगा, काना तबाकूखोर किधर उड गया? तू भी अजीब है! तब तो आशीर्वाद माग रहा था, अब फिर से इस सरकार की चाकरी कर रहा है!" बुढिया किसी भी तरह यह समझ न पाती थी कि क्यो उसका बेटा याकोव सरकार को बदलने के लिये राजी नही हुआ।

"अरे, माता जी, आपकी बातो से तो मेरा खून जम जाता है! छोड दीजिये अपनी बेवकूफी भरी बाते! क्यो आप पुरानी बातो को याद करती है? आप तो लोगो के सामने भी बक सकती है! मेरा तो सिर लुढक जायेगा, माता जी। आप ही ने तो कहा था कि जो भगवान करता है, अच्छा ही करता है। बस काटिये अपने दिन मौज मे। नाक मे आपकी दो छेद है न, बस चुपचाप सास लीजिये पर मुह बद रखिये रोटी आपके मुह मे कोई छीन नही रहा आपको और चाहिये क्या? "

ऐसे वार्तालाप के बाद याकोव लुकीच कमरे से ऐसे निकलता मानो किसी ने उस पर खौलता पानी उडेल दिया हो, बडी देर तक

वह शांत न हो पाता, अपने बेटे सेम्योन और घर की औरतों से वह सख़्ती से कहता:

"बुढ़िया पर कड़ी नज़र रखो! मरवा देगी मुझे! जैसे ही कोई पराया घर की देहरी पर पांव रखे फ़ौरन उसे कमरे में बंद कर देना।"

और बुढ़िया को दिन-रात ताले में बंद रखा जाने लगा। पर रवि-वार के दिन उसे बेखटके छोड़ दिया जाता। वह अपनी जैसी ही जर्जर बुढ़ियों के पास जाकर अपना रोना रोती:

"बहिनो मेरी प्यारी! मुझे तो याकोव और उसकी बहू ताला लगाकर बंद रखते हैं... रूखी रोटी खाकर गुज़र करती हूं, सूखी रोटी का टुकड़ा कुतरती हूं और आंसू पीती हूं। पर पहले जब हमारे यहां अफ़सर टिके हुए थे, याकोव का कमांडर और उसका यार, तब व्रत के दिन मुझे फलाहार मिलता था... पर अब तो बेटा और बहू मुझसे इतने चिढ़े हुए हैं कि कुछ पूछो मत। सगा बेटा तक इतना बेरहम हो गया, पता नहीं क्यों? पहले तो म्लेच्छों की सरकार का सफ़ाया करने के लिये आशीर्वाद मागने आता था, पर अब उसकी बुराई के लिये मुंह तक मत खोलो, मुझे कोसने लगता है, गालियां बकता है।"

...फिर भी याकोव लुकिच का चैन का जीवन जो सिर्फ़ मां के साथ बातचीत मे ही दूषित होता था, अचानक और शीघ्र ही समाप्त हो गया ..

३९

बोवाई के ममय ही लूश्का नागूल्नोवा, तलाक़शुदा बीवी और हंसमुख, कुलटा औरत, खेत में काम करने लगी। उसे तीसरी टोली में भेजा गया और वह खुशी से टोली की कुटिया में बस गयी। दिन मे वह अफानासी क्रास्नोकूतोव के हंकवैये का काम करती और रात को खेत शिविर की लाल कुटिया के सामने जहां वह रहती थी, पौ फटने तक बालालाइका और अकार्डियन बजते रहते, लड़के-लड़कियां नाचते-गाते और इन रंगरेलियों का निर्देशन लूश्का करती।

उसके लिये यह दुनिया सीधी-सरल थी। लूश्का के विचारशून्य चेहरे पर चिंता या भय की एक भी शिकन नही थी। जीवन की राह

पर वह मस्तानी चाल से, विश्वास के साथ, अपनी सलोनी भौहो को आतुरता के साथ तानकर ऐसे चलती मानो किसी भी पल खुशी से उसकी भेट होनेवाली है। मकार के बारे मे तो वह तलाक के अगले दिन ही भूल गयी। तिमोफेई नकटा कही बहुत दूर था, पर विरह मे दुखी होना लूश्का के स्वभाव मे कहा था? "मेरे लिये मर्दो की कोई कमी नही!" सधवा और विधवा के बीच की उसकी अनिश्चित स्थिति की ओर इशारा करनेवाली लडकियो और औरतो से वह उपेक्षा के साथ कहती।

और वास्तव मे उनकी कोई कमी नही थी। तीसरी टोली के लडके और जवान विवाहित पुरुष लूश्का का प्रेम पाने के लिये आपस मे होड करते। खेत शिविर की कुटिया के पास चाद की धुधली चादनी मे नाचनेवालो के जूतो की एडियो की ठक-ठक सुनायी देती। अकसर नाचनेवालो और लूश्का के प्रेम के प्यासो के बीच गाली-गलौज छिड जाती जो बाद मे जबर्दस्त हाथापाई मे बदल जाती। और यह सब लूश्का की वजह से होता। देखने मे लगता कि वह बस छूते ही पिघल जायेगी, सारे गाव को तिमोफेई नकटे से उसके अनैतिक सबधो के बारे मे मालूम ही था। तिमोफेई द्वारा अपनी इच्छा के बावजूद और नागूल्नोव द्वारा स्वेच्छा से रिक्त किये गये स्थान को पाना हरेक अपने लिये सम्मान की बात मानता था।

आगाफोन दुबत्सोव ने लूश्का को समझाने का प्रयास किया पर उसे मुह की खानी पडी।

"काम मै ठीक से करती हू, नाचने और इश्क लडाने की कोई मुझे मनाही नही कर सकता। तुम आगाफोन चाचा ज्यादा तैश मे न आओ, आराम से कोट ओढकर सो जाओ। और अगर डाह होती है तुम्हे और खुद हमारे खेल मे भाग लेना चाहते हो तो आ जाओ। हम चेचक के दागवालो को भी लेते है। कहते है कि चेचकरू चेहरेवाले प्यार मे बडे माहिर होते है!" हसते हुए लूश्का ने उसका मजाक उडाया।

तब ग्रेम्याची मे आते ही आगाफोन दवीदोव से सहायता मागने गया।

"कामरेड दवीदोव! आप भी अजीब है।" वह रोष के साथ बोला। "ल्युब्रीश्किन की टोली मे बुड्ढे श्चुकार को ठूस दिया और

मेरे मत्थे लूश्का नागूल्नोवा को मढ दिया . आप क्या उन्हे तोड-फोड के लिये भेजते है? किसी दिन रात को आकर देखिये खेत शिविर मे क्या होता है। लूश्का ने मेरे सब छोकरों को पागल बना दिया। सबको वह ऐसे मुस्कराकर देखती है मानो न्योता दे रही हो, बस वे आपस मे जवान मुर्गो की तरह भिड़ जाते है। और रात को वे ऐसे एडिया पटक-पटककर नाचते है कि मुझे उनके पावो पर तरस आता है, जमीन ढोल की तरह धम-धम करने लगती है। कुटिया के पास की ज़मीन कूट-कूटकर पत्थर कर दी। तारे बुझने लगते है पर हमारे खेत शिविर मे मेले जैसा शोर-शराबा होता है। बिल्कुल कुत्तो के ब्याह की तरह! पौ फटने तक हुडदग मचाते है और दिन मे भला कैसे काम करेगे? चलते-चलते सोते है, बैलो की टागो के बीच लेट जाते है आप, कामरेड दवीदोव, या तो टोली से इस बीमारी– लूश्का को हटा दे या फिर उसे शादी-शुदा लुगाई की तरह रहने को कह दे।"

"मै तुम्हारे लिये क्या हू?" तिलमिलाकर दवीदोव बोला। "मै क्या हू? उसका गुरू हू? भाड मे जाओ! बात-बात मे मेरे पास मुह उठाये चले आते है मै क्या उसे लोक-लाज की सीख दूगा? ठीक से काम नही करती, निकाल दो टोली से! तुम लोगो ने यह क्या आदत डाल रखी है, कुछ भी हो सीधे दफ्तर मे पहुच जाते हो। 'कामरेड दवीदोव, हल टूट गया!', कामरेड दवीदोव, घोडी बीमार पड गयी!' या इसी मामले को लो, बदचलन औरत है तो क्या मै उसे सीख दू? भाड मे जाओ! हल ठीक करवाना है तो सीधे लोहार के पास जाओ! घोडो के मामले मे ढोरो के डाक्टर के पास! तुम लोग कब अपने दिमाग से काम लेना सीखोगे? मै कब तक तुम्हारी उगली पकडकर चलाता रहूगा? जाओ! "

आगाफोन बहुत रुष्ट होकर दवीदोव के पास से गया। और उसके जाने के बाद दवीदोव ने एक के बाद एक दो सिगरेटे पी डाली और धडाम से दरवाजा बद करके अदर से सिटकनी लगा ली।

आगाफोन दुबत्सोव की बातो से दवीदोव बेचैन हो गया। उसको गुस्सा इस बात पर नही आया था कि टोली नायक सचमुच ही उसे बात-बात मे परेशान करते थे बल्कि दुबत्सोव की इस बात पर कि

लूश्का "सबकी ओर ऐसे मुस्कराकर देखती है मानो न्योता दे रही हो।"

उस दिन के बाद मे जब फार्म के दफ्तर के पास मिलने पर लूश्का ने उससे मजाक मे "कोई बेकार पडा दूल्हा" दिलवाने का अनुरोध किया और फिर खुद ही उससे शादी करने का प्रस्ताव किया, दवीदोव का व्यवहार अनायास ही उसके प्रति बदल गया। पिछले समय वह अकसर ही अपने को इस ओछी और थोथी लुगाई के बारे मे सोचता पाता। पहले वह उसके बारे मे घिन भरी दया और उदासीनता के साथ सोचता था पर अब उसकी अनुभूति बिलकुल भिन्न थी और लूश्का की अटपटी शिकायत लेकर दुबत्सोव का आना, दवीदोव के लिये फटकार सुनाने का सिर्फ बहाना मात्र ही था।

बडे बेमौके, बोवाई के प्रचड दौर मे उसका मन लूश्का की ओर आकर्षित हुआ। शायद इस नयी अनुभूति के पनपने का कारण यह था कि सारी सर्दियो बकौल अद्रेई रजम्योत्नोव के, दवीदोव 'ब्रह्मचारी' रहा। और शायद वसत का मादक मौसम ग्रेम्याची सामूहिक फार्म के हर कृषि-राजनीतिक अभियान को सफलता से पूरा करनेवाले निष्काम अध्यक्ष की नश्वर देह पर भी हावी हो गया।

अकसर रात को बिना किसी कारण उसकी नीद टूट जाती और वह सिगरेट सुलगाकर बुलबुलो की चहचहाहट सुनने लगता, उसके चेहरे पर यातना के बल पड जाते, फिर वह झल्लाकर धडाके से खिडकी बद कर देता और खेस मे सिर ढककर तकिये पर अपनी गुदी छाती टिकाकर सुबह तक आखे खोले पडा रहता।

और सन् १९३० के तूफानी वसत मे बागो और कुजो मे इतनी अधिक बुलबुले थी कि वे न केवल रात की नीरवता मे बल्कि दिन मे भी चहचहाती रहती। बुलबुलो के प्रेमविहार [illegible] वसत की छोटी राते कम पड जाती। "स्साली, दो पालियो मे चहचहाती है!" सवेरे नीद मे लडते हुए दवीदोव बडबडाता।

बोवाई के अत तक लूश्का नागूल्नोवा टोली मे रही पर जिस दिन टोली खेत का काम पूरा करके गाव लौटी, उसी दिन शाम को वह दवीदोव के पास पहुची।

वह रात का खाना खाकर लेटा हुआ 'प्राव्दा' पढ रहा था। ड्योढी मे किसी ने चूहे की तरह दरवाजा खरोचा और

फिर धीमा महिला स्वर सुनायी पड़ा:

"क्या अंदर आ सकती हूं?"

"हां, आ जाओ," दवीदोव ने पलंग से उछलकर कंधों पर कोट डाला।

लूश्का ने कमरे में घुसकर धीरे से दरवाज़ा बंद कर दिया। सिर पर बंधे काले शाल के कारण उसका रूखा, सांवला पड़ा चेहरा उम्र से अधिक लग रहा था। पर उसकी आंखो में हंसी की झलक थी, वे और भी अधिक दमक रही थी।

"मिलने चली आयी..."

"आओ, बैठो।"

उसके आने पर चकित और हर्षित दवीदोव ने स्टूल बढ़ाया, कोट के बटन बंद किये और पलंग पर बैठ गया।

वह बड़ा अटपटा महसूस कर रहा था। पर लूश्का बेझिझक मेज़ के पास जाकर लहंगे को संभालकर बैठ गयी।

"क्या हाल-चाल है, फ़ार्म-अध्यक्ष?"

"ठीक ही है।"

"एकाकीपन तो नही खलता?"

"कैसा एकाकीपन, वक्त ही नही मिलता इसका।"

"मेरी याद नही आती?"

कभी भी होश-हवास न खोनेवाले दवीदोव के गाल दहकने लगे। लूश्का ने बनावटी लाज के साथ पलकें झुका ली पर उसके होठों के कोनो पर मुस्कान खेल रही थी।

"तुम भी न जाने क्या कहती हो," कुछ सकपकाकर वह बोला।

"क्या सचमुच तुम्हें मेरी याद नही आती थी?"

"अरे नही, कह तो रहा हू! कोई काम है मुझसे?"

"है... अखबारों मे क्या नयी बातें लिखी है? विश्व क्राति के बारे में क्या कहा जा रहा है?" लूश्का ने मेज़ पर कोहनिया टिकायी, उसके चेहरे पर वार्तालाप के अनुरूप गंभीर भाव छा गया। मानो अभी कुछ देर पहले तक उसके होंठों पर शैतानी मुस्कान थी ही नही।

"तरह-तरह की बातें छप रही हैं... तुम आयी किस काम से हो?" दवीदोव ने दिल कड़ा करके पूछा।

शायद मकान मालकिन छिपकर उनकी बातचीत को सुन रही

थी। दवीदोव ऐसे कुलबुला रहा था मानो अगारो पर बैठा हो। उसकी हालत बिलकुल पतली थी। कल ही मालकिन पूरे ग्रेम्याची मे ढिढोरा पीट देगी कि मकार की भूतपूर्व बीवी रात को उसके किरायेदार के पास आती है और बस दवीदोव की उजली प्रतिष्ठा पर कालिख पुत जायेगी! गप्पे लडाने की शौकीन औरते गलियो और कुओ पर दिन-रात कानाफूसी करेगी, सामूहिक फार्म के किसान उसे अर्थ-पूर्ण हसी के साथ देखेगे। रजम्योत्नोव लूश्का के जाल म फसे कामरेड पर फब्तिया कसेगा और बात इलाकाई कृषि सघ तक पहुच सकती है—क्या पता वे कही यह न कह दे 'इसी लिये इसने दस तारीख को ही बोवाई पूरी की क्योकि रात को इसके पास लुगाइया आती थी। यह शायद बोवाई की सोचने के बजाये इश्क लडाने मे व्यस्त था!" और मडल पार्टी समिति के सचिव ने 'पच्चीसहजारियो' को गावो मे भेजते समय व्यर्थ ही नही कहा था "क्राति के हिरावल दस्ते—मजदूर वर्ग—की प्रतिष्ठा को गाव मे ऊचा उठाकर रखना चाहिये। कामरेडो आपको बहुत सावधानी से हर काम करना चाहिये। मेरा मतलब आपके निजी आचरण से भी है। गाव मे एक कोपेक की पियोगे पर नुकसान सौ राजनीतिक रूबलो का होगा '

दवीदोव लूश्का के आने और उसके साथ बाते करने के सभी सभावित परिणामो के बारे मे सोचकर पसीने से तर हो गया। इज्जत मिट्टी मे मिल जाने का वास्तविक खतरा मुह बाये खडा था। पर लूश्का आराम से बैठी थी। वह दवीदोव के मन मे हो रही यातनापूर्ण उथल-पुथल पर बिलकुल भी ध्यान नही दे रही थी। दवीदोव ने घबराहट के कारण फटे-से स्वर मे सख्ती के साथ पूछा

'क्या काम है? बोलो और जाओ मेरे पास तुम्हारे साथ गप्पे लडाने का वक्त नही है!'

"तुम्हे याद है क्या कहा था मुझसे तब तुमने? मैने मकार से नही पूछा, वैसे भी मै जानती हू कि वह इसके खिलाफ है "

दवीदोव उछलकर खडा हो गया, हाथ हिला-हिलाकर वह बोला

"मेरे पास वक्त नही! बाद मे! फिर कभी!"

इस क्षण वह उसे चुप करने के लिए उसके हसते हुए मुह को हथेली से बद करने को तैयार था।

और वह समझ गयी, उपेक्षा के साथ भौहे तानकर वह बोली

"तुम भी बड़े बनते हो! . अच्छा, ठीक है। मुझे कोई अच्छा-सा अख़बार दे दो। इसके अलावा और कोई काम नही आप से। माफ़ करना परेशानी के लिये .."

उसके जाने पर दवीदोव ने राहत की सांस ली। पर पल भर बाद ही वह मेज़ पर बैठा बालों को नोचता सोच रहा था: "मैं भी निरा ठूंठ हूं! कहने दो लोगों को जो चाहें। क्या मेरे पास औरत नहीं आ सकती? क्या मैं संन्यासी हूं? किसी को इसमे क्या वास्ता? वह मुझे अच्छी लगती है, मतलब मैं उसके साथ समय बिता सकता हूं .. बस काम को कोई नुक़सान नही पहुंचना चाहिये, बाक़ी बातों की कोई परवाह नही! पर अब तो वह नही आयेगी। मैं बड़ी रुखाई के साथ पेश आया, वह यह भी भांप गयी कि मैं कुछ डर गया था... मैंने भी क्या कर डाला!"

पर उसकी आशका व्यर्थ निकली: लूश्का उन लोगो में से नही थी जो बड़ी आसानी से अपनी योजनाओ को त्याग देते है। और योजना उसकी दवीदोव को जीतने की थी। वास्तव मे, ग्रेम्याची के किसी लडके से अपनी ज़िंदगी बांधने में उसके लिये क्या तुक थी? और ज़रूरत भी किस लिये थी इसकी? क्या ज़िदगी भर अगीठी के धुएं से आंखें फोड़ने और खेतो मे जुताई के वक़्त बैलों को हांकने के लिये? और दवीदोव की बात दूसरी थी। वह सीधा-सादा, हट्टा-कट्टा सलोना जवान था, वह अपने काम में रमे और विश्व क्रांति की बाट जोहते मकार जैसा नहीं, तिमोफ़ेई जैसा भी नही था .. बस उसमे एक छोटा-सा नुक़्स था, एक दात टूटा था और वह भी बिलकुल सामने-वाला, पर लूश्का ने अपने प्रियवर में इस कमी को अनदेखा कर दिया। वह अपने अल्पजीवन में प्राप्त अति समृद्ध अनुभव से जानती थी कि मर्द का मूल्याकन करते समय दातो का इतना महत्व नही है

अगले दिन शाम के झुटपुटे मे वह फिर आयी, इस बार वह बड़ी सज-धज कर आयी थी। वह पहले से भी अधिक उत्तेजक लग रही थी। उसके आने का बहाना अख़बार थे।

"मैं आपका अख़बार ले आयी हूं... क्या दूसरे ले सकती हूं? आपके पास किताबे नही है? मुझे कोई दिलचस्प प्रेम-व्रेम की चाहिये।"

"अख़बार ले लो, पर किताबें नही हैं, मेरे घर में कोई पुस्तकालय तो खुला नही।"

लृश्का निमत्रण की प्रतीक्षा किये बिना ही बैठ गयी और वह तीसरी टोली मे बोवाई के बारे मे, ग्रेम्याची मे खोली गयी डेयरी के काम मे कमियो के बारे मे बाते करने लगी। उसे लगा कि दवीदोव को इन्ही बातो मे रुचि हो सकती है और उसने अपने को दवीदोव के, उसकी रुचियो के अनुरूप ढाल लिया।

शुरू-शुरू मे दवीदोव अविश्वास के साथ उसको सुन रहा था, फिर खुद भी बोलने लगा। वह डेयरी के बारे मे अपनी योजनाओ, लगे हाथ इस क्षेत्र मे विदेशो मे तकनीकी उपलब्धियो के बारे मे बताने लगा, अत मे वह खेद के साथ बोला

"हमे ढेरो पैसे की ज़रूरत है। दुधारू गायो की बछियो, अच्छी नस्ल के साड की जरूरत है यह सब जल्दी से जल्दी हो जाना चाहिये। डेयरी के सुचारु प्रबध से हमे बडा मुनाफा होगा। उसकी बदौलत सामूहिक फार्म अपना बजट ठीक कर सकेगा। अभी तो वहा क्या है? दो कौडी की सप्रेटा मशीन जो सारे दूध से क्रीम नही उतार पाती। दूध का एक भी डिब्बा नही है और दूध को पुराने जमाने की तरह हडियो मे रखा जाता है। भला यह भी कोई बात हुई? तुम भी कहती हो कि उनके यहा दूध फट जाता है, क्यो फट जाता है? जरूर गदे बर्तन मे भरा होगा।"

"हडियो को ठीक से साफ नही करते इसी लिये फट जाता है।"

"मै भी तो यही कह रहा हू कि बर्तनो की सफाई का ख्याल नही रखते। तुम जाकर इस काम को सभालो। जो जरूरी है करो, प्रबध-मडल हमेशा तुम्हारी सहायता करेगा। नही तो क्या होगा? अगर बर्तनो का यही हाल रहा या ग्वालिनें इसी तरह दुहती रहेगी जैसा कि मैने देखा, तो दूध होगा ही खराब। हाल ही मे मैने देखा कि एक ग्वालिन दूध दुहने बैठी, गाय के थन नही धोये, वे कीचड और गोबर मे सने थे और खुद ग्वालिन ने भी अपने हाथ नही धोये। इससे पहले न जाने क्या छूती रही हाथो मे और बैठ गयी गदे हाथो से गाय को दुहने। मेरे पास इस काम के लिये वक्त नही था। पर मै अब इस पर वक्त दूगा! और तुम भी मुह पर पाउडर पोतने और सिगार करने की जगह डेयरी का काम अपने हाथो मे ले लेती तो अच्छा होता, क्यो? तुम्हे उसका प्रबधक नियुक्त कर देगे, कोर्स मे पढने जाना और प्रबध का काम सीखकर लौटना और तुम कुशलता प्राप्त औरत हो जाओगी।"

"नही-नही, मेरे बिना ही काम चला लो," लूश्का सास छोडकर बोली, "वहा मेरे बिना भी लोग है जो काम ठीक कर मकते है। और मै प्रबधक नही बनना चाहती। पढने के लिये भी नही जाना चाहती। बडा झमेले का काम है। मै तो आराम से काम करना पसद करती हू ताकि खूब मौज उडा सकू! बेवकूफ लोग ही काम करते है।"

"फिर तुम उल्टी-मीधी बकने लगी!" रोष के साथ दवीदोव बोला।

शीघ्र ही लूश्का घर जाने के लिये खडी हुई। दवीदोव उमे छोडने के लिये साथ चल दिया। अधेरी गली मे वे माथ-माथ चुपचाप चल रहे थे, फिर लूश्का ने, जो बडी जल्दी दवीदोव की मभी चिताओ को भाप गयी थी, पूछा

"आज कुबान्कावाला खेत गये थे देखने?"

"गया था।"

"क्या हाल है उमके?"

"खराब ही है। अगर इम हफ्ते बारिश नही हुई तो डर है कि अकुर नही फूटेगे। तुम ममझती हो कि इसका अजाम क्या होगा? वे बुड्ढे जो मेरे पाम पूजा करवाने की अनुमति लेने आये थे•बडी हसी उडायेगे! वे कहेगे 'पूजा नही करवाने दी इमीलिये भगवान ने बारिश नही की!' पर उनका भगवान क्या कर मकता है जब बैरोमीटर की मुई ही माफ मौमम पर अटक गयी है। पर उनका तो अधा विश्वास और मजबूत ही हो जायेगा। बडी मुमीबत है। कुछ गलती तो हमारी अपनी ही है हमे जायद की फसल पर इतना ध्यान देने के बजाय गेहू को जल्दी से बोना चाहिये था। यही हमारी गलती है! 'मेलीनो-पूम' के माथ भी यही किस्मा हुआ, मैने उम काठ के उल्लू ल्युबीश्किन को सिद्ध करके दिखाया था कि हमारे लिये यह किस्म हर दृष्टि से मबमे बेहतर है ' दवीदोव फिर जोश के माथ बोलने लगा, अपने प्रिय विषय पर आकर वह घटो बोल मकता था पर लूश्का ने बेमब्री मे उसे टोका

"अरे छोडो भी अपने अनाज की बाते! चलो आओ, कुछ देर यहा बैठ ले," उसने चादनी के प्रकाश मे नाले के नीले किनारे की ओर इशारा किया।

किनारे के पास जाकर लूश्का ने अपना लहगा समेटा और मालि-काना अदाज मे बोली

"तुम अपना कोट बिछा दो जमीन पर, कही मेरा लहगा गदा न हो जाये। सबसे बढियावाला पहन रखा है।"

और जब वे कोट बिछाकर पास बैठ गये उसने दवीदोव के व्यग्यपूर्ण चेहरे के पास अपना गभीर, सलोना चेहरा लाकर कहा

"छोडो भी अनाज और फार्म की बाते! यह वक्त इन बातो का नही है तुम पाप्लर वृक्ष की नयी पत्तियो की सुगध को महसूस कर रहे हो?"

बस यही, एक ओर से लूश्का की ओर खिचते और दूसरी ओर इस बात से डरते दवीदोव की हिचकिचाहट काफूर हो गयी कि लूश्का के साथ सबधो के कारण उसकी प्रतिष्ठा गिर जायेगी

बाद मे जब वह उठा तो उसके पाव के नीचे से मिट्टी के ढेले भर-भर करते नाले मे लुढक गये लूश्का अभी भी हाथ फैलाकर थकान से आखे मूदे पीठ के बल लेटी हुई थी। कुछ देर तक वे चुप रहे। फिर वह अचानक फुर्ती से उठकर बैठी और अपने मुडे घुटनो को बाहो मे भरकर बिना आवाज किये हसने लगी। वह ऐसे हस रही थी मानो उसे कोई गुदगुदी कर रहा हो।

"तुम किस लिये हस रही हो?" असमजस मे पडकर दवीदोव ने रूठे स्वर मे पूछा।

पर लूश्का की हसी जैसे फूटी थी वैसे ही अचानक रुक गयी। उसने टागे पसारी और अपने कूल्हो और पेट को सहलाते हुए कुछ सोचते हुए बोली, उसके भर्राये-से स्वर मे आनद की झलक थी

"मै अपने को इस समय कितना हल्का महसूस कर रही हू!"

"पख लगाते ही उडने लगेगी?" दवीदोव ने झुझलाकर पूछा।

"तुम बेकार ही गुस्सा कर रहे हो। मेरा पेट बडा हल्का-सा हो गया खाली-खाली-सा, बिल्कुल हल्का, इसीलिये हस रही थी तुम भी बडे अजीब हो, मुझे क्या रोना चाहिये था? बैठो, खडे क्यो हो गये?"

दवीदोव ने अनिच्छा से उसका कहना माना। वह चादनी मे लूश्का के हरे-से चेहरे को कनखियो से देखते हुए सोच रहा था "अब क्या करू इसके साथ? शादी-वादी रजिस्टर करवा लेनी चाहिये नही

तो मकार को कैमे दिखाऊगा मुह अपना   कहा मे आ पडी यह मुसीबत मेरे सिर पर!"

"और लूश्का हाथो मे जमीन का महारा लिये बिना लचके उठी और मुस्कराते हुए उमने आखे मिचमिचाकर पूछा

"क्यो? सुदर हू न मै?"

"मै तुम्हे क्या कहू ' लूश्का के दुबले कधो को अपनी बाहो मे भरकर दवीदोव ने अनिश्चित-सा उत्तर दिया।

४०

ग्रेम्याची मे मूसलाधार वर्षा के अगले दिन याकोव लुकीच घोडे पर मवार होकर बलूत वन मे गया। उमे कटाई के लिये बलूतो को छाटना था क्योकि अगले दिन तीमरी टोली के लगभग मभी लोग बाधो के लिये लकडी काटने के वास्ते वन मे आनेवाले थे।

याकोव लुकीच मुबह मे ही गाव मे चल पडा। उमका घोडा अपनी गथी पूछ को हिलाता धीरे-धीरे चल रहा था। बिना नालोवाली उमकी अगली टागे कीचड मे फिसल रही थी। पर याकोव लुकीच ने चाबुक को हाथ तक नही लगाया, उमे कोई जल्दी नही थी। वह हरने पर लगाम को लटकाकर आराम मे मिगरेट पीता हुआ ग्रेम्याची के चारो ओर फैली स्तेपी को देखता हुआ जा रहा था, जिमके चप्पे-चप्पे मे वह बचपन से परिचित था और जो उसके दिल मे रमी थी। वह नमी मे फूली भुरभुरी जातो   वर्षा मे धुली फमलो को आनद के माथ देख रहा था। पर वह बडे खेद और निराशा क माथ मोच रहा था

"टूटे दातवाले शैतान ने बारिश की भविष्यवाणी की थी! अब तो कुबान्का उग जायेगा! देखो तो, भगवान भी इन म्लेच्छो का माथ दे रहे है! पहले अकाल ही अकाल पडते रहते थे, पर मन् इक्कीस मे जब मे इनके पाव जमे है हर माल एक से एक बढकर फसल हो रही है! जब कुदरत ही मोवियत सरकार के खेमे मे चली गयी तो वह खत्म कब होगी? नही, अगर मित्र राष्ट्र कम्युनिस्टो को उखाड फेकने मे मदद नही देगे तो हम खुद कुछ भी नही कर पायेगे। चाहे कितने भी अक्लमद क्यो न हो पर पोलोवत्सेव जैमा एक भी नही टिक पायेगा।

ताकत तिनके को तोड देती है, भला ताकत का मुकाबला किया जा सकता है? और लोग भी हरामी है एक दूसरे की चुगली करते है। हरामजादे बस अपनी नाक से दूर तो देखते ही नही। बडा खराब समय है! शैतान तक नही जानता कि साल-दो साल बाद वह क्या गुल खिलायेगा लगता है मै तो शुभ घडी मे पैदा हुआ नही तो पोलोवत्सेव के साथ मेरे किस्से का इतना अच्छा अत नही होता। सिर लुढक गया होता मेरा कब का! भगवान की दया से सब ठीक-ठाक हो गया। कुछ देर और सब्र कर लेते है, देखते है आगे क्या होगा। अब की बार नही कर सके सोवियत सत्ता का सफाया तो क्या हुआ, आगे न जाने इससे भी अच्छा हो!"

धूप मे फैली घास के तिनको, अनाज की बढती बालियो मे पिरोये ओस के बिल्लौरी मनके काप रहे थे। पश्चिमी हवा उन्हे हिला रही थी और ओस की बूदे इद्रधनुषी आभा के साथ चमकती हुई, वर्षा की सुगध छोडती धरती पर लुढक रही थी।

कच्चे रास्ते पर बनी लीको मे अभी तक वर्षा का पानी भरा था और उधर ग्रेम्याची के ऊपर, पाप्लर वृक्षो के ऊपर सुबह का गुलाबी कोहरा उठ रहा था। आकाश के नील पटल पर, उगते सूर्य की आभा मे रुपहला चाद धूमिल पडता जा रहा था।

हसिया की तरह लटका पतला चाद भारी वर्षा की भविष्यवाणी कर रहा था। और उसे देखकर याकोव लुकीच के मन मे यह विचार पक्का हो गया "फसल अच्छी होगी!"

वह दोपहर को बलूत वन मे पहुचा। घोडे को छादकर उसने चरने के लिये छोड दिया और खुद पेटी मे खसी बढई की छोटी-सी कुल्हाडी निकालकर उस हिस्से मे बलूत के पेडो पर निशान लगाने चल पडा जो वनपाल ने ग्रेम्याची के सामूहिक फार्म के लिये निश्चित किया था।

खड्ड के कगार पर छ बलूतो पर निशान लगाकर वह अगले के पास पहुचा। ऊचा सुडौल बलूत गर्व के साथ सिर उठाये अन्य नाटे वृक्षो के बीच खडा था, उसकी फुनगी पर चमकीली हरी पत्तियो के बीच कौवे का काला घोसला था। तन की मोटाई के अनुसार बलूत याकोव लुकीच का लगभग हमउम्र ही था और वह मौत के मुह मे जानेवाले पेड को खेद और उदासी के साथ देख रहा था।

तने पर एक जगह छाल छीलकर कापिंग पेंसिल से लिखा 'ग्रे० सा० फा०' और पैर से छाल के रिसते टुकड़े को ठोकर मारकर सिगरेट पीने बैठ गया। "कितने सालों तक तू खड़ा रहा, भैया! तुझ पर कभी किसी का राज न चला पर अब मरने का वक्त आ गया। तुझे गिराकर छाल उतार देंगे, कुल्हाड़ों से तेरी सुंदरता को नष्ट कर देंगे और जोहड़ के पास ले जाकर बांध की जगह तुझे बल्ली की तरह गाड़ देंगे" याकोव लुकीच नीचे से बलूत की छतरीनुमा चोटी को ताकता हुआ सोच रहा था "और तू सामूहिक फार्म के जोहड़ में तब तक सड़ेगा जब तक पूरा गल नहीं जायेगा। फिर वसंत की बाढ़ का पानी तुझे बहाकर ले जायेगा और तेरा नामो निशान न बचेगा!"

इन विचारों से याकोव लुकीच के दिल में कसक के साथ उदासी और आशंका भर गयी। उसे अनिष्ट की अनुभूति हुई। "बख्श दूं तुझे, नहीं कटवाऊं? हर चीज सामूहिक फार्म की भूख मिटाने के लिये थोड़े ही है?" और हल्के मन उसने फैसला किया "जीता रह! बढ़ता जा! अपनी छटा बिखेरता रह! तेरी जिंदगी तो मजे की है। न तुझे कर चुकाना पड़ता है, न तुझे सामूहिक फार्म में भरती होना है भगवान की इच्छा से जी!"

जल्दी से उठकर उसने मुट्ठी में कीचड़ भरा और उसे कटे निशान पर अच्छी तरह लेप दिया। वह शांति और चैन के साथ खड्ड के बाहर आया

पूरे सड़मठ बलूतों पर निशान लगाकर भावविह्वल याकोव लुकीच घोड़े पर सवार हुआ और वन के किनारे-किनारे चल पड़ा।

'याकोव लुकीच, जरा रुको!' वन में एक खुले स्थान पर किसी ने उसे पुकारा।

फिर झाड़ी के पीछे से भेड़ की खाल की काली टोपीवाला एक आदमी निकला। उसकी फौजी कपड़े की गर्म जैकेट के बटन खुले थे। उसका चेहरा सांवला, चमड़ी सूखी थी, कपोलों की हड्डियां दुर्बलता के कारण उभरी हुई थी, आंखें गहरी धंसी थी, उसके सफेद-से फटे होंठों पर कोयले की रेखा की तरह काली मूंछें थी।

'क्या पहचाना नहीं?'

आदमी ने टोपी उतारी और आशंका के साथ अगल-बगल में

देखकर खुले स्थान पर आया। तभी याकोव लुकीच तिमोफेई नकटे को पहचान पाया।

"तू कहा से आया है? " उसने पूछा। वह इस भेट, क्षीणकाय और बिलकुल बदले तिमोफेई को देखकर स्तब्ध रह गया था।

"जहा से लौटके नही आते काले पानी से कोनलास नाम की जगह से।"

"क्या भागकर आया है?"

"हा याकोव चाचा, तुम्हारे पास कुछ है खाने को? रोटी है?"

"है।"

"भगवान के लिये दे दो! चार दिन से कुछ खाया नही सडी बेरियो के अलावा," और उसने लार गटकी।

कोट के अदर से रोटी के टुकडे को निकालते याकोव लुकीच के हाथ को देखकर उसके होठ कापे, आखे भेडिये की तरह चमकी।

रोटी पर वह ऐसे टूट पडा कि याकोव लुकीच की ऊपर की सास ऊपर और नीचे की नीचे रह गयी। वह रोटी को बिना चबाये ही निगल रहा था। आखिरी टुकडा गटककर उसने अपनी मदहोश आखो से याकोव लुकीच की ओर देखा।

"बहुत भूखा था तू तो," याकोव लुकीच सहानुभूति के साथ बोला।

"कह तो रहा हू चार दिन से सडी-गली बेरिया खाकर जिदा हू, बहुत दुबला हो गया हू।"

"तू यहा आया कैसे?"

'स्टेशन से पैदल। रात को चलता था,' थके स्वर में तिमोफेई ने उत्तर दिया।

उसका चेहरा बहुत पीला पड गया था लगता था कि उसने अपनी बची-खुची शक्ति भी रोटी खाने पर लगा दी। उसे जोर-जोर से हिचकि-या आने लगी।

और बाप तो तेरा जिदा है? घरवाले कैसे है, ठीक-ठाक तो है?" याकोव लुकीच पूछे जा रहा था, पर वह घोडे से नही उतरा और रुक-रुककर चिता के साथ चारो ओर नजरे दौडा रहा था।

"बाप निमोनिया से मर गया, मा और बहन वही है। और

आपके गाव की क्या खबरे है? लूश्का नागूल्नोवा वही है?"

"वह तो, छोरे, अब तलाकशुदा है।"

"अब कहा रहती है?"

"मौसी के यहा रहती है, अब तो आजाद पछी है।"

"चचा याकोव, तुम ऐसा करना जाकर उससे कहना कि वह मेरे लिये आज ही यहा खाना लेकर आ जाये। मै बिलकुल कमजोर हो गया, दिन मे नही जाऊगा, आराम की जरूरत है। चोटे बहुत लगी है। रात-रात को अनजानी राहो पर एक सौ सत्तर वेर्स्ता का सफर तो मजाक की बात नही है। कुछ दिखायी देता नही अधेरे मे कह दो कि खाना ले आये। जैसे ही ठीक हो जाऊगा खुद गाव मे आऊगा अपने गाव को देखने को तरस गया हू!" और वह दोषी की तरह मुस्करा दिया।

"आगे कैसे जीने का इरादा रखते हो?" याकोव लुकीच कुरेद-कुरेदकर सवाल पूछ रहा था। इस भेट का उस पर अप्रिय प्रभाव पडा था।

और तिमोफेई तिलमिलाकर बोला

"नही पता कैसे? मै अकेले भेडिये की तरह हू। कुछ आराम करके रात को गाव मे आऊगा, वहा गडी अपनी रायफल निकालूगा वह खलिहान मे गडी है और शुरू कर दूगा अपना धधा! मेरे लिये तो एक ही रास्ता है। जब मुझे मौत की सजा ही मिलनी है तो मै भी दूसरो को यह सजा दूगा। कुछेक को सौगात दूगा तो दूसरो के होश ठिकाने आ जायेगे! इस जगल मे गर्मिया काट दूगा और पतझड मे पाला शुरू होते ही कुबान या कही और चला जाऊगा। दुनिया बहुत बडी है और मुझे अपने जैसे सैकडो लोग मिल जायेगे।"

"मक्कार की लूश्का की तो फार्म के अध्यक्ष से यारी हो गयी है" याकोव लुकीच ने हिचकिचाते हुए उसे बताया। वह कई बार लूश्का को दवीदोव के घर जाते देख चुका था।

तिमोफेई झाडी के पास लेट गया। उसके पेट मे भीषण पीडा हो रही थी। पर वह फिर भी रुक-रुककर बोला

"पहली गोली दवीदोव की होगी लूश्का मेरी बेवफा नही है पुराना प्यार कभी नही भूला जाता मै उसके दिल की राह हमेशा ढूढ लूगा अभी उस पर झाड-झखाड नही उगे। चचा, तुमने अपनी

रोटी मे मुझे तो मार ही डाला पेट मे मरोडे उठ रहे है अच्छा, तो लूश्का को कह देना कि बैकफैट और रोटी ले आये रोटी जरा ज्यादा लाये!"

याकोव लुकीच ने तिमोफेई को सचेत किया कि कल जगल म पेडो की कटाई शुरू हो रही है और दूसरी टोली के खेत को देखने चल दिया जहा क्रुबान्का गेहू बोया गया था। अभी हाल ही तक कोयले की तरह काले खेत मे अतन फूटे अकुरो की हरी-हरी रेखाए खिची थी।

याकोव लुकीच रात को ही गाव लौटा। फार्म के अस्तबल से घर जाते समय भी तिमोफेई नकटे मे हुई भेट से उसका मन भारी था। पर घर पर नयी, इससे भी अधिक विकट मुसीबत उसकी बाट जोह रही थी।

ड्योढी मे ही बहू ने रसोई म निकलकर उसे फुसफुसाकर बताया

"पिता जी, मेहमान आये है "

"कौन?"

पोलोवत्सेव और वह काना। अधेरा छाते ही आये थे मे माता जी क साथ गाय दुह रही थी बैठक मे बैठे है। पोलोवत्सेव ने बहुत पी रखी है, पर दूसरेवाले का पता नही दोनो के कपडे तार-तार हो गये है! ढेरो चीलर पडे है कपडो पर रेगते है!

बैठक म वार्तालाप सनाया पड रहा था ल्यातिवस्की कटु व्यग्य के साथ ल्यात्येवस्की बोल रहा था

हा-हा बगक! श्रीमान आप क्या है? म आपसे पूछता ह आदरणीय श्रीमान् पोलोवत्सेव। पर म आपको बताता ह कि आप क्या है चाहते है? सुनिये! आप बिना देश क देशभक्त, बिना सेना के सेनापति और इन तुलनाओ को आप बहुत ऊचा और गढ समझते हे तो आप ऐसे जुआरी ह जिसकी जेब मे फटी कौडी तक नही है।"

पोलोवत्सेव की भारी मोटी आवाज सुनकर याकोव लुकीच निढाल हो गया। दीवार पर पीठ टिकाकर उसने अपना सिर पकड लिया

फिर वही पुराना राग शुरू हो रहा था।